जे पी एच®

सी.सी.ई

व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना

– डॉ. आर. के. देशपाण्डे

(हिंदी कोर्स 'ए' एवं 'बी' कक्षा नवीं एवं दसवीं के सी.बी.एस.ई., सी.सी.ई. पाठ्यक्रम पर आधारित)

जीवन पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि. (इंडिया)

जे पी एच®

सी.सी.ई.

व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना

– डॉ. आर. के. देशपाण्डे

कक्षा नवीं तथा दसवीं के सी.सी.ई. सी.बी.एस.ई. के नए पाठ्यक्रम पर आधारित

JIWAN PUBLISHING HOUSE (PVT.) LTD. ★ JAI MATA DI ★

प्रकाशक
जीवन पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि. (इण्डिया)
(शैक्षिक प्रकाशक, मुद्रक, वितरक व निर्यातक)
24, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

मूल्य : रुपये 150.00

जे पी एच® बुक्स

जीवन पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि. (इण्डिया)

हैड ऑफिस :

जीवन पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि. *[इण्डिया]*

✔ 24, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 46219000 (30 लाइन)

फैक्स : 91-(011) 43541911, 43541900;

ई-मेल : manoj@jphbooks.in

Visit us at : www.jphbooks.in;

■ *पोस्ट बॉक्स नं. :* 7030

■ *एक्सपोर्ट नं. :* 001265

प्रमुख वितरक–दिल्ली :

✔ **जे.पी.एच. एण्टरप्राइजिज (रजि.)**

☞ 4095, नई सड़क, (*चावड़ी बाजार*), दिल्ली-6; *दूरभाष : ऑफिस*-23914689, 23928315

☞ 2, अन्सारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002; *दूरभाष :* 23241825

✔ **लाजवंती डिस्ट्रीब्यूटर्स**

37, डिफेन्स इन्क्लेव, सी.बी.एस.ई. ऑफिस के सामने प्रीत विहार (पेट्रोल पंप), विकास मार्ग, दिल्ली-110092

दूरभाष : ऑफिस : 22465483, 22022119;

फैक्स : 011-22444770; *मोबाइल :* 98100-19774

✔ **मैदीरत्ता बुक डिपो (रजि.)**

रमेश नगर (*मैट्रो स्टेशन के सामने*), नई दिल्ली-15

दूरभाष : 92122-03636

सेल्स ऑफिस–भारत :

● **जीवन पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.** *[देहरादून]*

शॉप नं.-7 व 8, के. सी. सिटी सेन्टर (बुक्स मार्किट), डिस्पेंसरी रोड, देहरादून (उत्तराखंड)

फैक्स : 0135-2653265

● **जीवन पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.** *[चेन्नई]*

शॉप नं.-7, धन्धापानी स्ट्रीट, नजदीक श्री विलेन्कानी सीनियर सै. स्कूल, टी, नगर, चेन्नई-17 *(तमिलनाडू)*

दूरभाष : (044)-24347466 फैक्स : 044-24334152

● **जीवन पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.** *[चण्डीगढ़]*

शॉप नं. 58, सेक्टर-20डी, चण्डीगढ़;

दूरभाष : (0172) 5089980, 2728980,

निवास : 2597242; *मोबाइल :* 98150-94170

● **जीवन पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि. [जालन्धर]**

अड्डा होशियारपुर, माई हीरां गेट, जालन्धर शहर *(पंजाब)* *दूरभाष : 0181-5012219*

मोबाइल : 94171-76997

प्रेस : **जे.पी.एच. ऑफसेट प्रेस**, ए–20, सेक्टर 57, नोएडा (यू.पी.)

Printed at : JPH OFFSET PRESS A-20, SEC-57, NOIDA

Code No. : XXXIV—X-3244 (B)

आमुख

जे.पी.एच. 'सी.सी.ई. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना' पुस्तक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पुस्तक 'केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड' (CBSE) की नवीं और दसवीं कक्षाओं *(कोर्स ए तथा बी)* के नवीन सी.सी.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है। इसकी पाठ्य-सामग्री तैयार करते समय अन्य राज्यों के शिक्षा बोर्डों के पाठ्यक्रमों को भी ध्यान में रखा गया है। इसी के अनुरूप हिंदी व्याकरण को भी नए रूप में ढालने का प्रयास किया गया है तथा इसे व्यावहारिक एवं प्रयोजनमूलक बनाया गया है।

नवीन पाठ्यक्रम की वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर हिंदी व्याकरण की प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक की रचना में विभिन्न शिक्षाविदों, भाषा विशेषज्ञों एवं अनुभवी शिक्षकों का सक्रिय सहयोग एवं परामर्श लिया गया है। हम उनके सहयोग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

इस पुस्तक में हिंदी व्याकरण को जटिलताओं से मुक्त करके विद्यार्थियों के स्तर तक लाने की दिशा में सार्थक पहल की गई है। इसकी भाषा सरल एवं बोधात्मक है। प्रत्येक विषय को अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है। इसके उदाहरण जन-सामान्य के जीवन से लिए गए हैं।

यह पुस्तक 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' (*भारत सरकार*) द्वारा निर्धारित **मानक वर्तनी** के अनुरूप तैयार की गई है। इससे विद्यार्थी नई और मान्य वर्तनी को जान सकेंगे। पुस्तक में अलंकार, उपसर्ग, प्रत्यय, पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी, समरूपी भिन्नार्थक, तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द, निबंध, पत्र, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, सार तथा अपठित बोध की सामग्री प्रचुर मात्रा में दी गई है। पत्र-लेखन के प्रारूप में किया गया परिवर्तन 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्' (NCERT) के निर्देशानुसार ही है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों में भाषा की प्रकृति, रचना और गठन को समझने तथा उसके शुद्ध प्रयोग की क्षमता विकसित करने में उपयोगी सिद्ध होगी। विद्यार्थियों को यह पुस्तक विशेष रूप से रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक प्रतीत होगी।

इस पुस्तक में सुधार एवं परिष्कार की दृष्टि से सुविज्ञजनों द्वारा भेजे गए सुझावों को प्राप्त कर हमें अत्यंत प्रसन्नता होगी।

– प्रकाशक व लेखक

विषय-सूची

क्र.सं. | पृष्ठ स

खंड 'क' व्याकरण — 1–

खंड 'ख' रचना खंड 281–428

सी॰बी॰एस॰ई॰ पाठ्यक्रम व अंक योजना

नोट : केवल व्याकरण और रचना से संबंधित पाठ्यक्रम दिया जा रहा है। पाठ्यपुस्तकों का पाठ्यक्रम अलग है।

हिंदी (कोर्स-ए) कक्षा–10

खण्ड-'क' : अपठित गद्यांश बोध 20

1. (*i*) साहित्यिक गद्यांश (300 से 400 शब्द) 12
2. (*ii*) काव्यांश (250 से 300 शब्द) दो में से एक काव्यांश करना होगा। 8

उपर्युक्त गद्यांश एवम् काव्याशों पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदुओं / विशेषताओं आदि पर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

खण्ड-'ख' : रचना 15

3. (*i*) संकेत-बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर निबंध-लेखन (विकल्प सहित) 10
4. (*ii*) पत्र-लेखन (औपचारिक/अनौपचारिक पत्र) (विकल्प सहित) 5

खण्ड-'ग' : व्यावहारिक-व्याकरण 15

5. (*i*) क्रिया-भेद : अकर्मक / सकर्मक, मुख्य क्रिया, सहायक क्रिया, संयुक्त क्रिया 2
   (*ii*) विशेषण और क्रिया-विशेषण 2
6. (*iii*) पद-परिचय 2
   (*iv*) वाक्य-भेद : रचना के अनुसार, रचनान्तरण 3
7. (*v*) वाच्य परिवर्तन 3
8. (*vi*) अलंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण 3

हिंदी (कोर्स-बी) कक्षा–10

खण्ड-'क' : अपठित गद्यांश 20

1. (*i*) 300 से 400 शब्दों का एक गद्यांश 12
2. (*ii*) 200 से 300 शब्दों का एक काव्यांश 8

उपर्युक्त गद्यांश व काव्याशों पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध और भाषिक बिंदुओं / विशेषताओं पर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे।

खण्ड-'ख' : रचना 10

3. (*i*) पत्र-लेखन (अनौपचारिक) माता-पिता, मित्र या संबंधी आदि को (विकल्प सहित) 5
4. (*ii*) अनुच्छेद-लेखन : सम-सामयिक विषयों पर संकेत बिंदुओं पर आधारित 5
   80 से 100 शब्दों का एक अनुच्छेद (विकल्प सहित)

खण्ड-'ग' : व्यावहारिक व्याकरण 20

5. (*i*) वर्ण-विच्छेद, वर्तनी : 'र' के विभिन्न रूप, अनुस्वार, अनुनासिक, नुक्ता (आगत ध्वनियाँ) 4
6. (*ii*) पाठों के संदर्भ में उपसर्ग, प्रत्यय से शब्द-निर्माण 3
   (*iii*) पर्यायवाची, विलोम और अनेकार्थी शब्द, वाक्याशों के लिए एक शब्द 4
7. (*iv*) वाक्य के अंग, सरल वाक्य 3
8. (*v*) विराम चिन्हों का प्रयोग 3
9. (*iv*) मुहावरे-वाक्य प्रयोग 3

हिंदी (कोर्स-ए) कक्षा-9

खण्ड-'क' : अपठित गद्यांश **20 अंक**

1. दो गद्यांश : (*i*) साहित्यिक गद्यांश (300 से 400 शब्द) 12
2. (*ii*) काव्यांश (250 से 300 शब्द) दो में से एक काव्यांश करना होगा। 8

उपर्युक्त गद्यांशों में से शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु / संरचना आदि पर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे।

खण्ड-'ख' : रचना **15 अंक**

3. (*i*) संकेत बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध-लेखन। (विकल्प सहित) 10
4. (*ii*) संवाद-लेखन / पत्र-लेखन (विकल्प सहित) 5

खण्ड-'ग' : व्यावहारिक व्याकरण **15 अंक**

5. (*i*) शब्द-निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय), विशेषण, लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव
तथा परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव संज्ञा, सर्वनाम तथा (लिंग, वचन, कारक) (2+2+2) 6
समास
6. (*ii*) वाक्य-रचना - वाक्य के अंग, अर्थ के अनुसार वाक्य-भेद 3
7. (*iii*) पर्यायवाची, विलोम, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 3
8. (*iv*) मुहावरे - वाक्य प्रयोग 3

हिंदी (कोर्स-बी) कक्षा-9

खण्ड-'क' : अपठित गद्यांश **20**

1. (*i*) 300 से 400 शब्दों का एक गद्यांश 12
2. (*i*) 200 से 300 शब्दों का एक काव्यांश 8

उपर्युक्त गद्यांश व काव्यांशों पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध और भाषिक बिंदुओं/विशेषताओं पर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे।

खण्ड-'ख' : रचना **10**

3. (*i*) पत्र-लेखन (अनौपचारिक) माता-पिता, मित्र या संबंधी आदि को (विकल्प सहित) 5
4. (*ii*) अनुच्छेद-लेखन : सम-सामयिक विषयों पर संकेत बिंदुओं पर आधारित
80 से 100 शब्दों का एक अनुच्छेद (विकल्प सहित) 5

खण्ड-'ग' : व्यावहारिक व्याकरण **20**

5. (*i*) वर्ण-विच्छेद, वर्तनी : 'र' के विभिन्न रूप, अनुस्वार, अनुनासिक, नुक्ता (आगत ध्वनियाँ) 4
6. (*ii*) पाठों के संदर्भ में उपसर्ग, प्रत्यय से शब्द-निर्माण 3
(*iii*) पर्यायवाची, विलोम और अनेकार्थी शब्द, वाक्याशों के लिए एक शब्द 4
7. (*iv*) वाक्य के अंग, सरल वाक्य 3
8. (*v*) विराम चिन्हों का प्रयोग 3
9. (*vi*) मुहावरे - वाक्य प्रयोग 3

CONSTITUTION OF INDIA

Part III (Articles 12–35)

(*Subject to certain conditions, some exceptions and reasonable restrictions*)

Fundamental Duties of Citizens

Article 51 A :

Fundamental Duties — It shall be the duty of every citizen of India :

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so:

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities: to renounce practices derogatory to the dignity of women:

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wild life and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement.

व्याकरण (Grammar)

अध्याय 1

हिंदी भाषा : परिचय

(Hindi Language : Introduction)

1. भाषा क्या है ? (*What is Language?*)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह अपनी बात दूसरों तक पहुँचाना चाहता है और दूसरों की बात स्वयं समझना चाहता है। विचारों का यह आदान-प्रदान संप्रेषण कहलाता है। संप्रेषण के कई साधन हैं। कभी हम इशारों या अस्पष्ट ध्वनियों का सहारा लेते हैं तो कभी ताली बजाकर अथवा सीटी बजाकर अपनी बात कहते हैं। यह सब संकेत की भाषा है। मनुष्य संप्रेषण के लिए सबसे अधिक जिस माध्यम का सहारा लेता है वह है, **'भाषा'**।

> ❖ ***भाषा भाव और विचार प्रकट करने वाले उन ध्वनि-संकेतों को कहते हैं, जो मानव-मुख से निकले हों।***

मानव-मुख से निकले ये ध्वनि-संकेत एक व्यवस्था में बँधे होते हैं। यह व्यवस्था ध्वनियों के उच्चारण, शब्दों एवं पदों के निर्माण, वाक्यों की रचना आदि में मिलती है। उदाहरणार्थ, हिंदी की ध्वनि व्यवस्था के अनुसार 'प्क', 'प्त' जैसे व्यंजनों से कोई शब्द आरंभ नहीं हो सकता, जबकि 'प्य' से हो सकता है ; जैसे–प्यासा।

भाषा के ध्वनि-संकेत कुछ विशेष अर्थों में रूढ़ होते हैं। इसका विधान हर भाषा में अलग-अलग है। जैसे–एक ही वस्तु के लिए हिंदी में **जल**, तमिल में **तन्नी**, उर्दू में **आब** और अंग्रेजी में **वाटर** शब्द का प्रयोग होता है।

संपूर्ण संसार के ज्ञान-विज्ञान और सभ्यता-संस्कृति का आधार भाषा ही है। अत: हम कह सकते हैं :

> ❖ ***भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम बोलकर या लिखकर अपने मन के भाव या विचार दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के भाव और विचार सुनकर या पढ़कर ग्रहण करते हैं।***

संक्षेप में, **भाषा के लक्षण** निम्नलिखित हैं :

- ❖ भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है।
- ❖ भाषा मूलत: ध्वनि-संकेतों की एक व्यवस्था है।
- ❖ यह मानव-मुख से निकली अभिव्यक्ति है।
- ❖ इसके शब्दों के अर्थ प्राय: रूढ़ होते हैं।
- ❖ ध्वनियों से सार्थक शब्दों का निर्माण होता है।

2. भाषा के रूप (*Forms of Language*)

भाषा की अभिव्यक्ति प्राय: दो रूपों में होती है–**मौखिक** और **लिखित**। मौखिक भाषा मुख से बोली जाती है और लिखित भाषा लिखकर प्रकट की जाती है। **भाषा का मूल रूप मौखिक** होता है। मौखिक रूप मनुष्य को सहज में ही प्राप्त होता है। इसे सीखने के लिए विशेष प्रयत्न की आवश्यकता नहीं होती। **भाषा के लिखित रूप** को सीखने के लिए विशेष प्रयास करना पड़ता है। समाज के विकास-क्रम में भाषा का मौखिक रूप पहले आता है और लिखित रूप बाद में।

लिखित रूप का महत्त्व : भाषा का लिखित रूप बहुत महत्त्वपूर्ण है। यही रूप भाषा को **सुरक्षित** रखता है। लिखित रूप ही भाषा को **मानकता** प्रदान करता है।

ज्ञान की संचित राशि को आगे की पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखने का काम लिखित रूप ही करता है।

लिखित रूप ही भाषा को स्थायी रूप प्रदान करता है।

☞ 3. लिपि (*Script*)

मौखिक भाषा या उच्चरित भाषा को स्थायी रूप देने के लिए भाषा के लिखित रूप का विकास हुआ। प्रत्येक उच्चरित ध्वनि के लिए लिखित चिह्न या वर्ण बनाए गए। वर्णों की इसी व्यवस्था को **लिपि** कहते हैं। वास्तव में लिपि ध्वनियों को लिखकर प्रस्तुत करने का ढंग है।

> ✣ *ध्वनियों को अंकित करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों की व्यवस्था को लिपि कहते हैं।*

संसार की विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं। संस्कृत, हिंदी, मराठी भाषाएँ **'देवनागरी'** लिपि में लिखी जाती हैं। देवनागरी का विकास **'ब्राह्मी लिपि'** से हुआ। ब्राह्मी वह प्राचीन लिपि है जिससे हिंदी, बंगला, गुजराती आदि भाषाओं की लिपियों का विकास हुआ।

देवनागरी लिपि बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है। यह एक वैज्ञानिक लिपि है। भारत की अधिकांश भाषाओं की लिपियाँ बाईं से दाईं ओर ही लिखी जाती हैं। केवल **'फारसी लिपि'** (जिसमें उर्दू भाषा लिखी जाती है) दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है।

नीचे बनी तालिका में प्रमुख भाषाओं की लिपियों के नाम दिए जा रहे हैं :

क्र.सं.	*भाषा*	*लिपि*
1.	हिंदी	देवनागरी
2.	संस्कृत	देवनागरी
3.	मराठी	देवनागरी
4.	नेपाली	देवनागरी
5.	अंग्रेजी, फ्रेंच, पोलिश, जर्मन	रोमन
6.	उर्दू, अरबी, फारसी	फारसी
7.	पंजाबी	गुरुमुखी

☞ **ध्यान दें :** यों तो प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है; पर किसी भाषा को किसी भी लिपि में लिखा जा सकता है। जैसे –

- हम हिंदी भाषा को रोमन लिपि में लिख सकते हैं : गीता पढ़ रही है। *(Geeta Padh Rahi Hai.)*
- पंजाबी को देवनागरी लिपि में : तुसी की करदे हो ?
- अंग्रेजी को देवनागरी लिपि में : हू इज़ गोइंग? *(Who is going ?)*

☞ 4. भाषा-परिवार और भारतीय भाषाएँ (*Language Families and Indian Languages*)

जिस प्रकार मनुष्यों के परिवार होते हैं, उसी प्रकार भाषाओं के भी परिवार होते हैं। ऐसी भाषाओं का समूह, जिनका जन्म किसी एक मूल भाषा से हुआ हो, **'भाषा-परिवार'** कहलाता है। एक ही मूल भाषा से जन्म लेने के कारण इनमें अनेक समानताएँ पाई जाती हैं।

विश्व में लगभग **3000 भाषाएँ** हैं। इन्हें **12 भाषा-परिवारों** में बाँटा गया है। ये परिवार हैं :

1. भारत-यूरोपीय (*भारोपीय*), **2.** द्रविड़, **3.** चीनी, **4.** सेमेटिक, **5.** हेमेटिक, **6.** आग्नेय, **7.** यूराल-अल्टाइक, **8.** बाँटू, **9.** अमेरिकी (*रेड इंडियन*), **10.** काकेशस, **11.** सूडानी, **12.** बुशमैन ।

समय के साथ-साथ एक भाषा बोलने वाली कई जातियाँ विश्व के अलग-अलग देशों में जाकर बसती चली गईं। इतिहास के क्रम में कई नई भाषाएँ बनती चली गईं। ऐसी भाषाएँ जो एक ही मूल भाषा से विकसित होकर फैली हैं, एक भाषा-परिवार का निर्माण करती हैं।

भारत में प्राय: दो भाषा-परिवारों की भाषाएँ प्रचलित हैं :

1. **भारत-यूरोपीय** (भारोपीय) **भाषा परिवार**, 2. **द्रविड़ भाषा परिवार**।

- हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन, ग्रीक, ईरानी आदि भाषाएँ भारत-यूरोपीय भाषा परिवार की भाषाएँ हैं।
  भारत-यूरोपीय भाषा-परिवार की वे भाषाएँ जो भारत में बोली जाती हैं, उन्हें **भारतीय आर्य परिवार** की भाषाएँ कहा जाता है। हिंदी तथा उत्तर भारत की अधिकांश भाषाएँ (*बंगला, गुजराती, पंजाबी, मराठी आदि*) **आर्य भाषा-परिवार** की भाषाएँ मानी जाती हैं, जिनका मूल स्रोत संस्कृत है।
- भारत में दूसरा भाषा-परिवार **द्रविड़-कुल** है। इसकी प्रमुख भाषाएँ हैं : तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम।

☞ 5. भारतीय आर्य भाषा-परिवार (*Indo Aryan Language Family*)

भारत-यूरोपीय परिवार की एक महत्त्वपूर्ण शाखा **भारतीय आर्य भाषा-परिवार** है। हमें इसका प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत में सुरक्षित मिलता है। वैदिक संस्कृत से आधुनिक युग की भारतीय भाषाओं तक आने में इसे चार चरणों से होकर गुजरना पड़ा है :

1. **वैदिक संस्कृत** (*1500 ई.पू. से 800 ई.पू. तक*)
↓
2. **लौकिक संस्कृत** (*800 ई.पू. से 500 ई.पू. तक*)
↓
3. **पालि और प्राकृत** (*500 ई.पू. से 500 ई. तक*)
↓
4. **अपभ्रंश** (*500 ई. से 1000 ई. तक*)

इस विकास-क्रम से स्पष्ट है कि द्रविड़-परिवार की भाषाओं को छोड़कर अन्य भारतीय भाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है।

☞ 6. हिंदी तथा अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ (*Hindi and Other Modern Indian Languages*)

यह तो आप जान ही चुके हैं कि आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है। अपभ्रंश का प्रचलन एवं प्रयोग 500 से 1000 ई. के मध्य होता था। उस समय देश में अपभ्रंश के कई रूप प्रचलित थे; जैसे—शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री। इन्हीं से आधुनिक भारतीय भाषाएँ निकली हैं। अपभ्रंश स्वयं पालि-प्राकृत से विकसित है और पालि-प्राकृत वैदिक संस्कृत से।

आर्य परिवार की आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रमुख हैं : हिंदी, पंजावी, उर्दू, कश्मीरी, सिंधी, गुजराती, मराठी, बंगला, उड़िया, असमिया आदि। संस्कृत से विकसित होने के कारण इन सभी भाषाओं में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है तथा व्याकरण के कई रूप समान हैं। अत: इन भाषाओं को परस्पर समझने और सीखने में कोई कठिनाई नहीं होती।

भाषा-प्रभाव (*Language effect*) : किसी भी भाषा पर केवल अपने परिवार की भाषाओं का ही प्रभाव नहीं पड़ता, अपितु पड़ोसी भाषाओं का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। भारत के दक्षिण में 'द्रविड़ परिवार' की भाषाएँ प्रयोग में लाई जाती हैं। इनके साथ शताब्दियों से आर्य भाषाओं का संपर्क रहा है। अत: दोनों परिवारों की भाषाओं के मध्य ध्वनि, शब्द तथा व्याकरण स्तर पर पर्याप्त समानता पाई जाती है।

मुगलकाल में हिंदी भाषा पर प्रभाव डालने वाली दो प्रमुख भाषाएँ थीं—**अरबी** और **फारसी**। इन्होंने उर्दू के माध्यम से हिंदी के शब्द-भंडार को अत्यधिक प्रभावित किया।

इसी प्रकार **अंग्रेजी** ने हिंदी के शब्द-भंडार और वाक्य-रचना को गहराई से प्रभावित किया है।

☞ 7. हिंदी भाषा-परंपरा (*Hindi Language Tradition*)

जिस रूप में आज हिंदी भाषा बोली और समझी जाती है, वह खड़ी बोली का ही साहित्यिक भाषा रूप है। इसका विकास मुख्यत: 19वीं शताब्दी में हुआ। खड़ी बोली का प्राचीनतम रूप हमें 10वीं शताब्दी में मिलता है, लेकिन 13-14वीं शताब्दी के प्रारंभ में **अमीर खुसरो** ने पहली बार खड़ी बोली हिंदी में कविता रची।

उसकी पहेलियाँ-मुकरियाँ खड़ी बोली में थीं —

पहेली : **एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।**
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे ॥ (*तारों भरा आसमान*)

मुकरी : **वो आवैं तब सादी होय, उन पर दूजा और न कोय।**
कह सखी साजन ? नहिं सखि ढोल ॥

दक्कनी हिंदी : उत्तर भारत की खड़ी बोली को मुसलमान दक्षिण ले गए। वहाँ इसका विकास दक्कनी हिंदी के रूप में हुआ। अरबी-फारसी में लिखी इस भाषा को **दक्कनी उर्दू** नाम मिला।

● मध्य काल तक खड़ी बोली मुख्यत: बोलचाल की भाषा के रूप में प्रचलित रही, साहित्यिक भाषा के रूप में नहीं। उस युग में काव्य की भाषाएँ थीं—**ब्रज भाषा, मैथिली** और **अवधी**।

ब्रज भाषा को सूरदास ने, **अवधी** को तुलसीदास ने और **मैथिली** को विद्यापति ने चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया।

19वीं-20वीं शताब्दी में ज्ञान-विज्ञान का प्रसार हुआ। इसे जन-साधारण तक पहुँचाने के लिए **'खड़ी बोली'** की आवश्यकता उभरकर सामने आई। काव्य की भाषाएँ ब्रज और अवधी थीं, तो गद्य-साहित्य के लिए खड़ी बोली अपनाई गई।

खड़ी बोली को अपनाने और विकसित करने के कई अन्य कारण भी थे– मुद्रण कला का आविष्कार होना, लोकतंत्र की स्थापना, शिक्षा का प्रचार-प्रसार आदि। इन सभी कारणों ने खड़ी बोली को समस्त देश की जन-संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। इसे परिनिष्ठित रूप देने में भारतेंदु हरिश्चंद्र, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद आदि साहित्यकारों का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा। बाद में खड़ी बोली काव्य की भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गई। सन् 1949 में भारतीय संविधान में इसे राजभाषा के रूप में स्वीकृत कर लिया गया।

☞ 8. हिंदी-क्षेत्र तथा बोलियाँ (*Hindi Region and Dialects*)

हिंदी भाषा का क्षेत्र उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली तक फैला हुआ है।

पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल आदि राज्यों में यह संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। मूलत: खड़ी बोली से विकसित होने के बावजूद हिंदी विभिन्न बोलियों के तत्त्वों से मिलकर बनी है।

हिंदी की उपभाषाओं और बोलियों को मोटे तौर पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जाता है :

ब्रज भाषा : मध्यकाल में ब्रज भाषा प्रमुख साहित्यिक भाषा थी। इस भाषा के प्रमुख कवि थे—सूरदास, नंददास (*कृष्णकाव्य*), बिहारी, घनानंद (*रीतिकाव्य*)। ब्रज भाषा में गीतकाव्य की समृद्ध परंपरा मिलती है।

खड़ी बोली : दिल्ली, मेरठ, बिजनौर, सहारनपुर के आस-पास खड़ी बोली का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक कालीन साहित्य खड़ी बोली में रचा गया है। 'साकेत' (*मैथिलीशरण गुप्त*), 'प्रिय प्रवास' (*हरिऔध*), 'कामायनी' (*जयशंकर प्रसाद*) खड़ी बोली की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

अवधी : तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' (*महाकाव्य*) तथा मलिक मोहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' (*महाकाव्य*) की रचना अवधी में की। अवधी में प्रबंध-काव्य परंपरा मुख्य रूप से विकसित हुई।

मैथिली : विद्यापति की प्रसिद्ध रचना 'पदावली' मैथिली में ही है।

तालिका

उपभाषाएँ	बोलियाँ	बोली का क्षेत्र
1. पश्चिमी हिंदी	1. ब्रज भाषा	मथुरा, आगरा (उ.प्र.)
	2. खड़ी बोली	दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर (उ. प्र.)
	3. हरियाणवी (बाँगरू)	रोहतक (*हरियाणा*)
	4. बुंदेली	छतरपुर (*म.प्र.*)
	5. कन्नौजी	कन्नौज (उ.प्र.)
2. पूर्वी हिंदी	1. अवधी	लखनऊ (उ.प्र.)
	2. बघेली	रीवा (*म.प्र.*)
	3. छत्तीसगढ़ी	रायपुर (*छत्तीसगढ़*)
3. बिहारी हिंदी	1. मगही	गया (*बिहार*)
	2. मैथिली	दरभंगा (*बिहार*)
	3. भोजपुरी	बलिया (पूर्वी उ.प्र.)

उपभाषाएँ	बोलियाँ	बोली का क्षेत्र
4. पहाड़ी हिंदी	1. मंडियाली	कुल्लू, मंडी (*हिमाचल प्रदेश*)
	2. गढ़वाली	टिहरी-गढ़वाल (*उत्तराखंड*)
	3. कुमाऊँनी	अल्मोड़ा, नैनीताल (*उत्तराखंड*)
5. राजस्थानी हिंदी	1. जयपुरी	जयपुर (*राजस्थान*)
	2. मेवाती	मेवात क्षेत्र (*राजस्थान-हरियाणा सीमा क्षेत्र*)
	3. मारवाड़ी	जोधपुर, बीकानेर (*राजस्थान*)
	4. मेवाड़ी	मारवाड़ (*राजस्थान*)

☞ 9. राजभाषा हिंदी (*Official Language Hindi*)

भारत की संविधान सभा ने **14 सितंबर, 1949** को हिंदी को भारतसंघ की **राजभाषा** के रूप में स्वीकार किया। संविधान के अनुच्छेद **343** में कहा गया है—"***भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है।***"

हिंदी इन राज्यों की **राजभाषा** है : उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और अंडमान-निकोबार (केंद्रशासित)।

इन राज्यों ने हिंदी को **द्वितीय भाषा** के रूप में मान्यता दी है : पंजाब, गुजरात और महाराष्ट्र ।

संपर्क भाषा के रूप में और बोलचाल में हिंदी भाषा का प्रयोग भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में होता है। देश के अधिकांश क्षेत्रों में इसके अध्ययन और प्रसार की व्यवस्था है। अब हिंदी साहित्य के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान, वाणिज्य, तकनीकी कार्यों एवं शिक्षा-माध्यम के रूप में भी विकसित हो रही है।

☞ 10. मानक भाषा और हिंदी (*Standard Language and Hindi*)

भाषा-विशेष का प्रयोग विस्तृत भू-भाग में होने के कारण उसमें अनेक उपभाषाओं एवं बोलियों का प्रयोग होने लगता है। इसके और भौगोलिक भिन्नता के कारण उसके रूप में विविधता आ जाती है। अतः भाषा में **एकरूपता** और **अनुशासन** लाने के लिए उसके मानक रूप की आवश्यकता होती है। भाषा की मानकता उसे परिनिष्ठित बनाने में सहायक होती है।

शिष्ट और सुशिक्षित लोगों द्वारा प्रयुक्त तथा व्याकरण-सम्मत भाषा-रूप ही मानक रूप कहलाता है। इसी मानक रूप का प्रयोग सरकारी कार्यों एवं साहित्य-रचना में किया जाता है।

आज हिंदी का **खड़ी बोली** रूप ही इसका मानक रूप है। इसकी लिपि देवनागरी का मानक रूप निश्चित किया जा चुका है।

☞ 11. भाषा और व्याकरण (*Language and Grammar*)

प्रत्येक भाषा की अपनी व्यवस्था होती है। एक ही भाव को प्रकट करने के लिए अलग-अलग भाषाओं में सामान्यतः अलग-अलग ध्वनियों, शब्दों और वाक्यों का प्रयोग होता है। इनसे संबंधित नियम भी हर भाषा में प्रायः अलग-अलग होते हैं। **व्याकरण इन नियमों का संकलन तथा विश्लेषण कर भाषा की एक सुनिश्चित व्यवस्था प्रस्तुत करता है।**

व्याकरण मुख्यतः भाषा के नियमों का संकलन और विश्लेषण करता है। शैक्षिक व्याकरण इन नियमों को स्थिर करता है। व्याकरण के विभिन्न नियमों के स्थिर होने से भाषा में एक प्रकार की मानकता आ जाती है। ज्यों-ज्यों भाषा विकसित होती जाती है, वैसे-वैसे उसके प्रयोग के रूप स्थिर होते जाते हैं।

व्याकरण भाषा के नियम नहीं बनाता। किसी भी भाषा-समाज के अधिकांश लोग या शिष्ट वर्ग भाषा के जिस रूप का प्रयोग करते हैं, उसी को व्याकरण आधार मानकर उस भाषा के व्याकरण की रचना करता है। इस प्रकार व्याकरण मूलतः समाज द्वारा सिद्ध प्रयोग का ही अनुसरण करता है। वह स्वयं अपने नियम बनाकर समाज को प्रयोग करने को नहीं कहता। समय के साथ-साथ भाषा में परिवर्तन होता जाता है और वैयाकरण भी उन परिवर्तनों को ध्यान में रखकर व्याकरण में यथा आवश्यक परिवर्तन करता चलता है। अतः हम कह सकते हैं :

❖ *व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके द्वारा भाषा का शुद्ध एवं सर्वमान्य (मानक) रूप बोलना, समझना, लिखना और पढ़ना आता है।*

व्याकरण में भाषा का विश्लेषण कई स्तरों पर किया जाता है :

(क) ध्वनि तथा उच्चारण के स्तर पर, (ख) लिपि तथा वर्तनी के स्तर पर,
(ग) पद के स्तर पर, (घ) वाक्य-रचना के स्तर पर,
(ङ) अर्थ के स्तर पर।

व्याकरण में इन सभी का विवेचन निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत किया जाता है :

1. वर्ण विचार 2. पद विचार 3. वाक्य विचार।

अगले अध्यायों में इन पर विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

☞ स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- भाव और विचार प्रकट करने वाले ध्वनि-संकेत भाषा है।
- भाषा के दो रूप हैं—मौखिक और लिखित ।
- भाषा का मूल रूप मौखिक है।
- भाषा का लिखित रूप उसे मानकता प्रदान करता है एवं सुरक्षित रखता है।
- ध्वनियों को अंकित करने के लिए निश्चित किए गए प्रतीक-चिह्नों की व्यवस्था लिपि कहलाती है।
- संसार की सबसे प्राचीन लिपि 'ब्राह्मी' है। इसी से अधिकांश लिपियों का विकास हुआ।
- हिंदी, संस्कृत, मराठी—देवनागरी लिपि में; अंग्रेजी—रोमन लिपि में; उर्दू-अरबी—फारसी लिपि में और पंजाबी—गुरुमुखी लिपि में लिखी जाती हैं।
- दो प्रमुख भाषा-परिवार हैं—1. भारोपीय (भारत-यूरोपीय), 2. द्रविड़।
- भारत-यूरोपीय परिवार की जो भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं, वे 'भारतीय आर्य भाषा-परिवार' की मानी जाती हैं।
- तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम 'द्रविड़ परिवार' की भाषाएँ हैं।
- आर्य भाषा-परिवार की भाषाओं का मूल स्रोत संस्कृत है।
- आर्य भाषा-परिवार का प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत में सुरक्षित मिलता है।
- भारतीय भाषाओं का विकास चार चरणों में होकर गुजरा है—वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि-प्राकृत और अपभ्रंश।
- अपभ्रंश का प्रचलन 500 ई. से 1000 ई. के मध्य था। अधिकांश भारतीय भाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ।
- मुगल काल में हिंदी भाषा पर प्रभाव डालने वाली दो प्रमुख भाषाएँ थीं—अरबी और फारसी।
- खड़ी बोली का प्राचीनतम रूप दसवीं शताब्दी में मिलता है; पर अमीर खुसरो ने 13-14वीं शताब्दी में खड़ी बोली में कविता रचना प्रारंभ की। साहित्यिक रूप का विकास 19वीं शताब्दी में हुआ।
- मैथिली भाषा को विद्यापति ने, ब्रज भाषा को सूरदास ने तथा अवधी भाषा को तुलसीदास ने चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया।
- 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भारत संघ की राजभाषा घोषित की गई (संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत)।
- पश्चिमी हिंदी की दो प्रमुख बोलियाँ हैं—1. ब्रज भाषा, 2. खड़ी बोली।
- पूर्वी हिंदी की दो प्रमुख बोलियाँ हैं—1. अवधी, 2. बघेली।
- व्याकरण भाषा के नियमों का संकलन एवं विश्लेषण करके उसे सुनिश्चित व्यवस्था प्रदान करता है।
- भाषा का वह रूप, जो शिष्ट एवं शिक्षित समुदाय द्वारा साहित्य एवं शासन में प्रयुक्त होता है, मानक रूप कहलाता है।

अध्याय
2

वर्ण-विचार

(Phonology)

✿ वर्ण-विच्छेद ✿ वर्तनी ✿ 'र' के विभिन्न रूप ✿ अनुस्वार ✿ अनुनासिक ✿ नुक्ता

☞ **वर्ण क्या है ? :** भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। इसके लिखित रूप को **वर्ण** कहते हैं। वर्ण शब्द का प्रयोग ध्वनि और ध्वनि-चिह्न (*लिपि-चिह्न*) दोनों के लिए होता है। इस प्रकार वर्ण भाषा के मौखिक और लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। इसे हम अक्षर भी कह सकते हैं। अक्षर का अर्थ है—उसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते।

✤ *वर्ण या अक्षर वह छोटी-से-छोटी ध्वनि है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।*

वर्णमाला (*Alphabet*) : वर्णों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

मानक देवनागरी वर्णमाला (*Standard Hindi Alphabet*)

स्वर (*Vowels*)	:	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्राएँ	:	×	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

अनुस्वार : ं अं

विसर्ग : ः अः

व्यंजन :

क	ख	ग	घ	ङ			- कवर्ग
च	छ	ज	झ	ञ			- चवर्ग
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़	- टवर्ग
त	थ	द	ध	न			- तवर्ग
प	फ	ब	भ	म			- पवर्ग
य	र	ल	व				- अंतःस्थ
श	ष	स	ह				- ऊष्म

गृहीत	:	ज़	फ़	ऑ	
संयुक्त व्यंजन	:	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

हल् चिह्न (्) : सभी व्यंजन वर्णों के लिपि चिह्नों में '<u>अ</u>' स्वर रहता है, जैसे — क = क् + अ ।
जब स्वर रहित व्यंजन का प्रयोग करना हो तो उसके नीचे हल् चिह्न लगाया ज़ाता है।

हिंदी वर्णों के दो रूप :

अमानक रूप	मानक रूप	अमानक रूप	मानक रूप
ग्र	अ	ॠ	ऋ
रव	ख	भ्क	झ
ध	ध	भ	भ
ल	ल	क्ष	क्ष

वर्णों के भेद (*Kinds of Alphabet*) **:** वर्णों को दो भागों में बाँटा जाता है :

1. स्वर **2. व्यंजन**

स्वर (*Vowels*)

जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास-वायु बिना किसी रुकावट के मुख से निकलती है, उन्हें **स्वर** कहते हैं।

हिंदी में निम्नलिखित स्वर हैं :

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	(ऑ)

- यद्यपि 'ऋ' को लिखित रूप में स्वर माना जाता है, परंतु आजकल हिंदी में इसका उच्चारण 'रि' के समान होता है।
- आजकल अंग्रेजी प्रभाव के कारण 'ऑ' ध्वनि हिंदी में अपनी जगह बना चुकी है। यह 'आ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है। इसका लिपि-चिह्न (ॉ) है। **जैसे**—बॉल, डॉक्टर, हॉकी आदि।

स्वर के भेद (*Kinds of Vowels*)

(क) उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों को दो भागों में बाँट सकते हैं :

1. ह्रस्व स्वर **2. दीर्घ स्वर**

आइए, अब हम इनके बारे में जानें :

1. **ह्रस्व स्वर** (*Short vowels*) **:** जिन स्वरों को सबसे कम समय (*एक मात्रा*) में उच्चरित किया जाता है, उन्हें **ह्रस्व स्वर** कहते हैं। ये हैं—**अ इ उ (ऋ)**।
   ह्रस्व 'ऋ' का प्रयोग केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में होता है, जैसे—ऋषि, ऋतु, कृषि आदि।
   ह्रस्व स्वरों को 'मूल स्वर' भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर** (*Long vowels*) **:** जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से अधिक (*लगभग दुगुना*) समय लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं। ये स्वर हैं : **आ ई ऊ ए ऐ ओ औ**।

● ये स्वर ह्रस्व स्वरों के दीर्घ रूप नहीं हैं, वरन् स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। इन स्वरों में **ए** तथा **औ** का उच्चारण संयुक्त स्वर रूप में भी है, जैसे—'ऐ' में 'अ+इ' दो स्वरों का संयुक्त रूप है। यह उच्चारण तब होता है जब बाद में क्रमशः 'य' और 'व' आएँ ; जैसे—भैया = भइया, कौआ = कउवा

शेष स्थिति में 'ऐ' और 'औ' का उच्चारण शुद्ध स्वर की भाँति होता है ; जैसे—मैल, कैसा, औरत, कौन आदि।

हिंदी में स्वरों में दीर्घता का विशेष महत्त्व है :

ह्रस्व स्वर	दीर्घ स्वर
कम	काम
दिन	दीन
कुल	कूल
बेल	बैल

ह्रस्व स्वर	दीर्घ स्वर
कल	काल
जाति	जाती
सुत	सूत
ओर	और

(ख) होंठों की आकृति के आधार पर स्वरों को दो वर्गों में बाँटा गया है :

1. **वृत्ताकार** (*Round Shape*) **:** जिन स्वरों के उच्चारण में होंठ (*ओष्ठ*) वृत्ताकार (*गोल*) होते हैं, उन्हें वृत्ताकार स्वर कहते हैं; जैसे—उ, ऊ, ओ, औ (ऑ)।

2. **अवृत्ताकार** (*Not Round Shape*) **:** जिन स्वरों के उच्चारण में होंठ (*ओष्ठ*) वृत्ताकार नहीं होते, उन्हें अवृत्ताकार स्वर कहते हैं; जैसे—अ, आ, इ, ई, ए, ऐ।

अनुनासिक स्वर (*Semi-Nasal Vowels*) **:** सभी स्वरों का उच्चारण दो प्रकार से हो सकता है :

(क) केवल मुख से (*only from mouth*)

(ख) मुख और नासिका दोनों से (*both from mouth and nose*)

पहले प्रकार के स्वरों को **निरनुनासिक** कहते हैं, जबकि दूसरे प्रकार के स्वरों को **अनुनासिक स्वर** कहते हैं। अनुनासिक स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से होता है।

इस स्वर के लिखने में चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग किया जाता है ; किन्तु जब स्वर की मात्रा शिरोरेखा के ऊपर लगती है, तब चंद्रबिंदु के स्थान पर केवल (ं) का प्रयोग किया जाता है। जैसे—**आँख, कहीं, पाँत, गोंद** आदि।

नीचे उदाहरण देखें :

निरनुनासिक स्वर	*अनुनासिक स्वर*
अ - सवार	अँ - सँवार
इ - विध	इँ - विंध
उ - उगली	उँ - उँगली
ए - बूढ़े	एँ - बूढ़ें
ओ - गोद	ओं - गोंद

निरनुनासिक स्वर	*अनुनासिक स्वर*
आ - बाट	आँ - बाँट
ई - कही	ईं - कहीं
ऊ - पूछ	ऊँ - पूँछ
ऐ - है	ऐं - हैं
औ - चौक	औं - चौंक

अनुस्वार (*Nasals*)

जिस स्वर का उच्चारण करते समय हवा केवल नाक से निकलती है और उच्चारण कुछ जोर से किया जाता है तथा लिखते समय ऊपर केवल बिंदु (ं) लगाया जाता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे– **कंठ, चंचल, मंच, अंधा, बंदर, कंघा।**

- अनुनासिक स्वर (ँ) और अनुस्वार (ं) में मूल अंतर यही है कि अनुनासिक स्वर स्वर है, जबकि अनुस्वार अनुनासिक व्यंजन का एक रूप है।
- अब हिंदी में उसी वर्ग के पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है, जैसे—संकल्प, टंकार, संबोधन आदि।

अयोगवाह (*After sounds*) : अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन। इन दोनों के साथ योग नहीं है; अतः ये **अयोगवाह** कहलाती हैं। ये केवल दो हैं—**अं** और **अः**।

हिंदी वर्णमाला के अनुसार इन्हें स्वरों के साथ रखा जाता है ; किंतु ये स्वर ध्वनियाँ नहीं हैं। संस्कृत व्याकरण की परंपरा में इन्हें **अयोगवाह** कहते हैं। इनका उच्चारण व्यंजनों के उच्चारण की तरह स्वर की सहायता से ही होता है। अयोगवाह के उच्चारण से पूर्व स्वर आता है। स्वर एवं व्यंजनों के मध्य की स्थिति होने के कारण ही इनको वर्णमाला में स्वरों के बाद स्थान दिया गया है।

विसर्ग : (:) विसर्ग का उच्चारण 'ह्' व्यंजन के समान होता है, जैसे—स्वतः (*स्वतह्*)। विसर्ग का प्रयोग अधिकतर उन शब्दों में होता है, जो संस्कृत तत्सम रूप में हिंदी में आए हैं, जैसे—प्रायः, अतः, मनःस्थिति, छिः आदि।

- 'दुःख' अब दुख लिखा जाने लगा है, पर 'दुःखानुभूति' में विसर्ग का प्रयोग होता है।

व्यंजन (*Consonants*)

जिन ध्वनियों के उच्चारण में वायु रुकावट के साथ मुँह से बाहर आती है, उन्हें **व्यंजन** कहते हैं।

हिंदी वर्णमाला में मूलतः **33 व्यंजन** हैं। दो व्यंजन '**ड़**' और '**ढ़**' क्रमशः '**ड**', '**ढ**' से विकसित हुए हैं।

हिंदी में अरबी, फारसी, तुर्की आदि के शब्द आ जाने के कारण आने वाली ध्वनियों के लिए जो व्यंजन बनाए गए हैं, वे हैं—क़, ख़, ग़, फ़, ज़ । हिंदी में व्यंजन इस प्रकार हैं :

स्पर्श व्यंजन

कवर्ग	–	क	ख	ग	घ	ङ		
चवर्ग	–	च	छ	ज	झ	ञ		
टवर्ग	–	ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
तवर्ग	–	त	थ	द	ध	न		
पवर्ग	–	प	फ	ब	भ	म		
अंतस्थ व्यंजन	–	य	र	ल	व			
ऊष्म व्यंजन	–	श	ष	स	ह			
संयुक्त व्यंजन	–	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

☞ **ध्यान दें :**

- ड़, ढ़ हिंदी के विकसित व्यंजन हैं। ये संस्कृत में नहीं थे।
- ज़, फ़ ध्वनियाँ विदेशी (अरबी, फ़ारसी तथा अंग्रेजी) प्रभाव से हिंदी में आ गई हैं।
- हिंदी में 'ङ' और 'ञ' का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।
- उपर्युक्त सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर मिला हुआ है।
  स्वर रहित व्यंजन हलंत (्) के साथ लिखे जाते हैं; जैसे–क्, छ्, द्।
- क्ष, त्र, ज्ञ और श्र संयुक्त व्यंजन हैं।
  क् + ष = क्ष त् + र = त्र ज् + ञ = ज्ञ श् + र = श्र
- हिंदी में 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्यँ' के समान होता है।

व्यंजनों का वर्गीकरण (*Classification of Consonants*) **:** उच्चारण की दृष्टि से व्यंजन वर्णों को दो प्रकार से विभाजित किया जाता है :

1. स्थान के आधार पर, 2. प्रयत्न के आधार पर।

1. स्थान के आधार पर (*Places of Pronunciation*) **:** व्यंजनों का उच्चारण मुख के विभिन्न अवयवों–कंठ, तालु, मूर्धा आदि से किया जाता है। जो वर्ण मुख के जिस भाग से बोला जाता है, वही उस वर्ण का **'उच्चारण स्थान'** कहलाता है।

वर्णों के उच्चारण स्थान इस प्रकार हैं :

वर्ण का नाम	*उच्चारण स्थान*	*वर्ण*
कंठ्य	कंठ (गले)	क, ख, ग, घ, ङ
तालव्य	तालु	च, छ, ज, झ, ञ, य, श
मूर्धन्य	तालु का मूर्धा भाग	ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, ष
दंत्य	दाँतों का मूल	च, थ, द, ध, न
वर्त्स्य	दंतमूल	न, स, ज़, र, ल
ओष्ठ्य	दोनों होंठ	प, फ, ब, भ, म
दंतोष्ठ्य	निचले होंठ और ऊपर के दाँत	व, फ
स्वरयंत्रीय	स्वरयंत्र	ह

2. प्रयत्न के आधार पर (*Manner of Articulation*) **:** व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास का कंपन, श्वास की मात्रा तथा जिह्वा आदि अवयवों द्वारा श्वास के अवरोध की प्रक्रिया का नाम प्रयत्न है।

प्राय: यह प्रयत्न **तीन** प्रकार से होता है :

1. *स्वरतंत्री में साँस के कंपन* के रूप में।
2. *श्वास (प्राण) की मात्रा* के रूप में।
3. *मुख-अवयवों द्वारा श्वास रोकने* के रूप में।

अब हम इन तीनों रूपों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त करेंगे।

1. स्वरतंत्री में श्वास का कंपन : हमारे गले में दो झिल्लियाँ होती हैं, जो वायु के वेग से काँपकर बजने लगती हैं, इन्हें स्वरतंत्री कहते हैं। स्वर-तंत्रियों में होने वाले कंपन के आधार पर व्यंजन वर्णों के दो भेद हैं–**अघोष** और **सघोष**।

(क) अघोष (*Non-wavering Sound*) **:** जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं होता, उन्हें अघोष कहते हैं। हिंदी की अघोष ध्वनियाँ ये हैं :

क	ख		च	छ		ट	ठ		त	थ		प	फ

← वर्गों के प्रथम तथा द्वितीय व्यंजन

तथा

फ़	श		ष	स

(ख) सघोष (*Wavering Sound*) : जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन होता है, उनको सघोष कहते हैं। हिंदी के सघोष व्यंजन हैं :

ग घ ङ   ज झ ञ   ड ढ ण   द ध न   ब भ म ← वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें व्यंजन

तथा   ड़ ढ़ ज़ य र ल व ह   ← व्यंजन

● सभी स्वर सघोष होते हैं।

2. श्वास की मात्रा : इस आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं :

(क) अल्पप्राण (*Non-Aspirated*),

(ख) महाप्राण (*Aspirated*)।

(क) अल्पप्राण (*Non-Aspirated*) : जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास (*प्राण वायु*) कम मात्रा में बाहर निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। ये हैं :

क ग ङ   च ज ञ   ट ड ण   त द न   प ब म

← वर्गों के पहले, तीसरे और पाँचवें वर्ण →

तथा   ड़ य र ल व

(ख) महाप्राण *(Aspirated)* : जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में बाहर निकलती है, उन्हें महाप्राण कहते हैं। ये हैं :

ख घ   छ झ   ठ ढ   थ ध   फ भ ← वर्गों के दूसरे और चौथे वर्ण तथा   ढ़ ह

❖ न, म, ल–ध्वनियों के महाप्राण रूप क्रमशः न्ह, म्ह, ल्ह हैं। इनके लिए अलग से वर्ण-चिह्न नहीं हैं।

3. जिह्वा तथा अन्य अवयवों द्वारा श्वास का अवरोध : इस आधार पर व्यंजनों को निम्नलिखित वर्गों में रखा जाता है :

1. स्पर्श : जिन व्यंजनों के उच्चारण में एक उच्चारण अवयव (*जीभ या होंठ*) व दूसरा उच्चारण अवयव का स्पर्श करता है, जिससे वायु पूर्ण रूप से रुक जाती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे—

क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ ।

नासिक्य — नासिक्य व्यंजन मुख के साथ-साथ नाक से बोले जाने वाले व्यंजन हैं। प्रत्येक वर्ग का पाँचवाँ व्यंजन नासिक्य स्पर्श है। जैसे : **ङ, ञ ण न म**

(ध्यान रहे, नासिक्य व्यंजन स्पर्श व्यंजन का ही एक उपवर्ग है)

2. स्पर्श-संघर्षी : जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु पहले मुख-अवयव का स्पर्श करती है और फिर घर्षण *(रगड़)* करती हुई बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श-संघर्षी व्यंजन कहते हैं। ये व्यंजन हैं :

च छ ज झ

3. संघर्षी : स्पर्श ध्वनियों में वायु पूरी तरह से अवरुद्ध रहती है, जबकि संघर्षी ध्वनियों में वायु का अवरोध इस प्रकार रहता है कि वह घर्षण के साथ बाहर आती है। इन्हें ऊष्म ध्वनियाँ भी कहा जाता है। ये व्यंजन हैं :

स श ष ह फ ज़

☞ समझो *अरबी-फारसी के प्रभाव के कारण व्यंजन ध्वनियाँ — क़, ख़, ग़, ज़, फ़ — हिंदी में आगत हैं। इनमें 'क़' स्पर्श ध्वनि है और शेष चारों संघर्षी हैं।*

4. अंतःस्थ : पारंपरिक वर्णमाला के बीच में स्थित होने के कारण य र ल व को अंतःस्थ कहा जाता है। इन वर्णों के उच्चारण में श्वास का अवरोध बहुत ही कम होता है।

5. उत्क्षिप्त : उत्क्षिप्त का अर्थ है—फेंका हुआ । जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा ऊपर उठकर मूर्धा को स्पर्श करके तुरंत नीचे गिरती है, उन्हें 'उत्क्षिप्त' कहते हैं। जैसे– ड़ ढ़

❖ कई विद्वान अंतःस्थ व्यंजनों के दो रूप और मानते हैं :

(*i*) पार्श्विक—ल (*व्यंजन*)   (*ii*) प्रकंपित—र (*व्यंजन*)

☞ व्यंजन-गुच्छ

जब दो या दो से अधिक व्यंजन एक साथ एक श्वास के झटके में बोले जाते हैं, तब उनको **'व्यंजन-गुच्छ'** कहा जाता है। जैसे—प्यास।

शब्द के आदि में प्राय: दो प्रकार के व्यंजन-गुच्छ मिलते हैं :

1. व्यंजन + य, र, ल, व
2. स + य र ल से भिन्न व्यंजन

1.	क्	+	य	=	क्य	**क्यारी**
	क्	+	व	=	क्व	**क्वारा**
	क्	+	र	=	क्र	**क्रम**
	क्	+	ल	=	क्ल	**क्लेश**
2.	श्	+	र	=	श्र	**श्रम**
	श्	+	य	=	श्य	**श्याम**
	स्	+	र	=	स्र	**स्रोत**
3.	स्	+	क	=	स्क	**स्कंध**
	स्	+	त	=	स्त	**स्तन**
	स्	+	न	=	स्न	**स्नान**
	स्	+	फ	=	स्फ	**स्फूर्ति**
4.	ग्	+	य	=	ग्या	**ग्यारह**
	ग्	+	व	=	ग्व	**ग्वाला**
	ग्	+	र	=	ग्र	**ग्राम**
5.	स्	+	ल	=	स्ल	**स्लेट**
	स्	+	ट	=	स्ट	**स्टेशन**
	स्	+	थ	=	स्थ	**स्थल**
	स्	+	प	=	स्प	**स्पष्ट**
	स्	+	म	=	स्म	**स्मारक**

शब्द के मध्य तथा अंत में भी अनेक व्यंजन-गुच्छ मिलते हैं; जैसे—न् + त = अंत, र् + म = मार्ग, प् + त = लुप्त आदि।

☞ व्यंजन-संयोग : जब एक व्यंजन के साथ दूसरा व्यंजन आता है और दोनों का उच्चारण अलग-अलग किया जाए तो व्यंजन-संयोग होता है। व्यंजन-संयोग में व्यंजनों को अलग-अलग लिखना चाहिए।

जैसे— जनता = जन् + ता में न् + त का संयोग है।
उलटा = उल् + टा में ल् + ट का संयोग है।

☞ व्यंजन-द्वित्व : जब कोई व्यंजन अपने समरूप व्यंजन से मिलता है तो ऐसे रूप को व्यंजन-द्वित्व कहते हैं। जैसे—इक्का, पक्का, बच्चा, कट्टर, लड्डू, दिल्ली, लट्टू, उद्देश्य, थप्पड़, उत्तेजित आदि।

☞ इन्हें भी समझो : 'र' व्यंजन युक्त

- ❖ जब 'र' (*स्वर रहित*) किसी व्यंजन के पूर्व हो, जैसे — कर्म, धर्म, वर्ष आदि।
- ❖ जब 'र' (*स्वर सहित*) किसी व्यंजन के बाद हो, जैसे — प्रेम, क्रम आदि।
- ❖ यही स्वर सहित 'र' ट और ड के साथ वर्तनी के साथ कुछ भिन्न रूप ले लेता है, जैसे—ट्रेन, ट्रक, ड्रम आदि।
- ❖ दो व्यंजनों के त और श के साथ इसके विशिष्ट रूप बन जाते हैं—

त् + र = त्र — त्रिशूल, त्रिभुज, यंत्र
श् + र = श्र — श्रम, श्री, आश्रय

अन्य संयुक्त व्यंजन

क् + ष = क्ष — क्षमा, क्षेत्र, क्षत्रिय
ज् + ञ = ज्ञ — ज्ञान, यज्ञ, विज्ञान

('ज्ञ' का उच्चारण प्राय: ग् + य = ग्य के रूप में किया जाता है।)

☞ अक्षर (*Letter*)

प्राय: 'अक्षर' शब्द का प्रयोग स्वरों और व्यंजनों के लिपि चिह्नों के लिए होता है, पर यहाँ 'अक्षर' का प्रयोग कुछ भिन्न अर्थ में किया जा रहा है।

> ❖ ***किसी एक ध्वनि या ध्वनि-समूह की उच्चरित न्यूनतम इकाई को अक्षर कहते हैं। वह छोटी-से-छोटी इकाई अक्षर है, जिसका उच्चारण वायु के एक झटके से होता है।***

उदाहरण—आ, जी, क्या आदि।

हिंदी भाषा में अक्षर मुख्य रूप से निम्नलिखित हैं :

1. केवल स्वर .... **ओ, आ-ओ**
2. स्वर-व्यंजन .... **अब, आज, आँख**
3. व्यंजन-स्वर .... **न, खा, हाँ**
4. व्यंजन-स्वर-व्यंजन .... **घर, देर, साँप**
5. व्यंजन-व्यंजन-स्वर .... **क्या, क्यों**
6. व्यंजन-व्यंजन-व्यंजन-स्वर .... **स्त्री**
7. व्यंजन-व्यंजन-स्वर-व्यंजन .... **प्यास**
8. स्वर-व्यंजन-व्यंजन .... **अंत**
9. स्वर-व्यंजन-व्यंजन-व्यंजन .... **अस्त्र**
10. व्यंजन-स्वर-व्यंजन-व्यंजन .... **संत, शांत**
11. व्यंजन-स्वर-व्यंजन-व्यंजन-व्यंजन .... **शस्त्र**
12. व्यंजन-व्यंजन-स्वर-व्यंजन-व्यंजन .... **प्राप्त, स्वर्ग**

❖ हिंदी में एकाक्षरी शब्द भी प्रयुक्त होते हैं और अनेकाक्षरी भी। जैसे —

एकाक्षरी शब्द – खा, पी, हाँ, जा ।
दो अक्षरी शब्द – आओ, चला, खाया ।
तीन अक्षरी शब्द – आइए, महिला, चलिए, जाइए।
चार अक्षरी शब्द – आइएगा, प्रतिभाएँ ।
पाँच अक्षरी शब्द – अध्यापिकाएँ ।

☞ वर्ण-विच्छेद

जब किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग किया जाता है, तो उसे '**वर्ण-विच्छेद**' कहते हैं। उदाहरण—

विद्यालय	व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
भारतीय	भ् + आ + र् + अ + त् + ई + य् + अ
योग्यता	य् + ओ + ग् + य् + अ + त् + आ

अब इन उदाहरणों को देखो और समझो—

धर्म = ध् + अ + र् + म् + अ
श्रम = श् + र + म् + अ
आलोक = आ + ल् + ओ + क् + अ
विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
योग्यता = य् + ओ + ग् + य् + अ + त् + आ
विकास = व् + इ + क् + आ + स् + अ
कृष्ण = क् + ऋ + ष् + ण् + अ
साहित्य = स + आ + ह + इ + त् + य् + अ
बंधुत्व = ब् + अ + न् + ध् + उ + त् + व् + अ
गंगा = ग् + अ + ङ् + ग् + आ
चंचल = च् + अ + ञ् + च् + अ + ल् + अ
शृंगार = श् + ऋ + ङ् + ग् + आ + र् + अ
त्रिशूल = त् + र् + इ + श् + ऊ + ल् + अ
कक्षा = क् + अ + क् + ष् + आ
ज्ञानी = ज् + ञ् + आ + न् + ई

☞ वर्ण-विच्छेद संबंधी कुछ नियम

❖ वर्ण-विच्छेद करते समय स्वर (वर्ण) के अतिरिक्त शब्द के प्रत्येक वर्ण और उस पर लगी मात्रा को क्रम से पृथक-पृथक लिखते हैं। पहले स्वर रहित वर्ण लिखते हैं। उसके नीचे हलंत (्) लगाते हैं, फिर जिस स्वर की मात्रा लगी हो, उसे लिखते हैं। जैसे–

पी – प् + ई　　कि – क् + इ　　घृ – घ् + ऋ
मो – म् + ओ　　रु – र् + उ　　पू – प् + ऊ
यु – य् + उ　　गै – ग् + ऐ

❖ वर्ण-विच्छेद करते समय जिन व्यंजन वर्णों पर मात्रा नहीं होती, उनके नीचे हलंत लगा कर 'अ' ध्वनि जोड़ते हैं क्योंकि सभी व्यंजन अकारांत तो होते ही हैं अर्थात् सभी व्यंजनों में 'अ' ध्वनि सम्मिलित होती है।

जैसे – क = क् + अ　　न = न् + अ

❖ वर्ण-विच्छेद करते समय जो व्यंजन स्वर रहित होते हैं, उन्हें उनके मूल रूप में अर्थात् हल चिह्न लगाकर लिखा जाता है।

जैसे– ‍प – प्　　त – त्　　क – क्　　ज – ज्

❖ **पंचमाक्षर**

ङ, ञ, ण, न, म – ये पाँचों वर्ण क्रमशः कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग के अंतिम वर्ण हैं। ये पंचमाक्षर कहलाते हैं।

– पंचमाक्षरों का प्रयोग अपने ही वर्ग के व्यंजन के साथ मिलाकर किया जाता है। जैसे–पङ्ख, पन्त, पण्डित, पञ्च, पम्प।
– आजकल टंकण की सुविधा के लिए पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ं) का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे–पंखु, पंडित, पंच, पंत, पंप आदि।
– वर्ण-विच्छेद करते समय पंचमाक्षर का प्रयोग ही अधिक उचित होगा अर्थात् जिस वर्ण पर अनुस्वार लगा हो उसके अगले वर्ण के वर्ग का पंचमाक्षर लिखा जाएगा। जैसे–

पंकज = प् + अ + ङ् + क + अ + ज् + अ्

[यहाँ 'प' पर अनुस्वार लगा है। 'क' उससे अगला वर्णक है, इसके वर्ग (कवर्ग) का पंचमाक्षर 'ङ्' है।]

☞ अन्य उदाहरण

कंगन – क् + अ + ङ् + ग् + अ + न् + अ
मंगल – म् + अ + ङ् + ग् + अ + ल् + अ
चंचल – च् + अ + ञ् + च् + अ + ल् + अ
पंच – प् + अ + ञ् + च् + अ
कंटक – क् + अ + ण् + ट् + अ + क् + अ
कंठ – क् + अ + ण् + ठ् + अ
खंड – ख् + अ + ण् + ड् + अ
छंद – छ् + अ + न् + द् + अ
चंपक – च् + अ + म् + प् + अ + क् + अ
लंबा – ल् + ञ + म् + ब् + आ

– यदि अनुस्वार लगे वर्ण का अगला वर्ण पाँचों वर्गों के अतिरिक्त अंतस्थ (य, र, ल, व) या ऊष्म (श, ष, स्, ह) व्यंजनों में से हो, तो वर्ण-विच्छेद करते समय अनुस्वार का चिह्न लगाना ही अधिक उचित होगा। जैसे–

संसार – स् + अ + ं + स् + आ + र् + अ
संयोग – स् + अ + ं + य् + ओ + ग् + अ
संशय – स् + अ + ं + श् + अ + य् + अ
संस्कार – स् + अ + ं + स् + क् + आ + र् + अ
संवाद – स् + अ + ं + व् + आ + द् + अ

❖ आप जानते हैं कि अनुनासिक का चिह्न ँ है।

● जिन वर्णों के ऊपर कोई मात्रा-चिह्न होता है, उनके साथ अनुनासिक के स्थान पर बिंदी लगाते हैं। जैसे—मैं, शब्दों, लिंग।

● जिन वर्णों के ऊपर कोई मात्रा-चिह्न नहीं होता, वहाँ चंद्रबिंदु ँ (ँ)लगाते हैं। जैसे—वहाँ, लड़कियाँ, दाँत, हँसना आदि।

इनका वर्ण-विच्छेद निम्न प्रकार से करते हैं :

किताबें – क् + इ + त् + आ + ब् + ए + ँ
भाषाएँ – भ् + आ + ष् + आ + ए + ँ
युगों – य् + उ + ग् + ओ + ँ
लिपियाँ – ल + इ + प् + इ + य् + आ + ँ
सूँघना – स् + ऊ + ँ + घ् + अ + न् + आ
चींटी – च् + ई + ँ + ट् + ई
सिंचाई – स् + इ + ँ + च् + आ + ई

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' भाग-1 में आए कुछ शब्दों के वर्ण-विच्छेद

1. धूल

धूल – ध् + ऊ + ल् + अ
रेणु – र् + ए + ण + उ
आविष्कार – आ + व् + इ + ष् + क् + आ + र् + अ
विज्ञापित – व् + इ + ज् + ञ + आ + प् + इ + त् + अ
नक्षत्र – न् + अ + क् + ष् + अ + त् + र् + अ
श्रद्धा – श् + र् + अ + द् + ध् + आ
देशभक्ति – द् + ए + श् + अ + भ् + अ + क् + त् + इ
विडंबना – व् + इ + ड् + अ + म् + ब् + अ + न् + आ
संदिग्ध – स् + अ + न् + द् + इ + ग् + ध् + अ

2. दुख का अधिकार

श्रेणियों – श् + र् + ए + ण् + इ + य् + ओ + ँ
घृणा – घ् + ऋ + ण् + आ
स्त्री – स् + त् + र् + ई
साँप – स + आ + ँ + प् + अ
दक्षिणा – द् + अ + क् + ष् + इ + ण् + आ
संबंध – स् + अ + म् + ब् + अ + न् + ध् + अ
बच्चे – ब् + अ + च् + च् + ए
आँखें – आ + ँ + ख् + ए + ँ

3. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

काठमांडू – क् + आ + ठ् + अ + म् + आ + ण् + ड् + ऊ
दृश्य – द् + ऋ + श् + य् + अ
रस्सियाँ – र् + अ + स् + स् + इ + य् + आ + ँ

विस्तृत – व् + इ + स् + त् + ऋ + त् + अ
श्रमसाध्य – श् + र् + अ + म् + अ + स् + आ + ध् + य् + अ
संतुलन – स् + अ + न् + त् + उ + ल् + अ + न् + अ
शंकु – श् + अ + ङ् + क् + उ

4. तुम कब जाओगे अतिथि

तारीखें – त् + आ + र् + ई + ख् + ए + ँ
हृदय – ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ
आशंका – आ + श् + अ + ङ् + क् + आ
निस्संकोच – न + इ + स् + स् + अ + ङ् + क + ओ + च् + अ
सामीप्य – स + आ + म् + ई + प् + य् + अ
देवत्व – द् + ए + व् + अ + त् + व् + अ
गुंजायमान – ग् + उ + ञ् + ज् + आ + य् + अ + म् + आ + न् + अ
रूपांतरित – र् + ऊ + प् + आ + न् + त् + अ + र् + इ + त् + अ

5. वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन

असंख्य – अ + स् + अ + ङ् + ख् + य् + अ
संपादन – स् + अ + म् + प् + आ + द् + अ + न् + अ
तरंग – त् + अ + र् + अ + ङ् + ग् + अ
शिक्षाशास्त्री – श् + इ + क् + ष् + आ + श् + आ + स् + त् + र + ई
वाद्ययंत्रों – व् + आ + द् + य् + अ + य् + अ + न् + त् + र् + ओ + ँ
आंतरिक – आ + न् + त् + अ + र् + इ + क् + अ
अनुसंधान – अ + न् + उ + स् + अ + न् + ध् + आ + न् + अ
संस्कृति – स् + अ + ं + स् + क् + ऋ + त् + इ

6. कीचड़ का काव्य

आरंभ – आ + र् + अ + म् + भ् + अ
पसंद – प् + अ + स् + अ + न् + द् + अ
सहानुभूति – स् + अ + ह् + आ + न् + उ + भ् + ऊ + त् + इ
जलाशयों – ज् + अ + ल् + आ + श् + अ + य् + ओ + ँ
सिंधु – स् + इ + न् + ध् + उ
मातुश्री – म् + आ + त् + उ + श् + र् + ई
दरारें – द् + अ + र् + आ + र् + ए + ँ
कलाभिज्ञ – क् + अ + ल् + आ + भ् + इ + ज् + ञ् + अ

7. धर्म की आड़

दुरुपयोग – द् + उ + र् + उ + प् + अ + य् + ओ + ग् + अ
नेतृत्व – न् + ए + त् + ऋ + त् + व् + अ
झोंपड़ी – झ + ओ + ँ + प् + अ + ड़ + ई
अट्टालिका – अ + ट् + ट् + आ + ल् + इ + क् + आ

नास्तिक – न् + आ + स् + त् + इ + क् + अ
मनुष्यत्व – म् + अ + न् + उ + ष् + य् + अ + त् + व् + अ
शक्तिशाली – श् + अ + क् + त् + इ + श् + आ + ल् + ई

8. शुक्रतारे के समान

स्वतंत्रता – स् + व् + अ + त् + अ + न् + त् + र् + अ + त् + आ
हत्याकांड – ह् + अ + त् + य् + आ + क् + आ + ण् + ड् + अ
जलियाँवाला – ज् + अ + ल् + इ + य् + आ + ँ + व् + आ + ल् + आ
पुस्तक – प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ
व्यक्तिगत – व् + य् + अ + क् + त् + इ + ग् + अ + त् + अ
पुस्तकें – प् + उ + स् + त् + अ + क् + ए + ँ
धुरंधर – ध् + उ + र् + अ + न् + ध् + अ + र् + अ
राजनीतिज्ञ – र् + आ + ज् + अ + न् + ई + त् + इ + ज् + ञ् + अ

☞ **बलाघात** (*Stress*)

किसी शब्द के उच्चारण में किसी अक्षर पर जो बल दिया जाता है, उसे **बलाघात** कहते हैं।
किसी भी अक्षर के सभी शब्द समान बल से नहीं बोले जाते।
जैसे– 'राम' शब्द में 'रा' पर बल है।
'कबीर' शब्द में 'बी' पर बल है।

❖ बलाघात शब्द स्तर पर भी देखा जाता है, जैसे —
रोको, मत जाने दो । आज मैं रामायण पढ़ूँगा । मैं रामायण कल पढ़ूँगा ।

☞ **अनुतान** (*Intonation*)—बोलने में जो सुर का उतार-चढ़ाव (*आरोह-अवरोह*) होता है, उसे **अनुतान** कहते हैं। इसका महत्त्व शब्द एवं वाक्य दोनों स्तरों पर है। 'अच्छा' शब्द विभिन्न अनुतान से —

अच्छा — सामान्य कथन/स्वीकृति
अच्छा ? — प्रश्नवाचक
अच्छा ! — आश्चर्य

☞ **संगम** (*Juncture*) : पदों का सीमा-संकेत संगम कहलाता है। संगम अक्षरों के बीच के हल्के-से विराम को जानना है।
दो भिन्न स्थानों पर संगम से दो भिन्न अर्थ निकलते हैं ; जैसे —

सिरका	– एक प्रकार का तरल पदार्थ	सिर + का	– सिर से संबद्ध
जलसा	– उत्सव	जल + सा	– जल की तरह
मनका	– माला का दाना	मन + का	– मन का (भाव)

☞ **वर्तनी** (*Spelling*)

शब्द में प्रयुक्त वर्णों की सही क्रमिकता को **वर्तनी** कहते हैं।

वर्तनी के प्रयोग की शुद्धता केवल शब्द-स्तर पर नहीं, अपितु वाक्य स्तर पर भी आवश्यक है। अतः वर्तनी-व्यवस्था को निम्नलिखित बिंदुओं के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है :

वर्ण स्तर पर : मात्रा-संयोजन और संयुक्त व्यंजन बनाने की दृष्टि से सभी वर्णों को चार कोटियों में बाँटा जा सकता है :

❖ खड़ी पाई वाले वर्ण

जिन वर्णों के अंत में खड़ी पाई होती है, जैसे–ख, ग, घ, ज, झ, ण, त, थ, ध, न, प, ब, भ, म, य, ल, व, श, ष, स। जब इनको किसी दूसरे व्यंजन के साथ जोड़ा जाता है तो खड़ी पाई हटा दी जाती है और उसके साथ परवर्ती वर्ण को जोड़ दिया जाता है; जैसे–

ख ख्‍ ख्याल ग ग्‍ ग्यारह ज ज्‍ ज्वाला

❖ **मध्य में खड़ी पाई वाले वर्ण**

जिन व्यंजन वर्णों के मध्य खड़ी पाई होती है .उन्हें दूसरे व्यंजनों के साथ संयुक्त करते समय पाई के आ लगे हिस्से (ु) को आधा काट देते हैं और बाद के वर्ण के साथ जोड़ देते हैं; जैसे–

क क्‍ पक्का फ फ़् मुफ्त

❖ **बिना पाई वाले वर्ण**

जिन व्यंजनों में पाई नहीं होती, उन्हें जब दूसरे व्यंजनों के साथ जोड़ा जाता है तब उनके नीचे **हलंत** (्) लगाया जाता है ये व्यंजन हैं–

छ छ् उच्छ्वास ठ ठ् ओष्ठ्य

❖ **विशिष्ट वर्ण**

र – मात्रा संयोजन और संयुक्ताक्षर बनाने में 'र' की विशेष स्थिति होती है। 'र' में उ, ऊ की मात्रा वर्ण के बीच में लगत है; जैसे–

र + उ = रु – रुपया र् + ऊ = रू – रूप

'र' के विभिन्न रूपों का आगे विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाएगा।

शब्द-स्तर पर

❖ जब किसी शब्द में श, ष, स में तीनों या दो का एक साथ प्रयोग होता है तो वे वर्णमाला के क्रम से (श, ष, स) ही आ हैं; जैसे– शीर्षासन, शासन, शुश्रूषा

❖ स्वर रहित पंचमाक्षर (ङ, ञ्, ण्, न्, म्) जब अपने वर्ग के व्यंजन के पहले आता है तब उसे अनुस्वार (ं) के रूप लिखा जाता है; जैसे–

पंकज (पङ्कज) मंजन (मञ्जन) गंगा (गङ्गा)

पंडित (पण्डित) चंचल (चञ्चल) दंभ (दम्भ)

(यद्यपि ये दोनों रूप शुद्ध हैं, फिर भी सरलता और एकरूपता लाने के लिए इसे स्वीकार किया गया है।)

❖ जब कोई पंचमाक्षर दूसरे पंचमाक्षर के साथ संयुक्त होता है तब पंचमाक्षर ही लिखा जाता है, वहाँ अनुस्वार का प्रयोग नहीं होगा। जैसे–अन्न, सम्मान, भिन्न, मृण्मय।

❖ यदि य, व, ह के पहले स्वर रहित पंचमाक्षर हो तो वहाँ पंचमाक्षर ही रहता है, अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता। जैसे–पुण्य अन्य, साम्य, कन्हैया आदि।

❖ यदि अंतस्थ (य, र, ल, व) और ऊष्म (श, ष, स, ह) से पहले 'सम्' उपसर्ग लगता है, वहाँ 'म्' के स्थान पर अनुस्वा ही लगता है। जैसे–

संयम (सम् + यम) संवाद (सम् + वाद) संलाप (सम् + लाप) संहार (सम् + हार)

अनुनासिकता : अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) के अंतर को ध्यान में रखना होगा।

अनुनासिक स्वर का गुण है। अनुनासिक स्वर के लिए चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग होता है; जैसे–हँसना, काँटा। यदि किस व्यंजन पर मात्रा शिरोरेखा से ऊपर हो तो अनुनासिक (ँ) के स्थान पर बिंदी (ं) का प्रयोग होता है; जैसे–सिंचाई, गोंद, चींटी यह बिंदी अनुनासिकता की सूचक है, अनुस्वार की नहीं।

– कुछ अवर्गीय व्यंजनों के साथ अनुस्वार का ही प्रयोग होता है; जैसे–अंश, कंस, हंस आदि।

– जिस शब्द के अंत में 'ई' की मात्रा (ी) हो तो उसका बहुवचन बनाते समय ई की मात्रा इ की मात्रा (ि) हो जाएगी जैसे–मिठाई → मिठाइयाँ, लड़की → लड़कियाँ, नदी → नदियाँ।

– जिस शब्द के अंत में 'ऊ' की मात्रा (ू) हो तो उसका बहुवचन बनाते समय ऊ का उ हो जाता है; जैसे– लड्डु → लड्डुओं, भालू → भालुओं।

– अकारांत और आकारांत शब्दों के बहुवचन में ओकारांत रूप अनुस्वार युक्त होता है; जैसे– पहाड़ → पहाड़ों, लड़का → लड़कों।

उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ और उनका निराकरण *(Correction in Pronunciation)*

शुद्ध भाषा लिखने-पढ़ने में शुद्ध उच्चारण का बहुत महत्त्व है! हिंदी में वर्तनी की जो अशुद्धियाँ पाई जाती हैं, उनका एक प्रधान कारण अशुद्ध उच्चारण है।

यहाँ ऐसे शब्दों के उदाहरण दिए जा रहे हैं जिनके उच्चारण में प्रायः अशुद्धि होती है :

तालिका

वर्तनी संबंधी सामान्य अशुद्धियाँ

1. ह्रस्व स्वर के स्थान पर दीर्घ तथा दीर्घ स्वर के स्थान पर ह्रस्व

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
(क) आधीन	अधीन	(ख) अहार	आहार
आजकाल	आजकल	चहिए	चाहिए
दावात	दवात	नराज	नाराज
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	परलौकिक	पारलौकिक
अनाधिकार	अनधिकार	परिवारिक	पारिवारिक
अत्याधिक	अत्यधिक	अगामी	आगामी
(ग) बुद्धी	बुद्धि	(घ) पितांबर	पीतांबर
मुनी	मुनि	निरस	नीरस
कवी	कवि	परिक्षा	परीक्षा
व्यक्ती	व्यक्ति	दिक्षा	दीक्षा
अतिथी	अतिथि	निरिक्षण	निरीक्षण
शक्ती	शक्ति	दिवाली	दीवाली
नदीयाँ	नदियाँ	आशिर्वाद	आशीर्वाद
हानी	हानि	अद्वितिय	अद्वितीय
पूर्ती	पूर्ति	विमारी	वीमारी
(ङ) शुन्य	शून्य	(च) साधू	साधु
पुज्य	पूज्य	प्रभू	प्रभु
पुर्ण	पूर्ण	दयालू	दयालु
सुर्य	सूर्य	पशू	पशु
पुर्व	पूर्व	शिशू	शिशु

2. नासिक्य व्यंजन संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
(क) गँड़ेश	गणेश	(ख) गनेश	गणेश
गड़ना	गणना	रनभूमि	रणभूमि
रँडभूमि	रणभूमि	शरन	शरण
शरड़	शरण	रामायन	रामायण
टिप्पड़ी	टिप्पणी	टिप्पनी	टिप्पणी
गड़ित	गणित	प्रान	प्राण

3. अल्पप्राण-महाप्राण संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
श्रेष्ट	श्रेष्ठ	मख्खन	मक्खन
पथ्थर	पत्थर	गद्ढा	गड्ढा
बघ्घी	बग्घी	लठ्ठा	लट्ठा
घनिष्ट	घनिष्ठ	जिव्हा	जिह्वा
संतुष्ठ	संतुष्ट	विशिष्ठ	विशिष्ट
मख्खी	मक्खी	अभीष्ठ	अभीष्ट

4. व-ब की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पूर्ब	पूर्व	बनस्पति	वनस्पति
बन	वन	बैदेही	वैदेही
बिष	विष	बृष्टि	वृष्टि
बस्तु	वस्तु	बर्षा	वर्षा

5. श, ष, स संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
(क) असोक	अशोक	(ख) अमावश्या	अमावस्या
साखा	शाखा	शंकट	संकट
आदर्स	आदर्श	प्रशाद	प्रसाद
विस्वास	विश्वास	नमश्कार	नमस्कार
प्रसंसा	प्रशंसा	शुशोभित	सुशोभित
सक्ति	शक्ति	शारांश	सारांश
(ग) कश्ट	कष्ट	रास्ट्र	राष्ट्र
पुश्प	पुष्प	भविश्य	भविष्य

6. छ-क्ष संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
छमा	क्षमा	छेम	क्षेम
छुद्र	क्षुद्र	दीछा	दीक्षा
छेत्र	क्षेत्र	लछमण	लक्ष्मण
नछत्र	नक्षत्र	लछण	लक्षण
विपछ	विपक्ष	कछा	कक्षा

7. ऋ-र संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
श्रंगार	श्रृंगार	प्रथक्	पृथक्
किरपा	कृपा	रिषि	ऋषि
ग्रहस्थ	गृहस्थ	ग्रहीत	गृहीत
भृष्ट	भ्रष्ट	रितु	ऋतु
ह्रदय	हृदय	स्मिरति	स्मृति

8. चंद्रबिंदु और अनुस्वार की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ठँडा	ठंडा	कांच	काँच
तँग	तंग	दूंगा	दूँगा
रँक	रंक	दांत	दाँत
सँगम	संगम	पांच	पाँच
कँगन	कंगन	गूंगा	गूँगा
शँकर	शंकर	आंख	आँख

9. व्यंजन-गुच्छों में अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उदेश्य	उद्देश्य	महात्म	माहात्म्य
उज्वल	उज्ज्वल	द्वंद	द्वंद्व
कृप्या	कृपया	परसिद्ध	प्रसिद्ध
चिन्ह	चिह्न	सकूल	स्कूल
सामर्थ	सामर्थ्य	उपलक्ष	उपलक्ष्य
मध्यान्ह	मध्याह्न	शुद	शुद्ध
ब्राम्हण	ब्राह्मण		

10. स्वर और मात्राओं की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुग्रहीत	अनुगृहीत	दृष्टव्य	द्रष्टव्य
म्रिग	मृग	पत्नि	पत्नी
पैत्रिक	पैतृक	पूर्ती	पूर्ति
दृष्टा	द्रष्टा	बिमारी	बीमारी
क्षत्रीय	क्षत्रिय	त्यौहार	त्योहार
अलोकिक	अलौकिक	मधू	मधु
वधु	वधू	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी

11. अनावश्यक स्वर या व्यंजन जोड़ने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
स्राप	शाप	अस्थिर	स्थिर
सहस्त्र	सहस्र	इस्टेशन	स्टेशन

12. रेफ की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आर्शीवाद	आशीर्वाद	सार्मथ्य	सामर्थ्य
तीर्व	तीव्र	कर्मधार्य	कर्मधारय

स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- भाषा की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई ध्वनि है।
- ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं।
- वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।
- वर्णों के दो भेद हैं—(1) स्वर, (2) व्यंजन।
- स्वर दो प्रकार के हैं—ह्रस्व और दीर्घ।
- अनुनासिक स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से होता है। इसका चिह्न है— ँ
- अनुस्वार (ं) के उच्चारण में हवा केवल नाक से निकलती है।
- विसर्ग (:) का उच्चारण 'ह्' व्यंजन के समान होता है।
- व्यंजनों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न के आधार पर किया जाता है।
- व्यंजनों को सघोष-अघोष, अल्पप्राण-महाप्राण, स्पर्श-संघर्षी वर्गों में बाँटा जाता है।
- शब्द में जिस अक्षर पर बल दिया जाता है, उसे बलाघात कहते हैं।

'र' के विभिन्न रूप

- सभी व्यंजनों में 'र' सबसे अनोखा है।
- मात्रा संयोजन और संयुक्ताक्षर बनाने में 'र' की विशिष्ट स्थिति है।
- 'र' में उ और ऊ की मात्रा वर्ण के बीच में लगाई जाती है; जैसे–रुपया, रूप
- 'र' के साथ संयोजन की दो स्थितियाँ हो सकती हैं–

1. स्वर रहित र् + व्यंजन 2. स्वर सहित र + व्यंजन

- जब **स्वर रहित** र् पहले हो और बाद में कोई अन्य स्वर सहित व्यंजन हो तो 'र्' उस व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है। इसे 'रेफ' कहते हैं।

जैसे– र् + क = र्क – अर्क, कर्कश, तर्क
र् + ग = र्ग – मार्ग, दुर्ग, स्वर्ग
र् + ज = र्ज – जर्जर, दर्जी, दुर्जन
र् + झ = र्झ – निर्झर
र् + द = र्द – दर्द, दुर्दिन, मर्द
र् + ध = र्ध – निर्धन, धनुर्धर
र् + प = र्प – दर्प, अर्पण, अर्पित
र् + ब = र्ब – निर्बल, दुर्बल, बर्बर
र् + ण = र्ण – निर्णय, वर्णन, कर्ण
र् + ल = र्ल – निर्लज्ज
र् + य = र्य – निर्यात, तिर्यक
र् + व = र्व – निर्वाह, निर्वासित, निर्वाण

(यदि व्यंजन में कोई मात्रा हो तो यह 'रेफ' मात्रा के ऊपर लगता है; जैसे–पार्टी, सर्वोदय)।

- जब 'र' के साथ कोई स्वर रहित व्यंजन संयुक्त होता है तब 'र' चार प्रकार से लिखा जाता है–

1. पूरी पाई वाले (अंत और मध्य पाई वाले) सभी स्वर रहित व्यंजन जब स्वर सहित व्यंजन के साथ संयुक्त होते हैं तब 'र' को '्र' रूप में लिखते हैं। इसे **पदेन रूप** कहते हैं।

उदाहरण– क् + र = क्र – क्रम
म् + र = म्र – सम्राट
ग् + र = ग्र – ग्रह
घ् + र = घ्र – व्याघ्र
ज् + र = ज्र – वज्र
द् + र = द्र – द्रव
प् + र = प्र – प्रकार
ब् + र = ब्र – ब्रज

2. स्वर रहित द् और 'ह्' जब स्वर सहित 'र' के साथ संयुक्त होते हैं तब 'र' (्र) रूप में ही लिखा जाता है; जैसे–द्रव, ह्रास।
3. स्वर रहित 'ट्' और 'ड्' जब स्वर सहित 'र' के साथ संयुक्त होता है तब 'र' (‸) के रूप में लिखा जाता है; जैसे
ट् + र = ट्र – ट्रक, ट्राम
ड् + र = ड्र – ड्रम, ड्रामा

4. स्वर रहित 'श्' जब स्वर सहित 'र' के साथ संयुक्त होता है तब उसे 'श्र' के रूप में लिख सकते हैं, किंतु इसके लिए मानक वर्णमाला में 'श्र' रूप स्वीकृत है। जैसे–
   श् + र = श्र – श्रम, आश्रय
   इसी प्रकार 'ऋ' की मात्रा ृ भी श् के साथ जुड़कर 'शृ' बन जाती है, जैसे–शृंगार।

'र' के रूप तथा वर्ण-विच्छेद

वर्ण-विच्छेद करते समय 'र' के संयुक्त रूप का विच्छेद करना भी आवश्यक है; जैसे–

सूर्य – स् + उ + र् + य् + अ

प्रेम – प् + र् + ए + म् + अ

भ्रम – भ् + र् + अ + म् + अ

ट्रक – ट् + र् + अ + क् + अ

पाठ्यपुस्तक में स्पर्श भाग-1 'र' के विभिन्न रूप वाले शब्द एवं उनका वर्ण-विच्छेद

1. धूल

पार्थिवता – प् + आ + र् + थ् + इ + व् + अ + त् + आ
दुर्भाग्य – द् + उ + र् + भ् + आ + ग् + य् + अ
दुर्लभ – द् + उ + र् + ल् + अ + भ् + अ
दर्शन – द् + अ + र् + श् + अ + न् + अ
यथार्थ – य् + अ + थ् + आ + र् + थ् + अ
अनिवार्य – अ + न् + इ + व् + आ + र् + य् + अ
प्रेमी – प् + र् + ए + म् + ई
जिक्र – ज् + इ + क् + र् + अ
प्रिय – प् + र् + इ + य् + अ
विक्रेता – व् + इ + क् + र् + ए + त् + आ
प्रवास – प् + र् + अ + व् + आ + स् + अ

2. दुख का अधिकार

दर्जा – द् + अ + र् + ज् + आ
धर्म – ध् + अ + र् + म् + अ
निर्वाह – न् + इ + र् + व् + आ + ह् + अ
पूर्वी – प् + ऊ + र् + व् + ई
व्यर्थ – व् + य् + अ + र् + थ् + अ
कार्य – क् + आ + र् + य् + अ
द्रवित – द् + र् + अ + व् + इ + त् + अ
उम्र – उ + म् + र् + अ
पुत्र – प् + उ + त् + र् + अ

3. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

दुर्गम – द् + उ + र् + ग् + अ + म् + अ
बर्फ – ब् + अ + र् + फ् + अ
पर्वत – प् + अ + र् + व् + अ + त् + अ
व्यर्थ – व् + य् + अ + र् + थ् + अ
पूर्णिमा – प् + उ + र् + ण् + इ + म् + आ

आश्चर्य - आ + श् + च् + अ + र् + य् + अ
कर्मठता - क् + अ + र् + म् + अ + ठ् + अ + त् + आ
अग्रिम - अ + ग् + र् + इ + म् + अ
सर्वप्रथम - स् + अ + र् + व् + अ + प् + र् + अ + थ् + अ + म् + अ
प्रतिदिन - प् + र् + अ + त् + इ + द् + इ + न् + अ
कब्र - क् + अ + ब् + र् + अ

4. तुम कब जाओगे, अतिथि

चतुर्थ - च + अ + त् + उ + र् + थ् + अ
आर्थिक - आ + र् + थ् + इ + क् + अ
निर्णय - न् + इ + र् + ण् + अ + य् + अ
सौहार्द - स् + औ + ह् + आ + र् + द् + अ
प्रश्न - प् + र् + अ + श् + न् + अ
नम्रता - न् + अ + म् + र् + अ + त् + आ
आग्रह - आ + ग् + र् + अ + ह् + अ
पत्रिका - प् + अ + त् + र् + इ + क् + आ

5. वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन

वर्णीय - व् + अ + र् + ण् + ई + य् + अ
समर्पित - स् + अ + म् + अ + र् + प् + इ + त् + अ
शोधकार्य - श् + ओ + ध् + अ + क् + आ + र् + य् + अ
मुखर्जी - म् + उ + ख् + अ + र् + ज् + ई
वर्ण - व् + अ + र् + ण् + अ
ऊर्जा - ऊ + र् + ज् + आ
सर्वोच्च - स् + अ + र् + व् + ओ + च् + च् + अ
संघर्ष - स् + अ + ँ + घ् + अ + र् + ष् + अ
प्रकृति - प् + र् + अ + क् + ऋ + त + इ
तीव्र - त् + ई + व् + र् + अ
प्रदर्शन - प् + र् + अ + द् + अ + र् + श् + अ + न् + अ

6. कीचड़ का काव्य

कर्दम - क् + अ + र् + द् + अ + म् + अ
सर्वत्र - स् + अ + र् + व् + अ + त् + र् + अ
चर्चा - च् + अ + र् + च् + आ
यथाक्रम - य् + अ + थ् + आ + क् + र् + अ + म् + अ
प्रसन्नता - प् + र् + अ + स् + अ + न् + न् + अ + त् + आ

7. धर्म की आड़

मूर्ख - म् + ऊ + र् + ख् + अ
स्वार्थी - स् + व् + आ + र् + थ् + ई

मार्ग – म् + आ + र् + ग् + अ
धार्मिक – ध + आ + र् + म् + ई + क् + अ
संग्राम – स् + अ + ङ् + ग् + र् + आ + म् + अ
प्रपंच प् + र् + अ + प् + अ + ञ + च् + अ
प्रकार – प् + र् + अ + क् + आ + र् + अ

8. शुक्रतारे के समान

स्वर्गीय – स् + व् + अ + र् + ग् + ई + य् + अ
शीर्षक – श् + ई + र् + ष् + अ + क् + अ
वर्तमान – व् + अ + र् + त् + अ + म् + आ + न + अ
फर्क – फ् + अ + र् + क् + अ
शुक्र – श् + उ + क् + र् + अ
प्रभा – प् + र् + अ + भ् + आ
भ्रमण – भ् + र् + अ + म् + अ + ण् + अ
प्रतिकूल – प् + र् + अ + त् + इ + क् + ऊ + ल् + अ

बिंदु (ँ) अनुस्वार

बिंदु (ं) अनुस्वार का चिह्न होता है और चन्द्रविंदु (ँ) अनुनासिक का।

❖ अनुस्वार नासिक्य ध्वनि है। इसका लिपि-चिह्न (ँ) है।

❖ इसे 'अ' के साथ जोड़कर **अं** लिखा जाता है।

❖ इसे अयोगवाह कहते हैं क्योंकि 'अ' के योग से यानी स्वर की सहायता से इसका उच्चारण किया जाता है।

❖ अनुस्वार न तो स्वर है और न ही व्यंजन। अतः स्वर और व्यंजन के मध्य की स्थिति होने के कारण इसे हिंदी देवनागरी लिपि में स्वरों के बाद और व्यंजनों से पूर्व लिखा जाता है।

● अनुस्वार का उच्चरित रूप

अनुस्वार ध्वनि की यह विशेषता है कि इसका अपना कोई निश्चित उच्चरित रूप नहीं होता। इसका उच्चारण इसके आगे आने वाले व्यंजन से प्रभावित होता है अर्थात् यह जिस व्यंजन से पहले आता है, उसी व्यंजन वर्ग की नासिक्य ध्वनि के रूप में इसका उच्चारण किया जाता है। अनुस्वार के उच्चारण के नियमों को **पंचमाक्षर का नियम** कहते हैं।

❖ यदि अनुस्वार **कवर्ग** के वर्णों अर्थात् **क, ख, ग, घ** से पहले हो तो उच्चारण **'ङ'** के समान होगा :

शब्द	*मूल रूप*	*उच्चरित रूप*
पंक	पङ्क	पङ्क
पंखा	पङ्खा	पङ्खा
गंगा	गङ्गा	गङ्गा

❖ यदि अनुस्वार **चवर्ग** के वर्णों अर्थात् **च, छ, ज, झ** से पहले आए तो उसका लिखित रूप **'ञ्'** तथा उच्चारण **'न्'** की भाँति होगा :

शब्द	*मूल रूप*	*उच्चरित रूप*
पंच	पञ्च	पन्च
चंचल	चञ्चल	चन्चल
पंजाब	पञ्जाब	पन्जाब
कंचन	कञ्चन	कन्चन

आश्चर्य - आ + श् + च् + अ + र् + य् + अ
कर्मठता - क् + अ + र् + म् + अ + ठ् + अ + त् + आ
अग्रिम – अ + ग् + र् + इ + म् + अ
सर्वप्रथम – स् + अ + र् + व् + अ + प् + र् + अ + थ् + अ + म् + अ
प्रतिदिन – प् + र् + अ + त् + इ + द् + इ + न् + अ
कब्र – क् + अ + ब् + र् + अ

4. तुम कब जाओगे, अतिथि

चतुर्थ – च + अ + त् + उ + र् + थ् + अ
आर्थिक - आ + र् + थ् + इ + क् + अ
निर्णय – न् + इ + र् + ण् + अ + य् + अ
सौहार्द – स् + औ + ह् + आ + र् + द् + अ
प्रश्न – प् + र् + अ + श् + न् + अ
नम्रता – न् + अ + म् + र् + अ + त् + आ
आग्रह – आ + ग् + र् + अ + ह् + अ
पत्रिका – प् + अ + त् + र् + इ + क् + आ

5. वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन

वर्णीय – व् + अ + र् + ण् + ई + य् + अ
समर्पित – स् + अ + म् + अ + र् + प् + इ + त् + अ
शोधकार्य – श् + ओ + ध् + अ + क् + आ + र् + य् + अ
मुखर्जी – म् + उ + ख् + अ + र् + ज् + ई
वर्ण – व् + अ + र् + ण् + अ
ऊर्जा - ऊ + र् + ज् + आ
सर्वोच्च – स् + अ + र् + व् + ओ + च् + च् + अ
संघर्ष – स् + अ + ँ + घ् + अ + र् + ष् + अ
प्रकृति – प् + र् + अ + क् + ऋ + त + इ
तीव्र – त् + ई + व् + र् + अ
प्रदर्शन – प् + र् + अ + द् + अ + र् + श् + अ + न् + अ

6. कीचड़ का काव्य

कर्दम – क् + अ + र् + द् + अ + म् + अ
सर्वत्र – स् + अ + र् + व् + अ + त् + र् + अ
चर्चा – च् + अ + र् + च् + आ
यथाक्रम – य् + अ + थ् + आ + क् + र् + अ + म् + अ
प्रसन्नता – प् + र् + अ + स् + अ + न् + न् + अ + त् + आ

7. धर्म की आड़

मूर्ख – म् + ऊ + र् + ख् + अ
स्वार्थी – स् + व् + आ + र् + थ् + ई

मार्ग – म् + आ + र् + ग् + अ
धार्मिक – ध + आ + र् + म् + ई + क् + अ
संग्राम – स् + अ + ङ् + ग् + र् + आ + म् + अ
प्रपंच – प् + र् + अ + प् + अ + ञ + च् + अ
प्रकार – प् + र् + अ + क् + आ + र् + अ

8. शुक्रतारे के समान

स्वर्गीय – स् + व् + अ + र् + ग् + ई + य् + अ
शीर्षक – श् + ई + र् + ष् + अ + क् + अ
वर्तमान – व् + अ + र् + त् + अ + म् + आ + न + अ
फर्क – फ् + अ + र् + क् + अ
शुक्र – श् + उ + क् + र् + अ
प्रभा – प् + र् + अ + भ् + आ
भ्रमण – भ् + र् + अ + म् + अ + ण् + अ
प्रतिकूल – प् + र् + अ + त् + इ + क् + ऊ + ल् + अ

बिंदु (ं) अनुस्वार

बिंदु (ं) अनुस्वार का चिह्न होता है और चन्द्रबिंदु (ँ) अनुनासिक का।

❖ अनुस्वार नासिक्य ध्वनि है। इसका लिपि-चिह्न (ं) है।

❖ इसे 'अ' के साथ जोड़कर **अं** लिखा जाता है।

❖ इसे अयोगवाह कहते हैं क्योंकि 'अ' के योग से यानी स्वर की सहायता से इसका उच्चारण किया जाता है।

❖ अनुस्वार न तो स्वर है और न ही व्यंजन। अतः स्वर और व्यंजन के मध्य की स्थिति होने के कारण इसे हिंदी देवनागरी लिपि में स्वरों के बाद और व्यंजनों से पूर्व लिखा जाता है।

● अनुस्वार का उच्चरित रूप

अनुस्वार ध्वनि की यह विशेषता है कि इसका अपना कोई निश्चित उच्चरित रूप नहीं होता। इसका उच्चारण इसके आगे आने वाले व्यंजन से प्रभावित होता है अर्थात् यह जिस व्यंजन से पहले आता है, उसी व्यंजन वर्ग की नासिक्य ध्वनि के रूप में इसका उच्चारण किया जाता है। अनुस्वार के उच्चारण के नियमों को **पंचमाक्षर का नियम** कहते हैं।

❖ यदि अनुस्वार **कवर्ग** के वर्णों अर्थात् **क, ख, ग, घ** से पहले हो तो उच्चारण **'ङ'** के समान होगा :

शब्द	*मूल रूप*	*उच्चरित रूप*
पंक	पङ्क	पङ्क
पंखा	पङ्खा	पङ्खा
गंगा	गङ्गा	गङ्गा

❖ यदि अनुस्वार **चवर्ग** के वर्णों अर्थात् **च, छ, ज, झ** से पहले आए तो उसका लिखित रूप **'ञ्'** तथा उच्चारण **'न्'** की भाँति होगा :

शब्द	*मूल रूप*	*उच्चरित रूप*
पंच	पञ्च	पन्च
चंचल	चञ्चल	चन्चल
पंजाब	पञ्जाब	पन्जाब
कंचन	कञ्चन	कन्चन

❖ यदि अनुस्वार **टवर्ग** के वर्णों अर्थात् **ट, ठ, ड, ढ** से पूर्व हो तो उसका लिखित रूप **'ण्'** और उच्चारण **'न्'** के समान होगा :

शब्द	*मूल शब्द*	*उच्चरित रूप*
घंटा	घण्टा	घन्टा
ठंडा	ठण्डा	ठन्डा
अंडा	अण्डा	अन्डा
कंठ	कण्ठ	कन्ठ
ठंडक	ठण्डक	ठन्डक
भंडारा	भण्डारा	भन्डारा

❖ यदि अनुस्वार **तवर्ग** अर्थात् **त, थ, द, ध** तथा **र, श, स** से पहले हो तो उसका उच्चारण **'न्'** के समान होता है।

शब्द	*मूल रूप*	*उच्चरित रूप*
अंत	अन्त	अन्त
पंथ	पन्थ	पन्थ
जंतु	जन्तु	जन्तु
वंदन	वन्दन	वन्दन
मंथर	मन्थर	मन्थर

❖ यदि अनुस्वार **पवर्ग** के वर्णों अर्थात् **प, फ, ब, भ** तथा **'व्'** वर्ण से पूर्व हो तो उसका उच्चारण **'म्'** के समान होता है।

शब्द	*मूल रूप*	*उच्चरित रूप*
कंपन	कम्पन	कम्पन
संवत	सम्वत	सम्वत
चंपा	चम्पा	चम्पा
अंबर	अम्बर	अम्बर

● अनुस्वार का लिखित रूप

अनुस्वार को लिखने की दो विधियाँ हैं :

1. शिरोरेखा के ऊपर बिंदु के रूप में (ं) जैसे–में, नहीं।
2. पंचम वर्ण के आधे अक्षर के रूप में, जैसे–दंत, गंगा।

❖ यदि इन दोनों विधियों का प्रयोग एक शब्द में किया जाए, जैसे–**संबंध** में, तब इसके ये रूप हो सकते हैं :

सम्बंध सम्बन्ध संबंध

बिंदु के प्रयोग से टंकण/मुद्रण में सुविधा होती है। अतः केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा अनुस्वार का मानकीकरण किया गया है

❖ पंचम वर्णों (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) को उसके प्रथम चार वर्णों के पहले अनुस्वार (ं) के रूप में लिखना चाहिए। जैसे

अङ्क → अंक		पङ्ख → पंख	
गङ्गा → गंगा		कङ्गन → कंगन	
चञ्चल → चंचल		मञ्जन → मंजन	
घण्टी → घंटी		कण्ठ → कंठ	
छन्द → छंद		सन्धि → संधि	
परन्तु → परंतु		चम्पा → चंपा	
गुम्फन → गुंफन		खम्भा → खंभा	

❖ य, व, ह से पहले पंचम वर्ण ही लिखना चाहिए। जैसे–

रम्य	✓	(रंय	×)	कन्हैया	✓	(कंहैया	×)
वन्य	✓	(वंय	×)				

❖ जब दो पंचम वर्ण एक साथ आएँ तो अनुस्वार का प्रयोग नहीं होगा। जैसे–

चिन्मय	✓	(चिंमय	×)	वाङ्मय	✓	(वामंय	×)
पन्ना	✓	(पंना	×)	अन्न	✓	(अंन	×)

❖ श और स से पूर्व अनुस्वार का ही प्रयोग होगा। जैसे–

अंश	✓	(अन्श	×)	वंशी	✓	(वन्शी	×)
ध्वंस	✓	(ध्वन्स	×)	हंस	✓	(हन्स	×)

❖ 'सम्' उपसर्ग से बने शब्दों में 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) ही लिखा जाएगा। जैसे–

सम् + यम = संयम ✓	(सम्यम ×)	सम् + हार = संहार ✓	(सम्हार ×)
सम् + सार = संसार ✓	(सम्सार ×)	सम् + वाद = संवाद ✓	(सम्वाद ×)

अनुनासिक (चंद्रबिंदु ँ)

स्वरों का उच्चारण करते समय जब वायु मुख के साथ नासिका से भी बाहर निकलती है तब अनुनासिक स्वर उच्चरित होते हैं। अनुनासिकता का लिखित चिह्न चंद्रबिंदु ँ है। हिंदी में अनुनासिकता को तीन संदर्भों में देखा जा सकता है :

❖ **बहुवचन रूप बनाने के लिए :**

गुड़िया – गुड़ियाँ   बहू – बहुएँ   तितली – तितलियाँ

❖ **अर्थ-परिवर्तन करने के संदर्भ में :**

सवार – सँवार   बाट – बाँट   पूछ – पूँछ

चौक – चौंक   उगली – उँगली

❖ **उच्चारण के संदर्भ में :**

अनुनासिकता शब्द के प्रारंभ, मध्य और अंत सभी स्थितियों में आ सकती है–

हँसी   महँगा   कुआँ

चाँद   लहँगा   लेखकों

● अनुनासिकता का मानकीकरण

❖ जिन स्वरों या उनकी मात्राओं का कोई भी हिस्सा शिरोरेखा से बाहर नहीं निकलता, वहाँ चंद्रबिंदु का ही प्रयोग करना चाहिए। जैसे–गाँव, सूँघना, उँगली, महिलाएँ, आँख, ऊँट आदि।

❖ जहाँ मात्रा का कोई भी हिस्सा शिरोरेखा के ऊपर हो वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाए। जैसे–क्यों, मैं, चोंच आदि।

अंतर समझें–   हंस – हँस

आगत ध्वनियाँ

'आगत' शब्द का अर्थ है–बाहर से आया हुआ। इसी प्रकार आगत ध्वनियों से तात्पर्य उन ध्वनियों से है जो पहले हिंदी भाषा में नहीं थीं, किंतु विदेशी भाषाओं के शब्दों के प्रभावस्वरूप हिंदी में आ गई हैं और अपना ली गई हैं। मुख्यत: हिंदी में अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओं की ध्वनियाँ आ गई हैं।

हमारे पाठ्यक्रम में इनमें से दो ध्वनियों का उल्लेख है–

❖ अर्धचंद्राकार   ❖ नुक्ता

अब हम इन पर विचार करेंगे।

अर्धचंद्राकार (˘)

अर्धचंद्राकार की ध्वनि अंग्रेजी भाषा के शब्दों में प्रयुक्त होती है। अंग्रेजी भाषा के बहुत से शब्द हिंदी में आ गए हैं अत: ध्वनि भी आ गई है।

यह ध्वनि **आ** और **ओ** के मध्यवर्ती है। जैसे– कॉलेज (कालेज या कौलेज–नहीं)

यह चंद्रबिंदु से भी अलग है, जैसे–

हँसना, आँख – चंद्रबिंदु बॉल, हॉल – अर्धचंद्राकार

अंग्रेजी शब्दों के उच्चरित रूप को सही रूप में लिखने के लिए एक अतिरिक्त चिह्न (˘) विकसित किया गया। **अर्धचंद्राकार** कहते हैं। इसका चिह्न है–˘। इसका उच्चारण **'आ'** और **'ओ'** के बीच की ध्वनि का उच्चारण होता है अर्थात् अंग्रे के आगत शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए हमने 'ऑ' ध्वनि बना ली है।

उदाहरण–

Ball	–	बॉल	Block	–	ब्लॉक
Colony	–	कॉलोनी	Blogg	–	ब्लॉग
Coffee	–	कॉफी	Copy	–	कॉपी
Frock	–	फ्रॉक	Doctor	–	डॉक्टर
Holland	–	हॉलैंड	Chalk	–	चॉक
Commerce	–	कॉमर्स	Hockey	–	हॉकी

☞ **अंतर समझें–**

अर्धचंद्राकार वाले शब्द		*अर्धचंद्राकार के बिना*	
बॉल	(गेंद)	बाल	(सिर के बाल)
हॉल	(बड़ा कमरा)	हाल	(हालचाल)
डॉल	(गुड़िया)	डाल	(पेड़ की डाल)
कॉफी	(पेय पदार्थ)	काफी	(पर्याप्त)

नुक्ता (.)

नुक्ता का प्रयोग अरबी-फारसी के अलावा अंग्रेजी के शब्दों के सही उच्चारण के लिए भी होता है। नुक्ता लगाकर ही इन सही हिंदी रूप लिखा जा सकता है। जैसे–

क़ ख़ ग़ ज़ फ़

❖ इनमें से ज़ और फ़ ध्वनियाँ अरबी-फारसी शब्दों के अतिरिक्त अंग्रेजी शब्दों के माध्यम से भी हिंदी में आई जैसे–आफ़िसर, गज़ेटियर आदि।

नुक्ते के प्रयोग

❖ अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी भाषाओं के जो शब्द हिंदी भाषा में घुल-मिल गए हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का रूप हिंदी ध्वनियों में हो चुका है, वे बिना नुक्ते के भी स्वीकार किए जा सकते हैं। जैसे–किला, कलम, कागज, फैसला आदि।

❖ किंतु जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग आवश्यक है अथवा उनके उच्चारण का भेद बताना जरूरी हो, वहाँ उनके प्रच रूपों में नुक्ता लगाना चाहिए। जैसे–

नुक्ते के बिना		*नुक्ते के साथ*	
राज	(शासन)	राज़	(रहस्य)
खुदा	(खुदा हुआ)	ख़ुदा	(भगवान)
ताक	(देखना)	ताक़	(दीवार का आला)
फन	(साँप का फन)	फ़न	(हुनर)
बाग	(घोड़े की लगाम)	बाग़	(बगीचा)
जरा	(बुढ़ापा)	ज़रा	(थोड़ा)

अंग्रेज़ी के शब्दों में नुक्ता

ब्लेज़र फ़ादर प्रोफ़ेसर रिलीज़ फ़ोटो फ़्रीडम

इज़रायल फ़्रेम फ़ोकस इज़ फ़ीचर

अरबी-फारसी शब्दों में नुक्ता

कमज़ोर मरीज़ ज़ेवर ज़िंदगी ज़ुल्म ज़ुल्फ

मज़दूर ज़रा ज़ोरदार इज़्ज़त कर्ज़ ज़री

फर्ज़ फ़तवा फ़ज़ीयत फ़रमान फ़रमाइश फ़कीर

नुक्ते के प्रयोग से संबंधित प्रश्न

प्रश्न 1. नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण कीजिए और समझाइए कि किस प्रकार नुक्ते के कारण उनके अर्थ में परिवर्तन आ गया है :

राज़ (रहस्य) राज (शासन)

फ़न (कौशल) फन (साँप का फन)

ज़रा (थोड़ा) जरा (बुढ़ापा)

फ़लक (आकाश) फलक (लकड़ी का तख्ता)

प्रश्न 2. ज़, फ़ से युक्त दो-दो शब्द लिखिए–

ज़ – हाज़िर, मज़दूर फ़ – फ़ासला, रफ़्तार

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए–

पाठशाला बड़प्पन वस्तुओं भौतिकी ऊर्जा

सूक्ष्म प्रमाणित परिवर्तन कोलकाता प्रकृति

परमाणु अभियान सागरमाथा किलोमीटर हिमपात

आकर्षित कार्य अभ्यास मृत्यु स्पष्ट

शब्द बनाइए–

स् + व् + आ + ग् + अ + त् + अ क् + उ + स् + उ + म् + अ

न् + आ + स् + त् + इ + क् + अ ह् + अ + त् + य् + आ

द् + ऋ + ष् + ट् + इ

उदाहरण देखो, समझो और करो–

क् + र = क्र – क्रम व् + र =

घ् + र = स् + र =

ग् + र =

ट् + र =

ड् + र =

लिखिए कि निम्नलिखित वर्ण कैसे बने हैं? इनसे बने दो-दो शब्द भी लिखिए।

र्क र्प र्म र्द

नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ में अंतर स्पष्ट हो जाए–

1. कॉफी 2. बॉल 3. डॉल 4. हॉल

काफी बाल डाल हाल

7. नुक़्ते के कारण आए अंतर को स्पष्ट करने के लिए वाक्य-प्रयोग कीजिए–

1. फ़न	2. बाग़	3. राज़	4. ज़रा	5. फ़लक
फन	बाग	राज	जरा	फलक

8. नीचे दिए गए शब्दों में अनुस्वार (ं) अथवा अनुनासिक चिह्न (ँ) लगाकर सार्थक शब्द बनाइए–

बदर	आशका
चिड़िया (बहुवचन रूप)	गाव
सभ्रात	बधन
साप	अत्यत
घटा	मुह
खड	काच
आख	धुआ

9. नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ का अंतर स्पष्ट हो जाए–

1. आधी	2. कस	3. मद	4. पच	5. बद
आँधी	कंस	मंद	पंच	वंद
6. नद	7. पक	8. वदन	9. गोद	10. कही
नंद	पंक	वंदन	गोंद	कहीं

10. वर्ण का प्रयोग किन दो अर्थों में होता है?
(संकेत : *ध्वनि और ध्वनि-चिह्न*)

11. वर्णमाला से क्या तात्पर्य है?
(संकेत : वर्णों का व्यवस्थित समूह)

12. स्वर किसे कहते हैं? ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के दो-दो उदाहरण दीजिए।
(संकेत : *उच्चारण में हवा बिना रुकावट के निकले। ह्रस्व : अ, इ ; दीर्घ : ऐ, ओ*)

13. स्वर और व्यंजन में अंतर स्पष्ट कीजिए।
(संकेत : *व्यंजन के उच्चारण में वायु में रुकावट*)

14. अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर बताइए और दोनों के दो-दो शब्दों के उदाहरण दीजिए।
(संकेत : *अनुस्वार ; कंस, दंत, अनुनासिक : आँख, चाँद*)

15. निम्नलिखित वर्णों के उच्चारण स्थान बताइए–
व, इ, य, म, द, थ
(संकेत : *तालिका देखें*)

16. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :
1. दीर्घ स्वर हिंदी में ———— हैं। (संकेत : 7)
2. किसी भाषा के व्यवस्थित वर्ण-समूह को ———— कहते हैं। (संकेत : *वर्णमाला*)
3. अंतःस्थ व्यंजन हिंदी में ———— हैं। (संकेत : 4)
4. ———— अयोगवाह कहलाते हैं। (संकेत : *अं, अः*)
5. त वर्ग का उच्चारण स्थान ———— है। (संकेत : *दंत्य*)
6. दंतमूल से बोले जाने वाले व्यंजनों को ———— कहते हैं। (संकेत : *वर्त्स्य*)
7. 'ष' और 'स' ———— ध्वनियाँ हैं। (संकेत : *ऊष्म*)
8. 'प' और 'फ' ———— ध्वनियाँ हैं। (संकेत : *स्पर्श*)

17. 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए :
1. क, ख, च, छ अघोष ध्वनियाँ हैं।
2. 'ख', 'घ' अल्पप्राण ध्वनियाँ हैं।
3. व्यंजनों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है।
4. अनुनासिक स्वरों का उच्चारण केवल मुख से किया जाता है।
(संकेत : 1. *हाँ*, 2. *नहीं*, 3. *हाँ*, 4. *नहीं*)

18. व्यंजन-गुच्छ से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित समझाइए।
(संकेत : *दो या अधिक व्यंजन एक साथ एक झटके में बोले जाएँ*)

19. **अक्षर किसे कहते हैं? एकाक्षरी और दो अक्षरी शब्द के उदाहरण दीजिए।**
(संकेत : *ध्वनि-समूह की उच्चरित न्यूनतम इकाई-अक्षर*)
20. **बलाघात किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।**
(संकेत : *किसी अक्षर पर दिया गया बल*)
21. **इन शब्दों को शुद्ध कीजिए :**
आधीन, सुसोभित, भूषन, अभीश्ट, साधू, रुपया, हानी, मिष्ठान, स्वास्थ, पूज्यनीय, निरोग, पुर्ण, रामायन, वर्षा। (स्वयं करें)
22. **निम्नलिखित शब्दों को सही ढंग से लिखिए :**
सांस, माँस, अंधेरा, रंगना, कागज, खतरा, खिड़कियां, आंधी, खबर, गम, जमाना, फायदा, टेलीफोन। (स्वयं करें)
23. **निम्नलिखित संयुक्त व्यंजनों की सहायता से सार्थक शब्द-निर्माण कीजिए :**
क्त, क्य, ख्य, ग्घ, ग्न, ग्य, क्र, च्छ, च्च, ज्य, ट्र, ड्र, प्त, प्य, ब्द, म्न, स्ट, स्त ।
(संकेत : *वक्त, क्यारी, ख्याल, बग्घी, लग्न, ग्यारह, क्रम, अच्छा, कच्चा, ज्यादा, ट्रक, ड्रम, सप्त, प्यार, शब्द, निम्न, स्टाल, चुस्त*)

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा नवीं कक्षा की विभिन्न परीक्षाओं *(Common Exams)* में पूछे गए प्रश्न

1. **(क) स्वर और व्यंजन का अंतर स्पष्ट करो ।**
(संकेत : *स्वर बिना किसी की सहायता से तथा व्यंजन स्वरों की सहायता से उच्चरित किए जाते हैं।*)
(ख) अनुतान किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।
(संकेत - *बोलने में सुर का उतार-चढ़ाव अनुतान है।*)
2. **मूल स्वर और संधि-स्वर में अंतर बताते हुए उदाहरण दीजिए ।**
(संकेत : *दूसरों के मेल से न बनने वाले मूल स्वर–अ, इ, उ, ऋ, दो मूल स्वरों के मेल से बने संधि स्वर हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ*)
3. **मात्रा किसे कहते हैं?**
(संकेत : *व्यंजनों के साथ मिलते समय स्वरों के परिवर्तित रूप को मात्रा कहते हैं।*)
4. **अल्पप्राण और महाप्राण से आप क्या समझते हैं?**
(संकेत : *अल्पप्राण–उच्चारण में श्वास-वायु कम मात्रा में बाहर आती है, महाप्राण में श्वास-वायु अधिक मात्रा में बाहर आती है।*)
5. **संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं? ऐसे दो शब्द लिखिए जिनमें संयुक्त व्यंजन का प्रयोग हुआ हो।**
(संकेत : *दो भिन्न व्यंजनों के परस्पर संयोग को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। जैसे–भक्त, विद्या।*)
6. **व्यंजन से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित बताइए।**
(संकेत : *जिन ध्वनियों के उच्चारण में वायु रुकावट के साथ मुँह से बाहर आए*)
7. **स्वर और व्यंजन की परिभाषा देते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए।**
(संकेत : *प्रश्न 1 (क) का उत्तर देखें।*)
8. **वर्ण के कितने भेद हैं? उनकी परिभाषाएँ लिखिए।**
(संकेत : *वर्ण के दो भेद–(1) स्वर, (2) व्यंजन*)
9. **व्यंजन किसे कहते हैं? स्वर और व्यंजन का भेद स्पष्ट करें।**
(संकेत : *प्रश्न संख्या 6 का उत्तर देखें।*)
10. **वर्ण किसे कहते हैं? इसके भेद उदाहरण सहित लिखिए।**
(संकेत : *वह छोटी-से-छोटी ध्वनि, जिसके और टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण है। भेद : स्वर, व्यंजन*)
11. **अनुनासिक और अनुस्वार में उदाहरण देकर अंतर स्पष्ट करो।**
(संकेत : *अनुनासिक का उच्चारण मुख और नासिका से (ऊँट), अनुस्वार का केवल नाक से (कंठ)*)
12. **(क) स्वर और व्यंजन वर्णों का अंतर दो-दो उदाहरण देकर स्पष्ट करो।**
(संकेत : *प्रश्न 1 (क) का उत्तर देखें।*)
(ख) ह्रस्व स्वर किसे कहते हैं और वे कौन-कौन से हैं?
(संकेत : *जिनके उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर हैं–अ, इ, उ, ऋ*)

नवीं कक्षा हेतु वर्ण-विच्छेद के बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चुनो –

प्रश्न 1. 'कलाभिज्ञ' शब्द का वर्ण–विच्छेद है:–
(क) क् + अ + ल् + भ् + इ + ज् + ञ + अ
(ख) क् + आ + ल् + अ + भ् + इ + ज् + अ
(ग) क् + आ + ल् + आ + भ् + इ + ज् + ञ + अ
(घ) क् + अ + ल् + आ + भ् + इ + ज् + ञ + अ

प्रश्न 2. 'सर्वोच्च' शब्द का वर्ण–विच्छेद है:–
(क) स् + अ + व् + ओ + र् + च् + च् + अ
(ख) स् + अ + र् + अ + व् + ऐ + च् + च् + अ
(ग) स् + अ + र् + व + ऊ + च् + च् + अ
(घ) स् + अ + र् + व् + ओ + च् + च् + अ

प्रश्न 3. 'कंगन' का कौन वर्ण-विच्छेद सही है –
(क) क् + अ + ग् + न् + अ
(ख) क् + अ + ङ् + ग् + अ + न् + अ
(ग) क + ग् + अ + न् + अ

प्रश्न 4. 'चींटी' का वर्ण-विच्छेद होगा –
(क) च् + ई + अ् + ई
(ख) च् + ई + ट् + ई
(ग) च् + इ् + ङ् + ट् + ई

प्रश्न 5. 'छंद' शब्द का कौन-सा वर्ण-विच्छेद सही है ?
(क) छ् + अ + न् + द् + अ
(ख) छ् + न् + द् + अ
(ग) छ् + अ + द् + अ + न्

प्रश्न 6. 'संस्कृति' का कौन-सा वर्ण-विच्छेद सही होगा ?
(क) स् + म् + अ + स् + न् + क् + अ + त् + इ
(ख) स् + अं + स् + क् + ऋ + त् + इ
(ग) स् + अ + स् + क् + ऋ + त् + इ

प्रश्न 7. 'कंटक' शब्द का कौन-सा वर्ण-विच्छेद सही है?
(क) क + ट + न् + क
(ख) क + अ + ण् + ट् + अ + क् + अ
(ग) क् + ट् + ण् + क् + अ

प्रश्न 8. 'आरंभ' का कौन-सा वर्ण-विच्छेद सही है ?
(क) आ + र् + अ + म् + भ् + अ
(ख) अ + अ + र् + अ + न् + भ + अ
(ग) आ + र् + म् + भ् + अ

प्रश्न 9. 'विद्यालय' का कौन-सा वर्ण-विच्छेद सही है?
(क) व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
(ख) व + इ + द् + अ + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
(ग) वि + द् + य् + आ + ल् + य् + अ

प्रश्न 10. 'लंबा' का कौन-सा वर्ण-विच्छेद सही है?
(क) ल + म् + ब् + आ
(ख) ल् + अ + म् + ब् + आ
(ग) ल + ण + म् + ब् + आ

प्रश्न 11. 'आँखें' का सही वर्ण-विच्छेद है –
(क) आ + ँ + ख् + ए + ँ
(ख) आँ + ख् + अ + ए + ँ
(ग) अ + ँ + ख् + ए + ँ

प्रश्न 12. 'देवत्व' का सही वर्ण-विच्छेद है–
(क) द् + ए + व् + अ + त् + व् + अ
(ख) द् + ए + व् + त् + अ + व् + ऊ
(ग) द + ए + व् + त् + अ

उत्तर : 1. (घ), 2. (घ), 3. (ख), 4. (ग), 5. (क), 6. (ग), 7. (ख), 8. (ग), 9. (क), 10. (ख), 11. (क), 12.

अध्याय 3

संधि

(Joining/Coalescence)

✿ *वर्णों के मिलने से आता जो विकार।*
उसी को कहते हैं हम संधि-विचार॥

'संधि' शब्द का अर्थ है—मेल। निकटवर्ती वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को ही **संधि** कहते हैं। जब दो ध्वनियाँ निकट होने पर आपस में मिल जाती हैं और एक नया रूप धारण कर लेती हैं, तब संधि मानी जाती है। जैसे—

हिम + आलय = हिमालय

यहाँ **'हिम'** का अंतिम अंश 'अ' और **'आलय'** का प्रारंभिक अंश 'आ' इतने पास-पास आ गए हैं कि मेल अर्थात् संधि की स्थिति अनिवार्य हो गई है। दोनों मिलकर 'आ' बन गए हैं।

कुछ अन्य उदाहरण देखें :

उत् + लास = उल्लास (*त् + ल = ल्ल*)
जगत् + नाथ = जगन्नाथ (*त् + न = न्न*)
सत् + कर्म = सत्कर्म (*त् + क = त्क*)
सत् + जन = सज्जन (*त् + ज = ज्ज*)
नि: + पाप = निष्पाप (*: + प = ष्प*)
दु: + जन = दुर्जन (*: + ज = र्ज*)
देव + इंद्र = देवेंद्र (*अ + इ = ए*)

उपर्युक्त उदाहरणों में हम देखते हैं कि दो शब्दों के मिलने से जो रूपांतरण हुआ, उससे एक नया शब्द बन गया।
संधि नए-नए शब्दों के निर्माण की एक वैज्ञानिक एवं भाषिक प्रक्रिया है।
आइए, इसके बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त करें।

☞ **संधि-विच्छेद :** संधियुक्त शब्द को फिर से संधि पूर्व अवस्था में ले आना संधि-विच्छेद कहलाता है। जैसे —

'सिंहासन' शब्द का संधि-विच्छेद होगा → सिंह + आसन
पुनर्जन्म → पुन: + जन्म
उद्धरण. → उत् + हरण

संधि के भेद (*Kinds of Joining*) **:** संधि के तीन भेद हैं :

1. स्वर संधि (*Conjunction of vowel with vowel*)
2. व्यंजन संधि (*Conjunction of a consonant with a vowel or consonants*)
3. विसर्ग संधि (*Conjunction of VISARGA (:) with a vowel or consonants*)

☞ 1. स्वर संधि

एक स्वर का दूसरे स्वर के साथ मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे —

चरण + अमृत	चरणामृत
देव + इंद्र	देवेंद्र
भानु + उदय	भानूदय

स्वर संधि के पाँच उपभेद हैं : 1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि 4. यण संधि 5. अयादि सं

1. दीर्घ संधि : जब ह्रस्व या दीर्घ **अ, इ, उ** से परे क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ **अ, इ, उ** आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ हो जाते हैं :

(क)

अ + अ = आ	मत + अनुसार = मतानुसार	सार + अंश = सारांश
	परम + अणु = परमाणु	वेद + अंत = वेदांत
अ + आ = आ	भोजन + आलय = भोजनालय	हिम + आलय = हिमालय
	परम + आत्मा = परमात्मा	दश + आनन = दशानन
आ + अ = आ	यथा + अर्थ = यथार्थ	रेखा + अंकित = रेखांकित
	विद्या + अर्थी = विद्यार्थी	दीक्षा + अंत = दीक्षांत
आ + आ = आ	महा + आत्मा = महात्मा	महा + आनंद = महानंद
	विद्या + आलय = विद्यालय	कृपा + आकांक्षी = कृपाकांक्षी

(ख)

इ + इ = ई	अभि + इष्ट = अभीष्ट	कवि + इंद्र = कवींद्र
	रवि + इंद्र = रवींद्र	कपि + इंद्र = कपींद्र
इ + ई = ई	गिरि + ईश = गिरीश	कपि + ईश = कपीश
	परि + ईक्षा = परीक्षा	मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर
ई + इ = ई	मही + इंद्र = महींद्र	नारी + इंदु = नारींदु
	शची + इंद्र = शचींद्र	नारी + इच्छा = नारीच्छा
ई + ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश	नदी + ईश = नदीश
	जानकी + ईश = जानकीश	नारी + ईश्वर = नारीश्वर

(ग)

उ + उ = ऊ	सु + उक्ति = सूक्ति	लघु + उत्तर = लघूत्तर
	भानु + उदय = भानूदय	विधु + उदय = विधूदय
उ + ऊ = ऊ	अंबु + ऊर्मि = अंबूर्मि	सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि
ऊ + उ = ऊ	वधू + उत्सव = वधूत्सव	भू + उत्सर्ग = भूत्सर्ग
ऊ + ऊ = ऊ	भू + ऊर्जा = भूर्जा	

2. गुण संधि : यदि अ और आ के आगे इ या ई, उ या ऊ, ऋ स्वर आते हैं तो दोनों के मिलने से क्रमशः ए, ओ अर् हो जाते हैं। जैसे —

(क)

अ + इ = ए	देव + इंद्र = देवेंद्र	नर + इंद्र = नरेंद्र
	सत्य + इंद्र = सत्येंद्र	पूर्ण + इंदु = पूर्णेंदु
	कमल + इंदु = कमलेंदु	शुभ + इच्छु = शुभेच्छु
	भारत + इंदु = भारतेंदु	गज + इंद्र = गजेंद्र
आ + इ = ए	यथा + इष्ट = यथेष्ट	महा + इंद्र = महेंद्र
	राजा + इंद्र = राजेंद्र	रमा + इंद्र = रमेंद्र
अ + ई = ए	नर + ईश = नरेश	परम + ईश्वर = परमेश्वर
	राज + ईश = राजेश	कमल + ईश = कमलेश
आ + ई = ए	रमा + ईश = रमेश	महा + ईश = महेश
	महा + ईश्वर = महेश्वर	लंका + ईश = लंकेश

(ख)	अ + उ = ओ	वीर + उचित = वीरोचित	वसंत + उत्सव = वसंतोत्सव
		सूर्य + उदय = सूर्योदय	भाग्य + उदय = भाग्योदय
	अ + ऊ = ओ	जल + ऊर्मि = जलोर्मि	भाव + ऊर्मि = भावोर्मि
		नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा	समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि
	आ + उ = ओ	महा + उत्सव = महोत्सव	महा + उदधि = महोदधि
	आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि	महा + ऊष्मा = महोष्मा
(ग)	अ + ऋ = अर्	राज + ऋषि = राजर्षि	सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
		ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि	देव + ऋषि = देवर्षि
	आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि	

3. वृद्धि संधि : ह्रस्व **अ** या दीर्घ **आ** से परे **ए** या **ऐ** हो तो दोनों मिलकर **ऐ** और **ओ** या **औ** हो तो **औ** हो जाता है। जैसे—

अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक	लोक + एषणा = लोकैषणा
अ + ऐ = ऐ	मत + ऐक्य = मतैक्य	धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य
आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव	तथा + एव = तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य	रमा + ऐश्वर्य = रमैश्वर्य
अ + ओ = औ	परम + ओज = परमौज	दंत + ओष्ठ = दंतौष्ठ
अ + औ = औ	वन + औषधि = वनौषधि	परम + औदार्य = परमौदार्य
आ + ओ = औ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी	महा + ओज = महौज
आ + औ = औ	महा + औषध = महौषध	महा + औदार्य = महौदार्य

4. यण संधि : यदि इ, ई, उ, ऊ और ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो इ/ई का 'य', उ/ऊ का 'व' और ऋ का 'र' हो जाता है। जैसे—

इ + अ = य	अति + अधिक = अत्यधिक	यदि + अपि = यद्यपि
इ + आ = या	इति + आदि = इत्यादि	अति + आवश्यक = अत्यावश्यक
ई + आ = या	सखी + आगमन = सख्यागमन	देवी + आलय = देव्यालय
इ + उ = यु	उपरि + उक्त = उपर्युक्त	अति + उत्तम = अत्युत्तम
इ + ऊ = यू	नि + ऊन = न्यून	वि + ऊह = व्यूह
इ + ए = ये	प्रति + एक = प्रत्येक	अधि + एषणा = अध्येषणा
उ + अ = व	सु + अच्छ = स्वच्छ	अनु + अय = अन्वय
उ + आ = वा	सु + आगत = स्वागत	मधु + आलय = मध्वालय
उ + इ = वि	अनु + इति = अन्विति	अनु + इत = अन्वित
उ + ए = वे	अनु + एषण = अन्वेषण	प्रभु + एषणा = प्रभ्वेषणा
ऊ + आ = वा	वधू + आगमन = वध्वागमन	भू + आदि = भ्वादि
ऋ + आ = रा	मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

5. अयादि संधि : जहाँ ए/ऐ, ओ/औ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो इनके स्थान पर क्रम ए → **अय,** ऐ → **आय,** ओ → **अव** तथा **औ** → **आव** हो जाता है। जैसे—

ए + अ = अय	ने + अन = नयन	शे + अन = शयन
ऐ + अ = आय	नै + अक = नायक	गै + अक = गायक
ऐ + इ = आयि	नै + इका = नायिका	गै + इका = गायिका
ओ + अ = अव	पो + अन = पवन	भो + अन = भवन
औ + उ = आवु	भौ + उक = भावुक	
औ + अ = आव	पौ + अक = पावक	पौ + अन = पावन

आजकल इन शब्दों को हिंदी में संधि युक्त नहीं माना जाता । ये शब्द के रूप में व्यवहृत माने जाते हैं। नियम समझाने के लि उपर्युक्त विवरण दिए गए हैं।

☞ **2. व्यंजन संधि :** व्यंजन वर्ण के आगे किसी स्वर या व्यंजन के आ जाने पर जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे **व्यं संधि** कहते हैं। व्यंजन संधि के कुछ नियम इस प्रकार हैं–

☞ नियम-1 : वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन

यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण आए अथवा य्, र्, ल्, व् या कोई स्वर आए तो क् च्, ट्, त्, प्, अपने ही वर्ग के **तीसरे वर्ण** अर्थात् **ग्, ज्, ड्, द्** तथा **ब्** में बदल जाते हैं जैसे -

क् का ग् में परिवर्तन

दिक् + अंबर - क् + ग = ग = दिगंबर
दिक् + गज - क् + ग = ग्ग = दिग्गज
वाक् + जाल - क् + ज = ग्ज = वाग्जाल
वाक् + दत्ता - क् + द = ग्द = वाग्दत्ता
वाक् + ईश - क् + ई = गी = वागीश
दिक् + भ्रम - क् + भ = ग्भ्र = दिग्भ्रम
वाक् + दान - क् + द = ग्द = वाग्दान
दिक् + दर्शन - क् + द = ग्द = दिग्दर्शन

च् का ज् में परिवर्तन

अच् + अंत = च् + अ = ज = अजंत
अच् + अंबु = च् + अ = ज = अजंबु

ट् का ड् में परिवर्तन

षट् + आनन = ट् + आ = डा = षडानन
षट् + रिपु = ट् + र = ड्र = षड्रिपु

त् का द् में परिवर्तन

सत् + वाणी - त् + व = द्व - सद्वाणी
तत् + रूप - त् + र = द्र - तद्रूप
जगत् + अंबा - त् + अ = द् - जगदंबा
तत् + अनुसार - त् + अ = द - तदनुसार
सत् + धर्म - त् + ध = द्ध - सद्धर्म

तत्	+	आकार	-	त्	+	आ	=	दा	-	तदाकार
महत्	+	आनंद	-	त्	+	आ	=	दा	-	महदानंद
उत्	+	घाटन	-	त्	+	घ	=	द्घ	-	उद्घाटन
भगवत्	+	गीता	-	त्	+	ग	=	द्ग	-	भगवद्गीता
सत्	+	गति	-	त्	+	ग	=	द्ग	-	सद्गति
उत्	+	गम	-	त्	+	ग	=	द्ग	-	उद्गम
सत्	+	उपयोग	-	त्	+	उ	=	दु	-	सदुपयोग

प् का ब् में परिवर्तन

अप्	+	ज	-	प्	+	ज्	=	ब्ज	-	अब्ज

नियम-2 : वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन

यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद न् अथवा म् आए तो क्, च्, ट्, त्, प् का अपने ही वर्ग के पाँचवें वर्ण अर्थात् क का ङ, च का ञ, ट् का ण, त् का न और प का म में परिवर्तन हो जाता है। जैसे-

जगत्	+	नाथ	-	त्	+	न	=	न्न	-	जगन्नाथ
उत्	+	नति	-	त्	+	न	=	न्न	-	उन्नति
षट्	+	मास	-	ट्	+	म	=	ण्म	-	षण्मास
उत्	+	मत्त	-	त्	+	म	=	न्म	-	उन्मत्त
सत्	+	मार्ग	-	त्	+	म	=	न्म	-	सन्मार्ग
वाक्	+	मय	-	क्	+	म	=	ङ्म	-	वाङ्मय
उत्	+	नयन	-	त्	+	न	=	न्न	-	उन्नयन
उत्	+	मेष	-	त्	+	म	=	न्म	-	उन्मेष
चित्	+	मय	-	त्	+	म	=	न्म	-	चिन्मय
दिक्	+	नाग	-	क्	+	न	=	ङ्न	-	दिङ्नाग
प्राक्	+	मुख	-	क्	+	म	=	ङ्म	-	प्राङ्मुख
उत्	+	माद	-	त्	+	म	=	न्म	-	उन्माद

नियम-3 : 'त्' संबंधी नियम

1. त् के बाद च् अथवा छ् हो तो उनका च्, ज् अथवा झ् हो तो ज्, ट् अथवा ठ् हो तो ट्, ड् अथवा ढ् हो तो ड् और ल् हो तो ल् हो जाते हैं। जैसे :

उत्	+	चारण	=	त्	+	च	=	च्च	=	उच्चारण
उत्	+	ज्वल	=	त्	+	ज	=	ज्ज्	=	उज्ज्वल
सत्	+	जन	=	त्	+	ज	=	ज्ज	=	सज्जन
तत्	+	लीन	=	त्	+	ल	=	ल्ल	=	तल्लीन
उत्	+	लास	=	त्	+	ल	=	ल्ल	=	उल्लास
सत्	+	चरित्र	=	त्	+	च	=	च्च	=	सच्चरित्र
उत्	+	लंघन	=	त्	+	ल	=	ल्ल	=	उल्लंघन
उत्	+	छिन्न	=	त्	+	छ	=	च्छ	=	उच्छिन्न
उत्	+	लेख	=	त्	+	ल	=	ल्ल	=	उल्लेख
जगत्	+	छाया	=	त्	+	छ	=	च्छ	=	जगच्छाया
उत्	+	डयन	=	त्	+	ड	=	ड्ड	=	उड्डयन

2. त् के बाद श हो तो त् के स्थान पर च् हो जाता है और श् को छ् में बदल देते हैं। यथा-

उत्	+	श्वास	=	त्	+	श	=	च्छ	=	उच्छवास
उत्	+	शिष्ट	=	त्	+	श	=	च्छ	=	उच्छिष्ट
तत्	+	शंकर	=	त्	+	श	=	च्छ	=	तच्छंकर
सत्	+	शास्त्र	=	त्	+	श	=	च्छ	=	सच्छास्त्र
तत्	+	शिव	=	त्	+	श	=	च्छ	=	तच्छिव
सत्	+	शिव	=	त्	+	श	=	च्छ	=	सच्छिव

3. यदि त् के बाद ह् हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है; यथा-

उत्	+	हार	=	त्	+	ह	=	द्ध	=	उद्धार
तत्	+	हित	=	त्	+	ह	=	द्ध	=	तद्धित
उत्	+	हरण	=	त्	+	ह	=	द्ध	=	उद्धरण
पत्	+	हति	=	त्	+	ह	=	द्ध	=	पद्धति

☞ नियम-4 : 'म्' संबंधी नियम

1. पूर्व पद के अंतिम म् के बाद यदि कोई स्पर्श व्यंजन (क् से म् तक) आए तो म् का उसी वर्ग का **पाँचवाँ वर्ण** अथवा अनुस्वार हो जाता है। जैसे-

सम्	+	देह	=	म्	+	द	=	न्दं	=	सन्देह (संदेह)
सम्	+	चय	=	म्	+	च	=	ञ्च	=	सञ्चय (संचय)
धनम्	+	जय	=	म्	+	ज	=	ञ्ज	=	धनञ्जय (धनंजय)
सम्	+	भावना	=	म्	+	भ	=	म्भ	=	सम्भावना
सम्	+	तोष	=	म्	+	त	=	न्त	=	सन्तोष (संतोष)
किम्	+	कर	=	म्	+	क	=	ङ्क	=	किङ्कर (किंकर)
सम्	+	गति	=	म्	+	ग	=	ङ्ग	=	सङ्गति (संगति)
किम्	+	चित	=	म्	+	च	=	ञ्च	=	किञ्चित (किंचित)
सम्	+	कल्प	=	म्	+	ङ	=	ङ्क	=	सङ्कल्प (संकल्प)
अहम्	+	कार	=	म्	+	क	=	ङ्क	=	अहङ्कार (अहंकार)
किम्	+	तु	=	म्	+	त	=	न्त	=	किन्तु (किंतु)
सम्	+	ध्या	=	म्	+	ध	=	न्ध	=	सन्ध्या (संध्या)
सम्	+	जीवनी	=	म्	+	ज	=	ञ्ज	=	सञ्जीवनी (संजीवनी)

2. 'सम्' उपसर्ग से परे अंतस्थ और ऊष्म व्यंजन (य, र, ल, व, स, श, ह) पर 'म्' का अनुस्वार ही रहेगा। जैसे-

सम्	+	योग	=	संयोग
सम्	+	हार	=	संहार
सम्	+	वाद	=	संवाद
सम्	+	वर्धन	=	संवर्धन
सम्	+	स्मरण	=	संस्मरण
सम्	+	वहन	=	संवहन
सम्	+	सार	=	संसार
सम्	+	यम	=	संयम
सम्	+	लग्न	=	संलग्न

सम्	+	रक्षा	=	संरक्षा
सम्	+	युक्त	=	संयुक्त
सम्	+	रक्षक	=	संरक्षक
सम्	+	रचना	=	संरचना
सम्	+	शय	=	संशय
सम्	+	लाप	=	संलाप
सम्	+	वत	=	संवत
सम्	+	विधान	=	संविधान
सम्	+	हिता	=	संहिता

3. 'सम्' उपसर्ग से परे यदि म् वर्ण आए तो म् का **द्वित्व** हो जाता है। जैसे–

सम् + मुख = सम्मुख
सम् + मति = सम्मति
सम् + मिलित = सम्मिलित
सम् + मोहन = सम्मोहन
सम् + मान = सम्मान
सम् + मिश्रण = सम्मिश्रण

☞ नियम-5 : 'छ्' संबंधी नियम

जब पहले पद के अंत में स्वर हो और उसके आगे के पद का पहला वर्ण छ हो, तो उसके स्थान पर **च्छ** हो जाता है। जैसे–

परि + छेद = परिच्छेद
आ + छादन = आच्छादन
तरु + छाया = तरुच्छाया
वि + छेद = विच्छेद
स्व + छंद = स्वच्छंद
अनु + छेद = अनुच्छेद

☞ नियम-6 : 'स्' का 'ष' में परिवर्तन

यदि अ अथवा आ को छोड़कर किसी अन्य स्वर के बाद स् आए, तो संधि होने पर **स्** का **ष्** हो जाता है; जैसे–

वि + सम = विषम
अभि + सेक = अभिषेक
वि + साद = विषाद
परि + सद = परिषद
सु + सुप्ति = सुषुप्ति
नि + सिद्ध = निषिद्ध
नि + संग = निषंग
नि + सेध = निषेध

अपवाद

अनु + स्वार = अनुस्वार
अनु + सरण = अनुसरण
वि + स्मरण = विस्मरण

☞ नियम-7 : 'न्' का 'ण' में परिवर्तन

ऋ, ष, र् से परे यदि न् हो तो न् का ण् हो जाता है चाहे दोनों वर्णों के मध्य में कोई स्वर, अंतस्थ, कवर्ग, पवर्ग या अनुस्वार में से कोई एक या अनेक वर्ण भी क्यों न आ जाएँ; जैसे–

तृष् + ना = तृष्णा
प्र + नय = प्रणय
राम + अयन = रामायण
कृष् + न = कृष्ण
प्र + नाम = प्रणाम
शोष् + अन = शोषण
भूष् + अन = भूषण
परि + नाम = परिणाम
विष् + नु = विष्णु

उपरोक्त वर्णों के अतिरिक्त यदि किसी वर्ण का व्यवधान होगा तो र्, ष से परे न् का ण् नहीं होगा। यथा-प्रार्थना, अर्चना, दर्शन, दुर्जन, रचना, सृजन।

3. **विसर्ग संधि :** विसर्ग (:) के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने पर जो विकार (परिर्वतन) होता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं। जैसे-

निः + आहार = निराहार (विसर्ग + स्वर)
पुनः + जन्म = पुनर्जन्म (विसर्ग + स्वर)

विसर्ग संधि में विकार निम्नलिखित प्रकार से होते हैं–

☞ **विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन :** यदि अ के बाद विसर्ग हो और आगे वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह में से कोई हो, तो विसर्ग (अः) का **'ओ'** हो जाता है। यथा–

अधः + गति = अधोगति
तपः + वन = तपोवन
मनः + विज्ञान = मनोविज्ञान
यशः + गान = यशोगान
वयः + ज्येष्ठ = वयोज्येष्ठ
मनः + कामना = मनोकामना
सरः + वर = सरोवर
पुरः + धा = पुरोधा
मनः + भाव = मनोभाव
मनः + रथ = मनोरथ
मनः + गति = मनोगति
मनः + बल = मनोबल

यशः + दा = यशोदा
पुरः + हित = पुरोहित
शिरः + रेखा = शिरोरेखा
यशः + धर = यशोधर
वयः + भार = वयोभार
मनः + हर = मनोहर
तपः + भूमि = तपोभूमि
मनः + योग = मनोयोग
मनः + वांछा = मनोवांछा
पयः + धर = पयोधर
सरः + ज = सरोज
वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

विसर्ग का 'र्' में परिवर्तन : विसर्ग से पूर्व अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर या वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह वर्ण हों, तो विसर्ग का र् हो जाता है। यथा–

निः + आशा = निराशा
दुः + आत्मा = दुरात्मा
दुः + घटना = दुर्घटना
निः + झर = निर्झर
निः + उत्तर = निरुत्तर
दुः + जन = दुर्जन
निः + धन = निर्धन
निः + गुण = निर्गुण
दुः + गति = दुर्गति
निः + मल = निर्मल
निः + धारण = निर्धारण
दुः + बल = दुर्बल
निः + जन = निर्जन
दुः + गुण = दुर्गुण
दुः + गंध = दुर्गंध
निः + भीक = निर्भीक
निः + विकार = निर्विकार
निः + उत्साह = निरुत्साह
दुः + उपयोग = दुरुपयोग
निः + जल = निर्जल
निः + मोह = निर्मोह
दुः + दिन = दुर्दिन
दुः + आचार = दुराचार
निः + लोभ = निर्लोभ

विसर्ग का श्, ष्, स् में परिवर्तन :

(*i*) यदि विसर्ग के बाद च् अथवा छ् आए, तो विसर्ग का श् हो जाता है, जैसे-

निः + चल = निश्चल
निः + चय = निश्चय
निः + छल = निश्छल
निः + चिंत = निश्चिंत
दुः + चरित्र = दुश्चरित्र
निः + छिद्र = निश्छिद्र
हरिः + चंद्र = हरिश्चंद्र
दुः + चिंता = दुश्चिंता

(*ii*) विसर्ग के बाद क्, ख्, ट्, ठ्, प्, फ् आने पर विसर्ग का 'ष्' हो जाना :

दुः + कर = दुष्कर
दुः + परिणाम = दुष्परिणाम
निः + कपट = निष्कपट
निः + प्राण = निष्प्राण
दुः + प्राप्य = दुष्प्राप्य
निः + फल = निष्फल
दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति
निः + कारण = निष्कारण
दुः + कर्म = दुष्कर्म
निः + पाप = निष्पाप
दुः + प्रवृत्ति = दुष्प्रवृत्ति
दुः + पराजय = दुष्पराजय
निः + कलंक = निष्कलंक
चतुः + पद = चतुष्पद
निः + कृति = निष्कृति
निः + पक्ष = निष्पक्ष
निः + काम = निष्काम

(*iii*) विसर्ग के बाद क्, त्, स् हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाना–

नमः	+	कार	=	नमस्कार	मनः	+	कामना	=	मनस्कामना
पुरः	+	कार	=	पुरस्कार	निः	+	तेज	=	निस्तेज
दुः	+	तर	=	दुस्तर	नमः	+	ते	=	नमस्ते
निः	+	तार	=	निस्तार	निः	+	संदेह	=	निस्संदेह
निः	+	संतान	=	निस्संतान	निः	+	सहाय	=	निस्सहाय
निः	+	सार	=	निस्सार	दुः	+	सह	=	दुस्सह
तिरः	+	कार	=	तिरस्कार	दुः	+	साहस	=	दुस्साहस

(*iv*) विसर्ग में कोई परिवर्तन न होना :

विसर्ग के बाद श्, ष्, स् आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता या परे का वर्ण हो जाता है; जैसे–

निः	+	संकोच	=	निस्संकोच	निः	+	संतान	=	निस्संतान
दुः	+	साहस	=	दुस्साहस	निः	+	संग	=	निस्संग
निः	+	संदेह	=	निःसंदेह					

(*v*) विसर्ग के बाद क्, ख् अथवा प्, फ् व्यंजन आने पर भी कोई परिवर्तन नहीं होता :

अंतः	+	करण	=	अंतःकरण	प्रातः	+	काल	=	प्रातःकाल
पयः	+	पान	=	पयःपान	अधः	+	पतन	=	अधःपतन

(*vi*) विसर्ग का लोप होना :

यदि अ के बाद विसर्ग हो और उससे परे अ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे–

अतः + एव = अतएव

(*vii*) विसर्ग लोप और पूर्व स्वर का दीर्घ होना :

यदि विसर्ग से परे र् आ जाए, तो विसर्ग का लोप हो जाता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे–

निः + रोग = नीरोग   निः + रव = नीरव   निः + रस = नीरस

हिंदी की अपनी संधियाँ

उपर्युक्त संधि नियम संस्कृत शब्दों पर लागू होते हैं। हिंदी में अपने कुछ संधि नियम विकसित हुए हैं। हिंदी में जब दो भिन्न शब्द एक साथ आते हैं तो वे संधि नियम के अनुसार जुड़कर एक ही शब्द के रूप में अथवा समस्त पद के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

☞ हिंदी के कुछ नए विकसित नियम :

ह्रस्वीकरण : सामासिक शब्दों में पूर्व पद का दीर्घ स्वर प्रायः ह्रस्व हो जाता है। जैसे :

आम	+	चूर	=	अमचूर	हाथ	+	कड़ी	=	हथकड़ी
लड़का	+	पन	=	लड़कपन	कान	+	कटा	=	कनकटा

लोप : कभी-कभी हिंदी शब्दों में संधि के किसी वर्ण का लोप हो जाता है। जैसे–

पानी + घाट = पनघट   घोड़ा + दौड़ = घुड़दौड़   छोटा + पन = छुटपन

अल्पप्राण ध्वनि का महाप्राण होना : जब शब्द के अंत में अल्पप्राण ध्वनि हो और उसके आगे 'ह' ध्वनि आ जाए तो अल्पप्राण ध्वनि महाप्राण हो जाती है।

सब + ही = सभी   तब + ही = तभी   कब + ही = कभी

दोनों शब्दों की ध्वनियों में लोप :

कहाँ + ही = कहीं

यहाँ + ही = यहीं

वहाँ + ही = वहीं

स्वर में परिवर्तन :

घोड़ा	+	सवार	=	घुड़सवार
लोटा	+	इया	=	लुटिया
लकड़ी	+	हारा	=	लकड़हारा
छोटा	+	भैया	=	छुटभैया

स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- निकटतम ध्वनियों के मध्य होने वाले मेल को **संधि** कहते हैं।
- दो स्वरों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे **स्वर संधि** कहते हैं।
- व्यंजन + व्यंजन अथवा व्यंजन + स्वर के मेल से उत्पन्न विकार **व्यंजन संधि** कहलाता है।
- विसर्ग के बाद स्वर अथवा व्यंजन के आने से जो परिवर्तन आता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं।

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए संधि संबंधी प्रश्न

प्रश्न 1. संधि-विच्छेद कीजिए :

क्र.	शब्द	संधि-विच्छेद
1.	वधूत्सव	✦ वधू + उत्सव
2.	वीरोचित	✦ वीर + उचित
3.	स्वागत	✦ सु + आगत
4.	छात्रावास	✦ छात्र + आवास
5.	देहांत	✦ देह + अंत
6.	देवालय	✦ देव + आलय
7.	नवागत	✦ नव + आगत
8.	युगादि	✦ युग + आदि
9.	धर्मात्मा	✦ धर्म + आत्मा
10.	वार्षिकोत्सव	✦ वार्षिक + उत्सव
11.	चंद्रोदय	✦ चंद्र + उदय
12.	सर्वोत्तम	✦ सर्व + उत्तम
13.	महौज	✦ महा + ओज
14.	अन्वय	✦ अनु + अय
15.	महैश्वर्य	✦ महा + ऐश्वर्य
16.	अत्यानंद	✦ अति + आनंद
17.	परमैश्वर्य	✦ परम + ऐश्वर्य
18.	इत्यादि	✦ इति + आदि
19.	नारीश्वर	✦ नारी + ईश्वर
20.	मदोन्मत्त	✦ मद + उन्मत्त
21.	महर्षि	✦ महा + ऋषि
22.	अन्वेषण	✦ अनु + एषण
23.	अत्यंत	✦ अति + अंत
24.	सचिवालय	✦ सचिव + आलय
25.	जलौघ	✦ जल + औघ
26.	सुखेश	✦ सुख + ईश
27.	वनौषध	✦ वन + औषध
28.	रजनीश	✦ रजनी + ईश
29.	अभ्युदय	✦ अभि + उदय
30.	अत्यधिक	✦ अति + अधिक
31.	परमेश्वर	✦ परम + ईश्वर
32.	प्रत्युत्तर	✦ प्रति + उत्तर
33.	उपर्युक्त	✦ उपरि + उक्त
34.	अधरौष्ठ	✦ अधर + ओष्ठ
35.	लोकैषणा	✦ लोक + एषणा
36.	महोदधि	✦ महा + उदधि
37.	भानूदय	✦ भानु + उदय
38.	पित्राज्ञा	✦ पितृ + आज्ञा
39.	तथैव	✦ तथा + एव
40.	रत्नाकर	✦ रत्न + आकर
41.	गिरीश	✦ गिरि + ईश
42.	नदीश	✦ नदी + ईश
43.	सूर्योदय	✦ सूर्य + उदय
44.	स्वागत	✦ सु + आगत
45.	महेश	✦ महा + ईश
46.	अत्याचार	✦ अति + आचार
47.	मतैक्य	✦ मत + ऐक्य
48.	मुनीश	✦ मुनि + ईश
49.	तल्लीन	✦ तत् + लीन
50.	गत्यवरोध	✦ गति + अव
51.	दंतौष्ठ	✦ दंत + औष्ठ
52.	पद्धति	✦ पत् + हति
53.	सद्भावना	✦ सत् + भाव
54.	रेखांकित	✦ रेखा + अंकि
55.	स्वल्प	✦ सु + अल्प
56.	महौषध	✦ महा + औष
57.	प्रत्यागमन	✦ प्रति + आग
58.	महौदार्य	✦ महा + औदा
59.	जगन्नाथ	✦ जगत् + नाथ
60.	एकैक	✦ एक + एक
61.	चिकित्सालय	✦ चिकित्सा + आल
62.	हिमालय	✦ हिम + आल
63.	उच्चारण	✦ उत् + चार
64.	जीर्णोद्धार	✦ जीर्ण + उद्धा
65.	शुभोदय	✦ शुभ + उदय
66.	अध्यादेश	✦ अधि + आदे
67.	सदुपाय	✦ सत् + उपाय
68.	महाशय	✦ महा + आश
69.	उद्गम	✦ उत् + गम
70.	पूर्णेंदु	✦ पूर्ण + इंदु
71.	महोदय	✦ महा + उदय
72.	महामात्य	✦ महा + अमा

3. यथार्थ	✦ यथा	+ अर्थ	
4. नवोदय	✦ नव	+ उदय	
5. लोकोपकार	✦ लोक	+ उपकार	
6. वाचनालय	✦ वाचन	+ आलय	
7. परोपकार	✦ पर	+ उपकार	
8. वनौषधि	✦ वन	+ औषधि	
9. पर्यावरण	✦ परि	+ आवरण	
80. हिमांशु	✦ हिम	+ अंशु	
81. लघूत्तर	✦ लघु	+ उत्तर	
82. शशांक	✦ शश	+ अंक	
83. सदैव	✦ सदा	+ एव	
84. स्वेच्छा	✦ स्व	+ इच्छा	
85. प्रत्येक	✦ प्रति	+ एक	
86. यद्यपि	✦ यदि	+ अपि	
87. नवोदित	✦ नव	+ उदित	
88. भाग्योदय	✦ भाग्य	+ उदय	
89. अत्यंत	✦ अति	+ अंत	
90. शीतोदक	✦ शीत	+ उदक	
91. कृतार्थ	✦ कृत	+ अर्थ	
92. हितैषी	✦ हित	+ ऐषी	
93. धनादेश	✦ धन	+ आदेश	

प्रश्न 2. संधि कीजिए :

1. यदि	+ अपि	✦ यद्यपि
2. प्रति	+ एक	✦ प्रत्येक
3. मत	+ ऐक्य	✦ मतैक्य
4. लंका	+ ईश	✦ लंकेश
5. स्व	+ इच्छा	✦ स्वेच्छा
6. रेखा	+ अंकित	✦ रेखांकित
7. महा	+ औषध	✦ महौषध
8. पुष्प	+ अंजलि	✦ पुष्पांजलि
9. वार्षिक	+ उत्सव	✦ वार्षिकोत्सव
0. वन	+ औषधि	✦ वनौषधि
1. महा	+ ऋषि	✦ महर्षि
2. महा	+ उदय	✦ महोदय
3. उप	+ आसना	✦ उपासना
4. उदय	+ अंचल	✦ उदयांचल
5. शब्द	+ अर्थ	✦ शब्दार्थ
6. नव	+ आगत	✦ नवागत
7. प्रति	+ उत्तर	✦ प्रत्युत्तर
8. धन	+ एषणा	✦ धनैषणा
9. मंत्र	+ आलय	✦ मंत्रालय
0. नर	+ इंद्र	✦ नरेन्द्र
1. महा	+ उदधि	✦ महोदधि
2. वार्ता	+ आलाप	✦ वार्तालाप
3. पूर्व	+ उत्तर	✦ पूर्वोत्तर
4. ग्राम	+ उत्थान	✦ ग्रामोत्थान
5. तथा	+ अपि	✦ तथापि
6. युग	+ अंत	✦ युगांत
7. नव	+ आचार	✦ नवाचार
8. कवि	+ इंद्र	✦ कवींद्र
9. चरण	+ अमृत	✦ चरणामृत
0. अधि	+ ईश्वर	✦ अधीश्वर
31. महा	+ ऐश्वर्य	✦ महैश्वर्य
32. योग	+ अभ्यास	✦ योगाभ्यास
33. यथा	+ इष्ट	✦ यथेष्ट
34. आनंद	+ उत्सव	✦ आनंदोत्सव
35. शुभ	+ इच्छा	✦ शुभेच्छा
36. कृपा	+ आकांक्षी	✦ कृपाकांक्षी
37. सागर	+ ऊर्मि	✦ सागरोर्मि
38. दीक्षा	+ अंत	✦ दीक्षांत
39. महा	+ इंद्र	✦ महेंद्र
40. एक	+ एक	✦ एकैक
41. राज	+ ईश्वर	✦ राजेश्वर
42. पूर्ण	+ इंदु	✦ पूर्णेंदु
43. चरण	+ अमृत	✦ चरणामृत
44. वीर	+ उचित	✦ वीरोचित
45. रत्न	+ आकर	✦ रत्नाकर
46. कुश	+ आसन	✦ कुशासन
47. परम	+ अणु	✦ परमाणु
48. देह	+ अंत	✦ देहांत
49. लघु	+ उत्तर	✦ लघूत्तर
50. सदा	+ एव	✦ सदैव
51. सु	+ अल्प	✦ स्वल्प
52. सर्व	+ उदय	✦ सर्वोदय
53. विस्मय	+ आदि	✦ विस्मयादि
54. सोम	+ इंद्र	✦ सोमेंद्र
55. अधर	+ ओष्ठ	✦ अधरौष्ठ
56. लोक	+ इंद्र	✦ लोकेंद्र
57. स्व	+ छंद	✦ स्वच्छंद
58. आ	+ छादन	✦ आच्छादन
59. वाक्	+ दत्ता	✦ वाग्दत्ता
60. लघु	+ उत्तर	✦ लघूत्तर
61. इति	+ आदि	✦ इत्यादि
62. तथा	+ एव	✦ तथैव
63. मत	+ ऐक्य	✦ मतैक्य
64. चंद्र	+ उदय	✦ चंद्रोदय
65. शची	+ इंद्र	✦ शचींद्र
66. महत्	+ आकार	✦ महताकार
67. अति	+ उत्तम	✦ अत्युत्तम
68. पद	+ उन्नति	✦ पदोन्नति
69. प्रति	+ अक्षर	✦ प्रत्यक्षर
70. अधिक	+ अधिक	✦ अधिकाधिक
71. वाचन	+ आलय	✦ वाचनालय
72. सु	+ आगत	✦ स्वागत
73. सत्य	+ अन्वेषी	✦ सत्यान्वेषी
74. सत्	+ आचार	✦ सदाचार
75. एक	+ अधिकार	✦ एकाधिकार
76. स्व	+ अर्थ	✦ स्वार्थ
77. प्रतीक्षा	+ आलय	✦ प्रतीक्षालय
78. गृह	+ उपयोगी	✦ गृहोपयोगी
79. परम	+ औषधी	✦ परमौषधी
80. महा	+ उत्सव	✦ महोत्सव
81. वृक्ष	+ आरोपण	✦ वृक्षारोपण
82. अति	+ आवश्यक	✦ अत्यावश्यक
83. अनाथ	+ आलय	✦ अनाथालय
84. कर्म	+ इंद्रिय	✦ कर्मेंद्रिय
85. एक	+ एक	✦ एकैक
86. अरुण	+ अचल	✦ अरुणाचल
87. पूर्ण	+ इंदु	✦ पूर्णेंदु
88. अति	+ अधिक	✦ अत्यधिक
89. लोक	+ आचार	✦ लोकाचार
90. सदा	+ एव	✦ सदैव

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. निम्नलिखित में संधि-विच्छेद कीजिए–

नदीश	मतैक्य	विश्रामालय	वधूत्सव	नीरस
वनौषधि	सज्जन	महौषध	यद्यपि	जगदीश
नवागत	स्वागत	देवालय	परमेश्वर	रामायण
कवीश्वर	पर्वतारोहण	भाग्योदय	दुर्बल	देवेंद्र
दुश्शासन	तपोबल	निर्धन	इत्यादि	सच्चरित्र

2. संधि कीजिए–

परम + अर्थ	दिन + ईश	यथा + ऐव	देव + इंद्र
शब्द + अर्थ	मनः + ताप	महा + उदधि	नै + अक
चरण + अमृत	उत् + हार	रजनी + ईश	दिन + अंक
प्रति + उपकार	वार्षिक + उत्सव	सु + अल्प	उत् + लेख
लघु + उत्तर	महा + ऋषि	शुभ + इच्छा	वाचन + आलय
यदि + अपि	अनु + अय	प्रति + ईक्षा	दुः + परिणाम

3. संधि किसे कहते हैं ?
4. संधि के कितने भेद हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।
5. स्वर संधि के कितने भेद होते हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।
6. (क) निम्नलिखित में संधि-विच्छेद कीजिए :
   रेखांकित, लोकोक्ति, रजनीश, लघूत्तर, देवर्षि, महौषध, प्रत्येक, वाङ्मय, सद्भावना, जगदीश, उच्चारण, उद्धार, संकल्प, किं
   मनोविनोद, तमोगुण, अंतर्गत, दुष्कर, नीरोग, निर्विघ्न।

   (ख) निम्नलिखित संधि-शब्दों के सही संधि-विच्छेद पर (✓) चिह्न लगाइए :
   1. न्यायालय = न्याया + लय, न्या + यालय, न्याय + आलय (✓)
   2. संघर्ष = सं + घर्ष, सम् + घर्ष (✓), सम + घर्ष
   3. सूक्ति = सु + उक्ति (✓), सू + उक्ति, सू + क्ति
   4. मनोकामना = मनो + कामना, मनः + कामना (✓), मनोका + मना
   5. नमस्ते = नमस + ते, नमस् + ते, नमः + ते (✓)
   6. नीरस = नी + रस, नि + रस, निः + रस (✓)
7. लोप और आगम से आप क्या समझते हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
   (संकेत : *लोप - हट जाना, जैसे – अतः + एव = अतएव, आगम – आ जाना, जैसे – कवि + ओ = कवियों*)
8. निम्नलिखित में संधि करते हुए संधि का नाम भी बताइए :
   जब ही, वहाँ ही, किस ही, कवि ओं, नदी ओं, आम चूर, बहू एँ, लड़का पन, पानी घाट, घोड़ा दौड़।
   (संकेत : *जभी, वहीं, किसी, कवियों, नदियों, अमचूर, बहुएँ, लड़कपन, पनघट, घुड़दौड़*)
9. निम्नलिखित में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

अ + आ	ई + अ	इ + ई	अ + अ	उ + अ
अ + ए	अ + ई	अ + उ	अ + ऐ	इ + अ
आ + ऊ	अ + इ	ऊ + आ		

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा नवीं कक्षा की परीक्षाओं (*Common Exams*) में पूछे गए संधि संबंधी प्र

1. निम्नलिखित में संधि-विच्छेद कीजिए :
   जगन्नाथ, इत्यादि, हिमालय, देवर्षि।
   (संकेत : *जगत् + नाथ, इति + आदि, हिम + आलय, देव + ऋषि*)
2. किन्हीं दो शब्दों की संधि कीजिए :
   (क) अति + आचार, (ख) अभि + इष्ट, (ग) सूर्य + उदय, (घ) एक + एक।
   (संकेत : *अत्याचार, अभीष्ट, सूर्योदय, एकैक*)

3. निम्नलिखित में किन्हीं दो का संधि-विच्छेद कीजिए :

(*i*) दिग्गज, (*ii*) जगदीश, (*iii*) महोत्सव, (*iv*) निश्चिंत।

(संकेत : *दिक् + गज, जगत् + ईश, महा + उत्सव, निः + चिंत*)

4. किन्हीं दो की संधि कीजिए :

(*i*) परम + अर्थ, (*ii*) तप + बल, (*iii*) तत् + लीन, (*iv*) महा + ईश्वर।

(संकेत : *परमार्थ, तपोबल, तल्लीन, महेश्वर*)।

5. किन्हीं दो संधि कीजिए :

वेद + अंत, भारत + इंदु, अभि + उदय, तथा + एव, तत् + लीन, सत् + जन।

(संकेत : *वेदांत, भारतेंदु, अभ्युदय, तथैव, तल्लीन, सज्जन*)।

6. संधि कीजिए :

विद्या + आलय, कवि + ईश्वर, सदा + एव, इति + आदि।

(संकेत : *विद्यालय, कवीश्वर, सदैव, इत्यादि*)।

7. संधि-विच्छेद करो :

हिमालय, विद्यार्थी, सज्जन, नमस्ते।

8. किन्हीं दो में संधि-विच्छेद करो :

स्वागत, सूक्ति, उच्चारण।

(संकेत : *सु + आगत, सू + उक्ति, उत् + चारण*)

9. किन्हीं दो की संधि करो :

विद्यालय, निर्धन, स्वागत।

(संकेत : *विद्या + आलय, निः + धन, सु + आगत*)

C.B.S.E. *की दसवीं कक्षा हिंदी की परीक्षाओं में पूछे गए संधि संबंधी प्रश्न*

1. संधि कीजिए

परम	+	अर्थ	=	परमार्थ
रत्न	+	आकर	=	रत्नाकर
अनु	+	अय	=	अन्वय
हित	+	उपदेश	=	हितोपदेश
यदि	+	अपि	=	यद्यपि
सू	+	उक्ति	=	सूक्ति
लंका	+	ईश	=	लंकेश
अनु	+	एषण	=	अन्वेषण
एक	+	एक	=	एकैक
अधि	+	ईश्वर	=	अधीश्वर
यथा	+	अर्थ	=	यथार्थ
उमा	+	ईश	=	उमेश
पुष्प	+	अंजलि	=	पुष्पांजलि
तथा	+	एव	=	तथैव
उदय	+	अचल	=	उदयाचल
वार्षिक	+	उत्सव	=	वार्षिकोत्सव
शब्द	+	अर्थ	=	शब्दार्थ
वन	+	औषधि	=	वनौषधि
नव	+	आगत	=	नवागत
एक	+	एक	=	एकैक
प्रति	+	उत्तर	=	प्रत्युत्तर
महा	+	ऋषि	=	महर्षि
धन	+	एषणा	=	धनैषणा
महा	+	उदय	=	महोदय
गिरि	+	ईश	=	गिरीश
सदा	+	एव	=	सदैव
भारत	+	इंदु	=	भारतेंदु
परम	+	ऐश्वर्य	=	परमैश्वर्य
मुनि	+	इंद्र	=	मुनींद्र
सूर्य	+	ऊष्मा	=	सूर्योष्मा
नव	+	आगत	=	नवागत
स्व	+	अर्थ	=	स्वार्थ
मानव	+	उचित	=	मानवोचित
दया	+	आनंद	=	दयानंद
यथा	+	एव	=	यथैव
स्व	+	इच्छा	=	स्वेच्छा
महा	+	उत्सव	=	महोत्सव
जगत्	+	ईश	=	जगदीश
मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य

गज	+	आनन	=	गजानन
प्रति	+	उपकार	=	प्रत्युपकार
सु	+	आगत	=	स्वागत
सोम	+	इंद्र	=	सोमेंद्र
परम	+	औषधि	=	परमौषधि

2. संधि-विच्छेद कीजिए :

महोदधि	=	महा	+	उदधि
महौषध	=	महा	+	औषध
अधरौष्ठ	=	अधर	+	ओष्ठ
स्वागत	=	सु	+	आगत
हितोपदेश	=	हित	+	उपदेश
मतैक्य	=	मत	+	ऐक्य
भोजनालय	=	भोजन	+	आलय
स्वल्प	=	सु	+	अल्प
सदैव	=	सदा	+	एव
यथेष्ट	=	यथा	+	इष्ट
स्वच्छ	=	सु	+	अच्छ
तथैव	=	तथा	+	एव
प्रत्येक	=	प्रति	+	एक
नगेंद्र	=	नग	+	इंद्र
इत्यादि	=	इति	+	आदि
जीर्णोद्धार	=	जीर्ण	+	उद्धार
यद्यपि	=	यदि	+	अपि
रत्नाकर	=	रत्न	+	आकर
सर्वोत्तम	=	सर्व	+	उत्तम
युगादि	=	युग	+	आदि
परमात्मा	=	परम	+	आत्मा
स्वेच्छा	=	सु	+	इच्छा
अभीष्ट	=	अभि	+	इष्ट
स्वल्प	=	सु	+	अल्प
मतैक्य	=	मत	+	ऐक्य
महोदय	=	महा	+	उदय
महौषध	=	महा	+	औषध
गत्यावरोध	=	गति	+	अवरोध
महोदधि	=	महा	+	उदधि
अन्वय	=	अनु	+	अय
कवीश्वर	=	कवि	+	ईश्वर
रजनीश	=	रजनी	+	ईश
देवालय	=	देव	+	आलय
परमेश्वर	=	परम	+	ईश्वर
अत्यावश्यक	=	अति	+	आवश्यक
सत्याग्रह	=	सत्य	+	आग्रह
शुभेच्छा	=	शुभ	+	इच्छा
अन्वेषण	=	अनु	+	एषण

प्रश्न : निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(C.B.S.E. 2009 Del*

Set-I

(क) प्रति + एक, महा + ईश *(संधि कीजिए)*

(ख) योगासन, सदैव *(संधिच्छेद कीजिए)*

उत्तर : (क) प्रत्येक, महेश। (ख) योग + आसन, सदा + एव।

Set-II

(क) परमेश्वर, छात्रावास *(संधिच्छेद कीजिए)*

(ख) गिरि + ईश, इति + आदि *(संधि कीजिए)*

उत्तर : (क) परम + ईश्वर, छात्रा + आवास। (ख) गिरीश, इत्यादि।

Set-III

(क) अभि + उदय, देव + ईश *(संधि कीजिए)*

(ख) अत्यधिक, नवोदय *(संधिच्छेद कीजिए)*

उत्तर : (क) अभ्युदय, देवेश। (ख) अति + अधिक, नव + उदय।

प्रश्न : निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(C.B.S.E. 2009 Outs*

(क) महा + उदधि। *(संधि कीजिए)*

(ख) कालावधि। *(संधिच्छेद कीजिए)*

उत्तर : (क) महोदधि। (ख) काल + अवधि।

अध्याय 4

शब्द-निर्माण

(*Word Formation : Prefix and Suffix*)

✿ उपसर्ग ✿ प्रत्यय से शब्द-निर्माण

उपसर्ग-प्रत्यय (*Prefix and Suffix*)

प्रत्येक भाषा में नए-नए शब्द बनाने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है, इसे 'शब्द-रचना' या 'शब्द-निर्माण प्रक्रिया' क हैं। शब्द-निर्माण प्रक्रिया के अंतर्गत दो प्रकार के शब्द बनाए जाते हैं—शब्द रूप (पद) तथा नए शब्द। इन दोनों का अंतर लेना आवश्यक है।

शब्द और शब्द रूप (पद) : 'शब्द' भाषा की स्वतंत्र इकाई है। वाक्यों की रचना शब्दों से ही होती है ; लेकिन श को यथावत् रूप में हम एक स्थान पर रख दें तो वाक्य नहीं बन जाता है।

ध्यान रखें : वाक्य में प्रयुक्त करते समय शब्दों को पद बनाया जाता है।

उदाहरण के लिए आप 'लड़का डंडा कुत्ता मारा' शब्दों को एक साथ रखकर बोलते हैं, तो यह एक सार्थक वाक्य न कहलाएगा। सार्थक वाक्य होगा—'लड़के ने कुत्ते को डंडे से मारा।'

अर्थात् लड़का को 'लड़के', 'कुत्ता' को 'कुत्ते', 'डंडा' को 'डंडे' के रूप में बदलना होगा। यह परिवर्तन 'ने', 'को', ' परसर्गों के प्रभाव से हो रहा है। इस प्रकार ये शब्द नए नहीं हैं बल्कि लड़का, कुत्ता, डंडा शब्दों से बने शब्द रूप हैं। इ 'पद' कहा जाता है।

ऐसे रूपों का, जिनका प्रयोग वाक्य में किया जाता है, **'शब्द रूप'** या **'पद'** कहा जाता है।

संस्कृत में कोई भी शब्द वाक्य में सीधे प्रयुक्त नहीं होता। उसमें कोई-न-कोई प्रत्यय जुड़ता है, तभी वह वाक्य में प्रयु हो सकता है। उदाहरण के लिए—'बालक' शब्द के साथ 'बालक:', 'बालकौ', 'बालकात्', 'बालकस्य' आदि रूपों का प्रयो किया जाता है। इन्हीं रूपों को 'शब्द रूप' या 'पद' कहते हैं।

हिंदी में भी शब्दों में पहले 'पद' बनाने वाले प्रत्यय लगते हैं तब उनका प्रयोग किया जाता है। जैसे—

लड़का + ए = लड़के	लड़के को बुलाओ।
लड़का + ओ = लड़को	लड़को! उधर मत जाओ।
लड़का + ओं = लड़कों	लड़कों से चला नहीं जाता।

☞ **स्मरण रखो :** शब्द की सत्ता वाक्य से बाहर है। वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाता है, परंतु 'पद' वह तब त नहीं बनता जब तक कि उसमें कोई शब्द-रूप बनाने वाला प्रत्यय न लगे।

वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही 'पद' है।

शब्द-निर्माण (*Word-construction*) **:** आप पहले पढ़ चुके हैं कि **यौगिक शब्द** दो प्रकार से बनते हैं—

1. शब्द में उपसर्ग/प्रत्यय लगने से बने यौगिक शब्द।
2. दो या दो से अधिक रूढ़/यौगिक शब्दों के समास द्वारा संबद्ध होने से बने यौगिक शब्द।

इस अध्याय में दोनों प्रकार के यौगिक शब्दों की रचना पर विचार किया जाएगा।

15.	प्र	अधिक/आगे	प्रबल, प्रसिद्ध, प्रयत्न, प्रगति, प्रचार, प्रस्थान, प्राचार्य, प्राध्यापक, प्रकार, प्रदर्शन, प्रख्यात, प्रगाढ़।
16.	प्रति	सामने/विरुद्ध	प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रतिगामी, प्रतिहिंसा, प्रत्युपकार, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष, (प्रति+अक्ष), प्रतिष्ठा।
17.	वि	विशेष/भिन्न	वियोग, विदेश, विनय, विजय, विनाश, विज्ञान, विपक्ष, विमुख, विकास, विवाद, विभाग, विशुद्ध।
18.	सम् (सं)	संयोग/पूर्णता/साथ	सम्मान, सम्मेलन, संपूर्ण, संयम, संगम, संकल्प, सम्मुख, संतोष, संचय, संचार, संस्कार, संकोच।
19.	सु	अच्छा	सुगम, सुलभ, सुबोध, स्वच्छ (सु + अच्छ), स्वागत (सु + आगत), सुशिक्षित, सुपुत्र, सुजान, सुमार्ग, सुवास।
20.	अ/अन	अभाव/निषेध	अज्ञान, अगम, अतल, अजन्मा, अधर्म, अन्याय, अयोग्य, अनीति, अनाचार, अनागत, अनादि।
21.	दुर्	बुरा	दुर्लभ, दुर्गुण, दुर्दशा, दुराचार, दुर्घटना, दुर्गति, दुर्दिन, दुर्व्यवहार।
22.	निर्	बिना	निर्जन, निर्धन, निरादर, निर्दोष, निर्जीव, निर्गम, निर्यात, निर्भय, निर्वासन, निर्मम।

2. उंपसर्गवत् (उपसर्ग के समान) प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत शब्दांश :

क्र.सं.	शब्दांश	अर्थ	उदाहरण
1.	अध:	नीचे	अध:पतन, अधोगति, अधोमुखी, अधोलिखित।
2.	कु	बुरा	कुकर्म, कुपात्र, कुरूप, कुयोग, कुमति, कुख्यात।
3.	सत्	अच्छा	सत्पुरुष, सज्जन (सत् + जन), सत्कर्म, सत्संग, सद्गति (सत् + गति)।
4.	पुनर्/पुन:	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्विवाह, पुनरुत्थान, पुनरुक्ति, पुनर्निर्माण।
5.	अंतर/अंत:	अंदर	अंतर्राष्ट्रीय, अंतर्जातीय, अंतर्मुखी, अंत:करण, अंत:पुर।
6.	बहिस्/बहिर्	बाहर	बहिष्कार, बहिर्गमन, बहिर्मुखी, बहिरंग।
7.	स्व	अपना	स्वराज्य, स्वतंत्र, स्वचालित, स्वदेश, स्वजन, स्वावलंबन
8.	स्वयं	अपने आप	स्वयंसेवक, स्वयंवर, स्वयंपाठी।
9.	पुरा	पुराना/पहला	पुरातत्त्व, पुरावृत्त, पुरातन।
10.	प्राग्	पुराना	प्रागैतिहासिक, प्राक्कथन, प्राग्वैदिक।
11.	चिर	देर तक	चिरस्थायी, चिरजीवी, चिरकाल, चिरायु।
12.	सह	साथ	सहोदर, सहपाठी, सहमति, सहगान, सहकारिता।
13.	सम	बराबर	समकालिक, समकोण, समकालीन।

3. हिंदी के उपसर्ग : हिंदी के सामान्य उपसर्ग या उपसर्गवत् शब्दांश नीचे दिए जा रहे हैं :

क्र.सं.	शब्दांश	अर्थ	उदाहरण
1.	अ	कमी/निषेध	अमर, अचल, अटल, अपढ़, अछूत।
2.	अन	नहीं/अभाव	अनपढ़, अनजान, अनहोनी, अनमोल, अनकही, अनबन।
3.	अध	आधा	अधपका, अधजला, अधमरा, अधखिला, अधकचरा।
4.	औ	हीन/निषेध	औगुन, औतार, औघट, औघड़।
5.	उन	कम	उनतीस, उनतालीस, उनसठ, उन्नीस।
6.	क/कु	बुरा/बुरी	कपूत, कुचाल, कुढंग, कुसमय, कुरूप, कुपात्र।

15.	प्र	अधिक/आगे	प्रबल, प्रसिद्ध, प्रयत्न, प्रगति, प्रचार, प्रस्थान, प्राचार्य, प्राध्यापक, प्रकार, प्रदर्शन, प्रख्यात, प्रगाढ़।
16.	प्रति	सामने/विरुद्ध	प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रतिगामी, प्रतिहिंसा, प्रत्युपकार, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष, (प्रति+अक्ष), प्रतिष्ठा।
17.	वि	विशेष/भिन्न	वियोग, विदेश, विनय, विजय, विनाश, विज्ञान, विपक्ष, विमुख, विकास, विवाद, विभाग, विशुद्ध।
18.	सम् (सं)	संयोग/पूर्णता/साथ	सम्मान, सम्मेलन, संपूर्ण, संयम, संगम, संकल्प, सम्मुख, संतोष, संचय, संचार, संस्कार, संकोच।
19.	सु	अच्छा	सुगम, सुलभ, सुबोध, स्वच्छ (सु + अच्छ), स्वागत (सु + आगत), सुशिक्षित, सुपुत्र, सुजान, सुमार्ग, सुवास।
20.	अ/अन	अभाव/निषेध	अज्ञान, अगम, अतल, अजन्मा, अधर्म, अन्याय, अयोग्य, अनीति, अनाचार, अनागत, अनादि।
21.	दुर्	बुरा	दुर्लभ, दुर्गुण, दुर्दशा, दुराचार, दुर्घटना, दुर्गति, दुर्दिन, दुर्व्यवहार।
22.	निर्	बिना	निर्जन, निर्धन, निरादर, निर्दोष, निर्जीव, निर्गम, निर्यात, निर्भय, निर्वासन, निर्मम।

2. उपसर्गवत् (उपसर्ग के समान) प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत शब्दांश :

क्र.सं.	शब्दांश	अर्थ	उदाहरण
1.	अधः	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोमुखी, अधोलिखित।
2.	कु	बुरा	कुकर्म, कुपात्र, कुरूप, कुयोग, कुमति, कुख्यात।
3.	सत्	अच्छा	सत्पुरुष, सज्जन (सत् + जन), सत्कर्म, सत्संग, सद्गति (सत् + गति)।
4.	पुनर्/पुनः	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्विवाह, पुनरुत्थान, पुनरुक्ति, पुनर्निर्माण।
5.	अंतर/अंतः	अंदर	अंतर्राष्ट्रीय, अंतर्जातीय, अंतर्मुखी, अंतःकरण, अंतःपुर।
6.	बहिस्/बहिर्	बाहर	बहिष्कार, बहिर्गमन, बहिर्मुखी, बहिरंग।
7.	स्व	अपना	स्वराज्य, स्वतंत्र, स्वचालित, स्वदेश, स्वजन, स्वावलंबन
8.	स्वयं	अपने आप	स्वयंसेवक, स्वयंवर, स्वयंपाठी।
9.	पुरा	पुराना/पहला	पुरातत्त्व, पुरावृत्त, पुरातन।
10.	प्राग्	पुराना	प्रागैतिहासिक, प्राक्कथन, प्रावैदिक।
11.	चिर	देर तक	चिरस्थायी, चिरजीवी, चिरकाल, चिरायु।
12.	सह	साथ	सहोदर, सहपाठी, सहमति, सहगान, सहकारिता।
13.	सम	बराबर	समकालिक, समकोण, समकालीन।

3. हिंदी के उपसर्ग : हिंदी के सामान्य उपसर्ग या उपसर्गवत् शब्दांश नीचे दिए जा रहे हैं :

क्र.सं.	शब्दांश	अर्थ	उदाहरण
1.	अ	कमी/निषेध	अमर, अचल, अटल, अपढ़, अछूत।
2.	अन	नहीं/अभाव	अनपढ़, अनजान, अनहोनी, अनमोल, अनकही, अनबन।
3.	अध	आधा	अधपका, अधजला, अधमरा, अधखिला, अधकचरा।
4.	औ	हीन/निषेध	औगुन, औतार, औघट, औघड़।
5.	उन	कम	उनतीस, उनतालीस, उनसठ, उन्नीस।
6.	क/कु	बुरा/बुरी	कपूत, कुचाल, कुढंग, कुसमय, कुरूप, कुपात्र।

उपसर्ग (*Prefix*) और **प्रत्यय** (*Suffix*) दोनों ही रूढ़ या सरल शब्द नहीं होते हैं। **ये शब्दांश मात्र होते हैं।** ये वाक्य में अकेले-अकेले प्रयुक्त नहीं होते हैं। जैसे—'घरेलू' शब्द (घर + एलू) में 'घर' शब्द रूढ़ है और इसमें 'एलू' प्रत्यय लगा है। 'एलू' केवल शब्दांश है। इसका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

☞ उपसर्ग (*Prefix*)

उपसर्ग वे सार्थक शब्दांश हैं जो किसी शब्द के आरंभ में लगकर नए-नए शब्दों का निर्माण करते हैं। जैसे—

अव – अवगुण **प्र** – प्रहार **बे** – बेईमान
सु – सुपुत्र **अन्** – अनादर **अ** – अधर्म

हिंदी में मुख्य रूप से **पाँच** प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है :

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. उपसर्ग की तरह प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत के शब्दांश
3. हिंदी के उपसर्ग
4. उर्दू-फारसी के उपसर्ग
5. अंग्रेजी के उपसर्ग

आइए, अब हम प्रत्येक प्रकार से बने शब्दों के उदाहरण देखें :

1. संस्कृत के उपसर्ग : संस्कृत के निम्नलिखित (22) उपसर्ग हैं। इन उपसर्गों के योग से बने शब्दों की रचना दी जा रही है

तालिका

क्र.सं.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अति	अधिक	अतिरिक्त, अत्यंत, अत्याचार, अतिशय, अत्यधिक, अत्युत्तम, अतिक्रमण।
2.	अधि	ऊपर/श्रेष्ठ	अधिकार, अध्यक्ष, अधिभार, अधिकरण, अधिकृत, अधिनायक, अध्यादेश।
3.	अनु	पीछे/समान	अनुभव, अनुकूल, अनुशासन, अनुरोध, अनुराग, अनुयायी, अनुगमन, अनुज।
4.	अप	बुरा/हीन	अपयश, अपमान, अपकार, अपशब्द, अपराध, अपकीर्ति, अपवाद, अपव्यय, अपशकुन।
5.	अभि	सामने/ओर/ अत्यधिक	अभिमान, अभिशाप, अभियोग, अभिनव, अभिनय, अभ्यास, अभिलाषा, अभियान।
6.	अव	बुरा/हीन	अवगुण, अवसर, अवनति, अवतार, अवतरण, अवशेष, अवज्ञा।
7.	आ	तक/समेत	आजन्म, आमरण, आगमन, आदान, आकर्षण, आरक्षण, आक्रमण, आहार।
8.	उद् (उत्)	ऊपर/श्रेष्ठ	उत्थान, उद्गम, उन्नति, उच्चारण, उद्घाटन, उद्देश्य, उत्कर्ष, उत्कंठा।
9.	उप	निकट/छोटा	उपचार, उपदेश, उपक्रम, उपवन, उपस्थित, उपग्रह, उपनाम, उपमंत्री, उपभेद, उपसंहार, उपसचिव, उपकृत।
10.	दुस्	कठिन	दुस्साहस, दुस्साध्य, दुष्कर, दुष्प्रभाव, दुष्कर्म, दुश्चरित्र।
11.	निस्	रहित/नहीं	निश्चल, निष्काम, निस्संदेह, निस्तेज, निष्पाप, निष्कलंक, निश्छल, निष्कं[illegible] निष्कपट।
12.	नि	नीचे/निषेध	निबंध, नियम, निवारण, निवास, निरोध, निपात, निषेध, नियोग, नियुक्ति, निकृष्ट।
13.	परा	विपरीत/अनादर	पराजय, पराभव, पराक्रम, परामर्श, पराभूत, पराधीन।
14.	परि	चारों ओर	परिचय, परिणाम, परीक्षा, पर्यटन, परिवर्तन, परिक्रमा, परिधि, परिष्का[illegible] परिचारक, परिपक्व, परिचालक, परिणति, परिकल्पना।

15.	प्र	अधिक/आगे	प्रबल, प्रसिद्ध, प्रयत्न, प्रगति, प्रचार, प्रस्थान, प्राचार्य, प्राध्यापक, प्रकार, प्रदर्शन, प्रख्यात, प्रगाढ़।
16.	प्रति	सामने/विरुद्ध	प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रतिगामी, प्रतिहिंसा, प्रत्युपकार, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष, (प्रति+अक्ष), प्रतिष्ठा।
17.	वि	विशेष/भिन्न	वियोग, विदेश, विनय, विजय, विनाश, विज्ञान, विपक्ष, विमुख, विकास, विवाद, विभाग, विशुद्ध।
18.	सम् (सं)	संयोग/पूर्णता/साथ	सम्मान, सम्मेलन, संपूर्ण, संयम, संगम, संकल्प, सम्मुख, संतोष, संचय, संचार, संस्कार, संकोच।
19.	सु	अच्छा	सुगम, सुलभ, सुबोध, स्वच्छ (सु + अच्छ), स्वागत (सु + आगत), सुशिक्षित, सुपुत्र, सुजान, सुमार्ग, सुवास।
20.	अ/अन	अभाव/निषेध	अज्ञान, अगम, अतल, अजन्मा, अधर्म, अन्याय, अयोग्य, अनीति, अनाचार, अनागत, अनादि।
21.	दुर्	बुरा	दुर्लभ, दुर्गुण, दुर्दशा, दुराचार, दुर्घटना, दुर्गति, दुर्दिन, दुर्व्यवहार।
22.	निर्	बिना	निर्जन, निर्धन, निरादर, निर्दोष, निर्जीव, निर्गम, निर्यात, निर्भय, निर्वासन, निर्मम।

2. उपसर्गवत् (उपसर्ग के समान) प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत शब्दांश :

क्र.सं.	*शब्दांश*	*अर्थ*	*उदाहरण*
1.	अध:	नीचे	अध:पतन, अधोगति, अधोमुखी, अधोलिखित।
2.	कु	बुरा	कुकर्म, कुपात्र, कुरूप, कुयोग, कुमति, कुख्यात।
3.	सत्	अच्छा	सत्पुरुष, सज्जन (सत् + जन), सत्कर्म, सत्संग, सद्गति (सत् + गति)।
4.	पुनर्/पुन:	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्विवाह, पुनरुत्थान, पुनरुक्ति, पुनर्निर्माण।
5.	अंतर/अंत:	अंदर	अंतर्राष्ट्रीय, अंतर्जातीय, अंतर्मुखी, अंत:करण, अंत:पुर।
6.	बहिस्/बहिर्	बाहर	बहिष्कार, बहिर्गमन, बहिर्मुखी, बहिरंग।
7.	स्व	अपना	स्वराज्य, स्वतंत्र, स्वचालित, स्वदेश, स्वजन, स्वावलंबन
8.	स्वयं	अपने आप	स्वयंसेवक, स्वयंवर, स्वयंपाठी।
9.	पुरा	पुराना/पहला	पुरातत्त्व, पुरावृत्त, पुरातन।
10.	प्राग्	पुराना	प्रागैतिहासिक, प्राक्कथन, प्राग्वैदिक।
11.	चिर	देर तक	चिरस्थायी, चिरजीवी, चिरकाल, चिरायु।
12.	सह	साथ	सहोदर, सहपाठी, सहमति, सहगान, सहकारिता।
13.	सम	बराबर	समकालिक, समकोण, समकालीन।

3. हिंदी के उपसर्ग : हिंदी के सामान्य उपसर्ग या उपसर्गवत् शब्दांश नीचे दिए जा रहे हैं :

क्र.सं.	*शब्दांश*	*अर्थ*	*उदाहरण*
1.	अ	कमी/निषेध	अमर, अचल, अटल, अपढ़, अछूत।
2.	अन	नहीं/अभाव	अनपढ़, अनजान, अनहोनी, अनमोल, अनकही, अनबन।
3.	अध	आधा	अधपका, अधजला, अधमरा, अधखिला, अधकचरा।
4.	औ	हीन/निषेध	औगुन, औतार, औघट, औघड़।
5.	उन	कम	उनतीस, उनतालीस, उनसठ, उन्नीस।
6.	क/कु	बुरा/बुरी	कपूत, कुचाल, कुढंग, कुसमय, कुरूप, कुपात्र।

7.	स/सु	अच्छा/सहित	सपूत, सुडौल, सुजान, सुघड़, सरस, सपरिवार।
8.	दु	बुरा/कम	दुबला, दुलार, दुखद, दुकाल।
9.	भर	ठीक/पूरा	भरपेट, भरपाई, भरपूर, भरसक, भरमार।
10.	बिन	बिना	बिनब्याहा, बिनमाँगा, बिनकहे, बिनखाए।
11.	चौ	चार	चौमासा, चौराहा, चौपाई, चौकन्ना।

4. उर्दू-फारसी के उपसर्ग :

क्र.सं.	*उपसर्ग*	*अर्थ*	*उदाहरण*
1.	बे	बिना/अभाव	बेरहम, बेगुनाह, बेईमान, बेवफा, बेचारा, बेवकूफ, बेहिसाब।
2.	बद	बुरा	बदनाम, बदबू, बदसूरत, बदकिस्मत, बदतमीज़, बदमिज़ाज।
3.	खुश	अच्छा	खुशबू, खुशहाल, खुशखबरी, खुशमिज़ाज, खुशनसीब।
4.	ना	नहीं/निषेध	नालायक, नाउम्मीद, नादान, नासमझ, नाराज, नाज़ायज़।
5.	गैर	भिन्न/अलग	गैरहाज़िर, गैरकानूनी, गैरजिम्मेदार।
6.	ला	बिना/नहीं	लाइलाज, लापरवाह, लापता, लाजवाब, लावारिस।
7.	कम	थोड़ा	कमउम्र, कमजोर, कमबख्त, कमअक्ल, कमख्याल।
8.	दर	में	दरअसल, दरमियान, दरहकीकत।
9.	बा	साथ/सहित	बाकायदा, बाअदब, बाइज्जत।
10.	बिला	बिना	बिलाकसूर, बिलावजह, बिलानागा।
11.	हम	समान/साथ	हमशक्ल, हमउम्र, हमराज, हमराही, हमदर्द, हमजोली।
12.	हर	प्रत्येक	हरएक, हरसाल, हरवक्त, हररोज।
13.	ब	साथ/अनुसार	बनाम, बदौलत, बगैर, बखूबी।
14.	ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनमौका।

5. अंग्रेजी के उपसर्ग :

क्र.सं.	*उपसर्ग*		*उदाहरण*
1.	सब	Sub	सबइंस्पेक्टर।
2.	डिप्टी	Deputy	डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी डायरेक्टर।
3.	हैड	Head	हैड मास्टर, हैड क्लर्क।
4.	चीफ	Chief	चीफ मिनिस्टर, चीफ जज।
5.	जनरल	General	जनरल मैनेजर, जनरल स्टोर, जनरल मर्चेंट।
6.	असिस्टैंट	Assistant	असिस्टैंट टीचर, असिस्टैंट कमिश्नर।
7.	वाइस	Vice	वाइस प्रिंसिपल, वाइस कैप्टन
8.	हाफ	Half	हाफ पैंट।

अन्य उदाहरण

उपसर्ग युक्त शब्द	*उपसर्ग*	*मूल शब्द*	*उपसर्ग युक्त शब्द*	*उपसर्ग*	*मूल शब्द*
दुर्भाग्य	दुर्	भाग्य	दुर्लभ	दुर्	लभ
संसर्ग	सम्	सर्ग	उपमान	उप	मान
संस्कृति	सम्	कृति	प्रवास	प्र	वास
संचालन	सम्	चालन	अभिजात	अभि	जात

उपसर्ग युक्त शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	उपसर्ग युक्त शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
निर्द्वंद्व	निर्	द्वंद्व	उपकरण	उप	करण
अधिकार	अधि	कार	विज्ञान	वि	ज्ञान
निर्वाह	निर्	वाह	संभव	सम्	भव
विभिन्न	वि	भिन्न	सुरक्षा	सु	रक्षा
संभ्रांत	सम्	भ्रांत	उपयोग	उप	योग
परलोक	पर	लोक	अस्थायी	अ	स्थायी
अनुभूति	अनु	भूति	प्रदर्शन	प्र	दर्शन
वियोग	वि	योग	प्रयोग	प्र	योग
बेहया	बे	हया	प्रचार	प्र	चार
दुर्गम	दुर्	गम	विदेशी	वि	देशी
विचित्र	वि	चित्र	समतल	सम	तल
अवगत	अव	गत	उत्तम	उत्	तम
संपूर्ण	सम्	पूर्ण	तिरस्कार	तिरस्	कार
विख्यात	वि	ख्यात	उत्पात	उत्	पात
सुरक्षा	सु	रक्षा	सुगम	सु	गम
आरोहण	आ	रोहण	अपवित्र	अ	पवित्र
सुपुत्री	सु	पुत्री	विरुद्ध	वि	रुद्ध
प्रगति	प्र	गति	प्रपंच	प्र	पंच
अत्यंत	अति	अंत	दुरुपयोग	दुर्	उपयोग
संसार	सम्	सार	आचरण	आ	चरण
अवसाद	अव	साद	प्रकार	प्र	कार
अतिथि	अ	तिथि	उद्योग	उत	योग
आगमन	आ	गमन	बेचारा	वे	चारा
अनुमान	अनु	मान	समान	स	मान
सपरिवार	स	परिवार	अनवरत	अन	वरत
सादर	स	आदर	आग्रह	आ	ग्रह
अज्ञात	अ	ज्ञात	अकाल	अ	काल
संभावना	सम्	भावना	विवाद	वि	वाद
विगत	वि	गत	संपादक	सम्	पादक
अदृश्य	अ	दृश्य	प्रवचन	प्र	वचन
निर्मूल	निर्	मूल	प्रतिनिधि	प्रति	निधि
असंख्य	अ	संख्य	संस्कार	सम्	कार
सशक्त	स	शक्त	अनुवाद	अनु	वाद
अभाव	अ	भाव	प्रतिकूल	प्रति	कूल
सुयोग्य	सु	योग्य	अनगिनत	अन	गिनत
परिहास	परि	हास			

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के पाठों में प्रयुक्त उपसर्ग सहित शब्द

1. धूल

उपसर्ग युक्त शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
दुर्भाग्य	दुर्	भाग्य
संसर्ग	सम्	सर्ग
संस्कृति	सम्	कृति
संचालन	सम्	चालन
दुर्लभ	दुर्	लभ
उपमान	उप	मान
प्रवास	प्र	वास
अभिजात	अभि	जात
निर्द्वंद्व	निर्	द्वंद्व

2. दुख का अधिकार

उपसर्ग युक्त शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अधिकार	अधि	कार
निर्वाह	निर्	वाह
विभिन्न	वि	भिन्न
संभ्रांत	सम्	भ्रांत
परलोक	पर	लोक
अनुभूति	अनु	भूति
वियोग	वि	योग
वेहया	बे	हया

3. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

उपसर्ग युक्त शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
दुर्गम	दुर्	गम
विचित्र	वि	चित्र
अवगत	अव	गत
संपूर्ण	सम्	पूर्ण
विख्यात	वि	ख्यात
सुरक्षा	सु	रक्षा
आरोहण	आ	रोहण
सुपुत्री	सु	पुत्री
प्रगति	प्र	गति
अत्यंत	अति	अंत
संसार	सम्	सार
अवसाद	अव	साद

4. तुम कब जाओगे, अतिथि

उपसर्ग युक्त शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अतिथि	अ	तिथि
आगमन	आ	गमन
अनुमान	अनु	मान
सपरिवार	स	परिवार
सादर	स	आदर
अज्ञात	अ	ज्ञात
संभावना	सम्	भावना
विगत	वि	गत
अदृश्य	अ	दृश्य
निर्मूल	निर्	मूल

5. वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन

उपसर्ग युक्त शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
असंख्य	अ	संख्य
सशक्त	स	शक्त
अभाव	अ	भाव
सुयोग्य	सु	योग्य
परिहास	परि.	हास
उपकरण	उप	करण
विज्ञान	वि	ज्ञान
संभव	सम्	भव
सुरक्षा	सु	रक्षा
प्रगति	प्र	गति
उपयोग	उप	योग
अस्थायी	अ	स्थायी
प्रदर्शन	प्र	दर्शन
प्रयोग	प्र	योग
प्रचार	प्र	चार
विदेशी	वि	देशी

6. कीचड़ का काव्य

उपसर्ग युक्त शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
समतल	सम	तल
उत्तम	उत्	तम
तिरस्कार	तिरस्	कार

7. धर्म की आड़

उपसर्ग युक्त शब्द	*उपसर्ग*	*मूल शब्द*
उत्पात	उत्	पात
सुगम	सु	गम
अपवित्र	अ	पवित्र
विरुद्ध	वि	रुद्ध
प्रपंच	प्र	पंच
दुरुपयोग	दुर्	उपयोग
आचरण	आ	चरण
प्रकार	प्र	कार
उद्योग	उत्	योग
बेचारा	बे	चारा

8. शुक्रतारे के समान

उपसर्ग युक्त शब्द	*उपसर्ग*	*मूल शब्द*
समान	स	मान
अनवरत	अन	वरत
आग्रह	आ	ग्रह
अकाल	अ	काल
विवाद	वि	वाद
संपादक	सम्	पादक
प्रवचन	प्र	वचन
प्रतिनिधि	प्रति	निधि
संस्कार	सम्	कार
अनुवाद	अनु	वाद
प्रतिकूल	प्रति	कूल
अनगिनत	अन	गिनत

अभ्यासार्थ
(Practice)

1. पाठ्यपुस्तक 'संचयन' के पाठों के लिए गए उपसर्ग युक्त शब्द से उपसर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए–

1. गिल्लू

सघन विचित्र परिचारिका विवेचन आहार
विश्वास अपवाद आहार प्रभात प्रयुक्त

2. स्मृति

प्रारंभ प्रकोप प्रतीक्षा दुविधा निश्चय
निर्भर प्रवृत्ति संकल्प

3. कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

दरअसल असमर्थ दुर्गम प्रवास अछूत
निर्यात प्रपात संतुलन सम्मान विचार

4. मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय

अवरोध संकलन नासमझ प्रकार परिश्रम
अनिच्छा पुनर्जीवन असहाय अदम्य विरुद्ध
विश्राम अनेक

5. हामिद खाँ

बदबू स्वागत प्रवेश बेखटके अधेड़
परिवर्तन निर्यात निर्माण

6. दीप जल उठे

आग्रह अनुमान संक्षिप्त उल्लेख कुशासन
प्रतिक्रिया अभियान पुरस्कार

2. निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त उपसर्ग लगाइए– (*एवरेस्ट : मेरी शिखर-यात्रा*)

पुत्र व्यवस्थित वास कूल गति रोहण रक्षित

3. निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए– (*धर्म की आड़*)

ला बिला बे बद ना खुश हर गैर

4. नीचे दिए गए उपसर्गों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए शब्द बनाइए : (*शुक्रतारे के समान*)

अ वि नि
कु अन पर
दुर् सु अधि

☞ प्रत्यय (*Suffix*)

प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में नवीनता, परिवर्तन अथवा विशेषता ला देते हैं। इनसे नए शब्दों का निर्माण होता है।

संस्कृत में प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं :

- ❖ एक वे जो क्रियाधातु के बाद लगकर संज्ञा/विशेषण बनाते हैं, इन्हें **'कृत् प्रत्यय'** कहते हैं।
- ❖ दूसरे प्रत्यय वे हैं, जो संज्ञा आदि के बाद लगकर प्रायः संज्ञा/विशेषण बनाते हैं, इन्हें **'तद्धित प्रत्यय'** कहते हैं।

उदाहरण :

कृत् प्रत्यय — पठनीय, होनहार, पढ़ाई, वक्तव्य

तद्धित प्रत्यय — बचपन, नमकीन, कोठरी, घरेलू

आइए, अब हम इनके बारे में विस्तारपूर्वक जानें:

प्रत्यय के भेद (*Kinds of Suffix*) **:** प्रत्यय के दो भेद हैं :

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. कृत् प्रत्यय (*Primary Suffix*)

कृत् प्रत्यय वे हैं, जो क्रिया के धातु रूप के अंत में जुड़कर संज्ञा/विशेषण शब्द बनाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्दों को **'कृदंत'** कहते हैं। जैसे--लिखाई, दिखावट, सजावट, पठनीय आदि।

कृत् प्रत्ययों को इस आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है कि क्रिया के साथ कृत् प्रत्यय किन-किन दशाओं में प्रयुक्त होते हैं :

1. क्रिया को करने वाला (*कर्तृवाचक कृत प्रत्यय*) **:** यह क्रिया के कर्ता का बोध कराने वाला कृत् प्रत्यय है।

उदाहरण देखो और समझो :

कर्तृवाचक कृत प्रत्यय	*मूल शब्द*	*उदाहरण*
अक्कड़	भूल, पी	भुलक्कड़, पियक्कड़
ऊ	खा, कमा	खाऊ, कमाऊ
इया	घट, लाख	घटिया, लखटकिया
वाला	खाने, पढ़	खानेवाला, पढ़नेवाला
आऊ	बिक, टिक	बिकाऊ, टिकाऊ
हार	होना, पालन	होनहार, पालनहार
दार	लेन, देन	लेनदार, देनदार
आलु	कृपा, दया	कृपालु, दयालु

2. क्रिया का कर्म (*कर्मवाचक कृत् प्रत्यय*) **:** कर्मवाचक शब्दों की रचना करने वाले कृत् प्रत्यय 'कर्मवाचक कृत् प्रत्यय' कहलाते हैं। जैसे--औना, नी, ना आदि।

कर्मवाचक कृत् प्रत्यय	*मूल शब्द*	*उदाहरण*
औना	खेल, बिछ	खिलौना, बिछौना
नी	चट, ओढ़	चटनी, ओढ़नी
ना	खा, गँवा	खाना, गँवाना

3. क्रिया का परिणाम (*भाववाचक कृत् प्रत्यय*) **:** इन प्रत्ययों से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे—

आन	उड़, उठ, मिल	उड़ान, उठान, मिलान
आई	लिख, दिख, पढ़	लिखाई, दिखाई, पढ़ाई

आवट	लिख, सज, मिल	लिखावट, सजावट, मिलावट
ई	बोल, हँस	बोली, हँसी
आहट	घबरा, चरचरा, गुर्रा	घबराहट, चरचराहट, गुर्राहट
आव	फैल, बह, चढ़	फैलाव, बहाव, चढ़ाव
औती	कट, बाप, चुन	कटौती, बपौती, चुनौती

4. क्रिया का साधन (*करणवाचक कृत् प्रत्यय*) : जिस साधन से क्रिया की जाए अर्थात् जिन कृत् प्रत्ययों से क्रिया के करण-रूप बनते हैं, वे करणवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

अन	श्रव्, कर्	श्रवण, करण
नी	कतर, धौंक, सूँघ	कतरनी, धौंकनी, सूँघनी
ई	रेत, खेत, बुहार	रेती, खेती, बुहारी
ना	ढक, बेल, छन्	ढकना, बेलना, छन्ना

5. क्रिया करने के योग्य होना (*संस्कृत प्रत्यय*) :

अनीय	कथ्, पठ्, गोप्	कथनीय, पठनीय, गोपनीय
य	दे, पे, गे	देय, पेय, गेय
व्य	कर्त, मंत, श्रे	कर्तव्य, मंतव्य, श्रेय

2. तद्धित प्रत्यय (*Nominal Suffix*)

जो प्रत्यय क्रिया से भिन्न अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में विशिष्टता लाते हैं, 'तद्धित प्रत्यय' कहलाते हैं। इनसे प्राय: संज्ञा और विशेषण बनते हैं। जैसे —

गरीब → गरीबी　　बाहर → बाहरी　　गुजरात → गुजराती
खेत → खेती　　अपना → अपनापन　　पंजाब → पंजाबी

इनके निम्नलिखित प्रकार हैं :

1. संज्ञा से संज्ञा

(क) लघुतावाचक (*छोटापन अथवा लाड़-प्यार का बोध हो*)

– इया : डिब्बा → डिबिया, खाट → खटिया, बेटी → बिटिया।
– ई : घंटा → घंटी, पहाड़ → पहाड़ी, रस्सा → रस्सी।
– री : कोठा → कोठरी।

(ख) भाववाचक (*इनसे भाववाचक संज्ञा बनती हैं*)

– पन/पा : लड़का → लड़कपन, बच्चा → बचपन, बूढ़ा → बुढ़ापा।
– ई : चोर → चोरी, खेत → खेती, दुश्मन → दुश्मनी।
– ता/त्व : मनुष्य → मनुष्यत्व, मानव → मानवता, पशु → पशुता/पशुत्व।
– आई : पंडित → पंडिताई।

(ग) पेशा/जीविकावाचक (*इससे जीविका चलाने वाले का बोध होता है*)

– एरा : साँप → सँपेरा, चित्र → चितेरा।
– आर : सोना → सुनार, लोहा → लुहार।
– वाला : इक्का → इक्कावाला, टाँगा → टाँगावाला।
– वान : गाड़ी → गाड़ीवान, कोच → कोचवान।
– कार : पत्र → पत्रकार, कला → कलाकार।
– क : लेख → लेखक, लिपि → लिपिक।

– गर : जादू → जादूगर, सौदा → सौदागर।

– दार : जमीं → जमींदार, दुकान → दुकानदार।

– हारा : लकड़ी → लकड़हारा, चूड़ी → चूड़िहारा।

(घ) संबंधवाची (*उस संज्ञा से संबंध रखने वाला/प्रायः संतान के अर्थ में*)

जैसे—वसुदेव → वासुदेव, पाण्डु → पाण्डव, दशरथ → दाशरथि।

2. विशेषण से संज्ञा :

भाववाचक (*इनसे भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं*)

– पन/पा : काला → कालापन, मोटा → मुटापा।

– ता/त्व : लघु → लघुता/लघुत्व, अपना → अपनत्व।

– ई : गरीब → गरीबी, खुश → खुशी।

– आस : मीठा → मिठास, खट्टा → खटास।

– आई : अच्छा → अच्छाई, बुरा → बुराई।

– आहट : कड़वा → कड़वाहट, चिकना → चिकनाहट।

3. संज्ञा से विशेषण :

(क) गुणवाचक (*इनसे गुण/धर्म को रखने वाले का बोध होता है*)

– ई : गुलाब → गुलाबी, ऊन → ऊनी।

– ईला : रस → रसीला, ज़हर → ज़हरीला, बर्फ → बर्फीला।

– ईन : नमक → नमकीन, रंग → रंगीन, शौक → शौकीन।

– आ : भूख → भूखा, प्यास → प्यासा।

(ख) स्थानवाचक (*उस स्थान से संबंधित व्यक्ति/वस्तु का बोध होता है*)

– ई : बंगाल → बंगाली, जापान → जापानी, लखनऊ → लखनवी।

– इया : कोलकाता → कोलकतिया, मुंबई → मुंबइया।

– ऊ : बाजार → बाजारू

-- एलू : घर → घरेलू।

(ग) रिश्ता-नाता बोधक (*उस रिश्ते से संबंधित व्यक्ति*)

– एरा : चाचा → चचेरा, मामा → ममेरा, फूफा → फुफेरा।

(घ) संबंधवाचक (*उस व्यक्ति/वस्तु से संबंधित*)

– इक : धर्म → धार्मिक, नीति → नैतिक, पुराण → पौराणिक।

– अ : शिव → शैव, शक्ति → शाक्त, बुद्ध → बौद्ध।

– आना : साल → सालाना, रोज → रोजाना, मर्द → मर्दाना।

4. क्रिया-विशेषण से विशेषण

– ला : अगला, पिछला, निचला, मझला।

☞ **ध्यान दें :** *कभी-कभी शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग एक साथ किया जाता है। जैसे—*

क्र.सं.	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय	निर्मित शब्द
1.	स्व	तंत्र	ता	स्वतंत्रता
2.	स	फल	ता	सफलता
3.	अनु	करण	ईय	अनुकरणीय
4.	दुस्	साहस	ई	दुस्साहसी

5.	बे	इज़्ज़त	ई	बेइज़्ज़ती
6.	नि	डर	ता	निडरता
7.	अप	मान	इत	अपमानित
8.	सु	गंध	इत	सुगंधित
9.	उप	कार	अक	उपकारक

☞ *कभी-कभी दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग किया जाता है, जैसे--*

क्र.सं.	*मूल शब्द*	*प्रत्यय*	*+ प्रत्यय*	*निर्मित शब्द*
1	बच्चा	पन	+ आ	बचपना
2	बन	आवट	+ ई	बनावटी
3	समझ	दार	+ ई	समझदारी
4	राष्ट्र	ईय	+ ता	राष्ट्रीयता
5	भूत	इक	+ ता	भौतिकता
6.	देख	आवट	+ ई	दिखावटी
7.	तैर	आक	+ ई	तैराकी
8.	पी	आस	+ आ	प्यासा
9.	बुद्धि	मान	+ ई	बुद्धिमानी
10.	क्षत्री	इत	+ त्व	क्षत्रियत्व

☞ स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- उपसर्ग, प्रत्यय और समास विधि से नए शब्द बनाए जाते हैं।
- शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर पद बन जाता है।
- उपसर्ग शब्द के प्रारंभ में लगकर नए शब्द बनाते हैं।
- हिंदी में उपसर्ग संस्कृत, उर्दू-फारसी, अंग्रेजी से आए हैं तथा हिंदी के अपने उपसर्ग भी हैं।
- प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़ते हैं और शब्द में विशेषता, नवीनता ला देते हैं।
- प्रत्यय मुख्य रूप से दो प्रकार के हैं—कृत् और तद्धित प्रत्यय।
- कभी-कभी एक शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग किया जाता है।
- कभी-कभी एक शब्द में दो-दो प्रत्ययों का भी प्रयोग किया जाता है।

प्रत्ययों को इस प्रकार देखें और समझें

✤ संज्ञा बनाने वाले कृत् प्रत्यय

प्रत्यय — *उदाहरण (धातु + प्रत्यय)*

आई – लड़ + आई → लड़ाई
लिख + आई → लिखाई

आक – तैर + आक → तैराक

आन – उड़ + आन → उड़ान
थक + आन → थकान
मिल + आन → मिलान

आप – मिल + आप → मिलाप

आव – चुन + आव → चुनाव
खिंच + आव → खिंचाव
फैल + आव → फैलाव
बह + आव → बहाव

आवट – सज + आवट → सजावट
मिल + आवट → मिलावट
बन + आवट → बनावट

इयल – सड़ + इयल → सड़ियल
मर + इयल → मरियल
ई – हँस + ई → हँसी
बोल + ई → बोली
त – बच + त → बचत
खप + त → खपत
ती – घट + ती → घटती
चढ़ + ती → चढ़ती
नी – ओढ़ + नी → ओढ़नी
सूँघ + नी → सूँघनी
मथ + नी → मथनी

✤ विशेषण बनाने वाले कृत् प्रत्यय

अक्कड़ – भूलना → भुलक्कड़
घूमना → घुमक्कड़
आऊ – बिकना → बिकाऊ
खाना → खाऊ
आकू – पढ़ना → पढ़ाकू
लड़ना → लड़ाकू
ऐया – गाना → गवैया
नाचना → नचैया
लिखना → लिखैया
दार – देना → देनदार
लेना → लेनदार

✤ संज्ञा से संज्ञा बनाने वाले तद्धित प्रत्यय

आई – पंडित → पंडिताई
सेवक → सेवकाई
चौड़ा → चौड़ाई
आर – लोहा → लोहार
सोना → सुनार
इया – डिब्बा → डिबिया
खाट → खटिया
लोटा → लुटिया
बेटा → बिटिया
ई – घंटा → घंटी
पहाड़ → पहाड़ी
रस्सा → रस्सी
कटार → कटारी
एरा – साँप → सँपेरा
लूट → लुटेरा
मामा → ममेरा
चाचा → चचेरा
क – लेख → लेखक
पाठ → पाठक
बाल → बालक
ता – मानव → मानवता
देव → देवता
कुशल → कुशलता
त्व – देव → देवत्व
गुरु → गुरुत्व
शिष्य → शिष्यत्व
मनुष्य → मनुष्यत्व
दार – दुकान → दुकानदार
जमीन → जमींदार
पहरा → पहरेदार
नी – चाँद → चाँदनी
नथ → नथनी
पन – लड़का → लड़कपन
बच्चा → बचपन
वान – गाड़ी → गाड़ीवान
कोच → कोचवान

✤ संज्ञा से विशेषण बनाने वाले तद्धित प्रत्यय

आ – भूख → भूखा
प्यास → प्यासा
आलु – दया → दयालु
श्रद्धा → श्रद्धालु
ममता → ममतालु
इत – पुष्प → पुष्पित
अंकुर → अंकुरित
ई – जंगल → जंगली
पंजाब → पंजाबी
देहात → देहाती
ईन – रंग → रंगीन
शौक → शौकीन
कुल → कुलीन
नमक → नमकीन
ईय – दर्शन → दर्शनीय
भारत → भारतीय
राष्ट्र → राष्ट्रीय
पर्वत → पर्वतीय

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के विभिन्न पाठों में आए प्रत्यय युक्त शब्द

1. धूल

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
प्रेमी	प्रेम	ई
कीमती	कीमत	ई
वंचित	वंच	इत
भिन्नता	भिन्न	ता
सभ्यता	सभ्य	ता
अमरता	अमर	ता
बचपन	बच्चा	पन
नकली	नकल	ई
जवानी	जवान	ई
वास्तविक	वास्तव	इक

2. दुख का अधिकार

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
दुखी	दुख	ई
द्रवित	द्रव	इत
बुढ़िया	बूढ़ा	इया
तरावट	तर	आवट

3. एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
नगरीय	नगर	ईय
कठिनाई	कठिन	आई
सख्ती	सख्त	ई
आरोही	आरोह	ई
आनंदित	आनंद	इत
भारतीय	भारत	ईय
खुदाई	खोद	आई
साहसिक	साहस	इक
चिंतित	चिंता	इत
कठिनतम	कठिन	तम
पूर्वी	पूर्व	ई
दृश्यता	दृश्य	ता

4. तुम कब जाओगे, अतिथि

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
नम्रता	नम्र	ता
मार्मिक	मर्म	इक
देवता	देव	ता
स्थापित	स्थापना	इत
आर्थिक	अर्थ	इक
अंकित	अंक	इत
विदाई	विदा	ई
अकेलापन	अकेला	पन
फिल्मी	फिल्म	ई
नौकरी	नौकर	ई
पत्रिका	पत्र	इका
प्रेमिका	प्रेम	इका

5. वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
वैज्ञानिक	वि+ज्ञान	इक
वाहक	वहन	इक
समुद्री	समुद्र	ई
चलाऊ	चल	आऊ
सृजित	सृजन	इत
बदलाव	बदल	आव
प्रभावित	प्रभाव	इत
प्राकृतिक	प्रकृति	इक
सदस्यता	सदस्य	ता
नीली	नील	ई
आलोकित	आलोक	इत
प्रमाणित	प्रमाण	इत
घटिया	घट	इया
प्रतिष्ठित	प्रतिष्ठा	इत

6. कीचड़ का काव्य

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
मलिन	मल	इन
प्रसन्नता	प्रसन्न	ता
तटस्थता	तटस्थ	ता
कीमती	कीमत	ई

7. धर्म की आड़

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
बड़प्पन	बड़ा	पन
भावना	भाव	ना

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
मजहबी	मजहब	ई
ईश्वरत्व	ईश्वर	त्व
पागलपन	पागल	पन
शक्तिशाली	शक्ति	शाली
मनुष्यत्व	मनुष्य	त्व
दीनदार	दीन	दार

8. शुक्रतारे के समान

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
स्वतंत्रता	स्वतंत्र	ता
पीड़ित	पीड़ा	इत

प्रत्यय युक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
नाटिका	नाटक	इका
लेखन	लेख	अन
ईश्वरीय	ईश्वर	ईय
साहित्यिक	साहित्य	इक
मासिक	मास	इक
संबंधित	संबंध	इत
लिखावट	लिख	आवट
साप्ताहिक	सप्ताह	इक

उपसर्ग-प्रत्यय दोनों के प्रयोग वाले शब्द

['स्पर्श' (पाठ्यपुस्तक से)]

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
विज्ञापित	वि	ज्ञापन	इत
असारता	अ	सार	ता
प्रचलित	प्र	चलन	इत
अमरता	अ	मर	ता
बेचैनी	बे	चैन	ई
अनियमित	अ	नियम	इत
अनिश्चित	अ	निश्चय	इत
सुरक्षित	सु	रक्षा	इत
सफलता	स	फल	ता
परिवर्तित	परि	वर्तन	इत
सम्मानित	सम्	मान	इत
बेईमानी	बे	ईमान	ई
आलोकित	आ	लोक	इत
विरोधी	वि	रोध	ई

['संचयन' (पाठ्यपुस्तक से)]

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
समादरित	सम्	आदर	इत
अवमानित	अव	मान	इत
परिचारिका	परि	चर (चर्चा)	इका
अपमानित	अप	मान	इत
संतुलित	सम्	तुल	इत
विद्रोही	वि	द्रोह	ई
सफलता	स	फल	ता
तत्कालीन	तत्	काल	ईन
सुसज्जित	सु	सज्जा	इत
अवलंबन	अव	लंब	अन
अस्वस्थता	अ	स्वस्थ	ता
बेपरवाही	बे	परवाह	ई

अभ्यासार्थ
(Practice)

1. पूरक पुस्तक 'संचयन' से लिए गए प्रत्यय युक्त शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए–

1. गिल्लू

हरीतिमा स्वर्णिम विस्मित आकर्षित चमकीली कठिनाई ठंडक उष्णता

2. स्मृति

भयंकरता घबराहट बुढ़ापा मोहनी योग्यता क्रोधित बंधुत्व मजबूती गहराई बोली

3. कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

शांतिपूर्ण लंबाई राष्ट्रीय बाहरी नाटकीय जवानी मौलिक घरेलू चित्रित चिह्नित
अंतिम स्वच्छता

4. मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय

घोषित बचपन नियमित चिंतित खरीददारी चिंतक स्थापित लेखक नाविक सरकारी
रोमांचक व्यक्तिव

5. हामिद खाँ

पौराणिक मुस्कराहट दढ़ियल दक्षिणी रक्षक सच्चाई सांप्रदायिक ईमानदारी नियमित दुकानदार

6. दीये जल उठे

गिरफ्तारी चौकीदार दलदली सत्याग्रही पारित कठिनतम स्थगित रियासतदार

2. **'त्व' प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द बनाइए–**
3. **'इक' प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण कीजिए–**

सप्ताह	+ इक	=		अर्थ	+ इक	=	
साहित्य	+ इक	=		धर्म	+ इक	=	
व्यक्ति	+ इक	=		मास	+ इक	=	
राजनीति	+ इक	=		वर्ष	+ इक	=	

4. **उपसर्ग की परिभाषा देते हुए उसके तीन उदाहरण दीजिए।**
   (संकेत : *शब्द से पहले लगते हैं – कुपुत्र, अपयश, प्रबल*)
5. **प्रत्यय किसे कहते हैं ? इसके तीन उदाहरण दीजिए।**
   (संकेत : *शब्द के अंत में लगते हैं—पात्रता, नैतिक, पशुत्व*)
6. **नीचे दिए गए प्रत्येक उपसर्ग से दो-दो शब्द बनाइए :**
   अति, अधि, उप, परि, सु
7. **नीचे लिखे शब्दों में उपसर्ग बताइए :**
   अभ्यास, उद्गम, परामर्श, निवास, प्रतिध्वनि, अवैज्ञानिक, स्वाधीनता, असुंदरता।
   (संकेत : *अभि, उद्, परा, नि, प्रति, अ, स्व, अ*)
8. **नीचे दो स्तंभ दिए गए हैं। एक स्तंभ में उपसर्ग हैं और दूसरे में शब्द। इनको जोड़कर सार्थक शब्द बनाइए :**

क	ख
कु	पाठी
पुनर् (पुनः)	कर्म
स्व	ऐतिहासिक
प्राक्	जन्म
सह	तंत्र

   (संकेत : *कुकर्म, पुनर्जन्म, स्वतंत्र, प्रागैतिहासिक, सहपाठी*)
9. **तीन ऐसे शब्दों के उदाहरण दीजिए जिनमें एक से अधिक उपसर्ग हों।**
   (संकेत : *व्याकरण: (वि + आ + करण), निराकार (निर् + आ + कार), सद्व्यवहार (सद् + वि + अव + हार)*)
10. **कृत् प्रत्यय के चार उदाहरण दीजिए।**
    (संकेत : *अक्कड़, ऊ, इया, आऊ*)
11. **संस्कृत और हिंदी स्रोत वाले प्रत्ययों के दो-दो उदाहरण दीजिए।**
    (संकेत : *संस्कृत के — अक, उक; हिंदी के — हार, ऊ*)
12. **नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, उनको अलग करते हुए उनके मूल शब्द बताइए :**
    भिक्षुक, भुलक्कड़, त्यागी, अभिनेता, होनहार, खाऊ।
13. **(क) निम्नलिखित प्रत्ययों से संज्ञा शब्द बनाइए : नी, आई, आवट, ई**
    (ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर सार्थक शब्द बनाइए : पढ़, मथ, बिछ।

14. (क) ऐसे चार शब्द लिखिए जिनमें तद्धित प्रत्यय लगा हो।
(संकेत : *डिबिया, घंटी, चोरी, लड़कपन*)

(ख) नीचे दो स्तंभ हैं — इन्हें मिलाकर सार्थक शब्द बनाइए :

'क'	'ख'
इक्का	ता
लीप	ता
लघु	ई
बंगाल	वाला

(संकेत : *इक्कावाला, लिपाई, लघुता, बंगाली*)

15. हिंदी में 'खेलनहार' की तरह के प्रत्यय सहित अन्य उदाहरण दीजिए।
(संकेत : *बचावनहार, दिखावनहार, चलावनहार*)

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा नवीं कक्षा की परीक्षाओं हेतु पूछे गए उपसर्ग-प्रत्यय संबंधी प्रश्न

1. **निम्नलिखित में से उपसर्ग-प्रत्यय अलग कीजिए :**
(*i*) कुपूत, (*ii*) अधकचरा, (*iii*) सजावट, (*iv*) रटंत।
(संकेत : (*i*) *कु (उ)*, (*ii*) *अध (उ)*,(*iii*) *आवट (प्र)*, (*iv*) *अंत (प्र)*)।

2. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के उपसर्ग-प्रत्यय अलग कीजिए :**
(*i*) अनुपयोगी, (*ii*) कमजोर, (*iii*) बचपन, (*iv*) स्वत्व।
(संकेत : (*i*) *अन (उ)*, (*ii*) *कम (उ)*,(*iii*) *पन (प्र)*, (*iv*) *त्व (प्र)*)।

3. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में से प्रत्यय अलग करके लिखिए :**
(*i*) योगी, (*ii*) लुहार, (*iii*) धार्मिक, (*iv*) सपेरा, (*v*) प्रभुता।
(संकेत : (*i*) *ई*, (*ii*) *आर*,(*iii*) *इक*, (*iv*) *एरा*, (*v*) *ता*।

4. **केवल दो शब्दों के उपसर्ग और प्रत्यय अलग करके लिखिए और उनसे नया शब्द भी बनाइए :**
अचेतन, अपमान, पढ़ाई, कलाकार।
(संकेत : *अ (उ), अप (उ), आई (प्र), कार (प्र)*)।

5. **केवल दो शब्दों के उपसर्ग-प्रत्यय अलग करके लिखिए :**
(i) कुपूत, *(ii)* पुकार, *(iii)* झगड़ालू, *(iv)* अपनापन।
(संकेत : *(i) कु (उ), (ii) आर (प्र), (iii) आलू (प्र), (iv)* पन *(प्र)*)।

6. **केवल दो शब्दों के उपसर्ग-प्रत्यय अलग करके लिखिए :**
आगम, पराभव, नारीत्व, दैनिक
(संकेत : *आ (उ), परा (उ), त्व (प्र), इक (प्र)*)।

7. **केवल दो शब्दों में उपसर्ग जोड़कर लिखिए :**
बल, भाव, मान, सार।
(संकेत : *निर्बल, सद्भाव, सम्मान, निस्सार*)

8. **केवल दो शब्दों को प्रत्यय सहित लिखिए :** कर्म, बल, धन (संकेत : कर्मठ, बलवान,

9. **केवल दो शब्दों के उपसर्ग लिखिए :** दुर्बल, कुकर्म, अपहरण, अचेतन। (संकेत : दुर्, कु, अप,

10. **किन्हीं दो के उपसर्ग अलग कीजिए :** पराजय, अपशब्द, निर्धन, अनुवाद। (संकेत : परा, अप, निर्,

11. **(क) किन्हीं दो के उपसर्ग अलग करो :** अपमान, अनुपजाऊ, कमजोर (संकेत : अप, अन,

(ख) किन्हीं दो के प्रत्यय अलग करो : महानता, बचपन, स्वत्व (संकेत : ता, पन,

C.B.S.E. की परीक्षाओं में पूछे गए उपसर्ग-प्रत्यय संबंधी प्रश्न

1. **निर्देशानुसार कीजिए :** *(C.B.S.E. 2009 Delhi)*
   (क) संवाद। *(उपसर्ग बताइए)*
   (ख) 'उप'। *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (ग) 'गुर्राहट'। *(प्रत्यय बताइए)*
   (घ) 'आऊ'। *(प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)*

उत्तर : (क) सम्, (ख) उपनाम, (ग) आहट, (घ) बिकाऊ।

2. **निर्देशानुसार कीजिए :** *(C.B.S.E.2008 Comptt. Outside)*
   (क) अधिकृत। *(उपसर्ग बताइए)*
   (ख) 'परि'। *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (ग) घटिया। *(प्रत्यय लिखिए)*
   (घ) पराजय। *(उपसर्ग बताइए)*
   (ङ) 'निर्'। *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (च) गुजराती। *(प्रत्यय लिखिए)*
   (छ) 'ता'। *(प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)*

उत्तर : (क) अधि, (ख) परिवार, (ग) इया, (घ) परा, (ङ) निर्गुण, (च) ई, (छ) भव्यता।

3. **निर्देशानुसार कीजिए :** *(C.B.S.E. 2008 Comptt. Delhi)*
   (क) उपयोग। *(उपसर्ग बताइए)*
   (ख) 'अन'। *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (ग) सजावट। *(प्रत्यय लिखिए)*
   (घ) 'इक'। *(प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)*
   (ङ) सम्मेलन। *(उपसर्ग बताइए)*
   (च) 'अधि'। *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (छ) घटिया। *(प्रत्यय बताइए)*
   (ज) 'आव'। *(प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)*

उत्तर : (क) उप, (ख) अनपढ़, (ग) आवट, (घ) सामाजिक, (ङ) सम्, (च) अधिपति, (छ) इया, (ज) झुकाव।

4. **निर्देशानुसार कीजिए :** *(C.B.S.E.2008 Comptt. Delhi)*
   (क) दुर्लभ। *(उपसर्ग बताइए)*
   (ख) 'अप'। *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (ग) राष्ट्रीय। *(प्रत्यय बताइए)*
   (घ) 'नी'। *(प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)*

उत्तर : (क) 'दूर', (ख) अपमान, (ग) ईय, (घ) छंटनी।

5. **निर्देशानुसार कीजिए :** *(C.B.S.E. 2008 Outside)*
   (क) 'उद्घाटन' *(उपसर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए)*
   (ख) 'अति' *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (ग) 'सजावट' *(मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए)*
   (घ) 'एलू' *(प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)*
   (ङ) 'नासमझ' *(उपसर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए)*
   (च) 'अधि' *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (छ) 'मानवता' *(मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए)*
   (ज) 'इक' *(प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)*

उत्तर : (क) उत् (उपसर्ग), घाटन (मूल शब्द)। (ख) अत्यंत। (ग) साज + आवट। (घ) घरेलू। (ङ) ना (उपसर्ग), समझ (मूल शब्द)। (च) अधिभार। (छ) मानव (मूल शब्द), ता (प्रत्यय)। (ज) धार्मिक।

6. **निर्देशानुसार कीजिए :** *(C.B.S.E. Sample Paper-I)*
   (क) दुर्घटना *(उपसर्ग बताइए)*
   (ख) 'अति' *(उपसर्ग से एक शब्द बनाइए)*
   (ग) छटपटाहट *(प्रत्यय बताइए)*
   (घ) 'वान' *(प्रत्यय से एक शब्द बनाइए)*

उत्तर : (क) दुर। (ख) अत्यंत। (ग) आहट। (घ) धनवान।

7. **निर्देशानुसार कीजिए :** *(C.B.S.E. Sample Paper-II)*
   (क) 'मदहोश' *(उपसर्ग और मूल शब्द अलग करें)*
   (ख) 'प्र' *(उपसर्ग से एक शब्द बनाएँ)*
   (ग) 'ओढ़नी' *(मूल शब्द और प्रत्यय अलग करें)*
   (घ) 'आऊ' *(प्रत्यय से एक शब्द बनाएँ)*

उत्तर : (क) मद–उपसर्ग, मूल शब्द–होश। (ख) 'प्र' उपसर्ग से बना शब्द प्रबल। (ग) मूल शब्द–ओढ़, प्रत्यय–नी। (घ) 'आऊ' प्रत्यय से बना शब्द–यथा–'बिकाऊ'।

नवीं कक्षा हेतु उपसर्ग-प्रत्यय के बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

प्रश्न : उपसर्ग-प्रत्यय छाँटों :

1. ***(i)* 'उन्नत' शब्द में उपसर्ग है:–**
   (क) अन (ख) उत्
   (ग) उन् (घ) उत

   ***(ii)* 'भौतिकी' शब्द में प्रत्यय है:–**
   (क) इ (ख) ई
   (ग) की (घ) इकी

उत्तर : *(i)* (ख), *(ii)* (ख)

2. (*i*) 'अधिकरण' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) अधि (ख) अ (ग) करण
(*ii*) 'दुराचार' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) दुरा (ख) दुर (ग) दु
(*iii*) 'गुजराती' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) गु (ख) राती (ग) ई
उत्तर : (*i*) (क), (*ii*) (ख), (*iii*) (ग)

3. (*i*) 'स्वच्छ' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) स्व (ख) सु (ग) च्छ
(*ii*) 'ऊन' उपसर्ग का क्या अर्थ है?
(क) कम (ख) अधिक (ग) गिनना
(*iii*) 'बिला' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइए।
(क) बिलाकू (ख) बिलावजह (ग) बिलाकुल
(*iv*) 'प्रतिक्रिया' में मूल शब्द क्या है?
(क) प्रति (ख) क्रिया (ग) प्रक्रिया
उत्तर : (*i*) (ख), (*ii*) (क), (*iii*) (ख), (*iv*) (ख)

4. (*i*) 'अत्यंत' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) अति (ख) अत्य (ग) त
(*ii*) 'दुर्दशा' में मूल शब्द क्या है?
(क) दुर् (ख) दशा (ग) दुर्द
(*iii*) 'बदौलत' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) ब (ख) बद (ग) लत
उत्तर : (*i*) (क), (*ii*) (ख), (*iii*) (क)

5. (*i*) 'संगम' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) सम् (ख) सन् (ग) स
(*ii*) 'निर्दोष' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) नि (ख) निर् (ग) दोष
(*iii*) 'डिबिया' में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) इया (ख) या (ग) बिया
(*iv*) 'सँपेरा' में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) सँ (ख) पेरा (ग) एरा
उत्तर : (*i*) (क), (*ii*) (ख), (*iii*) (क), (*iv*) (ग)

6. निम्नलिखित शब्दों के समक्ष दिए गए मूल शब्द में जुड़े उपसर्ग और प्रत्यय के विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए–
(*i*) स्वावलंबन–
(क) स्वः + अवलंबन (ग) स्व + अवलंबन
(ख) स्वा + अवलंबन (घ) स्व + आवलंबन
(*ii*) मानवीयता–
(क) मानव + ईय + ता (ग) मानव + ईयता
(ख) मान + वीय + ता (घ) मानवीय + ता
उत्तर : (*i*) (ग), (*ii*) (क)

7. (*i*) 'अत्याचार' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग
(क) अ (ख) अति (ग) अत्या
(*ii*) 'संपूर्ण' शब्द में मूल शब्द क्या है?
(क) सम् (ख) स (ग) पूर्ण
(*iii*) 'मिलावट' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) मिल (ख) वट (ग) आवट
(*iv*) 'कृपालु' में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) लु (ख) आलु (ग) पालु
उत्तर : (*i*) (ख), (*ii*) (ग), (*iii*) (ग), (*iv*) (ख)

8. (*i*) 'निर्जन' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है?
(क) नि (ख) निर्
(ग) निर्ज (घ) न
(*ii*) 'प्रसिद्ध' में मूल शब्द क्या है?
(क) प्र (ख) प्रसि
(ग) द्ध (घ) सिद्ध
(*iii*) 'लड़कपन' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) लड़ (ख) कपन
(ग) पन (घ) न
(*iv*) 'बाजारू' में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) आरू (ख) रू
(ग) ऊ (घ) जारू
उत्तर : (*i*) (ख), (*ii*) (घ), (*iii*) (ग), (*iv*) (ग)।

9. (*i*) 'निस्संदेह' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) नि (ख) निस्
(ग) निस्स (घ) ह
(*ii*) 'स्वच्छ' शब्द में मूल शब्द क्या है?
(क) स्व (ख) वच्छ
(ग) अच्छ (घ) छ
(*iii*) 'बंगाली' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) ई (ख) गाली
(ग) आली (घ) ली
(*iv*) 'चुनाव' को अलग-अलग करके लिखिए :
(क) चु + नाव (ख) चुन + आव
(ग) चुना + व (घ) अन्य
उत्तर : (*i*) (ख), (*ii*) (ग), (*iii*) (क), (*iv*) (ख)।

10. (*i*) 'उद्गम' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(क) उद् (ख) उत् (ग) गम
(*ii*) किस शब्द में 'दुर' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ
(क) दुर्गुण (ख) दुर्दिन (ग) दुष्प्र
(*iii*) 'बाकायदा' में मूल शब्द क्या है?
(क) बा (ख) कायदा (ग) बका
(*iv*) 'लिखाई' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
(क) लिख (ख) खाई (ग) आई
उत्तर : (*i*) (ख), (*ii*) (ग), (*iii*) (ख), (*iv*) (ग)।

अध्याय 5

समास

(Compound)

पिछले अध्याय में आपने पढ़ा कि शब्द-रचना उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर तथा 'समास-विधि' से की जाती है। उपसर्ग-प्रत्यय के बारे में आप पिछले अध्याय में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस अध्याय में हम समास-विधि से शब्द-रचना करना सीखेंगे।

समास में दो या अधिक शब्दों के मेल से एक नए शब्द की रचना होती है। इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं :

> ❖ ***परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। इस प्रकार एक नए स्वतंत्र शब्द की रचना होती है।***

☞ **समझो :**

1. समास-रचना में प्राय: दो पद (शब्द) होते हैं—पहले को पूर्वपद और दूसरे को उत्तरपद कहते हैं।

उदाहरण : गंगाजल, घुड़सवार, पुस्तकालय आदि।

उपर्युक्त उदाहरण में गंगा, घुड़, पुस्तक—**पूर्वपद** हैं, जल, सवार, आलय—**उत्तरपद** हैं।

2. समास-रचना से बने शब्द को **'समस्त पद'** कहते हैं, जैसे : घुड़सवार, पुस्तकालय।

3. समस्त पद के अंग पृथक-पृथक करने को 'समास-विग्रह' कहते हैं, जैसे—

'घुड़सवार' का विग्रह होगा—'घोड़े पर सवार'। 'गंगाजल' का विग्रह होगा—'गंगा का जल'।

समास के भेद (*Kinds of Compound*) : समास के मुख्य भेद चार हैं :

1. तत्पुरुष समास (*Determinative Compound*)
2. बहुव्रीहि समास (*Attributive Compound*)
3. द्वंद्व समास (*Coupulative Compound*)
4. अव्ययीभाव समास (*Adverbial Compound*)

समास
कर्मधारय
बहुव्रीहि
द्वंद्व
अव्ययी भाव
द्विगु
तत्पुरुष

इनके अतिरिक्त समास के दो अन्य भेद भी प्रचलित हैं :

1. कर्मधारय समास (*Appositional Compound*)
2. द्विगु समास (*Numeral Compound*)

ये दोनों तत्पुरुष समास के ही उपभेद हैं। यहाँ सभी छहों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

1. तत्पुरुष समास (*Determinative Compound*)

इस समास में दूसरा पद (उत्तर पद) प्रधान होता है और पहला पद गौण होता है। इस समास में कारकीय परसर्गों (*को, से, के लिए, से, द्वारा, का, की, के, में, पर*) का लोप हो जाता है। जैसे–

गगनचुंबी	गगन को चूमने वाला
राहखर्च	राह के लिए खर्च
शरणागत	शरण में आगत (*आया हुआ*)
धनहीन	धन से हीन

सामान्यत: तत्पुरुष समास की रचना दो प्रकार से होती है :

1. संज्ञा + संज्ञा : राजकुमार (*राजा का कुमार*), पुस्तकालय (*पुस्तक का आलय*), घुड़सवार (*घोड़े पर सवार*), रसोईघर (*रसोई के लिए घर*)।
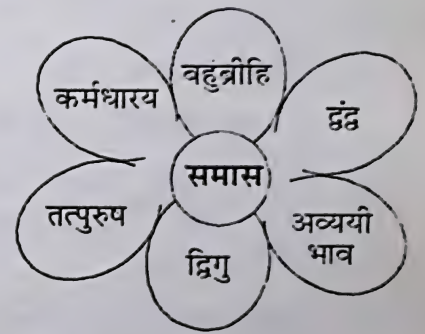
2. **संज्ञा + क्रियामूलक शब्द :** हस्तलिखित (*हस्त द्वारा लिखित*), सूखापीड़ित (*सूखा से पीड़ित*)।

☛ तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद हैं, जो कारकीय विभक्तियों के लोप से बनते हैं :

1. **कर्म तत्पुरुष :** इसमें 'को' विभक्ति का लोप होता है।

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
परलोक गमन	परलोक को गमन	यशप्राप्त	यश को प्राप्त
ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ	चिड़ीमार	चिड़ियों को मारनेवाला
स्वर्गगत	स्वर्ग को गया हुआ	पदप्राप्त	पद को प्राप्त
गगनचुंबी	गगन को चूमनेवाला	रथचालक	रथ को चलानेवाला

2. **करण तत्पुरुष :** इसमें 'से', 'द्वारा' विभक्ति का लोप हो जाता है।

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
धनहीन	धन से हीन	भयाकुल	भय से आकुल
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित	तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
रेखांकित	रेखा से अंकित	सूररचित	सूर द्वारा रचित
मदांध	मद से अंधा	रोगमुक्त	रोग से मुक्त

3. **संप्रदान तत्पुरुष :** इसमें 'के लिए' विभक्ति का लोप होता है।

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
रसोईघर	रसोई के लिए घर	देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह	मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय
परीक्षाभवन	परीक्षा के लिए भवन	यज्ञशाला	यज्ञ के लिए शाला
प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला	युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि

4. **अपादान तत्पुरुष :** इसमें 'से' (*अलग होने का भाव*) विभक्ति का लोप हो जाता है।

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	जन्मांध	जन्म से अंधा
गुणहीन	गुण से हीन	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
देशनिकाला	देश से निकाला	पदच्युत	पद से च्युत

5. **संबंध तत्पुरुष :** इसमें 'का, की, के' विभक्ति का लोप हो जाता है।

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
राजपुत्र	राजा का पुत्र	देशरक्षा	देश की रक्षा
घुड़दौड़	घोड़ों की दौड़	पराधीन	पर (दूसरे) के अधीन
उद्योगपति	उद्योग का पति	भारतरत्न	भारत का रत्न
गृहस्वामी	गृह का स्वामी	राजकुमार	राजा का कुमार

6. **अधिकरण तत्पुरुष :** इसमें 'में, पर' विभक्ति का लोप हो जाता है।

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश	लोकप्रिय	लोक में प्रिय
शोकमग्न	शोक में मग्न	धर्मवीर	धर्म में वीर
आपबीती	आप पर बीती	पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम
सिरदर्द	सिर में दर्द	ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न

तत्पुरुष समास के दो अन्य भेद :

(क) कर्मधारय समास *(Appositional Compound)* : इस समास के समस्तपद के पूर्वपद और उत्तर पद में **'विशेषण-विशेष्य'** अथवा **'उपमान-उपमेय'** का संवंध होता है। क्योंकि यह तत्पुरुष समास का ही एक भेद है, अत: इसमें भी दूसरा (उत्तर) पद प्रधान होता है। जैसे —

विशेषण-विशेष्य

समस्त पद	*पहला पद*	*दूसरा पद*	*विग्रह*
नीलगगन	नील (*विशेषण*)	गगन (*विशेष्य*)	नीला गगन
महादेव	महा (*विशेषण*)	देव (*विशेष्य*)	महान देव
स्वर्णकमल	स्वर्ण (*विशेषण*)	कमल (*विशेष्य*)	स्वर्ण (*सुनहरी रंग का*) कमल
महात्मा	महा (*विशेषण*)	आत्मा (*विशेष्य*)	महान आत्मा
पुरुषोत्तम	पुरुष (*विशेषण*)	उत्तम (*विशेष्य*)	पुरुषों में उत्तम

उपमान-उपमेय

समस्त पद	*उपमान*	*उपमेय*	*विग्रह*
मृगनयन	मृग	नयन	मृग जैसे नयन
चरणकमल	कमल	चरण	चरण रूपी कमल
चंद्रमुख	चंद्र	मुख	चंद्र के समान मुख
विद्याधन	धन	विद्या	विद्या रूपी धन

(ख) द्विगु समास *(Numeral Compound)* : इस समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है। जैसे–

समस्त पद	*विग्रह*	*समस्त पद*	*विग्रह*
नवग्रह	नौ ग्रहों का समाहार	सतसई	सात सौ दोहों का समूह
चौराहा	चार राहों का समूह	चौमासा	चार मासों का समूह
त्रिवेणी	त्रि (*तीन*) वेणियों (*नदियों*) का समूह	पंचवटी	पाँच वटियों (वृक्षों) का समाहार
अष्टाध्यायी	अष्ट अध्यायों का समाहार	सप्ताह	सात दिनों का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार	शताब्दी	शत (*सौ*) अब्दियों (*वर्षों*) का समाहार
त्रिभुवन	तीन भुवनों का समूह	नवरत्न	नौ रत्नों का समाहार

2. बहुब्रीहि समास *(Attributive Compound)*

जिस समास में न तो पूर्वपद प्रधान हो और न उत्तरपद हो, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं। ये दोनों गौण पद किसी अन्य पद के संवंध में कहते हैं। जैसे–'पीतांबर' शब्द को लें। यह पीले कपड़े पहनता है अर्थात् 'श्रीकृष्ण' की ओर संकेत है। इसमें 'पीत अंबर' दोनों पद गौण हैं, पर अन्य पद 'श्रीकृष्ण' के संबध में कहा गया है।

अन्य उदाहरण देखें :

समस्त पद	*विग्रह*
चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् विष्णु
चक्रधर	चक्र को धारण करता है जो अर्थात् श्रीकृष्ण
दशानन	दश आनन (मुँह) है जिसके अर्थात् रावण
लंबोदर	लंबा उदर है जिसका अर्थात् गणेश जी
चतुर्मुख	चार मुख हैं जिसके अर्थात् ब्रह्मा
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका अर्थात् शिवजी
त्रिलोचन	त्रि (तीन) लोचन हैं जिसके अर्थात् शिवजी

3. द्वंद्व समास (*Coupulative Compound*)

जिस समास के दोनों पद समान रूप से प्रधान हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। दोनों पदों को मिलाते समय दोनों के मध्य यो (-) लगाया जाता है; जैसे–भाई-बहन। विग्रह करते समय 'और' का प्रयोग किया जाता है। जैसे–भाई और बहन।

अन्य उदाहरण :

समस्त पद	*विग्रह*	*समस्त पद*	*विग्रह*
नर-नारी	नर और नारी	माता-पिता	माता और पिता
अन्न-जल	अन्न और जल	भीम-अर्जुन	भीम और अर्जुन
दाल-रोटी	दाल और रोटी	यश-अपयश	यश और अपयश
दूध-दही	दूध और दही	जन्म-मरण	जन्म और मरण
लाभ-हानि	लाभ और हानि	ऊँच-नीच	ऊँचा और नीचा

4. अव्ययीभाव समास (*Adverbial Compound*)

जिस समास में पहला पद प्रधान और वह अव्यय होता है, जहाँ अव्ययीभाव समास होता है। इस प्रक्रिया से बना समस्त पद अव्यय की भाँति कार्य करता है। जैसे–प्रतिदिन, यथासमय, आजन्म आदि। यहाँ प्रति, यथा, आ–सभी अव्यय हैं।

अन्य उदाहरण :

समस्त पद	*विग्रह*	*समस्त पद*	*विग्रह*
आजन्म	जन्म से लेकर	प्रतिदिन	दिन-दिन, प्रत्येक दिन
आमरण	मरण तक	हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में
यथासमय	समय के अनुसार	प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो सके
भरपेट	पेट भरकर	प्रत्येक	एक-एक

☞ **समझो :**

1. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर : समास के कुछ उदाहरण ऐसे हैं जो कर्मधारय और बहुव्रीहि समास–दोनों समान रूप से पाए जाते हैं। इन दोनों का अंतर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना होगा।

कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है। जैसे— 'कमलन' में 'कमल' (*उपमान*) और 'नयन' (*उपमेय*) है। इसी प्रकार 'पीतांबर' में 'पीत' (*विशेषण*) और अंबर (*विशेष्य*) है। अत उदाहरण कर्मधारय समास के हैं।

बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है, जैसे—'पीतांबर'—पीले अंबर (*वस्त्र*) जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण।

☞ **ध्यान रखें :** जब दोनों पदों में कोई पद प्रधान नहीं होता और दोनों पद किसी अन्य पद का बोध कराएँ तब **बहुव्रीहि समास** होता है। जहाँ दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो, तब वहाँ **कर्मधारय** स होता है।

2. द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर : द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य। बहुव्रीहि समास में पूरा (*समस्त*) पद ही विशेषण का कार्य करता है। कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं जिन्हें दोनों सम रखा जा सकता है। विग्रह करने पर ही स्थिति स्पष्ट होती है। जैसे—

चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह—द्विगु समास
	चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् विष्णु—बहुव्रीहि समास
त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह—द्विगु समास
	तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात् शिवजी—बहुव्रीहि समास

3. संधि और समास में अंतर : 1. संधि में वर्णों का मेल होता है, जबकि समास में शब्दों का।

2. संधि में वर्णों के योग से वर्ण-परिवर्तन भी होता है, जबकि समास में प्राय: ऐसा नहीं होता।

3. समास में बहुत से पदों के बीच के परसर्गों *(कारक-विभक्तियों)* अथवा समुच्चयबोधकों का लोप हो जाता है।

उदाहरण :

संधि : वर्णों का मेल	*समास : शब्दों का मेल*
पुस्तकालय = पुस्तक + आलय (अ + आ = आ) रमेश = रमा + ईश (आ + ई = ए)	रुपया-पैसा = रुपया और पैसा ('और' का लोप) धनहीन = धन से हीन ('से' का लोप)

समास के कुछ अन्य उदाहरण

युद्धक्षेत्र	युद्ध का क्षेत्र	*तत्पुरुष समास*
राजकुमार	राजा का कुमार	*तत्पुरुष समास*
हस्तलिखित	हस्त (हाथ) से लिखित	*तत्पुरुष समास*
पुस्तकालय	पुस्तक का आलय	*तत्पुरुष समास*
स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त	*तत्पुरुष समास*
शरणागत	शरण को (में) आगत	*तत्पुरुष समास*
प्रेमातुर	प्रेम से (में) आतुर	*तत्पुरुष समास*
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	*तत्पुरुष समास*
गुरुदत्त	गुरु द्वारा दत्त	*तत्पुरुष समास*
राहखर्च	राह के लिए खर्च	*तत्पुरुष समास*
हवन-सामग्री	हवन के लिए सामग्री	*तत्पुरुष समास*
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	*तत्पुरुष समास*
राजपुत्र	राजा का पुत्र	*तत्पुरुष समास*
गंगाजल	गंगा का जल	*तत्पुरुष समास*
पराधीन	पर के अधीन	*तत्पुरुष समास*
बनवास	वन में वास	*तत्पुरुष समास*
गृह-प्रवेश	गृह में प्रवेश	*तत्पुरुष समास*
बैलगाड़ी	बैल की गाड़ी	*तत्पुरुष समास*
घुड़सवार	घोड़े पर सवार	*तत्पुरुष समास*
नीलकमल	नीला कमल	*कर्मधारय समास*
कालीमिर्च	काली मिर्च	*कर्मधारय समास*
महाराजा	महान राजा	*कर्मधारय समास*
पनचक्की	पानी से चलने वाली चक्की	*कर्मधारय समास*
कमलनयन	कमल के समान नयन	*कर्मधारय समास*
मुखचंद्र	चंद्र के समान मुख	*कर्मधारय समास*
नीलांबर	नीले रंग का अंबर (आसमान)	*कर्मधारय समास*
महादेव	महान देव	*कर्मधारय समास*
कनकलता	कनक के समान लता	*कर्मधारय समास*
विद्याधन	विद्या रूपी धन	*कर्मधारय समास*
नरसिंह	नर रूपी सिंह	*कर्मधारय समास*
देहलता	देहरूपी लता	*कर्मधारय समास*

तिरंगा	तीन रंगों का समाहार	*द्विगु समास*
चौमासा	चौ (चार) मासों का समाहार	*द्विगु समास*
सप्तऋषि	सप्त (सात) ऋषियों का समाहार	*द्विगु समास*
सतसई	सात सौ (दोहों) का समाहार	*द्विगु समास*
पंचरत्न	पाँच रत्नों का समाहार	*द्विगु समास*
पंचमढ़ी	पाँच मढ़ियों का समाहार	*द्विगु समास*
गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला (श्रीकृष्ण)	*बहुव्रीहि समास*
गजानन	गज (हाथी) के समान है आनन जिसका (गणेश जी)	*बहुव्रीहि समास*
पीतांबर	पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका (श्रीकृष्ण)	*बहुव्रीहि समास*
षडानन	षट् (छः) हैं आनन जिसके (कार्तिकेय)	*बहुव्रीहि समास*
पंचानन	पंच (पाँच) आनन हैं जिसके (शेर)	*बहुव्रीहि समास*
अंशुमाली	अंशु हैं माला जिसकी (सूर्य)	*बहुव्रीहि समास*
घनश्याम	घन के समान श्याम है जो (श्रीकृष्ण)	*बहुव्रीहि समास*
भाई-बहन	भाई और बहन	*द्वंद्व समास*
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य	*द्वंद्व समास*
सुख-दुख	सुख और दुख	*द्वंद्व समास*
रात-दिन	रात और दिन	*द्वंद्व समास*
भला-बुरा	भला या बुरा	*द्वंद्व समास*
दो-चार	दो या चार	*द्वंद्व समास*
भीमार्जुन	भीम और अर्जुन	*द्वंद्व समास*
जय-पराजय	जय और पराजय	*द्वंद्व समास*
गुण-दोष	गुण और दोष	*द्वंद्व समास*
साफ़-साफ़	बिल्कुल साफ़ (स्पष्ट)	*अव्ययीभाव समास*
रातोंरात	रात ही रात में	*अव्ययीभाव समास*
यथामति	मति अनुसार	*अव्ययीभाव समास*
आजीवन	जीवन भर	*अव्ययीभाव समास*
प्रतिक्षण	क्षण-क्षण, प्रत्येक क्षण	*अव्ययीभाव समास*
यथासंभव	जो संभव हो	*अव्ययीभाव समास*

सी. बी. एस. ई. की परीक्षाओं में पूछे गए समास संबंधी प्रश्न

1. फूल-पत्ती	फूल और पत्ती	*(द्वंद्व समास*
2. अष्टभुजी	आठ भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् माँ दुर्गा	*(बहुव्रीहि समास*
3. हँसमुख	हँसता हुआ है जो मुख	*(कर्मधारय समास*
4. गाँव-गाँव	हर गाँव	*(अव्ययीभाव समास*
5. पशु-पक्षी	पशु और पक्षी	*(द्वंद्व समास*
6. राजभाषा	राज्य की भाषा	*(तत्पुरुष समास*
7. नवरत्न	नौ रत्नों का समाहार	*(द्विगु समास*
8. प्रतिमाह	प्रत्येक माह	*(अव्ययीभाव समास*
9. कपड़ा-लत्ता	कपड़ा और लत्ता	*(द्वंद्व समास*

10. **तुलसीदल**	तुलसी का दल (पत्ता)	*(तत्पुरुष समास)*
11. **पुरुष-परीक्षा**	पुरुष की परीक्षा	*(तत्पुरुष समास)*
12. **यथासमय**	समय के अनुसार	*(अव्ययीभाव समास)*
13. **सवाल-जवाब**	सवाल और जवाब	*(द्वंद्व समास)*
14. **अपना-पराया**	अपना और पराया	*(द्वंद्व समास)*
15. **यश-अपयश**	यश और अपयश	*(द्वंद्व समास)*
16. **हाथों-हाथ**	हाथ-ही-हाथ में	*(अव्ययीभाव समास)*
17. **प्रेमातुर**	प्रेम के लिए आतुर	*(तत्पुरुष समास)*
18. **दाल-रोटी**	दाल और रोटी	*(द्वंद्व समास)*
19. **माता-पिता**	माता और पिता	*(द्वंद्व समास)*
20. **भयातुर**	भय से आतुर	*(तत्पुरुष समास)*
21. **नीलकमल**	नीला है जो कमल	*(कर्मधारय समास)*
22. **मुरलीधर**	मुरली को धारण किया है जिसने अर्थात् श्रीकृष्ण	*(बहुव्रीहि समास)*
23. **देखभाल**	देख और भाल	*(द्वंद्व समास)*
24. **चंद्रशेखर**	चंद्रमा है मुकुट जिसका अर्थात् शिवजी	*(बहुव्रीहि समास)*
25. **राष्ट्रध्वज**	राष्ट्र के लिए ध्वज	*(तत्पुरुष समास)*
26. **महामंत्री**	महान है जो मंत्री	*(कर्मधारय समास)*
27. **करोड़पति**	करोड़ों का पति (मालिक)	*(तत्पुरुष समास)*
28. **हरपल**	पल-पल	*(अव्ययीभाव समास)*
29. **दुःख-दर्द**	दुःख और दर्द	*(द्वंद्व समास)*
30. **प्रत्येक**	एक-एक / प्रति एक	*(अव्ययीभाव समास)*
31. **धन-दौलत**	धन और दौलत	*(द्वंद्व समास)*
32. **दाना-पानी**	दाना और पानी	*(द्वंद्व समास)*
33. **भयभीत**	भय से भीत	*(तत्पुरुष समास)*
34. **माँ-बाप**	माँ और बाप	*(द्वंद्व समास)*
35. **मृगनयनी**	मृग के समान नयन हैं जिसके *(अर्थात् कोई स्त्री विशेष)*	*(बहुव्रीहि समास)*
36. **प्रतिदिन**	दिन-दिन	*(अव्ययीभाव समास)*
37. **सत्याग्रह**	सत्य के लिए आग्रह	*(तत्पुरुष समास)*
38. **देशगत**	देश को गत	*(तत्पुरुष समास)*
39. **लंबोदर**	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश जी	*(बहुव्रीहि समास)*
40. **अंशुमाली**	अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी अर्थात् सूर्य	*(बहुव्रीहि समास)*
41. **हस्तलिखित**	हस्त द्वारा लिखित	*(तत्पुरुष समास)*
42. **भीमार्जुन**	भीम और अर्जुन	*(द्वंद्व समास)*
43. **प्रतिक्षण**	क्षण-क्षण	*(अव्ययीभाव समास)*
44. **त्रिलोचन**	तीन हैं लोचन जिसके अर्थात् शिवजी	*(बहुव्रीहि समास)*
45. **शोकमग्न**	शोक में मग्न	*(तत्पुरुष समास)*
46. **नरकगत**	नरक को गत	*(तत्पुरुष समास)*
47. **जय-पराजय**	जय और पराजय	*(द्वंद्व समास)*
48. **जन्मांध**	जन्म से अंधा	*(तत्पुरुष समास)*
49. **सिरदर्द**	सिर में दर्द	*(तत्पुरुष समास)*
50. **धर्माधर्म**	धर्म और अधर्म	*(द्वंद्व समास)*

51.	काम-मोक्ष	काम और मोक्ष	(द्वंद्व समास)
52.	मालगाड़ी	माल के लिए गाड़ी	(तत्पुरुष समास)
53.	रातभर	पूरी रात	(अव्ययीभाव समास)
54.	नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिवजी	(बहुव्रीहि समास)
55.	घी-शक्कर	घी और शक्कर	(द्वंद्व समास)
56.	चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् विष्णु जी	(बहुव्रीहि समास)
57.	आजन्म	जन्म से लेकर	(अव्ययीभाव समास)
58.	देशभक्ति	देश की भक्ति	(तत्पुरुष समास)
59.	राजा-रंक	राजा और रंक	(द्वंद्व समास)
60.	रुपया-पैसा	रुपया और पैसा	(द्वंद्व समास)
61.	गजानन	गज के समान है जिसका आनन अर्थात् गणेश जी	(बहुव्रीहि समास)
62.	शणागत	शरण में आगत	(तत्पुरुष समास)
63.	नर-नारी	नर और नारी	(द्वंद्व समास)
64.	राष्ट्रपति	राष्ट्र का पति	(तत्पुरुष समास)
65.	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	(तत्पुरुष समास)
66.	दो-चार	दो या चार	(द्वंद्व समास)
67.	पथभ्रष्टं	पथ से भ्रष्ट	(तत्पुरुष समास)
68.	दिनभर	सारा दिन	(अव्ययीभाव समास)
69.	यथामति	मति के अनुसार	(अव्ययीभाव समास)
70.	अनुरूप	रूप के अनुसार	(अव्ययीभाव समास)
71.	रसोईघर	रसोई के लिए घर	(तत्पुरुष समास)
72.	पाप-पुण्य	पाप और पुण्य	(द्वंद्व समास)
73.	त्रिभुवन	तीन भुवनों का समूह	(द्विगु समास)
74.	चक्रधर	चक्र को धारण किया है जिसने अर्थात् विष्णु जी	(बहुव्रीहि समास)
75.	पीतांबर	पीला है अंबर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण	(बहुव्रीहि समास)
76.	जल-थल	जल और थल	(द्वंद्व समास)
77.	यथारुचि	रुचि के अनुसार	(अव्ययीभाव समास)
78.	आमरण	मरण तक	(अव्ययीभाव समास)

स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- इस मेल से बने हुए शब्द को 'समस्त पद' कहते हैं।
- 'समस्त पद' को पूर्व स्थिति में लाने को 'समास-विग्रह' कहते हैं।
- समास के कुल मिलाकर छः भेद हैं : 1. तत्पुरुष, 2. कर्मधारय, 3. द्वंद्व, 4. द्विगु, 5. बहुब्रीहि, 6. अव्ययीभाव।
- तत्पुरुष में दूसरा पद प्रधान होता है।
- अव्ययीभाव में पहला पद प्रधान और अव्यय होता है।
- कर्मधारय में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का मेल होता है।
- द्वंद्व में दोनों पद एक समान होते हैं।
- द्विगु में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है।
- बहुब्रीहि में किसी तीसरे पद की ओर संकेत होता है।
- संधि में वर्णों का मेल होता है, जबकि समास में शब्दों का मेल।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. समास कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।
2. **(क) निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास का नाम भी दीजिए :**
   राजकुमार, नीलगाय, पंचवटी, दशानन, दूध-दही।
   (**संकेत :** *राजा का कुमार—तत्पुरुष; नीले रंग की गाय—कर्मधारय; पाँच वटियों का समूह—द्विगु; दशानन—दश आनन हैं जिसके (रावण)—बहुव्रीहि; दूध-दही—दूध और दही–द्वंद्व*)।
   (ख) नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनको मिलाकर शब्द (समस्तपद) बनाइए और समास का नाम भी दीजिए:
   पथ भ्रष्ट, पीत अंबर, चौ मासा, युद्ध स्थिर, आ मरण।
   (**संकेत :** *तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्विगु, तत्पुरुष, अव्ययीभाव*)
3. **नीचे स्तंभ 'अ' में समास के नाम हैं और स्तंभ 'ब' में शब्द दिए गए हैं, इन्हें क्रमानुसार लिखिए :**

'अ'	'ब'
तत्पुरुष	त्रिलोचन
बहुव्रीहि	भरपेट
द्वंद्व	विश्वंभर
अव्ययीभाव	घी-शक्कर

4. **निम्नलिखित का समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम बताइए :**

आजन्म	चरण-कमल	दाल-रोटी	नीलकंठ	देश-विदेश	राज-काज
पथभ्रष्ट	चंद्रमुख	नवरत्न	दही-बड़ा	चौमासा	प्रतिदिन
पाप-पुण्य	यथाशक्ति	मेघनाद	राजदूत	हाथोंहाथ	चतुर्भुज
वनवास	पशु-पक्षी	गजानन	फूल-पत्ती	दशानन	ऊँच-नीच
चौराहा	गिरिधर	हस्तलिखित	नीलगाय		

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए समास संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित का समास-विग्रह कीजिए और समास का भेद भी लिखिए :

रातोंरात	—	रात ही रात में	—	अव्ययीभाव समास
मेघनाद	—	मेघ की तरह नाद करने वाला (रावण पुत्र)	—	बहुव्रीहि समास
रात-दिन	—	रात और दिन	—	द्वंद्व समास
परलोकगमन	—	परलोक को गमन	—	तत्पुरुष समास
हाथोंहाथ	—	एक हाथ से दूसरे हाथ में	—	अव्ययीभाव समास
राजदूत	—	राजा का दूत	—	तत्पुरुष समास
कैलाशपति	—	कैलाश का पति है जो *(शिवजी)*	—	बहुव्रीहि समास
दानवीर	—	दान में वीर	—	तत्पुरुष समास
घनश्याम	—	घन *(बादल)* के समान है जो *(कृष्ण)*	—	बहुव्रीहि समास
हथकड़ी	—	हाथ की कड़ी	—	तत्पुरुष समास
यथासंभव	—	जो संभव हो	—	अव्ययीभाव समास
पथभ्रष्ट	—	पथ से भ्रष्ट	—	तत्पुरुष समास
धूप-छाँह	—	धूप और छाँह	—	द्वंद्व समास
जल-थल	—	जल और थल	—	द्वंद्व समास
बीचोंबीच	—	बीच में ही	—	अव्ययीभाव समास
गिरिधर	—	गिरि *(पर्वत)* को धारण करने वाला *(श्रीकृष्ण)*	—	बहुव्रीहि समास

हस्तलिखित	—	हस्त *(हाथ)* से लिखी	—	तत्पुरुष समास
अन्न-जल	—	अन्न और जल	—	द्वंद्व समास
आजन्म	—	जन्म भर	—	अव्ययीभाव समास
लंबोदर	—	लंबा उदर है जिसका *(गणेश)*	—	बहुव्रीहि समास
अच्छा-बुरा	—	अच्छा और बुरा	—	द्वंद्व समास
ग्रामपंचायत	—	ग्राम की पंचायत	—	तत्पुरुष समास
प्रतिदिन	—	प्रत्येक दिन	—	अव्ययीभाव समास
ऊँच-नीच	—	ऊँच और नीच	—	द्वंद्व समास
चतुर्भुज	—	चार भुजाएँ हैं जिसकी *(विष्णु)*	—	बहुव्रीहि समास
जेबघड़ी	—	जेब की घड़ी	—	तत्पुरुष समास
लाभ-हानि	—	लाभ और हानि	—	द्वंद्व समास
दशानन	—	दश आनन हैं जिसके *(रावण)*	—	बहुव्रीहि समास
यथारुचि	—	जैसी रुचि हो	—	अव्ययीभाव समास
गजानन	—	गज का आनन *(मुख)* है जिसका *(गणेश)*	—	बहुव्रीहि समास
फूल-पत्ती	—	फूल और पत्ती	—	द्वंद्व समास
अष्टभुजी	—	आठ भुजाएँ हैं जिसकी *(माँ)*	—	बहुव्रीहि समास
आमरण	—	मरण तक	—	अव्ययीभाव समास
सवाल-जवाब	—	सवाल और जवाब	—	द्वंद्व समास
गाँव-गाँव	—	गाँव गाँव में	—	अव्ययीभाव समास
पशु-पक्षी	—	पशु और पक्षी	—	द्वंद्व समास
राजभाषा	—	राज की भाषा	—	तत्पुरुष समास
यथाशक्ति	—	शक्ति अनुसार	—	अव्ययीभाव समास
घरवास	—	घर में वास	—	तत्पुरुष समास
नवरत्न	—	नौ रत्नों का समूह	—	द्विगु समास
चतुरानन	—	चार आनन हैं जिसके *(ब्रह्मा)*	—	बहुव्रीहि समास
देशभक्ति	—	देश के लिए भक्ति	—	तत्पुरुष समास
नीलगाय	—	नीले रंग की गाय	—	कर्मधारय समास
वेद-पुराण	—	वेद और पुराण	—	द्वंद्व समास
पंचतत्त्व	—	पाँच तत्त्वों का समूह	—	द्विगु समास
अंशुमाली	—	अंशु है माला जिसकी *(सूर्य)*	—	बहुव्रीहि समास
अकाल-पीड़ित	—	अकाल से पीड़ित	—	तत्पुरुष समास
चक्रपाणि	—	चक्र है पाणि *(हाथ)* में जिसके *(श्रीकृष्ण)*	—	बहुव्रीहि समास
देहलता	—	देह रूपी लता	—	कर्मधारय समास
त्रिभुवन	—	तीन भुवनों का समूह	—	द्विगु समास
यशप्राप्त	—	यश को प्राप्त	—	तत्पुरुष समास
चौपाई	—	चार पदों का समूह	—	द्विगु समास
भयातुर	—	भय से आतुर	—	तत्पुरुष समास
देशभक्ति	—	देश के लिए भक्ति	—	तत्पुरुष समास
त्रिलोचन	—	तीन लोचन हैं जिसके *(शिवजी)*	—	बहुव्रीहि समास

राजा-रंक	—	राजा और रंक	—	द्वंद्व समास
भला-बुरा	—	भला और बुरा	—	द्वंद्व समास
घुड़दौड़	—	घोड़ों की दौड़	—	तत्पुरुष समास
मुरलीधर	—	मुरली को धारण करने वाला *(श्रीकृष्ण)*	—	बहुव्रीहि समास
सेनानायक	—	सेना का नायक	—	तत्पुरुष समास
रुपया-पैसा	—	रुपया और पैसा	—	द्वंद्व समास
राजकुमार	—	राजा का कुमार	—	तत्पुरुष समास
यथासमय	—	जैसा समय हो	—	अव्ययीभाव समास
त्रिभुज	—	तीन भुजाओं का समूह	—	द्विगु समास
राजपुत्री	—	राजा की पुत्री	—	तत्पुरुष समास

सी. बी. एस. ई. की परीक्षाओं में पूछे गए समास संबंधी प्रश्न

(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)

प्रश्न 1. निर्देशानुसार कीजिए :

(क) हस्त द्वारा लिखित *(समस्त पद बनाइए)*

(ख) प्रतिदिन *(समास-विग्रह कीजिए)*

(ग) शक्ति से हीन *(समस्त पद बनाइए)*

(घ) सेनापति *(समास-विग्रह कीजिए)*

(ङ) भय से आकुल *(समस्त पद बनाइए)*

(च) रात-दिन *(समास विग्रह कीजिए)*

उत्तर : (क) हस्तलिखित, (ख) प्रत्येक दिन, (ग) शक्तिहीन, (घ) सेना का पति (ङ) भयाकुल, (च) रात और दिन।

प्रश्न 2. मनीषा ने राम को बहुत बुरा-भला कहा।

(रेखांकित पद के समास का नाम लिखिए)

उत्तर : द्वंद्व समास।

प्रश्न 3. समास का नाम बताओ–

पीतांबर, सेठ-साहूकार

उत्तर : पीतांबर–बहुव्रीहि समास।

सेठ-साहूकार–द्वंद्व समास।

(C.B.S.E. 2009 Delhi)

प्रश्न 1. निर्देशानुसार कीजिए :

(क) यथाशक्ति, नीलकमल ।

(समस्त पदों का विग्रह कीजिए)

(ख) विद्यालय में रामश्याम दोनों पढ़ते हैं।

(रेखांकित पदों के समास का नाम लिखिए)

(ग) नीलकंठ, लाभहानि। *(समस्त पदों का विग्रह कीजिए)*

(घ) वे प्रतिदिन व्यायामशाला जाकर व्यायाम करते हैं।

(रेखांकित पदों के समास का नाम लिखिए)

उत्तर : (क) यथाशक्ति–जितनी शक्ति हो,

नीलकमल–नीले रंग का कमल

(ख) विद्यालय–तत्पुरुष समास,

रामश्याम–द्वंद्व समास

(ग) नीला कंठ है जिसका (शिवजी) ।

लाभहानि–लाभ और हानि

(घ) प्रतिदिन – अव्ययीभाव समास ।

व्यायामशाला–तत्पुरुष समास।

प्रश्न 2. वे प्रतिदिन व्यायामशाला जाकर व्यायाम करते हैं। *(रेखांकित पदों के समास का नाम बताइए)*

उत्तर : प्रतिदिन–अव्ययीभाव समास।

व्यायामशाला–तत्पुरुष समास।

(C.B.S.E. 2009 Outside)

(Set-I)

प्रश्न 1. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) प्रतिवर्ष, धनहीन। *(समस्त पदों का विग्रह कीजिए)*

(ख) उसके भाई-बहन छमाही में पास हो गए।

(रेखांकित पदों के समास का नाम लिखिए)

उत्तर : (क) प्रत्येक वर्ष, धन से हीन।

(ख) भाई-बहन–द्वंद्व समास। छमाही–द्विगु समास।

(Set-II)

प्रश्न 2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(क) भरपेट, मान-अपमान

(समस्त पदों का विग्रह कीजिए)

(ख) पीतांबर पहनकर शिवालय चलोगे?

(रेखांकित पदों के समास का नाम लिखिए)

उत्तर : (क) **भरपेट**–पेट भर कर,

मान-अपमान – मान और अपमान

(ख) **पीतांबर**—पीत अंबर (वस्त्र) हैं जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण।

शिवालय—शिव का आलय—तत्पुरुष समास।

(Set-III)

प्रश्न 3. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(क) यथाशक्ति, ग्रामपंचायत।

(समस्त पदों का विग्रह कीजिए)

(ख) महासागर में अनेक जीवजंतु रहते हैं।

(रेखांकित पदों के समास का नाम लिखिए)

उत्तर : (क) जितनी शक्ति हो, ग्राम की पंचायत।

(ख) महासागर—कर्मधारय समास। जीव-जंतु—द्वंद्व समास।

(C.B.S.E. 2008 Comptt. Delhi)

प्रश्न 1. विग्रह करके समास का नाम बताओ :

प्रतिक्षण, चौराहा

उत्तर : प्रत्येक क्षण—अव्ययीभाव समास।

चार राहों का समूह—द्विगु समास।

प्रश्न 2. यह 21वीं शताब्दी है।

(रेखांकित पद में समास का नाम लिखो)

उत्तर : द्विगु समास।

प्रश्न 3. (*i*) नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए :

(Set I)

(*a*) अपराधी को हथकड़ी लगाओ।

उत्तर : हथकड़ी : हाथ में लगाई जाने वाली कड़ी-तत्पुरुष समास।

(*b*) तुम दोपहर के समय क्यों जा रहे हो?

उत्तर : दोपहर : दूसरा पहर-द्विगु समास।

(*ii*) नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए :

(Set II)

(*a*) उसने भरपेंट भोजन किया।

उत्तर : भरपेट—पेट भरकर : अव्ययीभाव समास।

(*b*) शकुंतला के चंद्रमुख को देखकर दुष्यंत आनंद में डूब गया।

उत्तर : चंद्रमुख—चंद्रमा के समान मुख : कर्मधारय समास।

(*iii*) नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए :

(Set III)

(*i*) वह छल-कपट के जीवन में विश्वास नहीं क

उत्तर : छल-कपट : द्वंद्व समास।

(*ii*) देशभक्ति उसके जीवन का लक्ष्य है।

उत्तर : देशभक्ति : देश के लिए भक्ति-तत्पुरुष स

प्रश्न 4. विग्रह करके समास का नाम बताइए।

रेखांकित

उत्तर : रेखा से अंकित—तत्पुरुष समास।

प्रश्न 5. (क) दिए गए वाक्यों में रेखांकित स पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बता

(Set I)

(*i*) मनुष्यता पर धनी-निर्धन सभी का समान अधिका

(*ii*) वह बड़ा चौराहा हमारे घर के ठीक सामने है।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक के विभिन्न अर्थसूचक वाक्य बनाइए :

तार, काल।

उत्तर : धनी-निर्धन—धनी और निर्धन—द्वंद्व समास।

चौराहा—चार राहों का समूह—द्विगु समास।

तार—(*i*) उसे तार द्वारा सूचना दो।

(*ii*) बिजली के तारों को मत छुओ।

काल—(*i*) काल किसी को नहीं बख्शता।

(*ii*) उसका काल आ गया है।

(Set II)

(क) दिए गए वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए :

(*i*) चारपाई पर बैठकर उसने मुझसे बातचीत की।

(*ii*) उनका रसोईघर बहुत बड़ा है।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक के विभिन्न अर्थसूचक वाक्य बनाइए :

वर, कर।

उत्तर : (क) (*i*) चारपाई—चार पायों का समूह- समास।

(*ii*) रसोईघर – रसोई के लिए घर – तत्पुरुष समास

(ख) वर – गीता को अच्छा वर मिला है।

– भगवान ने उसे दो वर दिए।

कर – हाथ – मेरे कर में चोट लगी है।

– सरकार को कर चुकाओ।

प्रश्न 6. दिए गए वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए : (Set

(*i*) वह सारा क्षेत्र त्रिभुज जैसा लग रहा था।

(*ii*) वह रात-दिन परिश्रम कर रहा है।

उत्तर : (*i*) त्रिभुज = तीन भुजाओं का समूह – द्विगु समास

(*ii*) रात-दिन = रात और दिन – द्वंद्व समास

प्रश्न 7. निम्न समास के नाम बताइए :

उछल-कूद, सप्तद्वीप, आमरण (*Set III*)

उत्तर : उछल-कूद : द्वंद्व समास।

सप्तद्वीप : द्विगु समास।

आमरण : अव्ययीभाव समास।

प्रश्न 8. किन्हीं दो में समास-भेद बताइए:

रसोई घर, नवद्वीप, दाल-भात । (*Set I, II*)

उत्तर : रसोईघर : तत्पुरुष समास।

नवद्वीप : द्विगु समास।

दाल-भात : द्वंद्व समास।

प्रश्न 9. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए : (*Set II*)

(*i*) वह मेरे पास आकर चारपाई पर बैठ गया।

(*ii*) वह दुग्ध-धवल चाँदनी रात थी।

उत्तर : (*i*) चार पायों का समूह – द्विगु समास

(*ii*) दूध सी धवल – कर्मधारय समास।

प्रश्न 10 निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए : (*Set III*)

(*i*) त्रिनेत्र ने अपना तीसरा नेत्र खोलकर कामदेव को भस्म कर दिया था।

(*ii*) वह नगर-द्वार से निकलकर जंगल की ओर चला गया।

उत्तर : (*i*) तीन नेत्र हैं जिसके (शिवजी) – बहुव्रीहि समास

(*ii*) नगर का द्वार – तत्पुरुष समास

(*C.B.S.E. 2008 Outside*)

प्रश्न 1. समास का नाम बताइए :

(क) सुखदुख

उत्तर : द्वंद्व समास।

(ख) आप यथास्थान बैठ जाइए।

उत्तर : अव्ययीभाव समास।

(ग) कमलनयन

उत्तर : कर्मधारय समास।

(घ) सुख-दुख

उत्तर : द्वंद्व समास।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए : (*Set I*)

(*i*) मैं यथासंभव उसकी सहायता करूँगा।

(*ii*) हमने इतिहास में बहुत से उत्थान-पतन देखे हैं।

उत्तर : (*i*) जितना संभव होगा – अव्ययीभाव समास।

(*ii*) उत्थान और पतन – द्वंद्व समास।

(*C.B.S.E. 2008 Foreign*)

प्रश्न 1. (क) दिए गए वाक्य में रेखांकित समस्त-पदों का विग्रह कीजिए और समासों के नाम भी लिखिए : (*Set I*)

लोगों ने नीलकंठ की स्थापना की और उन्हें वे प्रतिदिन दूध से स्नान कराते हैं।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक के दो विभिन्न अर्थ वाले वाक्य बनाइए :

दल, पत्र।

उत्तर : (क) नीलकंठ–नीला कंठ है जिसका (शिवजी)- बहुव्रीहि समास।

प्रतिदिन–दिन-दिन (प्रत्येक दिन)-अव्ययीभाव समास।

(ख) दल- तुलसी दल प्रसाद में डालिए।

सैनिकों के दल चले आ रहे हैं।

पत्र- मैंने पत्र लिख दिया है।

वृक्ष से पत्र गिर रहे हैं।

प्रश्न 2. (क) दिए गए वाक्य में रेखांकित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समासों के नाम भी लिखिए: (*Set II*)

(*i*) नीरव व्यायामशाला में व्यायाम कर रहा है।

(*ii*) दशकंठ ने अपने ज़ोर से लंका छीन ली थी।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक के दो विभिन्न अर्थ वाले वाक्य बनाइए :

पूर्व, उत्तर।

उत्तर : (क) (*i*) व्यायामशाला–व्यायाम करने की शाला–तत्पुरुष समास।

(*ii*) दशकंठ–दस कंठ हैं जिसके (रावण)–बहुव्रीहि समास

(ख) पूर्व– पूर्व दिशा से सूर्योदय होता है।

तुम्हारे आने से पूर्व ही मैं चला गया था।

उत्तर– तुम्हारा उत्तर नहीं आया।

हिमालय भारत के उत्तर में है।

प्रश्न 3. दिए गए वाक्य में रेखांकित समस्त-पदों का विग्रह कीजिए और समासों के नाम भी लिखिए : (*Set III*)

(*i*) मंत्रि-परिषद् के कई सदस्य उस दिन उपस्थित न थे।

(*ii*) मैं व्यर्थ के किसी वाद-विवाद में उलझना नहीं चाहता।

उत्तर : (*i*) मंत्रिपरिषद : मंत्रियों की परिषद – *तत्पुरुष समास*

(*ii*) **वाद-विवाद :** वाद और विवाद – *द्वंद्व समास।*

(*C.B.S.E. Sample Paper-I*)

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित सामासिक पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए :

(*i*) वह प्रतिदिन कक्षा में उपस्थित रहता है।

(*ii*) जीवन में सुख-दुख आते ही रहते हैं।

उत्तर :

(*i*) प्रतिदिन : प्रत्येक दिन (दिन-दिन) : अव्ययीभाव

(*ii*) सुख और दुख : द्वंद्व समास।

प्रश्न 2. बालिका प्रतिदिन विद्यालय जाती है।

(*रेखांकित में समास व*

उत्तर : अव्ययीभाव समास।

(*C.B.S.E. Sample Paper-II*)

प्रश्न 1. विग्रह करके समास का नाम बताइए : दशानन, त्रिभुवन

उत्तर : दश आनन हैं जिसके (रावण)–बहुव्रीहि स
त्रिभुवन–तीन भुवनों का समूह–द्विगु समास।

नवीं कक्षा हेतु समास संबंधी के बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

प्रश्न 1. निम्नलिखित सामासिक पदों के विग्रह और नाम का सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(क) आज्ञानुसार

(*i*) आज्ञा के अनुसार – तत्पुरूष समास ।

(*ii*) आज्ञा के अनुसार – अव्ययीभाव समास ।

(*iii*) आज्ञा और अनुसार – द्वंद्वसमास ।

(*iv*) जो आज्ञा को माने – बहुव्रीहि समास ।

(ख) त्रिभुवन

(*i*) तीन है जो भुवन – बहुव्रीहि समास ।

(*ii*) तीसरा भुवन – कर्मधारय समास ।

(*iii*) तीन भवन – द्विगु समास ।

(*iv*) तीन भुवनों (लोकों) का समूह – द्विगु समास ।

(ग) अकालपीड़ित

(*i*) अकाल से पीड़ित – तत्पुरूष समास

(*ii*) अकाल द्वारा पीड़ित – कर्मधारय समास

(*iii*) अकाल और पीड़ित – द्वंद्वसमास

(*iv*) अकाल में पीड़ित – अव्ययीभाव समास

उत्तर : (क) (*ii*), (ख) (*iv*), (ग) (*i*)

प्रश्न 2. (*i*) तत्पुरुष समास में कौन-सा पद प्रधान होता है?

(क) पहला (ख) दूसरा (ग) दोनों

(*ii*) 'चक्रधर' में कौन-सा समास है?

(क) बहुव्रीहि (ख) कर्मधारय (ग) द्वंद्व

(*iii*) 'नर-नारी' में किस समास का प्रयोग है?

(क) द्विगु (ख) द्वंद्व (ग) बहु

(*iv*) 'नीलगाय' में किस समास का प्रयोग है?

(क) द्विगु (ख) द्वंद्व (ग) कर्म

(*v*) 'चतुर्भुज' में कौन-सा समास है ?

(क) कर्मधारय (ख) द्विगु (ग) बहु

(*vi*) 'यथासंभव' में कौन-सा समास है ?

(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) द्विगु

(*vii*) 'मार्गव्यय' में कौन-सा समास है ?

(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) द्विगु

(*viii*) समास के कुल कितने भेद हैं ?

(क) चार (ख) पाँच (ग) छह

(*ix*) 'बनवास' में कौन-सा समास है ?

(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) कर्म

(*x*) 'दाल-रोटी' में कौन-सा समास है ?

(क) द्विगु (ख) द्वंद्व (ग) बहु

(*xi*) 'दशनन' में कौन-सा समास है ?

(क) तत्पुरुष (ख) बहुव्रीहि (ग) कर्म

उत्तर : (*i*) (ख), (*ii*) (क), (*iii*) (क), (*iv*) (ग), (*v*
(*vi*) (क), (*vii*) (ख), (*viii*) (ग), (*ix*) (ख), (*x*) (ख), (*xi*

अध्याय
6

संज्ञा
(Noun)

निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. **रवि** आज **दिल्ली** से **कानपुर** जा रहा है।
2. **गाय** एक उपयोगी **पशु** है।
3. **गंगा** **हिमालय** से निकलती है।
4. सभी के साथ **प्रेम** करो।
5. **बुढ़ापा** दुखदायी होता है।

इन वाक्यों में काले शब्दों पर ध्यान दीजिए :

'रवि' व्यक्ति का नाम है। **'गाय'** पशुओं की एक जाति विशेष का नाम है।
'गंगा' नदियों में एक विशेष नदी है। **'हिमालय'** एक विशेष पर्वत का नाम है।
'प्रेम' भाव विशेष का नाम है। **'बुढ़ापा'** एक दशा का नाम है।
व्याकरण में ऐसे शब्दों को **'संज्ञा'** कहते हैं।

> ☞ ***किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, पदार्थ, स्थान, भाव अथवा दशा के नाम को संज्ञा कहते हैं।***

☞ संज्ञा के भेद *(Kinds of Noun)*

संज्ञा के मुख्य भेद **तीन** हैं :

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** (*Proper Noun*) : रवि, गंगा, हिमालय।
2. **जातिवाचक संज्ञा** *(Common Noun)* : गाय, पशु।
3. **भाववाचक संज्ञा** *(Abstract Noun)* : बुढ़ापा, प्रेम।

कुछ लोग जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद और मानते हैं :

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा *(Material Noun)* : सोना, चाँदी, गेहूँ।
(ख) समूहवाचक संज्ञा *(Collective Noun)* : सेना, सभा, कक्षा।

संज्ञा → व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा

ऐसी स्थिति में संज्ञा के **पाँच** भेद हो जाते हैं।
आइए, अब हम इन सभी भेदों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त करें।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा *(Proper Noun)*

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति विशेष, प्राणी विशेष, स्थान विशेष, वस्तु विशेष को बताता है अथवा उसके नाम के रूप में प्रयुक्त होता है, उसे **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं। जैसे—

महात्मा गाँधी, गौतम बुद्ध, सीता –*(व्यक्तियों के नाम)* कोलकाता, मुंबई, कानपुर, दिल्ली – *(स्थानों के नाम)*
गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी – *(नदियों के नाम)* भारत, जापान, अमेरिका, चीन – *(देशों के नाम)*

2. जातिवाचक संज्ञा (*Common Noun*)

जो संज्ञा शब्द किसी प्राणी, वस्तु, पदार्थ की पूरी जाति का बोध कराता है, उसे **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं। जैसे-मनुष्य, नदी, पर्वत, शहर, गाँव, कुर्सी, मेज़, लड़का, पुस्तक आदि।
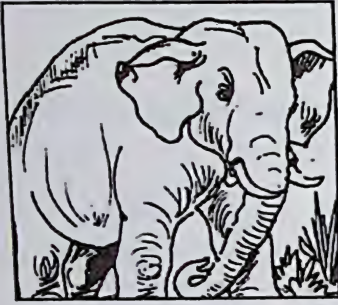
इन चित्रों में **'हाथी'** शब्द जातिसूचक नाम है। दूसरे चित्र में **'लड़की'** और **'पुस्तक'** अपनी-अपनी जाति के जातिसूचक नाम तीसरे चित्र में **'कबूतर'** अपनी कबूतर जाति का सूचक नाम है। ऐसे शब्दों से पूरी जाति का बोध होता है, किसी एक विशेष का

जातिवाचक संज्ञा के अंतर्गत आने वाले दो अन्य भेद हैं :

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा (*Material Noun*) : किसी पदार्थ (*सामग्री*) या द्रव्य का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवा संज्ञा कहते हैं। जैसे-सोना, चाँदी, लोहा, लकड़ी, अन्न आदि।

(ख) समूहवाचक संज्ञा (*Collective Noun*) : बहुत से शब्द किसी एक व्यक्ति के वाचक न होकर समूह (समु के वाचक होते हैं। इनसे उस समूह का ज्ञान होता है। जैसे-सेना, पुलिस, कक्षा, परिवार, सभा आदि।

[*ये शब्द सजातीय प्राणियों/वस्तुओं के समूह को एक इकाई के रूप में प्रकट करते हैं, अत: एकवचन में होते हैं।*]

3. भाववाचक संज्ञा (*Abstract Noun*)

जो संज्ञा शब्द किसी गुण-धर्म, स्वभाव, दोष, भाव, दशा, अवस्था आदि का बोध कराते हैं, उन्हें **भाववाचक संज्ञा** हैं। ये सब अमूर्त मानसिक संकल्पनाएँ होती हैं।

उदाहरणार्थ : सच्चाई, ऊँचाई, प्रेम, घृणा, बचपन, बुढ़ापा, ईमानदारी आदि।

निम्नलिखित वाक्यों में भाववाचक संज्ञा की स्थिति देखिए-

1. बाग में दूर-दूर तक **हरियाली** दिखाई दे रही थी।
2. उसकी **गरीबी** देखकर मेरा हृदय पसीज उठा।
3. **बुढ़ापा** बड़ा कष्टदायक होता है।
4. तुम्हारी **सच्चाई** ने मेरा मन मोह लिया है।
5. सदा **ईमानदारी** से काम करो।

भाववाचक संज्ञाओं की रचना (*Formation of Abstract Noun*) : भाववाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित चार प्रका विकारी शब्दों से बनती हैं :

1. जातिवाचक संज्ञा से :

जातिवाचक	भाववाचक
बच्चा	बचपन
लड़का	लड़कपन
शिशु	शैशव
पशु	पशुता/पशुत्व
मनुष्य	मनुष्यता/मनुष्यत्व
देव	देवत्व
स्वामी	स्वामित्व
माता	मातृत्व
नारी	नारीत्व
पिता	पितृत्व
कवि	कवित्व

जातिवाचक	भाववाचक
पंडित	पांडित्य
युवा	यौवन
प्रभु	प्रभुता
वृद्ध	वार्धक्य
बूढ़ा	बुढ़ापा
शत्रु	शत्रुता
मित्र	मित्रता
स्त्री	स्त्रीत्व
व्यक्ति	व्यक्तित्व
वक्ता	वक्तृत्व
राष्ट्र	राष्ट्रीयता

2. विशेषण से :

विशेषण	*भाववाचक संज्ञा*
गरीब	गरीबी
अच्छा	अच्छाई
अमर	अमरता
आलसी	आलस्य
खट्टा	खटास
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
चतुर	चतुराई
कोमल	कोमलता
मीठा	मिठास
सुंदर	सुंदरता/सौंदर्य
काला	कालिमा

विशेषण	*भाववाचक संज्ञा*
स्वस्थ	स्वास्थ्य
उपयोगी	उपयोगिता
कंजूस	कंजूसी
चालाक	चालाकी
कुटिल	कुटिलता
सज्जन	सज्जनता
कमजोर	कमजोरी
कठोर	कठोरता
गंभीर	गंभीरता
सरल	सरलता
गहरा	गहराई
हरा	हरियाली

3. क्रिया से :

क्रिया	*भाववाचक संज्ञा*
मिलना	मेल
उतरना	उतराई
चढ़ना	चढ़ाई
उड़ना	उड़ान
खोजना	खोज
गिरना	गिरावट
जीना	जीवन
जीतना	जीत
थकना	थकावट

क्रिया	*भाववाचक संज्ञा*
हारना	हार
हँसना	हँसी
लड़ना	लड़ाई
मारना	मार
कूदना	कूद
जागना	जागरण
लूटना	लूट
दौड़ना	दौड़
लिखना	लिखाई

4. सर्वनाम से :

सर्वनाम	*भाववाचक संज्ञा*
आप	आपा
मम	ममत्व

सर्वनाम	*भाववाचक संज्ञा*
निज	निजता
स्व	स्वत्व

☞ समझो

व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक के रूप में प्रयोग : कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ कभी-कभी ऐसे व्यक्तियों को बताती हैं, जो अपने दुर्लभ गुणों के कारण प्रतिनिधि रूप में माने जाते हैं। उन व्यक्तियों का नाम लेते ही उनका गुण/अवगुण दिमाग के सामने आ जाता है। जैसे — राजा हरिश्चंद्र (*सत्यनिष्ठा*), जयचंद (*विश्वासघात*) आदि। ऐसी स्थिति में इनका प्रयोग जातिवाचक के समान होता है। जैसे —

1. कलियुग में भी **हरिश्चंद्रों** की कमी नहीं है।
2. आजकल **जयचंदों** पर कड़ी निगाह रखो।
3. **विभीषणों** से बचो।

[जातिवाचक के समान प्रयोग होने के कारण व्यक्तिवाचक का यहाँ बहुवचन रूप दिखाई पड़ रहा है।]

☞ **जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक के रूप में प्रयोग :** कुछ जातिवाचक संज्ञा शब्द रूढ़ हो जाते हैं और तब केवल एक को ही निर्दिष्ट करते हैं। जैसे — 'पुरी' का सामान्य अर्थ 'नगरी' है, किंतु अब यह 'जगन्नाथपुरी' के लिए रूढ़ होकर व्यक्तिवाचक रूप ले चुका है। कुछ अन्य उदाहरण देखिए :

1. **पंडित जी** भारत के प्रधानमंत्री थे। *(जवाहरलाल नेहरू)*
2. **गाँधी जी** ने स्वतंत्रता आंदोलन चलाया। *(महात्मा गाँधी)*
3. **शास्त्री जी** ने पाकिस्तान को छठी का दूध याद दिला दिया था। *(लाल बहादुर शास्त्री)*

[इन स्थितियों में जातिवाचक संज्ञा शब्द पूरी जाति का बोध न कराकर किसी एक का (व्यक्तिवाचक के समान) बोध कराते हैं।]

☞ टिप्पणियाँ

◆ जब कभी द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द बहुवचन के रूप में द्रव्य के प्रकारों का बोध कराता है, तब वह जातिवाचक संज्ञा हो जाता है — यह फर्नीचर कई प्रकार की **लकड़ियों** से बना है। इसी प्रकार समूहवाचक जब बहुत-सी समूह-इकाइयों को प्रकट करते हैं, तब बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

दोनों **सेनाएँ** आपस में जमकर लड़ीं।

◆ जब कभी भाववाचक संज्ञा शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, तब वे जातिवाचक संज्ञा बन जाते हैं। जैसे—

1. **बुराइयों** से बचकर रहो।
2. उनकी आपस में **दूरियाँ** बढ़ रही हैं।

◆ कुछ भाववाचक शब्द मूल शब्द हैं, जैसे—प्रेम, घृणा। अधिकांश भाववाचक शब्द यौगिक होते हैं। जैसे : लड़का → लड़कपन, गरीब → गरीबी।

☞ स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, गुण, दशा के नाम को संज्ञा कहते हैं।
- संज्ञा के मुख्यत: तीन भेद हैं — 1. व्यक्तिवाचक, 2. जातिवाचक, 3. भाववाचक।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में किसी व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष या वस्तु विशेष का ज्ञान होता है।
- जातिवाचक संज्ञा में किसी वस्तु, प्राणी, स्थान आदि की पूरी जाति का बोध होता है।
- भाववाचक संज्ञा में गुण, दोष, दशा का पता चलता है।
- द्रव्यवाचक और समूहवाचक दो अन्य भेद भी जातिवाचक संज्ञा के ही हैं।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक के रूप में तथा जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक के रूप में प्रयोग संभव है।
- भाववाचक संज्ञाएँ जातिवाचक, विशेषण, सर्वनाम और क्रिया शब्दों से बनाई जाती हैं।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. संज्ञा किसे कहते हैं ? कोई तीन उदाहरण लिखिए।
2. संज्ञा के कौन-से तीन भेद हैं ? प्रत्येक भेद का एक-एक उदाहरण दीजिए।
3. **नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और संज्ञा शब्दों को छाँटकर तीन भेदों में दो-दो उदाहरण दीजिए :**

   मोहन एक अच्छा लड़का है। एक दिन वह पहाड़ पर गया। उस पहाड़ को हिमालय पर्वत कहा जाता है। गंगा नदी हिमालय से ही निकलती है। मोहन की बचपन से ही यह इच्छा थी कि वह पहाड़ों की ऊँचाई और नदियों की गहराई को निकट से देखे। उसने इनको हरिद्वार में देखा है। इनकी सुंदरता देखकर वह प्रसन्न हो गया।

   [**संकेत :** *व्यक्तिवाचक—मोहन, गंगा; जातिवाचक—पहाड़, लड़का; भाववाचक—गहराई, ऊँचाई*]

4. द्रव्यवाचक और समूहवाचक संज्ञाओं के दो-दो उदाहरण देकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
   [संकेत : *द्रव्यवाचक—सोना, लोहा; समूहवाचक—कक्षा, सेना*]
5. **नीचे दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :**
   लड़का, अच्छा, सुंदर, शत्रु, बच्चा, लड़ना, बुरा, बूढ़ा, गर्म, अपना, मीठा, पंडित, चतुर, बुनना।
   [संकेत : *लड़कपन, अच्छाई, सुंदरता, शत्रुता, बचपन, लडाई, बुराई, बुढ़ापा, गर्माहट, अपनापन, मिठास, पांडित्य, चतुरता, बुनावट*]
6. **निम्नलिखित में से गणनीय और अगणनीय संज्ञा-शब्दों की अलग-अलग सूची बनाइए :**
   पेड़, कुर्सी, पानी, किताब, हवा, नदी, गेहूँ, आटा, दूध, घर।
7. दो वाक्य ऐसे बनाइए, जिनमें व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक के रूप में प्रयुक्त हुई हो।
   [संकेत : *जयचंदों से देश को बचाओ*]
8. भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण कितने प्रकार के शब्दों से हो सकता है ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।
9. व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा में अंतर स्पष्ट करो।
10. **भाववाचक संज्ञा बनाओ :**
    उड़ना, अहं, मीठा, प्रसन्न, विद्वान, युवक, चिकना,
    बूढ़ा, हरा, लाल, काला, परतंत्र, सज्जन, योग्य

सी. बी. एस. ई. की दसवीं कक्षा की परीक्षाओं में पूछे गए संज्ञा संबंधी प्रश्न

1. **काले शब्द की भाववाचक संज्ञा से रिक्त स्थान की पूर्ति करो :**
   वह कक्षा दस तक **पढ़ा**; बाद में .... छोड़ दी। (**संकेत :** *पढ़ाई*)
2. वे अपने .... से दुखी हैं। ('बूढ़ा' शब्द की भाववाचक संज्ञा से)
   (**संकेत :** *बुढ़ापे*)
3. **भाववाचक संज्ञा में बदलकर लिखो :**
   चालाक, लड़का, मनुष्य, देवता। (**संकेत :** *चालाकी, लड़कपन, मनुष्यत्व, देवत्व*)
4. कभी किसी की .... नहीं करनी चाहिए। (भाववाचक संज्ञा से)
   (**संकेत :** *बुराई*)
5. भाववाचक संज्ञा में बदलिए : सज्जन, शिशु
   (**संकेत :** *सज्जनता, शैशव*)
6. वहाँ उसकी .... नहीं चली। ('चतुर' शब्द की भाववाचक संज्ञा से भरो)
   (**संकेत :** *चतुराई/चतुरता*)
7. शहद की .... कम नहीं होती। ('मीठा' शब्द की भाववाचक संज्ञा से)
   (**संकेत :** *मिठास*)
8. उस <u>पागल</u> के .... को देखकर मैं डर गया। (रेखांकित शब्द का भाववाचक संज्ञा शब्द)
   (**संकेत :** *पागलपन*)
9. '<u>साहसी</u>' के .... को देखकर मैं चकित रह गया।
   (रेखांकित के भाववाचक रूप से) (**संकेत :** *साहस*)

नवीं कक्षा हेतु संज्ञा संबंधी के बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-से विकल्प में सभी शब्द भाववाचक संज्ञाएँ नहीं हैं :
   (क) अच्छाई, उपयोगी, कृत्रिमता। (ख) मातृत्व, गंभीरता, वात्सल्य।
   (ग) लगाव, थकान, हार। (घ) वीरता, परतंत्रता, दुष्टता।
2. वृद्ध की भाववाचक संज्ञा क्या होगी ?
   (क) वृद्धा (ख) वार्धक्य (ग) वृद्धता
3. शिशु की भाववाचक संज्ञा क्या बनेगी ?
   (क) शैश (ख) शैशव (ग) शिशुता (घ) शैव
4. 'युवा' से भाववाचक संज्ञा बनती है :
   (क) यौवन (ख) युवक (ग) युवती
5. 'पंडित' से भाववाचक संज्ञा बताइए :
   (क) पंडिताइन (ख) पंडिता (ग) पंडित जी
6. 'पशु' से भाववाचक संज्ञा बनाओ :
   (क) पशुता (ख) पशुपन (ग) पोषक
7. 'बच्चा' शब्द से भाववाचक संज्ञा बनेगी :
   (क) बच्ची (ख) बचपन (ग) बच्चापन

उत्तर : 1. (क), 2. (ख), 3. (ख), 4. (क), 5. (ख), 6. (क), 7. (ख)।

अध्याय 7

संज्ञा के विकार

(Declension of Noun)

संज्ञा एक विकारी शब्द है। प्रयोग करते समय इसके रूपों में लिंग, वचन और कारक के कारण विकार अथवा परिवर्तन आ जाता है। इस अध्याय में हम इन तीनों पर विचार करेंगे :

1. लिंग *(Gender)* **2. वचन** *(Number)* **3. कारक** *(Case)*

1. लिंग *(Gender)*

'लिंग' शब्द का अर्थ है — चिह्न।

शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में **लिंग** कहते हैं ; जैसे —

लड़का **पढ़ रहा है।** पंखा **चल रहा है।**

लड़की **पढ़ रही है।** घड़ी **चल रही है।**

'लड़का', 'पंखा' शब्द पुरुषवाची हैं तथा 'लड़की', 'घड़ी' शब्द स्त्रीवाची हैं।

हिंदी में लिंग के दो भेद हैं : (1) पुल्लिग *(Masculine gender)*, (2) स्त्रीलिंग *(Feminine gender)*

पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द **'पुल्लिग'** और स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द **'स्त्रीलिंग'** कहलाते हैं।

लिंग-निर्णय के कुछ नियम :

पुल्लिग :
1. आकारांत शब्द प्राय: पुल्लिग होते हैं ; जैसे—कपड़ा, लोटा, लोहा, दरवाज़ा आदि।
2. देशों के नाम प्राय: पुल्लिग होते हैं ; जैसे—चीन, भारत, अमेरिका, इंग्लैंड आदि।
3. पर्वतों के नाम प्राय: पुल्लिग होते हैं ; जैसे—हिमालय, कैलाश, अरावली, हिंदुकुश आदि।
4. ग्रहों के नाम प्राय: पुल्लिग होते हैं ; जैसे—मंगल, शनि, सूर्य, चंद्र, ध्रुव, शुक्र आदि।
5. धातुओं के नाम प्राय: पुल्लिग होते हैं ; जैसे—सोना, पीतल, ताँबा, लोहा (*चाँदी अपवाद)*
6. दिनों के नाम प्राय: पुल्लिग होते हैं ; जैसे—सोम, मंगल, बुध, रवि, शनि आदि।
7. समुद्रों के नाम प्राय: पुल्लिग होते हैं ; जैसे—हिंद महासागर, अरब महासागर आदि।
8. प्राय: बहुमूल्य पदार्थों के नाम पुल्लिग होते हैं ; जैसे—हीरा, मोती, माणिक्य आदि।

स्त्रीलिंग :
1. ईकारांत शब्द प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं ; जैसे—नदी, रोटी, बेटी, चिट्ठी आदि।
2. भाषाओं के नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं ; जैसे—हिंदी, अंग्रेजी, चीनी, उर्दू आदि।
3. नदियों के नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं ; जैसे—गंगा, यमुना, कावेरी, कृष्णा, सरस्वती आदि।
4. जिन शब्दों में ता, आई, आवट, इया, आहट प्रत्यय लगे हों, वे प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—सुंदरता, बुराई, सजावट, लुटिया, घबराहट आदि।
5. प्राय: शस्त्रों के नाम स्त्रीलिंग में होते हैं, जैसे—बंदूक, तलवार, तोप, कृपाण आदि।

लिंग-संबंधी जानने योग्य अन्य बातें :

- कुछ प्राणिवाचक संज्ञाएँ ऐसी हैं जो पुल्लिग और स्त्रीलिंग में समान रूप से प्रयुक्त होती हैं। इनमें भेद और पहचान के लिए पुल्लिग से पहले 'नर' और स्त्रीलिंग से पहले 'मादा' शब्द लगा देते हैं। जैसे—

नर उल्लू नर कोयल नर गैंडा

मादा उल्लू मादा कोयल मादा गैंडा

- कुछ शब्द सदैव स्त्रीलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं इन्हें **नित्य स्त्रीलिंग** कहते हैं। जैसे–मछली, छिपकली, मक्खी, आदि।
- कुछ शब्द सदैव पुल्लिग में ही प्रयुक्त होते हैं। इन्हें **नित्य पुल्लिग** कहते हैं। जैसे–खटमल, बिच्छू, मगर, सारस
- कुछ शब्द ऐसे हैं जो पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त होने पर पुल्लिग और स्त्री जाति के लिए प्रयुक्त होने पर माने जाते हैं। जैसे–राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राजदूत, डॉक्टर, मैनेजर, सर्जन आदि।

उदाहरण : आज प्रधानमंत्री आ रहे हैं। (*पुल्लिग*)
प्रधानमंत्री विदेश जा रही हैं। (*स्त्रीलिंग*)

लिंग-परिवर्तन (*Change of Gender*)

पुल्लिग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदलने के कुछ सामान्य नियम निम्नलिखित हैं :

1. 'आ' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*
बाल	बाला
आचार्य	आचार्या
छात्र	छात्रा
प्रिय	प्रिया
पूज्य	पूज्या

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*
भवदीय	भवदीया
सुत	सुता
महोदय	महोदया
शिष्य	शिष्या
वृद्ध	वृद्धा

2. 'ई' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*
कबूतर	कबूतरी
देव	देवी
पहाड़	पहाड़ी
घोड़ा	घोड़ी
बकरा	बकरी

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*
बेटा	बेटी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी
लड़का	लड़की
दास	दासी
चाचा	चाची

3. 'इया' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*
लोटा	लुटिया
बेटा	बिटिया
बूढ़ा	बुढ़िया
चूहा	चुहिया
डिब्बा	डिबिया

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*
कुत्ता	कुतिया
बंदर	बंदरिया
गुड्डा	गुड़िया
बछड़ा	बछिया
चिड़ा	चिड़िया

4. 'नी' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*
चोर	चोरनी
मोर	मोरनी
ऊँट	ऊँटनी
शेर	शेरनी
जाट	जाटनी

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*
भील	भीलनी
सिंह	सिंहनी
डॉक्टर	डॉक्टरनी
सरदार	सरदारनी
मास्टर	मास्टरनी

5. 'इन' प्रत्यय लगाकर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मालिक	मालकिन
नाग	नागिन
माली	मालिन
पुजारी	पुजारिन
ग्वाला	ग्वालिन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नाई	नाइन
जुलाहा	जुलाहिन
बाघ	बाघिन
धोबी	धोबिन
तेली	तेलिन

6. 'इनी' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
हंस	हंसिनी
हाथी	हथिनी
स्वामी	स्वामिनी

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
तपस्वी	तपस्विनी
हितकारी	हितकारिणी
वनवासी	वनवासिनी

7. 'आइन' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
ठाकुर	ठकुराइन
पंडित	पंडिताइन
चौधरी	चौधराइन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बाबू	बबुआइन
लाला	ललाइन
पंडा	पंडाइन

8. 'आनी' प्रत्यय जोड़कर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
राजपूत	राजपूतानी
जेठ	जेठानी
देवर	देवरानी

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सेठ	सेठानी
मेहतर	मेहतरानी
नौकर	नौकरानी

9. 'अक' को 'इका' प्रत्यय में बदलकर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नायक	नायिका
बालक	बालिका
अध्यापक	अध्यापिका
गायक	गायिका

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सेवक	सेविका
पाठक	पाठिका
लेखक	लेखिका

10. 'मान' और 'वान' को क्रमशः 'मती' और 'वती' में बदलकर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बुद्धिमान	बुद्धिमती
आयुष्मान	आयुष्मती
शक्तिमान	शक्तिमती
श्रीमान	श्रीमती

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
गुणवान	गुणवती
धनवान	धनवती
रूपवान	रूपवती
पुत्रवान	पुत्रवती

11. 'ता' को 'त्री' में बदलकर :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नेता	नेत्री
अभिनेता	अभिनेत्री
दाता	दात्री

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
कर्ता	कर्त्री
धाता	धात्री
प्रबंधकर्ता	प्रबंधकर्त्री

12. कुछ विशेष शब्दों का स्त्रीलिंग रूप :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
वर	वधू
विद्वान	विदुषी
कवि	कवयित्री
वीर	वीरांगना
नर	मादा
साधु	साध्वी

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
विधुर	विधवा
ससुर	सास
पिता	माता
पुरुष	स्त्री
सम्राट	सम्राज्ञी
युवक	युवती

☞ वाक्य स्तर पर लिंग परिवर्तन :

1. साधु उपदेश दे रहे हैं। साध्वी उपदेश दे रही हैं।
2. अभिनेता हँस रहा है। अभिनेत्री हँस रही है।

रिक्त स्थान में काले शब्द का स्त्रीलिंग भरो :

1. मंच पर **कवि** और .... उपस्थित थे। (कवयित्री
2. **साधु** और .... की सेवा करो। (साध्वी
3. स्कूल में **अध्यापक** और .... हैं। (अध्यापिका
4. जंगल में **हाथी** और .... घूम रहे थे। (हथिनी

☞ अभ्यासार्थ (Practice)

1. निम्नलिखित पुल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए :
   बेटा, चूहा, लड़का, बंदर, नाती, धोबी, नौकर, मोर, शेर, सदस्य, लेखक, कवि, देवर, माली, श्रीमान।
   (संकेत : *बिटिया, चुहिया, लड़की, बंदरिया, नातिन, धोबिन, नौकरानी, मोरनी, शेरनी, सदस्या, लेखिका, कवयित्री, देवरानी, मालिन, श्रीमती*)
2. **लिंग बदलो :** आचार्य, डिब्बा, सुत, बूढ़ा, दर्शन, अभिनेता, नौकर।
3. **लिंग बताओ :** लोटा, पूज्य, मनोहारी, जाट, पुस्तिका, नदी, पर्वत।
4. **रिक्त स्थानों में रेखांकित का लिंग बदलकर लिखो :**
   (क) इस पुस्तक के पाठक और .... बहुत हैं।
   (ख) जुलाहा और .... कपड़ा बुनने का काम करते हैं।
   (ग) फिल्म में नायक और .... बहुत प्रसिद्ध हैं।
   (घ) देवर और .... को भी बुलाओ।

C.B.S.E. *की दसवीं कक्षा (हिंदी ए-कोर्स) की परीक्षाओं में पूछे गए लिंग संबंधी प्रश्न*

1. **काले शब्द के स्त्रीलिंग रूप से रिक्त स्थान भरो :**
(क) आजकल न तो **सम्राट** होते हैं और न ही ....
   (संकेत : *सम्राज्ञी*)
(ख) उसने बेटे को कहा **आयुष्मान** और बेटी को ....
   (संकेत : *आयुष्मती*)
2. **लिंग बदलो :**
   पाठक, विद्वान (संकेत : *पाठिका, विदुषी*)
3. एक विधवा और एक .... की शादी हो गई। (रेखांकित का लिंग परिवर्तन करके)
   (संकेत : *विधुर*)

4. कवि सम्मेलन में एक <u>कवि</u> और एक .... को आमंत्रित किया गया है।
(रेखांकित का लिंग परिवर्तन करके लिखिए) **(संकेत :** *कवयित्री)*
5. <u>दुर्गस्वामी</u> और .... दोनों ही आए थे।
(संकेत : *दुर्गस्वामिनी)*
6. विद्वान और .... सम्मेलन में आए।
(संकेत : *विदुषी)*

C.B.S.E. *की दसवीं कक्षा हिंदी (बी-कोर्स) की परीक्षाओं में पूछे गए लिंग संबंधी प्रश्न*

7. लिंग बदलो :
शिक्षक, वधू। **(संकेत :** *शिक्षिका, वर)*
8. लिंग बदलो : गृहस्वामी, विद्वान
(संकेत : *गृहस्वामिनी, विदुषी)*
9. लिंग बताओ : आँसू, हवा
(संकेत : *आँसू–पुल्लिंग, हवा–स्त्रीलिंग)*
10. लिंग बदलो : नायक, नाई।
(संकेत : *नायिका, नाइन)*
11. लिंग बदलो : सम्राट, लुहार, बंदर, ग्वाला, हाथी, नाई।
(संकेत : *सम्राज्ञी, लुहारिन, बंदरिया, ग्वालिन, हथिनी, नाइन)*
12. लिंग बदलो : बलवान, भैंस, ऊँट, मोर, बाघ, लाला
(संकेत : *बलवती, भैंसा, ऊँटनी, मोरनी, बाघिन, ललाइन)*

नवीं कक्षा हेतु लिंग संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित शब्द के स्त्रीलिंग शब्द के सही विकल्प को चुनकर वाक्य पूरा कीजिए :

1. **फिल्मोत्सव में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और -------- को पुरस्कार प्रदान किए गए।**
(क) अध्यापिका (ख) विदुषी
(ग) अभिनेत्री (घ) खलनायिका
2. **'कवि' का स्त्रीलिंग रूप होगा :**
(क) कविता (ख) कवयित्रि (ग) कवयित्री
3. **<u>कड़वा</u> का स्त्रीलिंग रूप लिखो :**
(क) कड़वी (ख) कड़ी
(ग) कौड़ी (घ) कड़म
4. **'चमकीला' का स्त्रीलिंग रूप छाँटिए :**
(क) चमकीली (ख) चमक
(ग) चमकी (घ) चमकाली
5. **'पंडित' का स्त्रीलिंग रूप है :**
(क) पंडितानी (ख) पंडिताइन (ग) पंडितन
6. **'पाठिका' का लिंग बताओ :**
(क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) दोनों
7. **'राष्ट्रपति' का प्रयोग किस लिंग में होता है ?**
(क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) दोनों में
8. **'सिंह' का स्त्रीलिंग है :**
(क) सिंहनी (ख) सिंही (ग) सिंहा
9. **'सम्राज्ञी' का पुल्लिंग है :**
(क) सम्राज (ख) सम्राट (ग) साम्राज्य
10. **आचार्य का स्त्रीलिंग रूप होगा :**
(क) आचार्या (ख) आचारी (ग) आचार्य ही

उत्तर : 1. (ग), 2. (ग), 3. (क), 4. (क), 5. (ख), 6. (ख), 7. (ग), 8. (क), 9. (ख), 10. (क)।

2. वचन *(Number)*

☞ जो संज्ञा की संख्या बतलाए, ऐसा शब्द-रूप वचन कहलाए।

आप जान ही चुके हैं कि 'संज्ञा' विकारी शब्द है। इसमें लिंग, वचन और कारक के कारण विकार (*परिवर्तन*) आता है। लिंग के बारे में आप पढ़-समझ चुके हैं।

अब हम **वचन के कारण परिवर्तन** के बारे में जानेंगे।

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और अंतर को समझिए :

(क)	(ख)
1. **बालक** ने **पुस्तक** पढ़ी।	**बालकों** ने **पुस्तकें** पढ़ीं।
2. **लड़की** नाच रही है।	**लड़कियाँ** नाच रही हैं।

[(क) शीर्षक के नीचे के वाक्यों से एक *(पुस्तक, बालक, लड़की)* का ज्ञान होता है तो (ख) शीर्षक के नीचे वाक्यों से अनेक *(पुस्तकें, बालकों, लड़कियाँ)* का ज्ञान होता है।]

इनसे हमने जाना :

संज्ञा के जिस रूप से एक अथवा अनेक का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। जैसे :

कुत्ता–कुत्ते, संत–संतों, पुरुष–पुरुषों।

वचन के भेद *(Kinds of Number)* : हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं :

1. **एकवचन** *(Singular Number)*–बालक, कलम, घर। 2. **बहुवचन** *(Plural Number)*–बालकों, कलमों

वचन के साथ **गणनीय** और **अगणनीय** वाला भेद भी जुड़ा है।

कुछ संज्ञाएँ गणनीय होती हैं और कुछ अगणनीय।

गणनीय संज्ञाओं को गिना जा सकता है, जैसे–आदमी, मेज, हाथी आदि।

अगणनीय संज्ञाओं को गिना नहीं जा सकता है, केवल मापा-तोला जा सकता है, जैसे–आटा, दूध, पानी।

1. एकवचन : शब्द के जिस रूप से उसके *(संज्ञा)* एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे–ल मेज, कलम, गाय आदि।

2. बहुवचन : शब्द के जिस रूप से उसके *(संज्ञा)* अनेक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे लड़ मेजें, कलमें, गाएँ आदि।

वचन के संबंध में जानने योग्य कुछ आवश्यक बातें

1. सम्मान प्रकट करने के लिए कभी-कभी एकवचन के लिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे–
   1. हमारे प्रधानाचार्य बहुत परिश्रमी **हैं**। 2. राणा प्रताप बहुत वीर **थे**।
   3. माता जी पहुँच गई **होंगी**। *(इसे 'आदरार्थ' प्रयोग कहा जाता है)*
2. निम्नलिखित शब्दों को सदैव बहुवचन में प्रयोग किया जाता है–
   आँसू, दर्शन, हस्ताक्षर, होश आदि।
3. कुछ शब्दों का प्रयोग सदैव एकवचन में ही होता है, जैसे–
   जनता, सेना, चाय, घी आदि।
4. अभिमान, बड़प्पन, अधिकार जताने के लिए प्राय: बहुवचन का प्रयोग करते हैं। जैसे–
   1. हम जा रहे **हैं**। 2. हमें शांति चाहिए।
5. भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे–
   1. **प्रेम** किया नहीं जाता, हो जाता है। 2. आमों में **मिठास** है।
6. धातुओं का बोध कराने वाली द्रव्यवाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे–
   1. **लोहा** बहुत मजबूत होता है। 2. **सोना** खरीदा गया।

☞ वचन परिवर्तन के कुछ नियम *(Change of Number)*

(क) विभक्ति रहित शब्द

1. यदि संज्ञा शब्द पुल्लिंग हो और अंत में आ हो तो आ का 'ए' हो जाता है। जैसे–

एकवचन	बहुवचन
कमरा	कमरे
लड़का	लड़के
बकरा	बकरे
पंखा	पंखे

एकवचन	बहुवचन
घोड़ा	घोड़े
पत्ता	पत्ते
बच्चा	बच्चे
चूहा	चूहे

2. अकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में [अ] को [एँ] कर देने पर बहुवचन रूप बन जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
दवात	दवातें
आँत	आँतें
बात	बातें
रात	रातें
तलवार	तलवारें

एकवचन	बहुवचन
चादर	चादरें
सड़क	सड़कें
मेज	मेजें
झील	झीलें
पुस्तक	पुस्तकें

3. इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में [याँ] जोड़ देने पर बहुवचन रूप बन जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
लिपि	लिपियाँ
तिथि	तिथियाँ
रीति	रीतियाँ

एकवचन	बहुवचन
नीति	नीतियाँ
जाति	जातियाँ
राशि	राशियाँ

4. ईकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में [ई] को [इयाँ] करके बहुवचन रूप बन जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
खिड़की	खिड़कियाँ
लड़की	लड़कियाँ
लकड़ी	लकड़ियाँ
नारी	नारियाँ

एकवचन	बहुवचन
रोटी	रोटियाँ
कुर्सी	कुर्सियाँ
नदी	नदियाँ
मछली	मछलियाँ

5. अंत में [या] आने वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में अनुनासिक [ँ] कर दिया जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
कुतिया	कुतियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ

एकवचन	बहुवचन
डिबिया	डिबियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ
डलिया	डलियाँ

6. अकारांत शब्दों के अंत में [एँ] जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
गायिका	गायिकाएँ
लता	लताएँ
माता	माताएँ
पाठशाला	पाठशालाएँ

एकवचन	बहुवचन
कथा	कथाएँ
माला	मालाएँ
विद्या	विद्याएँ
सेना	सेनाएँ

(ख) विभक्ति सहित संज्ञाओं के वचन-परिवर्तन :

1. ['ओं'] लगाकर :

एकवचन	बहुवचन
घर	घरों
चोर	चोरों
घोड़ा	घोड़ों
बंदर	बंदरों
लड़का	लड़कों

एकवचन	बहुवचन
बूढ़ा	बूढ़ों
योद्धा	योद्धाओं
लता	लताओं
नाला	नालों
कथा	कथाओं

2. ईकारांत शब्दों में ई को 'इ' करके **यों** लगा दिया जाता है :

एकवचन	बहुवचन
गाड़ी	गाड़ियों
गली	गलियों
नदी	नदियों

एकवचन	बहुवचन
लड़की	लड़कियों
साड़ी	साड़ियों
सिपाही	सिपाहियों

3. ऊकारांत शब्दों में 'ऊ' को 'उ' करके **ओं** लगा दिया जाता है :

एकवचन	बहुवचन
बहू	बहुओं
वधू	वधुओं
साधू	साधुओं

एकवचन	बहुवचन
भालू	भालुओं
डाकू	डाकुओं
लड्डू	लड्डुओं

❖ नीचे दिए उदाहरणों में वचन-परिवर्तन देखो :

एकवचन	परसर्ग रहित बहुवचन	परसर्ग सहित बहुवचन
बालक पुस्तक पढ़ता है।	बालक **पुस्तकें** पढ़ते हैं।	**बालकों** ने पुस्तकें पढ़ीं।
छात्रा लिखती है।	**छात्राएँ** लिखती हैं।	**छात्राओं** ने लिखा।
बिल्ली दूध पीती है।	**बिल्लियाँ** दूध पीती हैं।	**बिल्लियों** ने दूध पिया।
चोर चोरी करता है।	**चोर** चोरी करते हैं।	**चोरों** ने चोरी की।
लड़का आया है।	**लड़के** आए हैं।	**लड़कों ने** काम किया।

❖ वहुधा संज्ञा शब्दों के दो-दो बहुवचन रूप बनते हैं। नीचे तालिका में **क** और **ख** दोनों रूप दिखाए गए हैं। **ख** रूप का प्रयोग केवल वाक्य में ही होता है। अलग से पूछने पर केवल **क** वाला रूप ही बताना चाहिए। **ख** वाले रूप के साथ कारक-चिह्नों *(परसर्गों)* का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ—

एकवचन	बहुवचन (क)	बहुवचन (ख)
आँख	आँखें	आँखों
पुस्तक	पुस्तकें	पुस्तकों
बहन	बहनें	बहनों
सड़क	सड़कें	सड़कों
घोड़ा	घोड़े	घोड़ों
झील	झीलें	झीलों
पंखा	पंखे	पंखों
बात	बातें	बातों

एकवचन	बहुवचन (क)	बहुवचन (ख)
बिल्ली	बिल्लियाँ	बिल्लियों
कथा	कथाएँ	कथाओं
छात्रा	छात्राएँ	छात्राओं
महिला	महिलाएँ	महिलाओं
कन्या	कन्याएँ	कन्याओं
नीति	नीतियाँ	नीतियों
धर्मशाला	धर्मशालाएँ	धर्मशालाओं
नदी	नदियाँ	नदियों

❖ **वाक्य-स्तर पर वचन-परिवर्तन :**

	एकवचन	बहुवचन
1	उसकी बेटी यहाँ रहती है।	उनकी बेटियाँ यहाँ रहती हैं।
2	मिठाई पर मक्खी बैठी है।	मिठाइयों पर मक्खियाँ बैठी हैं।
3	दुकान पर ग्राहक खड़ा है।	दुकानों पर ग्राहक खड़े हैं।
4	आकाश में पक्षी उड़ रहा है।	आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं।
5	वृक्ष पर चिड़िया बैठी है।	वृक्षों पर चिड़ियाँ बैठी हैं।
6	पुस्तक का पृष्ठ फट गया।	पुस्तकों के पृष्ठ फट गए।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. **निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :**
   जाति, वहन, रोटी, पुस्तक, माला, कक्षा, बस, कहानी, महिला, राजा, गुड़िया, बहू, कमरा, चिड़िया।
2. **नीचे दिए गए वाक्यों में बहुवचन में गलत प्रयोगों को पहचानिए और उन्हें सही रूप में लिखिए :**
   1. उन स्त्री ने खा लिया। (उन स्त्रियों ने खाना खा लिया।)
   2. दो लड़का आ रहे हैं। (दो लड़के आ रहे हैं।)
   3. महिलाओं लड़ रही हैं। (महिलाएँ लड़ रही हैं।)
   4. उन कमरे में बिजली नहीं है। (उन कमरों में बिजली नहीं है।)
   5. उनकी रुचिएँ फिल्म देखना और कहानी पढ़ना है। (उनकी रुचियाँ फिल्में देखना और कहानियाँ पढ़ना है।)

C.B.S.E. *की दसवीं कक्षा हिंदी (ए-कोर्स) की परीक्षाओं में पूछे गए वचन संबंधी प्रश्न*

1. **वचन बदलो :**
   पक्षी, महिला।
   (**संकेत :** *पक्षियों, महिलाएँ*)
2. ऋतु, नदी।
   (*वचन बदलकर लिखो*)
   (**संकेत :** *ऋतुएँ, नदियाँ*)
3. पुस्तक सीधी रखी है। (*वचन बदलकर लिखो*)
   (**संकेत :** *पुस्तकें सीधी रखी हैं।*)
4. बेटी और धोबी शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए।
   (**संकेत :** *बेटियाँ, धोबियों*)
5. 'वर' और 'उल्लू' शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए।
   (**संकेत :** *वरों, उल्लुओं*)

C.B.S.E. *की दसवीं कक्षा हिंदी (बी कोर्स) की परीक्षाओं में पूछे गए वचन संबंधी प्रश्न*

6. हमारा गाँव बहुत पिछड़ा हुआ है। (*वचन बदलकर पूरा वाक्य लिखो*)
   (**संकेत :** *हमारे गाँव बहुत पिछड़े हुए हैं।*)
7. उसकी बेटी यहाँ रहती है। (*वचन बदलकर लिखो*)
   (**संकेत :** *उनकी बेटियाँ यहाँ रहती हैं।*)
8. मिठाई पर मक्खी बैठी है। (*वचन बदलकर लिखो*)
   (**संकेत :** *मिठाइयों पर मक्खियाँ बैठी हैं*)
9. किताब कौन ले गया ? (*रेखांकित का वचन बदलकर पूरा वाक्य फिर से लिखिए*)
   (**संकेत :** *किताबें कौन ले गए ?*)
10. **बहुवचन में बदलकर लिखिए :**
    शिक्षिका, बालिका, ऋतु, पंक्ति, गायिका, नाला।
    (**संकेत :** *शिक्षिकाएँ, बालिकाएँ, ऋतुएँ, पंक्तियाँ, गायिकाएँ, नाले*)
11. **वचन बदलकर लिखिए :**
    संस्कृति, पोशाकें, लकड़ी, विधि, छाता, पहेली।
    (**संकेत :** *संस्कृतियाँ, पोशाक, लकड़ियाँ, विधियाँ, छाते, पहेलियाँ*)

3. कारक *(Case)*

कारक का शाब्दिक अर्थ है—'क्रिया को करने वाला' अर्थात् क्रिया को पूरी करने में किसी-न-किसी भूमिका को निभाने वाला। क्रिया को संपन्न अर्थात् पूरा करने में जो संज्ञा आदि शब्द संलग्न होते हैं, वे अपनी अलग-अलग प्रकार की भूमिकाओं के नुसार अलग-अलग **कारकों** में वाक्य में दिखाई पड़ते हैं।

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ो :

1. राहुल **ने** केला खाया।
2. रवि ने **सचिन को** पीटा।
3. गरिमा **चाकू से** फल काटती है।
4. मोहन **बच्चों के लिए** खिलौने लाया।
5. **पेड़ से** पत्ते गिर रहे हैं।
6. पुस्तक **मेज पर** रखी है।

उपर्युक्त वाक्यों में वाक्य (1) में 'खाना' क्रिया है। किसने खाया ? राहुल ने।
वाक्य (2) में रवि ने किसको पीटा ? सचिन को।
वाक्य (3) में गरिमा ने फल किससे काटा ? चाकू से।
वाक्य (4) में मोहन किसके लिए खिलौने लाया ? बच्चों के लिए।
वाक्य (5) में पत्ते कहाँ से गिरे ? पेड़ से।
वाक्य (6) में पुस्तक कहाँ रखी है ? मेज पर।

इन सभी वाक्यों में संज्ञा-पदों का क्रिया-पद के साथ एक निश्चित संबंध होता है। अत: **किसी वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा सर्वनाम पदों का उस वाक्य की क्रिया से जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं।**

इन संज्ञाओं का क्रियाओं से संबंध को बताने के लिए **ने, को, से, में, पर, के लिए** आदि चिह्नों का प्रयोग किया है। इन चिह्नों को **'कारक चिह्न'** कहते हैं। हिंदी में ये कारक-चिह्न **'परसर्ग'** कहलाते हैं।

कभी-कभी वाक्यों में कुछ शब्दों के साथ परसर्गों का प्रयोग नहीं होता है। जैसे—राम गया।

> ☞ ***कारक वह व्याकरणिक कोटि है जो यह स्पष्ट करती है कि संज्ञा आदि शब्द वाक्य में स्थित क्रिया के साथ किस प्रकार की भूमिका से संबद्ध हैं।***

कारक के भेद *(Kinds of Case)* :

कारक के मुख्य भेद छह हैं :

1. कर्ता कारक *(Nominative Case)*
2. कर्म कारक *(Objective Case)*
3. करण कारक *(Instrumental Case)*
4. संप्रदान कारक *(Dative Case)*
5. अपादान कारक *(Ablative Case)*
6. अधिकरण कारक *(Locative Case)*

कुछ लोग निम्नलिखित दो भेदों को भी कारक के अंतर्गत रखते हैं :

7. संबंध कारक *(Possessive Case)*
8. संबोधन कारक *(Vocative Case)*

इनका विवरण इस प्रकार है :

1. कर्ता कारक [ने] : किसी क्रिया को करने वाला ही कर्ता है। प्रत्येक क्रिया के साथ कर्ता अवश्य होता है। कर्ता के क्रिया हो ही नहीं सकती। जैसे—

1. **गीता** खाना पका रही है।
2. **नीहारिका** ने कहानी लिखी।
3. **राम** चला गया।

इन वाक्यों में **गीता**, **नीहारिका** और **राम** कर्ता कारक हैं। जब सकर्मक क्रिया भूतकाल में हो तो कर्ता कारक के स परसर्ग का प्रयोग होता है।

कभी-कभी कर्ता के साथ 'को' कारक-चिह्न का भी प्रयोग होता है ; जैसे—

मोहन **को** मुंबई जाना है।

निम्नलिखित स्थितियों में 'ने' परसर्ग *(कारक-चिह्न)* का प्रयोग नहीं होता—

1. वर्तमान काल की सकर्मक क्रिया के साथ—मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
2. भूतकाल की अकर्मक क्रिया के साथ—वह चला गया।

2. कर्म कारक [को] : वाक्य में जिस संज्ञा/सर्वनाम पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़ता है और जिसकी अपेक्षा क्रिया करती है, उसे कर्म कहते हैं।

प्राय: कर्म की पहचान क्रिया पर '**क्या**', '**किसे**' प्रश्न करके की जाती है। इसके उत्तर में जो संज्ञा प्राप्त होती है, वही कर्म होती है।

कर्म कारक के साथ 'को' परसर्ग का प्रयोग होता है; परंतु कई अवस्थाओं में इसका प्रयोग नहीं भी होता है। 'को' परसर्ग का प्रयोग प्राय: प्राणिवाचक संज्ञा के साथ होता है। जैसे —

1. राजेश ने **मोहन को** पढ़ाया। किसको पढ़ाया ? (**मोहन को**)—मोहन *(कर्म)*, परसर्ग-को।
2. माँ ने **बच्चे को** सुलाया। किसको सुलाया ? (**बच्चे को**)—बच्चे *(कर्म)*, परसर्ग-को।
3. वह **पुस्तक** पढ़ रहा है। क्या पढ़ रहा है ? –पुस्तक *(कर्म)*, परसर्ग–को, परसर्ग - कोई नहीं।

❖ जब वाक्य में दो कर्म हों (*मुख्य और गौण*), तब 'को' का प्रयोग गौण कर्म के साथ होता है; जैसे—मैंने राम **को** पत्र लिखा। *(**राम** गौण कर्म, **पत्र** मुख्य कर्म)*।

3. करण कारक [से, के द्वारा] : जिसकी सहायता से कोई कार्य संपन्न हो, वह संज्ञा/सर्वनाम पद करण कारक होता है। करण कारक का विभक्ति-चिह्न (परसर्ग) है — से, के द्वारा। जैसे—

1. मैं **पेन से** चिट्ठी लिख रहा हूँ।
2. राधा ने **चाकू से** छेद किया।
3. उसे **पत्र के द्वारा** समाचार मिला।

4. संप्रदान कारक [को, के लिए] : संज्ञा या सर्वनाम के उस रूप को संप्रदान कहते हैं जिसके लिए कर्ता द्वारा कुछ किया जाए या उसे कुछ दिया जाए। संप्रदान कारक का चिह्न **को, के लिए** है। जैसे—

1. मोहन ने **गरीबों को** धन दिया।
2. मैं **आपके लिए** दवा लाया हूँ।
3. वह यह मिठाई **बहन के लिए** लाया था।

❖ '**को**' परसर्ग का प्रयोग कर्म कारक और संप्रदान कारक दोनों में होता है। कर्म कारक में '**को**' To के अर्थ में होता है, जबकि संप्रदान कारक में '**को**' For के अर्थ में। जैसे—
वह **मोहन को** पत्र लिखेगा। (कर्म कारक)
वह **दीन-दुखियों** को कपड़े देता है। *(संप्रदान कारक)*

5. अपादान कारक [से] : जिस पद से अलग होने या निकलने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका परसर्ग '**से**' है। जैसे—

1. गंगा **हिमालय से** निकलती है।
2. **पेड़ से** पत्ते गिरते हैं।
3. मोहन **घोड़े से** गिर पड़ा।

❖ **ध्यान दें : 'से'** परसर्ग का प्रयोग करण कारक और अपादान कारक दोनों में होता है, पर दोनों स्थितियों में अंतर है। करण कारक में 'से' सहायक साधन के रूप में *(with)* तथा अपादान कारक में यह अलग *(depart)* होने का सूचक है।

6. अधिकरण कारक [में, पर] : जिस संज्ञा/सर्वनाम पद से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इससे क्रिया के स्थान, काल, अवसर आदि का ज्ञान होता है। अधिकरण कारक के परसर्ग हैं— में, पर। जैसे—

1. **थैले में** फल हैं।
2. पुस्तक **मेज पर** रखी है।
3. माताजी **घर में** हैं।

❖ कभी-कभी अधिकरण कारक का परसर्ग लुप्त भी हो जाता है; जैसे—

1. बगीचे के **किनारे** छायादार वृक्ष लगे हैं। *(किनारे पर)*
2. बच्चे घर हैं। *(घर पर या घर में)*

❖ कभी-कभी अधिकरण कारक के परसर्ग के वाद दूसरे कारक का परसर्ग भी आ जाता है, जैसे—

1. पुस्तक **में से** पढ़ लो।
2. वह पेड़ **पर से** उतर रहा था।

7. संबंध कारक [का, के, की/रा, रे, री] : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु/व्यक्ति का संबंध वस्तु/व्यक्ति के साथ जाना जाए, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसमें का, के, की, रा, रे, री परसर्गों का प्रयोग किया जाता है।

1. यह **राम का** भाई है।
2. वह **शशि की** बहन है।
3. **मेरा** भाई, **तुम्हारी** बहन आदि।

8. संबोधन कारक [हे, अरे, ओ] : यह ध्यान आकर्षित करते समय अथवा चेतावनी देते समय प्रयुक्त होता है के पूर्व प्राय: विस्मयादिबोधक अव्यय [हे ! अरे !] आदि लगते हैं। जैसे—

1. **अरे मोहन** ! यहाँ आना।
2. **सज्जनो और देवियो** ! चुप हो जाओ।

कारक-तालिका

क्र. सं.	कारक	पहचान/परिभाषा	कारक-चिह्न (परसर्ग)	प्रयोग/उदाहरण
1	कर्ता (*Nominative Case*)	क्रिया को करने वाला	ने	**राम ने** खाना खाया।
			--	**राम** चला गया।
2	कर्म (*Objective Case*)	जिस पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़े	को	मैं **श्याम को** पत्र लिखूँगा।
			–	वह **पत्र** पढ़ेगा।
3	करण (*Instrumental Case*)	जिस साधन से क्रिया हो।	से	श्याम **कलम से** लिखता है।
			के द्वारा	उसे **पत्र के द्वारा** सूचना भेज
4	संप्रदान (*Dative Case*)	जिसके लिए कुछ किया/दिया जाए	को	**गरीबों को** वस्त्र दो।
			के लिए	राम **पिताजी के लिए** दवा ला
5	अपादान (*Ablative Case*)	जिससे अलगाव (पृथकता) हो	से (पृथकता)	**वृक्ष से** पत्ते गिर रहे हैं।
				गंगा **हिमालय से** निकलती है।
6	अधिकरण (*Locative Case*)	जो क्रिया का आधार हो	में	इस **थैले में** फल हैं।
			पर	पुस्तक **मेज पर** है।
7	संबंध (*Possessive Case*)	क्रिया से भिन्न किसी अन्य पद से संबंध सूचित करने वाला	का, के, की	**श्याम का** भाई, **उसके** बच्चे, गीता
			रा, रे, री	**तुम्हारा** मित्र, **मेरी** बहन, तुम्हा
8	संबोधन (*Vocative Case*)	जिसे पुकारा जाए	हे	**हे भगवान** ! रक्षा करो।
			अरे	**अरे मोहन** ! तुम अभी तक न

☞ समझो :

1. कर्म कारक और संप्रदान कारक में अंतर : इन दोनों में **'को'** परसर्ग का प्रयोग होता है; जैसे—

1. मैं **राम को** समझाऊँगा। *(कर्म कारक)*
2. मैंने **गीता को** पुस्तक दी। *(संप्रदान कारक)*

पहले वाक्य में 'समझाने' क्रिया का फल 'राम' पर पड़ रहा है, अत: वह कर्म है। दूसरे वाक्य में देने का भाव है संप्रदान कारक है।

2. करण कारक और अपादान कारक में अंतर : इन दोनों कारकों में **'से'** परसर्ग का प्रयोग होता है। जैसे—

1. वह **कलम से** लिखती है।
2. गंगा **हिमालय से** निकलती है।

पहले वाक्य में 'लिखने' की क्रिया 'कलम से' हो रही है अर्थात् 'कलम' लिखने की क्रिया का साधन है, अत: 'करण कारक' है।

दूसरे वाक्य में गंगा का हिमालय से पृथक् होने का पता चल रहा है अत: यह अपादान कारक है।

☞ स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया के साथ जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं।
- इस संबंध को प्रकट करने के लिए जो शब्द-चिह्न प्रयुक्त होते हैं, उन्हें कारक-चिह्न या परसर्ग कहते हैं।
- कारक के कुल भेद आठ हैं—कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन।
- क्रिया या काम करने वाले को कर्ता कहते हैं।
- जिस पर क्रिया का फल/प्रभाव पड़े, उसे कर्म कहते हैं।
- जिस साधन से क्रिया की जाए उसे कारण कहते हैं।
- करण और अपादान दोनों कारकों का चिह्न 'से' है, पर करण में साधन के रूप में तथा अपादान में पृथकता दर्शाने के लिए 'से' का प्रयोग होता है।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. कारक किसे कहते हैं ? कारक के भेदों का परिचय दीजिए।
2. **'ने' परसर्ग का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को बदलिए :**
   1. राम खाना खा रहा है। **(संकेत :** *राम ने खाना खाया।)*
   2. श्याम मोहन को पुस्तक देता है। **(संकेत :** *श्याम ने मोहन को पुस्तक दी।)*
   3. गोपाल रोटी खा चुका। **(संकेत :** *गोपाल ने रोटी खा ली।)*
   4. आप यह क्यों कह रहे हैं? **(संकेत :** *आपने यह क्यों कहा ?)*
   5. प्रधानमंत्री सूखा-क्षेत्र का दौरा कर रहे हैं। **(संकेत :** *प्रधानमंत्री ने सूखा-क्षेत्र का दौरा किया।)*
3. **निम्नलिखित वाक्यों से कारकों को छाँटकर उनके नाम लिखिए :**
   1. मोहन चाकू से फल काट रहा है। **(संकेत :** *मोहन–कर्ता, चाकू (से)–करण।)*
   2. मोहन ने सोहन को अपनी पुस्तक दे दी। **(संकेत :** *मोहन (ने)–कर्ता, सोहन (को)–कर्म, पुस्तक—कर्म।)*
   3. रमेश को स्कूल जाना है। **(संकेत :** *रमेश (को)–कर्ता)*
   4. वह इलाज के लिए दिल्ली जा रहा है। **(संकेत :** *इलाज (के लिए)–संप्रदान)*
   5. गंगा हिमालय से निकलती है। **(संकेत :** *हिमालय (से)–अपादान)*
   6. मैं कलम से पत्र लिखूँगा। **(संकेत :** *कलम (से)–करण)*
   7. वह दुकान पर नहीं है। **(संकेत :** *दुकान (पर)–अधिकरण)*
   8. वह कल घर पर था। **(संकेत :** *घर (पर)–अधिकरण)*
   9. परीक्षा मार्च में होगी। **(संकेत :** *मार्च (में)–अधिकरण)*
4. **निम्नलिखित वाक्यों में से कारक छाँटिए तथा नाम भी लिखिए :**
   1. रवि चाकू से फल काट रहा है।
   2. सीता को स्कूल जाना है।
   3. गंगा हिमालय से निकलती है।
   4. मालिक दुकान पर नहीं है।
   5. मैं राम को पत्र लिखूँगा।
   6. वह पिताजी के लिए दवा लाया है।
   7. घड़े में पानी है।
   8. राम का भाई आ रहा है।
   9. रवि ने पत्र लिखा।
   10. वह घोड़े पर जा रहा है।

C.B.S.E. की दसवीं कक्षा हिंदी (ए) की परीक्षाओं में पूछे गए कारक संबंधी प्रश्न

मोटे अक्षरों में कारक बताइए :

1. मनुष्य **धन के लिए** विदेश में भटकता है।
   (**संकेत :** *संप्रदान कारक*)
2. पढ़ते समय मेरी **आँखों से** पानी निकलता है।
   (**संकेत :** *अपादान कारक*)
3. गंगा **हिमालय से** निकलती है।
   (**संकेत :** *अपादान कारक*)
4. महादेवी की **गाय का** नाम गौरा था।
   (**संकेत :** *संबंध कारक*)
5. गरिमा **दूध** पी रही है।
   (**संकेत :** *कर्म कारक*)

C.B.S.E. की दसवीं कक्षा हिंदी (बी-कोर्स) की परीक्षाओं में पूछे गए कारक संबंधी प्रश्न

6. मैंने **डंडे से** साँप को मारा।
   (**संकेत :** *करण कारक*)
7. वह **दुकान पर** नहीं है।
   (**संकेत :** *अधिकरण कारक*)
8. चंद्रमा **आकाश में** चमकता है।
   (**संकेत :** *अधिकरण कारक*)
9. मैंने **सुरेश** को बुलाया।
   (**संकेत :** *कर्म कारक*)
10. तुम **सीढ़ी से** चढ़ जाओ।
    (**संकेत :** *करण कारक*)
11. **उत्तर भारत** में बहुत गर्मी पड़ती है।
    (**संकेत :** *अधिकरण कारक*)
12. **तालाब में** मछलियाँ हैं।
    (**संकेत :** *अधिकरण कारक*)
13. **हिमालय से** गंगा निकलती है।
    (**संकेत :** *अपादान कारक*)

नवीं कक्षा हेतु कारक संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित पद में प्रयुक्त कारक के सही विकल्प को चुनकर लिखिए–

1. राम ने कलम से पत्र लिखा।
(क) संबंध कारक (ख) करण कारक
(ग) कर्म कारक (घ) अपादान कारक

2. 'पेड़ से पत्ता गिरता है'–रेखांकित में कारक बताओ।
(क) अपादान (ख) करण (ग) संप्रदान

3. गरीबों को धन दो। – रेखांकित में कारक बता
(क) कर्ता कारक (ख) कर्म कार
(ग) संप्रदान कारक (घ) संबंध कार

4. विधिवाचक
हिमालय से गंगा निकलती है। – रेखांकित में कारक
(क) अपादान (ख) संबंध (ग) क

5. मैं गरीबों को वस्त्र देता हूँ। – रेखांकित में कारक
(क) कर्ता (ख) कर्म (ग) सं

उत्तर : 1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (क), 5. (ग)।

अध्याय 8

सर्वनाम

(Pronoun)

'सर्वनाम' का शाब्दिक अर्थ है — सर्व (सब) का नाम। व्याकरण में सर्वनाम ऐसे शब्दों को कहते हैं, जिनका प्रयोग सब प्रकार के नामों (संज्ञाओं) के लिए अथवा उनके स्थान पर हो सके। सर्वनामों का सबसे अधिक प्रयोग वाक्यों में एक ही संज्ञा को बार-बार उसी रूप में आने से बचाने के लिए होता है।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

स्वाति एक परिश्रमी लड़की है। स्वाति प्रतिदिन स्कूल जाती है। स्वाति की छोटी बहन दिव्या है। स्वाति के पिताजी इंजीनियर हैं। स्वाति सबकी मदद करती है। स्वाति को सभी प्रेम करते हैं।

उपर्युक्त गद्यांश में **स्वाति** का नाम छह बार आया है। बार-बार वही नाम लिखना या बोलना अटपटा-सा लगता है। इसे ठीक नहीं माना जाता है। इसे इस प्रकार लिखा जाना चाहिए :

स्वाति एक परिश्रमी लड़की है। वह प्रतिदिन स्कूल जाती है। उसकी छोटी बहन दिव्या है। उसके पिताजी इंजीनियर हैं। वह सबकी मदद करती है। उसको सभी प्रेम करते हैं।

इस गद्यांश में 'स्वाति' नाम केवल पहले वाक्य में ही आया है। उसके बाद के वाक्यों में उसके लिए — वह, उसकी, उसके, उसको — का प्रयोग हुआ है। 'स्वाति' संज्ञा है और उसके स्थान पर प्रयुक्त होने वाले ये शब्द **सर्वनाम** हैं।

☞ ***संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द 'सर्वनाम' कहलाते हैं।***

मुख्य सर्वनाम शब्द हैं — मैं, हम, तुम, तू, वह, वे, कौन, कोई, क्या, आदि।

❖ **सर्वनाम के भेद** *(Kinds of Pronoun)*

1. पुरुषवाचक सर्वनाम *(Personal Pronoun)*
2. निश्चयवाचक सर्वनाम *(Demonstrative Pronoun)*
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम *(Indefinite Pronoun)*
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम *(Interrogative Pronoun)*
5. संबंधवाचक सर्वनाम *(Relative Pronoun)*
6. निजवाचक सर्वनाम *(Reflexive Pronoun)*

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)

जो सर्वनाम शब्द किसी पुरुष के नाम के बदले प्रयुक्त किया जाए उसे **पुरुषवाचक** सर्वनाम कहते हैं। इसमें वक्ता अपने लिए, सुनने वाले के लिए और अन्य किसी के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम होते हैं। इस प्रकार पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं :

(क) उत्तम पुरुष *(First Person)* : वक्ता/लेखक अपने नाम के स्थान पर जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे — मैं, हम और इनके रूप।

(ख) मध्यम पुरुष *(Second Person)* : जो सर्वनाम सुनने वाले के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं, उन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे — तू, तुम, आप और इनके रूप ।

(ग) अन्य पुरुष *(Third Person)* : जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलने वाले और सुनने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति के लिए किया जाए, उन्हें अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे—वह, वे, उसे, उसका, उनका, उनके आदि।

समझो :

- आदर के अर्थ में प्रयुक्त 'आप' प्राय: मध्यम पुरुष के लिए आता है ; जैसे—आप, इधर बैठिए। किंतु कभी-कभी अन्य पुरुष के लिए भी प्रयुक्त होता है; जैसे—महात्मा गाँधी हमारे राष्ट्रपिता हैं। आपका (उनका) जन्म पोरबंदर हुआ था।
  आपका प्रयोग सदा बहुवचन में होता है।
- 'तू' *(मध्यम पुरुष एकवचन)* का विशेष प्रयोग :
  1. प्यार-दुलार और अति आत्मीयता दिखाने में होता है।
  2. निरादर या हीनता दिखाने में होता है।

  सामान्य व्यवहार में श्रोता/पाठक के लिए 'तुम' का ही प्रयोग होता है।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम *(Demonstrative Pronoun)*

जिस सर्वनाम से दूरवर्ती या समीपवर्ती व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं और घटना-व्यापारों का बोध होता है, उसे **निश्चयवाचक** सर्वनाम कहते हैं।

दूरवर्ती के लिए — वह — **वह** रहा मेरा मकान।
समीपवर्ती के लिए — यह — इन पुस्तकों में मेरी **यह** है।

समझो :

- रूप-रचना की दृष्टि से अन्य पुरुष और निश्चयवाचक में कोई भेद नहीं है। दोनों में एक समान 'यह, वह' का प्रयोग होता है।
- निश्चयवाचक सर्वनाम में पास अथवा दूर की वस्तुओं के लिए संकेत किया जाता है, अत: इसे **संकेतवाचक** सर्वनाम भी कहते हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम *(Indefinite Pronoun)*

जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति, प्राणी या वस्तु का बोध नहीं होता है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। ऐसी स्थिति तब आती है जब किसी व्यक्ति आदि का आभास तो आपको है किंतु उसके संज्ञा—नाम के संबंध में निश्चित नहीं है। ऐसी दशा में व्यक्ति के लिए 'कोई' और अप्राणी के लिए 'कुछ' का प्रयोग करते हैं।

जैसे — 1. **कोई** दरवाजा खटखटा रहा है।
2. दूध में **कुछ** पड़ा है।
3. मोहन का **कुछ** खो गया है।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम *(Interrogative Pronoun)*

जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु आदि के विषय में प्रश्न का बोध होता है, उसे **प्रश्नवाचक** सर्वनाम कहते हैं। ये हैं – **कौन** और **क्या**।

किसी व्यक्ति/प्राणी के विषय में प्रश्न करने के लिए **'कौन'** का प्रयोग करते हैं। **'क्या'** का प्रयोग किसी वस्तु के लिए करते हैं। जैसे —

1. देखो, **कौन** आया है ?
2. घर पर **कौन** रुकेगा ?
3. खाने में आप **क्या** लेंगे ?
4. दूध में **क्या** पड़ा है ?

- 'कौन-सा' का प्रयोग अप्राणियों के साथ भी होता है, जैसे—
  यहाँ कई कमरे हैं, आप **कौन-सा** पसंद करोगे ?

5. संबंधवाचक सर्वनाम *(Relative Pronoun)*

मिश्र वाक्य की रचना में जिस सर्वनाम से अन्य उपवाक्य में आई संज्ञा/सर्वनाम से संबंध स्थापित होता है, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे — जो, जिसको आदि।

1. मेरी वह कलम खो गई **जो** मुझे जन्मदिन पर मिली थी।

2. यह मेरा वह मित्र है **जो** अमेरिका गया हुआ था।
3. यह वही फिल्म है **जिसे** तुम देखना चाहते थे।
4. **जो** करेगा, **सो** भरेगा।
5. **जैसी** करनी, **वैसी** भरनी।

6. निजवाचक सर्वनाम *(Reflexive Pronoun)*

जो सर्वनाम निज के लिए अर्थात् स्वयं अपने लिए प्रयुक्त होता है, उसे **निजवाचक** सर्वनाम कहते हैं। इसके संबंधवाची रूप 'अपना', 'अपनी', 'अपने' हैं। जैसे—

1. मैं **आप** *(स्वयं)* आ जाऊँगा।
2. मैं अपना काम **आप** करता हूँ।
3. मैं **आप ही** बोले जा रहा था।

❖ 'आप' शब्द का प्रयोग पुरुषवाचक (*आदरसूचक*) तथा निजवाचक, दोनों प्रकार के सर्वनामों के रूप में किया जाता है। जैसे—

1. **आप** कृपया बैठिए। (*पुरुषवाचक सर्वनाम*)
2. यह समस्या मैं **आप** ही हल करूँगा। *(निजवाचक सर्वनाम)*

❖ कुछ सर्वनाम पुनरावृत्ति के रूप में आकर अर्थ में विशेषता ला देते हैं। जैसे—

1. **जो-जो** आता जाए, खाना खाता जाए।
2. **किस-किस** से पूछते रहोगे ?
3. उत्सव में **कौन-कौन** आया था ?
4. तुमने **क्या-क्या** बनाया है ?

सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना *(Transformation of Pronoun)*

जानने योग्य बातें :

✓ सर्वनामों के रूपों में वचन और संबंध कारक के कारण ही परिवर्तन होता है।

✓ लिंग-भेद से केवल संबंध कारक में ही परिवर्तन होता है, अन्य सर्वनामों में लिंग संबंधी विकार नहीं आता।

✓ सर्वनाम के लिंग का ज्ञान उनके क्रिया-रूपों में होता है।

✓ सर्वनाम जिस संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है, लिंग-वचन उसी के अनुसार होते हैं।

✓ सर्वनाम में संबोधन कारक नहीं होता; क्योंकि किसी को सर्वनाम द्वारा नहीं पुकारा जाता।

✓ सर्वनाम का प्रयोग एकवचन और बहुवचन दोनों में होता है।

☞ **जानने योग्य कुछ महत्त्वपूर्ण बातें :**

❖ सर्वनाम की विभक्तियाँ शब्दों से मिलाकर लिखी जाती हैं, जैसे ; मैंने, मुझसे, उसको आदि।

❖ मैं, हम, तुम के साथ का, के, की, की जगह रा, रे, री का प्रयोग किया जाता है ; जैसे—मेरा, मेरी, मेरे, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, हमारा।

❖ आदरार्थ संज्ञा शब्दों के लिए सर्वनाम भी आदरार्थ बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं ; जैसे—

मेरे पिताजी बाहर गए हैं। **वे** आते ही होंगे।

महादेवी जी आई तो थीं, पर **वे** रुकी नहीं।

❖ अधिकार/अभिमान प्रकट करने के लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग चल पड़ा है, जैसे—

चुप रहिए, अन्यथा **हमें** कठोर कार्यवाही करनी होगी।

❖ मुझ, हम, तुझ, तुम, इन, उन, किस, किन में निश्चयार्थी *(ही)* के योग से क्रमशः मुझी, हमीं, तुझी, तुम्हीं, इन्हीं, उन्हीं, किसी, किन्हीं आदि निश्चयार्थी रूप बनते हैं।

- **कोई** और **कुछ** के बहुवचन रूप **किन्हीं** और **कुछ** बनते हैं।
- एकवचन **कुछ** परिणामबोधक है और बहुवचन **कुछ** संख्याबोधक है।
- कभी-कभी दो सर्वनाम **संयुक्त रूप** होकर भी प्रयुक्त होते हैं ; जैसे —
  जो + कोई → जो कोई–**जो कोई** पढ़ेगा, पास हो जाएगा।
  जो + कुछ → जो कुछ–**जो कुछ** लाए हो, निकालकर रख दो।
- **सर्वनाम पुनरुक्त रूप** में भी प्रयोग होते हैं ; जैसे–**कौन-कौन** आए हैं? **किस-किससे** लड़ोगे? **क्या-क्या** खरीद लाए
- लिंग के कारण सर्वनाम पदों में कोई परिवर्तन नहीं होता। स्त्री-पुरुष दोनों के लिए एक समान सर्वनामों का प्रयोग है। सर्वनाम का लिंग उसकी क्रिया से जाना जाता है :
  वह (लड़का) जा रहा है। *(पुल्लिंग)* वह (लड़की) जा रही है। *(स्त्रीलिंग)*
  तू जा रहा है। *(पुल्लिंग)* तू जा रही है। *(स्त्रीलिंग)*
- 'वह' का प्रयोग पुरुषवाचक और निश्चयवाचक (संकेतवाचक) दोनों सर्वनामों के लिए होता है :
  वह पढ़ रहा है। *(पुरुषवाचक)* वह रोहन की पुस्तक है। *(निश्चयवाचक)*

स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
- सर्वनाम के छह भेद हैं : 1. पुरुषवाचक, 2. निश्चयवाचक, 3. अनिश्चयवाचक, 4. प्रश्नवाचक, 5. संबंधवाचक, 6. निजवाचक।
- पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद हैं– 1. उत्तम पुरुष, 2. मध्यम पुरुष, 3. अन्य पुरुष ।
- 'आप' का प्रयोग आदरार्थ मध्यम पुरुष के लिए होता है, पर कभी-कभी अन्य पुरुष के लिए भी 'आप' का प्रयोग होता है।
- 'यह', 'वह' का प्रयोग अन्य पुरुष एवं निश्चयवाचक सर्वनाम दोनों में होता है।
- 'कोई', 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।
- 'कौन', 'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

अभ्यासार्थ (Practice)

1. सर्वनाम किसे कहते हैं ? सोदाहरण लिखिए ।
2. सर्वनाम के कितने भेद हैं ? उदाहरण सहित लिखिए ।
3. मेरा बेटा अभी दिल्ली में है। उसका मकान बहुत बड़ा है। तुम दिल्ली जाना तो उससे जरूर मिलना। वह तुमसे मिलकर बहुत खुश होगा। मैं दिल्ली जाकर मोहन से मिला। उसने मुझे अपना घर दिखाया। उसकी पत्नी ने मुझसे पूछा, "नमस्ते, आप कैसे हैं ?" मोहन ने "आप कौन से कमरे में रहेंगे ? घर में कुछ कमरे ही हवादार हैं।" मैंने कहा, "हमारा शहर छोटा है। हमारे घर में तो कोई भी कमरा नहीं है।"

   – इस गद्यांश से पुरुषवाचक सर्वनाम छाँटिए और उन्हें पुरुषवाचक के भेदों के अनुसार लिखिए।

   [संकेत : उत्तम पुरुष : मेरा, मैं, मुझे, मुझसे, मैंने, हमारा, हमारे
   मध्यम पुरुष : तुम, तुमसे, आप
   अन्य पुरुष : उसका, उससे, वह, उसने, उसकी]
4. नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया रूप को शुद्ध मानते हुए सही सर्वनाम का प्रयोग कीजिए :
   1. क्या तुम पत्र लिख चुके हैं ? (**संकेत** : *क्या वे पत्र लिख चुके हैं ?)*
   2. तू आज मेरे साथ फिल्म देखने चलो । (**संकेत** : *तुम आज मेरे साथ फिल्म देखने चलो।)*
   3. आप सब कुछ भूल चुका हूँ। (**संकेत** : *मैं सब कुछ भूल चुका हूँ।)*

4. तू परीक्षा दे चुके हैं। (**संकेत :** *वे परीक्षा दे चुके हैं अथवा हम परीक्षा दे चुके हैं।*)
5. क्या आप दूध लाए हो ? (**संकेत :** *क्या तुम दूध लाए हो ?*)

5. 'आप' शब्द का प्रयोग आदरार्थ मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष और निजवाचक सर्वनाम में कीजिए ।
(**संकेत :** *आप बैठ जाइए। आप भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। मैं अपने आप पढ़ लूँगा*)

6. नीचे लिखे वाक्यों में मोटे अक्षरों को सर्वनाम का नाम दीजिए :
1. **वह** घर पर नहीं है। (**संकेत :** *अन्य पुरुषवाचक*)
2. **यह** मेरा घर है। (**संकेत :** *निश्चयवाचक*)
3. दूध में **कुछ** पड़ गया है, निकाल दो। (**संकेत :** *अनिश्चयवाचक*)
4. बाहर देखो, शायद **कोई** आ रहा है। (**संकेत :** *अनिश्चयवाचक*)
5. मेरे पास एक घड़ी है, **जो** मुझे शादी में मिली थी। (**संकेत :** *संबंधवाचक*)

7. 'तू' और 'आप' का प्रयोग मध्यम पुरुष में कब करते हैं ?
(संकेत : *'तू' अत्यधिक स्नेह या निरादर में, आप — .आदरार्थ*)

8. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :
1. कुछ बाहर आया है, उसे अंदर बैठाओ। (**संकेत :** *कुछ × कोई*)
2. तुम तुम्हारी किताब लाओ । (**संकेत :** *तुम्हारी × अपनी*)
3. तुम्हारे से कोई काम नहीं हो सकता । (**संकेत :** *तुम्हारे × तुमसे*)
4. हम हमारे घर जा रहे हैं । (**संकेत :** *हमारे × अपने*)
5. मैं तुम्हारे घर गया था पर आप **वहाँ** नहीं थे, इसलिए हम लौट आया। (**संकेत :** *हम × मैं*)

9. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध कीजिए :
1. मैं आपको मेरा पता दूँगा। (**संकेत :** *मैं आपको अपना पता दूँगा।*)
2. तुम मुझे तुम्हारा पता दो। (**संकेत :** *तुम मुझे अपना पता दो।*)
3. मैं मेरी किताब पढ़ रहा हूँ। (**संकेत :** *मैं अपनी किताब पढ़ रहा हूँ।*)
4. मुझे मेरे से प्यार था। (**संकेत :** *मुझे अपने से प्यार था।*)
5. हम हमारे देश के लिए जान दे देंगे। (**संकेत :** *हम अपने देश के लिए जान दे देंगे।*)

10. नीचे दिए गए संयुक्त सर्वनामों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :
अपना-अपना, अपने-आप, जो कुछ, कुछ और, कुछ-न-कुछ, कोई-न-कोई, कोई और।

C.B.S.E. *की दसवीं कक्षा की परीक्षाओं में पूछे गए सर्वनाम संबंधी प्रश्न*

उपयुक्त सर्वनाम भरो :

1. तुम कहते हो कि .... बहुत बोलता हूँ । (संकेत : मैं)
2. .... कहते हो कि .... बहुत सोता हूँ । (संकेत : *तुम, मैं*)
3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम भरो :**
   दूध में .... पड़ गया है। (संकेत : कुछ)
4. **रिक्त स्थान में सर्वनाम भरो :**
   .... बंगलौर घूमने गए। (संकेत : *हम*)
5. देखो, <u>कौन</u> आया है? रेखांकित सर्वनाम का प्रकार बताओ। (संकेत : *प्रश्नवाचक*)
6. निजता, स्वत्व। (सर्वनाम में बदलिए) (संकेत : *निज, स्व*)
7. मोहन का 'कुछ' खो गया है। (रेखांकित कारक का प्रकार बताइए) (संकेत : *अनिश्चयवाचक*)
8. इन्हें यहाँ मत आने दो। अन्य पुरुष सर्वनाम छांटो। (संकेत : इन्हें)

नवीं कक्षा हेतु सर्वनाम संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. 'कौन' रो रहा है ? – रेखांकित में सर्वनाम का कौन-सा भेद है ?
   (क) पुरुषवाचक (ख) प्रश्नवाचक (ग) अनिश्चयवाचक
2. 'कोई' चिल्ला रहा है। – रेखांकित सर्वनाम का भेद बताइए।
   (क) पुरुषवाचक (ख) प्रश्नवाचक
   (ग) अनिश्चयवाचक (घ) निश्चयवाचक
3. जैसी करनी वैसी भरनी। – रेखांकित में सर्वनाम का भेद बताइए।
   (क) पुरुषवाचक (ख) निश्चयवाचक
   (ग) अनिश्चयवाचक (घ) संबंधवाचक
4. मैं अपना काम आप करता हूँ। – रेखांकित सर्वनाम का भेद बताइए।
   (क) पुरुषवाचक (ख) निश्चयवाचक
   (ग) निजवाचक
5. देखो कौन आया है ? – रेखांकित सर्वनाम का भेद बताइए।
   (क) पुरुषवाचक (ख) प्रश्नवाचक
   (ग) अनिश्चयवाचक

उत्तर : 1. (ख), 2. (ग), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ख)।

अध्याय 9

विशेषण

(Adjective)

निम्नलिखित वाक्यों में मोटे अंशों पर ध्यान दीजिए :

1. राकेश ने **सफेद** कमीज़ पहन रखी है।
2. मैं **मीठे** आम लेकर आया हूँ।
3. तुम्हारा **छोटा** भाई बहुत शरारती है।
4. खीर बनाने के लिए **पाँच लीटर** दूध चाहिए।
5. मुझे **चार** केले दीजिए।
6. आप **थोड़ी सी** चाय ले लें।

— इन वाक्यों में **सफेद, मीठे, छोटा, पाँच लीटर, चार, थोड़ी-सी** शब्द अपनी-अपनी संज्ञाओं (*कमीज, आम, भाई, दूध, केले, चाय*) की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे शब्दों को **'विशेषण'** कहा जाता है।

पहले वाक्य में कमीज का रंग, दूसरे वाक्य में आम का गुण, तीसरे वाक्य में भाई का गुण, चौथे वाक्य में दूध की मात्रा, पाँचवें वाक्य में केलों की संख्या तथा छठे वाक्य में चाय की मात्रा *(परिमाण)* का पता चल रहा है।

☞ ***परिभाषा : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।***

जिस संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे **'विशेष्य'** कहते हैं।

❖ विशेषण प्रायः संज्ञा/सर्वनाम *(विशेष्य)* से पहले आता है, पर यह बाद में भी आ सकता है। जैसे —

1. **काली** कमीज पहनो।
2. यह कमीज **काली** है।

विशेषण के भेद *(Kinds of Adjective)* : विशेषण के चार भेद माने जाते हैं :

1. गुणवाचक विशेषण *(Qualitative Adjective)*
2. परिमाणवाचक विशेषण *(Adjective of Quantity)*
3. संख्यावाचक विशेषण *(Numeral Adjective)*
4. सार्वनामिक विशेषण *(Demonstrative Adjective)*

सार्वनामिक, गुणवाचक, विशेषण, संख्यावाचक, परिमाणवाचक

1. गुणवाचक विशेषण (*Adjective of Quality)* : ऐसे विशेषण, जिनसे विशेष्य के गुण, रूप, रंग, आकार, काल, दशा आदि का बोध होता है, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे— **पीले** फूल। **काला** कुत्ता, **लंबी** मेज।

गुणवाचक विशेषण के अन्य उदाहरण हैं :

गुणबोधक	अच्छा, बुरा, सुंदर, सीधा, सच्चा, ईमानदार, झूठा आदि।
आकार बोधक	लंबा, चौड़ा, गोल, छोटा, बड़ा, पतला, मोटा आदि।
स्थान बोधक	ऊँचा, नीचा, गहरा, बाहरी, भीतरी, जापानी, पंजाबी आदि।
रंग बोधक	काला, लाल, पीला, हरा, साँवला, गोरा, नीला आदि।
स्वाद/गंध बोधक	मीठा, फीका, खट्टा, सुगंधित, बदबूदार, तीखा आदि।
अन्य	चिकना, मुलायम, वीर, कायर, पालतू, जंगली आदि।

2. परिमाणवाचक विशेषण (*Adjective of Quantity*) : परिमाण का अर्थ है—मात्रा।

जो विशेषण अपनी विशेष्य की माप-तोल (*परिमाण*) का बोध कराए, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे— **किलो** चीनी ; **थोड़ा** दूध। इसमें विशेष्य प्राय: द्रव्यवाचक संज्ञाएँ होती हैं और वे एकवचन में होती हैं। परिमाणवाचक वि- के दो भेद हैं : (क) निश्चित परिमाणवाचक, (ख) अनिश्चित परिमाणवाचक।

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण : इसके द्वारा विशेष्य के परिमाण (*मात्रा*) का निश्चित अर्थात् ठीक-ठीक होता है। जैसे —

1. **एक मीटर** कपड़ा चाहिए। 2. **दो किलो** चावल दे दो।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण : इसके द्वारा विशेष्य के परिमाण (*मात्रा*) का पता तो लगता है, कि ठीक-ठीक, मापा-तोला नहीं होता, अंदाजा मात्र होता है। जैसे—

1. **थोड़ा** दूध दे दो। 2. मैं **ज्यादा** मिठाई नहीं खा सकता।

[*बहुत, अधिक, जरा, तनिक, इतना, जितना, कुछ, थोड़ा आदि। बहुत, थोड़ा आदि के साथ – सा/सी – ल (बहुत-सी मिठाई, थोड़ा-सा नमक आदि) परिमाण के 'लगभग' भाव को प्रकट करते हैं।*]

3. संख्यावाचक विशेषण (*Numeral Adjective*) : संख्यावाचक विशेषण वह विशेषण होता है जो विशेष्य की संख्या संबद्ध विशेषता का बोध कराता है। जैसे —

1. कक्षा में **साठ** छात्र पढ़ते हैं। 2. गीता **पाँचवीं** कक्षा में पढ़ती है।
3. मोहन ने दौड़ में **प्रथम** स्थान प्राप्त किया। 4. मारपीट में **कई** लोग घायल हो गए।

यहाँ साठ, पाँचवीं, प्रथम, कई संख्यावाचक विशेषण हैं जो क्रमश: छात्र, कक्षा, स्थान, लोग (*विशेष्य*) की संख्या विशेषता प्रकट कर रहे हैं। ये विशेष्य प्राय: जातिवाचक संज्ञाएँ होती हैं।

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं : (क) निश्चित संख्यावाचक, (ख) अनिश्चित संख्यावाचक

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण : इसके द्वारा विशेष्य की संख्याविषयक विशेषता का निश्चित बोध होता है। जैसे—**तीन** किताबें, **दूसरा** लड़का, **चालीस** साल।

- **पूर्ण संख्याबोधक** : **तीन** बालक, **चार** केले, **पाँच** पुस्तकें आदि।
- **अपूर्ण संख्याबोधक** : सवा, डेढ़, ढ़ाई, साढ़े तीन आदि।
- **क्रमबोधक** : **पहली** कक्षा, **दूसरा** बालक, **चौथी** पुस्तक।
- **समूहबोधक** : **तीनों** बालक, **चारों** लड़कियाँ।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण : इसके द्वारा विशेष्य की संख्याविषयक विशेषता का निश्चित बोध नहीं इसमें अस्पष्ट संख्या का अंदाजा देने वाले शब्द प्रयुक्त होते हैं। जैसे —

1. **कुछ** बच्चे पढ़ रहे हैं। 2. **कई** लोग खड़े हैं। 3. **थोड़े** पन्ने पढ़ने शेष हैं।

☞ ध्यान दें

'कुछ', 'थोड़ा' आदि विशेषणों का प्रयोग परिमाणवाचक और संख्यावाचक दोनों में होता है। अंतर यह है — यदि गिनी जाने वाली वस्तु है तो विशेषण अनिश्चित संख्यावाचक अन्यथा अनिश्चित परिमाणवाचक माना जाएगा। जैसे —

थोड़ा — 1. सब्जी में **थोड़ा-सा** नमक डाल दीजिए। (*अनिश्चित परिमाणवाचक*)
मुझे **थोड़े-से** रुपए दीजिए। (*अनिश्चित संख्यावाचक*)
कुछ — 2. **कुछ** मिठाई दीजिए। (*अनिश्चित परिमाणवाचक*)
कुछ लोग सभा में उपस्थित थे। (*अनिश्चित संख्यावाचक*)

4. सार्वनामिक विशेषण (*Demonstrative Adjective*) : जो सर्वनाम किसी संज्ञा की विशेषता बताने के लिए वि- के रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे —

मेरी पुस्तक, **कोई** लड़का, **कुछ** लड्डू आदि।

सार्वनामिक विशेषण को संकेतवाचक विशेषण भी कहते हैं।

सर्वनामों के भेदों के अनुसार सार्वनामिक विशेषण भी कई प्रकार के होते हैं :

(क) निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण :

1. **उस** किताब को उठाइए। 2. **यह** कलम तुम्हारी है।

(ख) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण :

1. बाहर **कोई** लड़का खड़ा है। 2. खाने को **कुछ** मिठाई दो।

(ग) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण :

1. **कौन** आदमी आया है ? 2. **किस** लड़के ने तुम्हें पीटा है ?

(घ) संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण :

1. **जो** आदमी कल आया था, वह (*आदमी*) बाहर खड़ा है। 2. **जिसका** सामान हो, ले जाए।

समझो :

(क) परिमाणवाचक और संख्यावाचक विशेषण में अंतर :

शब्द	*परिमाणवाचक विशेषण*	*संख्यावाचक विशेषण*
कुछ	गिलास में **कुछ** दूध है।	मैदान में **कुछ** पेड़ खड़े हैं।
बहुत	मैदान में **बहुत** कीचड़ है।	मेले में **बहुत** लोग आए।
तीन	गाड़ी में **तीन लीटर** पेट्रोल है।	मुझे **तीन** केले दीजिए।
कितने	खेत में **कितने** क्विंटल गेहूँ हुआ ?	तुम्हें **कितने** रुपए चाहिए ?
चार	मुझे **चार किलो** चीनी दो।	घर में **चार** कमरे हैं।

(ख) सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अंतर :

शब्द	*सार्वनामिक विशेषण*	*सर्वनाम*
कुछ	खाने को **कुछ** लड्डू दो।	खाने को **कुछ** दो।
कोई	**कोई** बालक रो रहा है।	बाहर **कोई** खड़ा है।
मेरा	यह **मेरा** घर है।	यह घर **मेरा** है।
कौन	सामान **कौन-सा** आदमी ले गया ?	बाहर **कौन** खड़ा है?

प्रविशेषण (*Pre-Adjective*)

प्रविशेषण वे विशेषणात्मक शब्द होते हैं जो विशेषण की विशेषता बताते हैं। जैसे—

1. मोहन **बहुत** चतुर बालक है। (*बहुत–प्रविशेषण, चतुर–विशेषण*)
2. **गहरा** नीला कोट लाओ। (*गहरा–प्रविशेषण, नीला–विशेषण*)
3. **हल्का** पीला फूल देखो। (*हल्का–प्रविशेषण, पीला–विशेषण*)

सामान्यत: प्रचलित प्रविशेषण हैं—बहुत, बहुत अधिक, अत्यधिक, अत्यंत, बड़ा, बिल्कुल, थोड़ा, कम, लगभग आदि।

विशेषणों की तुलना (*Degrees of Comparison*)

विशेषण विशेष्य (*संज्ञा/सर्वनाम*) की विशेषता बताता है। यह विशेषता गुण, परिमाण अथवा संख्या की दृष्टि से होती है। दो या अधिक व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं आदि में बिल्कुल एक से गुण नहीं होते। वे कम-अधिक हो सकते हैं। ऐसे में विशेषण की तुलनात्मक स्थितियाँ आती हैं। यह तुलना तीन प्रकार से हो सकती है:

(क) मूलावस्था (*Positive Degree*) : जब एक ही व्यक्ति, प्राणी, वस्तु की विशेषता प्रकट की जा रही हो। इसमें तुलना नहीं होती। यहाँ सामान्य कथन मात्र होता है। जैसे—

आम **मीठा** है। वह **सुंदर** है।

(ख) उत्तरावस्था (*Comparative Degree*) : इसमें दो व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं आदि की विशेषता की तुलना की जाती है और दो विशेष्य होते हैं। जैसे—

मोहन राम से अधिक सुंदर है।

तुलना के लिए प्राय: **'तर'** प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है; जैसे—सुंदरतर।

(ग) उत्तमावस्था (*Superlative Degree*) : इसमें दो से अधिक व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं की विशेषता की तुलना की जाती है और सबसे अधिक का निर्धारण किया जाता है। जैसे—

राम सबसे अधिक सुंदर है।

इसमें तुलनात्मक प्रत्यय **'तम'** का प्रयोग किया जाता है; जैसे— सुंदरतम।

निम्नलिखित तालिका को पढ़ें और समझें :

शब्द मूलावस्था	*दो में तुलना का द्योतक उत्तरावस्था*	*सर्वोत्तम का द्योतक उत्तमावस्था*
लघु	लघुतर	लघुतम
दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निकट	निकटतर	निकटतम
महान	महत्तर	महत्तम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
दृढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम

विशेष : कुछ रूप इस प्रकार भी बनते हैं :

बुद्धिमान	अधिक बुद्धिमान	सबसे बुद्धिमान
ऊँचा	अधिक ऊँचा	सबसे ऊँचा
मोटा	अधिक मोटा	सबसे मोटा
धनी	अधिक धनी	सबसे धनी

विशेषणों की रचना (*Formation of Adjectives*) : रचना की दृष्टि से विशेषण तीन प्रकार के होते हैं :

1. **मूल विशेषण :** कुछ शब्द मूल रूप से ही विशेषण होते हैं। जैसे—सुंदर, ऊँचा, काला आदि।
2. **उपसर्ग-प्रत्यय जोड़कर :**

उपसर्ग लगाकर →	अटल	निराकार
प्रत्यय लगाकर →	इमारती	व्यावहारिक

3. **समास के प्रयोग से :** दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर भी विशेषण बनाए जाते हैं; जैसे—टेढ़ा-मेढ़ा, चलता-फिरता आदि।

विशेषण-रचना तालिका

1. संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाना

संज्ञा	विशेषण
उदासी	उदास
मिठास	मीठा
अज्ञान	अज्ञानी
कल्पना	काल्पनिक
इतिहास	ऐतिहासिक
अर्थ	आर्थिक
मास	मासिक
नीति	नैतिक
कुसुम	कुसुमित
अंक	अंकित
स्वर्ण	स्वर्णिम
रक्त	रक्तिम
प्रांत	प्रांतीय
भाग्य	भाग्यशाली
पत्थर	पथरीला
मद	मादक
शहर	शहरी
दिन	दैनिक
घर	घरेलू
लालच	लालची
सप्ताह	साप्ताहिक
ईर्ष्या	ईर्ष्यालु
तट	तटीय
ज्ञान	ज्ञानी
काम	कामुक
कृपा	कृपालु
उत्साह	उत्साही
पाप	पापी
दूध	दूधिया
नागपुर	नागपुरी
पुराण	पौराणिक
सफेदी	सफेद
पर्वत	पर्वतीय
धर्म	धार्मिक
पुस्तक	पुस्तकीय

संज्ञा	विशेषण
गर्व	गर्वीला
प्यास	प्यासा
भय	भयभीत
मन	मानसिक
विष	विषैला
जहर	जहरीला
गाँव	गँवार
जापान	जापानी
भारत	भारतीय
रंग	रंगीला
गुलाब	गुलाबी
मधु	मधुर
भूगोल	भौगोलिक
शक्ति	शक्तिशाली
ईमानदारी	ईमानदार
बुढापा	बूढ़ा
ग्राम	ग्रामीण
कष्ट	कष्टदायी
विदेश	विदेशी
सुगंध	सुगंधित
साहस	साहसी
चित्र	चित्रित
कुल	कुलीन
ओज	ओजस्वी
ईश्वर	ईश्वरीय
जोश	जोशीला
दया	दयालु
कलंक	कलंकित
मुख	मौखिक
ऋण	ऋणी
बुराई	बुरा
नमक	नमकीन
लोक	लौकिक
चंचलता	चंचल

2. सर्वनाम शब्दों से विशेषण बनाना

सर्वनाम	विशेषण
यह	ऐसा
जो	जैसा
आप	आप सा

सर्वनाम	विशेषण
कौन	कैसा
तुम	तुमसा
वह	वैसा

3. क्रिया शब्दों से विशेषण बनाना

क्रिया	विशेषण
टिकना	टिकाऊ
चलना	चालू
भागना	भगोड़ा
घूमना	घुमक्कड़
पढ़ना	पढ़ाकू
हँसना	हँसोड़

क्रिया	विशेषण
बेचना	बिकाऊ
देखना	दिखावटी
भूलना	भुलक्कड़
गाना	गायक
मरना	मरियल
लड़ना	लड़ाकू

4. अव्यय शब्दों से विशेषण बनाना

अव्यय	विशेषण
ऊपर	ऊपरी
पीछे	पिछला
आगे	अगला

अव्यय	विशेषण
भीतर	भीतरी
वाहर	बाहरी
नीचे	निचला

☞ लिंग, वचन और कारक का विशेषण पर प्रभाव

विशेषण विकारी शब्द है। इसमें तीन कारणों से विकार आता है :

1. लिंग के कारण 2. वचन के कारण 3. कारक के कारण

- **लिंग का विशेषण पर प्रभाव**

❖ यदि मूल विशेषण **आकारांत** हो और विशेष्य स्त्रीलिंग हो तो आकारांत विशेषण **ईकारांत** हो जाता है। जैसे :

मीठा → मीठी धीमा → धीमी विषैला → विषैली छोटा → छोटी

❖ **वाक्य-प्रयोग**

मीठा गन्ना चूसो। मीठी जलेबी खाओ। धीमा स्वर नहीं सुनता। धीमी चाल चलो।
विषैला साँप देखो। साँपिन विषैली है। छोटा बच्चा रोता है। छोटी बच्ची रोती है।

❖ ध्यान देने की बात यह है कि आकारांत को छोड़कर अन्य विशेषण स्त्रीलिंग विशेष्य के साथ भी अपरिवर्तित रू रहते हैं। जैसे :

दयालु पुरुष दयालु स्त्री
जोधपुरी साफा जोधपुरी ओढ़नी
विदेशी युवक विदेशी युवती
नमकीन बिस्कुट नमकीन लस्सी

शरारती लड़का शरारती लड़की
कामुक नर कामुक नारी
आदिम नर आदिम नारी
कलंकित पुरुष कलंकित स्त्री

❖ संख्यावाचक विशेषण तथा निश्चित परिमाणवाचक विशेषण पर भी लिंग का प्रभाव नहीं पड़ता। जैसे :

चार लड़के चार लड़कियाँ दो किलो सेब दो किलो चीनी

● गुणवाचक विशेषणों पर लिंग का प्रभाव

पुल्लिंग विशेषण	स्त्रीलिंग विशेषण	पुल्लिंग विशेषण	स्त्रीलिंग विशेषण
रसीला	रसीली	गहरा	गहरी
जहरीला	जहरीली	न्यारा	न्यारी
सुनहरा	सुनहरी	कड़वा	कड़वी
प्यासा	प्यासी	भगोड़ा	भगोड़ी
पथरीला	पथरीली	नीचा	नीची
काला	काली	पीला	पीली
गोरा	गोरी	हरा	हरी
रेतीला	रेतीली	नीला	नीली
शर्मीला	शर्मीली	ममेरा	ममेरी
चमकीला	चमकीली	चचेरा	चचेरी
अच्छा	अच्छी	मौसेरा	मौसेरी

● वचन का विशेषण पर प्रभाव

❖ यदि मूल विशेषण **आकारांत** हो और विशेष्य बहुवचन पुल्लिंग हो तो आकारांत विशेषण **एकारांत** हो जाता है। जैसे:

मीठा → मीठे   भला → भले   छोटा → छोटे   विषैला → विषैले

इनके वाक्य-प्रयोग देखिए-

यह सेब **मीठा** है। → ये सेब **मीठे** हैं।   यह साँप **विषैला** है। → ये साँप **विषैले** हैं।

छोटा बच्चा आएगा। → **छोटे** बच्चे आएँगे।   यह पेड़ **लंबा** है। → ये पेड़ **लंबे** हैं।

❖ यदि विशेष्य बहुवचन स्त्रीलिंग हो तो **आकारांत** विशेषण **ईकारांत** में परिवर्तित हो जाते हैं। जैसे :

मीठा : यह सेब **मीठा** है। → ये सेब **मीठे** हैं। → ये जलेबियाँ **मीठी** हैं।

विषैला : यह पत्ता **विषैला** है। → ये पत्तियाँ **विषैली** हैं। → ये पत्ते **विषैले** हैं।

छोटा : छोटा बच्चा नाचेगा। → **छोटे** बच्चे नाचेंगे। → **छोटी** बच्चियाँ नाचेंगी।

● गुणवाचक विशेषण पर प्रभाव :

भला लड़का (एकवचन) → भले लड़के   काला कुर्ता (एकवचन) → काले कुर्ते

नीला कपड़ा (एकवचन) → नीले कपड़े   लंबा लड़का (एकवचन) → लंबे लड़के

☞ **कुछ अन्य उदाहरण :**

रिक्त स्थानों में दिए गए शब्दों का सही रूप भरिए :

1. सभी सर्प .... नहीं होते। (विष)
   उत्तर : विषैले।
2. भीड़ ने .... को पकड़ लिया। (हत्या)
   उत्तर : हत्यारे।

एकवचन विशेषण	बहुवचन पुल्लिंग विशेषण	बहुवचन स्त्रीलिंग विशेषण
जहरीला	जहरीले	जहरीली
रसीला	रसीले	रसीली
सुनहरा	सुनहरे	सुनहरी
रेतीला	रेतीले	रेतीली
निचला	निचले	निचली
चमकीला	चमकीले	चमकीली
पथरीला	पथरीले	पथरीली

अगला	अगले	अगली
पीला	पीले	पीली
अच्छा	अच्छे	अच्छी
प्यासा	प्यासे	प्यासी
हरा	हरे	हरी
काला	काले	काली
ठिगना	ठिगने	ठिगनी
तैसा	तैसे	तैसी
ममेरा	ममेरे	ममेरी
लंबा	लंबे	लंबी
भगोड़ा	भगोड़े	भगोड़ी

- **कारक का विशेषण पर प्रभाव**
  - ❖ यदि विशेष्य परसर्ग सहित हो तो **आकारांत विशेषण** एकवचन में होते हुए भी **एकारांत** हो जाता है। जैसे :
    1. **अच्छा बालक** पुस्तक पढ़ता है। *(परसर्ग रहित रूप)*
       अच्छे बालक ने पुस्तक पढ़ी। *(परसर्ग सहित रूप)*
    2. राकेश ने **लंबा** साँप देखा। *(परसर्ग रहित रूप)*
       राकेश ने **लंबे** साँप **को** देखा। *(परसर्ग सहित रूप)*
    3. दुश्मन ने **तीखा बाण** मारा। *(परसर्ग रहित रूप)*
       दुश्मन ने **तीखे बाण से** मारा। *(परसर्ग सहित रूप)*
  - ❖ संबोधन कारक में भी **अकारांत विशेषण एकारांत** हो जाता है। जैसे :
    1. हे अच्छे बालक ! पुस्तक पढ़। 2. ओ भोले बच्चो ! चुप रहो।

☞ **कुछ अन्य उदाहरण**

❖ अच्छे लड़के ने ❖ ऊँचे पेड़ पर ❖ नीले कपड़े पर ❖ काले कुर्ते को ❖ गोरे बालक से

- **विशेषण का विशेषण पर प्रभाव**
  - ❖ यदि किसी वाक्य में एक विशेष्य के एकाधिक विशेषण हों तो उनमें एकरूपता होती है। या तो सभी विशेषण पुल्लिंग में होते हैं या स्त्रीलिंग में। जैसे :
    1. राकेश चुस्त, छरहरा, लंबा, गोरा जवान है। *(सभी पुल्लिंग विशेषण)*
       गीता चुस्त, छरहरी, लंबी, गोरी युवती है।*('चुस्त' उभयलिंगी है, शेष आकारांत विशेषण ईकारांत में बदल गए हैं)*
    2. यह लड़का बुद्धिमान, गुणवान, अच्छा तथा शर्मीला है।
       ये लड़के बुद्धिमान, गुणवान, अच्छे तथा शर्मीले हैं।
       ये लड़कियाँ बुद्धिमती, गुणवती, अच्छी तथा शर्मीली हैं।
       (इन तीनों वाक्यों में विशेषणों की संगति उनके विशेष्यों के अनुरूप हुई है।)
    3. वे लंबे, चौड़े, खुले मैदान में खेलते हैं।
       वे लंबी, चौड़ी, खुली छत पर सोते हैं।
  - ❖ यदि एक विशेषण के साथ अनेक विशेष्य हों तो विशेषण अपने निकटस्थ विशेष्य के अनुरूप लगता है। जैसे :
    नीला कुर्ता और टोपी नए मकान और दुकानें अच्छे आदमी तथा स्त्रियाँ
  - ❖ विशेषण पुनरुक्त रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे:
    नंबे-लंबे पेड़ कम छाया देते हैं। काले-काले वाल अच्छे लगते हैं।

☞ कुछ विशेषणों को वाक्य-प्रयोग द्वारा समझें :

1. यह **कँटीला** रास्ता है। → ये झाड़ियाँ **कँटीली** हैं।
2. हरा पत्ता चमकता है। → हरी पत्ती चमकती है।
3. यह रास्ता **लंबा** है। → **लंबी** सड़क पर चलो।
4. करेला **कड़वा** है। → **कड़वी** ककड़ी मत खाओ।
5. **सब्जीवाला** गया। → **सब्जीवाली** गयी।
6. रुमाल **मैला** हो गया। → कमीज **मैली** हो गई।
7. **गहरा** कुआँ खोदो। → **गहरी** खाई पार करो।
8. यह कपड़ा **महँगा** है। → **महँगी** साड़ी लो।
9. आम **रसीला** है। → लीची **रसीली** है।
10. कोट **छोटा** हो गया। → पैंट **छोटी** हो गई।
11. **सुनहरा** कपड़ा लो। → **सुनहरी** साड़ी लो।

❖ विशेषणों के बारे में जानने योग्य कुछ अन्य बातें ❖

❖ कुछ विशेषण विशेष्य के बाद भी प्रयुक्त होते हैं। उन्हें **विधेय विशेषण** कहते हैं। जैसे :
1. यह पानी **ठंडा** है। 2. वह फूल **लाल** है।
3. अंगुलिमाल डाकू **क्रूर** और **निर्दयी** था। 4. यह मकान **ऊँचा** है।

❖ आकारांत पुल्लिंग विशेषण बहुवचन में **एकारांत** हो जाते हैं। जैसे :
अच्छा → **अच्छे** हरा → **हरे** बड़ा → **बड़े**

❖ विशेष्य के साथ परसर्ग लगने पर आकारांत विशेषण एकवचन में भी **एकारांत** हो जाता है। जैसे :
अच्छे लड़के ने **ऊँचे** मकान में **हरे** पौधे पर

❖ कुछ विशेषणों में लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन नहीं होता। जैसे :
बढ़िया कपड़ा **बढ़िया** साड़ी **बढ़िया** कपड़े **सुंदर** बालक **सुंदर** बालिका **सुंदर** बालिकाएँ

❖ **ईकारांत** स्त्रीलिंग विशेषण एकवचन तथा बहुवचन दोनों रूपों में और विशेष्य के साथ परसर्ग लगने पर भी **ईकारांत** ही रहते हैं। जैसे :
काली बकरी **काली** बकरियों ने **बड़ी** कलम **बड़ी** कलमों से

❖ विशेष्य के बिना कुछ विशेषण संज्ञा की भाँति प्रयुक्त होते हैं। जैसे :
1. उस **मोटे** को देखो। 2. **बड़ों** का कहना मानना चाहिए। 3. उस **बेचारे** ने कुछ नहीं किया।

❖ दो या दो से अधिक विशेष्यों के गुणों की तुलना करने के लिए विशेषण से पहले 'से', 'की तुलना में', 'की अपेक्षा' आदि का प्रयोग होता है। जैसे :
1. मेरा स्कूल उसके स्कूल **से** अच्छा है। 2. मेरा घर उसकी **तुलना में** अच्छा है।
3. मेरा कपड़ा उसकी **अपेक्षा** मजबूत है।

☞ ध्यान रखें :

❖ विशेषण में लिंग और वचन विशेष्य के अनुसार लगाए जाते हैं, जैसे : **अच्छा** लड़का, **अच्छी** लड़की, **अच्छे** लड़के।

❖ आकारांत पुल्लिग के बहुवचन रूप में 'ए' प्रत्यय लगता है, जैसे – छोटा → छोटे, अच्छा → अच्छे।

❖ आकारांत पुल्लिग के स्त्रीलिंग रूप में 'आ' के स्थान पर 'ई' प्रत्यय लगता है, जैसे –
छोटा → छोटी, मोटा → मोटी

❖ स्त्रीलिंग विशेषण के बहुवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता,
जैसे-अच्छी लड़की - अच्छी लड़कियाँ

❖ आकारांत पुल्लिग से भिन्न विशेषणों में लिंग, वचन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जैसे :
सुंदर लड़का, **सुंदर** लड़की, **सुंदर** लड़के।

अभ्यासार्थ
(Practice)

1. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए विशेषण के परिवर्तित रूप से कीजिए :
   1. घोड़ा .... चने खा रहा है। (हरा-
   2. बिल्ली की आँखें .... रंग की थीं। (
   3. .... लड़कियाँ शोर मचा रही हैं। (छो
   4. उसकी .... साड़ी देखकर मैंने उसे नौकरानी समझा। (मैला-कुचै
   5. ये सारे बच्चे .... हैं। (साह
   6. .... लोग बड़ा काम करते हैं। (ब
   7. हमें .... काम स्वयं करने चाहिए। (छोटा-मो
   8. वह लड़की .... चालाक है। (ब
   9. .... बालको ! मेरी ओर ध्यान दो। (
   10. .... बच्चे कभी झूठ नहीं बोलते। (सच्
   11. ये .... लड़के मार खाएँगे। (शरा
   12. .... व्यक्ति कभी सम्मान नहीं पाते। (झू
   13. वह लड़की .... है। (बड़ा सु
   14. तुम्हें .... बातों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। (छोटा-मो
   15. उसने .... साड़ी पहन रखी है। (का

2. निर्देशानुसार कीजिए :
   1. यह लड़का मोटा है। *(रेखांकित का लिंग परिवर्तित करके वाक्य पुनः लिखि*
   2. यह सेब मीठा है। *(रेखांकित का वचन परिवर्तित कर वाक्य पुनः लिखि*
   3. बगीचे की .... घास पर लेटने में आनंद आता है। *('मखमल' शब्द का विशेषण रूप रिक्त स्थान में भ*
   4. यह साँप विषैला है। *(साँप का लिंग परिवर्तन करके वाक्य पुनः लिखि*
   5. यह लड्डू मीठा है। *('लड्डू' का बहुवचन प्रयोग करने से विशेषण पर क्या प्रभाव पड़ता है*
   6. यह लड़की बड़ी सुंदर है। *('लड़की' का पुल्लिंग रूप प्रयुक्त कर विशेषण पर प्रभाव दर्शा*
   7. काला घोड़ा भाग रहा है। *(लिंग और वचन परिवर्तन करके विशेषण पर प्रभाव दिखा*
3. विशेषण क्या है ? विशेषण के तीन उदाहरण लिखिए।
4. विशेषण के चार भेद कौन-कौन से हैं ? प्रत्येक भेद का एक-एक उदाहरण दीजिए।
5. नीचे लिखे वाक्यों में से निश्चित और अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषणों को अलग-अलग कीजिए :
   1. वह कक्षा में प्रथम आया। (संकेत : *प्रथम–निश्चित)*
   2. कुछ फूल लाओ। (संकेत : *कुछ–अनिश्चित)*
   3. मेरी कमीज में दो मीटर कपड़ा लगेगा। (संकेत : *दो मीटर–निश्चित)*
   4. थोड़ी मिठाई ले आओ। (संकेत : *थोड़ी–अनिश्चित)*
   5. एक लिटर दूध 20 रुपए का मिलता है। (संकेत : *एक लिटर–निश्चित)*
6. सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए।
   (संकेत : *सर्वनाम से बने विशेषण सार्वनामिक विशेषण होते हैं। इनके आगे संज्ञा लगती है।)*
7. नीचे दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण को पहचानिए :
   1. घर पर कोई है। (संकेत : *कोई–सर्वनाम)*
   2. कोई सज्जन आए हुए हैं। (संकेत : *कोई-सा० विशेषण)*
   3. वह घोड़ा दौड़ रहा है। (संकेत : *वह-सा० विशेषण)*
   4. वह विद्यालय गया। (संकेत : *वह–सर्वनाम)*
   5. यह मेरा घर है। (संकेत : *यह–सर्वनाम)*
   6. क्या यह किताब तुम्हारी है ? (संकेत : *यह-सा० विशेषण)*
8. विशेषण की तुलना के तीनों प्रकारों के नाम लिखिए और दो-दो उदाहरण दीजिए।

9. **नीचे दिए गए विशेषणों को उनके सामने दी गई अवस्थाओं से मिलाकर उचित स्थान पर लिखिए :**
उच्चतर, गुरुतम, कठोर, लघु, तीव्रतर, अधिकतर, कुटिलतर, उत्कृष्ट, न्यूनतम, निकृष्टतम।
मूलावस्था :
उत्तरावस्था :
उत्तमावस्था :

10. **निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए :**
धर्म, भारत, वह, रोज, दिन, पूजा, पढ़ना, रक्षा, अपमान, पाप, बहना, नगर, बीतना, लखनऊ।
(संकेत : *धार्मिक, भारतीय, वैसा, रोजाना, दैनिक, पूज्य, पढ़ाकू, रक्षक, अपमानित, पापी, वहता, नगरीय, बीता, लखनवी)*

11. **नीचे दिए गए वाक्यों का उत्तर हाँ/नहीं में दीजिए :**
1. विशेषण क्रिया की विशेषता वताता है।
2. जिन वस्तुओं की नाप-तोल की जा सके उनके वाचक शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।
3. कुछ, कई, काफी–निश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।
4. मूलावस्था में विशेषण का तुलनात्मक रूप नहीं होता है।
5. जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा से पूर्व अथवा वाद में किया जाए, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
6. जिन वस्तुओं की गिनती की जा सके, उनके वाचक शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
(संकेत : *1. नहीं, 2. हाँ, 3. नहीं, 4. हाँ, 5. नहीं, 6. हाँ)*

12. प्रविशेषण किसे कहते हैं ? कुछ उदाहरण दीजिए।
(संकेत : *जो शब्द विशेषण की विशेषता वताए, वह प्रविशेषण — गहरा नीला कोट)*

13. **नीचे दिए गए वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए :**
1. अच्छा लड़के क्रिकेट खेल रहे हैं।
2. वड़े दुकानों में अच्छा सामान नहीं मिलता।
3. कागज और पेंसिलें सस्ते हैं।
4. हरा वाली साड़ी दिखाओ।
5. मैं और सीता बूढ़ा हूँ।
6. क्या किताबें इस काला संदूक में हैं ?

14. **नीचे दिए गए संख्यावाचक शब्दों को पहचानकर उनके नाम लिखिए :**
द्वितीय, वीस, तिगुना, तीनों, दर्जन, प्रथम, दुगुना, पाँचों, ढाई।

C.B.S.E. *की दसवीं कक्षा की परीक्षाओं में पूछे गए विशेषण संबंधी प्रश्न*

1. मैंने वेद पढ़े हैं, इसलिए मैं .... विचारधारा का हूँ। (रेखांकित के विशेषण से रिक्त स्थान भरो) **(संकेत :** *वैदिक)*
2. उनके घर .... पत्रिका आती है। ('साहित्य' शब्द के विशेषण से रिक्त स्थान भरो) **(संकेत :** *साहित्यिक)*
3. **विशेषण में बदलिए :** पुंस्तक, घर। **(संकेत :** *पुस्तकीय, घरेलू)*
4. मत भूलो कि .... देश हमारा है। (सार्वनामिक विशेषण से पूरा करो) **(संकेत :** *यह)*
5. इतिहास के छात्र .... घटनाओं को जानते हैं।
(रेखांकित शब्द के विशेषण से खाली जगह भरो) **(संकेत :** *ऐतिहासिक)*
6. **विशेषण बनाओ :** सुगंध, इतिहास। **(संकेत :** *सुगंधित, ऐतिहासिक)*
7. **निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति प्रविशेषण शब्दों द्वारा कीजिए :**
(क) मोहन .... चतुर है।
(ख) सोहन अब .... स्वस्थ है।
(ग) कमल .... चालाक है। **(संकेत :** *बहुत, पूर्णत:, बहुत)*
8. **रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त विशेषण शब्दों द्वारा कीजिए :**
.... लोग कहते हैं कि सूरदास जन्मांध नहीं थे। **(संकेत :** *अनेक)*
9. उस व्यक्ति को यहाँ बुलाइए। *(रेखांकित शब्द के विशेषण का प्रकार बताइए)* **(संकेत :** *सार्वनामिक/संकेतवाचक)*
10. उसने .... रूप से कहा। *('मुख' शब्द के विशेषण से)* **(संकेत :** *मौखिक)*
11. .... चाँदनी फैली थी। *('दूध' शब्द के विशेषण से)* **(संकेत :** *दूधिया)*
12. प्रविशेषण से आप क्या समझते हैं ?
13. रिक्त स्थानों में दिए गए शब्दों का सही रूप भरिए :
(*i*) सभी सर्प .... नहीं होते। *(विष)* (*ii*) भीड़ ने .... को पकड़ लिया। *(हत्या)*

नवीं कक्षा हेतु विशेषण संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. 'अच्छा' लड़का में रेखांकित विशेषण का भेद है :
   (क) गुणवाचक (ख) संख्यावाचक
   (ग) परिमाणवाचक
2. वहाँ काफी लोग थे। रेखांकित विशेषण का भेद बताओ।
   (क) निश्चित संख्यावाचक
   (ख) अनिश्चित संख्यावाचक
   (ग) परिमाणवाचक
3. 'छठा' बालक में 'छठा' कौन-सा विशेषण है ?
   (क) गुणवाचक
   (ख) निश्चित संख्यावाचक
   (ग) परिमाणवाचक
   (घ) अनिश्चित संख्यावाचक
4. गहरी नीली साड़ी पहनो। – रेखांकित कौन-सा विशेषण है ?
   (क) गुणवाचक (ख) प्रविशेषण
   (ग) परिमाणवाचक (घ) अन्य
5. मुझे कुछ चीनी चाहिए। – रेखांकित विशेषण का है :
   (क) गुणवाचक (ख) संख्यावाचक
   (ग) परिमाणवाचक (घ) सार्वनामिक
6. वहाँ थोड़ी धूप थी। – विशेषण पद कौन सा है
   (क) वहाँ (ख) थोड़ी (ग) धूप
7. खाने को कुछ लड्डू दो। – 'कुछ' विशेषण का बताओ।
   (क) गुणवाचक (ख) संख्यावाचक
   (ग) परिमाणवाचक
8. सार्वनामिक विशेषण किसे कहते हैं ?
   (क) जो सर्वनाम हो
   (ख) जो विशेषण सर्वनाम से बना हो
   (ग) जो विशेषण हो
9. प्रविशेषण क्या होता है ?
   (क) जो प्रयोग हो
   (ख) जो पहले आए
   (ग) जो विशेषण की भी विशेषता बताए।

उत्तर : 1. (क), 2. (ख), 3. (ख), 4. (ख), 5. (ग), 6. (ख), 7. (ग), 8. (ख), 9. (ग)।

अध्याय 10

क्रिया

(Verb)

> ☞ *जो करने या होने का बोध कराए।*
> *वाक्य में ऐसे शब्द क्रिया कहलाए।*

- अकर्मक ● सकर्मक ● मुख्य क्रिया
- सहायक क्रिया ● संयुक्त क्रिया
- परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव

नीचे लिखे वाक्यों के मोटे अंशों पर ध्यान दीजिए :

1. चिड़िया आकाश में **उड़ रही है।**
2. रमेश दूध **पीता है।**
3. किसान हल **चला रहा है।**
4. किताब मेज पर **है।**
5. मैंने खाना **खा लिया है।**

उपर्युक्त वाक्यों में मोटे अंशों से किसी-न-किसी काम के होने का बोध हो रहा है। पहले वाक्य में चिड़िया के उड़ने का, दूसरे वाक्य में रमेश के दूध पीने का, तीसरे वाक्य में किसान के हल चलाने का, चौथे वाक्य में किताब के मेज पर होने का तथा पाँचवें वाक्य में मेरे द्वारा खाना खा लेने की क्रिया का ज्ञान होता है। ये सभी मोटे अंश क्रिया पद हैं।

> ☞ ***क्रिया वह शब्द (पद) है, जिससे किसी कार्य के करने का या किसी प्रक्रिया में अथवा किसी स्थिति में होने का बोध होता है।***

क्रिया पदबंध की रचना दो प्रकार के अंशों से मिलकर होती है। एक अंश तो वह है जो उस क्रिया पदबंध को मुख्य अर्थ प्रदान करता है। इसे **मुख्य क्रिया** कहा जाता है तथा मुख्य क्रिया के अलावा जो भी अंश शेष रह जाता है, वह सब **सहायक क्रिया** का अंश होता है। जैसे—

1. लड़कियाँ गाना **गा चुकी हैं।** 2. वह **हँस रहा है।** 3. अब आप **जा सकते हैं।**

मुख्य क्रिया—गा, हँस, जा। **सहायक क्रिया**—चुकी हैं, रहा है, सकते हैं।

धातु (*Root*)

क्रिया के इन विभिन्न रूपों को देखिए :

'पढ़ूँगा, पढ़ता है, पढ़ रहा होगा, पढ़ेगा, पढ़ना, पढ़िए'

इनमें कौन-सा अंश समान रूप से मिलता है?

'पढ़' अंश इन सभी रूपों में समान रूप से मिल रहा है। इसी अंश को **धातु** (*क्रिया-धातु*) कहा जाता है।

धातु रूप में जब **'ना'** लग जाता है, जैसे-चलना, पढ़ना, दौड़ना आदि, तो क्रिया का सामान्य रूप बन जाता है।

> ☞ ***समान रूप से मिलने वाले अंश को धातु कहते हैं। यह क्रिया का मूल रूप होता है।***

धातु के भेद *(Kinds of Root)* : धातु के मुख्य भेद निम्नलिखित माने जाते हैं—

1. सामान्य (मूल) धातु
2. व्युत्पन्न धातु
3. नाम धातु
4. सम्मिश्र धातु
5. अनुकरणात्मक धातु

1. सामान्य धातु : वे क्रिया धातुएँ जो भाषा में रूढ़ रूप में प्रचलित हैं, मूल या रूढ़ धातु कही जाती हैं। मूल धातु में 'ना' प्रत्यय लगाकर बनाए गए रूप **'सामान्य धातु'** कहलाते हैं।

जैसे—सोना, पढ़ना, लिखना, देखना, सुनना आदि।

2. व्युत्पन्न धातु : जो धातुएँ किसी मूल धातु में प्रत्यय लगाकर अथवा मूल धातु को अन्य प्रकार से परिवर्तित कर बनाई जाती हैं, उन्हें **व्युत्पन्न धातु** कहते हैं। जैसे —

पीना → पिलाना, करना → करवाना, देखना → दिखाना।

मूल धातुएँ अकर्मक होती हैं या सकर्मक। मूल अकर्मक धातुओं से प्रेरणार्थक अथवा सकर्मक धातुएँ व्युत्पन्न होती हैं। इसके विपरीत कभी-कभी मूल सकर्मक धातुओं अकर्मक धातुएँ व्युत्पन्न होती हैं। नीचे बनी तालिका देखिए—

व्युत्पन्न अकर्मक	मूल धातु		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक
	अकर्मक	सकर्मक	
		पीना →	→ पिलाना, पिलवाना
	रोना →		→ रुलाना, रुलवाना
		देना →	→ दिलाना, दिलवाना
	सोना →		→ सुलाना, सुलवाना
कटना		काटना →	→ कटवाना
खुलना		खोलना →	→ खुलवाना
		खाना →	→ खिलाना, खिलवाना
	उड़ना →		→ उड़ाना
उड़ना		← उड़ाना	
	उठना →		→ उठाना
उठना		← उठाना	

निम्नलिखित वाक्य देखिए :

1. चिड़िया उड़ रही है। (मूल अकर्मक—उड़ना)
2. श्याम ने चिड़िया को उड़ा दिया। (मूल अकर्मक **'उड़ना'** का व्युत्पन्न प्रेरणार्थक)
3. मोहन पतंग उड़ा रहा है। (मूल सकर्मक—'उड़ाना')
4. पतंग आकाश में उड़ रही है। (मूल सकर्मक—**'उड़ाना'** का व्युत्पन्न अकर्मक)

3. नामधातु : संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों से जो क्रिया धातुएँ प्रत्यय लगाकर बनती हैं, उन्हें नाम धातु कहते हैं। इन्हें **'नामिक क्रिया'** भी कहते हैं। यहाँ **'आ'** प्रत्यय लगाकर बनी नामधातु क्रिया के उदाहरण देखें —

संज्ञा शब्दों से : लालच → ललचाना, शर्म → शरमाना
लाज → लजाना, हाथ → हथियाना
फिल्म → फिल्माना, लात → लतियाना

विशेषण शब्दों से : चिकना → चिकनाना, गरम → गरमाना
साठ → सठियाना, लँगड़ा → लँगड़ाना

सर्वनाम शब्द से : आप → अपनाना

4. सम्मिश्र धातु : कुछ संज्ञा, विशेषण और क्रिया-विशेषण शब्दों के बाद **'करना'** या **'होना'** के संयोग से जो धातुएँ बनती हैं, उन्हें सम्मिश्र धातु कहते हैं। जैसे—

1. करना/होना : काम करना/ काम होना, दर्शन करना/ दर्शन होना, प्यार करना/प्यार होना।
2. देना : कष्ट देना, उधार देना; धन्यवाद देना।
3. खाना : मार खाना, हवा खाना, धक्का खाना।
4. मारना : डींग मारना, गोता मारना, झपट्टा मारना।
5. आना : पसंद आना, याद आना, नजर आना।

5. अनुकरणात्मक धातु : ध्वनियों के अनुकरण पर बनाई जाने वाली धातुएँ अनुकरणात्मक धातुएँ कहलाती हैं।

जैसे — भनभन → भनभनाना   हिनहिन → हिनहिनाना

टनटन → टनटनाना   खटखट → खटखटाना

क्रिया के प्रकार *(Kinds of Verb)* : मुख्य रूप से क्रिया दो प्रकार की होती हैं :

1. अकर्मक,   2. सकर्मक

1. अकर्मक क्रिया *(Intransitive Verb)* : वाक्य में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की आवश्यकता नहीं होती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—दौड़ना, सोना, हँसना, रोना, उठना।

यहाँ क्रिया का फल (*प्रभाव*) सीधे कर्ता पर पड़ता है। जैसे—

(क) राम दौड़ रहा है।   (ख) बच्चा हँस रहा है।   (ग) गीतिका रोती है।

इन वाक्यों में (क) दौड़ने क्रिया का प्रभाव राम (*कर्ता*) पर, (ख) हँसने क्रिया का प्रभाव बच्चा (*कर्ता*) पर, (ग) 'रोना' क्रिया का प्रभाव गीतिका (*कर्ता*) पर पड़ रहा है। इनमें कोई कर्म नहीं है। अत: ये क्रियाएँ अकर्मक हैं।

2. सकर्मक क्रिया *(Transitive Verb)* : सकर्मक क्रिया के प्रयोग में **कर्म** की आवश्यकता होती है। सकर्मक क्रिया कर्म के बिना अपना भाव पूरा नहीं कर पाती। जैसे—पढ़ना, लिखना, देखना, खाना, पीना आदि।

जैसे — (क) मैं **पुस्तक** पढ़ रहा हूँ।   (*पुस्तक–कर्म*)

(ख) रवि ने **निशांत को** बुलाया।   (*निशांत–कर्म*)

(ग) वह **चित्र** बनाता है।   (*चित्र–कर्म*)

क्रिया के साथ क्या, किसे लगाने से जो उत्तर मिलता है, वही कर्म होता है। ऐसे वाक्य की क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं।

अकर्मक-सकर्मक क्रिया के भेद :

1. (क) स्थित्यर्थक/अवस्थाबोधक (पूर्ण) अकर्मक क्रियाएँ : ये क्रियाएँ अकर्मक होती हैं अर्थात् इनमें कर्म की आवश्यकता नहीं होती। ये अपूर्ण (*पूरक के बिना अपूर्ण लगने वाली*) नहीं हैं। ये कर्ता की अवस्था को बताती हैं। जैसे सोना, हँसना, रोना, खिलना आदि।

1. राम इस समय **सो** रहा है।   (*सोने की अवस्था*)
2. शशांक **हँस** रहा है।   (*हँसने की अवस्था*)

❖ अस्तित्ववादी क्रिया 'होना' भी इसी का उपभेद है; जैसे—ईश्वर है।

(ख) गत्यर्थक (घूर्ण) अकर्मक क्रियाएँ : इन क्रियाओं में भी कर्म नहीं होता। ये पूर्ण अकर्मक हैं अर्थात् ये अपूर्ण (*पूरक के बिना अपूर्ण लगने वाली*) नहीं हैं। इन क्रियाओं को करते समय करने वाला गतिमान रहता है। जैसे—जाना, आना, दौड़ना, भागना आदि।

1. रमेश मुंबई **जा रहा है।**
2. चिड़िया आकाश में **उड़ रही है।**

2. अपूर्ण (पूरक की आकांक्षा करने वाली) अकर्मक क्रियाएँ : अपूर्ण अकर्मक क्रियाएँ वे अकर्मक क्रियाएँ हैं, जिनके प्रयोग के समय अर्थ की पूर्णता के लिए कर्ता से संबंध रखने वाले किसी शब्द विशेष की आवश्यकता पड़ती है। **'होना'** इस कोटि की सबसे प्रमुख क्रिया है, अन्य क्रियाएँ हैं—बनना, निकलना आदि।

जैसे— 1. मैं बीमार **हूँ** इसलिए आ न सकूँगा।

2. सोहन बहुत होशियार **है।**

इन वाक्यों में **बीमार** और **होशियार** पूरक हैं। इनका लोप करके देखें। वाक्य कितना अपूर्ण लगता है।

3. (क) पूर्ण एककर्मक (सकर्मक) क्रियाएँ : ये वे क्रियाएँ हैं जो एक कर्म अवश्य लेती हैं;

जैसे— 1. रीना खाना खा रही है।   (*खाना–कर्म*)

2. दर्जी कपड़ा सिल रहा है।   (*कपड़ा–कर्म*)

(ख) पूर्ण द्विकर्मक क्रियाएँ : ये वे क्रियाएँ हैं जिन्हें दो कर्मों की आवश्यकता होती है। जैसे—

मैं राम को पत्र लिखूँगा।   (*राम और पत्र–दो कर्म*)

विनोद ने अशोक को अपनी कार बेच दी।   (*अशोक और कार–दो कर्म*)

❖ 'देना' क्रिया में वस्तुतः दो कर्म नहीं होते — एक संप्रदान होता है (*जिसे दिया जाता है*) और एक कर्म होता है (*वह वस्तु जो दी जाती है*); किंतु मोटे तौर पर दोनों को कर्म की कोटि में रखते हुए **द्विकर्मक** कहा जा सकता है।

4. अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ (*कर्म पूरकांक्षी सकर्मक क्रियाएँ*) : ये वे क्रियाएँ हैं, जिनमें कर्म रहते हुए भी अर्थ का पूर्ण बोध नहीं होता और उसे पूरा करने के लिए कर्म से संबंध रखने वाले एक अन्य शब्द की आवश्यकता होती है। जैसे– चुनना, मानना, समझना आदि।

1. अमित श्याम को बिल्कुल (*मूर्ख*) समझता है।
2. मैं तुम्हें अपना (*भाई*) मानती हूँ।

इन वाक्यों में पूरक (*मूर्ख, भाई*) का लोप करके देखें कि वाक्य कितना अपूर्ण लगता है।

❖ अकर्मक-सकर्मक में परिवर्तन (*अंतरण*) : क्रियाओं का अकर्मक अथवा सकर्मक होना, धातु के अर्थ से सीधे न होकर, प्रयोग पर निर्भर करता है। इसी कारण कभी-कभी अकर्मक क्रियाएँ सकर्मक प्रयोग में और सकर्मक क्रियाएँ अकर्मक प्रयोग में मिलती हैं। जैसे—

पढ़ना (*सकर्मक*)—मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ।

पढ़ना (*अकर्मक*)—वह आजकल दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है।

इसके विपरीत हँसना, लड़ना—अकर्मक क्रियाएँ हैं, पर सजातीय कर्म लगने से वे सकर्मक रूप में मिलती हैं, जैसे—

1. वावर ने बहुत सी **लड़ाइयाँ** लड़ीं।
2. वह बड़ी मस्तानी **चाल** चल रहा है।

☞ समापिका एवं असमापिका क्रियाएँ :

1. समापिका क्रिया : ये क्रियाएँ वाक्य के अंत में लगकर वाक्य को समाप्त करती हैं। जैसे—

1. चिड़िया आकाश में **उड़ती है।** 2. हिमालय की बर्फ **पिघल रही थी।** 3. मैं उठकर **जा रहा हूँगा।**

— उपर्युक्त वाक्यों में मोटे शब्द समापिका क्रियाएँ हैं।

2. असमापिका क्रिया : जो क्रियाएँ वाक्य के अंत में न लगकर वाक्य में अन्यत्र कहीं प्रयुक्त होती हैं, उन्हें असमापिका क्रिया कहते हैं। इन्हें क्रिया का **कृदंती** रूप भी कहा जाता है। जैसे—

डाल पर **चहचहाती हुई** चिड़िया कितनी सुंदर है। (*यहाँ 'चहचहाती हुई' समापिका क्रिया का उदाहरण है।*)

असमापिका क्रियाओं का विवेचन : असमापिका क्रियाओं के अनेक भेद हैं। उनका विवेचन तीन दृष्टियों से किया जाता है—

1. रचना की दृष्टि से : रचना की दृष्टि से असमापिका क्रियाओं की रचना चार प्रकार के प्रत्ययों से होती है —

(i) **अपूर्ण कृदन्त :** ता, ते, ती : जैसे—बहता, जाता, भागते, दौड़ती।

(ii) **पूर्ण कृदन्त :** आई, ई, ए : जैसे—बैठा, बैठी, पिछले।

(iii) **क्रियार्थक कृदन्त** — ना, नी, ने : जैसे—पढ़ना, पढ़नी, पढ़ने।

2. शब्द-भेद की दृष्टि से : असमापिका क्रियाएँ या तो संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होती हैं, या विशेषण या क्रियाविशेषण के रूप में। उदाहरणतया :

(i) **संज्ञा-रूप में** — ना : एकांत में **टहलना** मुझे आता है।
ने : मोहन **मिलने** आया था।
: गाड़ी **चलने** वाली है।

(ii) **विशेषण रूप में** — ता/ते/ती : **खेलता** बच्चा खुश रहता है।
चलता पानी साफ रहता है।
हँसते लोग अच्छे लगते हैं।
रोते मनुष्य अकेले रह जाते हैं।
छेड़ती नजरें बुरी लगती हैं।

आ/ई/ए : **मरा हुआ** इन्सान जाग उठा।
खिली हुई कलियाँ चटक उठीं।
गिरे हुए इंसानों को सहारा देना पुण्य है।

(iii) **क्रियाविशेषण –** ते ही : बंदर बंदूक **देखते ही** भाग गया।
ते-ते : बालक **पढ़ते-पढ़ते** सो गया।
कर : मैं गाना **गाकर** जाऊँगा।
ए-ए : वह **बैठे-बैठे** पढ़ता रहा।

3. प्रयोग की दृष्टि से : प्रयोग की दृष्टि से कृदंत निम्नलिखित छः प्रकार के होते हैं :

(i) **क्रियार्थक कृदंत** : इनका प्रयोग भाववाचक संज्ञा के रूप में होता है।
जैसे—टहलना, खेलना, सोना, पढ़ना आदि।

वाक्य-प्रयोग : 1. समय से **सोना** अच्छी आदत है।
2. मन लगाकर **पढ़ना** ही सफलता की कुंजी है।

(ii) **कर्तृवाचक कृदंत** : इससे कर्तृवाचक संज्ञा बनती है। जैसे—
धातु + ने + वाला/वाली 1. पढ़ने वाला, पढ़ने वाली। 2. सोने वाला, सोने वाली।

वाक्य-प्रयोग : 1. खेलने वालों को मना करो। 2. हँसने वालों को खड़ा करो।

(iii) **वर्तमानकालिक कृदंत** : ये कृदंत भूतकाल में चल रही क्रिया का बोध कराते हैं।
जैसे—बहता हुआ, जाता हुआ, नाचता हुआ।

वाक्य-प्रयोग : 1. **नाचता हुआ** मोर कितना सुंदर है।
2. **हँसता हुआ** जोकर सबको गुदगुदाता है।
ये वर्तमानकालिक कृदंत विशेषण का कार्य करते हैं।

(iv) **भूतकालिक कृदंत** : ये कृदन्त भूतकाल में संपन्न हो चुकी क्रिया का बोध कराते हैं तथा विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—
पका हुआ फल, सड़ा, निकला, भागा, जागा (*हुआ*)

वाक्य-प्रयोग : **जागा हुआ** शिशु न जाने क्या कर बैठे !

(v) **तात्कालिक कृदंत** : इस कृदंत से मुख्य क्रिया से तुरंत पहले हुई क्रिया का बोध होता है। तात्कालिक कृदंत के संपन्न होते ही मुख्य क्रिया संपन्न हो जाती है। इसका वाचक प्रत्यय है–'ते ही'। जैसे–
: 1. तुम्हारे **निकलते ही** वह आ गया।
2. चाकू **लगते ही** वह मर गया।

(vi) **पूर्वकालिक कृदंत** : इस कृदंत से मुख्य क्रिया से पहले होने वाली क्रिया का बोध होता है। इसका निर्माण धातु में **'कर'** प्रत्यय लगाने से होता है। जैसे—
पढ़ + कर = पढ़कर, सोकर, जागकर, आदि।

वाक्य-प्रयोग : 1. मैं **नहा-धोकर** नाश्ता करूँगा।
2. वह स्कूल से **आकर** काम करेगा।

क्रिया के कुछ अन्य भेद : उपर्युक्त भेदों के अतिरिक्त क्रिया के कुछ अन्य रूप भी हैं :

1. सहायक क्रिया
2. संयुक्त क्रिया
3. प्रेरणार्थक क्रिया
4. पूर्वकालिक क्रिया

1. सहायक क्रिया *(Helping Verb or Auxiliary Verb)* : कई बार वाक्य में मूल क्रिया के अतिरिक्त अन्य क्रियाएँ (*क्रियापद*) भी प्रयुक्त की जाती हैं, इन्हें सहायक क्रियाएँ कहते हैं। जैसे—

1. चोर भाग **गया**। 2. हम यह पुस्तक पढ़ **चुके हैं**। 3. वह स्त्री रोने **लगी**।

इन वाक्यों में क्रिया भाग, पढ़, रोने के साथ **गया, चुके हैं, लगी,** सहायक क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हैं।

सहायक क्रियाएँ वाक्य में दो प्रकार का कार्य करती हैं।

1. क्रिया के अर्थ में विशेषता बताती हैं। जैसे—वह चल **पड़ा**।

[इस वाक्य में **'पड़ा'** *(सहायक क्रिया) क्रिया के अर्थ में आकस्मिकता की विशेषता बता रही है।]*

2. क्रिया के अर्थ में क्रिया का काल बताती है। जैसे — राम आया **था**।

[इस वाक्य में **'था'** *(सहायक क्रिया) क्रिया का काल बता रही है।]*

2. संयुक्त क्रिया *(Compound Verb)* : दो स्वतंत्र अर्थ देने वाली क्रियाएँ जब मुख्य क्रिया और रंजक क्रिया के रू एक साथ मिल जाती हैं तब इन्हें संयुक्त क्रिया कहा जाता है।

निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे अंश पर ध्यान दीजिए :

(क)	(ख)
1. बच्चा **चिल्लाया**।	बच्चा **चिल्ला उठा**।
2. रामसिंह स्कूल **गया**।	रामसिंह स्कूल **जाने लगा**।
3. मुझे भूख **लगी**।	मुझे भूख **लग गई**।
4. सीमा ने खाना **बनाया**।	सीमा ने खाना **बना लिया**।

उपर्युक्त वाक्यों के खंड (क) में एक क्रिया पद है तो खंड (ख) के वाक्यों में एक से अधिक क्रियापद हैं। खंड (ख) की क्रियाओं को **संयुक्त क्रिया** कहते हैं। खंड (ख) की क्रियाओं में अंत: क्रियाएँ भी जोड़ी गई हैं।

उदाहरण :

(क) उसे मोहन आता **दिखाई दिया**।	('देना'–पूर्णता का भाव)
(ख) तुम यहाँ आकर **बैठ जाओ**।	('जाना'–पूर्णता का भाव)
(ग) वर्षा के कारण वह बीच में **चला आया**।	('आना' अनायासता का भाव)
(घ) वह स्कूल की ओर **चल पड़ा**।	('पड़ना' शीघ्रता का भाव)
(ङ) मोहन स्कूल **जाने लगा**।	('लगना' प्रारंभ होने का भाव)
(च) गीता **चिल्ला उठी**।	('उठना' आकस्मिकता का भाव)
(छ) उसने कुत्ते को **मार डाला**।	('डालना' बलात् का भाव)

उपर्युक्त वाक्यों में देना, जाना, आना, पड़ना, लगना, उठना और डालना **रंजक क्रियाएँ** हैं।

संयुक्त क्रिया के अन्य लक्षण

1. कहीं-कहीं संयुक्त क्रिया के दोनों पदों का क्रम तथा रूप बदलने पर अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। जैसे :

(क) राम ने उसे **मार दिया**। (जान से मार देना)

(ख) राम ने उसे **दे मारा**। (उठाकर नीचे पटक देना)

2. निषेधात्मक वाक्यों में मुख्य क्रिया के साथ रंजक क्रिया नहीं लगती। जैसे :

(क) उसे भूख **लग आई** → उसे भूख नहीं **लगी**।

(ख) यह सुनकर मोहन **चिल्ला उठा** → यह सुनकर मोहन नहीं **चिल्लाया**।

(ग) शशांक सारे आम **खा गया** → शशांक ने सारे आम नहीं **खाए**।

(घ) रवि ने काम **कर लिया** → रवि ने काम नहीं **किया**।

3. संयुक्त क्रिया में **'सकना'** और **'चुकना'** जैसी क्रियाएँ रंजक क्रिया के रूप में प्रयुक्त होती हैं। वास्तव में ये रं क्रियाएँ नहीं हैं और न ही इनका कोई स्वतंत्र अर्थ होता है, किंतु वे मुख्य क्रिया के साथ जुड़कर क्रिया के सामर्थ्य, पू आदि का बोध कराती हैं। जैसे :

(क) विजय यह काम **कर सकता** है। (सामर्थ्य का भाव)

(ख) नमिता मुंबई जा **चुकी** है। (पूर्णता का भाव)

संयुक्त क्रिया के मुख्यत: चार अंग होते हैं:

(1) मुख्य क्रिया, (2) सहायक क्रिया, (3) संयोजी क्रिया, (4) रंजक क्रिया।

(1) मुख्य क्रिया : कर्ता या कर्म के मुख्य क्रिया-कलाप को व्यक्त करने वाली क्रिया मुख्य क्रिया कहलाती है। जैसे– मैं प्राय: **आ** जाया करता हूँ। *(इसमें 'आ' मुख्य क्रिया है।)*

(2) सहायक क्रिया : काल का वोध कराने वाले क्रिया-पद 'सहायक क्रिया' कहलाते हैं।

(उपर्युक्त उदाहरण में 'हूँ' कालवाची है, अत: सहायक क्रिया है।)

(3) संयोजी क्रियाएँ : संयोजी क्रियाएँ मुख्य क्रिया के पक्ष, वृत्ति, वाच्य आदि की सूचना देती हैं। जैसे—

1. आरंभद्योतक – ने + ✓ लग – लड़का पढ़ने **लगा** है।
2. सातत्यद्योतक – + ✓ रह – लड़का पढ़ **रहा** है।
3. अभ्यासद्योतक – ता + ✓ रह – लड़का पढ़ता **रहता** है।
4. पूर्णताद्योतक – + ✓ चुक – लड़का सो **चुका** है।

(4) रंजक क्रियाएँ : रंजक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के अर्थ *(Mood)* में विशेष रंगत लाती हैं, अर्थात् विशिष्ट अर्थ छवि देती हैं। ये **आठ** हैं :

1	आना	रो आना, कर आना, बन आना	अनायासता का भाव
2	जाना	पी जाना, आ जाना, खा जाना	क्रिया पूर्णता का भाव
3	उठना	रो उठना, गा उठना, चिल्ला उठना	आकस्मिकता का भाव
4	बैठना	मार बैठना, खो बैठना, चढ़ बैठना	आकस्मिकता का भाव
5	लेना	पी लेना, सो लेना, ले लेना	क्रियापूर्णता / विवशता
6	देना	चल देना, रो देना, फेंक देना	क्रियापूर्णता / विवशता
7	पड़ना	रो पड़ना, हँस पड़ना, चौंक पड़ना	स्वत: / शीघ्रता का भाव
8	डालना	मार डालना, तोड़ डालना, काट डालना	वलात् भाव

3. प्रेरणार्थक क्रिया *(Causal Verb)* : जिन क्रियाओं का कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को प्रेरित करके काम करवाए, उन्हें प्रेरणार्थक क्रियाएँ कहते हैं। जैसे—

(क) मैं नौकर से कपड़े **धुलवाता हूँ।** (ख) वह हलवाई से मिठाई **वनवाता है।**

प्रेरणार्थक क्रिया में दो कर्ता होते हैं :

1. प्रेरक कर्ता--प्रेरणा देने वाला— *(उपर्युक्त वाक्यों में 'मैं' और 'वह' प्रेरक कर्ता हैं।)*
2. प्रेरित कर्ता--जिसे कार्य करने के लिए प्रेरणा दी जाती है -- *(उपर्युक्त वाक्यों में 'नौकर' और 'हलवाई' प्रेरित कर्ता हैं।)*

प्रेरणार्थक क्रियाओं के दो रूप या दो कोटियाँ होती हैं : 1. प्रथम प्रेरणार्थक, 2. द्वितीय प्रेरणार्थक।

प्रथम प्रेरणार्थक *(First Causal)* में कर्ता स्वयं भी कार्य में सम्मिलित होता हुआ प्रेरणा देता है।

जैसे — मैं बच्चे को चलाता हूँ।

द्वितीय प्रेरणार्थक *(Second Causal)* में कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देता है।

जैसे — (क) मैं धोबी से कपड़े धुलवाता हूँ।

(ख) वह नौकरानी से सफाई करवाता है।

निम्नलिखित तालिका को पढ़ो और समझो :

क्रिया	*प्रथम प्रेरणार्थक*	*द्वितीय प्रेरणार्थक*
लिखना	लिखाना	लिखवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
हँसना	हँसाना	हँसवाना
लड़ना	लड़ाना	लड़वाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
गिरना	गिराना	गिरवाना

निर्देशानुसार वाक्य को प्रेरणार्थक बनाना :

1. मैं खाना **पकाता** हूँ। ('नौकर' शब्द का प्रयोग करके)
   मैं नौकर से खाना **पकवाता** हूँ।
2. राकेश पत्र **लिखता** है। ('क्लर्क' शब्द का प्रयोग करके)
   राकेश क्लर्क से पत्र **लिखवाता** है।

4. **पूर्वकालिक क्रिया** *(Gerundive Verb)* : मुख्य क्रिया से पहले आने वाली क्रिया **'पूर्वकालिक क्रिया'** कहलाती है। इस प्रकार की क्रियाओं में 'कर' का प्रयोग होता है।

जैसे — 1. वह **नहाकर** पढ़ेगा। 2. बच्चा दूध **पीकर** सो गया।

'ने' परसर्ग का क्रिया पर प्रभाव

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

+ सोहन खाना खा चुका है। - सोहन ने खाना खा लिया है।
  ('खा चुका है'-क्रिया 'ने' परसर्ग के आने पर 'खा लिया है' हो गई।)
+ मैं शेर से डर गया। - मुझे शेर ने डरा दिया।
  ('डर गया' की जगह 'डरा दिया' हो गया।)
+ वह हिम्मत नहीं हारा। - उसने हिम्मत नहीं हारी।
  (यहाँ 'ने' परसर्ग के आने पर 'हारा' की जगह 'हारी' हो गया।)

❖ उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि **'ने'** परसर्ग लगने से क्रिया के स्वरूप में परिवर्तन आ जाता है।

इस बारे में ध्यान देने वाली बातें इस प्रकार हैं :

- **अकर्मक** क्रिया में संज्ञा का प्रत्यक्ष रूप होता है और **सकर्मक** क्रिया में कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग लगता है। जैसे-
  गगन खेला। (अकर्मक क्रिया)
  गगन ने पत्र लिखा। (सकर्मक क्रिया)
- 'ने' परसर्ग का प्रयोग कर्ताकारक के साथ होता है। 'ने' का प्रयोग केवल भूतकाल की सकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में होता है। वर्तमान और भविष्यत् काल तथा अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में इसका प्रयोग नहीं होता। जैसे-
  सचिन ने पुस्तक पढ़ी। (भूतकाल)
  सचिन पुस्तक पढ़ता है। (वर्तमान काल)
  सचिन पुस्तक पढ़ेगा। (भविष्यत् काल)
- इन तीनों वाक्यों में पुस्तक पढ़ने वाला 'सचिन' ही है। अत: 'सचिन' कर्ता है। पहले वाक्य में भूतकाल की क्रिया तथा 'पुस्तक' कर्म है, अत: 'ने' परसर्ग का प्रयोग हुआ है। दूसरे और तीसरे वाक्यों में क्रिया वर्तमान और भविष्यत् काल की है, अत: कर्ता के साथ **'ने'** परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है।
- 'ने' वाले वाक्यों में यदि कर्म के साथ **'को'** जुड़ जाए तो क्रिया हमेशा पुल्लिंग एकवचन में होगी। जैसे :
  1. राम ने रावण को मारा। (पुल्लिंग-एकवचन)
  2. मोहन ने बर्फी को खाया। (पुल्लिंग-एकवचन)
  3. दिवाकर ने लीचियों को फेंक दिया। (पुल्लिंग-एकवचन)

❖ उपर्युक्त वाक्यों में कर्म के साथ 'को' न होने पर वाक्य इस प्रकार होंगे-
1. राम ने रावण मारा। 2. मोहन ने बर्फी खाई। 3. दिवाकर ने लीचियाँ फेंकी।

- 'ने' परसर्ग का प्रयोग सदा क्रिया के पूर्ण पक्ष को दर्शाने के लिए किया जाता है। जैसे :
  1. अशोक ने धमकी दी। 2. मोहन ने गलती की। 3. बाढ़ ने फसल तबाह कर दी।
- सामान्यत: पूर्ण वर्तमान काल के लिए 'चुका है' सहायक क्रिया का प्रयोग होता है, परंतु 'ने' परसर्ग लगने पर 'चुका है' की बजाय **'लिया है'** क्रिया रूपों का प्रयोग होता है। जैसे :
  वह इनाम ले **चुका है**। उसने इनाम ले **लिया है**।

● 'ने' परसर्ग का प्रयोग होने पर क्रिया कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होती है। जैसे :

1. गौरव पुस्तक पढ़ता है। (कर्ता के अनुसार क्रिया)
   गौरव ने पुस्तक पढ़ी। (कर्म के अनुसार क्रिया)
2. नम्रता खाना पकाती है। (कर्ता के अनुसार क्रिया)
   नम्रता ने खाना पकाया। (कर्म के अनुसार क्रिया)

● 'ने' के प्रयोग संबंधी अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

'लाना', 'भूलना' को छोड़कर अन्य सकर्मक क्रियाओं के पूर्ण पक्ष (क्रिया) के रूप में कर्ता में 'ने' लगता है और कर्म के साथ क्रिया की अन्विति होती है। जैसे :

1. रवि ने ही यह काम किया/किया है/किया था/किया होगा।
2. नीलम ने यह गलती की/की है/की थी/की होगी।

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

1. तपन खाना खा चुका है। → तपन ने खाना खा लिया है।
2. मुझसे थैला छूट गया। → मैंने थैला छोड़ दिया।

['ने' परसर्ग के आने पर क्रिया के स्वरूप में परिवर्तन आ गया है।]

'ने'–परसर्ग के आने पर क्रिया में होने वाले परिवर्तनों को इन वाक्यों में देखा जा सकता है :

1. मैं पुस्तक पढ़ता था। → मैंने पुस्तक पढ़ी।
2. वह रोटी स्वयं बनाती थी। → उसने रोटी स्वयं बनाई।
3. राम दूध पी चुका है। → राम ने दूध पी लिया है।
4. काली गाय दूध देती है। → काली गाय ने दूध दिया।
5. कोयल गाना गाती है। → कोयल ने गाना गाया।
6. गरिमा ढोलक बजाती है। → गरिमा ने ढोलक बजाई।
7. वे क्या कहते हैं ? → उन्होंने क्या कहा ?
8. पुलिस चोर को पकड़ती है। → पुलिस ने चोर को पकड़ा।
9. घोड़ा घास खाता है। → घोड़े ने घास खाई।
10. कोई पत्र दे गया है। → किसी ने पत्र दिया है।

वार्षिक परीक्षाओं में पूछे गए 'ने' परसर्ग संबंधी प्रश्न

निम्न वाक्यों में 'ने' परसर्ग का प्रयोग कीजिए :

(क) मैं चाय पी चुका था। → मैंने चाय पी ली थी।

(ख) दादाजी खाना खा चुके हैं। → दादा जी ने खाना खा लिया है।

(ग) वह धोखा दे गया है। → उसने धोखा दे दिया।

अभ्यासार्थ
(Practice)

1. निम्नलिखित वाक्यों में 'ने' परसर्ग का प्रयोग कीजिए :
   1. मैं चाय पी चुका हूँ।
   2. दादा जी खाना खा चुके हैं।
   3. वह धोखा दे गया।
   4. वह कुत्ते को मारता था।
   5. सचिन क्रिकेट खेला।
2. निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता पद में 'ने' परसर्ग लगाकर क्रिया पर प्रभाव दर्शाइए :
   1. गौरी आम खा गई।
   2. हम चोर पकड़ते हैं।
   3. वह मैच खेल चुका है।
   4. राम चोर को पकड़ लेगा।
   5. मुझसे डंडा छूट गया।

3. कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए :

1. सलमा पुस्तक पढ़ चुकी है।
2. सिपाही चोर को पकड़ता है।
3. मैं दफ्तर में काम करूँगा।
4. हम बदमाश को पकड़ते हैं।
5. राकेश क्रिकेट खेला।
6. वे खाना खा चुके हैं।
7. मैं गाना सुन चुका हूँ।
8. राम भाषण दे रहा है।
9. वे कुत्ते को मारा करते थे।
10. रवि की घड़ी गिर गई।
11. वे यमुना-तट पर आम खाएँगे।
12. सोहन प्रतिदिन सैर को जाता था।

नवीं कक्षा हेतु क्रिया संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. मैं पत्र लिखता हूँ। – रेखांकित क्रिया का भेद है :
   (क) अकर्मक
   (ख) सकर्मक
   (ग) प्रेरणार्थक
   (घ) पूर्वकालिक
2. मैं माली से पौधे लगवाता हूँ। – रेखांकित क्रिया का भेद बताइए।
   (क) अकर्मक (ख) सकर्मक
   (ग) प्रेरणार्थक (घ) अन्य
3. बच्चो रो रहा है। – रेखांकित क्रिया का भेद बताओ।
   (क) अकर्मक (ख) सकर्मक
   (ग) प्रेरणार्थक (घ) अन्य
4. 'जाऊँगा' क्रिया का मूल रूप (धातु) कौन-सा है ?
   (क) जाना (ख) जा
   (ग) जाऊँ (घ) ऊँगा
5. मैं राम को पत्र लिखूँगा। – 'लिखूँगा' क्रिया का भेद बताइए।
   (क) अकर्मक (ख) सकर्मक
   (ग) द्विकर्मक
6. रमेश धोबी से कपड़े धुलवाता है। – रेखांकित क्रि का भेद बताइए।
   (क) प्रेरणार्थक (ख) सकर्मक
   (ग) अकर्मक
7. बच्चो सो रहा है। – क्रिया पद छाँटो :
   (क) बच्चा (ख) सो (ग) सो र
8. उपर्युक्त वाक्य की क्रिया का भेद कौन-सा है ?
   (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) द्विकर्म
9. मैं सोऊँगा। – रेखांकित क्रिया का धातु रूप है :
   (क) सो (ख) सोना (ग) सोऊँ
10. गीता नौकरानी से खाना पकवाती है। – रेखां क्रिया का भेद बताइए।
    (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) प्रेरणा
11. धोबी कपड़े धो रहा है। – रेखांकित क्रिया का बताओ।
    (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) प्रेरणा
12. रेखांकित क्रिया का भेद बताओ। गीता नौकरानी कपड़े धुलवाती है।
    (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) प्रेरणा

उत्तर : 1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (ख), 5. (ग), 6. (क), 7. (ग), 8. (क), 9. (क), 10. (ग), 11. (ख), 12. (ग)।

वृत्ति, काल, पक्ष *(Mood, Tense & Aspect)*

1. वृत्ति *(Mood)*

'वृत्ति' को 'क्रियार्थ' भी कहते हैं। **'क्रियार्थ'** से तात्पर्य है—क्रिया का अर्थ (*प्रयोजन*) अर्थात् क्रिया-रूप कहने वाले लिखने वाले के किस प्रयोजन या वृत्ति की ओर संकेत करता है। वाक्य में अर्थ इंगित करने का मुख्य साधन क्रिया रूप हों यद्यपि कुछ अव्यय, जैसे—शायद, मानो, संभवतः, यदि, तो आदि भी क्रिया-रूप की सहायता करते हैं।

हिंदी में क्रियार्थ मुख्यत पाँच हैं : 1. विध्यर्थ, 2. निश्चयार्थ, 3. संभावनार्थ, 4. संदेहार्थ, 5. संकेतार्थ।

1. विध्यर्थ (*आज्ञा*) *(Imperative Mood)* : जब हम चाहते हैं कि हमारी बात सुनकर सुनने वाला कुछ क्रिया करे करने की योजना बनाए तो क्रिया अर्थ विधि (*ऐसा करो*) प्रधान होता है। इस क्रिया-रूप से आज्ञा, अनुरोध, इच्छा, आदेश मनःस्थितियों का बोध होता है। जैसे—

मेरी पुस्तक लाओ। (*आदेश*) कृपया समय बताइए। (अनुरोध)

2. निश्चयार्थ *(Indicative Mood)* : जिस क्रिया-रूप से कार्य होने की निश्चितता का बोध होता है, उसे निश्चयार्थ कहते हैं। जैसे—

मोहन फुटबॉल **खेल रहा है।** वह बाजार **जा रहा है।**

3. संभावनार्थ *(Subjunctive Mood)* : क्रिया का जो रूप अनुमान, संभावना आदि का बोध कराए, उसे संभावनार्थ कहते हैं। जैसे—

शायद आज वर्षा **हो।** संभवतः आज धूप **निकले।**

4. संदेहार्थ *(Doubtful Mood)* : संभावना कभी-कभी अधिक होती है अर्थात् कथन पूरी तरह सत्य होगा या नहीं, ऐसी स्थिति में संदेहार्थ का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

मोहन इस समय स्टेशन पर **आ गया होगा।** वह पानी **ला रहा होगा।**

5. संकेतार्थ *(Conditional Mood)* : कार्य-सिद्धि के लिए कुछ शर्तों का पूरा होना आवश्यक हो जाता है। जब एक क्रिया दूसरी क्रिया के लिए कारण बनकर प्रस्तुत होती है, तब वहाँ संकेतार्थ होता है। जैसे—

मैं **पढ़ता** तो अवश्य पास हो **जाता।** वर्षा **होती** तो फसल अच्छी हो **जाती।**

2. काल *(Tense)*

क्रिया या घटना किस समय हुई, उसे बताने का दायित्व **काल** का होता है। जैसे—

1. राम **पढ़ता है।** 2. वह कल **पढ़ रहा था।** 3. वह कल **पढ़ेगा।**

उपर्युक्त. वाक्य (1) में पढ़ने का काम इसी समय (*वर्तमान*) में हो रहा है।
वाक्य (2) में पढ़ने का काम कल (*भूतकाल*) में हुआ था।
वाक्य (3) में पढ़ने का काम आगे (*भविष्य*) में होगा।

इस प्रकार काल के तीन भेद हैं :

1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल

1. वर्तमान काल *(Present Tense)* : क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे—

1. मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। 2. वह खाना खा रहा है। 3. रमेश अध्यापक है।

वर्तमान काल के **तीन** उपभेद हैं :

(क) सामान्य वर्तमान *(Present Indefinite)* : क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में सामान्य रूप से होने का बोध हो, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। जैसे—

मैं **जाता हूँ।** मैं **जाती हूँ।** बच्चा दूध **पीता है।** बच्ची दूध **पीती है।**

(ख) अपूर्ण वर्तमान *(Present Continuous/Imperfect)* : क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी चल रही है, अर्थात् समाप्त नहीं हुई है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। जैसे—

रमेश पुस्तक **पढ़ रहा है।** वह व्यायाम **कर रहा है।**

(ग) संदिग्ध वर्तमान *(Present Doubtful)* : क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने में संदेह का बोध होता है, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। जैसे—

वह जा **रहा होगा।** गीतिका **पढ़ रही होगी।**

2. भूतकाल *(Past Tense)* : क्रिया के जिस रूप से काम के बीते हुए समय में होने का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। जैसे—

सोहन ने पुस्तक **पढ़ी।** वह खाना **खा रहा था।**

भूतकाल के **छः भेद** हैं :

(1) **सामान्य भूतकाल** *(Past Indefinite)* : जिसमें बीते हुए समय में होने वाली क्रिया का सामान्य रूप हो, वहाँ सामान्य भूतकाल होता है। जैसे—

उसने खाना **खाया।** मैं **स्कूल गया।**

(2) **आसन्न भूत** *(Recent Past)* : क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि क्रिया भूतकाल में आरंभ
अभी-अभी समाप्त हुई है, आसन्न भूतकाल कहलाता है। जैसे—

मैंने कहानी **सुनी है।** वह अभी **आया है।**

(3) **अपूर्ण भूत** *(Past Continuous)* : क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में ही हो रही थी,
काम की पूर्णता का पता न चले, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। जैसे—

वह पत्र **लिख रहा था।** मैं पुस्तक **पढ़ रहा था।**

(4) **पूर्ण भूत** *(Past Perfect)* : क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम भूतकाल में समाप्त हो चुका था
पूर्ण भूतकाल होता है। जैसे —

राम खाना **खा चुका था।** वह यहाँ **आ चुका था।**

(5) **संदिग्ध भूत** *(Doubtful Past)* : बीते हुए समय में जिस क्रिया के होने के बारे में संदेह पाया जाए, वहाँ
भूतकाल होता है। जैसे—

वह **आया होगा।** उसने पुस्तक **पढ़ी होगी।**

(6) **हेतु-हेतुमद् भूत** *(Conditional Past)* : इसकी दो क्रियाओं में कार्य-कारण संबंध होता है। जहाँ भूतकाल की
क्रिया दूसरी क्रिया पर आश्रित होती है, वहाँ हेतु-हेतु मद् भूतकाल होता है। जैसे—

वह दवा **पीता** तो स्वस्थ **हो जाता।** यदि वर्षा **होती** तो फसल **अच्छी होती।**

3. भविष्यत् काल *(Future Tense)* : क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में उसके करने या होने का बोध
उसे भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे—

कल हम आगरा **जाएँगे।** विमला गीत **गाएगी।**

भविष्यत् काल के **दो** उपभेद हैं :

(1) **सामान्य भविष्यत्** *(Future Indefinite)* : आने वाले समय में क्रिया के सामान्य रूप से होने की सूचना का
कराने वाले काल को सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे—

गीता बाजार **जाएगी।** वे खाना **खाएँगे।**

(2) **संभाव्य भविष्यत्** *(Future Doubtful)* : जहाँ आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की संभावना पाई
वहाँ सामान्य भविष्यत् काल होता है। जैसे—

शायद वह **चला जाए।** संभव है आज **वर्षा हो।**

3. पक्ष *(Aspect)*

क्रिया के जिस रूप से क्रिया की प्रक्रियागत अवस्था का बोध होता है, उसे क्रिया का पक्ष कहते हैं। सहायक क्रिया
अंश, जो क्रिया की पूर्णता, अपूर्णता, किसी वस्तु या व्यक्ति की अवस्था या स्थिति आदि की सूचना देते हैं, **'पक्ष'** सूचक
कहे जाते हैं। प्रमुख पक्ष निम्नलिखित हो सकते हैं :

1. **आरंभद्योतक पक्ष :** इसमें क्रिया के आरंभ होने की सूचना मिलती है। जैसे—
   वह पढ़ने लगा है। सचिन नौकरी पर जा रहा है।
2. **सातत्यद्योतक पक्ष :** इसमें क्रिया के वर्तमान में चालू रहने की सूचना मिलती है। जैसे—
   वह बच्चा बहुत अच्छा खेल रहा है। अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहा है।
3. **प्रगतिबोधक पक्ष :** इसमें यह प्रकट होता है कि क्रिया निरंतर प्रगति कर रही है। जैसे—
   भीड़ बढ़ती जा रही है। वह तेजी से चलता चला आ रहा है।
4. **पूर्णताबोधक पक्ष :** इसमें यह स्पष्ट होता है कि क्रिया पूरी या समाप्त हो चुकी है। जैसे—
   मैं अब पढ़ चुका हूँ। माताजी खाना बना चुकी हैं।
5. **नित्यताबोधक पक्ष :** यहाँ क्रिया के नित्य (*सदा बनी रहने*) का बोध होता है, अर्थात् उसका आदि-अंत नहीं होता। जैसे
   पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। सूर्य पूर्व दिशा में निकलता है।
6. **अभ्यासद्योतक पक्ष :** इसमें पता चलता है कि क्रिया आदत (*स्वभाव अभ्यास*) के कारण हुआ करती है। जैसे—
   सोहन रोज प्रातः उठता है और मंदिर जाता है। सर्दियों में बहुत ठंड लगती है।

C.B.S.E. की परीक्षाओं में पूछे गए क्रिया संबंधी प्रश्न

(CBSE 2009 Comptt. Delhi)

प्रश्न 1. (क) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पद छाँट कर कर्म के अनुसार क्रिया-भेद लिखिए : *(Set I)*

(*i*) सुचित्रा सुबह से सो रही है।

(*ii*) महेश ने भी पत्र लिखा है ।

उत्तर–(*i*) सो रही है । *(अकर्मक क्रिया)*

(*ii*) लिखा है *(सकर्मक क्रिया)*

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पद छाँट कर कर्म के अनुसार क्रिया-भेद लिखिए : *(Set II)*

(*i*) आकाश में पक्षी उड़ते हैं ।

(*ii*) मेरे भाई ने अपनी पुस्तक सत्यकाम को दे दी ।

उत्तर–(*i*) उड़ते हैं *(अकर्मक क्रिया)*

(*ii*) दे दी *(द्विकर्मक क्रिया)*

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पद छाँट कर कर्म के अनुसार क्रिया भेद लिखिए : *(Set III)*

(*i*) बच्चा दूध पीता-पीता सो गया ।

(*ii*) रामू ने अभी-अभी लिखा है।

उत्तर–(*i*) सो गया *(सकर्मक क्रिया)*

(*ii*) लिखा है *(अकर्मक क्रिया)*

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रिया-पदों को छाँटिए और कर्म के अनुसार उनके भेद लिखिए :

(*i*) मोहिनी ने पाठ याद कर लिया है।

(*ii*) सत्यप्रकाश बहुत हँसता है।

उत्तर–(*i*) याद कर लिया है – *सकर्मक क्रिया*

(*ii*) हँसता है – *अकर्मक क्रिया*

(CBSE 2009 Delhi)

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पदों को छाँटकर कर्म के अनुसार उनके भेद लिखिए : *(Set-I)*

(*i*) वह रात भर जागता रहा।

(*ii*) सेवक एक आवश्यक पत्र लाया।

उत्तर : (*i*) जागता रहा : अकर्मक क्रिया।

(*ii*) **लाया :** सकर्मक क्रिया।

(CBSE 2009 Outside)
(Set I)

प्रश्न 1. (क) क्रियापद छाँटकर उनके भेद भी लिखिए :

(*i*) घड़े में पानी भर गया।

(*ii*) आप कल तक अवश्य आ जाइए।

उत्तर : (*i*) भर गया : सकर्मक क्रिया।

(*ii*) **आ जाइए :** अकर्मक क्रिया।

(ख) दो अव्यय पद पहचानकर उनके भेद भी लिखिए :

(*i*) कड़ी सर्दी में भीतर ही रहो।

(*ii*) संदीप स्वस्थ है इसलिए विद्यालय गया है।

उत्तर : (*i*) भीतर : स्थानवाचक क्रिया-विशेषण।

(*ii*) **इसलिए :** समुच्चयबोधक (योजक)।

(Set-II)

(क) क्रियापद छाँटकर उनके भेद भी लिखिए :

(*i*) उसने प्रथम पुरस्कार जीता।

(*ii*) उसको विवश होकर मेरे साथ चलना पड़ा।

उत्तर : (*i*) जीता : सकर्मक क्रिया।

(*ii*) चलना पड़ा : सकर्मक क्रिया

(ख) अव्यय पद पहचानकर उनके भेद भी लिखिए:

(*i*) धीरे-धीरे बोलो, कोई सुन लेगा।

(*ii*) जल्दी जाओ जिससे समय पर पहुँच सको।

उत्तर : (*i*) धीरे-धीरे : रीतिवाचक क्रियाविशेषण।

(*ii*) **जल्दी :** कालवाचक क्रियाविशेषण।

(Set-III)

क्रियापद छाँटकर उनके भेद भी लिखिए :

(*i*) यह क्यों रो रहा है?

(*ii*) वह अपनी करुण कहानी सुना रहा है।

उत्तर : (*i*) रो रहा है : अकर्मक क्रिया।

(*ii*) **सुना रहा है :** सकर्मक क्रिया।

(CBSE 2008 Delhi Comptt.)

(Set I)

प्रश्न 1. (*i*) क्रियापद ढूँढ़कर बताइए कि वह क्रिया का कौन-सा भेद है ?

(*a*) उन्होंने समाज को जागृत किया।

उत्तर : जागृत किया : सकर्मक क्रिया।

(*b*) रोमा नरेंद्र को देखकर लजा गई।

उत्तर : लजा गई : द्विकर्मक क्रिया।

(*c*) उन्होंने संस्कृतमयी भाषा-शैली अपनाई।

उत्तर : अपनाई : सकर्मक क्रिया।

(Set II)

(*ii*) क्रियापद ढूँढकर बताइए कि वह क्रिया का कौन-सा भेद है?

(*a*) वह सर्दी में गर्म कपड़े पहनता है।

उत्तर : पहनता है : सकर्मक क्रिया।

(*b*) इस खेत में गेहूँ पैदा होता है।

उत्तर : पैदा होता है : सकर्मक क्रिया।

(*c*) पानी-भरे खेतों में बच्चे खेल रहे हैं।

उत्तर : खेल रहे हैं : अकर्मक क्रिया।

(Set III)

(*iii*) क्रियापद ढूँढ़कर बताइए कि वह क्रिया का कौन-सा भेद है?

(*a*) तू मेरी बात क्यों नहीं समझता?

उत्तर : समझता : सकर्मक क्रिया।

(*b*) वह पुणे में रहता है।

उत्तर : रहता है : अकर्मक क्रिया।

(*c*) नौकर अपना काम कर रहा है।

उत्तर : कर रहा है : सकर्मक क्रिया।

(CBSE 2008. Outside Compit.)

प्रश्न : (क) क्रियापद छाँट कर उसका भेद भी लिखिए : *(Set I)*

(i) वह कब से सो रहा है ?
उत्तर : सो रहा है : अकर्मक क्रिया।
(ii) नेवले ने साँप को मार डाला।
उत्तर : मार डाला : सकर्मक क्रिया।
(iii) बच्चे मैदान में दौड़ रहे हैं।
उत्तर : दौड़ रहे हैं : अकर्मक क्रिया।

(ख) क्रियापद छाँट कर उसका भेद भी लिखिए : *(Set II)*
(i) वह गहरी नींद सो रहा है।
उत्तर : सो रहा है : अकर्मक क्रिया।
(ii) नेवले ने साँप को मार डाला।
उत्तर : मार डाला : सकर्मक क्रिया।
(iii) बच्चे मैदान में दौड़ रहे हैं।
उत्तर : दौड़ रहे हैं : अकर्मक क्रिया।

(ग) क्रियापद छाँट कर उसका भेद भी लिखिए : *(Set III)*
(i) शील नींद में चिल्ला उठी।
उत्तर : चिल्ला उठी : अकर्मक क्रिया।
(ii) उसका भाई भोजन कर रहा है।
उत्तर : कर रहा है : सकर्मक क्रिया।
(iii) सुरेश बहुत दौड़ चुका है।
उत्तर : दौड़ चुका है : अकर्मक क्रिया।

(CBSE 2008 Delhi)

प्रश्न : क्रिया-पद छाँटकर उसका भेद लिखिए :

(Set I)
(i) हमारे सभी शिक्षक हमें बड़ी मेहनत से पढ़ाते हैं।
(ii) आप चाय लेंगे या कॉफी?
(iii) मोहन बहुत जोर-जोर से हँसता है।
उत्तर : (i) सकर्मक क्रिया।
(ii) सकर्मक क्रिया (द्विकर्मक)।
(iii) अकर्मक क्रिया।

(Set II)
(i) उदय ने अनन्त को अपनी घड़ी दे दी।
(ii) रजत बड़ी तेजी से दौड़ता है।
(iii) शहनाई को 'शाहे नय' की उपाधि दी गई है।
उत्तर : (i) सकर्मक क्रिया (द्विकर्मक), (ii) अकर्मक क्रिया, (iii) सकर्मक क्रिया।

(Set III)
(i) अभिनव ने हेमलता को मकान खरीद कर दिया।
(ii) मैं वहाँ नहीं आ सकूँगा।
(iii) ब्लू लाइन बसों का कहर थम नहीं रहा है।
उत्तर : (i) द्विकर्मक क्रिया, (ii) अकर्मक क्रिया, (iii) सकर्मक क्रिया।

(CBSE 2008 Outside)

प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यों से क्रियापद छाँटकर उनके भेद भी लिखिए : *(Set I)*
(i) मोर नाच रहा था।
(ii) वह अपनी बहन को नृत्य सिखवा रहा है।
(iii) प्रधानमंत्री के भाषण की सबने प्रशंसा की।
उत्तर : (i) नाच रहा था : अकर्मक क्रिया।
(ii) सिखवा रहा है : प्रेरणार्थक क्रिया
(iii) प्रशंसा की : सकर्मक क्रिया।

(C.B.S.E. 2008 Foreign)

प्रश्न : क्रिया-पद छाँटकर उनके भेद लिखिए :
(i) वह दीन-दुखियों की सहायता करता है।
(ii) यह मधुर गीत किसने गाया ?
(iii) छोटा बच्चा रात-भर रोता रहा।
उत्तर : (i) करता है : सकर्मक क्रिया।
(ii) गाया : सकर्मक क्रिया।
(iii) रोता रहा : अकर्मक क्रिया।

(Set II)
(i) नरेश अखबार पढ़ रहा है।
(ii) मोहन रमेश से किताब पढ़वा रहा है।
(iii) चिड़िया आकाश में उड़ रही है।
उत्तर : (i) पढ़ रहा है : सकर्मक क्रिया।
(ii) पढ़वा रहा है : प्रेरणार्थक क्रिया।
(iii) उड़ रही है : अकर्मक क्रिया।

(Set III)
(i) रेखा ने सीमा को अपने घर बुलाया।
(ii) वह हँस पड़ा।
(iii) नरेन्द्र ने रमा को गाना सिखाया।
उत्तर : (i) बुलाया : सकर्मक क्रिया।
(ii) हँस पड़ा : अकर्मक क्रिया।
(iii) सिखाया : द्विकर्मक क्रिया।

(CBSE Sample Paper-1)

प्रश्न : क्रिया पद छाँटकर भेद लिखिए :
(i) सुरेश बच्चे को सुला रहा है।
(ii) वह प्रतिदिन कई किलोमीटर दौड़ता है।
(iii) विक्रम उपन्यास पढ़ता है।
उत्तर :
(i) सुला रहा है : सकर्मक क्रिया।
(ii) दौड़ता है : अकर्मक क्रिया।
(iii) पढ़ता है : सकर्मक क्रिया।

(CBSE Sample Paper-2)

प्रश्न : क्रिया पद छाँटकर भेद लिखिए :
(i) पक्षी आकाश में उड़ रहे थे।
(ii) माली ने पके-पके आम तोड़े।
(iii) सृष्टि समाचार-पत्र पढ़ती है।
उत्तर :
(i) उड़ रहे हैं : अकर्मक क्रिया।
(ii) तोड़े : सकर्मक क्रिया।
(iii) पढ़ती है : सकर्मक क्रिया।

अध्याय 11

वाच्य

(Voice)

वाच्य उस रूप रचना को कहते हैं जिससे यह पता चलता है क्रिया को मूल रूप से चलाने वाला कर्ता है या कर्म। हिंदी में दो मुख्य वाच्य हैं-

वाच्य
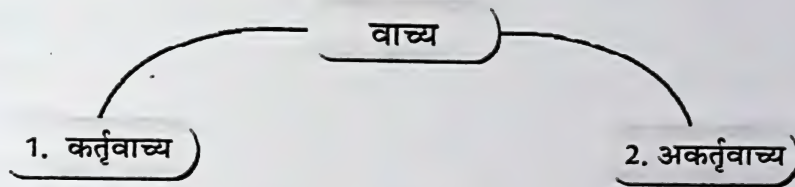
1. कर्तृवाच्य

2. अकर्तृवाच्य

1. कर्तृवाच्य :

- जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।
- इस प्रकार के वाक्यों में अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाएँ हो सकती हैं।
- इसमें कर्ता प्रमुख होता है और कर्म गौण होता है।

उदाहरण :

1. पिताजी आ रहे हैं। (अकर्मक)
2. माताजी सो रही हैं। (अकर्मक)
3. मजदूर काम कर रहे हैं। (सकर्मक)
4. शशि पुस्तक पढ़ रही है। (सकर्मक)

❖ उपर्युक्त वाक्यों में पिताजी, माताजी, मजदूर तथा शशि कर्ता हैं। इन वाक्यों की क्रियाएँ अपने कर्ता के अनुसार लिंग-वचन में हैं। अत: ये चारों कर्तृवाच्य के वाक्य हैं।

❖ चूँकि कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है अत: कर्ता की पहचान करना आवश्यक है। क्रिया के साथ 'कौन' अथवा 'किसने' प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलता है, वही कर्ता होता है।

2. अकर्तृवाच्य :

- जिन क्रियाओं में कर्ता गौण अथवा लुप्त होता है, उसे अकर्तृवाच्य कहते हैं।

अकर्तृवाच्य के **दो प्रमुख भेद हैं-**

(क) कर्मवाच्य। (ख) भाववाच्य।

(क) कर्मवाच्य : कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है। इसके कारण वाक्य में या तो कर्ता का लोप हो जाता है अथवा कर्ता के बाद **से, द्वारा** अथवा **के द्वारा** का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

1. दीपावली अक्तूबर-नवंबर महीने में मनाई जाती है। *(कर्ता का लोप)*
2. आपका काम कर दिया गया है। *(कर्ता का लोप)*
3. प्रेमचंद द्वारा उपन्यास लिखा गया। *(कर्ता + द्वारा)*
4. राम के द्वारा पत्र लिखा गया। *(कर्ता + के द्वारा)*
5. मोहन से मेज टूट गई। *(कर्ता + से)*

☞ **ध्यान दें :**

- कर्मवाच्य में या तो कर्ता का लोप हो जाता है या कर्ता के साथ **द्वारा**, **के द्वारा** या **से** जोड़ा जाता है।
- इसमें कर्ता गौण हो जाता है।
- इसमें सकर्मक क्रिया प्रयुक्त होती है।
- कर्मवाच्य में असमर्थता सूचक वाक्य भी आते हैं किंतु इनमें 'द्वारा' के स्थान पर प्राय: 'से' परसर्ग का प्रयोग होता है। इसमें भी सकर्मक क्रिया प्रयुक्त होती है।

ये वाक्य केवल निषेधात्मक रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा कर्ता की असमर्थता सूचित करते हैं। जैसे-मुझसे यह दरवाजा न खोला जाता।

- हिंदी में क्रिया का एक ऐसा भी रूप है जो कर्मवाच्य की तरह प्रयुक्त होता है। वह है सकर्मक क्रिया से बना इसका अकर्मक रूप जिसे व्युत्पन्न अकर्मक कहते हैं; जैसे-

(क) दरवाजा खुल गया। *(खोलना → खुलना)*

(ख) गिलास टूट गया। *(तोड़ना → टूटना)*

(ग) भोजन पक गया। *(पकाना → पकना)*

कर्मवाच्य के प्रयोग-स्थल

- कई बार क्रिया का कर्ता अज्ञात होता है; जैसे-गाना गाया गया।
- कर्ता को प्रकट करने की आवश्यकता ही न हो; जैसे-गोष्ठी में कहानी पढ़ी जाएगी।
- कानूनी भाषा में : कानून तोड़ने वालों को दंड दिया जाएगा।
- दर्प, गर्व, अधिकार प्रकट करने में-मामले की पूरी जाँच की जाए।

कर्मवाच्य में :

- क्रिया में एक से अधिक पद होते हैं।
- 'जाना' क्रिया को सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।
- वाक्य का उद्देश्य कर्म होता है।
- मुख्य क्रिया सकर्मक होती है।

(ख) भाववाच्य :

- इसमें वक्ता का कथ्य बिंदु क्रिया से प्रकट होता है।
- इसमें सदा अकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है।
- भाववाच्य में क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुल्लिंग और एकवचन में ही प्रयुक्त होती है।
- इसमें क्रिया का भाव ही मुख्य होता है।
- वस्तुत: अकर्मक क्रिया का कर्मवाच्य ही भाववाच्य है।

उदाहरण :

1. अब चला जाए।
2. थोड़ी देर सो लिया जाए।
3. मुझसे चला नहीं जाता।
4. उससे सोया नहीं जाता।
5. सोनिया से बैठा नहीं जाता।

भाववाच्य के प्रयोग स्थल

- भाववाच्य का प्रयोग प्राय: असमर्थता या विवशता प्रकट करने के लिए 'नहीं' के साथ किया जाता है। जैसे-मुझसे चला नहीं जाता।
- जहाँ 'नहीं' का प्रयोग नहीं होता, वहाँ मूल कर्ता सामान्य होता है; जैसे-1. अब चला जाए। 2. चलो, ऊपर सोया जाए।

वाच्य-परिवर्तन

☞ कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

- ❖ कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित कीजिए।
- ❖ कर्ता के साथ 'से' या **'के द्वारा'** जोड़िए।
- ❖ क्रिया के परिवर्तित रूप के साथ काल, पुरुष, वचन तथा लिंग के अनुसार **'जाना'** क्रिया का रूप जोड़िए।
- ❖ यदि कर्म के साथ विभक्ति (परसर्ग) लगी है तो उसे हटा दीजिए।

उदाहरण :

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. अध्यापक कक्षा में पढ़ाता है।	1. अध्यापक द्वारा कक्षा में पढ़ाया जाता है।
2. रमेश ने सुंदर कविताएँ लिखी हैं।	2. रमेश के द्वारा सुंदर कविताएँ लिखी गई हैं।
3. रवि पत्र लिख चुका है।	3. रवि के द्वारा पत्र लिखा जा चुका है।
4. बच्चे मैदान में खेलते हैं।	4. बच्चों द्वारा मैदान में खेला जाता है।
5. माली फूल तोड़ेगा।	5. माली द्वारा फूल तोड़े जाएँगे।
6. लड़की पाठ पढ़ती है।	6. लड़की से पाठ पढ़ा जाता है।
7. गीता ने कपड़ा खरीदा।	7. गीता द्वारा कपड़ा खरीदा गया।
8. लड़कियाँ नृत्य करती हैं।	8. लड़कियों द्वारा नृत्य किया जाता है।
9. इस भवन का उद्घाटन प्रधानमंत्री ने किया।	9. इस भवन का उद्घाटन प्रधानमंत्री द्वारा किया गया।
10. मैं कल पत्र लिखूँगा।	10. मेरे द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा।

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
1. कहारों द्वारा डोली उठाई गई।	1. कहारों ने डोली उठाई।
2. आज हमें गणित पढ़ाया गया।	2. आज हमने गणित पढ़ा।
3. सरकार द्वारा बाढ़-पीड़ितों की सहायता की गई।	3. सरकार ने बाढ़-पीड़ितों की सहायता की।
4. नानी द्वारा कहानी सुनाई जाती है।	4. नानी कहानी सुनाती है।
5. पुलिस द्वारा चोर पकड़े गए।	5. पुलिस ने चोर पकड़े।
6. मेरे द्वारा नाटक खेला गया।	6. मैंने नाटक खेला।
7. माताजी द्वारा खाना पकाया गया।	7. माताजी ने खाना पकाया।
8. मुझसे कहानी पढ़ी जाती है।	8. मैं कहानी पढ़ता हूँ।
9. धोबी द्वारा हमारे कपड़े धोए जाते हैं।	9. धोबी हमारे कपड़े धोता है।
10. मेरे द्वारा घोड़ा खरीदा गया।	10. मैंने घोड़ा खरीदा।

☞ कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना :

- ❖ क्रिया को अन्य पुरुष तथा एकवचन में रखिए।
- ❖ कर्ता के साथ **'से'** विभक्ति-चिह्न लगाइए।
- ❖ क्रिया को सामान्य भूतकाल में लाकर उसके साथ काल के अनुसार 'जाना' क्रियारूप जोड़िए।

उदाहरण :

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. विभा नहीं सोती।	1. विभा से सोया नहीं जाता।
2. वह चलता है।	2. उससे चला जाता है।
3. वह उठ नहीं सकता।	3. उससे उठा नहीं जाता।
4. हिरण तेज भागता है।	4. हिरण से तेज भागा जाता है।
5. पक्षी उड़ेंगे।	5. पक्षियों से उड़ा जाएगा।
6. मैं खड़ा नहीं हो सकता।	6. मुझसे खड़ा नहीं हुआ जाता।
7. उठो, जरा घूमें।	7. उठो, जरा घूमा जाए।
8. मैं इस गर्मी में सो नहीं सकता।	8. मुझसे इस गर्मी में सोया नहीं जा सकता।
9. घायल बिस्तर से नहीं उठ सकता।	9. घायल से बिस्तर से नहीं उठा जाता।
10. वह बैठ नहीं सकता।	10. उससे बैठा नहीं जाता।

☞ वाच्य संबंधी कुछ स्मरणीय बिंदु :

- ❖ कर्तृवाच्य में अकर्मक-सकर्मक दोनों प्रकार की क्रिया का प्रयोग होता है।
- ❖ कर्मवाच्य में क्रिया सदैव सकर्मक होती है।
- ❖ भाववाच्य की क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में रहती है।
- ❖ कर्मवाच्य में कर्ता के बाद 'से' अथवा 'द्वारा'/के द्वारा का प्रयोग किया जाता है।
- ❖ भाववाच्य में प्राय: 'से' का प्रयोग किया जाता है।
- ❖ 'से' का प्रयोग प्राय: निषेधात्मक वाक्यों में किया जाता है; जैसे-- मुझसे पढ़ा नहीं जाता।
- ❖ कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के निषेधात्मक वाक्यों में जहाँ **'कर्ता+से'** का प्रयोग होता है, वहाँ एक अन्य असमर्थता सूचक अर्थ की भी अभिव्यक्ति होती है; जैसे–
  1. मुझसे कॉफी नहीं पी जाती। 2. पिताजी से पैदल नहीं चला जाता।
- ❖ कर्तृवाच्य के निषेधात्मक वाक्यों को कर्मवाच्य और भाववाच्य दोनों में रूपांतरित किया जा सकता है।
- ❖ कर्मवाच्य के वाक्यों में प्राय: क्रिया में '+जा' रूप लगाकर 'किया जाता है', 'सोया जाता है', 'खाया जाता है' जैसे वाक्य बनाते हैं।
- ❖ कुछ व्युत्पन्न अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग भी कर्मवाच्य में होता है; जैसे–
  मजदूर पेड़ नहीं काट रहे।
  (क) मजदूरों से पेड़ नहीं काटा जाता।
  (ख) मजदूरों से पेड़ नहीं कट रहा।
- ❖ हिंदी में अकर्तृवाच्य (कर्मवाच्य तथा भाववाच्य) के वाक्यों में प्राय: कर्ता का लोप कर दिया जाता है; जैसे--
  1. पेड़ नहीं लगाया जा रहा। 2. मिठाई नहीं बन रही।
- ❖ हिंदी में क्रिया का एक ऐसा भी रूप है जो कर्मवाच्य की तरह प्रयुक्त होता है–वह है सकर्मक क्रिया से बना उसका अकर्मक रूप, जिसे व्युत्पन्न अकर्मक कहते हैं, जैसे :
  1. गिलास टूट गया। ('तोड़ना' से 'टूटना' रूप)
  2. हवा से दरवाजा खुल गया। ('खोलना' से 'खुलना' रूप)

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए वाच्य-परिवर्तन संबंधी प्रश्न

प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य बदलिए -

1. माताजी ने हमें खाना खिलाया।
- माताजी द्वारा हमें खाना खिलाया गया।

2. अध्यापक हमें पढ़ाते हैं।
- अध्यापकों द्वारा हम पढ़ाए जाते हैं।

3. छात्र ने पुस्तक उठाई।
- छात्र द्वारा पुस्तक उठाई गई।

4. **पुलिस के द्वारा डाकू को पकड़ा गया।**
- पुलिस ने डाकू को पकड़ा।

5. **छात्रों ने मेज उठाई।**
- छात्रों द्वारा मेज उठाई गई।

6. **सुरेन्द्र ने सुंदर गीत लिखे हैं।**
- सुरेंद्र के द्वारा सुंदर गीत लिखे गए हैं।

7. **नानी द्वारा कहानी सुनाई जाती थी।**
- नानी कहानी सुनाती थी।

8. **भगवान हमारी रक्षा करता है।**
- भगवान के द्वारा हमारी रक्षा की जाती है।

9. **पुलिस कल तक चोर पकड़ लेगी।**
- पुलिस द्वारा कल तक चोर पकड़ लिया जाएगा।

10. **सरकार द्वारा शिक्षा पर बहुत खर्च किया जाता है।**
- सरकार शिक्षा पर बहुत खर्च करती है।

11. **राम फोड़ा नहीं चिरवाएगा।**
- राम से फोड़ा नहीं चिरवाया जाएगा।

12. **मैं प्रतिदिन व्यायाम करता हूँ।**
- मेरे द्वारा प्रतिदिन व्यायाम किया जाता है।

13. **लड़कों द्वारा स्कूल साफ किया गया।**
- लड़कों ने स्कूल साफ किया।

14. **पक्षी आकाश में उड़ेंगे।**
- पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाएगा।

15. **वे इस कष्ट को नहीं सह सकते।**
- उनसे यह कष्ट नहीं सहा जा सकता।

16. **हम निमंत्रण पत्र कल लिखेंगे।**
- हमारे द्वारा निमंत्रण पत्र कल लिखे जाएँगे।

17. **तब कहारों द्वारा डोली उठाई गई।**
- तब कहारों ने डोली उठाई।

18. **पक्षी रात में सोते हैं।**
- पक्षियों से रात में सोया जाता है।

19. **आज हम लोग फल खाएँगे।**
- आज हम लोगों द्वारा फल खाये जाएँगे।

20. **कल देर तक पढ़े।**
- कल देर तक पढ़ा गया।

21. **सोहन नित्य टहलता है।**
- सोहन से नित्य टहला जाता है।

22. **वह दिन में फल खाता है।**
- उसके द्वारा दिन में फल खाए जाते हैं।

23. **गणेश के द्वारा महाभारत लिखा गया।**
- गणेश ने महाभारत लिखा।

24. **मैं सुबह पान खाता हूँ।**
- मेरे द्वारा सुबह पान खाया जाता है।

25. **आज घूमने चला जाए।**
- आज घूमने चलें।

26. **बच्चा खूब रोया।**
- बच्चे से खूब रोया गया।

27. **सीता ने खाना खाया।**
- सीता के द्वारा खाना खाया गया।

28. **लड़कों के द्वारा खूब पढ़ा गया।**
- लड़के खूब पढ़े।

29. **हम लोग रोज नहाते हैं।**
- हम लोगों से रोज नहाया जाता है।

30. **नानी से कहानी नहीं कही जाती।**
- नानी कहानी नहीं कह सकती।

31. **रमेश नाटक खेलता है।**
- रमेश के द्वारा नाटक खेला जाता है।

32. **चिड़ियाँ घोसलों में सोती हैं।**
- चिड़ियों से घोसलों में सोया जाता है।

33. **हामिद पतंग उड़ा रहा है।**
- हामिद के द्वारा पतंग उड़ाई जा रही है।

34. **गर्मियों में लोग खूब नहाते हैं।**
- गर्मियों में लोगों से खूब नहाया जाता है।

35. **मोहन से दूध नहीं पिया जा रहा है।**
- मोहन दूध नहीं पी रहा है।

36. **विद्यार्थियों द्वारा चित्र बनाए गए।**
- विद्यार्थियों ने चित्र बनाए।

37. **दादी कहानी सुनाएगी।**
- दादी द्वारा कहानी सुनाई जाएगी।

38. **वे इस दुर्दशा को नहीं देख सकते।**
- उनसे यह दुर्दशा नहीं देखी जा सकती।

39. **मुझसे यह पत्र नहीं लिखा गया।**
- मैं यह पत्र नहीं लिख सका।

40. **महात्मा गाँधी ने राष्ट्र को शांति और अहिंसा का संदेश दिया।**
- महात्मा गाँधी द्वारा राष्ट्र को शांति और अहिंसा का संदेश दिया गया।

41. **हम इतने दुःख नहीं सह सकते।**
- हमसे इतने दुख नहीं सहे जा सकते।

42. **मैं कविता पढ़ सकता हूँ।**
- मेरे द्वारा कविता पढ़ी जा सकती है।

43. **मीरा द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा।**
- मीरा कल पत्र लिखेगी।

44. **बच्चे शांत नहीं रह सकते।**
- बच्चों से शांत नहीं रहा जा सकता।

उदाहरण :

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. विभा नहीं सोती।	1. विभा से सोया नहीं जाता।
2. वह चलता है।	2. उससे चला जाता है।
3. वह उठ नहीं सकता।	3. उससे उठा नहीं जाता।
4. हिरण तेज भागता है।	4. हिरण से तेज भागा जाता है।
5. पक्षी उड़ेंगे।	5. पक्षियों से उड़ा जाएगा।
6. मैं खड़ा नहीं हो सकता।	6. मुझसे खड़ा नहीं हुआ जाता।
7. उठो, जरा घूमें।	7. उठो, जरा घूमा जाए।
8. मैं इस गर्मी में सो नहीं सकता।	8. मुझसे इस गर्मी में सोया नहीं जा सकता।
9. घायल बिस्तर से नहीं उठ सकता।	9. घायल से बिस्तर से नहीं उठा जाता।
10. वह बैठ नहीं सकता।	10. उससे बैठा नहीं जाता।

☞ **वाच्य संबंधी कुछ स्मरणीय बिंदु :**

❖ कर्तृवाच्य में अकर्मक-सकर्मक दोनों प्रकार की क्रिया का प्रयोग होता है।

❖ कर्मवाच्य में क्रिया सदैव सकर्मक होती है।

❖ भाववाच्य की क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में रहती है।

❖ कर्मवाच्य में कर्ता के बाद 'से' अथवा 'द्वारा'/के द्वारा का प्रयोग किया जाता है।

❖ भाववाच्य में प्राय: 'से' का प्रयोग किया जाता है।

❖ 'से' का प्रयोग प्राय: निषेधात्मक वाक्यों में किया जाता है; जैसे-- मुझसे पढ़ा नहीं जाता।

❖ कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के निषेधात्मक वाक्यों में जहाँ **'कर्ता+से'** का प्रयोग होता है, वहाँ एक अन्य असमर्थता सूचक अर्थ की भी अभिव्यक्ति होती है; जैसे–
1. मुझसे कॉफी नहीं पी जाती। 2. पिताजी से पैदल नहीं चला जाता।

❖ कर्तृवाच्य के निषेधात्मक वाक्यों को कर्मवाच्य और भाववाच्य दोनों में रूपांतरित किया जा सकता है।

❖ कर्मवाच्य के वाक्यों में प्राय: क्रिया में '+जा' रूप लगाकर 'किया जाता है', 'सोया जाता है', 'खाया जाता है' जैसे वाक्य बनाते हैं।

❖ कुछ व्युत्पन्न अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग भी कर्मवाच्य में होता है; जैसे–
मजदूर पेड़ नहीं काट रहे।
(क) मजदूरों से पेड़ नहीं काटा जाता।
(ख) मजदूरों से पेड़ नहीं कट रहा।

❖ हिंदी में अकर्तृवाच्य (कर्मवाच्य तथा भाववाच्य) के वाक्यों में प्राय: कर्ता का लोप कर दिया जाता है; जैसे--
1. पेड़ नहीं लगाया जा रहा। 2. मिठाई नहीं बन रही।

❖ हिंदी में क्रिया का एक ऐसा भी रूप है जो कर्मवाच्य की तरह प्रयुक्त होता है–वह है सकर्मक क्रिया से बना उसका अकर्मक रूप, जिसे व्युत्पन्न अकर्मक कहते हैं, जैसे :
1. गिलास टूट गया। ('तोड़ना' से 'टूटना' रूप)
2. हवा से दरवाजा खुल गया। ('खोलना' से 'खुलना' रूप)

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए वाच्य-परिवर्तन संबंधी प्रश्न

प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य बदलिए -

1. माताजी ने हमें खाना खिलाया।
- माताजी द्वारा हमें खाना खिलाया गया।

2. अध्यापक हमें पढ़ाते हैं।
- अध्यापकों द्वारा हम पढ़ाए जाते हैं।

3. छात्र ने पुस्तक उठाई।
- छात्र द्वारा पुस्तक उठाई गई।

4. **पुलिस के द्वारा डाकू को पकड़ा गया।**
- पुलिस ने डाकू को पकड़ा।

5. **छात्रों ने मेज उठाई।**
- छात्रों द्वारा मेज उठाई गई।

6. **सुरेन्द्र ने सुंदर गीत लिखे हैं।**
- सुरेंद्र के द्वारा सुंदर गीत लिखे गए हैं।

7. **नानी द्वारा कहानी सुनाई जाती थी।**
- नानी कहानी सुनाती थी।

8. **भगवान हमारी रक्षा करता है।**
- भगवान के द्वारा हमारी रक्षा की जाती है।

9. **पुलिस कल तक चोर पकड़ लेगी।**
- पुलिस द्वारा कल तक चोर पकड़ लिया जाएगा।

10. **सरकार द्वारा शिक्षा पर बहुत खर्च किया जाता है।**
- सरकार शिक्षा पर बहुत खर्च करती है।

11. **राम फोड़ा नहीं चिरवाएगा।**
- राम से फोड़ा नहीं चिरवाया जाएगा।

12. **मैं प्रतिदिन व्यायाम करता हूँ।**
- मेरे द्वारा प्रतिदिन व्यायाम किया जाता है।

13. **लड़कों द्वारा स्कूल साफ किया गया।**
- लड़कों ने स्कूल साफ किया।

14. **पक्षी आकाश में उड़ेंगे।**
- पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाएगा।

15. **वे इस कष्ट को नहीं सह सकते।**
- उनसे यह कष्ट नहीं सहा जा सकता।

16. **हम निमंत्रण पत्र कल लिखेंगे।**
- हमारे द्वारा निमंत्रण पत्र कल लिखे जाएँगे।

17. **तब कहारों द्वारा डोली उठाई गई।**
- तब कहारों ने डोली उठाई।

18. **पक्षी रात में सोते हैं।**
- पक्षियों से रात में सोया जाता है।

19. **आज हम लोग फल खाएँगे।**
- आज हम लोगों द्वारा फल खाये जाएँगे।

20. **कल देर तक पढ़े।**
- कल देर तक पढ़ा गया।

21. **सोहन नित्य टहलता है।**
- सोहन से नित्य टहला जाता है।

22. **वह दिन में फल खाता है।**
- उसके द्वारा दिन में फल खाए जाते हैं।

23. **गणेश के द्वारा महाभारत लिखा गया।**
- गणेश ने महाभारत लिखा।

24. **मैं सुबह पान खाता हूँ।**
- मेरे द्वारा सुबह पान खाया जाता है।

25. **आज घूमने चला जाए।**
- आज घूमने चलें।

26. **बच्चा खूब रोया।**
- बच्चे से खूब रोया गया।

27. **सीता ने खाना खाया।**
- सीता के द्वारा खाना खाया गया।

28. **लड़कों के द्वारा खूब पढ़ा गया।**
- लड़के खूब पढ़े।

29. **हम लोग रोज नहाते हैं।**
- हम लोगों से रोज नहाया जाता है।

30. **नानी से कहानी नहीं कही जाती।**
- नानी कहानी नहीं कह सकती।

31. **रमेश नाटक खेलता है।**
- रमेश के द्वारा नाटक खेला जाता है।

32. **चिड़ियाँ घोसलों में सोती हैं।**
- चिड़ियों से घोसलों में सोया जाता है।

33. **हामिद पतंग उड़ा रहा है।**
- हामिद के द्वारा पतंग उड़ाई जा रही है।

34. **गर्मियों में लोग खूब नहाते हैं।**
- गर्मियों में लोगों से खूब नहाया जाता है।

35. **मोहन से दूध नहीं पिया जा रहा है।**
- मोहन दूध नहीं पी रहा है।

36. **विद्यार्थियों द्वारा चित्र बनाए गए।**
- विद्यार्थियों ने चित्र बनाए।

37. **दादी कहानी सुनाएगी।**
- दादी द्वारा कहानी सुनाई जाएगी।

38. **वे इस दुर्दशा को नहीं देख सकते।**
- उनसे यह दुर्दशा नहीं देखी जा सकती।

39. **मुझसे यह पत्र नहीं लिखा गया।**
- मैं यह पत्र नहीं लिख सका।

40. **महात्मा गाँधी ने राष्ट्र को शांति और अहिंसा का संदेश दिया।**
- महात्मा गाँधी द्वारा राष्ट्र को शांति और अहिंसा का संदेश दिया गया।

41. **हम इतने दुःख नहीं सह सकते।**
- हमसे इतने दुख नहीं सहे जा सकते।

42. **मैं कविता पढ़ सकता हूँ।**
- मेरे द्वारा कविता पढ़ी जा सकती है।

43. **मीरा द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा।**
- मीरा कल पत्र लिखेगी।

44. **बच्चे शांत नहीं रह सकते।**
- बच्चों से शांत नहीं रहा जा सकता।

45. **राम नहीं सोता।**
- राम से सोया नहीं जाता।

46. **राम से पढ़ा नहीं जाता।**
- राम नहीं पढ़ता।

47. **सोहन फुटबाल नहीं खेलता।**
- सोहन से फुटबाल नहीं खेला जाता।

48. **मैं खाना नहीं खाऊँगा।**
- मेरे द्वारा खाना नहीं खाया जाएगा।

49. **सुरेश द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा।**
- सुरेश कल पत्र लिखेगा।

50. **मैं सर्दियों में शीतल जल से नहीं नहाता।**
- मेरे द्वारा सर्दियों में शीतल जल से नहीं नहाया जाता।

51. **अमित से दौड़ा नहीं जाता।**
- अमित दौड़ नहीं सकता।

52. **मैंने वह दृश्य नहीं देखा।**
- मेरे द्वारा वह दृश्य नहीं देखा गया।

53. **शोभना गीत गाती है।**
- शोभना द्वारा गीत गाया जाता है।

54. **रमेश पाठ याद करता है।**
- रमेश द्वारा पाठ याद किया जाता है।

55. **मोहन से पढ़ा नहीं जाता।**
- मोहन पढ़ नहीं सकता।

56. **मैंने खाना खाया।**
- मेरे द्वारा खाना खाया गया।

57. **बच्चा सोता है।**
- बच्चे से सोया जाता है।

58. **मोहन अखबार नहीं पढ़ता।**
- मोहन से अखबार नहीं पढ़ा जाता।

59. **सोहन सिनेमा नहीं देखता।**
- सोहन द्वारा सिनेमा नहीं देखा जाता।

60. **तुम दान दोगे।**
- तुम्हारे द्वारा दान दिया जाएगा।

61. **पक्षी आकाश में उड़ते हैं।**
- पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।

62. **उनसे पढ़ा नहीं जा सकता।**
- वे पढ़ नहीं सकते।

63. **शोभा भाग नहीं सकती।**
- शोभा द्वारा भागा नहीं जा सकता।

64. **बच्चे खेल रहे हैं।**
- बच्चों द्वारा खेला जा रहा है।

65. **सुरेश हँस नहीं पाता।**
- सुरेश द्वारा हँसा नहीं जाता।

66. **क्या मुझे धोखा दिया है ?**
- मुझे धोखा दिया गया है।

67. **बच्चे निबंध लिख रहे हैं।**
- बच्चों द्वारा निबंध लिखा जा रहा है।

68. **बाढ़ पीड़ितों को सहायता दी।**
- बाढ़ पीड़ितों के लिए सहायता दी गई।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए :

1. राकेश पुस्तक पढ़ता है।
2. रमा दूध पी रही है।
3. पक्षी आकाश में उड़ते हैं।
4. मैंने वह दृश्य नहीं देखा।
5. सोहन अखबार नहीं पढ़ता।
6. मैंने खाना खाया।
7. तुम लिख नहीं सकते।
8. छात्र पुस्तक पढ़ेंगे।
9. न्यायाधीश दोषी को दंड देंगे।
10. बाढ़ ने मकानों को गिरा दिया।
11. पिताजी मिठाई लाते हैं।
12. विद्यार्थी परीक्षा दे रहे हैं।
13. गाय दूध देती है।
14. अशोक पुस्तक पढ़ता है।
15. मंत्री जी पुल का उद्घाटन करेंगे।
16. माली कल पौधे लगाएगा।
17. तुम दान दोगे।
18. बच्चों ने चित्र बनाए।
19. हमने परीक्षा दी।
20. चिड़िया उड़ रही है।

2. निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में बदलिए :

1. बालक द्वारा पत्र लिखा जाएगा।
2. छात्रों द्वारा परिश्रम किया जाएगा।
3. डॉक्टर द्वारा रोगी को दवा दी गई।
4. मोहन से पढ़ा नहीं जाता।
5. बालक से पत्र लिखा जाता है।
6. मंत्री जी द्वारा उद्घाटन किया गया।
7. माली द्वारा पौधे लगाए गए।
8. बच्चों द्वारा नाटक खेला गया।
9. सरकार द्वारा सूचित किया गया।
10. बालिका से गाना गाया गया।

3. निम्नलिखित वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए :

1. बच्चा सोता है।
2. मैं अब चल नहीं सकता।
3. वह बैठ नहीं सकता।
4. पक्षी रात में सोते हैं।
5. रोगी बिस्तर से नहीं उठता।
6. पक्षी आकाश में उड़ते हैं।
7. बच्चे जागेंगे।
8. राम नहीं सोता।
9. मैं नहा नहीं सकता।
10. वह धूप में खड़ा नहीं होता।

4. निर्देशानुसार कीजिए :

1. मुझसे गलती हो गई। *(वाच्य बताइए)*
2. बच्चा सोता नहीं है। *(भाववाच्य में बदलिए)*
3. मैं बैठ नहीं सकता। *(वाच्य बताइए)*
4. बाढ़-पीड़ितों को सहायता दी। *(वाच्य बदलिए)*
5. बच्चे से गिलास टूट गया। *(वाच्य बताइए)*
6. पक्षी आकाश में उड़ते हैं। *(भाववाच्य में बदलिए)*
7. सुरेश द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा। *(कर्तृवाच्य में बदलिए)*
8. रमेश पाठ याद करता है। *(कर्मवाच्य में बदलिए)*
9. नानी द्वारा कहानी नहीं सुनाई जाती। *(वाच्य का नाम बताइए)*
10. गर्मियों में लोग छत पर सोते हैं। *(वाच्य परिवर्तित कीजिए)*
11. बालक खूब हँसे। *(वाच्य बताइए)*
12. मैं यह भाषा नहीं पढ़ सकूँगा। *(वाच्य बताइए)*
13. अब चलते हैं। *(भाववाच्य में बदलिए)*
14. उन्होंने घूमकर माँ का कमरा देखा। *(कर्मवाच्य में बदलिए)*
15. आपको सूचित किया जाता है। *(वाच्य का नाम बताइए)*
16. धोबी ने कपड़े धोए हैं। *(कर्मवाच्य में बदलिए)*
17. चलो, अब सोते हैं। *(भाववाच्य में बदलिए)*
18. मैं आपको नई फुलकारी बना दूँगा। *(कर्मवाच्य में बदलिए)*
19. मुझसे उठा नहीं जाता। *(कर्तृवाच्य में बदलिए)*
20. माँ ने बच्चों को बहुत समझाया। *(वाच्य का नाम बताइए)*

पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के पाठ 'नेताजी का चश्मा' में पूछे गए वाच्य संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए।

(क) वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता था।

(ख) पान वाला नया पान खा रहा था।

(ग) पान वाले ने साफ बता दिया था।

(घ) ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारा।

(ङ) नेताजी ने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया।

(च) हालदार साहब ने चश्मे वाली की देशभक्ति का सम्मान किया।

2. नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए :

(क) माँ बैठ नहीं सकती। (ख) अब चलते हैं। (ग) मैं देख नहीं सकती।

(घ) चलो, अब सोते हैं। (ङ) माँ रो भी नहीं सकती।

C.B.S.E. की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए वाच्य संबंधी प्रश्न

(CBSE 2009 Comptt. Delhi)

(Set I)

प्रश्न 1. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(*i*) बीमारी के कारण वह नहीं दौड़ी। *(भाववाच्य में)*

(*ii*) मोहन से उठा नहीं जाता । *(कर्तृवाच्य में)*

(*iii*) प्रार्थना-सभा में घोषणा हुई । *(कर्मवाच्य में)*

उत्तर : (*i*) बीमारी के कारण उससे दौड़ा नहीं गया ।

(*ii*) मोहन उठ नहीं सकता।

(*iii*) प्रार्थना-सभा में घोषणा की गई।

(Set II)

निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(*i*) अनेक संस्थाओं ने बाढ़-पीड़ितों के लिए सहायता की अपील की । *(कर्मवाच्य में)*

(*ii*) आइए चलें । *(भाववाच्य में)*

(*iii*) बूढ़े आदमी से चला नहीं जाता । *(कर्तृवाच्य में)*

उत्तर : (*i*) अनेक संस्थाओं द्वारा बाढ़-पीड़ितों के लिए सहायता की अपील की गई ।

(*ii*) आइए, चला जाए ।

(*iii*) बूढ़ा आदमी चल नहीं सकता ।

(Set III)

निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(i) वह नदी पार नहीं कर सकता । (कर्मवाच्य में)

(ii) उसके द्वारा सभी प्रश्न हल कर लिए गए । (कर्तृवाच्य में)

(iii) वह बैठ नहीं सकता है । (भाववाच्य में)

उत्तर : (i) उसके द्वारा नदी पार नहीं की जा सकती।

(ii) उसने सभी प्रश्नों को हल कर लिया ।

(iii) उससे बैठा नहीं जा सकता ।

(CBSE 2009 Delhi)

निर्देशानुसार वाच्य बदलिए : (Set I, II)

(i) निष्ठावान कर्मयोगी ही सदा ऐसे काम किया करते हैं। (कर्मवाच्य में)

(ii) नेहरू जी द्वारा अपने देश के लिए समस्त सुख-सुविधाएँ त्याग दी गईं। (कर्तृवाच्य में)

(iii) वह बेचारी रो भी नहीं सकती। (भाववाच्य में)

उत्तर : (i) निष्ठावान कर्मयोगी द्वारा ही ऐसे काम किए जाते हैं।

(ii) नेहरू जी ने देश के लिए समस्त सुख-सुविधाएँ त्याग दी।

(iii) उस बेचारी से रोया भी नहीं जा सकता।

(CBSE 2009 Outside)

प्रश्न 1. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए : (Set I)

(i) वह सच बोले बिना नहीं रह सकता। (भाववाच्य में)

(ii) इस युद्ध ने अनेक बच्चों को अनाथ कर दिया। (कर्मवाच्य में)

(iii) यह सुंदर रचना इस तुलसी के द्वारा रची गई है। (कर्तृवाच्य में)

उत्तर : (i) उससे सच बोले बिना नहीं रहा जाता।

(ii) इस युद्ध के द्वारा अनेक बच्चे अनाथ कर दिए गए।

(iii) इस सुंदर रचना को तुलसी ने रचा है।

(Set II)

निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(i) वह बाढ़ग्रस्त लोगों के लिए राहत जुटा रहा है। (कर्मवाच्य में)

(ii) आज अदालत द्वारा उसको जमानत दी गई। (कर्तृवाच्य में)

(iii) आओ! साथ मिलकर खेलें। (भाववाच्य में)

उत्तर : (i) उसके द्वारा बाढ़ग्रस्त लोगों के लिए राहत जुटाई जा रही है।

(ii) अदालत ने आज उसको जमानत दे दी।

(iii) आओ, साथ मिलकर खेला जाए।

(Set III)

निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(i) मैं सो नहीं सकता हूँ। (भाववाच्य में)

(ii) तुम्हें यहाँ किसने भेजा है? (कर्मवाच्य मे

(iii) विद्वानों द्वारा जो कहा जाता है उसको सुना जाए। (कर्तृवाच्य मे

उत्तर : (i) मुझसे सोया नहीं जाता है।

(ii) किसके द्वारा तुम यहाँ भेजे गए हो?

(iii) विद्वानों की कही बात को सुना जाए।

(CBSE 2008 Outside)

निर्देशानुसार वाच्य बदलिए :

(i) इस पत्र को आज की डाक से भेजें। (कर्मवाच्य मे

(ii) स्वामीजी द्वारा समाज-सुधार के लिए क्या कुछ न किया गया। (कर्तृवाच्य मे

(iii) चलो, अब सोते हैं। (भाववाच्य मे

उत्तर : (i) यह पत्र आज की डाक से भेजा जाए।

(ii) स्वामीजी ने समाज-सुधार के लिए बहुत कुछ किय

(iii) चलो, अब सोया जाए।

(CBSE 2008 Delhi)

प्रश्न 1. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए : (Set I

(i) ज्योति कार अच्छी तरह नहीं चलाती। (कर्मवाच्य में)

(ii) उर्दू में लिखित पत्र मुझसे नहीं पढ़ा जाएगा। (कर्तृवाच्य में

(iii) गीता चल नहीं सकती। (भाववाच्य में

उत्तर : (i) ज्योति के द्वारा अच्छी तरह कार नहीं चला जाती।

(ii) मैं उर्दू में लिखित पत्र नहीं पढ़ पाऊँगा।

(iii) गीता से चला नहीं जा सकता।

(Set II)

(i) उनके द्वारा इस झगड़े की पूरी जाँच की गई। (कर्तृवाच्य

(ii) तानसेन को 'संगीत सम्राट' भी कहते हैं। (कर्मवाच्य

(iii) अब मैं नहीं चल सकता। (भाववाच्य

उत्तर : (i) उन्होंने इस झगड़े की पूरी जाँच की।

(ii) तानसेन को संगीत सम्राट भी कहा जाता है।

(iii) अब मुझसे चला नहीं जा सकता।

(Set III)

(i) मैं दरवाजा नहीं खोल सकता। (कर्मवाच्य

(ii) सुनीता विलियम्स द्वारा उद्‌घाटन किया गया। (कर्तृवाच्य

(iii) मैं सोच नहीं सकता। (भाववाच्य

उत्तर : (i) मेरे द्वारा दरवाजा नहीं खोला जा सकता।

(ii) सुनीता विलियम्स ने उद्‌घाटन किया।

(iii) मुझसे सोचा नहीं जा सकता।

अध्याय 12

अव्यय/अविकारी शब्द

(Indeclinable Words)

पिछले अध्यायों में आपने संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया के संबंध में जानकारी प्राप्त की। ये चारों प्रकार के शब्द विकारी हैं। ये शब्द लिंग, वचन, पुरुष, काल के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप लेते हैं।

इस अध्याय में हम उन शब्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष के कारण परिवर्तन नहीं होता, अर्थात् व्यय नहीं होता।

> ☞ *अव्यय (अविकारी) वे शब्द हैं जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, काल के कारण विकार नहीं आता।*

अव्यय के निम्नलिखित **पाँच** भेद हैं :

1. क्रिया-विशेषण *(Adverb)*
2. संबंधबोधक *(Post-Position)*
3. समुच्चयबोधक *(Conjunction)*
4. विस्मयादिबोधक *(Interjection)*
5. निपात *(Emphasis)*
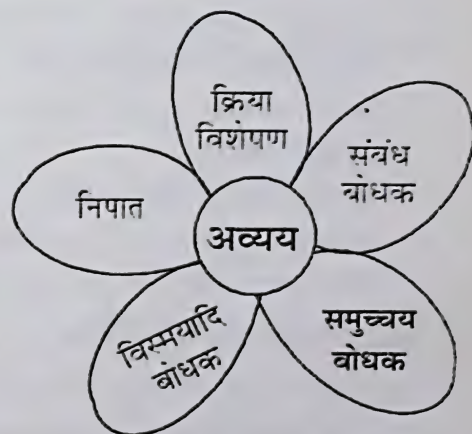
1. क्रिया-विशेषण *(Adverb)*

निम्नांकित वाक्यों के रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए :

1. वह धीरे-धीरे चल रही है।
2. मोहन कल आएगा।
3. आप यहाँ बैठिए।
4. कम खाओ।

आपने देखा कि रेखांकित शब्द क्रिया से पहले लगकर उसकी विशेषता बता रहे हैं। ये शब्द क्रियाविशेषण का कार्य कर रहे हैं।

> ☞ *क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द (पद) को क्रिया-विशेषण कहते हैं।*

क्रियाविशेषण के **चार** भेद हैं :

1. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण
2. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण
3. कालवाचक क्रिया-विशेषण
4. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

(1) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण *(Adverb of Manner)* : जिन क्रिया-विशेषणों से क्रिया के होने की रीति या विधि से संबंधित विशेषता का पता चलता है, उन्हें रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे —

(क) गाड़ी **तेज** चल रही है।
(ख) मैं **ध्यानपूर्वक** सुन रहा हूँ।
(ग) राकेश **भली-भाँति** रह रहा है।
(घ) वह **चुपके से** खा रहा है।

(2) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण *(Adverb of Quantity)* : परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण वह क्रिया-विशेषण है जो क्रिया के परिमाण या मात्रा से संबंधित विशेषता का बोध कराता है। यह बताता है कि क्रिया मात्रा में कितनी हुई, जैसे—

(क) वह **बहुत** थक गया है।
(ख) रमेश **कुछ** मुस्कराया।
(ग) **कम** खाया करो।
(घ) **उतना** खाओ, **जितना** पचा सको।

(3) कालवाचक क्रिया-विशेषण *(Adverb of Time)* : कालवाचक क्रिया-विशेषण क्रिया के घटित होने के काल (स
के बारे में बताता है। जैसे--

(क) गीता **अभी** आई है। (ख) महेश **ऊपर** बैठा है।

यह तीन प्रकार का होता है:

(1) कालबिंदुवाचक : आज, कल, अब, अभी, कभी, सायं, प्रातः आदि।

(2) अवधिवाचक : सदैव, दिनभर, आजकल, नित्य, लगातार आदि।

(3) बारंबारता : प्रतिदिन, रोज, हर बार, बहुधा आदि।

(4) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण *(Adverb of Place)* : स्थानवाचक क्रिया-विशेषण क्रिया के स्थान से संबं
विशेषता का बोध कराता है। जैसे—

(क) राम **ऊपर** बैठा है। (ख) वह **बाहर** खड़ा है।

यह दो प्रकार का होता है :

(क) स्थितिवाचक : आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, पास, दूर, भीतर, बाहर, यहाँ, वहाँ, सर्वत्र आदि।

(ख) दिशावाचक : इधर-उधर, दाहिने, बाएँ, की तरफ, की ओर, के चारों ओर आदि।

☞ समझो :

❖ कालवाचक, स्थानवाचक और परिमाणवाचक क्रिया-विशेषणों की कोटि में न आने वाले अन्य सभी क्रिया-विशे
रीतिवाचक क्रिया-विशेषण के अंतर्गत रखे जाते हैं। कुछ प्रमुख उदाहरण हैं:

विधि-बोधक : ध्यानपूर्वक, सहसा, परिश्रमपूर्वक, धीरे-धीरे आदि।

निश्चय-बोधक : अवश्य, सचमुच, वस्तुतः, निःसंदेह आदि।

स्वीकृति-बोधक : हाँ, जी, ठीक, सच, बिल्कुल आदि।

आकस्मिकता-बोधक : सहसा, अचानक, एकाएक, अकस्मात् आदि।

❖ **पहचान** : यदि वाक्य की मुख्य क्रिया के साथ **'कैसे'** प्रश्न लगा दिया जाए, तो उत्तर में रीतिवाचक क्रिया-विशेषण आ
जैसे — वह **सरपट** दौड़ा। वह कैसे दौड़ा ? उत्तर होगा — 'सरपट'। अतः सरपट रीतिवाचक क्रिया-विशेषण है।

क्रिया-विशेषणों की रचना *(Construction of Adverbs)*

कुछ शब्द तो अपने मूल/सरल रूप में ही क्रियाविशेषण होते हैं, जैसे—आज, ऊपर आदि।

कुछ शब्द प्रत्यय लगाने से या **समास-रचना** द्वारा क्रिया-विशेषण बनते हैं।

(क) मूल क्रिया-विशेषण : ये शब्द मूल रूप में ही क्रियाविशेषण होते हैं; जैसे—आज, अब, यहाँ, इधर, नीचे आदि।

(ख) यौगिक क्रिया-विशेषण : ये मूल रूप में संज्ञा आदि होते हैं और किसी-न-किसी प्रत्यय या निपात का सहारा
हैं अथवा किसी शब्द के साथ मिलकर समास/युग्म शब्द बनकर आते हैं। जैसे—ध्यानपूर्वक, स्वभावतः, वस्तुतः, धीरे-
दिन-रात आदि।

प्रविशेषण

हम विशेषण के अध्याय में पढ़ चुके हैं कि विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।
जैसे— उसने **गहरी** नीली साड़ी पहन रखी है।

इसी प्रकार प्रविशेषणों का प्रयोग क्रिया-विशेषणों के साथ भी होता है। जैसे—

1. उषा **बहुत** तेज दौड़ती है।
2. उसने **बहुत** मधुर गाया।

क्रिया विशेषण के संबंध में जानने योग्य बिंदु :

❖ यद्यपि क्रियाविशेषण अविकारी शब्द हैं, पर कभी-कभी कुछ क्रियाविशेषण शब्दों में परिवर्तन भी आ जाता है।
जैसे— वह **अच्छा** गाती है। वह धोती **अच्छी** धुली है।

❖ अनेक शब्द ऐसे हैं जो विशेषण तथा क्रिया-विशेषण दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं। अतः प्रयोग के आधार पर इनका तर ज्ञात होता है। जैसे—

शब्द	विशेषण के रूप में	क्रियाविशेषण के रूप में
मीठा	मुझे **मीठा** आम दो।	वह **मीठा** गाती है।
कुछ	**कुछ** लड्डू लाओ।	**कुछ** खाओ।
थोड़ा	**थोड़ा** पानी पी लो।	**थोड़ा** सो लो।

❖ विशेषण संज्ञा की विशेषता बताते हैं और क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं।

2. संबंधबोधक *(Post-Position or Preposition)*

नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित वाक्यांश को देखिए :

1. रहीम सलमा के साथ अपने घर जाएगा।
2. आज तुम्हें बादशाह अकबर के बारे में पढ़ाएँगे।
3. शशांक घर के बाहर खड़ा है।
4. झंडा भवन के ऊपर लहरा रहा है।
5. घर के पीछे गाड़ी खड़ी है।

उपर्युक्त वाक्यों में आप देख रहे हैं कि 'के साथ, के बारे में, के बाहर, के ऊपर, के पीछे' आदि ऐसे शब्द हैं जो वाक्य आए संज्ञा/सर्वनामों के मध्य संबंध स्थापित कर रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं :

जो अव्यय संज्ञा-सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों (संज्ञा-सर्वनाम) के साथ बताते हैं, वे संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं।

संबंधबोधक के प्रकार :

1. क्रिया-विशेषणात्मक संबंधबोधक : क्रिया-विशेषण के समान ये काल, स्थान या दिशा को प्रकट करते हैं।

जैसे— (क) मोहन घर के बाहर सो रहा है। (*'के बाहर'* संबंधबोधक है।)

(ख) मोहन बाहर सो रहा है। (*'बाहर' क्रिया-विशेषण है।*)

कुछ प्रमुख अव्यय हैं : के पहले, के बाद, के ऊपर, के भीतर, की ओर, की तरफ आदि।

2. अन्य संबंधबोधक : ये भाँति-भाँति के अर्थ व्यक्त करते हैं :

1. के कारण, की वजह से, के द्वारा/द्वारा, के मारे, के हाथ (से) आदि।
2. के लिए, के वास्ते, के खातिर, के हेतु, के निमित्त आदि।
3. के संग, के साथ आदि।
4. के बिना, के बगैर, के अतिरिक्त, के अलावा आदि।
5. की अपेक्षा, की तुलना में, के समान आदि।
6. के बदले, की जगह में आदि।
7. के विपरीत, के विरुद्ध, के प्रतिकूल, के अनुसार, के अनुकूल आदि।
8. के बाबत, के विषय में आदि।

वाक्य प्रयोग :

1. मैं छुट्टी होने **के कारण** अनुपस्थित रहा।
2. मैं देश **के लिए** सर्वस्व अर्पित कर दूँगा।
3. मैंने दही **के साथ** रोटी खाई।
4. राम **के बिना** काम नहीं चलेगा।
5. मैं रोटी **की जगह** चावल खाऊँगा।

संबंधबोधक अव्यय के प्रयोग : ये अव्यय तीन प्रकार से प्रयुक्त होते हैं :

(क) विभक्ति सहित : घर **के आगे** नीम का पेड़ है। वह दर्द **के मारे** कराह रहा है।

(ख) विभक्ति रहित : उसने **जीवनपर्यंत** वचन निभाया।

(ग) दोनों प्रकार से : मुझे पत्र **के द्वारा** सूचित करना। उसने पत्र **द्वारा** सूचना भेजी थी।

3. समुच्चयबोधक (योजक) *(Conjunction)*

जो अव्यय दो शब्दों, दो वाक्यांशों या दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक या योजक कहते हैं।

1. माता **और** पिता। (*शब्द-समुच्चय*)
2. मैंने परिश्रम तो किया, **किंतु** सफलता नहीं मिली। (*वाक्यांश-योजक*)
3. प्रातःकाल हो गया **और** चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। (*वाक्य-योजक*)

❖ समुच्चयबोधक जोड़ने के अलावा कुछ अन्य कार्य भी करते हैं, जैसे—

(क) जोड़ने का काम : और, तथा, एवं (*राम और श्याम आए थे।*)

(ख) विरोध बताने का काम : लेकिन, मगर, किंतु, परंतु (*मैं आना चाहता था परंतु न आ सका।*)

(ग) कारण, परिणाम आदि बताने का काम : इसलिए, इस कारण, अतः, क्योंकि, ताकि (*मैं आगरा गया था, आपसे न मिल सका।*)

(घ) विकल्प बताने का कार्य : या, अथवा, चाहे (*तुम चाय लो अथवा कॉफी।*)

समुच्चयबोधक के भेद : इसके दो भेद हैं :

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक (*Coordinate Conjunction*)
2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक (*Subordinate Conjunction*)

आइए, अब इन दोनों को विस्तारपूर्वक समझें :

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक या योजक : समानता के आधार पर समान स्थिति वाले पदों/वाक्यांशों अथवा वा को जोड़ने वाले समुच्चयबोधक पद **समानाधिकरण समुच्चयबोधक** कहलाते हैं। जैसे—

हमें अपनी सभ्यता **और** संस्कृति पर गर्व है।

भेद : ये चार प्रकार के होते हैं :

(क) संयोजक : और, तथा, एवं
राम और लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न।

(ख) विकल्पक: या, अथवा, अन्यथा
1. तुमने किताब पढ़ी **अथवा** नहीं पढ़ी। 2. पढ़ाई करो **अन्यथा** फेल हो जाओ
3. तुम्हें घड़ी **या** साईकिल मिलेगी।

(ग) विरोधदर्शक : पर, परंतु, किंतु, लेकिन, मगर, बल्कि
1. मोहन न केवल पढ़ाई में **बल्कि** खेल-कूद में भी तेज़ है।
2. वह नालायक है **पर** पास हो जाता है।
3. चोर पकड़ने का बहुत प्रयास किया **लेकिन** वह भाग गया।

(घ) परिणामदर्शक : अतः, फलतः, इसलिए, फलस्वरूप, परिणामस्वरूप
1. उसने मेहनत नहीं की **अतः** फेल हो गया।
2. उसे अच्छी नौकरी मिल गई **इसलिए** घमंड आ गया है।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक या योजक : एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को प्रधान वाक्य से जोड़ने अव्यय व्यधिकरण समुच्चयबोधक (*योजक*) कहलाते हैं। [ऐसा मिश्र वाक्य में होता है।]

प्रमुख व्यधिकरण समुच्चयबोधक हैं : चूँकि, इसलिए, यद्यपि, तथापि, कि, क्योंकि, यहाँ तक कि, ताकि आदि। जैसे

(क) धर्म कहता है **कि** ईश्वर एक है।

(ख) मैं अधिक नहीं बोल सकता **क्योंकि** मेरा गला खराब है।

(ग) मैंने स्पष्ट नहीं कहा **ताकि** उसे बुरा न लगे।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद हैं :

1. कारण (हेतु) बोधक : (*क्योंकि, चूँकि, इसलिए, ताकि*)

इन अव्यय शब्दों से प्रधान वाक्य और आश्रित उपवाक्यों में कार्य-कारण का संबंध ज्ञात होता है। जैसे—

1. वह परीक्षा न दे सका **क्योंकि** वह बीमार था। 2. आपको घर जाना चाहिए **ताकि** आराम कर सको।

2. संकेतबोधक : (*यद्यपि, तथापि, यदि तो, परंतु*)

1. **यद्यपि** वर्षा हुई परंतु गर्मी न मिट सकी।
2. **यदि** तुम चाहो **तो** नौकरी कर सकते हो।

3. स्वरूपबोधक : (*अर्थात्, मानो, यानी, यहाँ तक*)

1. ईश्वर सर्वव्यापी है **अर्थात्** सब जगह समाया है।
2. ऐसा लग रहा था **मानो** बादल छाए हों।

4. उद्देश्यबोधक : (*ताकि, जिससे, कि*)

1. मैं बीच में बोल उठा **ताकि** वह कुछ कह न सके।
2. वह दिन-रात पढ़ता है **जिससे** परीक्षा में प्रथम आ सके।

4. विस्मयादिबोधक *(Interjection)*

विस्मयादिबोधक (*विस्मय + आदि + बोधक*) शब्द वे शब्द हैं जो विस्मय (*आश्चर्य*), हर्ष, शोक, घृणा, दुख आदि मनोभावों का बोध कराते हैं। जैसे—

1. **अहा!** कितना सुंदर दृश्य है।
2. **अरे!** आप कब आए ?

इनका उद्देश्य सुनने वाले को कोई सूचना देना नहीं होता बल्कि ये शब्द स्वतः (*अपने आप*) मुँह से निकल जाते हैं। ये निम्नलिखित हैं :

विस्मय (*आश्चर्य*) बोधक : हैं! अरे! क्या! एँ!
हर्ष (*उल्लास*) बोधक : वाह ! आह ! क्या खूब ! सुंदर !
प्रोत्साहन (*प्रशंसा*) बोधक : शावास ! बहुत सुंदर !
व्यथा-पीड़ा बोधक : हाय ! उफ़ ! ओह ! हे राम !
संवेदना बोधक : हाय ! राम-राम ! तौबा - तौबा !
घृणा बोधक : छिः ! छिः ! छिः !...
तिरस्कार बोधक : धिक् ! धिक्कार ! हट ! ओफ।
चेतावनी बोधक : बचो ! होशियार ! अरे ! हटो !
संबोधन बोधक : हे ! अजी !
क्रोध बोधक : अरे ! धुत् ! ठहर ! परे हट !
स्वीकृति बोधक : अच्छा ! ठीक ! बहुत अच्छा ! जी हाँ !

❖ कभी-कभी संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया या वाक्यांश तक विस्मयादिबोधक का कार्य करते हैं,

जैसे — **संज्ञा** : राम-राम ! बाप रे !
विशेषण : सुंदर ! बहुत अच्छे !
सर्वनाम : कौन ! आप !
क्रिया : चुप ! आ गए !
वाक्यांश : क्या कहा ! मारे गए !

5. निपात *(Emphasis)*

हिंदी में कुछ ऐसे अव्यय शब्द भी हैं जो वाक्य में किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल देते हैं। इन्हें **निपात** या **अवधारक** कहते हैं।

कुछ महत्त्वपूर्ण निपात ये हैं :

1. ही : मोहन **ही** जा रहा है। वह दिल्ली **ही** जा रहा है। वह चावल **ही** खाता है।
2. भी : सचिन **भी** जा रहा है। वह आगरा **भी** जाएगा। वह क्रिकेट **भी** देखेगा।
3. तो : मोहन **तो** गया ही था। मोहन पढ़ता **तो** है। मुझे जीने **तो** दो।
4. तक : तुम गए **तक** नहीं। तुमने पत्र **तक** नहीं लिखा। उसने खाया **तक** नहीं।
5. मात्र/केवल : शिक्षा **मात्र** मनुष्य को ऊँचा उठाती है। **केवल** दस रुपए मिलेंगे। दस रुपए **मात्र** मिलेंगे।
6. भर : मैं उसे जानता **भर** हूँ। चार अक्षर **भर** पढ़ लूँ तो नाम हो जाएगा।

स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहते हैं।
- इनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, काल के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता।
- अव्यय के पाँच भेद हैं : 1. क्रिया-विशेषण, 2. संबंधबोधक, 3. समुच्चयबोधक, 4. विस्मयादिबोधक, 5. निपात।
- क्रिया-विशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं।
- क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं : 1. रीतिवाचक, 2. परिमाणवाचक, 3. कालवाचक, 4. स्थानवाचक।
- रीतिवाचक क्रिया की रीति या ढंग की, परिमाणवाचक क्रिया की मात्रा, कालवाचक क्रिया के समय तथा स्थानवाचक क्रिया के स्थान का बोध कराते हैं।
- क्रिया-विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।
- संबंधबोधक संज्ञा/सर्वनाम के साथ जुड़कर वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध बताते हैं।
- समुच्चयबोधक दो शब्दों/वाक्यांशों/वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं।
- विस्मयादिबोधक हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि भावों को प्रकट करते हैं।
- निपात किसी शब्द के साथ लगकर उसके अर्थ में विशेष बल भर देते हैं।

C.B.S.E. की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए अव्यय संबंधी प्रश्न

(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)

1. निम्नलिखित वाक्यों में अव्यय छाँटकर भेद बताइए :

(*i*) मेरे घर के पीछे मेरा मित्र रहता है।

(*ii*) एक बूँद सहसा उछली।

उत्तर : (*i*) के पीछे संबंधबोधक

(*ii*) सहसा-रीतिवाचक क्रिया विशेषण।

2. निम्नलिखित वाक्यों से अव्यय पद छाँटकर उनके भेद भी बताइए :

(*i*) विद्या के बिना जीवन पशु तुल्य है।

(*ii*) वह बीमार है, इसलिए आज अवकाश पर है।

उत्तर : (*i*) के बिना–संबंधबोधक अव्यय।

(*ii*) इसलिए–समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय।

(CBSE 2009 Delhi)

प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यों से अव्यय पद छाँटकर उनके भेद भी बताइए :

(*i*) विद्या के बिना हमारा जीवन पशु-तुल्य है।

(*ii*) वह बीमार है, इसलिए आज अवकाश पर है।

उत्तर : (*i*) के बिना : संबंधबोधक अव्यय।

(*ii*) इसलिए : समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय।

(C.B.S.E. 2009 Outside)

1. अव्यय पद पहचानकर उनके भेद भी लिखिए : *(Set I)*

(*i*) कड़ी सर्दी में भीतर ही रहो।

(*ii*) संदीप स्वस्थ है इसलिए विद्यालय गया है।

उत्तर : (*i*) भीतर - स्थानवाचक क्रिया-विशेषण।

(*ii*) इसलिए - समुच्चयबोधक (योजक)।

2. दो अव्यय पद पहचानकर उनके भेद भी लिखिए : *(Set II)*

(*i*) धीरे-धीरे बोलो, कोई सुन लेगा।

(*ii*) जल्दी जाओ जिससे समय पर पहुँच सको।

उत्तर : (*i*) धीरे-धीरे –रीतिवाचक क्रियाविशेषण।

(*ii*) जल्दी – कालवाचक क्रियाविशेषण।

3. दो अव्यय पद पहचानकर उनके भेद भी लिखिए : *(Set I*

(*i*) ज्ञान के बिना उनकी भक्ति बेकार है।

(*ii*) वाह ! अभिनव बिंद्रा ने तो कमाल कर दिया।

उत्तर : (*i*) के बिना–संबंधबोधक अव्यय।

(*ii*) वाह !–विस्मयादिबोधक अव्यय।

4. दो अव्यय पद पहचानकर उनके भेद भी लिखिए:

(*i*) ज्ञान के बिना-उसकी भक्ति बेकार है।

(*ii*) वाह! अभिनव बिंद्रा ने तो कमाल कर दिया।

उत्तर : (*i*) के बिना : संबंधबोधक अव्यय।

(*ii*) वाह! : विस्मयादिबोधक अव्यय।

CBSE (2008 Delhi Comptt.)

प्रश्न : 1. दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों में अव्यय पदों का प्रयोग करके उनके भेद भी लिखिए : *(Se*

(*i*) आप धूम्रपान न करें .... अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें

(*ii*) .... आज तुम्हारी परीक्षा का परिणाम आ जाए।

(*iii*) तुम सीधे चलो, ... मत देखो।

उत्तर : (*i*) और (समुच्चयबोधक), (*ii*) का (समुच्चयबोधक), (*iii*) उधर (स्थानवाचक क्रियाविशेषण)।

2. दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों में अव्यय पदों का प्रयोग करके उनके भेद भी लिखिए : *(Se*

(*i*) रेलवे लाइन पार करते समय .... अवश्य देखो।

(*ii*) उसने चोरी की थी .... पुलिस ने उसको पकड़ा

(*iii*) तुम अध्यापक की बात को सुनो .... मानो भी।

उत्तर : (*i*) सामने (स्थानवाचक क्रियाविशेषण), (*ii*) इ (समुच्चयबोधक), (*iii*) और (समुच्चयबोधक)।

3. दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों में अव्यय पदों का प्रयोग करके उनके भेद भी लिखिए : *(Set III)*

(*i*) आज तो वर्षा .... हो रही है।

(*ii*) तुम परिश्रम करो .... परीक्षा में असफल हो जाओगे।

(*iii*) मैंने उसे मना किया .... वह माना नहीं।

उत्तर : (*i*) तेज (क्रियाविशेषण), (*ii*) अन्यथा (समुच्चयबोधक), (*iii*) पर (समुच्चयबोधक)।

(CBSE 2008, Comptt. Outside)

प्रश्न : (क) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : *(Set I, II)*

(*i*) समुच्चयबोधक अव्यय छाँटिए :

सौरभ बुद्धिमान् है, किंतु लापरवाह है।

(*ii*) क्रिया-विशेषण छाँटिए :

वह धीरे-धीरे चलता है।

(*iii*) निपात छाँटिए :

मैंने तो तुम्हारी निंदा नहीं की।

उत्तर : (*i*) किंतु, (*ii*) धीरे-धीरे, (*iii*) तो।

(ख) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : *(Set III)*

(*i*) समुच्चयबोधक अव्यय छाँटिए :

बादल गरजे और वर्षा हुई।

(*ii*) क्रिया-विशेषण छाँटिए :

रोटी धीरे-धीरे चबाओ।

(*iii*) निपात छाँटिए :

तुम तो कभी झूठ नहीं बोलते।

उत्तर : (*i*) और, (*ii*) धीरे-धीरे, (*iii*) तो।

(CBSE 2008 Delhi)

प्रश्न : दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों में अव्यय पदों का प्रयोग कीजिए। साथ ही यह भी लिखिए कि वे अव्यय के किस भेद में आते हैं।

(Set I)

(*i*) हमें अपनी सामाजिक स्थिति ———— कुल-मर्यादा का ध्यान रखकर आचरण करना चाहिए।

(*ii*) गाड़ी ———— आकर स्टेशन पर रुक गई।

(*iii*) उसने स्कूल ———— बस खड़ी कर दी।

उत्तर : (*i*) और (समुच्चयबोधक), (*ii*) तेज (क्रियाविशेषण), (*iii*) के सामने (संबंधबोधक)

(Set II)

(*i*) ———— फुटबॉल पानी में जा गिरी।

(*ii*) हमें अपने ———— दूसरों के सम्मान का ध्यान रखते हुए ही अपने मुँह से शब्द निकालने चाहिए।

(*iii*) ———— तुमने अपने गाँव की इज्जत रख ली।

उत्तर : (*i*) कल—क्रिया-विशेषण, (*ii*) और—समुच्चयबोधक, (*iii*) वाह! — विस्मयादिबोधक

(Set III)

(*i*) नरेन्द्र घर के ———— बैठा है।

(*ii*) विराज ———— रमा दोनों सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने गए।

(*iii*) चीखो मत, ———— बोलो।

उत्तर : (*i*) ऊपर : स्थान वाचक क्रिया-विशेषण।

(*ii*) और : समुच्चयबोधक।

(*iii*) धीरे : रीतिवाचक क्रिया-विशेषण।

(CBSE 2008 Foreign)

प्रश्न : दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों में अव्यय पदों का प्रयोग कीजिए। साथ ही यह भी लिखिए कि वे अव्यय के किस भेद में आते हैं।

(Set I)

(*i*) वह एक गीत .... गा रहा था।

(*ii*) जब भूकंप आया तब मैं .... मेरा मित्र बातें कर रहे थे।

(*iii*) हमारे घर के .... शिव-मंदिर है।

उत्तर : (*i*) भी : निपात।

(*ii*) और : समुच्चयबोधक (योजक)।

(*iii*) सामने : संबंधबोधक।

(Set II)

(*i*) .... मेरे भाई का जन्मोत्सव है।

(*ii*) मैं भी उस उत्सव में जाना चाहता था .... न जा सका।

(*iii*) .... कितनी सुरीली आवाज़ है।

उत्तर : (*i*) आज : कालवाचक क्रियाविशेषण।

(*ii*) पर : समुच्चयबोधक।

(*iii*) वाह! : विस्मयादिबोधक।

(Set III)

(*i*) चंद्रकांत .... बैठा हुआ है।

(*ii*) उस समय सुरेश .... उसकी भाभी हमारे ही घर आए हुए थे।

(*iii*) अवकाश होने .... मैं उस दिन विद्यालय नहीं गया था।

उत्तर : (*i*) ऊपर : स्थानवाचक क्रिया-विशेषण।

(*ii*) और : समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय।

(*iii*) के कारण : संबंधबोधक अव्यय।

(CBSE 2008 Outside)

प्रश्न : दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय पदों से कीजिए तथा उन अव्यय पदों के भेद भी बताइए :

(Set I)

(*i*) सुरेखा .... आई है।

(*ii*) सूरज धीरे-धीरे अस्त हो गया .... संध्या घिर आई।

(*iii*) .... बहुत सुंदर!

उत्तर : (*i*) अभी (कालवाचक क्रिया-विशेषण)।

(*ii*) और (समुच्चयबोधक अव्यय)।

(*iii*) वाह! (विस्मयादिबोधक अव्यय)।

(Set II)

(*i*) मैं तुम्हारा विश्वास .... करूँ?

(*ii*) .... तुमने तो कमाल कर दिखाया।

(*iii*) नरेश ने परिश्रम तो बहुत किया था .... उसे सफलता नहीं मिली।

उत्तर : (*i*) कब : कालवाचक क्रिया-विशेषण।
(*ii*) वाह! : विस्मयादिबोधक अव्यय।
(*iii*) पर : समुच्चयबोधक अव्यय।

(Set III)

(*i*) पता नहीं वह .... चला गया।
(*ii*) .... कितना सुंदर गाती हो तुम!
(*iii*) वह कुछ कहने के लिए ही यहाँ आया था .... मैंने उसे मौका नहीं दिया।

उत्तर : (*i*) कब : कालवाचक क्रिया-विशेषण।
(*ii*) वाह! : विस्मयादिबोधक अव्यय।
(*iii*) और : समुच्चयबोधक अव्यय।

(CBSE Sample Paper-1)

प्रश्न : नीचे दिए गए वाक्यों में अव्यय पदों का प्रयोग कीजिए और यह भी बताइए कि वे अव्यय के किस भेद में आते हैं :
(*i*) हमें अपनी सभ्यता .... संस्कृति पर गर्व है।
(*ii*) वह जल्दी चला गया .... ट्रेन पकड़ सके।
(*iii*) .... बोलो, कोई सुन लेगा।

उत्तर :
(*i*) और : समुच्चयबोधक। (*ii*) ताकि : समुच्चयबो
(*iii*) धीरे : क्रियाविशेषण (रीतिवाचक)।

(CBSE Sample Paper-2)

प्रश्न : (*i*) समुच्चयबोधक अव्यय छाँटिए :
नंदिता और विजया पुस्तक मेले में गई हैं।
(*ii*) क्रिया-विशेषण छाँटकर उसका भेद भी लिखि
हमें सबसे प्रेमपूर्वक रहना चाहिए।
(*iii*) किन्हीं दो निपातों को अपने वाक्य में प्रयुक्त कीजि

उत्तर :
(*i*) और। (*ii*) प्रेमपूर्वक : रीतिवाचक क्रिया वि
(*iii*) ही : मैं ही यह काम करूँगा।
भी : तुम भी वहाँ जाओगे।

अभ्यासार्थ
(Practice)

1. अव्यय शब्द की क्या विशेषता है ? पाँच अव्यय शब्द लिखिए।
(संकेत : *अव्यय–जो व्यय न हो, परिवर्तित न हो)*
2. अव्यय के पाँचों भेदों के नाम लिखिए और उनके दो-दो उदाहरण दीजिए।
3. ऊपर का, पूर्णतः, तक, शायद ही, दिन भर, हफ्ते भर, की ओर का उचित प्रयोग करते हुए नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों को भरिए :
1. मैं उसकी बात से ———— सहमत हूँ।
2. वह आज ———— यहाँ आए।
3. मकान का ———— कमरा गंदा है।
4. मैं ———— दफ्तर में काम करता हूँ।
5. मोहन महात्मा गाँधी मार्ग ———— रहता है।
6. वह दिल्ली से ———— बाद वापस आया है।
7. मैं कल देर रात ———— जागा।
(संकेत : *1. पूर्णतः, 2. शायद ही, 3. ऊपर का, 4. दिन भर, 5. की ओर, 6. हफ्ते भर, 7. तक)*
4. कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक और परिमाणवाचक क्रिया-विशेषणों का प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य लिखिए।
5. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित अव्यय शब्दों का प्रयोग कीजिए और यह भी बताइए कि वे अव्यय किस भेद में आते हैं।
1. मैं ———— आगरा जाऊँगा।
2. हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति ———— गर्व है।
3. मुझे रेडियो ———— घड़ी चाहिए।
4. यदि तुम परीक्षा में सफल होना चाहते हो ———— श्रम क
5. बाहर जाने ———— मुझसे मिलना।
6. ———— आप मिल गए।
7. वह जल्दी चला गया ———— ट्रेन पकड़ सके।
8. ———— तो यह तुम्हारी शरारत है।
9. तुम बकवास बंद करो ———— मुझे कुछ करना पड़ेगा।
10. ———— तुमने यह क्या कर डाला ?
(संकेत : *1. कल (कालवाचक क्रिया विशेषण), 2. के ऊपर (संबंधबोधक), 3. और (समुच्चयबोधक), 4. तो (निपात), 5. से (संबंधबोधक), 6. अरे ! (विस्मयादिबोधक), 7. ताकि (समुच्चयबोधक), 8. अच्छा ! (विस्मयादिबोधक), 9. अन्यथा (समुच्चयबोधक), 10.हाय ! (विस्मयादिबोधक)।*
6. नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन-सा भाव प्रकट होता है ? वाक्यों के सामने लिखिए :
1. शाबास ! तुमने बहुत अच्छा काम किया।
2. बाप रे ! मैं तो बर्बाद हो गया।
3. छिः छिः ! तुम तो बड़े नीच आ
4. हाय ! अब मैं क्या करूँ ?
5. अजी ! ले भी लो।
6. अबे हट ! नहीं तो मारूँगा।
7. बचो ! सामने से ट्रक आ रहा है।
8. वाह ! फिल्म देखकर मजा आ गया।
(संकेत : *1. प्रशंसा, 2. व्यथा-पीड़ा, 3. घृणा, 4. संवेदना, 5. संबोधन, 6. चेतावनी, 7. चेतावनी, 8. हर्ष-उल्लास।)*
7. निपात किसे कहते हैं ? ही, भी, तो, तक, मात्र, भर का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।
8. संबंध बोधक अव्यय शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :
1. सीता ———— दुःख किसी ने नहीं सहा होगा।
2. गंगा नदी वाराणसी ———— बहती है।
3. हमें अंत ———— प्रयास करना चाहिए।
4. घर के ———— से चारपाई लाओ।
5. तुम्हारे ———— यह काम आसान है।
6. धन ———— मनुष्य सुखी बनता है।
[संकेत : *के समान, के बीच, तक, अंदर, लिए, के बिना]*

अध्याय 13

पद-परिचय

(Parsing)

शब्द और पद का अंतर आप पहले ही समझ चुके हैं।

शब्द भाषा की अर्थवान स्वतंत्र इकाई है, तो वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद हैं।

वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहते हैं।

इन शब्दों का व्याकरणिक परिचय पद-परिचय कहलाता है। पद-परिचय बताने के लिए शब्दों के भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक आदि का परिचय देना आवश्यक है।

पद-परिचय के लिए आवश्यक संकेत-तालिका :

क्र.सं.	*पद का नाम*	*बताई जाने वाली बातें*
1	संज्ञा	संज्ञा के भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध।
2	सर्वनाम	सर्वनाम का भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध।
3	विशेषण	विशेषण का भेद, लिंग, वचन, विशेष्य का निर्देश।
4	क्रिया	क्रिया का भेद (*अकर्मक-सकर्मक*) लिंग, वचन, पुरुष, धातु, काल, वाच्य, प्रयोग, कर्ता और कर्म का संकेत।
5	क्रिया-विशेषण	क्रिया-तिशेषण का भेद, जिस क्रिया की विशेषता बताई जा रही है उसका निर्देश।
6	समुच्चयबोधक	भेद (*संयोजक-विकल्पक*), किन पदों या वाक्यों को मिला रहा है, निर्देश।
7	संबंधबोधक	भेद, जिससे संबंध दर्शा रहा है उसका निर्देश।
8	विस्मयादिबोधक	किस भाव (विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, भय, क्रोध आदि) को प्रकट कर रहा है, निर्देश।

उपर्युक्त दिशा-निर्देश के आधार पर पद-परिचय के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

1. सोहन यहाँ दसवीं कक्षा में पढ़ता था।

सोहन : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'पढ़ता था' क्रिया का कर्ता।

यहाँ : स्थानवाचक क्रिया-विशेषण, 'पढ़ता था' क्रिया के स्थान का निर्देश।

दसवीं : संख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य का विशेषण।

कक्षा में : जातिवाचक संज्ञा (*समूहवाचक*), स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक (*'में' कारक चिह्न*) 'पढ़ना' क्रिया से संबद्ध।

पढ़ता था : अकर्मक क्रिया, 'पढ़' धातु, पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, निश्चयार्थ, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग (*कर्ता-सोहन*)।

2. सचिन यहाँ दूसरे बंगले में रहता था।

सचिन : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'रहना' क्रिया का कर्ता।

यहाँ : क्रिया-विशेषण (*स्थानवाचक*), 'रहना' क्रिया के स्थान का द्योतक।

दूसरे : संख्यावाचक विशेषण (*क्रमसूचक*), पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य-बंगला।

बंगले में : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक *(में—कारक-चिह्न)*

रहता था : क्रिया (अकर्मक) 'रह' धातु, एकवचन, अन्य पुरुष, भूतकाल, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग (*क्रिया* *का कर्ता — सचिन)*

3. हम बाग में गए, परंतु वहाँ कोई आम नहीं मिला।

हम : पुरुषवाचक सर्वनाम (*उत्तम पुरुष*), पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'गए' क्रिया का कर्ता।

बाग में : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक (*'में' कारक-चिह्न*)

गए : अकर्मक क्रिया, 'जा' धातु, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, भूतकाल, निश्चयार्थ, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग..'हम' सर्वनाम इसका कर्ता है।

परंतु : व्यधिकरण समुच्चयबोधक (अव्यय), दो वाक्यों को जोड़ता है।

वहाँ : स्थानवाचक क्रिया विशेषण।

कोई : संख्यावाचक विशेषण (*अनिश्चित संख्यावाचक*), पुल्लिंग, एकवचन, 'आम' विशेष्य का विशेषण।

आम : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

नहीं : अव्यय, रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (*निषेध वाचक*), 'मिला' क्रिया की रीति।

मिला : सकर्मक क्रिया *(आम-कर्म)*, 'मिल' धातु, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल, निश्चयार्थ, कर्तृवाच्य, कर्मरि प्रयोग।

4. आह ! उपवन में सुंदर फूल खिले हैं।

आह : अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्षसूचक।

उपवन में : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक (*में परसर्ग*)।

सुंदर : गुणवाचक विशेषण (*गुणबोधक*), पुल्लिंग, बहुवचन, एकवचन, 'फूल'—विशेष्य।

खिले हैं : अकर्मक क्रिया, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग।

फूल : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'खिले हैं'—क्रिया का कर्ता।

5. मैं रोज सवेरे धीरे-धीरे चलता हूँ।

मैं : पुरुषवाचक सर्वनाम (*उत्तम पुरुष*), पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'चलता हूँ' क्रिया का कर्ता।

रोज सवेरे : क्रिया-विशेषण (*कालवाचक*), 'चलता हूँ' क्रिया का काल बताता है।

धीरे-धीरे : अव्यय, रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, 'चलता हूँ' क्रिया की रीति बताता है।

चलता हूँ : अकर्मक क्रिया, सामान्य वर्तमान काल, पुल्लिंग, एकवचन, 'मैं' कर्ता की क्रिया।

6. जो अपनी बात को नहीं रखता, वह विश्वास के योग्य नहीं है।

जो : संबंधवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'रखता है' क्रिया का कर्ता।

अपनी : सार्वनामिक विशेषण, 'बात' संज्ञा की विशेषता बताता है, स्त्रीलिंग, एकवचन।

बात को : भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'रखता' क्रिया का कर्म।

रखता : सकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, पुल्लिंग, एकवचन, निश्चयार्थ, कर्तरि प्रयोग।

वह : पुरुषवाचक सर्वनाम (*अन्य पुरुष*), एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक, 'है' क्रिया का कर्ता।

विश्वास के : भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक *('के' परसर्ग)*

योग्य : गुणवाचक विशेषण *('वह'—विशेष्य)*

नहीं : निषेधवाचक क्रिया-विशेषण (*रीतिवाचक*), 'है' क्रिया से संबद्ध।

है : अपूर्ण क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमान काल, कर्तृवाच्य, 'वह' कर्ता की क्रिया।

7. मैं पिछले साल उसे मुंबई में मिला था।

मैं : पुरुषवाचक सर्वनाम (*उत्तम पुरुष*), पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'मिला था' क्रिया का कर्ता।

पिछले : विशेषण (*क्रमसूचक*), (*'साल'-विशेष्य*), पुल्लिंग, एकवचन।

साल : ज़ातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक।

उसे : पुरुषवाचक सर्वनाम (*अन्य पुरुष*) पुल्लिंग-स्त्रीलिंग दोनों में संभव, एकवचन, कर्म कारक।

मुंबई में : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक (*'में' कारक चिह्न*)

मिला था : सकर्मक क्रिया (*'उसे' कर्म*), पूर्ण भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

8. धीरे-धीरे कुछ लोग हमारी तरफ आ गए।

धीरे-धीरे : अव्यय, रीतिवाचक क्रियाविशेषण ('आ गए' क्रिया की रीति बता रहा है)।

कुछ : संख्यावाचक विशेषण (*अनिश्चित संख्यावाचक*), 'लोग' विशेष्य, पुल्लिंग, बहुवचन।

लोग : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'आ गए' क्रिया का कर्ता।

हमारी : पुरुषवाचक सर्वनाम (*उत्तम पुरुष*), बहुवचन, स्त्रीलिंग।

तरफ : स्थानवाचक क्रिया-विशेषण, 'आ गए' — क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता का बोधक।

आ गए : अकर्मक क्रिया (*संयुक्त क्रिया*), भूतकाल, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग, (*लोग—कर्ता*)।

9. इस संसार में सत्य की सदा जीत होती है।

इस : सार्वनामिक (*संकेतवाचक*) विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, (*'संसार' विशेष्य*)।

संसार में : जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण कारक (*'में' कारक-चिह्न*)

सत्य की : भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक (*'की' कारक-चिह्न*) संबंधी शब्द जीत।

सदा : कालवाचक क्रियाविशेषण (*'होती है' क्रिया के काल (समय) का बोधक*)

जीत : भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक।

होती है : अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, निश्चयार्थ, कर्तृवाच्य, (*जीत—कर्ता*)।

10. परिश्रम के बिना धन प्राप्त नहीं होता ।

परिश्रम : भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, करण कारक (*धन प्राप्त होने का साधन*)।

के बिना : संबंधबोधक अव्यय।

धन : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

नहीं : रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (*निषेधात्मक*), प्राप्त होना—क्रिया की विशेषता।

प्राप्त होता : सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमान काल, निश्चयार्थ।

11. लंका के राजा रावण ने सीता को चुराया।

लंका के : व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, संबंध कारक (*'के' कारक-चिह्न*)

राजा : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, 'रावण' का समानाधिकरण।

रावण ने : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक (*'चुराया' क्रिया का कर्ता*)।

सीता को : व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक (*'चुराया' क्रिया का कर्म*)।

चुराया : सकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, कर्तृवाच्य, निश्चयार्थ, पुल्लिंग, एकवचन।

☞ **निर्देशानुसार रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय :**

1. कल हमने ताजमहल देखा।

कल : कालवाचक क्रिया-विशेषण, 'देखा' क्रिया का काल बता रहा है।

ताजमहल : व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्म कारक।

2. अरे ! यह क्या किया।

अरे : अव्यय, विस्मयादिबोधक (*आश्चर्यसूचक*)।

3. शीला ने पुस्तक पढ़ी।

पढ़ी : सकर्मक क्रिया (*पुस्तक-कर्म*), 'पढ़' धातु, भूतकाल, स्त्रीलिंग, एकवचन।

4. माला पत्र लिखती है।

माला : व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक (*'लिखती है' क्रिया का कर्ता*)

पत्र : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक (*'लिखती है' क्रिया का कर्म*)

5. किसी विद्वान से बातचीत करने से ज्ञान बढ़ता है।
किसी : सार्वनामिक विशेषण (*'कोई' शब्द से बना*), पुल्लिंग, एकवचन, (*विद्वान-विशेष्य*)
बढ़ता है : क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल, अन्य पुरुष, एकवचन, निश्चयार्थ; 'बढ़' धातु।

6. जल्दी चलो, गाड़ी आने ही वाली है।
जल्दी : अव्यय, क्रिया-विशेषण (*कालवाचक*), (*'चलो' क्रिया का काल*)
ही : अव्यय, निपात।

7. दौड़कर जाओ और बाजार से कुछ लाओ।
दौड़कर : पूर्वकालिक क्रिया, रीतिवाचक क्रिया-विशेषण ('जाना' क्रिया की विशेषता)
बाजार : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अपादान कारक।
कुछ : अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

8. हम देश पर सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार हो जाते हैं।
हम : पुरुषवाचक सर्वनाम (*उत्तम पुरुष*), बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।
देश पर : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक (*'पर' परसर्ग*)।
हो जाते हैं : सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल, निश्चयार्थ, 'हम' कर्ता की क्रिया।

प्रयोग की विशिष्टता के कारण पद-परिचय में भिन्नता

1. **अच्छा** : संज्ञा – **अच्छों** की संगति करो।
विशेषण – **अच्छा** व्यक्ति आज्ञाकारी होता है।
क्रिया-विशेषण – उसने **अच्छा** गाया।
विस्मयादिबोधक – **अच्छा** ! यह बात है।

2. **एक** : सर्वनाम – **एक** ने कहा।
विशेषण – **एक** लड़का चला गया।

3. **ऐसा** : सर्वनाम – **ऐसा** भी हो सकता है।
संज्ञा – **ऐसों** को मैं देख लूँगा।
विशेषण – **ऐसा** आदमी मैंने नहीं देखा।
क्रिया-विशेषण – **ऐसा** करो।

4. **और** : सर्वनाम – **औरों** से पूछ लीजिए।
विशेषण – **और** लोग कहाँ गए?
क्रिया-विशेषण – वह **और** भागा।
समुच्चयबोधक – वह आया **और** चला गया।

5. **कुछ** : संज्ञा – **कुछ** के लिए भोजन है।
सर्वनाम – खाने को **कुछ** दो।
विशेषण – समारोह में **कुछ** लोग आए।
क्रियाविशेषण – **कुछ** पढ़ लो।

6. **बहुत** : संज्ञा – मैंने **बहुतों** को पढ़ाया है।
सर्वनाम – **बहुत** हो चुका, अब बस करो।
विशेषण – वहाँ **बहुत** लोग जमा थे।
क्रियाविशेषण – वह **बहुत** हँसा।

7. **यह** : सर्वनाम – **यह** मेरा घर है।
विशेषण – **यह** घर मेरा है।

8. **वह** : सर्वनाम – **वह** मेरा भाई है।
विशेषण – **वह** लड़का मेरा भाई है।

9. **साथ** : संज्ञा – दु:ख में कौन किसी का **साथ** देता है।
क्रिया विशेषण–सब लड़के **साथ** खेलते हैं।
संबंधबोधक – वह राम के **साथ** जाने वाला था।

10. **डूबता** : संज्ञा – **डूबते** को तिनके का सहारा।
विशेषण – **डूबता** व्यक्ति बचा लिया गया।
क्रिया – मैं **डूबता** था।

स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- वाक्य में प्रयुक्त पदों का व्याकरणिक परिचय देना पद-परिचय कहलाता है।
- पद के बारे में पूरी जानकारी दी जानी चाहिए।
- एक पद कई प्रकार से प्रयुक्त हो सकता है, अतः उसके प्रयोग को देखिए।

C.B.S.E. की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए पद-परिचय संबंधी प्रश्न

(CBSE 2009 Comptt. Delhi)

प्रश्न 1. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

(Set I)

(*i*) मोहन ने केला खाया है ।

(*ii*) सीता दसवीं में हिंदी पढ़ती है।

उत्तर–(*i*) **केला**–जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्म कारक ।

(*ii*) **पढ़ती है**–सकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन।

(Set II)

रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

(*i*) वह भी पास हो गया और सोहन भी ।

(*ii*) सीता ने अपना पाठ याद कर लिया ।

उत्तर–(*i*) **वह**–पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष), एक वचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

(*ii*) **सीता ने**–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक ।

(Set III)

रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

(*i*) तेजस ने भोजन कर लिया है ।

(*ii*) श्रेष्ठा अभी नौंवी कक्षा में है ।

उत्तर–(*i*) **तेजस**–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।

(*ii*) **नौंवी**–संख्यावाचक विशेषण (क्रमसूचक) कक्षा-विशेष्य।

रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए :

(*i*) मेरा भाई सोहन अपना पाठ याद कर लेगा।

(*ii*) तुम यहाँ आओ।

उत्तर : (*i*) **सोहन**–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

(*ii*) **तुम**–पुरुषवाचक सर्वनाम (मध्यम पुरुष), एकवचन (पुल्लिग-स्त्रीलिंग दोनों में संभव)

(CBSE 2009 Comptt. Delhi)

प्रश्न 1. रेखांकित का पद-परिचय दीजिए :

बालक रंगीन पतंग उड़ा रहा है। *(Set I)*

उत्तर : पतंग–जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्मकारक।

माली फूल सजा रहा है। *(Set II)*

उत्तर : माली–जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।

घड़ी मेज़ पर रखी है। *(Set III)*

उत्तर : घड़ी–जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग।

(CBSE 2009 Comptt. Outside)

प्रश्न 1. रेखांकित का पद-परिचय दीजिए : *(Set I)*

बालक केला खा रहा है ।

उत्तर : केला–जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्मकारक।

दादी माला बना रही है। *(Set II)*

उत्तर : माला–जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक।

वह नल से पानी पी रहा है। *(Set III)*

उत्तर : पानी–जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

(CBSE 2009 Delhi)

प्रश्न 1. नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए :

रेखा कहती है कि मैं अपना काम स्वयं करती हूँ

उत्तर : **रेखा**– व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक

मैं–पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष), एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक।

(Set-I)

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए :

मैंने एक लड़ाकू विमान देखा।

उत्तर : **मैंने** : पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष), एकवचन, दोनों लिंगों में संभव, कर्ताकारक।

विमान : जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्मकारक।

(Set-II)

प्रश्न 3. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए:

मुझे बार-बार घर की याद आती है।

उत्तर : **मुझे** : पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष), एकवचन, दोनों लिंगों में संभव, कर्मकारक।

घर की : जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, संबंधबोधक।

(Set-III)

प्रश्न 4. रेखांकित पदों का परिचय दीजिए :

वह कौन है जो छत पर खड़ा है?

उत्तर : **वह** : पुरुषवाचक (अन्य पुरुष) सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।

छत पर : जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, अधिकरण कारक।

प्रश्न 5. नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

हामिद बड़ी पतंग उड़ा रहा है ।

हामिद – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक ।

बड़ी – विशेषण (गुणवाचक), स्त्रीलिंग, एकवचन (पतंग विशेष्य)

(CBSE 2009, Outside)

प्रश्न 1. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए:

वह बाजार से गर्म पूड़ियाँ ला रहा है ।

उत्तर–बाजार–जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, करण कारक

गर्म–विशेषण (गुणवाचक), पूड़ियाँ–विशेष्य।

प्रश्न 2. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए:

तमिल बहुत प्राचीन भाषा है।

उत्तर–तमिल–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग।

प्राचीन--विशेषण (गुणवाचक)–भाषा-विशेष्य।

प्रश्न 3. रेखांकित पदों का पद परिचय दीजिए ।

उस मकान में एक साँप रहता है।

मकान में – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग अधिकरण कारक।

एक : संख्यावाचक विशेषण (साँप-विशेषण)

(CBSE 2008, Outside)

(Set-I)

प्रश्न 1. रेखांकित पदों का परिचय दीजिए :

आनंदन बहुत भाग्यशाली है।

उत्तर : आनंदन : व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग कर्ताकारक।

भाग्यशाली : विशेषण (आनंदन-विशेष्य)।

(Set-II)

प्रश्न 2. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए

वह बाजार से गर्म पूड़ियाँ ला रहा है।

उत्तर : बाजार : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन करण कारक।

गर्म : विशेषण (गुणवाचक), पूड़ियाँ : विशेष्य।

(Set-II)

प्रश्न 3. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए

तमिल बहुत प्राचीन भाषा है।

उत्तर : तमिल : व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग

प्राचीन : विशेषण (गुणवाचक)–भाषा-विशेष्य।

अभ्यासार्थ
(Practice)

निम्नलिखित वाक्यों में मोटे शब्दों का परिचय दीजिए :

1. **यह** किताब मेरी **छोटी** बहन की है, इसलिए मैं **तुम्हें** नहीं दे सकता।
2. **रमेश** यहाँ **नवीं कक्षा** में पढ़ता था।
3. **हम बनारस** घूमने गए थे।
4. वह **पढ़ता है**।
5. जल्दी करो, **वे सब** आते होंगे।

[संकेत : 1. **यह** : सार्वनामिक, विशेषण (*संकेतवाचक*), (*किताब– विशेष्य का विशेषण*)।

छोटी : विशेषण, गुणवाचक, एकवचन, स्त्रीलिंग, (*बहन– विशेष्य का विशेषण*)।

तुम्हें : सर्वनाम, पुरुषवाचक (*मध्यम पुरुष*)।

2. **रमेश**– व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक

नवीं : संख्यावाचक विशेषण, एकवचन, कक्षा–विशेष्य।

कक्षा : संज्ञा, जातिवाचक (*समुदायवाचक*), स्त्रीलिंग, एकवचन अधिकरण कारक।

3. **हम** : सर्वनाम, पुरुषवाचक, (*उत्तम पुरुष*), बहुवचन, पुल्लिंग कर्ता कारक।

बनारस : संज्ञा–व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक

4.**पढ़ता है** : क्रिया–अकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, सामान्य वर्तमान काल।

5.**वे सब** : सर्वनाम--पुरुषवाचक (*अन्य पुरुष*), बहुवचन, पुल्लिंग

C.B.S.E. की दसवीं कक्षा हिन्दी (ए) की परीक्षाओं में पूछे गए पद परिचय संबंधी प्रश्न

मोटे अक्षरों का पद-परिचय दीजिए :

1. **मोहन** फुटबॉल खेलता है। [संकेत : मोहन–व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक ('खेलता है'- क्रिया का कर्ता)]
2. **सीमा** खूब खाती है। [संकेत : सीमा–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक ('खाती है' क्रिया की कर्ता)]
3. **वह** स्कूल नहीं आया। [संकेत : वह–पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष), एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक]
4. **उसने** उमेश को बहुत समझाया।
   [संकेत : उसने–पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष), एकवचन, कर्ता कारक ('समझाया' क्रिया का कर्ता]
5. **हम** देहरादून घूमने गए। [संकेत : हम–पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष), बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक]
6. मोहन **पाँचवीं** कक्षा में पढ़ता है। [संकेत : पाँचवी–संख्यावाचक विशेषण (क्रमसूचक), स्त्रीलिंग, एकवचन, कक्षा–विशेष्य की विशेषता]
7. **परिश्रम** के बिना धन प्राप्त नहीं होता। [संकेत : परिश्रम–भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन]
8. दौड़कर जाओ और **बाजार** से कुछ ले आओ। [संकेत : बाजार–जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग]

अध्याय 14

शब्द, पद और पदबंध

(Word, Phrases and Phrasing)

☞ शब्द, पद और पदबंध में अंतर

शब्द और पद : जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तब वह 'पद' बन जाता है। इस दृष्टि से जितने प्रकार के शब्द होते हैं, उतने ही प्रकार के पद होते हैं। संज्ञा शब्द यदि वाक्य में आ जाए तो वह **संज्ञा पद** बन जाता है और यदि विशेषण शब्द वाक्य में आ जाए तो वह **विशेषण पद** बन जाता है।

शब्द और पद के अंतर में दो बातें महत्त्वपूर्ण होती हैं :

– पद बनने से पूर्व शब्द में कोई-न-कोई (रूप साधक) प्रत्यय अवश्य जुड़ता है।

– वाक्य में प्रत्येक पद कोई-न-कोई व्याकरणिक कार्य करने लगता है।

उदाहरण : लड़के ने पुस्तक पढ़ी।

– इस वाक्य में 'लड़के' संज्ञा शब्द न होकर **संज्ञा पद** है क्योंकि 'लड़का' शब्द में 'ए' प्रत्यय लगाकर बना रूप पद है। यह वाक्य में लौकिक कर्ता का काम कर रहा है।

आइए, अब हम **'पदबंध'** के बारे में जानें।

> ☞ ***जब एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं, तब उस बँधी हुई इकाई को 'पदबंध' कहते हैं।***

उदाहरण : दशरथ-पुत्र राम ने सबका मन जीत लिया।

पदबंध का स्वरूप : निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित अंशों पर ध्यान दीजिए :

1. लड़का घर जाता है।
2. छोटा लड़का घर जाता है।
3. एक छोटा लड़का घर जाता है।
4. मेरा एक छोटा लड़का घर जाता है।

वाक्य (1) में प्रयुक्त 'लड़का' संज्ञा शब्द न होकर 'संज्ञा पद' है।

वाक्य (2) में 'छोटा लड़का', वाक्य (3) में 'एक छोटा लड़का' तथा वाक्य (4) में 'मेरा एक छोटा लड़का' को 'लड़का' पद के स्थान पर स्थानापन्न किया जा सकता है, क्योंकि ये सभी वाक्य में वही कार्य कर रहे हैं जो अकेला 'लड़का' पद कर रहा है।

वाक्य (2), (3), (4) के पद मिलकर एक **'पदबंध'** बनाते हैं। पदों का ऐसा समूह (*बंध*) जो परस्पर मिलकर वही व्याकरणिक प्रकार्य करे जो एक 'पद' करता है, पदबंध कहलाता है।

शब्द, पद और पदबंध में अंतर

शब्द	पद	पदबंध
लड़का	लड़के ने	1. एक लड़के ने 2. हमारी कक्षा के सबसे मेधावी लड़के ने
अच्छा	अच्छी	1. सबसे अच्छी (लड़की) 2. अपनी कक्षा में सबसे अच्छी (लड़की)
खेलना	खेलता	(वह) खेलता जा रहा है।
बाहर	बाहरी	घर के बाहरी भाग में

ध्यान दें :

1. पदबंध में एक से अधिक पद होते हैं, जैसे — सुंदर सलोना बच्चा, चलता चला गया।
2. सभी पद परस्पर बँधे होते हैं, इसी कारण पदबंध कहा जाता है।
3. मिलकर एक स्वतंत्र भाषिक इकाई के रूप घटक बनते हैं।
4. प्रत्येक पदबंध में एक मुख्य शीर्ष पद होता है, जिस पर अन्य पद आश्रित होते हैं। जैसे—

   'सुंदर बच्चा' पदबंध में 'सुंदर' पद 'बच्चा' पद पर आश्रित होता है।

   सुंदर → बच्चा
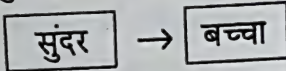
5. पदबंध में शीर्ष पद पर एक से अधिक आश्रित पद हो सकते हैं। जैसे —

   'वे चार खिलाड़ी लड़के' में शीर्ष पद 'लड़के' है।

   वे | चार | खिलाड़ी ← आश्रित पद
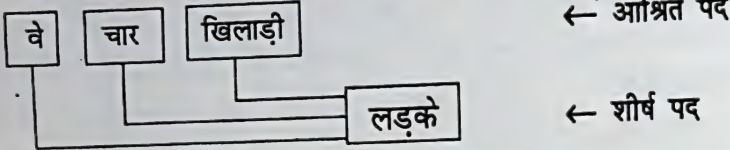
   लड़के ← शीर्ष पद

'वे चार खिलाड़ी' आश्रित पद हैं। ये तीनों विशेषणात्मक हैं।

शीर्ष पद की पहचान : शीर्ष पद की पहचान का उपाय यह है कि पदबंध की व्याकरणिक भूमिका को पहचानें। देखें कि पदबंध किसका काम कर रहा है–संज्ञा का, सर्वनाम का, विशेषण का, क्रिया का अथवा क्रिया-विशेषण का ? अब उस पदबंध की जगह न्यूनतम एक पद को रखकर देखें। कौन-सा पद वाक्य के अर्थ की संगति को बनाए रखता है ? यही उसका शीर्ष पद है। जैसे—

दशरथ-पुत्र राम वन को गए।

यहाँ 'राम वन को गए।' भी संगत है। अतः 'राम' शीर्ष पद है। 'दशरथ-पुत्र राम' पदबंध है।

पदबंध के भेद *(Kinds of Phrase)* : पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं :

1. संज्ञा पदबंध *(Noun Phrase)*
2. सर्वनाम पदबंध *(Pronoun Phrase)*
3. विशेषण पदबंध *(Adjective Phrase)*
4. क्रिया पदबंध *(Verb Phrase)*
5. क्रिया-विशेषण पदबंध *(Adverb Phrase)*

आइए, अब हम इनके बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त करें :

1. संज्ञा पदबंध *(Noun Phrase)* : संज्ञा पदबंध के शीर्ष में संज्ञा पद होता है। अन्य सभी पद उस पर आश्रित होते हैं।

उदाहरण :

1. झूठ बोलने वाले लोग बेईमान होते हैं।
2. सामने के मकान में रहने वाला लड़का चला गया।
3. स्वागतार्थ आए हुए लोगों से घिरे श्रीकृष्ण ने नगर में प्रवेश किया।
4. लोहे की बड़ी अलमारी से कोट निकालो।
5. परिश्रम करने वाले छात्र अवश्य उत्तीर्ण होंगे।
6. आगरा आने वाले डॉक्टर को होटल में ठहराया गया।
7. हवाई किले बनाने वाले युवको, सँभल जाओ।
8. भारत की राजधानी दिल्ली में एक करोड़ से ज्यादा लोग रहते हैं।
9. पाकिस्तान से आए हुए लोग जालंधर गए हैं।
10. बंगले के पीछे खड़ा पेड़ गिर गया।
11. चार ताकतवर मजदूर उस भारी चीज को उठा पाए।
12. राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।
13. अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।
14. आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।
15. खुशामद करने वाला व्यक्ति क्या नहीं कर सकता।

16. विदेश से आए अतिथियों में कुछ शाकाहारी हैं।
17. बराबर के कमरे में रहने वाला आदमी छत से गिर पड़ा।
18. कभी असत्य न बोलने वाले व्यक्ति देश का गौरव होते हैं।
19. दशरथ पुत्र राम ने रावण को मार गिराया।
20. मकान के पीछे लगा पेड़ गिर गया है।
21. रात को पहरा देने वाला चौकीदार दिन में सोता है।
22. मैंने चरती हुई काली गाय देखी।
23. महात्मा गाँधी भारत के सर्वप्रिय नेता थे।
24. मैंने भूख से तड़पते व्यक्ति को रोटी दी।

2. सर्वनाम पदबंध *(Pronoun Phrase)* : सर्वनाम पदवंध के शीर्ष में सर्वनाम पद होता है। इसमें कई पद मिलकर र्वनाम इकाई के रूप में कार्य करते हैं।

उदाहरण :

1. दीन-दुखियों की सहायता करने वाले आप कौन हैं?
2. शेर की तरह दहाड़ने वाले तुम काँप क्यों रहे हो?
3. छात्रावास में रहने वाले छात्रों में से कुछ चले गए।
4. आपके मित्रों में से कोई समय पर नहीं पहुँचा।
5. चोट खाए हुए तुम भला क्या खेलोगे।
6. गुलाब की तरह मुस्कराने वाले तुम आज उदास क्यों हो?
7. तकदीर की मारी मैं कहाँ आ पहुँची ?
8. बाहर से आए यात्रियों में कुछ शाकाहारी हैं।
9. जो छात्र परिश्रम करेंगे वे ही परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे।
10. गीता पढ़ने वाले आप उपदेश देने के वास्तविक अधिकारी हैं।
11. बाहर से आए मनुष्यों में कुछ शरारती तत्त्व भी हैं।
12. बहुत बढ़-बढ़कर बोलने वाले तुम आज चुप क्यों हो?
13. बाहर से आए मनुष्यों में कुछ लुटेरे भी हैं।
14. सदा हँसते रहने वाले तुम आज सुस्त क्यों हो?
15. सोच समझकर काम करने वाले तुम आज गलती कैसे कर बैठे?

3. विशेषण पदबंध *(Adjective Phrase)* : विशेषण पदवंध के शीर्ष में विशेषण होता है, अन्य पद उस विशेषण पर आश्रित होते हैं। इसमें प्रमुखतया प्रविशेषण लगता है :

(क) प्रविशेषण : बहुत सुंदर, थोड़ा नमकीन, ज्यादा मीठा, कुछ हल्का-फीका।
(ख) तुलनात्मक/सादृश्यात्मक : सिंह जैसा बलवान (*व्यक्ति*), हीरे से भी अधिक कठोर।

उदाहरण :

1. घर से भागा हुआ लड़का मिल गया।
2. मेरे कानपुर वाले मित्र ने मुझे एक सचित्र और मोटी पुस्तक दी है।
3. गहरी काली कमीज पहनो।
4. सबसे कम बोलने वाला वह आज चुप है।
5. लोहे की मजबूत बड़ी अलमारी खोलो।
6. सस्ता खरीदा हुआ कपड़ा नहीं चलता।
7. बंगले के पीछे लगा पेड़ गिर गया।
8. मीठे-मीठे सपने देखने वाले लोग अकर्मण्य होते हैं।
9. धीमी चलने वाली गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।
10. उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।
11. उसका बेटा अत्यंत सुंदर, फुर्तीला और आज्ञाकारी है।

12. पीपल की घनी छाँव से हमें बहुत सुख मिला।
13. बराबर के कमरे में रहने वाला आदमी छत से गिर पड़ा।
14. दीन-दु:खियों पर असाधारण दया दिखाने वाले आप सचमुच महान हैं।
15. शेर की तरह दहाड़ने वाले तुम काँप क्यों रहे हो?
16. दूसरों के साथ मीठा बोलने वाले लोग सुखी रहते हैं।
17. सेवा कार्य में लगे रहने वाले व्यक्ति कभी फल की इच्छा नहीं करते।
18. मेरा प्रयाग में रहने वाला मित्र कल दिल्ली आएगा।
19. मेरे मित्र बड़े नेक और ईमानदार हैं।
20. मुझे एक सुंदर, मजबूत, लाल पेंसिल चाहिए।

ध्यान दें : विशेषण पदबंध प्राय: संज्ञा पदबंध या सर्वनाम पदबंध का ही अंग होता है।

उदाहरण :

1. **लोहे की बड़ी अलमारी** (*संज्ञा पदबंध*)
   लोहे की बड़ी (*विशेषण पदबंध*)
2. **जोर-जोर से चिल्लाने वाला वह** (*सर्वनाम पदबंध*)
   जोर-जोर से चिल्लाने वाला (*विशेषण पदबंध*)

❖ इससे स्पष्ट होता है कि विशेषण पदबंध प्राय: संज्ञा/सर्वनाम पदबंध के अंग बनकर ही वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं अर्थात् संज्ञा/सर्वनाम पदबंध में से संज्ञा/सर्वनाम को हटाने के बाद जो अंश शेष रह जाता है वह **'विशेषण पदबंध'** ही होता है।

4. क्रिया पदबंध *(Verb Phrase)* : एक से अधिक क्रिया पद मिलकर जहाँ एक इकाई के रूप में क्रिया का कार्य संपन्न करते हैं, वहाँ क्रिया पदबंध होता है। इस पदबंध के शीर्ष में क्रिया रहती है। इसमें मुख्य क्रिया पहले आती है, उसके बाद अन्य क्रियाएँ आती हैं।

उदाहरण :

1. हम **पढ़कर सो जाया करते हैं।**
2. नाव पानी में **डूबती चली गई।**
3. तुम्हें उसकी बात **मान लेनी चाहिए।**
4. पत्थर **लुढ़कते चले जा रहे थे।**
5. अब तो हमसे **चला जा रहा है।**
6. वह बाजार की ओर **आया होगा।**
7. मुझे शरद छत से **दिखाई दे रहा है।**
8. रवि नदी में **डूब गया।**
9. अब दरवाजा **खोला जा सकता है।**
10. वह **गाता हुआ जा रहा था।**
11. विद्यार्थी **पढ़कर सो गया।**
12. हम काम **करना चाहते हैं।**
13. तितलियाँ फूलों पर **मँडरा रही थीं।**
14. मुझे **सुनाई पड़ रहा है।**
15. सुरेश नदी में **डूब गया।**
16. हम काम **करना चाहते हैं।**
17. बंजारा **गाता हुआ जा रहा है।**

क्रिया पदबंध के दो भेद हैं :

(क) क्रिया-विशेषणात्मक पदबंध : यहाँ क्रिया पर क्रिया-विशेषणात्मक पद या पदबंध आश्रित होता है।
जैसे— धीरे-धीरे चल रहा है, तेज़ी से दौड़ रहा है।

उदाहरण : वह **सुबह-सुबह खेलता है।** बच्चे **पढ़ते-पढ़ते सो जाते हैं।**

(ख) अंत:केन्द्रित क्रिया पदबंध : यहाँ मुख्य क्रिया पर अन्य सहायक, संयोजी और रंजक क्रियाएँ आश्रित होती हैं।
जैसे-मोहन किताब पढ़ रहा है।

इस क्रिया पदबंध **'पढ़ रहा है'** में **'पढ़'** शीर्ष क्रिया है।

पढ़ ← **रहा** ← **है**

अंत:केंद्रित क्रिया पद्बंध में समापिका क्रिया के साथ नकारात्मक या अवधारणात्मक निपात भी आ सकते हैं;
जैसे—गिर **ही** पड़ा, पढ़ा **भी** नहीं जाता।

❖ क्रिया पदबंध का स्थान वाक्य के अंत में होता है।

5. क्रिया-विशेषण पदबंध *(Adverb Phrase)* : क्रियाविशेषण पदबंध में क्रिया-विशेषण शीर्ष पर होता है, अन्य पद उस पर आश्रित होते हैं। जैसे—

1. वह **बहुत धीरे-धीरे** उठा।
2. **कश्मीर से कन्याकुमारी तक** भारत एक है।
3. **पिछले सभी दिनों की अपेक्षा** आज गर्मी अधिक है।
4. **बालक रोता हुआ शनैः-शनैः** माँ के पास पहुँचा।
5. वह **गेंद की तरह लुढ़ककर** गिर गया।
6. मैंने रमा की **आधी रात तक** प्रतीक्षा की।
7. उसने साँप को **पीट-पीटकर** मारा।
8. छात्र राजेश की शिकायत **दबी जुबान** से कर रहे थे।
9. सरिता **सुमन से अधिक** मेधावी है।
10. कुछ लोग **सोते-सोते** चलते हैं।
11. **वह पहले से बहुत धीरे** बोला।
12. **मित्रमंडली के साथ** मोहन घर पर बैठा है।
13. **ऐसा होने पर भी** उसने हमारा काम कर दिया।
14. हमारा भवन **नवभारत टाइम्स के कार्यालय के पास** है।
15. लोग **धीरे-धीरे बोलते-बतियाते** जा रहे थे।
16. **गेंद की तरह लुढ़ककर** वह सीढ़ियों से नीचे गिरा।
17. **पिछले सभी दिनों की अपेक्षा** आज गर्मी अधिक है।
18. **उस लंबे-चौड़े मैदान के आस-पास बहुत से** सैनिक जमा हैं।
19. हमारा विद्यालय **गर्मियों की छुट्टियाँ समाप्त होने के बाद आज** खुला है।
20. कुछ लोग **धीरे-धीरे बात करते हुए** चले जा रहे थे।

हिंदी के क्रिया-विशेषण पदबंधों की विशेषताएँ :

1. हिंदी में क्रिया-विशेषण पदबंधों की रचना प्रायः संज्ञा तथा परसर्ग/अव्यय के संयोग से होती है। जैसे—

    मैं नीचे वाले कमरे में रहूँगा। वह **छत के ऊपर** सो रहा है।

2. कुछ कृदंत रूपों से भी क्रिया-विशेषण पदबंध बनते हैं। जैसे—

    वह **धीरे-धीरे सुबकते हुए** कहने लगी। आप **आराम से बैठकर** बातें कीजिए।

3. अधिकतर क्रिया-विशेषण पदबंधों का प्रयोग वाक्य में वैकल्पिक होता है। यदि इनको वाक्य से हटा भी दिया जाए तो भी वाक्य की मूल संरचना प्रभावित नहीं होती। जैसे—

    वह (शाम को चार बजे) पहुँचेगी। वह (रोते हुए) बोला।

[क्रिया-विशेषण के चारों भेदों में से कोई भी शीर्ष पर हो सकता है]

रीतिवाची — वह **बहुत तेज दौड़कर** आई।
समयवाची — मैं **कल शाम को चार बजे** पहुँचूँगा।
दिशावाची — चोर **उस ओर अँधेरे में** गायब हो गया।

स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- जब कई पद मिलकर एक इकाई के रूप में कार्य करें तब उसे पदबंध कहते हैं।
- शीर्ष में जो पद (*संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, विशेषण*) होता है, वही नाम उस पदबंध का होता है, अन्य पद आश्रित होते हैं।
- पदबंध पाँच प्रकार के हैं —1. संज्ञा पदबंध, 2. सर्वनाम पदबंध, 3. विशेषण पदबंध, 4. क्रिया पदबंध, 5. क्रिया-विशेषण पदबंध।

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए पद, शब्द और पदबंध संबंधी प्रश्न

(CBSE 2009, Delhi)

(Set-I)

प्रश्न 1. (क) पद और पदबंध में क्या अंतर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) रेखांकित पदबंध का नाम बताइए :

जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है।

(ग) नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए :

रेखा कहती है कि मैं अपना काम स्वयं करती हूँ।

उत्तर : (क) वाक्य में प्रयुक्त शब्द **पद** कहलाता है जबकि कई पद मिलकर जब एक इकाई का काम करें तब उसे **पदबंध** कहा जाता है।

उदाहरण : बटुआ : पद।

शीला का बटुआ : पदबंध।

(ख) **जनरल साहब का बावर्ची** : संज्ञा पदबंध।

(ग) **रेखा** : व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।

मैं : पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष), एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक।

(Set-II)

(क) शब्द पद कैसे बनता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) नीचे लिखे वाक्य में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए :

वह लपाती की समुद्री चट्टान पर पहुँच गया।

(ग) नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

हामिद बडी पतंग उड़ा रहा है।

उत्तर : (क) शब्द स्वतंत्र होते हैं। जब वह वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब पद बन जाता है। जैसे :

हम गेंद से खेलेंगे + पद

हम–शब्द–हम गेंद से–पद

(ख) संज्ञा पदबंध।

(ग) **हामिद** : व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

बड़ी : विशेषण (गुणवाचक) पतंग–विशेष्य, स्त्रीलिंग, एकवचन।

(Set-III)

(*i*) शब्द और पद में क्या अंतर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) दिए गए वाक्य में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए :

गाड़ी पानी में डूबती चली गई।

(*iii*) रेखांकित का पद-परिचय दीजिए :

आज दादी ने बड़ी मनोरंजक कहानी सुनाई।

उत्तर : (*i*) (क) वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता जबकि कई पद मिलकर जब एक इकाई का काम करें उसे पदबंध कहा जाता है।

जैसे : बटुआ – पद।

शीला का बटुआ : पदबंध।

(*ii*) क्रिया पदबंध।

(*iii*) **दादी ने** : जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक।

मनोरंजक : गुणवाचक विशेषण (कहानी–विशेष्य)।

(CBSE 2009, Outside)

(Set-I)

प्रश्न 1. (क) शब्द किसे कहते हैं? वह पद कैसे बन जाता है?

(ख) नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए :

गंगा–यमुना वाला देश भारत ही है।

(ग) रेखांकित पद का पद-परिचय दीजिए :

संसार में सदा सुखी कौन रहता है?

उत्तर : (क) वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं। जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब वह पद बन जाता है।

(ख) संज्ञा पदबंध।

(ग) संसार–संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण कारक।

(Set-II)

(क) शब्द और पद में क्या अंतर है? उदाहरण सहित लिखिए।

(ख) रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

मेरे गाँव में कई विद्वान रहते हैं।

(ग) नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए :

वह बहुत जोर से बोलता है।

उत्तर : (क) शब्द वाक्य के बाहर होता है और वह वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब वह पद बन जाता है।

उदाहरणार्थ : पुस्तक – शब्द।

मैंने पुस्तक को पढ़ा – पद।

(ख) **मेरे** : सार्वनामिक विशेषण (गाँव–विशेष्य)

विद्वान : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन।

(ग) क्रियाविशेषण पदबंध (अव्यय पदबंध)।

(Set-III)

(क) पद और पदबंध में क्या अंतर है? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए :

पौने दो घंटे बाद पुलिस आई।

(ग) रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए :

उस मकान में एक साँप रहता है।

उत्तर : (क) वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है और पदों के समूह की इकाई को पदबंध कहते हैं।

उदाहरण : अलमारी : पद।

लोहे की बड़ी अलमारी : पदबंध।

(ख) अव्यय पदबंध।

(ग) **मकान में :** जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग अधिकरण कारक।

एक : संख्यावाचक विशेषण (साँप – विशेष्य)

(CBSE 2008, Delhi)

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार बताइए :

(क) दक्षिण से उत्तर तक भारत एक है।

(ख) हमेशा शोर करने वाला वह आज शांत था।

उत्तर : (क) विशेषण पदबंध, (ख) सर्वनाम पदबंध।

(CBSE 2008 Outside)

प्रश्न 1. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए :

(क) बड़ी-बड़ी गप्पें हाँकने वाले तुम कहाँ चले गये थे?

(ख) हिमालय से कन्याकुमारी तक हिंदी का प्रचार है।

उत्तर : (क) विशेषण पदबंध, (ख) अव्यय पदबंध।

(CBSE 2008 Comptt. Delhi)

प्रश्न 1. दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए :

(*i*) मीठे-मीठे सपने देखने वाले लोग अकर्मण्य होते हैं।

(*ii*) वह फुटबाल की तरह लुढ़ककर गिर गया।

उत्तर : (*i*) संज्ञा पदबंध। (*ii*) क्रिया-विशेषण पदबंध।

प्रश्न 2. (क) पदबंध और पद में अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। *(Set-I, II, III)*

उत्तर : जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब वह पद बन जाता है। जब कई पद मिलकर एक इकाई के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब यह **पदबंध** कहलाता है। **उदाहरण :**

पद : अलमारी।

पदबंध : लोहे की बड़ी अलमारी (संज्ञा पदबंध)

(ख) नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए : *(Set-I, II, III)*

(*i*) मीठे-मीठे सपने देखने वाले लोग अकर्मण्य होते हैं।

(*ii*) वह फुटबाल की तरह लुढ़ककर गिर गया।

उत्तर : (*i*) संज्ञा पदबंध। (*ii*) क्रिया-विशेषण पदबंध।

(CBSE 2008 Comptt. Outside)

प्रश्न 1. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए :

(*i*) लंदन से आए हुए मेहमान आगरा गए हैं।

(*ii*) दोनों कबूतर खिड़की से बाहर देखते रहते हैं।

(*iii*) रोज की तरह आज भी वह विद्यालय नहीं आया।

(*iv*) अब वे हिंदी लिख-बोल सकते हैं।

उत्तर : (*i*) संज्ञा पदबंध, (*ii*) क्रिया-विशेषण पदबंध, (*iii*) अव्यय पदबंध, (*iv*) क्रिया-पदबंध।

प्रश्न 2. (क) पद और पदबंध में अंतर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। *(Set-I, II, III)*

उत्तर : वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द **पद** बन जाता है और जब कई पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं, तब वह इकाई **'पदबंध'** कहलाती है। **उदाहरण :**

लड़का पुस्तक पढ़ता है। (लड़का–पद)

मेरा छोटा लड़का पुस्तक पढ़ता है।

(मेरा छोटा लड़का–पदबंध)

(ख) नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए :

(*i*) लंदन से आए हुए मेहमान आगरा गए हैं।

(*ii*) दोनों कबूतर खिड़की से बाहर देखते रहते हैं।

उत्तर : (*i*) संज्ञा पदबंध, (*ii*) क्रिया-विशेषण पदबंध।

(CBSE 2008, Delhi) *(Set I)*

प्रश्न : (*i*) शब्द और पद का अन्तर उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदबंधों के नाम बताइए :

(क) नाव उफनती नदी में डूब गई।

(ख) घोंसले में रहने वाली चिड़िया उड़ गई।

उत्तर : (*i*) शब्द स्वतंत्र होता है। जब वह वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब पद बन जाता है। जैसे 'मैंने' शब्द है।

मैंने राम को पत्र लिखा। (रेखांकित पद है।)

(*ii*) (क) संज्ञा पदबंध। (ख) विशेषण पदबंध।

(Set II)

(*i*) निम्नलिखित वाक्य में एक शब्द और एक पद छाँटकर लिखिए और उनमें क्या अंतर है यह भी स्पष्ट कीजिए :

पिताजी का पत्र मुझे आज ही मिला है।

उत्तर : पत्र – शब्द पिताजी का – पद

अंतर–शब्द का स्वतंत्र अस्तित्व होता है जबकि पद वाक्य का हिस्सा बन जाता है।

(*ii*) नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए :

(क) रात में भौंकने वाला कुत्ता मर गया।

(ख) वह दौड़ते-दौड़ते थक गया।

उत्तर : (क) विशेषण पदबंध, (ख) क्रिया-विशेषण पदबंध।

(Set III)

(*i*) पद और पदबंध में क्या अंतर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : (*i*) ऊपर देखें।

(*ii*) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार बताइए :

(क) दक्षिण से उत्तर तक भारत एक है।

(ख) हमेशा शोर करने वाला वह आज शान्त था।

उत्तर : (क) विशेषण पदबंध, (ख) सर्वनाम पदबंध।

(CBSE 2008, Outside) *(Set I)*

प्रश्न : (*i*) शब्द और पद में क्या अंतर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : शब्द का स्वतंत्र अस्तित्व होता है। जब वह वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब पद बन जाता है। उदाहरण–मैं, पुस्तक, पढ़ शब्द हैं।

मैंने पुस्तक पढ़ी ।

इसमें तीन पद हैं।

(*ii*) नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए :

(क) मेरे बनारस वाले मित्र ने यह पुस्तक भेजी है।

(ख) विद्यालय पार्क के पास है।

उत्तर : (क) विशेषण पदबंध, (ख) क्रिया-विशेषण पदबंध।

(Set II)

(*i*) शब्द किसे कहते हैं? शब्द पद से किस प्रकार भिन्न होता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : ऊपर देखें।

(*ii*) नीचे दिये गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए : 2

(क) बड़ी-बड़ी गप्पें हाँकने वाले तुम कहाँ चले गये थे?

(ख) हिमालय से कन्याकुमारी तक हिन्दी का प्रचार है।

उत्तर : (क) विशेषण पदबंध, (ख) अव्यय पदबंध।

(Set III)

(*i*) पद और शब्द में क्या अंतर है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : ऊपर देखें।

(*ii*) नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदबंध का प्रकार लिखिए :

(क) रोज की तरह आज भी वह विद्यालय नहीं आया।

(ख) अब वे हिन्दी लिख-बोल सकते हैं।

उत्तर : (क) अव्यय पदबंध, (ख) क्रिया-पदबंध।

(CBSE Sample Paper-1)

प्रश्न : (*i*) शब्द और पद में अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित पदबंध का प्रकार बताइए :

(क) दुकानों से ऊँघते हुए चेहरे बाहर झाँके।

(ख) लाल बालों वाला एक सिपाही चला आ रहा था।

उत्तर :

(*i*) शब्द भाषा की सबसे छोटी इकाई है। जब यह शब्द स्वतंत्र रहता है अर्थात् वाक्य से बाहर रहता है तब तक यह शब्द कहलाता है, किंतु जब यह वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तब इसे पद कहा जाता है।

उदाहरण : कमल, तालाव, खिलना–तीन स्वतंत्र शब्द हैं। इनसे वाक्य बनता है–कमल तालाब में खिलता है। अब तीन पद हैं–कमल, तालाब में, खिलता है।

(*ii*) (क) ऊँघते हुए चेहरे– संज्ञा पदबंध।

(ख) लाल बालों वाला – विशेषण पदबंध।

(CBSE Sample Paper-2)

प्रश्न 1. (*i*) पद और पदबंध का अंतर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित पदबंध का प्रकार बताइए :

(क) एक कुत्ता तीन टाँगों के बल रेंगता चला आ रहा है।

(ख) यह सुरजीत हमेशा कोई-न-कोई शरारत करता रहता है।

उत्तर : (*i*) वाक्य में प्रयुक्त शब्द **'पद'** कहलाते हैं जबकि वाक्य में एक से अधिक पद परस्पर मिलकर जब एक ही व्याकरण कोटि का कार्य करते हैं तो **'पदबंध'** कहलाते हैं।

उदाहरण : 'अलमारी' पद है। 'लोहे की बड़ी अलमारी' पदबंध है।

(*ii*) (क) क्रियाविशेषण पदबंध।

(ख) क्रिया पदबंध।

अभ्यासार्थ
(Practice)

1. पदबंध किसे कहते हैं ?
2. पदबंध के प्रकार लिखिए। सभी का एक-एक उदाहरण दीजिए।
3. संज्ञा पदबंध के दो उदाहरण दीजिए।
4. **नीचे लिखे वाक्यों में से पदबंध छाँटिए और उनके नाम लिखिए :**
   1. दूध ज्यादा मीठा है।
   2. उसने सफेद शेर देखा।
   3. अब पवनपुत्र हनुमान का प्रवेश हो गया।
   4. आप बहुत अच्छे आदमी हैं।
   5. शीला गाती हुई जा रही थी।
5. क्रिया पदबंध किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए।
6. **नीचे लिखे कथनों में से जो सही हों उन पर (✓) का तथा जो गलत हों उन पर (×) का चिह्न लगाइए :**
   - ☐ 1. पदबंध में एक से अधिक पद होते हैं।
   - ☐ 2. 'सुंदर बच्चा' विशेषण-पदबंध है।
   - ☐ 3. क्रिया पदबंध के शीर्ष में विशेषण होता है।
   - ☐ 4. 'बहुत सुंदर' में 'बहुत सुंदर' शीर्ष पद का विशेषण है।
7. **निम्नलिखित वाक्यों में से पदबंध छाँटिए और बताइए कि ये पदबंध किस प्रकार के हैं :**
   1. रमेश पढ़कर सो गया है।
   2. आपके मित्रों में से कोई समय पर न पहुँचा।
   3. पाकिस्तान से आए खिलाड़ी होटल में ठहरे हैं।
   4. परिश्रम करने वाला छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण होगा।
   5. वह पढ़ते-पढ़ते सो गया।
   6. मथुरा में रहने वाला मेरा मित्र कल दिल्ली आएगा।
   7. सामने के मकान में रहने वाला लड़का आज चला गया।
   8. वह गाड़ी चलती चली जा रही है।
   9. उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी अपराधी है।
   10. सामने की दुकान पर चाय पीने वाला लड़का घर चला गया।
8. **काले (मोटे) छपे अंश में प्रयुक्त पदबंध का भेद बताइए :**
   1. **पीले-पीले मीठे आम** खरीदो।
   2. **बहुत गहरी लाल** कमीज पहनो।
   3. **मुझे सुनाई पड़ रहा है।**
   4. **अनुशासन बनाए रखने वाले छात्रों** पर देश निर्भर है।
   5. नदी कल-कल करती हुई **बह रही थी।**
   6. **स्वागतार्थ आए हुए लोगों से घिरे नेताजी** ने उद्घाटन किया।
   7. मैंने स्वाति की **आधी रात तक** प्रतीक्षा की।
   8. **मथुरा में रहने वाला मेरा मित्र** कल आएगा।
   9. वह **झूठ बोल रही है।**
   10. अब दरवाजा **खोला जा सकता है।**
   11. **मुझे सुनाई पड़ रहा है।**
   12. **दशरथ-पुत्र राम** ने रावण को मार गिराया।
   13. **प्राणों की बाजी लगाने वाले** इतिहास में प्रसिद्ध हो जाते हैं।
   14. **बराबर के मकान में रहने वाला** व्यक्ति मर गया।

अध्याय 15

वाक्य-संरचना

(Syntax)

● वाक्य के अंग ● वाक्य-भेद ● रचनांतरण

जब भी हमें अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचानी होती है या बातचीत करनी होती है तो हम वाक्यों का सहारा लेकर... हैं। यद्यपि वाक्य विभिन्न शब्दों (पदों) के योग से बनता है और हर शब्द का अपना अलग अर्थ भी होता है, पर वाक्य में... सभी घटक परस्पर मिलकर एक पूरा विचार या संदेश प्रकट करते हैं। वाक्य छोटा हो या बड़ा, किसी-न-किसी विचार या भाव... पूर्णत: व्यक्त करने की क्षमता रखता है। अत: हम कह सकते हैं :

ऐसा सार्थक शब्द-समूह, जो व्यवस्थित हो तथा पूर्ण आशय प्रकट कर सके, वाक्य कहलाता है।

वाक्य के गुण *(Virtues of Sentence)* : वाक्य का निर्माण करने में निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है :

1. सार्थकता : वाक्य-रचना के लिए आवश्यक है कि उसमें प्रयुक्त सभी पद सार्थक हों। कई बार निरर्थक शब्द भी वाक्य में प्रयुक्त होकर अर्थवान हो जाता है। जैसे–

अरे भाई, खाना-वाना लाओ।

2. योग्यता : इसका अर्थ है–क्षमता। इसका आशय यह है कि शब्दों में सार्थक होने के साथ-साथ प्रसंग के अनुसार अर्थ देने की क्षमता भी होनी चाहिए। जैसे–

मैं पानी खाता हूँ।

इस वाक्य के सभी शब्द सार्थक हैं, पर वाक्य सही अर्थ देने की क्षमता नहीं रखता, क्योंकि पानी पीने का पदार्थ है न कि खाने का।

3. आकांक्षा : इसका अर्थ है–इच्छा। इसका आशय यह है कि वाक्य अपने आप में पूर्ण होना चाहिए। उसमें किसी भी शब्द की कमी नहीं होनी चाहिए, जिसके कारण अर्थ की अभिव्यक्ति में अधूरापन लगे। जैसे–

लड़के खुदाई हैं। (कर रहे)

यह लिखने पर वाक्य पूरा होगा–लड़के खुदाई कर रहे हैं।

4. आसक्ति या निकटता : एक वाक्य के शब्दों को बोलने अथवा लिखने में निकटता होना आवश्यक है। रुक-रुककर बोले गए शब्द अर्थ में बाधा डालते हैं। लिखते समय ठहराव दिखाने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग करना चाहिए। जैसे–

यह लड़का, किशनलाल का बेटा, बड़ा चालाक है।

5. पदक्रम : वाक्य का सही अर्थ जानने के लिए शब्दों का उचित क्रम में प्रयुक्त होना आवश्यक है। पद-क्रम का उल्लंघन करने पर वांछित अर्थ नहीं निकलता। जैसे–

'परिश्रम उत्थान देश का होता है से'

इस वाक्य में सार्थक शब्द भी हैं, योग्यता भी है, निकटता भी है, पर पदक्रम व्यवस्थित नहीं है। अत: वांछित अर्थ नहीं निकल रहा है। वाक्य इस प्रकार होना चाहिए–परिश्रम से देश का उत्थान होता है।

6. अन्वय : अन्वय का अर्थ है–मेल। वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष और कारक में मेल आवश्यक है। इसके बिना भी अर्थ में व्यवधान आता है।

उदाहरणार्थ : हमने दसों रुपए से ये खिलौना खरीदी।

यह वाक्य इस प्रकार होना चाहिए था :

हमने दस रुपयों से यह खिलौना खरीदा।

☞ **वाक्य के घटक** *(Components of Sentence)* **:** जिन अवयवों को मिलाकर वाक्य की रचना होती है, उन्हें वाक्य के अंग या घटक कहते हैं। वाक्य के मूल एवं अनिवार्य घटक हैं—**कर्ता** एवं **क्रिया।** इनके बिना वाक्य की रचना संभव नहीं है। इनके अतिरिक्त वाक्य के अन्य घटक भी होते हैं, विशेषण, क्रिया-विशेषण, कारक आदि, इन्हें ऐच्छिक घटक कहा जाता है।

☞ **वाक्य के अंग :** कर्ता और क्रिया के अनुसार वाक्य को दो **भागों** में विभाजित किया जाता है :

1. **उद्देश्य,** 2. **विधेय**

1. उद्देश्य *(Subject)* : वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया या कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे-'राम पढ़ता है।' इस वाक्य में 'राम' के बारे में बताया गया है, अतः यह उद्देश्य है।

इसके अंतर्गत कर्ता और कर्ता का विस्तार आता है। जैसे—

मेरा भाई राम पढ़ता है।

इस वाक्य में राम (कर्ता) का विस्तार 'मेरा भाई' है।

2. विधेय *(Predicate)* : उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं। जैसे—उपर्युक्त वाक्य में 'पढ़ता है' विधेय है। विधेय का भी विस्तार होता है। विधेय के अंतर्गत निम्नलिखित शब्द आते हैं :

1. क्रिया, 2. क्रिया का पूरक, 3. कर्म, 4. कर्म का विस्तार, 5. अन्य।

(1) क्रिया : क्रिया के बिना वाक्य नहीं बनता। जो पद वाक्य में किसी कार्य के करने या होने का बोध कराए, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे—विमला गीत **गाती है।** (*'गाती है'–क्रिया*)

(2) क्रिया का पूरक : कुछ क्रियाओं को अपने अर्थ को पूर्ण करने के लिए पूरक की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे 'पद' क्रिया के अर्थ को पूरा करते हैं, इन्हें क्रिया का पूरक कहते हैं। जैसे —

दिनेश था। क्या ? – बीमार (*'बीमार' क्रिया का पूरक*)

वाक्य होगा—दिनेश **बीमार** था।

(3) कर्म : वाक्य के जिस पद पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। जैसे —

राम **पत्र** लिखता है। (*पत्र—कर्म*)

(4) कर्म का विस्तार : यदि कर्म से उसकी विशेषता बताने वाला पद या पदों का प्रयोग हो, तो उसे कर्म का विस्तार कहा जाता है। जैसे—

राम ने **एक लंबा** पत्र लिखा।

(इस वाक्य में 'पत्र' कर्म है और 'एक लंबा' कर्म का विस्तार है।)

(5) अन्य विस्तार : जो पद कर्ता, कर्ता का विस्तार, क्रिया, क्रिया का पूरक, कर्म, कर्म का विस्तार में नहीं आते, उन्हें 'अन्य विस्तार' में लिखा जाता है।

इस उदाहरण से पुनः वाक्य के अंग समझें :

एक छोटा सा वाक्य लीजिए : मोहन आया।

इसके दो अंग हैं - 1. मोहन, 2. आया।

यहाँ मोहन के बारे में बात कही गई है। अतः **'मोहन'** वाक्य का **उद्देश्य** है।

मोहन के बारे में कहा गया है कि वह **'आया'**। अतः **'आया' विधेय** है।

☞ **जिसके बारे में बात कही जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं।**

☞ **उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं।**

अब निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

1. रमेश पुस्तक पढ़ता है। 2. सचिन कहानी लिखता है।

❖ उपर्युक्त वाक्यों में भी दो अंग हैं। एक अंग कर्ता के बारे में सूचना देता है, जैसे—रमेश, सचिन दूसरा अंग क्रिया के बारे में सूचना देता है जैसे : पढ़ता है, लिखता है।

इस प्रकार पहला अंग उद्देश्य कहलाता है और दूसरा **विधेय।**

अन्य उदाहरण देखिए -

उद्देश्य	विधेय
मेरा भाई	चतुर है।
सुरेश	बीमार है।
भागता हुआ चोर	तुरंत पकड़ा गया।
प्रेमचंद की कहानियाँ	बड़ी रुचि से पढ़ी जाती हैं।
वह बेचारा	क्या कर सकता था?

❖ कई बार वाक्य में प्रकट रूप से उद्देश्य दिखाई नहीं देता। आज्ञासूचक वाक्य देखिए :

उद्देश्य	विधेय
(तुम)	वहाँ मत जाओ।
(आप)	खाना खाओ।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में उद्देश्य का लोप है। 'तुम' और 'आप' के बिना भी ये वाक्य पूर्ण हैं। इसीलिए 'तुम' और 'आप' को कोष्ठक में रखा गया है अर्थात् ये दोनों (उद्देश्य) वाक्यों में अप्रकट रूप में निहित हैं।

इसी प्रकार कई वाक्यों में विधेय भी प्रकट रूप से दिखाई नहीं पड़ता। जैसे :

कोई पूछता है मुंबई कौन गया है ?

उत्तर मिलता है -'शशांक।'

इस उत्तर में पूरा वाक्य बनता है - 'शशांक मुंबई गया है।'

किंतु यहाँ 'मुंबई गया है' विधेय का लोप है।

वैसे विधेय का यह अंग अप्रकट रूप से वाक्य में निहित है।

☞ ध्यान दें :

उद्देश्य और विधेय एक-एक पद के भी हो सकते हैं और एक से अधिक पदों के भी। जैसे -

उद्देश्य	विधेय
1. रवि	जाता है।
2. मेरा भाई रवि	स्कूल जाता है।
3. मेरा सबसे छोटा भाई रवि	प्रतिदिन प्रातः स्कूल जाता है।

❖ उद्देश्य, उद्देश्य का विस्तार, विधेय, विधेय का विस्तार को समझने के लिए निम्नलिखित तालिका को देखें और समझें :

तालिका

वाक्य	उद्देश्य		विधेय	
	उद्देश्य	उद्देश्य का विस्तार	विधेय	विधेय का विस्तार
1. मेरा मित्र मोहन एक लंबा पत्र लिखता है।	मोहन	मेरा मित्र	लिखता है	एक लंबा पत्र
2. वीर हनुमान ने लंका में आग लगा दी।	हनुमान ने	वीर	आग लगा दी	लंका में
3. तेजस्वी चाणक्य मंत्री बन गया।	चाणक्य	तेजस्वी	बन गया	मंत्री
4. राधा लिखकर ही उठेगी।	राधा	-	उठेगी	लिखकर ही

☞ वाक्य के भेद *(Kinds of Sentences)* : सामान्यतः दो दृष्टियों से वाक्यों के भेद किए जाते हैं :

(क) अर्थ की दृष्टि से　　(ख) रचना की दृष्टि से

(क) अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद : अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं:

1. विधानवाचक वाक्य *(Assertive Sentence)* : जिन वाक्यों में किसी क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना हो, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं। किसी के अस्तित्व का बोध भी इसी प्रकार के वाक्यों से होता है। जैसे–

सूर्य पूर्व दिशा में उदित होता है। मैं कल मुंबई गया था।

2. निषेधवाचक वाक्य *(Negative Sentence)* : जिन वाक्यों से किसी कार्य के निषेध (न होने) का बोध होता है, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। इन्हें 'नकारात्मक वाक्य' भी कहा जाता है। जैसे—

सोहन नहीं पढ़ रहा है। वे बाजार नहीं गए।

3. प्रश्नवाचक वाक्य *(Interrogative Sentence)* : जिन वाक्यों में प्रश्न किया जाए अर्थात् किसी से कोई बात पूछी जाए, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे—

कल कौन आया था ? क्या तुम खेलोगे ?

4. आज्ञा या विधिवाचक वाक्य *(Imperative Sentence)* : जिन वाक्यों में आज्ञा या अनुमति का बोध हो, उन्हें आज्ञावाचक या विधिवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

अब आप चुप रहिए। *(आज्ञा)* आप जा सकते हैं। *(अनुमति)*

5. इच्छावाचक वाक्य *(Sentence denoting desire)* : जिस वाक्य से कर्ता की इच्छा, कामना, आशा या आशीर्वाद का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

आपकी यात्रा मंगलमय हो। ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे।

6. संदेहवाचक वाक्य *(Sentence Indicating Doubt)* : जिन वाक्यों में कार्य के होने में संदेह हो, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

शायद वह कल यहाँ आ जाए। शायद आज वर्षा हो।

7. संकेतवाचक वाक्य *(Indicative or Conditional Sentence)* : जिन वाक्यों में एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

अगर तुमने पढ़ा होता तो पास हो जाते। यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।

8. विस्मयादिवाचक वाक्य *(Exclamatory Sentence)* : जिन वाक्यों में हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य जैसे भाव व्यक्त हों, उन्हें विस्मयादिवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

अरे ! तुम आ गए। वाह ! तुमने तो कमाल कर दिया।

अहा ! कैसा सुंदर दृश्य है। हाय ! बुढ़िया मर गई।

(ख) रचना की दृष्टि से वाक्य-भेद : रचना अथवा बनावट की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं:

1. सरल या साधारण वाक्य *(Simple Sentence)* : जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय पाया जाए अथवा जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं। जैसे—

राकेश स्कूल जाता है। पानी बरस रहा है। बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

2. संयुक्त वाक्य *(Compound Sentence)* : इसमें दो या दो से अधिक उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक अव्यय (योजक) द्वारा जुड़े होते हैं। ये उपवाक्य समान स्तरीय होते हैं और उनके बीच समानाधिकरण संबंध होता है। जैसे—

1. हम लोग पुणे घूमने गए **और** वहाँ चार दिन रहे।
2. यहाँ आप रह सकते हैं **या** आपका भाई रह सकता है।
3. मैं आज मुंबई जाऊँगा **और** मेरे पिताजी यहाँ आएँगे।
4. वे बीमार हैं **अतः** आने में असमर्थ हैं।

संयुक्त वाक्य की पहचान :

- संयुक्त वाक्य में दो या अधिक मुख्य या स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं।
- मुख्य उपवाक्य अपने पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए किसी दूसरे उपवाक्य पर आश्रित नहीं रहते।
- उपवाक्य होते हुए भी उनमें पूर्ण अर्थ का बोध होता है।
- उपवाक्यों के बीच समानाधिकरण संबंध होता है।

❖ ये उपवाक्य और, तथा, फिर, या, अथवा, अन्यथा, किंतु, लेकिन, इसलिए-आदि समानाधिकरण योजक अव्ययों से जुड़े होते हैं; जैसे-

(क) बिजली थोड़ी देर के लिए आई **और** फिर चली गई।
(*i*) बिजली थोड़ी देर के लिए आई, (*ii*) फिर चली गई।

(ख) आप चाय पिएँगे **या** कॉफी ?
(*i*) आप चाय पिएँगे (*ii*) (आप) कॉफी (पिएँगे)।

(ग) शीघ्र चलिए **अन्यथा** देर हो जाएगी।
(*i*) शीघ्र चलिए (*ii*) (आपको) देर हो जाएगी।

(घ) मैं भी आपके साथ चलता **किंतु** मेरी तबियत ठीक नहीं है।
(*i*) मैं भी आपके साथ चलता (*ii*) मेरी तबियत ठीक नहीं है।

☞ **ध्यान दें :** संयुक्त वाक्य में दो उपवाक्यों में से एक उपवाक्य के कुछ अंश कभी-कभी लुप्त हो जाते हैं। यह स्थिति तब आती है जब एक ही वाक्य के दो उपवाक्यों में समान शब्द आते हैं, जैसे-

(क) पिताजी प्रातः चाय पीते हैं और (पिताजी) सायंकाल कॉफी पीते हैं।
(ख) शशांक कल मुंबई जाएगा और रोहन कोलकाता। (जाएगा)

– इसमें कम-से-कम दो उपवाक्य अवश्य होते हैं।
– इन उपवाक्यों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग हो सकता है।
– ये उपवाक्य आश्रित न होकर एक-दूसरे के पूरक होते हैं।

संयुक्त वाक्य **चार प्रकार** के होते हैं :

(*i*) **संयोजक :** इसके उपवाक्यों में परस्पर मेल प्रकट होता है। जैसे-गरिमा नाच रही है **और** पूर्वा गा रही है।
(*ii*) **विभाजक :** इसके उपवाक्यों में परस्पर विरोध प्रकट होता है; जैसे-लता गा रही है **परंतु** गीतिका चुप है।
(*iii*) **विकल्पदर्शक :** इसके दो उपवाक्यों में विकल्प प्रकट होता है; जैसे–तुम कुछ बोलो **या** यहाँ से चले जाओ।
(*iv*) **परिणामबोधक :** इसमें एक उपवाक्य दूसरे उपवाक्य का परिणाम या फल होता है; जैसे- तुमने कठिन परिश्रम किया **इसलिए** उत्तीर्ण हो गए।

3. मिश्र वाक्य *(Complex Sentence)* **:** मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और एक या अधिक गौण या आश्रित उपवाक्य होते हैं। आश्रित उपवाक्य अपने पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए मुख्य उपवाक्य पर आश्रित रहता है। मिश्र वाक्य के उपवाक्य 'कि, जैसा-वैसा, जो-वह, जब-तब, क्योंकि, यदि-तो' आदि व्यधिकरण योजकों से जुड़े रहते हैं। जैसे-

(क) अध्यापक ने बताया **कि** कल स्कूल में छुट्टी रहेगी।
(ख) **जो** लड़का कमरे में बैठा है, **वह** मेरा भाई है।
(ग) **जब** मैं छोटा था **तब** साइकिल चलाता था।
(घ) **यदि** इस बार वर्षा न हुई **तो** सारी फसल नष्ट हो जाएगी।

❖ उपर्युक्त वाक्यों में मुख्य उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य इस प्रकार हैं-

मुख्य उपवाक्य	*योजक*	*आश्रित उपवाक्य*
(क) अध्यापक ने बताया	कि	कल स्कूल में छुट्टी रहेगी।
(ख) वह मेरा भाई है	जो, वह	लड़का कमरे में बैठा है
(ग) साइकिल चलाता था	जब, तब	मैं छोटा था
(घ) सारी फसल नष्ट हो जाएगी	यदि तो	इस बार वर्षा न हुई।

मिश्र वाक्य के उपवाक्य प्रायः कि, जो, जिसने, जहाँ, जब यदि, अगर समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़े होते हैं।

• आश्रित उपवाक्य के भेद •

आश्रित उपवाक्य **तीन** प्रकार के होते हैं :

(क) संज्ञा उपवाक्य। (ख) विशेषण उपवाक्य। (ग) क्रिया-विशेषण उपवाक्य।

❖ **संज्ञा उपवाक्य :** जो उपवाक्य वाक्य में संज्ञा का काम करते हैं, वे संज्ञा उपवाक्य कहलाते हैं।

संज्ञा उपवाक्य से पहले प्राय: **कि** का प्रयोग होता है, पर कभी-कभी 'कि' का लोप भी हो जाता है। जैसे-

1. मुझे विश्वास है कि **वह दीपावली पर अवश्य आएगा।**
2. **तुम नहीं जाओगे,** मैं जानता था। ('कि' का लोप)
3. राम ने कहा कि **हम लड़ाई नहीं चाहते।**
4. मैं चाहती हूँ कि **तुम डॉक्टर बनो।**
5. मैं कहता हूँ कि **तुम शादी कर लो।**

❖ **विशेषण उपवाक्य :** विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य में प्रयुक्त किसी संज्ञा की विशेषता बताता है।

हिंदी में प्राय: विशेषण उपवाक्य 'जो', जिसे', 'जिसको' आदि से शुरू होते हैं। जैसे-

1. आपकी वह पुस्तक कहाँ है, **जो आप कल लाए थे।**
2. **जो आदमी पत्र बाँटता है,** वह डाकिया होता है।
3. **जिसे आप ढूँढ रहे हैं,** वह मैं नहीं हूँ।
4. **जो पैसे मुझे मिले थे,** वे खर्च हो गए।
5. **जिसने गिलास तोड़ा है,** वह खड़ा हो जाए।
6. उस लड़के को बुलाओ, **जिसने काली कमीज पहन रखी है।**

❖ **क्रिया-विशेषण उपवाक्य :** यह उपवाक्य सामान्यत: मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है। क्रिया-विशेषण उपवाक्य किसी काल, स्थान, रीति, परिमाण, कार्य-कारण आदि का द्योतन करते हैं।

इनमें जब, जैसा, जहाँ, ज्यों-ज्यों आदि समुच्चयबोधक अव्यय प्रयुक्त होते हैं। जैसे-

1. **जब बारिश हो रही थी,** मैं घर में था। *(कालवाची)*
2. **जहाँ तुम पढ़ते हो,** वहीं मैं पढ़ता था। *(स्थानवाची)*
3. **जैसा आपने बताया,** मैंने वैसा किया। *(रीतिवाची)*
4. **यदि मोहन पढ़ लेता तो** अवश्य पास हो जाता। *(कार्य-कारण)*
5. **जहाँ-जहाँ हम गए,** हमारा भव्य स्वागत हुआ।
6. **जब-जब धर्म का आघात हुआ,** महापुरुष अवतरित हुए।

• क्रिया-विशेषण उपवाक्य के भेद •

(क) समय/कालवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य

(*i*) **जब मैं दिल्ली में रहता था,** बहुत पढ़ता था। (*ii*) **जब आपका आदमी आया,** मैं नहा रहा था।

(ख) स्थानवाची क्रियाविशेषण उपवाक्य

(*i*) **जहाँ हम रहते हैं,** वह अच्छा स्थान है। (*ii*) यह वही स्थान है, **जहाँ आपने चोट खाई थी।**

(ग) रीतिवाची क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(*i*) **जैसा मैं चाहता हूँ,** वैसा ही काम करो। (*ii*) **जैसा वह गाती है,** कोई नहीं गा सकता।

(घ) परिणामवाचक क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(*i*) **ज्यों-ज्यों वह बड़ा हो रहा है,** मूर्ख होता जा रहा है। (*ii*) **जितना तुम जानते हो,** उतना काम करो।

(ङ) कारणवाचक क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(*i*) मैं नहीं आ सकूँगी, **क्योंकि मेरा बेटा बीमार है।**

(*ii*) वह नहीं जा सका, **क्योंकि उसकी तबियत बिगड़ गई।**

(च) शर्तवाचक क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(*i*) यदि तुम चाहो तो लौट सकते हो। (*ii*) अगर मेरी बात मानोगी तो सुखी रहोगी।

(छ) विरोधवाचक क्रिया-विशेषण उपवाक्य

हालाँकि मेरे पास रहने के लिए जगह थी (फिर भी) मैंने किराए का मकान लिया।

(ज) प्रयोजनवाची क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(*i*) दरवाजा बंद कर दो ताकि बिल्ली न आ सके। (*ii*) पतीले पर प्लेट ढक दो जिससे भाप न निकले।

सी.बी.एस.ई. की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए मिश्र वाक्य संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों में मोटे अक्षरों में दिए गए उपवाक्य का नाम बताइए-

1. रहीम बोला कि **मैं कल हैदराबाद जा रहा हूँ।**
2. वह पुस्तक कौन-सी है, **जो आपको बहुत पसंद है ?**
3. मुझे विश्वास है कि **आप अवश्य आएँगे।**
4. महात्मा गाँधी ने कहा कि **गाय करुणा की कविता है।**
5. मुझे एक व्यक्ति मिला, **जो बहुत पढ़ा-लिखा था।**
6. **जो व्यक्ति मृदुभाषी होता है,** उसे सभी चाहते हैं।
7. मेरे जीवन का लक्ष्य है कि **मैं अध्यापक बनूँ।**
8. मुझे विश्वास है कि **रेखा अवश्य उत्तीर्ण होगी।**
9. आज फिर वही लड़की मिली, जो बहुत खूबसूरत थी।
10. वह बीमार ठीक हो गया, **जो अस्पताल में था।**
11. वह अध्यापक था, **जो कल यहाँ आया था।**
12. रमेश ने कहा कि **मैं कल कोलकाता जा रहा हूँ।**
13. मैंने एक फूल देखा, **जो खिल रहा था।**
14. सभी जानते हैं कि **वह विद्वान है।**
15. **जो व्यक्ति झूठ बोलता है,** उस पर कोई विश्वास नहीं करता।
16. यह वही व्यक्ति है, **जिसने कल मुझे गिरने से बचाया था।**
17. **जो छात्र परिश्रम करता है,** वह सदा सफल होता है।
18. मैंने वृंदावन देखा है, **जहाँ श्री कृष्ण रासलीला करते थे।**
19. **जहाँ-जहाँ वह जाता है,** उसका सम्मान होता है।
20. **जब बादल घिर कर आए,** तब मैं घर पर ही था।

उत्तर : 1. संज्ञा उपवाक्य, 2. विशेषण उपवाक्य, 3. संज्ञा उपवाक्य, 4. संज्ञा उपवाक्य, 5. विशेषण उपवाक्य, 6. विशेषण उपवाक्य, 7. संज्ञा उपवाक्य, 8. संज्ञा उपवाक्य, 9. विशेषण उपवाक्य, 10. विशेषण उपवाक्य 11. विशेषण उपवाक्य, 12 संज्ञा उपवाक्य, 13. विशेषण उपवाक्य, 14. संज्ञा उपवाक्य, 15. विशेषण उपवाक्य, 16. विशेषण उपवाक्य, 17. विशेषण उपवाक्य, 18. क्रिया-विशेषण उपवाक्य, 19. क्रिया-विशेषण उपवाक्य, 20. क्रिया-विशेषण उपवाक्य।

अभ्यासार्थ
(Practice)

1. आश्रित उपवाक्य अलग करके बताइए कि वह किस प्रकार का है :

(*i*) गीता में कहा गया है कि कर्म पर ही मनुष्य का अधिकार है।

उत्तर : कर्म पर मनुष्य का अधिकार है = संज्ञा उपवाक्य।

(*ii*) यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य फल पाओगे।

(*iii*) तथागत ने कहा कि तुम्हें अपना दीपक स्वयं बनना है।

(*iv*) जब भी मैं वहाँ गया, उसने मेरा स्वागत किया।

(*v*) अंग्रेज जान गए थे कि भारत को स्वतंत्रता देनी पड़ेगी।

(*vi*) वे सैनिक कहाँ हैं, जिन्होंने शत्रुओं के वायुयान गिराए थे।

(*vii*) वह मजदूर कहाँ है, जो कल छत से गिर गया था।

(*viii*) जहाँ-जहाँ वह गया, उसका भव्य स्वागत हुआ।

(*ix*) तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि तुम्हारा पुत्र कक्षा में प्रथम आया है।

(*x*) जो कल हमारे घर आए थे, वे मेरे शिक्षक हैं।

(*xi*) वह कौन-सी पुस्तक थी, जिसे मैं अपने साथ ले गया था।

(*xii*) मैंने उसे बताया कि मैं विपत्ति में सदा आपके साथ रहूँगा।

(*xiii*) जीवन में बहुत से ऐसे अवसर आएँगे, जब तुम्हारी याद आएगी।

(*xiv*) जहाँ-जहाँ हम गए, हमारा बहुत सम्मान हुआ।

2. मुख्य (प्रधान) उपवाक्य छाँटकर लिखिए-

1. हमारा उद्देश्य रहता है कि हम आत्मनिर्भर हों।

उत्तर : हमारा उद्देश्य रहता है–मुख्य उपवाक्य

2. मुझे विश्वास है कि आप मान जाएँगे।
3. मोहन ने मुझसे कहा कि वह बहुत दुखी है।
4. जो भाषण दे रहा था, वह मेरा मित्र है।
5. मैंने उसे पुकारकर कहा कि अभी उधर मत जाओ।
6. इन्हें क्षमा कर दो, क्योंकि इनसे अनजाने में भूल हुई है।

7. आप यहाँ के मुखिया हैं, कौन नहीं जानता।
8. माता जब भी अपने एकमात्र पुत्र को देखती है तो उसका हृदय स्नेह से भर जाता है।
9. जो संतोषी होते हैं, वे कभी धन संबंधी चिंताओं से पीड़ित नहीं होते।

3. निम्नलिखित वाक्यों में मुख्य उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य अलग-अलग करके लिखिए तथा उपवाक्य का भेद भी बताइए :

(उदाहरण देखो, समझो और करो)

1. अध्यापक चाहता है कि उसके शिष्य नाम कमाएँ।

उत्तर : मुख्य उपवाक्य – अध्यापक चाहता है।
आश्रित उपवाक्य – उसके शिष्य नाम कमाएँ
आश्रित उपवाक्य का भेद – संज्ञा उपवाक्य

2. जब तुम स्टेशन पर पहुँचे, तब मैं घर से चला।
3. जब भी मैं उसके घर गया, वहाँ मेरा आदर-सत्कार हुआ।
4. मैं भी वहीं जा रहा हूँ, जहाँ से तुम आए हो.
5. वह मेरा मित्र है, जो कक्षा में प्रथम आता है।
6. मेरे पिताजी ने मुझे समझाया कि मैं जल्दी घर आ जाऊँ।
7. अंदर से हूक उठती है कि ऐसा आदमी फिर नहीं आएगा।
8. ये वही बिस्मिल्ला खाँ थे, जिन्होंने 15 अगस्त, 1947 को लाल किले पर शहनाई बजाई थी।
9. रीड अंदर से पोली होती है, जिसके सहारे शहनाई फूँकी जाती है।
10. रीड नरकट से बनाई जाती है, जो डुमराँव में सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।

• वाक्य-परिवर्तन (रचनांतरण) •

वाक्य-रचनांतरण के अंतर्गत एक वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य से परिवर्तित किया जाता है। यह रचनांतरण तीन प्रकार से होता है :

1. संरचना की दृष्टि से 2. अर्थ की दृष्टि से 3. वाच्य की दृष्टि से

☞ **1. वाक्य संरचना की दृष्टि से रचनांतरण :** सरल वाक्य को संयुक्त एवं मिश्र वाक्य बनाना, संयुक्त को सरल एवं मिश्र वाक्य बनाना तथा मिश्र को सरल वाक्य बनाना रचनांतरण है।

उदाहरण :

1. **सरल वाक्य** : मोहन हिंदी पढ़ने के लिए शास्त्री जी के यहाँ गया है।
   मिश्र वाक्य : मोहन को हिंदी पढ़नी है इसलिए वह शास्त्री जी के यहाँ गया है।
   संयुक्त वाक्य : मोहन को हिंदी पढ़नी है और वह शास्त्री जी के यहाँ गया है।
2. **मिश्र वाक्य** : जब तक मोहन घर पहुँचा तब तक उसके पिताजी चल चुके थे।
   सरल वाक्य : मोहन के घर पहुँचने से पूर्व उसके पिताजी चल चुके थे।
3. **संयुक्त वाक्य** : मैंने एक आदमी देखा और वह बहुत बीमार था।
   मिश्र वाक्य : मैंने एक आदमी देखा जो बहुत बीमार था।
4. **संयुक्त वाक्य** : मोहन बहुत खिलाड़ी है लेकिन फेल कभी नहीं होता।
   सरल वाक्य : मोहन बहुत खिलाड़ी होने पर भी कभी फेल नहीं होता।
   मिश्र वाक्य : यद्यपि मोहन बहुत खिलाड़ी है तथापि फेल कभी नहीं होता।
5. **सरल वाक्य** : हम लोग तैरने के लिए नदी पर गए थे।
   मिश्र वाक्य : हम लोग नदी पर गए थे क्योंकि हमको तैरना था।
   संयुक्त वाक्य : हम लोगों को तैरना था इसलिए हम नदी पर गए थे।
6. **सरल वाक्य** : गड्ढा खोदकर मजदूर चले गए।
   मिश्र वाक्य : जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया तब वे चले गए।
   संयुक्त वाक्य : मजदूरों ने गड्ढा खोदा और वे चले गए।

अन्य उदाहरण

1. सरल (साधारण) वाक्य से संयुक्त वाक्य में रचनांतरण :

	सरल वाक्य	*संयुक्त वाक्य*
1.	कठोर बनकर भी सहृदय बनो।	कठोर बनो परंतु सहृदय रहो।
2.	आप खाना खाकर आराम करें।	आप खाना खाएँ और आराम करें।
3.	प्रातःकाल होते ही चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।	प्रातःकाल हुआ और चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।

4.	माँ ने बच्चे को नहलाकर स्कूल भेजा।	माँ ने बच्चे को नहलाया और स्कूल भेजा।
5.	शीला या गीता में से कोई एक नौकरी करेगी।	शीला नौकरी करेगी अथवा गीता नौकरी करेगी।
6.	अपराधी होने के कारण उसे सजा मिली।	वह अपराधी था, इसलिए उसे सजा मिली।
7.	मेरे समझाने पर वह बात मान गई।	मैंने समझाया और वह बात मान गई।
8.	वह खाना खाकर सो गया।	उसने खाना खाया और सो गया।
9.	पिताजी के जोर देने के कारण मुझे हाँ करनी पड़ी।	पिताजी ने बहुत जोर दिया अतः मुझे हाँ करनी पड़ी।
10.	साधु आशीर्वाद देकर गायब हो गया।	साधु ने आशीर्वाद दिया और गायब हो गया।

2. सरल (साधारण) वाक्य से मिश्र वाक्य में रचनांतरण :

	सरल वाक्य	*मिश्र वाक्य*
1.	परिश्रमी व्यक्ति सदा सफल होते हैं।	जो व्यक्ति परिश्रमी होते हैं, वे सदा सफल होते हैं।
2.	मैंने शीला से अपने साथ चलने के लिए कहा।	मैंने शीला से कहा कि वह मेरे साथ चले।
3.	छतरी वाले आदमी को बुलाओ।	उस आदमी को बुलाओ जिसके पास छतरी है।
4.	सच बोलने वाले व्यक्ति को कोई नहीं डरा सकता।	जो व्यक्ति सच बोलता है, उसे कोई नहीं डरा सकता।
5.	मैंने एक दुबला-पतला व्यक्ति देखा।	मैंने एक व्यक्ति देखा, जो दुबला-पतला था।
6.	शिक्षक के सामने सब शांत रहते हैं।	जब शिक्षक सामने होते हैं, सब शांत रहते हैं।

3. मिश्र वाक्य से सरल वाक्य में रचनांतरण :

	मिश्र वाक्य	*सरल वाक्य*
1.	पिताजी ने माँ से कहा कि वे पूजा करने चलें।	पिताजी ने माँ से पूजा करने के लिए चलने को कहा।
2.	उस लड़की को बुलाओ जो लाल साड़ी पहने है।	लाल साड़ी वाली लड़की को बुलाओ।
3.	जो लोग नशा करते हैं, मुझे अच्छे नहीं लगते।	नशा करने वाले लोग मुझे अच्छे नहीं लगते।
4.	जहाँ वह रहती है, वह बहुत गंदी जगह है।	वह बहुत गंदी जगह पर रहती है।
5.	जब मैं स्टेशन पर पहुँचा, गाड़ी जा चुकी थी।	मेरे स्टेशन पर पहुँचने से पहले ही गाड़ी जा चुकी थी।
6.	जब वर्षा होती है, मोर नाचने लगते हैं।	वर्षा होने पर मोर नाचने लगते हैं।
7.	ज्यों ही रोगी ने दवा पी, उसे उल्टी हो गई।	दवा पीते ही रोगी को उल्टी हो गई।
8.	जो व्यक्ति सहायता करते हैं, वे अच्छे लगते हैं।	सहायता करने वाले व्यक्ति अच्छे लगते हैं।
9.	मैंने एक बच्चे को देखा जो बहुत स्वस्थ था।	मैंने एक बहुत स्वस्थ बच्चे को देखा।
10.	जिनकी आय कम है, उन्हें मितव्ययी होना चाहिए।	कम आय वालों को मितव्ययी होना चाहिए।

4. संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में रचनांतरण :

	संयुक्त वाक्य	*सरल वाक्य*
1.	तुम बाहर गए और वह सो गया।	तुम्हारे बाहर जाते ही वह सो गया।
2.	शशि गा रही थी और नाच रही थी।	शशि गा और नाच रही थी।
3.	वह बाजार गया और केले ले आया।	वह बाजार जाकर केले ले आया।
4.	मजदूर परिश्रम करता है लेकिन उसका लाभ उसे नहीं मिलता।	मजदूर को अपने परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
5.	वह खेल में भी अच्छा है और पढ़ाई में भी।	वह खेल और पढ़ाई दोनों में अच्छा है।
6.	सोमवार को हड़ताल है अतः बाजार बंद रहेगा।	हड़ताल होने के कारण सोमवार को बाजार बंद रहेगा।
7.	सुबह की पहली बस पकड़ो और शाम तक लौट आओ	सुबह की पहली बस पकड़कर शाम तक लौट आओ।

5. मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य में रचनांतरण :

	मिश्र वाक्य	*संयुक्त वाक्य*
1	रजनी इसलिए स्कूल नहीं गई क्योंकि वह बीमार है।	रजनी बीमार है इसलिए स्कूल नहीं गई।
2	मेरे पिताजी वे हैं जो कुर्सी पर बैठे हैं।	वे मेरे पिताजी हैं और कुर्सी पर बैठे हैं।
3	जो विद्यार्थी परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है।	विद्यार्थी परिश्रमी होता है तो अवश्य सफल होता है।
4	जब लालाजी ने थैला उठाया तब वे दुकान की ओर चले गए।	लालाजी ने थैला उठाया और दुकान की ओर चले गए।

6. संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य में रचनांतरण :

	संयुक्त वाक्य	*मिश्र वाक्य*
1	नीलिमा ने कहानी सुनाई और सुष्मिता रो पड़ी।	नीलिमा ने ऐसी कहानी सुनाई कि सुष्मिता रो पड़ी।
2	आपने कठिन परिश्रम किया और उत्तीर्ण हो गए।	आप इसलिए उत्तीर्ण हो गए क्योंकि आपने कठिन परिश्रम किया।
3	मीरा ससुराल चली गई पर वह वहाँ खुश नहीं है।	जब से मीरा ससुराल गई है, वह वहाँ खुश नहीं है।

☞ 2. अर्थ की दृष्टि से वाक्य-रचनांतरण/रूपांतरण : पीछे आप पढ़ चुके हैं कि अर्थ की दृष्टि से वाक्य आठ प्रकार के होते हैं : विधानवाचक, प्रश्नवाचक, आज्ञावाचक, निषेधवाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक, विस्मयादिवाचक और संकेतवाचक। इन सब वाक्य-भेदों में विधानवाचक को मूलाधार रचना माना जाता है, जिसमें कुछ अर्थ वैशिष्ट्य के कारण वाक्य-भेद बनते हैं। इस रचनांतरण की प्रक्रिया इस प्रकार है :

(1) **विधिवाचक** : मोहन पुस्तक पढ़ता है।
(2) **निषेधवाचक** : मोहन पुस्तक नहीं पढ़ता है।
(3) **प्रश्नवाचक** : क्या मोहन पुस्तक पढ़ता है?
(4) **आज्ञावाचक** : मोहन पुस्तक पढ़ो।
(5) **इच्छावाचक** : मोहन पुस्तक पढ़े।
(6) **विस्मयवाचक** : अरे ! मोहन पुस्तक पढ़ता है।
(7) **संदेहवाचक** : मोहन पुस्तक पढ़ता होगा।
(8) **संकेतवाचक** : यदि मोहन पुस्तक पढ़े तो।

अन्य उदाहरण :

निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन करो :

1. शीला रोज पढ़ने जाती है। (*आज्ञार्थक में बदलो*)
   ❖ शीला रोज़ पढ़ने जाया करो।
2. वह खाना खाकर सो जाता है। (*निषेधवाचक में बदलो*)
   ❖ वह खाना खाकर सो नहीं जाता है।
3. पुलिस को देखते ही चोर भाग गए। (*प्रश्नवाचक में बदलो*)
   ❖ क्या पुलिस को देखते ही चोर भाग गए?
4. अच्छी वर्षा से अच्छी फसल होती है। (*संकेतवाचक में बदलो*)
   ❖ यदि वर्षा अच्छी हो तो फसल अच्छी होती है।
5. गीता खाना पकाती है। (*विस्मयवाचक में बदलो*)
   ❖ अरे ! गीता खाना पकाती है।
6. बच्चा स्कूल नहीं जाएगा। (*प्रश्नवाचक में बदलो*)
   ❖ क्या बच्चा स्कूल नहीं जाएगा ?
7. वाह ! क्या सुंदर दृश्य है। (*विधानवाचक में बदलो*)
   ❖ यह सुंदर दृश्य है।
8. क्या संसार में सभी सुखी हो जाएँ ? (*इच्छावाचक में बदलो*)
   ❖ संसार में सभी सुखी हो जाएँ।
9. बच्चा लिख रहा है। (*प्रश्नवाचक में बदलो*)
   ❖ क्या बच्चा लिख रहा है?
10. राम घर पर है। (*संदेहवाचक में बदलो*)
    ❖ शायद राम घर पर है।

सी.बी.एस.ई. की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए वाक्य-परिवर्तन संबंधी प्रश्न

निर्देश : 1. निम्नलिखित वाक्यों को संयुक्त और मिश्र वाक्यों में बदलिए-

(पहले बीस वाक्यों के परिवर्तन को पढ़ो और समझो। अगले बीस वाक्यों को स्वयं परिवर्तित करो)

1. (क) पाकिस्तान ने कारगिल में घुसपैठ की। (ख) भारत ने पाकिस्तान को करारी मात दी।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : पाकिस्तान ने कारगिल में घुसपैठ की और भारत ने उसे करारी मात दी।

मिश्र वाक्य : जब पाकिस्तान ने कारगिल में घुसपैठ की, तब भारत ने उसे करारी मात दी।

2. (क) महामहिम राष्ट्रपति का आगमन हुआ। (ख) राष्ट्रगान शुरू हो गया।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : महामहिम राष्ट्रपति का आगमन हुआ और राष्ट्रगान शुरू हो गया।

मिश्र वाक्य : जब महामहिम राष्ट्रपति का आगमन हुआ तब राष्ट्रगान शुरू हो गया।

3. (क) उसने निरंतर परिश्रम किया। (ख) उसे परीक्षा में सफलता मिली।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : उसने निरंतर परिश्रम किया और उसे परीक्षा में सफलता मिली।

मिश्र वाक्य : जब उसने निरंतर परिश्रम किया, तब उसे परीक्षा में सफलता मिली।

4. (क) शिक्षक कक्षा में आए। (ख) उन्होंने पढ़ाना शुरू किया।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : शिक्षक कक्षा में आए और उन्होंने पढ़ाना शुरू किया।

मिश्र वाक्य : जब शिक्षक कक्षा में आए, तब उन्होंने पढ़ाना शुरू किया।

5. (क) बादल गरज रहे थे। (ख) तेज वर्षा होने लगी।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : बादल गरज रहे थे और तेज वर्षा होने लगी।

मिश्र वाक्य : जब बादल गरज रहे थे, तब तेज वर्षा होने लगी।

6. (क) वर्षा शुरू हुई। (ख) मोहन आ गया।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : वर्षा शुरू हुई और मोहन आ गया।

मिश्र वाक्य : जब वर्षा शुरू हुई, तब मोहन आ गया।

7. (क) दो दिन वह गाँव में रहा। (ख) सबका प्रिय हो गया।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : दो दिन वह गाँव में रहा और सबका प्रिय हो गया।

मिश्र वाक्य : जब दो दिन वह गाँव में रहा, तब वह सबका प्रिय हो गया।

8. (क) वह मेहनती है। (ख) वह पराजय स्वीकार नहीं करता।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : वह मेहनती है, अतः वह पराजय स्वीकार नहीं करता।

मिश्र वाक्य : वह ऐसा मेहनती है, जो पराजय स्वीकार नहीं करता।

9. (क) वह लड़का गाँव गया। (ख) वहाँ बीमार हो गया।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : वह लड़का गाँव गया और वहाँ बीमार हो गया।

मिश्र वाक्य : वह लड़का जब गाँव गया तब वहाँ बीमार हो गया।

10. (क) मेरे आँगन में हरी घास है। (ख) हरी घास पर बच्चे खेल रहे हैं।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : मेरे आँगन में हरी घास है और उस पर बच्चे खेल रहे हैं।

मिश्र वाक्य : मेरे आँगन में जो हरी घास है, उस पर बच्चे खेल रहे हैं।

11. (क) मोहल्ले में शोर हुआ। (ख) सब लोग बाहर आ गए।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : मोहल्ले में शोर हुआ और सब लोग बाहर आ गए।

मिश्र वाक्य : जब मोहल्ले में शोर हुआ तब सब लोग बाहर आ गए।

12. (क) तोता पिंजड़े में बंद है। (ख) तोता दाल खा रहा है।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : तोता पिंजड़े में बंद है और वह दाल खा रहा है।

मिश्र वाक्य : जो तोता पिंजड़े में बंद है, वह दाल खा रहा है।

13. (क) विद्यालय का समारोह समाप्त हुआ। (ख) सब लोग घर चले गए।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : विद्यालय का समारोह समाप्त हुआ और सब लोग घर चले गए।

मिश्र वाक्य : जब विद्यालय का समारोह समाप्त हुआ, तब सब लोग घर चले गए।

14. (क) प्रश्न हल हो गए। (ख) छात्रों ने काम बंद कर दिया।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : प्रश्न हल हो गए और छात्रों ने काम बंद कर दिया।

मिश्र वाक्य : जब प्रश्न हल हो गए तब छात्रों ने काम बंद कर दिया।

15. (क) शेर दिखाई दिया। (ख) सब लोग डर गए।

उत्तर : संयुक्त वाक्य : शेर दिखाई दिया और सब लोग डर गए।

मिश्र वाक्य : जैसे ही शेर दिखाई दिया, वैसे ही सब लोग डर गए।

16. (क) सभा समाप्त हुई। (ख) सब लोग चले गए।

उत्तर : **संयुक्त वाक्य :** सभा समाप्त हुई और सब लोग चले गए।

मिश्र वाक्य : जैसे ही सभा समाप्त हुई, वैसे ही सब लोग चले गए।

17. (क) बादल आकाश में छा गए। (ख) शीतल पवन बहने लगी।

उत्तर : **संयुक्त वाक्य :** बादल आकाश में छा गए और शीतल पवन बहने लगी।

मिश्र वाक्य : जैसे ही आकाश में बादल छा गए, वैसे ही शीतल पवन बहने लगी।

18. (क) लता तबला लाई। (ख) वह तबला बजाने लगी।

उत्तर : **संयुक्त वाक्य :** लता तबला लाई और उसे बजाने लगी।

मिश्र वाक्य : जैसे ही लता तबला लाई, वैसे ही उसे बजाने लगी।

19. (क) मैं अकेला था। (ख) चार गुंडों ने मुझे बहुत पीटा।

उत्तर : **संयुक्त वाक्य :** मैं अकेला था और चार गुंडों ने मुझे बहुत पीटा।

मिश्र वाक्य : जब मैं अकेला था तब चार गुंडों ने मुझे बहुत पीटा।

20. (क) चोर दुकान का ताला तोड़ रहा था। (ख) पुलिस ने चोर को रंगे हाथ पकड़ लिया।

उत्तर : **संयुक्त वाक्य :** चोर दुकान का ताला तोड़ रहा था और पुलिस ने उसे रंगे हाथ पकड़ लिया।

मिश्र वाक्य : जैसे ही चोर ने दुकान का ताला तोड़ा, वैसे ही पुलिस ने उसे रंगे हाथ पकड़ लिया।

1. अभ्यास के लिए :

21. (क) दिन का समय था। (ख) गुंडे ने प्रकाश की बीच बाजार में हत्या कर दी।
22. (क) छात्र स्कूल से घर आया। (ख) वह खेलने चला गया।
23. (क) नौकरानी घर पर नहीं थी। (ख) घर में चोरी हो गई।
24. (क) सूर्य निकला। (ख) आकाश में तारे छिप गए।
25. (क) प्रधानाचार्य प्रार्थना सभा में आए। (ख) उन्होंने सदाचार पर भाषण दिया।
26. (क) उसने कठिन परिश्रम किया। (ख) जिंदगी में हर जगह सफलता मिली।
27. (क) आकाश में बादल घिर आए। (ख) वर्षा होने लगी।
28. (क) मुख्य अतिथि मंच पर पधारे। (ख) समारोह आरंभ हो गया।
29. (क) शिक्षक कक्षा में आए। (ख) छात्र शांत हो गए।
30. (क) वर्षा हो रही थी। (ख) वह नहीं जा सका।
31. (क) महात्मा गाँधी अहिंसावादी थे। (ख) वे किसी को दु:खी नहीं देखना चाहते थे।
32. (क) घर में चोर घुसा। (ख) लोग जाग गए।
33. (क) वीर देश के लिए मर मिटता है। (ख) वह सच्चा देशभक्त होता है।
34. (क) शहर में तूफान आया। (ख) तबाही मच गई।
35. (क) बच्चा घर पहुँचा। (ख) माँ को बड़ी खुशी हुई।
36. (क) वह घर पहुँचा। (ख) माँ ने उसे बुलाया था।
37. (क) राष्ट्रगान शुरू हुआ। (ख) सब लोग खड़े हो गए।
38. (क) लड़का बाजार गया। (ख) वहाँ से सेब लाया।
39. (क) महमूद के खेत में गायें चर रही थीं। (ख) उसने उन्हें खेत से निकाल दिया।
40. (क) नौकरानी घर पर नहीं थी। (ख) घर में चोरी हो गई।

2. निर्देशानुसार कीजिए :

1. **चूँकि वह अपराधी था, इसलिए उसे सजा मिली।** *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : वह अपराधी था और उसे सजा मिली।

2. **वह परिश्रमी था और सफल हुआ।** *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : वह परिश्रमी था इसलिए सफल हुआ।

3. बादल घिर आए और वर्षा होने लगी। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : जैसे ही बादल घिर आए, वैसे ही वर्षा होने लगी।

4. वहाँ जाकर जल्दी आ जाना। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : वहाँ जाना और जल्दी आ जाना।

5. छात्र शिक्षक के यहाँ जाकर हिंदी पढ़ता है। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : छात्र शिक्षक के यहाँ जाता है और हिंदी पढ़ता है।

6. स्टेशन पहुँचकर आप हमारी प्रतीक्षा करें। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : स्टेशन पहुँचें और हमारी प्रतीक्षा करें।

7. घर जाकर गृह कार्य पूरा करो। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : घर जाओ और गृह कार्य पूरा करो।

8. आगे बढ़कर पुरस्कार प्राप्त कीजिए। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : आगे बढ़िए और पुरस्कार प्राप्त कीजिए।

9. कृपया सभी यहाँ आकर सुनें। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : कृपया सभी यहाँ आएँ और सुनें।

10. ज़ब शीला बाजार गई तो पुस्तक खरीद लाई। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : शीला बाजार गई और पुस्तक खरीद लाई।

3. रचना के अनुसार वाक्य-भेद लिखिए : **संकेत**

1. जो विद्वान होता है, उसे सभी आदर देते हैं। — मिश्र वाक्य
2. वह आया था, परंतु मैं न मिल सका। — संयुक्त वाक्य
3. जब वह आया, तब मोहन सो रहा था। — मिश्र वाक्य
4. महात्मा गाँधी ने कहा कि करो या मरो। — मिश्र वाक्य
5. जब तक राम में शक्ति थी, तब तक वह मुकदमा लड़ता रहा। — मिश्र वाक्य
6. आप अंदर आइए और बैठ जाइए। — संयुक्त वाक्य
7. यह वही स्थान है जहाँ उनका बचपन बीता। — मिश्र वाक्य
8. मैं जानता हूँ, तुम किसे चाहते हो। — मिश्र वाक्य
9. बादल आए और बरस कर चले गए। — संयुक्त वाक्य
10. जो व्यक्ति परिश्रम करता है, उसे सफलता मिलती है। — मिश्र वाक्य
11. जो जागता है, वह पाता है। — मिश्र वाक्य
12. जैसा बोओगे, वैसा काटोगे। — मिश्र वाक्य
13. जो सोता है, सो खोता है। — मिश्र वाक्य
14. ज्यों ही किसी ने घंटी बजाई चोर भाग गया। — मिश्र वाक्य
15. कल मैं लखनऊ जा रहा हूँ वहाँ से मुंबई जाऊँगा। — मिश्र वाक्य
16. तुम आज आराम करो और कल घर चले जाना। — संयुक्त वाक्य
17. बुढ़िया चीख रही थी, क्योंकि बिच्छू का डंक लगा था। — मिश्र वाक्य
18. आज नकद दीजिए और कल उधार ले जाइए। — संयुक्त वाक्य
19. उधार न हो सका, क्योंकि कल अभी आया ही नहीं। — मिश्र वाक्य
20. जहाँ कभी बंजर था, वहाँ अब सुंदर उपवन है। — मिश्र वाक्य
21. जहाँ तक दृष्टि जाती है, अँधेरा ही अँधेरा है। — ....
22. खरगोश पेड़ के नीचे सो गया, क्योंकि उसे बहुत घमंड था। — ....

23. चोर कमरे में चोरी करता रहा और मैं सोता रहा। ....
24. रमेश कल विद्यालय नहीं आया, क्योंकि कल उसका जन्मदिन था। ....
25. काला हिरण मर गया, क्योंकि उसे शिकारी की गोली लगी थी। ....
26. सुरेश ने परीक्षा पास की और उसे नौकरी मिल गई। ....
27. कक्षा शांत होकर बैठी रही और अध्यापिका पढ़ाती रही। ....
28. मैं कल स्कूल नहीं आ सका, क्योंकि मैं बीमार था। ....
29. वह किताब मुझसे खो गई, जो तुमने मुझे दी थी। ....
30. हमारा आचरण ऐसा हो, जिसे लोग पसंद करें। ....
31. मैंने उस व्यक्ति को देखा है, जो तुमसे मिला था। ....
32. यदि मैं नहीं आया होता, तो उससे मुलाकात नहीं होती। ....
33. जो परिश्रम करता है, उसे सफलता मिलती है। ....
34. मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा, किंतु तुम नहीं आए। ....
35. उसने वैसा ही किया, जैसा आपने बताया। ....
36. हम लोग आगरा घूमने गये और वहाँ चार दिन रहे। ....
37. वे बीमार हैं अतः आ नहीं सकते। ....
38. आप सभी यहीं हैं और वे चले गए। ....
39. मैं आया और वह चल दिया। ....
40. मैंने वह दुर्घटना देखी, जिसमें कई लोग घायल हो गए थे। ....

सी.बी.एस.ई. की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए वाक्य संबंधी प्रश्न

(CBSE 2009 Comptt. Delhi)

प्रश्न : निर्देशानुसार वाक्य बदलिए : *(Set I)*

(*i*) झोले वाला लड़का कहाँ गया ? *(मिश्र वाक्य में)*

(*ii*) व्यायाम करो। स्वस्थ रहो। *(संयुक्त वाक्य में)*

(*iii*) सोहन भोजन करके सो गया।

(रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)

उत्तर : (*i*) वह लड़का कहाँ गया जिसके पास झोला था।

(*ii*) व्यायाम करो और स्वस्थ रहो।

(*iii*) सरल वाक्य।

(Set II)

निर्देशानुसार वाक्य बदलिए :

(*i*) मोहन के आते ही वह उठकर चल दिया।

(संयुक्त वाक्य में)

(*ii*) माता जी बाजार गई और बच्चों के लिए खिलौने लाई। *(सरल वाक्य में)*

(*iii*) मैं देखना चाहती हूँ। उनके व्यक्तित्व की क्या-क्या विशेषताएँ हैं? *(मिश्र वाक्य में)*

उत्तर : (*i*) मोहन आया और उठकर चला गया।

(*ii*) माताजी बाजार जाकर बच्चों के लिए खिलौने लाई।

(*iii*) मैं देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

(Set III)

निर्देशानुसार वाक्य बदलिए :

(*i*) कल मुझे दिल्ली जाना है और फिर कोलकाता।

(सरल वाक्य में)

(*ii*) भीख माँगने वाला कहाँ चला गया? *(मिश्र वाक्य में)*

(*iii*) वह पढ़कर बाहर चला गया। *(संयुक्त वाक्य में)*

उत्तर : (*i*) कल मुझे दिल्ली जाकर कोलकाता जाना है।

(*ii*) जो भीख माँगता था, वह कहाँ चला गया।

(*iii*) वह पढ़ा और बाहर चला गया ।

(CBSE 2009 Comptt. Delhi) *(Set I)*

प्रश्न : (क) निर्देशानुसार वाक्य बनाइए :

(*i*) विद्यार्थी ने मेहनत करके सफलता प्राप्त की।

(संयुक्त वाक्य)

(*ii*) उसके आने पर मैं घर से निकल गया था।

(मिश्र वाक्य)

उत्तर : (*i*) विद्यार्थी ने मेहनत की और सफलता प्राप्त की।

(*ii*) जैसे ही वह आया था, मैं घर से निकल गया।

(ख) रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए :

(*i*) मैं पुस्तक पढ़ रहा था और मुझे नींद आ गई।

(ii) वह सीढ़ी से उतर ही रहा था कि गिर पड़ा।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य। (ii) मिश्र वाक्य

(Set II)

(क) रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए :

(i) शीला बीमार थी परन्तु वह विद्यालय गई।

(ii) आपने जो कुछ कहा, वह सच है।

(ख) निर्देशानुसार वाक्य बनाइए :

(i) पंक्ति में पीछे खड़े लोग टिकट नहीं खरीद सके। *(संयुक्त वाक्य)*

(ii) मैं कोशिश करके भी उससे बात नहीं कर सका। *(संयुक्त वाक्य)*

उत्तर : (क) (i) संयुक्त वाक्य, (ii) मिश्र वाक्य

(ख) (i) जो लोग पंक्ति में पीछे खड़े थे वे लोग टिकट नहीं खरीद सके।

(ii) मैंने कोशिश तो की पर मैं उससे बात नहीं कर सका।

(Set III)

(क) रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए :

(i) मैंने उसे देखा और पहचान लिया।

(ii) जैसे ही मेरी बारी आई, खिड़की बंद हो गई।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य।

(ii) मिश्र वाक्य।

(ख) निर्देशानुसार वाक्य बनाइए :

(i) हड़ताल करने वाले कर्मचारियों को निकाल दिया गया। *(मिश्र वाक्य)*

(ii) सुबह होते ही चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं। *(संयुक्त वाक्य)*

उत्तर : (i) जिन कर्मचारियों ने हड़ताल की थी, उन्हें निकाल दिया गया।

(ii) सुबह होती है और चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं।

(CBSE 2009 Comptt. Outside)

प्रश्न 1. रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए :

(i) सबने उपहार दिए क्योंकि उस दिन मेरा जन्मदिन था।

(ii) बच्चे ने शेर को देखा और डर गया।

उत्तर : (i) मिश्र वाक्य।

(ii) संयुक्त वाक्य।

(ख) निर्देशानुसार वाक्य-परिवर्तन कीजिए : *(Set I, II, III)*

(i) आलसी बालक काम पूरा नहीं कर पाता। *(मिश्र वाक्य बनाइए)*

(ii) दादा जी घूमकर आए। रेडियो सुनने लगे। *(संयुक्त वाक्य बनाइए)*

उत्तर : (i) जो बालक आलसी होता है वह अपना काम पूरा नहीं कर पाता।

(ii) दादाजी घूमकर आए और रेडियो सुनने लगे।

(CBSE 2009, Delhi)

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए :

(Set-I)

(i) मैं नई कार खरीदूँगा । मैं पुरानी कार नहीं खरीदूँगा। *(संयुक्त वाक्य में)*

(ii) साहसी व्यक्ति के लिए कोई भी कार्य दुष्कर नहीं होता। *(मिश्र वाक्य में)*

(iii) वह पुस्तकालय गया और वहाँ उसने महाभारत पढ़ी। *(सरल वाक्य में)*

उत्तर : (i) मैं नई कार खरीदूँगा और पुरानी कार नहीं खरीदूँगा।

(ii) जो व्यक्ति साहसी है, उसके लिए कोई भी कार्य दुष्कर नहीं है।

(iii) उसने पुस्तकालय जाकर महाभारत पढ़ी।

(Set-II)

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए:

(i) मैंने एक बहुत अच्छा शब्दकोश देखा। *(मिश्र वाक्य में)*

(ii) पुलिस को देखते ही उसे पसीना छूट गया। *(संयुक्त वाक्य में)*

(iii) एक धमाका हुआ और चारों ओर चीख-पुकार मच गई। *(साधारण वाक्य में)*

उत्तर : (i) मैंने एक शब्दकोश देखा, जो बहुत अच्छा था।

(ii) उसने पुलिस को देखा और उसको पसीना छूट गया।

(iii) एक धमाका होते ही चारों ओर चीख-पुकार मच गई।

(Set-III)

निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए :

(i) घोड़े की सवारी करने वाला मैदान में गिर पड़ा। *(मिश्र वाक्य में)*

(ii) मैं प्लेटफार्म पर खड़ा रेलगाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। *(संयुक्त वाक्य में)*

(iii) उसने मेहनत तो की पर कोई अनुकूल परिणाम उसके हाथ नहीं लगा। *(साधारण वाक्य में)*

उत्तर : (i) जो घोड़े की सवारी कर रहा था मैदान में गिर पड़ा।

(ii) मैं प्लेटफार्म पर खड़ा था और रेलगाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था।

(iii) मेहनत करने पर भी उसे कोई अनुकूल परिणाम हाथ नहीं लगा।

(CBSE 2009, Outside)

प्रश्न : (क) निर्देशानुसार वाक्य बनाइए : *(Set-I)*

(i) वह मुझसे मिलकर चला गया। *(संयुक्त वाक्य)*

(ii) स्टेशन पहुँचते ही उसने टेलीफोन कर दिया । *(मिश्र वाक्य)*

उत्तर : (i) वह मुझसे मिला और चला गया।

(ii) जैसे ही वह स्टेशन पहुँचा, उसने टेलीफोन कर दिया।

(ख) रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए :

(i) कहानी पूरी हो गई और मैं सोता ही रहा।

(ii) मैं जानता हूँ कि तुम मना नहीं करोगे।

उत्तर : (i) संयुक्त वाक्य। (ii) मिश्र वाक्य।

(Set-II)

(क) रचना के अुनसार वाक्य-भेद बताइए :

(i) तुम वहाँ जा सकते हो जहाँ वह रहता है।

(ii) उसने अपना काम कर लिया और घर चला गया।

उत्तर : (i) मिश्र वाक्य।

(ii) संयुक्त वाक्य।

(ख) निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिए :

(i) वे यहाँ से जाकर भाषण देने लगे । *(संयुक्त वाक्य में)*

(ii) विदेश में रहने वाला मेरा भाई अब यहाँ नहीं आएगा। *(मिश्र वाक्य में)*

उत्तर : (i) वे यहाँ से गए और भाषण देने लगे।

(ii) मेरा भाई, जो विदेश में रहता है, अब यहाँ नहीं आएगा।

(Set-III)

(क) रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए :

(i) जहाँ न जाय रवि, वहाँ जाय कवि।

(ii) चोर घर में घुसा और चोरी करके चला गया।

उत्तर : (i) मिश्र वाक्य। (ii) संयुक्त वाक्य।

(ख) निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिए :

(i) दिन-रात मेहनत करके उसने इतना धन कमाया। *(संयुक्त वाक्य में)*

(ii) मित्र के दुःख में दुःखी होने वाले सच्चे मित्र कहलाते हैं। *(मिश्र वाक्य में)*

उत्तर : (i) उसने दिन-रात मेहनत की और इतना धन कमाया।

(i) जो मित्र के दुःख में दुःखी हैं, वे सच्चे मित्र कहलाते हैं।

प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए : *(Set-I, II, III)*

(i) यह विद्वान है। तुम नितांत मूर्ख हो। *(संयुक्त वाक्य में)*

(ii) वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश गया। *(मिश्र वाक्य में)*

(iii) भगत सिंह, जो एक क्रांतिकारी देशभक्त था, स्वतंत्रता की वेदी पर बलि हो गया। *(सरल वाक्य में)*

उत्तर : (i) यह विद्वान है और तुम नितांत मूर्ख हो।

(ii) उसे उच्च शिक्षा प्राप्त करनी थी अतः विदेश गया।

(iii) क्रांतिकारी देशभक्त भगतसिंह स्वतंत्रता की वेदी पर बलि हो गया।

(CBSE 2008, Comptt. Outside)

प्रश्न : (i) निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(Set-I)*

(क) मनोहर ने हैदराबाद से दिल्ली तक की यात्रा हवाई जहाज से की और हवाई अड्डे से घर तक टैक्सी से गया। *(रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)*

(ख) तुम जिस घड़ी की प्रशंसा कर रहे थे, वह बहुत अच्छी है। *(रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)*

(ग) मुझे चेन्नई जाना था। सवेरे उठना पड़ा। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

(घ) सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह वही भारत है। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) संयुक्त वाक्य। (ख) मिश्र वाक्य।

(ग) मुझे चेन्नई जाना था इसलिए मुझे सवेरे उठना पड़ा।

(घ) यह वही भारत है जो सोने की चिड़िया कहलाता था।

(ii) निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(Set-II)*

(क) आप द्वार पर बैठें और उनकी प्रतीक्षा करें। *(वाक्य का प्रकार लिखिए)*

(ख) जैसे ही शेर दिखाई दिया सब लोग भाग गए। *(वाक्य का प्रकार लिखिए)*

(ग) अचानक पुलिस के आने पर गली में सन्नाटा छा गया। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

(घ) देवकी के काम समाप्त करते ही घर में मेहमान आ गए। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) संयुक्त वाक्य।

(ख) मिश्र वाक्य।

(ग) अचानक पुलिस आई और गली में सन्नाटा छा गया।

(घ) जैसे ही देवकी का काम समाप्त हुआ घर में मेहमान आ गए।

(*iii*) निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(Set-III)*

(क) हम लोग जयपुर घूमने गए और वहाँ तीन दिन रहे। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ख) मैंने देखा कि बाजार में चहल-पहल है। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ग) बादल गरज रहे थे और फिर तेज वर्षा होने लगी। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

(घ) जब मदन ने पुस्तक पढ़ी तब वह खुश हुआ। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) संयुक्त वाक्य।

(ख) मिश्र वाक्य।

(ग) जब बादल गरजे तब तेज वर्षा होने लगी।

(घ) मदन ने पुस्तक पढ़ी और वह खुश हुआ।

(CBSE 2008, Outside Comptt.)

प्रश्न : (क) निम्नलिखित वाक्यों में आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए : *(Set-I, II)*

(*i*) आपका यह कथन सत्य है कि फसल वर्षा के अभाव में नष्ट हो जाएगी।

(*ii*) वह जब छोटा था तब खूब चिल्लाता था।

(*iii*) जो कमरे में सो रहा है वह मेरा भाई है।

उत्तर : (*i*) फसल वर्षा के अभाव में नष्ट हो जाएगी - संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) जब छोटा था – क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) जो कमरे में सो रहा है – विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में आश्रित उपवाक्य छाँट कर भेद भी लिखिए : *(Set-III)*

(*i*) अध्यापक ने बताया कि प्रस्तुत कविता भारतेंदु हरिश्चंद्र की लिखी हुई है।

(*ii*) जो तुमसे वाद-विवाद कर रहा था वह चाचाजी का बेटा था।

(*iii*) जब से उसके पिता का देहांत हुआ है, तब से वह बहुत चुप रहता है।

उत्तर : (*i*) प्रस्तुत कविता भारतेंदु हरिश्चंद्र की लिखी हुई है : संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) जो तुमसे वाद-विवाद कर रहा था : विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) जब से उसके पिता का देहांत हुआ है : क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(CBSE 2008, Delhi Comptt.)

प्रश्न : (*i*) नीचे लिखे वाक्यों से आश्रित उपवाक्य छाँटकर उनके भेद लिखिए : *(Set-I)*

(*a*) यह तुम्हें भ्रम है कि वह अमीर है।

(*b*) जो लोग फूलों की सेज पर सोते हैं, वे जीवन के कष्टों को क्या जानें !

(*c*) जब तुम आओगे, तभी मैं जाऊँगा।

उत्तर : (*a*) वह अमीर है : संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*b*) जो लोग फूलों की सेज पर सोते हैं : विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*c*) जब तुम आओगे : क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) नीचे लिखे वाक्यों से आश्रित उपवाक्य छाँटकर उनके भेद लिखिए : *(Set-II)*

(*a*) यह विवेक की गाड़ी है जिसके सहारे मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ।

(*b*) यह असत्य है कि वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया है।

(*c*) यदि वह दौड़ में प्रथम आएगा, तभी उसको पारितोषिक मिलेगा।

उत्तर : (*a*) जिसके सहारे मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ – विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*b*) वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया है–संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*c*) तभी उसको पारितोषिक मिलेगा – क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) नीचे लिखे वाक्यों से आश्रित उपवाक्य छाँटकर उनके भेद लिखिए : *(Set-III)*

(*a*) शीला ने तुम्हारी निंदा की, यह कहना सर्वथा असत्य है।

(*b*) जो अपार धन-सम्पदा का स्वामी होता है, वह निर्धनता के कष्टों को नहीं जानता।

(*c*) जहाँ-जहाँ विनोबा जी गए, वहाँ-वहाँ उन्हें पर्याप्त भूमि दान में मिली।

उत्तर : (*a*) शीला ने तुम्हारी निंदा की – संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*b*) **जो अपार धन-सम्पदा का स्वामी होता है** – विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*c*) **जहाँ-जहाँ विनोबा जी गए**–क्रियाविशेषण आश्रित उपवाच्य।

(CBSE 2008 Comptt. Delhi)

(Set-I)

प्रश्न : (*i*) निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(क) वर्षा हो रही है किंतु धूप भी निकली हुई है। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ख) जैसे ही उसने मुझे देखा, वैसे ही वह खिसक गया। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ग) मंत्री बनने पर भी उसका व्यवहार पूर्ववत् है। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

(घ) आप आसन पर बैठकर विश्राम करें। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) संयुक्त वाक्य।

(ख) मिश्र वाक्य।

(ग) वह मंत्री बन गया है फिर भी उसका व्यवहार पूर्ववत् है।

(घ) आप आसन पर बैठें और विश्राम करें।

(*ii*) निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(Set-II)*

(क) ज्यों ही रात के दस बजे, त्यों ही मैंने पढ़ना बंद कर दिया। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ख) उपमा बीमार है इसलिए वह स्कूल नहीं गई। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ग) वह पुस्तक लेने बाज़ार गया। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

(घ) मुझे देखकर वह खिसक गया। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) मिश्र वाक्य। (ख) संयुक्त वाक्य।

(ग) उसे पुस्तक लेनी थी इसलिए वह बाज़ार गया।

(घ) जैसे ही उसने मुझे देखा वह खिसक गया।

(*iii*) निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(Set-III)*

(क) मेरा भाषण समाप्त हुआ और ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बज उठीं। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ख) जो जागता है, वह पाता है। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ग) ममता इसलिए स्कूल नहीं गई क्योंकि वह बीमार है। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

(घ) मेरे समझाने पर वह मान गई। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) संयुक्त वाक्य।

(ख) मिश्र वाक्य।

(ग) ममता बीमार है इसलिए स्कूल नहीं गई।

(घ) जैसे ही मैंने समझाया वह मान गई।

(CBSE 2008, Delhi)

प्रश्न : निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(Set I)*

(क) वह फल खरीदने के लिए बाजार गया। *(रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ख) मैं पुस्तकालय गया और पुस्तकें लेकर आ गया। *(रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ग) आप वहीं बैठकर मेरी प्रतीक्षा करें। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

(घ) परिश्रमी व्यक्ति सफल होते हैं। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) सरल वाक्य, (ख) संयुक्त वाक्य।

(ग) आप वहाँ बैठें और मेरी प्रतीक्षा करें।

(घ) जो व्यक्ति परिश्रमी होते हैं, वे सफल होते हैं।

(Set II)

निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(क) सच बोलने वाला व्यक्ति कभी डरता नहीं है। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

(ख) अपराध सिद्ध होने पर उसे सजा हुई। *(संयुक्त वाक्यं में बदलिए)*

(ग) अविनाश ने पूछा कि वहाँ कौन है? *(रचना के आधार पर वाक्य-प्रकार बताइए)*

(घ) वह बाजार गया है पर अभी तक आया नहीं है। *(रचना के आधार पर वाक्य-प्रकार बताइए)*

उत्तर : (क) जो व्यक्ति सच बोलता है वह कभी नहीं डरता।

(ख) अपराध सिद्ध हुआ और उसे सजा हो गई।

(ग) मिश्र वाक्य। (घ) संयुक्त वाक्य।

निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *(Set III)*

(क) भाई के आ जाने पर मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। *(अर्थ के अनुसार वाक्य-प्रकार लिखिएं)*

(ख) कर्म करने में तुम्हारा अधिकार है परंतु फल पर अधिकार नहीं है। *(अर्थ के अनुसार वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ग) परीक्षा की तैयारी करने के लिए वह एकांत कमरे में पढ़ने गया है। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

(घ) सवेरा होते ही चिड़ियाँ चहकने लगती हैं।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : (क) विधानार्थक वाक्य।

(ख) संकेतार्थक वाक्य।

(ग) वह एकांत कमरे में चला गया है ताकि परीक्षा की तैयारी कर सके।

(घ) सवेरा हुआ और चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।

(CBSE 2008, Outside) *(Set I)*

प्रश्न : निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(क) वे उसी प्रसिद्ध विद्यालय के छात्र थे।

(रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार बताइए)

(ख) तुम्हारा मित्र, जो मुझे मिला था, परसों आएगा।

(रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार बताइए)

(ग) राजू बाजार से पत्रिका लेकर पढ़ने लगा।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(घ) गाँव में बाढ़ आने से लोगों में तबाही मच गई।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : (क) सरल वाक्य, (ख) मिश्र वाक्य।

(ग) राजू बाजार गया और पत्रिका लेकर पढ़ने लगा।

(घ) जब गाँव में बाढ़ आई, लोगों में तबाही मच गई।

(Set II)

निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(क) उसके घर पहुँचते ही वर्षा होने लगी।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ख) छात्र ने अध्यापक को देखकर प्रणाम किया।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ग) सूरज निकला और किसान खेत की ओर चल दिए। *(रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार बताइए)*

(घ) विद्वानों का आदर सब जगह होता है।

(रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार बताइए)

उत्तर : (क) ज्योंही वह घर पहुँचा, वर्षा होने लगी।

(ख) छात्र ने अध्यापक को देखा और उन्हें प्रणाम किया।

(ग) संयुक्त वाक्य, (घ) सरल वाक्य।

(Set III)

निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(क) कई बच्चे गृहकार्य करके नहीं लाते हैं।

(रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार बताइए)

(ख) वे संतुलित भोजन करते हैं और स्वस्थ रहते हैं। *(रचना के अनुसार वाक्य-प्रकार बताइए)*

(ग) क्या तुम पढ़ाई करके खेलने चले गए थे?

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(घ) असामाजिक तत्त्वों से लोग दूर रहना चाहते हैं।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : (क) सरल वाक्य, (ख) संयुक्त वाक्य।

(ग) क्या तुमने पढ़ाई की और तुम खेलने चले गए थे?

(घ) जो लोग असामाजिक तत्त्व हैं, लोग उनसे दूर रहना चाहते हैं।

(CBSE 2009, Delhi)

प्रश्न : नीचे दिए गए वाक्यों से आश्रित उपवाक्य छाँटकर उनके भेद भी लिखिए : *(Set I)*

(*i*) जब वह बोलता है तब सभी प्रभावित होते हैं।

(*ii*) मैं उसे अपना शत्रु समझता हूँ जो हमारे देश की निंदा करता है।

(*iii*) उसने बताया कि कनाडा में भारतीय लोगों की स्थिति ठीक है।

उत्तर : (*i*) जब वह बोलता है – क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) जो हमारे देश की निंदा करता है – विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) कनाडा में भारतीय लोगों की स्थिति ठीक है – संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(Set II)

(*i*) ये वही सज्जन हैं जिन्होंने गरीबी के दिनों में हमारी मदद की थी।

(*ii*) किसान ने देखा कि फसल पाले से मारी गई।

(*iii*) जब मेरा मार्ग सच्चाई का है तो तुम मेरा क्या बिगाड़ पाओगे।

उत्तर : (*i*) जिन्होंने गरीबी के दिनों में हमारी मदद की थी – विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) फसल पाले से मारी गई – संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) जब मेरा मार्ग सच्चाई का है – क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(Set III)

(*i*) जो लोग बिना सोचे-समझे काम आरंभ कर देते हैं, उन्हें पछताना ही पड़ता है।

(*ii*) तीन साल बाद विदेश से लौटे हरिहर ने देखा कि उसका लगाया गया एक पौधा एक विशाल वृक्ष बन गया है।

(*iii*) जहाँ एक गरीब ब्राह्मण का झोंपड़ा था, वहाँ एक विशाल भवन खड़ा था।

उत्तर : (*i*) जो लोग विना सोचे-समझे काम आरंभ कर देते हैं – विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) उसका लगाया गया एक पौधा एक विशाल वृक्ष बन गया – संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) जहाँ एक गरीव ब्राह्मण का झोंपड़ा था – क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(CBSE 2008, Foreign)

प्रश्न : नीचे दिए गए वाक्यों में से आश्रित उपवाक्य चुनकर उनके भेद भी लिखिए : *(Set-I)*

(*i*) मैंने देखा कि चील एक चूहे को लेकर आकाश में उड़ गई।

(*ii*) जो लोग दूसरों का समय नष्ट करते हैं, वे कभी उन्नति नहीं कर पाते।

(*iii*) जहाँ वह रहता है, वहाँ अब कोई नहीं रहता।

उत्तर : (*i*) चील एक चूहे को लेकर आकाश में उड़ गई–संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) जो लोग दूसरों का समय नष्ट करते हैं–विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) जहाँ वह रहता है–क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(Set-II)

(*i*) पिताजी ने माँ से कहा कि वे भी गंगा-स्नान को चलें।

(*ii*) जो लोग शराब पीते हैं, वे हमें अच्छे नहीं लगते।

(*iii*) रमा ऐसे चल रही थी जैसे कोई बीमार चल रहा हो।

उत्तर : (*i*) वे भी गंगा-स्नान को चलें–संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) जो लोग शराब पीते हैं–विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) जैसे कोई बीमार चल रहा हो–क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य।

(Set-III)

(*i*) मुख्याध्यापक ने बताया कि दीपावली के उपलक्ष्य में विद्यालय तीन दिन बंद रहेगा।

(*ii*) जब मैं इस नगर में आया तब यह नगर बहुत छोटा-सा था।

(*iii*) जो विद्यार्थी अपने भविष्य के प्रति सजग नहीं हैं, वे जीवन-भर पछताते रहते हैं।

उत्तर : (*i*) दीपावली के उपलक्ष्य में विद्यालय तीन दिन बंद रहेगा–संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) जब मैं इस नगर में आया–क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) जो विद्यार्थी अपने भविष्य के प्रति सजग नहीं हैं–विशेष आश्रित उपवाक्य।

(CBSE Sample Paper-1)

प्रश्न 1. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(क) नेहा ने कहा कि वह और अधिक परिश्रम करेगी। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ख) न ही वह मुझे पहचानता है, न ही मैं उसे पहचानता हूँ। *(वाक्य-प्रकार लिखिए)*

(ग) लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

(घ) जीवन में पहली बार मैं इस तरह विचलित हुआ हूँ। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) मिश्र वाक्य।

(ख) संयुक्त वाक्य।

(ग) लोगों ने टोलियाँ बनाई और वे मैदान में घूमने लगे।

(घ) जीवन में यह पहली बार है जब मैं इस तरह विचलित हुआ हूँ।

प्रश्न 2. नीचे दिए गए वाक्यों में से आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए :

(*i*) जहाँ तुम रहते हो, वहाँ सफाई है।

(*ii*) वह लड़की, जिसने प्रथम पुरस्कार जीता था, मेरी बहन है।

(*iii*) मैं जानता हूँ कि वह झूठा है।

उत्तर : (*i*) जहाँ तुम रहते हो – क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) जिसने प्रथम पुरस्कार जीता था – विशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) वह झूठा है – संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(CBSE Sample Paper-2)

प्रश्न 1. आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए:

(*i*) मेरा यह सोचना कि विपुल प्रतिभाशाली छात्र है, सही निकला।

(*ii*) हालाँकि वह सबसे छोटा था, उसने सबसे मधुर गाया।

(*iii*) जो व्यक्ति कर्मठ होता है वह सभी जगह आदर पाता है।

उत्तर : (*i*) विपुल प्रतिभाशाली छात्र है – संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

(*ii*) हालाँकि वह सबसे छोटा था – क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य।

(*iii*) जो व्यक्ति कर्मठ होता है – विशेषण आश्रित उपवाक्य।

प्रश्न 2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए :

(क) वह बाजार गया, क्योंकि उसे पुस्तकें खरीदनी थीं। *(वाक्य-प्रकार बताइए)*

(ख) प्रातः सूर्य उदय हुआ और पक्षी चहचहाने लगे। *(वाक्य-प्रकार स्पष्ट कीजिए)*

(ग) तताँरा को देखकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। *(संयुक्त वाक्य में बदलिए)*

(घ) परिश्रमी व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। *(मिश्र वाक्य में बदलिए)*

उत्तर : (क) मिश्र वाक्य।

(ख) संयुक्त वाक्य।

(ग) तताँरा को देखा और वह फूट-फूट कर रोने लगी।

(घ) जो परिश्रम करता है उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

अभ्यासार्थ
(Practice)

1. वाक्य की परिभाषा लिखिए और तीन पूर्ण वाक्यों के उदाहरण दीजिए।
2. वाक्य के तीनों गुणों पर दो-दो पंक्तियाँ लिखिए।
3. उद्देश्य की परिभाषा लिखकर विधेय से उसका अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. नीचे लिखे गए कथनों में से जो सही हों उन पर (✓) तथा जो गलत हों उन पर (×) चिह्न लगाइए :
   1. वाक्य के तीन गुण होते हैं।
   2. वाक्य का प्रयोजन शब्द है।
   3. वाक्य का प्रमुख घटक क्रिया है।
   4. अनुभावक कर्ता के साथ हिंदी में 'से' लगता है।
5. संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य में अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. 'और, पर, या, अत:' का प्रयोग करते हुए चारों के दो-दो संयुक्त वाक्य बनाइए।
7. नीचे लिखे वाक्यों में कुछ साधारण वाक्य, कुछ मिश्रित वाक्य और कुछ संयुक्त वाक्य हैं। सामने कोष्ठकों में उनके ठीक-ठीक नाम लिखिए :
   (1) मोहन ने कहा कि मैं जिस सिनेमाघर में गया उसमें टिकट नहीं मिला। ☐
   (2) जो विद्वान होता है, उसे सभी आदर देते हैं। ☐
   (3) मैं चाहता हूँ कि तुम परिश्रम करो और परीक्षा में सफल होओ। ☐
   (4) वह आदमी पागल हो गया है। ☐
   (5) स्त्री कपड़े सीती है। ☐
   (6) झूठ बोलना महापाप है। ☐
   (7) हमारे जीवन का आधार केवल धन नहीं, बल्कि कई और पदार्थ भी हैं। ☐
   (8) अपना काम देखो। ☐
   (9) जब राजा नगर में आया तब उत्सव मनाया गया। ☐
   (10) जो पत्र मिला है, उसे शीला ने लिखा होगा। ☐
8. 'आप कल कहाँ जा रहे हैं' का उत्तर–हैदराबाद, लघु वाक्य है। ऐसे लघु वाक्यों के पाँच उदाहरण लिखिए।
9. पदक्रम किसे कहते हैं ? पदक्रम के सामान्य नियम लिखिए।
10. नीचे दिए गए वाक्यों का पदक्रम ठीक कीजिए :
   (1) यह कुत्ता मोहन का है।
   (2) शीला गाती है गीत।
   (3) यहाँ वत्स आओ।
   (4) उसने बना दिया तुम्हें बेवकूफ।
   (5) मैं खेलूँगा पढ़ कर।
   (6) तुम फिल्म कौन-सी जा रहे हो देखने।

11. **नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया-रूप को कोष्ठक में दिए गए शब्द की सहायता से प्रथम या द्वितीय प्रेरणार्थक में बदलिए:**
   (1) बच्चा सो रहा है। (*माँ*) (**संकेत :** *माँ बच्चे को सुला रही है।*)
   (2) खाना पक रहा है। (*दीदी*) (**संकेत :** *दीदी खाना पका रही है।*)
   (3) दर्जी कपड़ा सिलता है। (*मैं*) (**संकेत :** *मैं दर्जी से कपड़ा सिलवाता हूँ।*)
   (4) महरी ने बर्तन माँज दिया। (*माँ*) (**संकेत :** *माँ ने महरी से बर्तन मँजवा दिया।*)
   (5) इस चिट्ठी की नकल कर दो। (*किसी से*) (**संकेत :** *किसी से इस चिट्ठी की नकल करवा दो।*)
12. **नीचे लिखे कथनों में से जो सही हैं उन पर (✓) तथा जो गलत हैं उन पर (×) का चिह्न लगाइए :**
   (1) सरल और मिश्र वाक्यों में दोनों वाक्य हमेशा समान स्तर के होते हैं।
   (2) मिश्र वाक्य में एक वाक्य आश्रित होता है।
   (3) 'टिकाऊ' लघु वाक्य है।
   (4) पदक्रम सभी भाषाओं में एक-सा होता है।
   (5) प्रेरणार्थक के चार भेद होते हैं।
   (6) 'जाना' क्रिया का प्रेरणार्थक साथ भेजना है।
   [**संकेत :** 1. (×), 2. (✓), 3. (✓), 4. (×), 5. (×), 6. (✓)]
13. पदवंध किसे कहते हैं ?
   (**संकेत :** *जब अनेक पद परस्पर संबद्ध होकर, एक ही पद की तरह उपवाक्य (सरल वाक्य) के घटक बनते हैं, जब उसे पदवंध कहा जाता है।*)
14. पदवंध के प्रकार लिखिए। सभी का एक-एक उदाहरण दीजिए।
   (**संकेत :** *पदवंध पाँच प्रकार के होते हैं :*
   1. संज्ञा पदबंध : **घर के पीछे लगा पेड़** गिर गया।
   2. सर्वनाम पदबंध : **शेर की तरह दहाड़ने वाले तुम** चुप क्यों हो ?
   3. विशेषण पदबंध : मेरे मित्र ने **एक मोटी सजिल्द** पुस्तक भेजी है।
   4. क्रिया पदबंध : नाव पानी में **डूबती चली गई।**
   5. क्रिया-विशेषण पदबंध : वह **बहुत धीरे-धीरे** चल रहा है।)
15. संज्ञा पदवंध की तीनों रचना रीतियों के उदाहरण दीजिए।
   (**संकेत : 1. गुणवाची विशेषण :** सुंदर फूल, युधिष्ठिर-सा सत्यवादी।
   2. उपाधिसूचक : श्रीमान मोहनलाल, मंत्री महोदय।
   3. समानाधिकरण सूचक : दशरथ पुत्र राम, गंगा नदी।)
16. **नीचे लिखे वाक्यों में से पदबंध छाँटिए और उनके नाम लिखिए :**
   1. दूध ज्यादा मीठा है। 2. उसने सफेद शेर देखा।
   3. अब पवनपुत्र हनुमान का प्रवेश हो गया। 4. आप बहुत अच्छे आदमी हैं।
   5. शीला गाती हुई जा रही थी।
   (**संकेत :** 1. ज्यादा मीठा–वि. पदबंध। 2. सफेद शेर–संज्ञा पदवंध
   3. पवन पुत्र हनुमान–संज्ञा पदवंध। 4. बहुत अच्छे–विशेषण पदवंध।
   5. गाती हुई जा रही थी–क्रिया पदबंध।)
17. क्रिया पदवंध किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए।
   (**संकेत :** *क्रिया पदवंध में क्रिया शीर्ष पर होती है, अन्य पद आश्रित होते हैं। जैसे–वह तेजी से दौड़ रहा है।*)
18. **नीचे लिखे कथनों में जो सही हों उन पर (✓) का तथा जो गलत हों उन पर (×) का चिह्न लगाइए :**
   1. पदवंध में एक से अधिक पद होते हैं। 2. सुंदर बच्चा विशेषण पदवंध है।
   3. क्रिया पदबंध के शीर्ष में विशेषण होता है। 4. बहुत सुंदर में, बहुत सुंदर शीर्ष पद का विशेषण है।
   [**संकेत :** 1. (✓), 2. (×), 3. (×), 4. (✓)]

C.B.S.E. की दसवीं कक्षा हिंदी (अ) की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. सरल वाक्य में बदलिए :

(1) वह घर गया और काम में लग गया।
(संकेत : *वह घर जाते ही काम में लग गया।)*

(2) वह स्कूल गया और पढ़ने लगा।
(संकेत : *वह स्कूल जाते ही पढ़ने लग गया।)*

2. कर्मवीर खेलता है। ('अध्यापक' शब्द प्रारंभ में लगाकर प्रेरणार्थक वाक्य में बदलिए।)
(संकेत - *अध्यापक कर्मवीर को खिलाता है।)*

3. सरल वाक्य बनाइए :

(1) बलराम आया और खाना खाने लगा।
(संकेत : *बलराम आकर खाना खाने लगा।)*

(2) श्याम मुँह धोता है। ('पिता' शब्द आरम्भ में लगाकर प्रेरणार्थक वाक्य बनाइए।) **(संकेत :** *पिता श्याम से मुँह धुलवाता है।)*

4.

(1) मैंने पत्र पढ़ा। (रेखांकित को प्रेरणार्थक में बदलकर लिखिए।) **(संकेत :** *मैंने पत्र पढ़वाया।)*

(2) वह अध्यापक था जो कल यहाँ आया था। (रेखांकित उपवाक्य का नाम लिखिए।) **(संकेत :** *विशेषण उपवाक्य)*

(3) अगर वह आया तो मैं चला जाऊँगा। (अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद बताइए।) **(संकेत :** *संकेतवाचक)*

(4) सफेद कमीज वाले छात्र को यह कलम दो। (मिश्र वाक्य में बदलिए।)
(संकेत : *जिस छात्र ने सफेद कमीज पहन रखी है, उसे यह कलम दे दो।)*

(5) टोपीवाला बाबू कहाँ गया ? (मिश्र वाक्य में बदलिए।)
(संकेत : *वह बाबू कहाँ गया, जिसने टोपी पहन रखी थी।)*

(6) यह वही बच्चा है, जिसे बैल ने मारा था। (साधारण वाक्य में बदलिए।) **(संकेत :** *बैल से मारे जाने वाला बच्चा यही है।)*

(7) मोहन रोज पढ़ने जाता है। (आज्ञार्थक वाक्य में बदलिए।)
(संकेत : *मोहन रोज पढ़ने जाए।)*

(8) क्या सुंदर बगीचा है ! (अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद लिखिए।) **(संकेत :** *विस्मयवाचक)*

5.

(1) सभा में सब लोग शांतिपूर्वक बैठे हैं। (अर्थ की दृष्टि से वाक्य का प्रकार लिखिए।) **(संकेत :** *विधानवाचक)*

(2) अहा ! गाँव की हवा की बात ही कुछ और है। (अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद बताइए।) **(संकेत :** *विस्मयार्थक)*

6.

(1) इंदिरा गाँधी का नाम किसने नहीं सुना ? (विधानवाचक वाक्य में बदलिए।) **(संकेत :** *इंदिरा गाँधी का नाम सभी ने सुना।)*

7.

(1) बच्चे कक्षा में शांतिपूर्वक बैठे हैं। *(अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए।)* **(संकेत :** *विधानार्थक)*

(2) सड़क पार करता हुआ व्यक्ति बस से टकराकर मर गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए।)
(संकेत : *जो व्यक्ति सड़क पार कर रहा था, वह बस से टकराकर मर गया।)*

(3) राजेश ने कहा कि मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा। (रेखांकित उपवाक्य का नाम लिखिए।)
(संकेत : *संज्ञा उपवाक्य)*

8. निम्नलिखित वाक्यों में आश्रित उपवाक्य छाँटो और उसका नाम भी बताओ :

(1) मुझे विश्वास है कि परीक्षा में अच्छे अंक मिलेंगे।
(संकेत : *परीक्षा में अच्छे अंक मिलेंगे—संज्ञा उपवाक्य)*

(2) जो सबकी भलाई करता है वह सबका प्रिय होता है।
(संकेत : *जो सबकी भलाई करता है—विशेषण उपवाक्य)*

(3) दार्शनिक कहते हैं कि यह जगत् मिथ्या है।
(संकेत : *यह जगत मिथ्या है—संज्ञा उपवाक्य)*

(4) मैंने एक फूल देखा जो खिल रहा था।
(संकेत : *जो खिल रहा था - विशेषण उपवाक्य)*

(5) आप जानते हैं कि ईमानदारी एक अच्छा गुण है।
(संकेत : *ईमानदारी एक अच्छा गुण है—संज्ञा उपवाक्य)*

(6) जहाँ-जहाँ वह गया, उसका सम्मान हुआ।
(संकेत : *जहाँ-जहाँ वह गया - क्रियाविशेषण उपवाक्य)*

(7) महात्मा गाँधी ने कहा कि गाय करुणा की कविता है।
(संकेत : *गाय करुणा की कविता है—संज्ञा उपवाक्य)*

(8) मैं भी वहीं जा रहा हूँ, जहाँ से तुम आए हो।
(संकेत : *जहाँ से तुम आए हो—क्रियाविशेषण उपवाक्य)*

(9) जब पूछोगे, तब बता दूँगा।
(संकेत : *जब पूछोगे—क्रिया विशेषण उपवाक्य)*

(10) जो लड़की किताब पढ़ रही है, वह मेरी बहन है।
(संकेत : *जो लड़की किताब पढ़ रही है—विशेषण उपवाक्य)*

नवीं कक्षा हेतु वाक्य संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. वाक्य के कितने अंग होते हैं ?

(क) एक (ख) दो (ग) तीन

2. क्या मोहन पुस्तक पढ़ता है ?–अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद बताइए।

(क) प्रश्नवाचक (ख) विस्मयवाचक

(ग) आज्ञावाचक

3. रवि मेरा मित्र है। – रेखांकित वाक्य का कौन-सा अंग है ?

(क) उद्देश्य (ख) विधेय (ग) अन्य

4. भागता हुआ चोर पकड़ा गया।–रेखांकित अंश वाक्य का कौन-साअंग है ?

(क) उद्देश्य (ख) विधेय

(ग) विधेय का विस्तार

5. मोहन पुस्तक पढ़ो–अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद बताइए।

(क) आज्ञावाचक (ख) इच्छावाचक

(ग) विधिवाचक

6. मोहन चला गया। 'मोहन' वाक्य का कौन-सा अंग है ?

(क) उद्देश्य (ख) विधेय

(ग) विधेय का विस्तार (घ) अन्य

7. मेरा भाई राम पढ़ता है। रेखांकित क्या है ?

(क) उद्देश्य (ख) विधेय

(ग) विधेय का विस्तार

8. राम ने खाना खाया। वाक्य-भेद बताइए।

(क) सरल (ख) संयुक्त (ग) मिश्र

9. मैं कल जाऊँगा–सही वाक्य-भेद बताइए :

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य

10. 'सत्यवादी गाँधी जी इतिहास में सदैव उल्लेखनीय रहेंगे'। वाक्य में उद्देश्य छाँटिए।

(क) सत्यवादी गाँधी

(ख) सत्यवादी

(ग) सत्यवादी गाँधी जी

(घ) सत्यवादी गाँधी जी इतिहास में

11. 'सुरेश की बहन सुनीता ने परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए'–वाक्य में विधेय छाँटिए–

(क) प्राप्त किए

(ख) सर्वाधिक अंक प्राप्त किए

(ग) अंक प्राप्त किए

(घ) परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए

12. मजदूरों ने कार्य समाप्त किया। मज़दूर घर चले गए। वाक्यों का उपयुक्त सरल वाक्य है:–

(क) जैसे ही काम समाप्त हुआ मज़दूर घर चले गए।

(ख) जब मज़दूरों ने काम समाप्त किया तब वे घर चले गए।

(ग) मज़दूर कार्य समाप्त करके घर चले गए।

(घ) मज़दूरों ने कार्य समाप्त कियाऔर चले गए।

13. निम्नलिखित वाक्यों में से सरल वाक्य छाँटकर लिखिए:–

(क) सत्य बोलो और प्रगति प्राप्त करो।

(ख) सत्य बोलने वाले की सदा विजय होती है।

(ग) जो सत्य बोलते हैं उनकी सदा जय होती है।

(घ) कभी

उत्तर : 1. (ख), 2. (क), 3. (क), 4. (क), 5. (क), 6. (क), 7. (क), 8. (क), 9. (ख), 10. (ग), 11. (घ), 12. (ग), 13. (ख)

अध्याय 16

वाक्य-रचना की अशुद्धियाँ

(Correction of Incorrect Sentences)

● 'ने' की अशुद्धियाँ ● क्रम की अशुद्धियाँ

वाक्य-रचना की अशुद्धियाँ निम्नलिखित प्रकार की हो सकती हैं :

1. अन्विति संबंधी 2. पदक्रम संबंधी 3. वाच्य संबंधी

1. अन्विति के नियम : वाक्य के पदों की परस्पर एकरूपता (*लिंग, वचन, पुरुष आदि*) के साथ क्रिया की भी अनुरूपता होनी चाहिए। हिंदी में पदों की अन्विति के कुछ विशेष नियम हैं।

(क) कर्ता-क्रिया : (1) विभक्ति रहित कर्ता वाले वाक्य की क्रिया सदा कर्ता के अनुसार होती है। यदि कर्ता के साथ ने विभक्ति जुड़ी हो तो सकर्मक क्रिया कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होती है। जैसे—

1. बालक पुस्तक पढ़ता है। (कर्ता के अनुसार)
   बालिका पुस्तक पढ़ती है। (कर्ता के अनुसार) } विभक्ति रहित
2. बालकों **ने** पुस्तक पढ़ी। (कर्म के अनुसार)
   बालिका **ने** पत्र पढ़ा। (कर्म के अनुसार) } 'ने' विभक्ति सहित

(2) कर्ता और कर्म दोनों विभक्ति सहित हों तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है। जैसे—

1. मैनेजर ने नौकर को बुलाया। 2. मालिक ने मजदूरों को समझाया।

(3) समान लिंग के विभक्ति रहित अनेक कर्ता पद 'और' से जुड़े हों तो क्रिया उसी लिंग में बहुवचन में होती है।
जैसे— 1. गीता, चित्रा और शीला आएँगी। 2. श्याम, नीरज और इमरान खेल रहे हैं।

(4) **या** से जुड़े विभक्ति रहित कर्ता पदों की क्रिया अंतिम कर्ता के अनुसार होती है। जैसे—
भाई **या** बहन आएगी।

(5) विभिन्न लिंगों के अनेक कर्ता **और** से जुड़े हों तो क्रिया पुल्लिंग बहुवचन में होती है। जैसे—
गणतंत्र दिवस परेड को लाखों बालक, वृद्ध, नर और नारी देख रहे हैं।

(6) यदि कर्ता भिन्न-भिन्न पुरुषों के हों तो उनका क्रम होगा (231) अर्थात् पहले मध्यम पुरुष, फिर अन्य पुरुष और अंत में उत्तम पुरुष। क्रिया अंतिम कर्ता के लिंग के अनुसार बहुवचन में होगी। जैसे—

1. तुम, गीता और मैं नाटक देखने चलेंगे। 2. तुम, राकेश और मैं टेनिस खेलेंगे।

(7) कर्ता का लिंग अज्ञात हो तो क्रिया पुल्लिंग में होगी। जैसे—

1. देखो कौन आया है ? 2. तुम्हारा पालन-पोषण कौन करता है ?

(8) आदर देने के लिए एकवचन कर्ता के लिए क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है। जैसे—

1. प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं। 2. महात्मा गाँधी राष्ट्रपिता माने जाते हैं।

(9) संबंधकारक का लिंग उसके संबंधी के लिंग के अनुसार होता है—यदि ये रूप भिन्न-भिन्न लोगों के हों तथा और से जुड़े हों तो संज्ञा-सर्वनाम का संबंधकारक लिंग प्रथम संबंधी के अनुसार होगा। जैसे—

1. मेरा बेटा और बेटी शिमला गए हैं। 2. तुम्हारी बहन और भाई आजकल क्या कर रहे हैं?

(ख) विशेष्य और विशेषण की अन्विति :

(1) विशेषण का लिंग-वचन अपने विशेष्य के अनुसार होता है। जैसे—

1. यहाँ उदार और परिश्रमी लोग रहते हैं। 2. गोरे मुख पर काला तिल अच्छा लगता है।

(2) यदि एक से अधिक विशेष्य हों तब भी उपयुक्त नियम का ही पालन होता है। जैसे—
वह गिरती उठती बड़ी-बड़ी लहरों को निहारती रही।

(3) अनेक समास रहित विशेष्यों का विशेषण निकटवर्ती विशेष्य के अनुरूप होता है। जैसे—
1. भोले-भाले बालक और बालिकाएँ। 2. भोली-भाली बालिकाएँ और बालक।

(ग) सर्वनाम और संज्ञा की अन्विति :

(1) सर्वनाम उसी संज्ञा के लिंग वचन का अनुसरण करता है जिसके स्थान पर आया है, जैसे—
1. मैंने सीता को देखा, वह आ रही थी। 2. मैंने सतीश को देखा, वह आ रहा था।

(2) आदर के लिए बहुवचन सर्वनाम का प्रयोग होता है, जैसे—
1. चाचा जी आए हैं। 2. वे एक सप्ताह रुकेंगे।

(3) वर्ग का प्रतिनिधि अपने लिए **मैं** के स्थान पर **हम** का प्रयोग करता है। जैसे—
मंत्री ने कहा, हमें अपने देश से अशिक्षा दूर करनी है।

☞ **2. पदक्रम संबंधी नियम :** वाक्य पदों और पदबंधों से बनता है। वाक्य के साँचे में पदों का क्या क्रम हो, इसके कुछ निश्चित नियम हैं :

(1) प्राय: कर्तापद वाक्य में सबसे पहले आता है और क्रियापद सबसे अंत में—
1. भिखारी आ रहा है। 2. सूर्योदय हुआ।

(2) संबोधन और विस्मयसूचक पद वाक्य के प्रारंभ में कर्ता से भी पहले आते हैं—
1. अरे ! भिखारी आ रहा है। 2. अहा ! सूर्योदय हुआ।

(3) कर्मपद कर्ता और क्रियापदों के बीच रहता है—
1. गोकुल **पाठ** पढ़ाता है। 2. बच्चे ने **गीत** सुनाया।

(4) संबंधकारक अपने संबंधी शब्द से पूर्व आता है—
1. भिखारी के बच्चे ने **कबीर का पद** सुनाया। 2. वह तुम्हारा नाम पूछ रहा था।

(5) प्रश्नवाचक पद प्रश्न के विषय से पूर्व आता है—
1. **कौन** खड़ा है ? *(कर्ता पर प्रश्न)*
2. तुम **क्या** खा रही हो ? *(कर्म पर प्रश्न)*
3. वह **कैसे** आया ? *(रीति पर प्रश्न)*

(6) कर्ता और कर्म को छोड़कर शेष सभी कारक कर्ता-कर्म के बीच आते हैं। एक से अधिक कारक रूप होने पर ये उल्टे क्रम में *(पहले अधिकरण)* रखे जाते हैं—
1. मजदूर खेत में रहट से सिंचाई कर रहे हैं। 2. छात्र मैदान में अपने मित्रों के साथ क्रिकेट खेलने लगे।

(7) पूर्वकालिक क्रिया, क्रिया से पहले आती है—
1. कल **पढ़ने** आइए। 2. कल पाठ **पढ़कर** आइए।

(8) **न** या **नहीं** का प्रयोग निषेध के अर्थ में हो तो क्रिया से पूर्व और आग्रह के अर्थ में हो तो क्रिया के बाद होता है—
1. मैं **नहीं** जाऊँगा। 2. तुम जाओ **न**।

(9) वाक्य के विभिन्न पदों में ऐसी तर्कसंगत निकटता होनी चाहिए जिससे वाक्य द्वारा संप्रेषित अर्थ स्पष्ट हो
जैसे — 1. फल बच्चे को काटकर खिलाओ। 2. गर्म गाय का दूध स्वास्थ्यवर्धक होता है।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों का अर्थ अटपटा और उपहास्यपद है, अत: उचित क्रम होगा—
1. बच्चे को फल काटकर खिलाओ। 2. गाय का गर्म दूध स्वास्थ्यवर्धक होता है।

अशुद्धियों को दूर करना

अन्विति संबंधी अशुद्धियाँ

	अशुद्ध	शुद्ध
1	हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी प्रगति होनी चाहिए।	हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी प्रगति होना चाहिए।
2	क्या आप पढ़ लिए हैं?	क्या आपने पढ़ लिया है?
3	क्या आप आ सकोगे?	क्या आप आ सकेंगे?
4	प्रधानाचार्य अध्यापक को बुलाए।	प्रधानाचार्य ने अध्यापक को बुलाया।
5	सुरेश को योगेश को और मोहन को कल मैंने साथ-साथ देखा था।	मैंने सुरेश, योगेश और मोहन को कल साथ-साथ देखा था।
6	यहाँ पर कल एक लड़का और लड़की बैठी थी।	यहाँ पर कल एक लड़का और लड़की बैठे थे।
7	तुम मेरे मित्र हो मैं आपको भली-भाँति जानता हूँ।	तुम मेरे मित्र हो मैं तुम्हें भली-भाँति जानता हूँ।
8	उत्तम चरित्र-निर्माण हमारे लक्ष्य होने चाहिए।	उत्तम चरित्र-निर्माण हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

पदक्रम की अशुद्धियाँ

	अशुद्ध	शुद्ध
9	सावित्री जो सत्यवान की पत्नी थी, वह एक पतिव्रता नारी थी।	सत्यवान की पत्नी सावित्री एक पतिव्रता नारी थी।
10	महात्मा गाँधी का देश सदा आभारी रहेगा।	देश महात्मा गाँधी का सदा आभारी रहेगा।
11	केवल यहाँ दो पुस्तकें रखी हैं।	यहाँ केवल दो पुस्तकें रखी हैं।
12	खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।	गाजर काटकर खरगोश को खिलाओ।
13	हमारे बैल इधर-उधर भटकते हुए पड़ोसियों के खेत में जा पहुँचे।	इधर-उधर भटकते हुए हमारे बैल पड़ोसियों के खेत में जा पहुँचे।
14	एक फूलों की माला ले आइए।	फूलों की एक माला ले आइए।
15	पुस्तकें ये किसकी हैं ?	ये पुस्तकें किसकी हैं ?

वाच्य की अशुद्धियाँ

	अशुद्ध	शुद्ध
16	प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सरोज स्मृति' से ली हैं।	प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सरोज स्मृति' से ली गई हैं।
17	प्रयोग के आधार पर हिंदी शब्दों को दो भागों में विभक्त किया है।	प्रयोग के आधार पर हिंदी शब्दों को दो भागों में विभक्त किया गया है।
18	अध्यापक से हिंदी पढ़ाई है।	अध्यापक से हिंदी पढ़ी है।
19	पुलिस ने डाकुओं का पीछा किया गया।	पुलिस के द्वारा डाकुओं का पीछा किया गया।
20	अध्यापक ने हमसे लेख लिखाया।	अध्यापक ने हमसे लेख लिखवाया।
21	डाकुओं ने चौकी लूटी गई।	डाकुओं द्वारा चौकी लूटी गई।
22	मैं आम खाया गया।	मुझसे आम खाया गया।
23	अध्यापक ने कहा गया कि कल सभी छात्र पुस्तकें न लाओ।	अध्यापक द्वारा कहा गया कि कल सभी छात्र पुस्तकें न लाएँ।
24	मोहन ने घर गया और सोया।	मोहन घर गया और सो गया।

पुनरुक्ति की अशुद्धियाँ : ऊपर लिखित तीन भेदों के अतिरिक्त वाक्य में कुछ ऐसी अशुद्धियाँ भी मिलती हैं, जिनके मूल एक ही घटक को दो भिन्न रीतियों से एक साथ स्पष्ट किया गया है। जैसे—

मुझे केवल दस रुपए मात्र मिले। (अशुद्ध)

मुझे दस रुपए मात्र मिले। (शुद्ध)

किंतु "मुझे केवल दस रुपए मात्र मिले" अशुद्ध है, क्योंकि इसमें दोनों रीतियों को एक साथ प्रयुक्त कर दिया गया है। सी अशुद्धियों के मूल में पुनरावृत्ति या पुनरुक्ति की भावना रहती है। नीचे अनेक उदाहरणों से इसे स्पष्ट किया जा रहा है :

	अशुद्ध	*शुद्ध*
1	कृपया आज का अवकाश देने की कृपा करें।	आज का अवकाश देने की कृपा करें।
2	केवल मात्र महिलाओं के लिए आरक्षित।	केवल महिलाओं के लिए आरक्षित।
3	मैं सप्रमाण सहित बता रहा हूँ।	मैं प्रमाण सहित बता रहा हूँ।
4	सब यहाँ सकुशलतापूर्वक हैं।	सब यहाँ सकुशल हैं। ***अथवा*** सब यहाँ कुशलतापूर्वक हैं।
5	यहाँ लगभग कोई एक दर्जन के करीब संतरे हैं।	यहाँ लगभग एक दर्जन संतरे हैं।
6	कश्मीर में अनेक दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं।	कश्मीर में अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

वाक्य-संशोधन संबंधी कुछ अन्य प्रमुख उदाहरण

1. संज्ञा का प्रयोग

(क) अनावश्यक शब्द

	अशुद्ध	*शुद्ध*
1	पुस्तक छापने की व्यवस्था का **प्रबंध** करें।	पुस्तक छापने की व्यवस्था करें।
2	मैं सोमवार के **दिन** यहाँ पहुँच जाऊँगा।	मैं सोमवार को यहाँ पहुँच जाऊँगा।
3	आप अपनी प्रतिज्ञा के **शब्दों** पर अटल रहें।	आप अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहें।
4	विजय के मन की **थाह** का पता नहीं चलता।	विजय के मन का पता नहीं चलता।
5	मीनाक्षी **जल से** पौधों को सींचती थी।	मीनाक्षी पौधों को सींचती थी।
6	पिताजी का **शरीर** गद्गद हो गया।	पिताजी गद्गद हो गए।
7	गुलामी की **दासता** किसे पसंद होगी ?	गुलामी किसे पसंद होगी ?

(ख) अनुपयुक्त शब्द

	अशुद्ध	*शुद्ध*
8	पतिव्रता नारी को छूने का **उत्साह** कौन करेगा ?	पतिव्रता नारी को छूने का **साहस** कौन करेगा।
9	रोगी के पसीने की **संख्या** बढ़ती गई।	रोगी के पसीने की **मात्रा** बढ़ती गई।
10	मनीषा ने गीत की दो-चार **लड़ियाँ** गाईं।	मनीषा ने गीत की दो-चार **कड़ियाँ** गाईं।
11	इस समस्या की **औषध** उसके पास है।	इस समस्या का **हल** उसके पास है।
12	**गले** में पराधीनता की बेड़ियाँ पड़ी रही हैं।	**पैरों** में पराधीनता की बेड़ियाँ पड़ी रही हैं।
13	हिंदी के प्रचार में अब भी बड़े-बड़े **संकट** हैं।	हिंदी के प्रचार में अब भी बड़ी-बड़ी **बाधाएँ** हैं।
14	उनका रहन-सहन का दरजा ऊँचा है।	उनके रहन-सहन का **स्तर** ऊँचा है।
15	प्रेम करना तलवार की **नोंक** पर चलना है।	प्रेम करना तलवार की **धार** पर चलना है।
16	वह मेरे **शब्दों** पर ध्यान नहीं देती।	वह मेरी **बात** पर ध्यान नहीं देती।
17	कृषि हमारी व्यवस्था की **रीढ़** है।	कृषि हमारी व्यवस्था का **आधार** है।
18	उसके पास रुपए की बड़ी **संख्या** है।	उसके पास रुपए की **बहुतायत** है।

	अशुद्ध	शुद्ध
19	उन्होंने अपनी शराफत का पूरा **तजरुबा** दिया।	उन्होंने अपनी शराफत का पूरा **सबूत** दिया।
20	हमने यह काम करके बड़ी **अशुद्धि** की।	हमने यह काम करके बड़ी **भूल** की।
21	इस यंत्र की **उत्पत्ति** पिछले वर्ष हुई।	इस यंत्र का **आविष्कार** पिछले वर्ष हुआ।
22	हम अपने **चित्त** की आज्ञा पर चलते हैं।	हम अपने **अन्तःकरण** की आज्ञा पर चलते हैं।
23	मेले में यात्रियों का **तारतम्य** नहीं टूटता था।	मेले में यात्रियों का **तांता** लगा था।
24	मुझे सफल होने की **निराशा** है।	मुझे सफल होने की **आशा** है।
25	सभा में **क्रोध** प्रकट किया गया।	सभा में **रोष** प्रकट किया गया।
26	पिछले वर्ष यहाँ **भूख** की भारी घटनाएँ हुईं।	पिछले वर्ष यहाँ **भुखमरी** की भारी घटनाएँ हुईं।
27	जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली **कथा** चरितार्थ होती है।	जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली **कहावत** चरितार्थ होती है।
28	**विष्णु पद** में चंद्रमा को देखो।	**आकाश** में चंद्रमा को देखो।
29	उनका **मूड़** काट दिया।	उसका **सिर** काट दिया।
30	मकान गिर जाने का **संदेह** है।	मकान गिर जाने का **डर** है।

(ग) अनियमित

31	मैंने उसे एक पुस्तक **समर्पण** की।	मैंने उसे एक पुस्तक **समर्पित** की।
32	मैंने ऐसा करना पहले से **निश्चय** कर रखा था।	मैंने ऐसा करना पहले से **निश्चित** कर रखा था।
33	फसल **नाश** हो गई।	फसल **नष्ट** हो गई।
34	मुझे ईश्वर पर **आत्म-विश्वास** है।	मुझे ईश्वर पर **विश्वास** है।
35	यह बात **निश्चय** रूप से नहीं कही जा सकती।	यह बात **निश्चित** रूप से नहीं कही जा सकती।
36	यह शब्द **लोप** हो गया।	यह शब्द **लुप्त** हो गया।

2. विशेषण का प्रयोग

(क) अनावश्यक शब्द

37	तुम सबसे **सुन्दरतम** हो।	तुम सबसे **सुन्दर** हो।
38	वहाँ कोई **एक** जगह नहीं है।	वहाँ कोई जगह नहीं है।
39	किसी और **दूसरे** लड़के को भेज दो।	किसी और लड़के को भेज दो।
40	पुरुषों ने **अपना** साहस न छोड़ा।	पुरुषों ने साहस न छोड़ा।
41	यह **सबसे** उत्तम है।	यह उत्तम है।
42	इसमें **समस्त** प्राणीमात्र का कल्याण है।	इसमें प्राणीमात्र का कल्याण है।
43	प्रायः **सभी** लोग ऐसा मानते हैं।	प्रायः लोग ऐसा मानते हैं।

(ख) अनुपयुक्त

44	मुझे **भारी** प्यास लगी है।	मुझे **बहुत** प्यास लगी है।
45	उसे **बेशुमार** कष्ट उठाना पड़ा।	उसे **बहुत** कष्ट उठाना पड़ा।
46	जीवन और साहित्य का **घोर** संबंध है।	जीवन और साहित्य का **घनिष्ठ संबंध है।**
47	वह **आरोग्य** हो गया।	वह **नीरोग** हो गया।
48	वे **बड़े** अच्छे अध्यापक हैं।	वे **बहुत** अच्छे अध्यापक हैं।
49	वहाँ **भारी-भरकम** भीड़ जमा थी।	वहाँ **बहुत** भीड़ जमा थी।
50	गोपाल तो **निपट** खिलाड़ी है।	गोपाल तो **पूरा** खिलाड़ी है।
51	यह एक **गहरी** समस्या है।	यह एक **गंभीर** समस्या है।
52	वह अपना **भावी** जीवन यहीं बिताएँगे।	वह अपना **शेष** जीवन यहीं बिताएँगे।
53	उसकी तबीयत **नाशाद** है।	उसकी तबीयत **नासाज** है।

ग) अनियमित

54	किसी ने **अपना-अपना** पाठ याद नहीं किया।	किसी ने **अपना** पाठ याद नहीं किया।
55	सब लोग **अपनी-अपनी** एक सलाह दें।	सब लोग **अपनी** राय दें।
56	तीन-तीन मील पर **एक-एक** सराय थी।	तीन-तीन मील पर **एक** सराय थी।
57	प्रत्येक को **चार-चार** रुपए दो।	प्रत्येक को **चार** रुपए दो।
58	तुम मुझे अपनी **छोटी-सी** बहन समझो।	तुम मुझे अपनी **छोटी** बहन समझो।
59	**सब ये** काम कर लो।	**ये सब** काम कर लो।
60	**अच्छा ऐसा** लड़का कभी नहीं देखा।	**ऐसा अच्छा** लड़का कभी नहीं देखा था।

3. सर्वनाम का प्रयोग

क) अनावश्यक शब्द

61	डाकुओं का सरदार **वह** अलीबाबा था।	डाकुओं का सरदार अलीबाबा था।
62	उनकी **अपनी** प्रखर बुद्धि हर काम में प्रकट होती है।	उनकी प्रखर बुद्धि हर काम में प्रकट होती है।

ख) अनुपयुक्त शब्द

63	दूध में **कौन** पड़ गया ?	दूध में **क्या** पड़ गया ?
64	वह **निज** में वहाँ जाना नहीं चाहता।	वह **स्वयं** वहाँ जाना नहीं चाहता।
65	**तुम** तो आ गए, पर आपका सामान नहीं आया।	**आप** तो आ गए, पर आपका सामान नहीं आया।

(ग) अनियमित शब्द

66	मैं **उन्हीं से** बातें करने लगा।	मैं **उनसे** बातें करने लगा।
67	**यह** लोग क्या कर रहे हैं?	**ये** लोग क्या कर रहे हैं ?
68	**यह** भले आदमी है।	**ये** भले आदमी हैं।
69	तुम **तुम्हारे** घर चले जाओ।	तुम **अपने** घर चले जाओ।

4. क्रिया का प्रयोग

(क) अनावश्यक क्रियापद

70	घर में कैसा वातावरण **उपस्थित** है।	घर में कैसा वातावरण है।
71	इसको दंगा **कहकर पुकारना** अनुचित है।	इसको दंगा **कहना** अनुचित है।
72	वह विलाप **करके रोने** लगा।	वह विलाप करने लगा।
73	इस बात का स्पष्टीकरण **करने** की आवश्यकता है।	इस बात के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

(ख) आवश्यक शब्द

74	उसका रूप और व्यवहार और बातें **सुनकर** मन मुग्ध हो गया।	उसका रूप और व्यवहार **देखकर** और बातें सुनकर मन मुग्ध हो गया।
75	वह सीना, पिरोना, संगीत और हिंदी पढ़ती है।	वह सीना, पिरोना और संगीत सीखती है **तथा** हिंदी पढ़ती है।
76	मैंने उसका गाना और रूप देखा।	मैंने उसका गाना **सुना** और रूप देखा।

(ग) अनुपयुक्त क्रियापद

77	कॉलेज बंद होने की संभावना **की जा** रही है।	कॉलेज बंद होने की संभावना है।
78	पगड़ी **ओढ़** कर जाओ।	पगड़ी **बाँध** कर जाओ।
79	माला **गूँध** लो।	माला **गूँथ** लो।
80	यह लड़का कार **हाँक** सकता है।	यह लड़का कार **चला** सकता है।
81	उपस्थित लोगों ने संकल्प **किया।**	उपस्थित लोगों ने संकल्प **लिया।**
82	उसने अपने पाँव से जूते **निकाले।**	उसने अपने पाँव से जूते **उतारे।**
83	मैं खेलना **माँगता** हूँ।	मैं खेलना **चाहता** हूँ।
84	उसे वहाँ नौकरी **पा गई।**	उसे वहाँ नौकरी **मिल गई।**
85	उसने मुझे गालियाँ **निकाली।**	उसने मुझे गालियाँ **दीं।**
86	मैंने उसकी नाक पर मुक्का **दिया।**	मैंने उसकी नाक पर मुक्का **मारा।**
87	नदी पार **हो गई।**	नदी पार कर **ली।**
88	हमें यह सावधानी **लेनी** होगी।	हमें यह सावधानी **बरतनी** होगी।
89	इसका मूल्य **नापा या तोला** नहीं जा सकता।	इसका मूल्य **आँका** नहीं जा सकता।
90	इस पत्र में **कहा** है कि	इस पत्र में **लिखा** है कि

(घ) संयुक्त क्रिया

91	ब्राह्मण वेद अध्ययन करता है।	ब्राह्मण वेद **का** अध्ययन करता है।
92	मैं यह **स्वीकृत** करता हूँ।	मैं यह **स्वीकार** करता हूँ।
93	यह सुनते ही उसका चेहरा **गिर गया।**	यह सुनते ही उसका चेहरा **उतर गया।**
94	वह रुपया नहीं **पा पाया।**	वह रुपया नहीं **ले पाया।**
95	उसने देश को भारी संकट से **रोक दिया।**	उसने देश को भारी संकट से **बचा लिया।**
96	पूनम हँस **डाली।**	पूनम हँस **पड़ी।**
97	वह उठने लग **पड़ा।**	वह उठने **लगा।**

98	मैं उसे सब कुछ समझा **लूँगा।**	मैं उसे सब कुछ समझा **दूँगा।**
99	तबीयत ऊब **आती** है।	तबीयत ऊब **जाती है।**
100	यह काम अच्छा **हो** पड़ा है।	यह काम अच्छा **बन** पड़ा है।

(ङ) मुहावरे

	अशुद्ध	*शुद्ध*
101	उन्होंने **उसकी** आड़े हाथों खबर ली।	उन्होंने **उसे** आड़े हाथों लिया।
102	उसका सिर शर्म से **उड़** गया।	उसका सिर शर्म से **झुक** गया।
103	नौकरी पाने के लिए वह नाक **घिसता** फिरता है।	नौकरी पाने के लिए वह नाक **रगड़ता** फिरता है।
104	अपना दोष दूसरों के सिर क्यों **जड़ती** हो।	अपना दोष दूसरों के सिर क्यों **मढ़ती** हो।
105	हम देश के लिए जान पर **कुर्बान हो** जाएँगे।	हम देश के लिए जान पर **खेल** जाएँगे।
106	घर से बाहर आओ तो तुम्हें मजा **दिलाऊँ।**	घर से बाहर आओ तो तुम्हें मजा **चखाऊँ।**
107	उस पर घड़ों पानी **गिर गया।**	उस पर घड़ों पानी **पड़ गया।**

(च) अनियमित प्रयोग

108	तू आई **हो।**	तू आई **है।**
109	आप जा सकता **है।**	आप जा सकते **हैं।**
110	किसी का साहस नहीं है कि वह **जाएगा।**	किसी का साहस नहीं है कि वह **जाए।**
111	मैं चाहता हूँ कि आप छुट्टी ले **लेता।**	मैं चाहता हूँ कि आप छुट्टी ले **लें।**
112	सब काम **करना** होंगे।	सब काम **करने** होंगे।
113	वह खाना **खा करके** जाएगी।	वह खाना **खाकर** जाएगी।
114	सब चिंता **दूर होकर** मन शांत हो गया।	सब चिंता दूर **होने** से मन शांत हो गया।
115	मैं **चलता-चलता** रुक गया।	मैं **चलते-चलते** रुक गया।

5. संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण का विभक्ति रूप

116	वह अपने **दादे** के साथ मेला देखने गया।	वह अपने **दादा** के साथ मेला देखने गया।
117	इस **पेशा के** लोग कम मिलेंगे।	इस **पेशे के** लोग कम मिलेंगे।
118	**कोई** व्यक्ति की हानि न होने पाए।	**किसी** व्यक्ति की हानि न होने पाए।
119	**अपना** आचरण और सभ्यता को बचाने का प्रयास करें।	**अपने** आचरण और सभ्यता को बचाने का प्रयास करें।
120	शत्रु ने **गोले** और तोपों से हमला किया।	शत्रु ने **गोलों** और तोपों से हमला किया।
121	उसकी **आशों** पर पानी पड़ गया।	उसकी **आशाओं** पर पानी फिर गया।
122	वहाँ चार **स्त्रियाँ** और तीन **बालक** का वध किया गया।	वहाँ चार **स्त्रियों** और तीन **बालकों** का वध किया गया।
123	हम **सवेरा** से खड़े हैं।	हम **सवेरे** से खड़े हैं।

6. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का लिंग

124	सदा सच बोलना उसकी आदत **था।**	सदा सच बोलना उसकी आदत **थी।**
125	इस काम में मुझे मजा **आती है।**	इस काम में मुझे मजा **आता है।**
126	बेटी पराये घर का धन **होता है।**	बेटी पराये घर का धन **होती है।**

127	राम और सीता वन को **गई**।	राम और सीता वन को **गए**।
128	बर्फ से **नलें** फट **गईं**।	बर्फ से **नल** फट **गए**।
129	परीक्षा की प्रणाली **बदलना** चाहिए।	परीक्षा की प्रणाली **बदलनी** चाहिए।
130	यह शरीर नष्ट हो **जाएगी**।	यह शरीर नष्ट हो **जाएगा**।
131	हिंदी की शिक्षा अनिवार्य कर **दिया**।	हिंदी की शिक्षा अनिवार्य कर **दी**।
132	यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा **सकता** है।	यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट की जा **सकती** है।
133	इस कवि में जवानी **के** मिठास के प्रति मोह है।	इस कवि में जवानी **की** मिठास के प्रति मोह है।
134	गलियों को **चौड़ी** करना आवश्यक हो गया।	गलियों को **चौड़ा** करना आवश्यक हो गया।
135	गुलाब का फूल आनंद की वस्तु **होती** है।	गुलाब का फूल आनंद की वस्तु **होता** है।
136	**दसवें** रात को वह चला गया।	**दसवीं** रात को वह चला गया।
137	दंगे में युवा, नर, बालक, नारी सब **पकड़ी गईं**।	दंगें में बालक, युवा, नर, नारी सब **पकड़े गए**।

7. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का वचन

138	राजा साहब **बजरों** पर बैठकर गए।	राजा साहब **बजरे** पर बैठकर गए।
139	वे लोग विविध **विषय** से परिचित थे।	वे लोग विविध **विषयों** से परिचित थे।
140	**लड़की** लोग बैठा था।	**लड़कियाँ** बैठी थीं।
141	अनुशासन के बिना व्यक्ति अपने **चरित्रों** को खो देता है।	अनुशासन के बिना व्यक्ति अपने **चरित्र** को खो देता है।
142	उसने अनेक प्रकार की **विद्या** सीखी।	उसने अनेक प्रकार की **विद्या** सीखीं।
143	आज शाम तक चार **गिरफ्तारी** हुईं।	आज शाम तक चार **गिरफ्तारियाँ** हुईं।
144	हर एक ने **टोपियाँ** पहन रखी थीं।	हर एक ने **टोपी** पहन रखी थी।
145	चारों वेदों **का** नाम बताओ।	चारों वेदों **के** नाम बताओ।
146	मेरा तो प्राण निकल गया।	**मेरे** तो प्राण निकल गए।
147	72 हजार **का** नोट चोरी हो गया।	72 हजार **के** नोट चोरी हो गए।
148	दो पुरस्कार एक विद्यार्थी को नहीं **मिलेगा**।	दो पुरस्कार एक विद्यार्थी को नहीं **मिलेंगे**।
149	हमारे **सामानों** का ख्याल रखना।	हमारे **सामान** का ख्याल रखना।
150	महात्माजी **का** दर्शन करके मैं धन्य हो गई।	महात्मा जी **के** दर्शन करके मैं धन्य हो गई।
151	कपड़े उतार कर रख **दिया**।	कपड़े उतार कर रख **दिए**।

8. परसर्ग

(क) आवश्यक

152	**आप** अवश्य सुने होंगे।	**आपने** अवश्य सुना होगा।
153	**मैं** कुछ-का-कुछ लिख दिया हूँ।	**मैंने** कुछ-का-कुछ लिख दिया है।
154	वह दौड़ी हुई गई और **वह** दवा माँगी।	वह दौड़ी हुई गई और **उसने** दवा माँगी।
155	**वह** इसी कारण नदी में डूब कर जान **दे दिया**।	**उसने** इसी कारण नदी में डूबकर जान **दे दी**।
156	**सरकार** यह काम करवाना **चाही**।	**सरकार ने** यह काम करवाना **चाहा**।
157	लड़के **ने** भोजन करके स्कूल गया।	लड़का भोजन करके स्कूल गया।
158	कृष्ण **ने** गोपियों के साथ नाचा।	कृष्ण गोपियों के साथ नाचे।

159	राम **के** नाम को लेकर चल पड़ा।	राम **का** नाम लेकर चल पड़ा।
160	सत्याग्रही बड़ी-बड़ी यातनाओं **को** सहते रहे।	सत्याग्रही बड़ी-बड़ी यातनाएँ सहते रहे।
161	यह पद कई भावों **को** प्रकट करता है।	यह पद कई भाव प्रकट करता है।
162	हमें बहुत-सी बातों **को** सीखना है।	हमें बहुत-सी बातें सीखनी हैं।
163	भोजन **को** स्वादिष्ट होना चाहिए।	भोजन स्वादिष्ट होना चाहिए।

(ख) अनुपयुक्त

164	**हमने** यह काम करना है।	**हमें** यह काम करना है।
165	यह चीज **उसने** दे दो।	यह चीज **उसको** दे दो।
166	**मुझे तो** आप सब एक समान हैं।	**मेरे लिए** आप सब एक समान हैं।
167	सब को भगवान **को पूजना** चाहिए।	सब को भगवान **की पूजा** करनी चाहिए।
168	मैं अपने पिता **को** भी नहीं डरता।	मैं अपने पिता **से** भी नहीं डरता।
169	मैं **आपको** कृतज्ञ हूँ।	मैं **आपका** कृतज्ञ हूँ।
170	आठ बजने **को** दस मिनट हैं।	आठ बजने **में** दस मिनट हैं।
171	उसने मुझे खाने **को** बुलाया।	उसने मुझे खाने **पर** बुलाया।
172	फिर कुछ देर **से** उसने उत्तर दिया।	फिर कुछ देर **बाद** उसने उत्तर दिया।
173	उसने अपनी पत्नी **का** गला घोंटकर मार डाला।	उसने अपनी पत्नी **को** गला घोंटकर मार डाला।
174	मैंने उसे बैठने **की** कुर्सी दी।	मैंने उसे बैठने **के लिए** कुर्सी दी।
175	मैं आप **की** श्रद्धा करता हूँ।	मैं आप **पर** श्रद्धा रखता हूँ।
176	फोड़े **में** मरहम लगा दिया गया।	फोड़े **पर** मरहम लगा दिया गया।
177	वह पेड़ **में** बैठी है।	वह पेड़ **पर** बैठी है।
178	वह नदी **में** पानी भरने गई है।	वह नदी **से** पानी भरने गई है।
179	उसे आने **में** रोक दिया गया।	उसे आने **से** रोक दिया गया।
180	**मुझ पर** कोई लाचारी नहीं है।	**मेरी** कोई लाचारी नहीं है।
181	आप मेरे **ऊपर** दया करते।	आप **मुझ** पर दया कीजिए।

9. अव्यय

(क) योजक अनावश्यक

182	मैं पहुँचा ही था **जब** कि वह आ गया।	मैं पहुँचा ही था कि वह आ गया।
183	प्राय: **करके** ऐसा होता है।	प्राय: ऐसा होता है।
184	जो धन का भूखा है, **फिर** वह साधु नहीं है।	जो धन का भूखा है, वह साधु नहीं है।
185	संदूक में कागज-पत्र **और** आदि चीजें हैं।	संदूक में कागज-पत्र आदि चीजें हैं।

अनुपयुक्त

186	आपने अच्छा किया **जब** मुझे सूचना दे दी।	आपने अच्छा किया **कि** मुझे सूचना दे दी।
187	जल्दी चलें **कि** मास्टर जी अप्रसन्न हो जाएँगे।	जल्दी चलें **नहीं तो** मास्टर जी अप्रसन्न हो जाएँगे।
188	मजदूर खूब काम करता है **क्योंकि** उसे अच्छा पैसा मिले।	मजदूर खूब काम करता है **ताकि** उसे अच्छा पैसा मिले।
189	कृष्ण स्कूल नहीं गया **कि** उसके पिता बीमार थे।	कृष्ण स्कूल नहीं गया **क्योंकि** उसके पिता बीमार थे।

(ख) क्रिया-विशेषण

अनावश्यक

190	उसके बाद वे वापस **लौट आए**।	उसके बाद वे वापस **आ गए**।
191	लड़के केवल चाय **ही** ले सकते हैं।	लड़के केवल चाय ले सकते हैं।
192	वह अत्यंत **ही** सुंदर है।	वह अत्यंत सुंदर है।
193	इधर **आजकल** यह देखने में आया।	इधर यह देखने में आया।
194	ये लोग **परस्पर** एक-दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।	ये लोग एक-दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।
195	सारे देश **भर** में रोष प्रकट किया गया।	सारे देश में रोष प्रकट किया गया।

अनुपयुक्त

196	देश में **सर्वस्व** शांति है।	देश में **सर्वत्र** शांति है।
197	**एकमात्र** दो उपाय हैं।	**मात्र** दो उपाय हैं।
198	वह **उदास** चेहरे से चल दी।	वह **उदास होकर** चल दी।
199	वह **बड़ा आगे** बढ़ गया।	वह **बहुत आगे** बढ़ गया।
200	उसने उसकी सभी **कहीं** निंदा करनी शुरू कर दी।	उसने उसकी **हर जगह** निंदा करनी शुरू कर दी।
201	मुझे वह रात **उसकी छत के नीचे** काटनी पड़ी।	मुझे वह रात उनके यहाँ काटनी पड़ी।

10. कुछ मिले-जुले वाक्य

202	मेरा भाई प्रोफेसर **लगा हुआ** है।	मेरे भाई साहब प्रोफेसर हैं।
203	मेरी पुत्री **गाता** है।	मेरी पुत्री **गाती** है।
204	द्वार पर कोई लड़कियाँ **खड़ा** है।	द्वार पर कुछ लड़कियाँ **खड़ी** हैं।
205	सभी **बच्चा** व्यस्त हैं।	सभी **बच्चे** व्यस्त हैं।
206	हमारे दोनों **चाचे** आए।	हमारे दोनों **चाचा** आए।
207	नंदिनी **अच्छा** लड़की है।	नंदिनी **अच्छी** लड़की है।
208	**मेरे से** दूध नहीं पिया जाता।	**मुझ से** दूध नहीं पिया जाता।
209	मंत्री ड्राइवर **को** कार चलवाता है।	मंत्री ड्राइवर **से** कार चलवाता है।
210	**एक फूल की माला** लाओ।	**फूलों की एक माला** लाओ।
211	वह छात्रा **बेलायक** है।	वह छात्रा **नालायक** है।
212	**लकड़ीहारा** वन को गया।	**लकड़हारा** वन को गया।
213	**पाठ पढ़ते** अच्छे लड़के हैं।	**अच्छे लड़के** पाठ पढ़ते हैं।
214	तुम और मैं घूमने **जाऊँगा**।	तुम और मैं घूमने **जाएँगे**।
215	फूलों का गुच्छा मोहक **थे**।	फूलों का गुच्छा मोहक **था**।
216	शकुंतला **चंद्रमुख** थी।	**शकंतुला चंद्रमुखी** थी।
217	**मैं** फल खाए।	**मैंने** फल खाए।
218	**हमारे** नाव किनारे से **लगा**।	**हमारी** नाव किनारे से **लगी**।
219	मैं **आपको** मिलकर प्रसन्न हुआ।	मैं **आपसे** मिलकर प्रसन्न हुआ।
220	मैं तुम्हारा गाना नहीं सुनना **माँगता**।	मैं तुम्हारा गाना नहीं सुनना **चाहता**।

221	सब लड़का रो **पड़ा।**	सब लड़के रो **पड़े।**
222	वह अभी तक नहीं पहुँचा, **उसने** इसी गाड़ी से जाना था।	वह अभी तक नहीं पहुँचा, **उसे** इसी गाड़ी से जाना था।
223	हमने **इसको** विचार किया।	हमने **इस पर** विचार किया।
224	आपकी बात सुनकर मैं **विस्मय** हूँ।	आपकी बात सुनकर मैं **विस्मित** हूँ।
225	आपको अभी बहुत बातें **सीखना** है।	आपको अभी बहुत बातें **सीखनी** हैं।
226	जब भी आप **आओ**, मुझसे मिलो।	जब भी आप **आएँ**, मुझसे मिलें।
227	**लड़का** ने पत्र लिखा।	**लड़के** ने पत्र लिखा।
228	बालक छत **में** खेल रहे हैं।	बालक छत **पर** खेल रहे हैं।
229	मोहन ने रोटी **खाया।**	मोहन ने रोटी **खाई।**
230	**केवल यहाँ** दो पुस्तकें हैं।	**यहाँ केवल** दो पुस्तकें हैं।
231	**एक गीतों की किताब** ला दीजिए।	**गीतों की एक किताब** ला दीजिए।
232	**मैंने भी** आपके साथ चलना है।	**मुझे भी** आपके साथ चलना है।
233	यह तो **मेरा** पुस्तक है।	यह तो **मेरी** पुस्तक है।
234	मैंने **तेरे को** पुस्तक दी थी।	मैंने **तुम्हें** पुस्तक दी थी।
235	तुम्हारा थैला बहुत **भारा** है।	तुम्हारा थैला बहुत **भारी** है।
236	संभवत: वह आज **अवश्य** आएगा।	संभवत: वह आज आएगा।
237	कल तुमने घर में क्या **करा** था ?	कल तुमने घर में क्या **किया** था ?
238	मैं तुम्हारी **सौंदर्यता** पर मुग्ध हूँ।	मैं तुम्हारी **सुंदरता** पर मुग्ध हूँ।
239	**मैंने** भी आपके साथ चलना है।	**मुझे** भी आपके साथ चलना है।
240	वह लंबी और गोरी-**चिट्टा** नवयुवती है।	वह लंबी और गोरी-**चिट्टी** नवयुवती है।
241	राम, लक्ष्मण और सीता वन को **गई।**	राम, लक्ष्मण और सीता वन को **गए।**
242	राम ने एक बर्फी और दो रसगुल्ले **खिलाई।**	राम ने एक बर्फी और दो रसगुल्ले **खिलाए।**
243	मुझसे भात नहीं खाई **जाती।**	मुझसे भात नहीं खाया **जाता।**
244	लड़कियों से नाचा नहीं **जाती।**	लड़कियों से नाचा नहीं **जाता।**
245	**काले,** नीले और पीले कलियाँ अच्छी लगती हैं।	**काली,** नीली और पीली कलियाँ अच्छी लगती हैं।
246	संजय ने पुस्तकें **पढ़ी।**	संजय ने पुस्तकें **पढ़ीं।**
247	अध्यापिकाओं ने छात्राओं को पढ़ाती थीं।	अध्यापिकाएँ छात्राओं को पढ़ाती थीं।
248	खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।	गाजर काटकर खरगोश को खिलाओ।
249	उत्तम चरित्र-निर्माण हमारे लक्ष्य होने चाहिए।	उत्तम चरित्र-निर्माण हमारा लक्ष्य होना चाहिए।
250	सुरेश को, योगेश को और मोहन को कल मैंने साथ-साथ देखा था।	मैंने सुरेश, योगेश और मोहन को कल साथ-साथ देखा था।

कुछ अन्य उदाहरण

न 1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

1. मेरे को आपका यहाँ आना बिल्कुल पसंद नहीं।
2. आपने मुझे केवल मात्र दो पुस्तकें दी थीं।
3. गर्म गाय का दूध स्वास्थ्यवर्धक है।
4. शरीर पर कई अंग होते हैं।

उत्तर :

1. मुझे आपका यहाँ आना बिल्कुल पसंद नहीं।
2. आपने मुझे केवल दो पुस्तकें दी थीं।
3. गाय का गर्म दूध स्वास्थ्यवर्धक है।
4. शरीर के कई अंग होते हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

1. मेरा पिता इस विद्यालय में प्रधानाचार्य हैं।
2. मैंने अभी विद्यालय जाना है।
3. एक गीतों की किताब ला दीजिए।
4. इतना मीठा चाय मैं नहीं पी सकता।

उत्तर :

1. मेरे पिता इस विद्यालय के प्रधानाचार्य हैं।
2. मुझे अभी विद्यालय जाना है।
3. गीतों की एक किताब ला दीजिए।
4. इतनी मीठी चाय नहीं पी सकता।

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

1. मैंने यह काम नहीं करा।
2. तुम्हारी पुस्तक कब आएगा?
3. तुमने जीत हासिल की, वाह।
4. अनेकों वीरों ने देश की खातिर प्राण गंवा दिए।
5. कबीरदास एक भारत के प्रसिद्ध संत थे।
6. आपका यह बात हमें अच्छा नहीं लगता।
7. विद्यालय की सब छात्र पास हो गईं।
8. कृपया हमारी बात सुनने की कृपा करें।
9. यह पुस्तक किसका है?
10. हम उसके पास से आ रहा हूँ।
11. हत्यारों को मृत्युदंड का सजा मिलनी चाहिए।
12. महात्मा गाँधी भारत के राष्ट्रपिता था।

उत्तर :

1. मैंने यह काम नहीं किया।
2. तुम्हारी पुस्तक कब आएगी?
3. वाह ! तुमने जीत हासिल की।
4. अनेक वीरों ने देश की खातिर प्राण गँवा दिए।
5. कबीरदास भारत के एक प्रसिद्ध संत थे।
6. आपकी यह बात हमें अच्छी नहीं लगती।
7. विद्यालय के सब छात्र पास हो गए।
8. हमारी बात सुनने की कृपा करें। ***अथवा*** कृपया हमारी बात सुनें।
9. यह पुस्तक किसकी है?
10. मैं उसके पास से आ रहा हूँ।
11. हत्यारों को मृत्युदंड मिलना चाहिए।
12. महात्मा गाँधी भारत के राष्ट्रपिता थे।

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

1. मजदूर दिन भर काम करती है।
2. पुस्तक मेज में रखी है।
3. तुमने यह क्या करा छि:।
4. आज धन कमाने के पीछे लोग अंधी हो गई है।
5. वह व्यक्ति कहाँ रहता है?
6. उसके मन में दयालुता नहीं है।
7. तुम्हारा पिताजी कल आने वाली है।
8. मेरे तो यहाँ अनेकों लोग परिचित हैं।
9. आजकल दोस्त सच्चे बहुत कम मिलते हैं।
10. छोटा उम्र में उसका मौत हो गया।
11. वह बेवकूफ आदमी है।
12. हमने तो तुम्हें मना करा था।

उत्तर :

1. मजदूर दिन भर काम करता है।
2. पुस्तक मेज़ पर रखी है।
3. छि: तुमने यह क्या किया?
4. आज धन कमाने के पीछे लोग अंधे हो गए हैं।
5. वह कहाँ रहता है ?
6. उसके मन में दया नहीं है।
7. तुम्हारे पिताजी कल आने वाले हैं।
8. मेरे तो यहाँ अनेक लोग परिचित हैं।
9. आजकल सच्चे दोस्त बहुत कम मिलते हैं।
10. छोटी उम्र में उसकी मौत हो गई।
11. वह बेवकूफ है।
12. हमने तो तुम्हें म-.. किया था।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

1. महेश को काटकर फल खिलाओ।
2. मेरे को उनकी बात पसंद नहीं आई।
3. रावणवध के दिन अनेकों लोगों ने रामलीला देखी।
4. क्या आप पढ़ लिए हैं ?
5. तेरे को प्रधानाचार्य ने बुलाया है।
6. क्या आप चारों वेदों का नाम जानते हैं?
7. मैं गर्म दूध को पी रहा हूँ।
8. एक फूलों की माला ले आइए।
9. यहाँ पर कल एक लड़की और लड़का बैठा था।
10. तुम मेरे मित्र हो, मैं आपको गलत राय नहीं दे सकता
11. केवल मात्र महिलाओं के लिए आरक्षित है।
12. तुम तुम्हारी पुस्तक पढ़ो।

उत्तर :

1. फल काटकर महेश को खिलाओ।
2. मुझे उनकी बात पसंद नहीं आई।
3. रावणवध के दिन अनेक लोगों ने रामलीला देखी।
4. क्या आपने पढ़ लिया है?
5. तुम्हें प्रधानाचार्य ने बुलाया है।
6. क्या आप चारों वेदों के नाम जानते हैं ?
7. मैं गर्म दूध पी रहा हूँ।
8. फूलों की एक माला ले आइए।
9. कल यहाँ एक लड़का और लड़की बैठे थे।

10. तुम मेरे मित्र हो, मैं तुम्हें गलत राय नहीं दे सकता।
11. केवल महिलाओं के लिए आरक्षित है।
12. तुम अपनी पुस्तक पढ़ो।

श्न 6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

1. देखते-देखते उसका प्राण निकल गया।
2. कंस बड़ा दुर्जन व्यक्ति था।
3. वह छत पर से गिर गया।
4. उसके पास केवल मात्र दो गाड़ियाँ हैं।
5. वह उसकी सौंदर्यता पर मुग्ध हो गया।
6. रेखा हँस डाली।
7. इस पुस्तकालय में लगभग एक लाख के करीब पुस्तकें हैं।
8. लड़के ने भोजन करके स्कूल गया।
9. पाँच आदमी के लिए भोजन बना है।
10. वह ग्यारहवें कक्षा में पढ़ती है।
11. वे अभी-अभी भोजन किए हैं।
12. आठ बजने को पाँच मिनट हैं।

उत्तर :

1. देखते-देखते उसके प्राण निकल गए।
2. कंस बड़ा दुर्जन था।
3. वह छत से गिर गया।
4. उसके पास केवल दो गाड़ियाँ हैं।
5. वह उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गया।
6. रेखा हँस पड़ी।
7. इस पुस्तकालय में लगभग एक लाख पुस्तकें हैं।
8. लड़का भोजन करके स्कूल गया।
9. पाँच आदमियों के लिए भोजन बना है।
10. वह ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती है।
11. उन्होंने अभी-अभी भोजन किया है।
12. आठ बजने में पाँच मिनट हैं।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

म्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

1. यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है।
2. तेरे को पिताजी ने बुलाया है।
3. मेरे को अभी विद्यालय जाना है।
4. इसका नाम मेरे को मालूम नहीं।
5. कमीज तो सिल गया, लेकिन बटन नहीं लगा है।
6. बच्चे को काटकर सेब खिलाओ।
7. मैं चाय को पी रहा हूँ।
8. अनेकों लोगों ने दूरदर्शन पर मैच देखा।
9. मोहन ने हरी मिर्च खा लिया।
10. आप क्या चाहता है?
11. वह पागल हाथी हो गया है।
12. मैं मेरी पुस्तक पढ़ रहा हूँ।
13. उसने नेताजी के गले में एक गेंदे की माला डाली।
14. रमेश ने ही आग लगाया था।
15. मेरा बड़ा भाई विदेश में रहता है।
16. गुरु जी पढ़ा रहा है।
17. तुम किधर जाता हो?
18. डॉक्टर गुप्ता आते ही विनोद का बुखार उतार दिए।
19. समाचार पत्रों में चोरी, ठगी, तस्करी का समाचार भरा रहता है।
20. आप ही बताओ, क्या निराश हुआ जाए?
21. एक गर्म कप चाय का पीते ही फुर्ती आ जाएगी।
22. पिताजी हमें बड़ी नेक सलाह दिये थे।
23. आज प्रातः से ही हिमपात हो रही है।
24. तुम्हीं बताइए अब कौन वहाँ जाएगा?
25. एक सेब रोगी को काटकर खिला दो।
26. क्या सभी पत्रों में तुम्हारा हस्ताक्षर हो गया?
27. अध्यापक के कहने पर सभी विद्यार्थी पुस्तक खोल लिए।
28. लड़के ने पुस्तक पढ़ा।
29. मैं, रमेश और तुम टेनिस खेलेंगे।
30. मेरा बेटा और बेटी मेरठ गई हैं।
31. यहाँ लोग ईमानदार और उदार रहते हैं।
32. पत्र लड़की ने पढ़ी।
33. मैं, सीता और तुम नाटक देखने चलेंगी।
34. तुम तुम्हारा काम करो।
35. आप तो नहीं आए परंतु तुम्हारा भाई आ गया था।
36. वह जहाँ भी गया उधर का ही हो लिया।
37. वे भी मिठाई खाए हैं।
38. मुझे अनेकों ने सलाह दी।
39. गत माह वह अपने घर ही रहेगा।
40. मेरे से दूध नहीं पिया जाता।
41. मनुष्य को नष्ट किया जा सकता है किंतु पराजित नहीं किया जा सकता।
42. मैं पुष्प और पक्षी को प्रकृति की सबसे सुंदरतम उपहार मानता हूँ।
43. नदी की इस ओर पनघट है तो उसकी दूसरी ओर मरघट है।
44. वह कौन से मकान में रहता है ?
45. राम, मैं और तुम नाटक देखने जाएँगे।
46. इंदिरा गाँधी भारत का प्रधानमंत्री थी।
47. कल आपके घर मैं या मेरी बहन आएँगे।
48. साथियो ! आराम नहीं करो।

सी.बी.एस.ई. की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए वाक्य-शुद्धि संबंधी प्रश्न

(CBSE 2009, Delhi)

प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(Set-I)

(*i*) मेरे को आज यहीं रहना है।

(*ii*) उधर को मत देखो ।

(*iii*) हम खा लिए हैं।

(*iv*) एक गर्म गिलास दूध पीकर सो जाओ ।

उत्तर : (*i*) मुझे आज यहीं रहना है।

(*ii*) उधर मत देखो।

(*iii*) हमने खा लिया है।

(*iv*) एक गिलास गर्म दूध पीकर सो जाओ।

(Set-II)

(क) उस जंगल में एक पागल हाथी हो गया है।

(ख) हमने यह काम करना है।

(ग) आप हमारे पूज्यनीय हैं।

(घ) आप हमारे घर कब आ रहे हो ?

उत्तर : (क) उस जंगल में एक हाथी पागल हो गया है।

(ख) हमें यह काम करना है।

(ग) आप हमारे लिए पूजनीय हैं।

(घ) आप हमारे घर कब आ रहे हैं?

(Set-III)

(क) दुर्घटना में सात महिला और एक बालक की मृत्यु हो गई।

(ख) फूलों का लाल गुलदस्ता ले आओ।

(ग) क्या आप समाचार सुने हैं?

(घ) उसका घर में चोरी हो गया है।

उत्तर : (क) दुर्घटना में सात महिलाओं और एक बालक की मृत्यु हो गई।

(ख) लाल फूलों का गुलदस्ता ले आओ।

(ग) क्या आपने समाचार सुने हैं ?

(घ) उसके घर में चोरी हो गई है।

(CBSE 2009, Outside)

(Set-I)

प्रश्न निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) आज पूरे शहर में आतंक फैली है।

(ख) नाव से डूबते समय केवट पानी में कूद पड़ा।

(ग) मेरे को आज विद्यालय नहीं जाना है।

(घ) एक गर्म कप चाय ले आओ।

उत्तर : (क) आज पूरे शहर में आतंक फैला है।

(ख) नाव के डूबते समय केवट पानी में कूद पड़ा।

(ग) मुझे आज विद्यालय नहीं जाना है।

(घ) एक कप गर्म चाय ले आओ।

(Set-II)

(क) हमारे लक्ष्य ज्ञान प्राप्ति होनी चाहिए ।

(ख) कमरे में पिताजी और माताजी बैठी हैं।

(ग) उस बगीचे में सुगंधित फूलें हैं।

(घ) ऐसे सज्जन व्यक्ति कहाँ मिलेंगे।

उत्तर : (क) हमारा लक्ष्य ज्ञान-प्राप्ति होना चाहिए।

(ख) कमरे में पिताजी और माताजी बैठे हैं।

(ग) उस बगीचे में सुगंधित फूल हैं।

(घ) ऐसे सज्जन कहाँ मिलेंगे।

(Set-III)

(क) उस दुकान में ताजा गाय का दूध मिलता है।

(ख) नेताजी के गले में एक गुलाब की माला पहनाई गई।

(ग) वो लोग दिल्ली में नहीं रहते हैं।

(घ) दुर्जन व्यक्ति का साथ छोड़ दो।

उत्तर : (क) उस दुकान में गाय का ताजा दूध मिलता है।

(ख) नेताजी के गले में गुलाब की एक माला पहनाई गई।

(ग) वे लोग दिल्ली में नहीं रहते हैं।

(घ) दुर्जन का साथ छोड़ दो।

(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)

(Set I)

प्रश्न : निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए :

(*i*) एक-दूसरा की सहायता करो ।

(*ii*) इस पैन का मूल्य केवल दस रुपए मात्र है।

(*iii*) वहाँ मुफ्त आँखों का आपरेशन हो रहा है।

(*iv*) पिताजी ने हस्ताक्षर कर दिया।

उत्तर :

(*i*) एक-दूसरे की सहायता करो ।

(*ii*) इस पैन का मूल्य केवल दस रुपए है।

(*iii*) वहाँ आँखों का मुफ्त ऑपरेशन हो रहा है।

(*iv*) पिताजी ने हस्ताक्षर कर दिए।

(Set II)

(i) मैं मेरा काम कर रहा हूँ।
(ii) सब सकुशल पूर्वक घर पहुँच गए।
(iii) भाई को बनाकर पतंग दो ।
(iv) क्या तुमने हस्ताक्षर किया ?

उत्तर :

(i) मैं अपना काम कर रहा हूँ।
(ii) सब सकुशल घर पहुँच गए।
(iii) पतंग बनाकर भाई को दो ।
(iv) क्या तुमने हस्ताक्षर किए ?

(Set III)

(i) तुम्हारे लिए पत्र कौन ने भेजा है ?
(ii) सधन्यवाद सहित यह भेंट भेज रही हूँ।
(iii) मैं ताजे बाज़ार से फल लाया हूँ।
(iv) माँ और पिताजी बाजार गई हैं।

उत्तर :

(i) तुम्हारे लिए पत्र किसने भेजा है?
(ii) धन्यवाद सहित यह भेंट भेज रही हूँ।
(iii) मैं बाजार से ताजे फल लाया हूँ।
(iv) माँ और पिताजी बाजार गए हैं।

☞ *अभ्यासार्थ* (Practice)

1. वाक्य-रचना की अशुद्धियों को किन तीन वर्गों में विभाजित किया गया है ?
(संकेत : 1. अन्विति संबंधी, 2. पदक्रम संबंधी, 3. वाच्य संबंधी)
2. पदक्रम से संबंधित कोई दो नियम लिखिए और प्रत्येक का एक-एक उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।
[**संकेत** : दो नियम—
(i) कर्ता पहले क्रिया बाद में आती है। जैसे—राम पढ़ता है।
(ii) कर्म पद कर्ता और क्रिया के बीच में आता है। जैसे—वह पुस्तक पढ़ता है।]
3. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :**
(क) मनुष्य को नष्ट किया जा सकता है किंतु पराजित नहीं किया जा सकता।
(ख) मैं पुष्प और पक्षी को प्रकृति की सबसे सुंदरतम उपहार मानता हूँ।
(ग) नदी की इस ओर पनघट है तो उसकी दूसरी ओर मरघट है।
(घ) वह कौन से मकान में रहता है ?
(ङ) राम, मैं और तुम नाटक देखने जाएँगे।
(च) इंदिरा गाँधी भारत का प्रधानमंत्री थी।
(छ) कल आपके घर मैं या मेरी बहन आएँगे।
(ज) साथियो ! आराम नहीं करो।
(**संकेत** : (क) मनुष्य को पराजित किया जा सकता है किंतु नष्ट नहीं किया जा सकता।
(ख) मैं पुष्प और पक्षी को प्रकृति की सुंदरतम वस्तु मानता हूँ।
(ग) नदी के इस ओर पनघट है तो दूसरी ओर मरघट है।
(घ) वह किस मकान में रहता है ?
(ङ) तुम, राम और मैं नाटक देखने जाएँगे।
(च) इंदिरा गाँधी भारत की प्रधानमंत्री थीं।
(छ) कल आपके घर मैं या मेरी बहन आएगी।
(ज) साथियो ! आराम मत करो।)
4. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :**
(अ) प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'हिमालय' से .... है।
(ब) उस भयानक दृश्य को देखकर .... तो प्राण .... ।
(स) गिरिराज हिमालय भारत .... उत्तर दिशा में है।
(द) ठहरिए, इसके आगे मत .... ।
(**संकेत** : *(अ) उद्धृत, (ब) मरें, सूख गए, (स) की, (द) जाना।*)

C.B.S.E. की दसवीं कक्षा हिंदी (बी-कोर्स) की परीक्षाओं में पूछे गए वाक्य-शुद्धि के प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(क) मेरे को आपका यहाँ आना बिल्कुल पसंद नहीं।
(ख) आपने मुझे केवल मात्र दो पुस्तकें दी थीं।
(ग) गर्म गाय का दूध स्वास्थ्यवर्धक है।
(घ) शरीर पर कई अंग होते हैं।

संकेत :

(क) मुझे आपका यहाँ आना बिल्कुल पसंद नहीं।
(ख) आपने मुझे केवल दो पुस्तकें दी थीं।
(ग) गाय का गर्म दूध स्वास्थ्यवर्धक है।
(घ) शरीर के कई अंग होते हैं।

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) मेरा पिता इस विद्यालय में प्रधानाचार्य हैं।
(ख) मैंने अभी विद्यालय जाना है।
(ग) एक गीतों की किताब ला दीजिए।
(घ) इतना मीठा चाय मैं नहीं पी सकता।

संकेत :

(क) मेरे पिता इस विद्यालय के प्रधानाचार्य हैं।
(ख) मुझे अभी विद्यालय जाना है।
(ग) गीतों की एक किताब ला दीजिए।
(घ) मैं इतनी मीठी चाय नहीं पी सकता।

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) मैंने यह काम नहीं करा।
(ख) तुम्हारी पुस्तक कब आएगा?
(ग) तुमने जीत हासिल की, वाह।
(घ) अनेकों वीरों ने देश की खातिर प्राण गँवा दिए।

संकेत :

(क) मैंने यह काम नहीं किया।
(ख) तुम्हारी पुस्तक कब आएगी?
(ग) वाह ! तुमने जीत हासिल की।
(घ) अनेक वीरों ने देश की खातिर प्राण गँवा दिए।

4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) कबीरदास एक भारत के प्रसिद्ध संत थे।
(ख) आपका यह बात हमें अच्छा नहीं लगता।
(ग) विद्यालय की सब छात्र पास हो गईं।
(घ) कृपया हमारी वात सुनने की कृपा करें।

संकेत :

(क) कबीरदास भारत के एक प्रसिद्ध संत थे।
(ख) आपकी यह वात हमें अच्छी नहीं लगती।
(ग) विद्यालय के सब छात्र पास हो गए।
(घ) हमारी बात सुनने की कृपा करें।
अथवा कृपया हमारी बात सुनें।

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) यह पुस्तक किसका है।
(ख) हम उसके पास से आ रहा हूँ।
(ग) हत्यारों को मृत्युदंड का सजा मिलनी चाहिए।
(घ) महात्मा गाँधी भारत की राष्ट्रपिता थी।

संकेत :

(क) यह पुस्तक किसकी है?
(ख) मैं उसके पास से आ रहा हूँ।
(ग) हत्यारों को मृत्युदंड मिलना चाहिए।
(घ) महात्मा गाँधी भारत के राष्ट्रपिता थे।

6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) मजदूर दिन भर काम करती है।
(ख) पुस्तक मेज में रखा है।
(ग) तुमने यह क्या करा छिः।
(घ) आज धन कमाने के पीछे लोग अंधी हो गई है।

संकेत :

(क) मजदूर दिन भर काम करता है।
(ख) पुस्तक मेज पर रखी है।
(ग) छिः तुमने यह क्या किया?
(घ) आज धन कमाने के पीछे लोग अंधे हो गए हैं।

7. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) वह लोग कहाँ रहता है?
(ख) उसके मन में दयालुता नहीं है।
(ग) तुम्हारा पिताजी कल आने वाली है।
(घ) मेरे तो यहाँ अनेकों लोग परिचित हैं।

संकेत :

(क) वह कहाँ रहता है ?
(ख) उसके मन में दया नहीं है।
(ग) तुम्हारे पिताजी कल आने वाले हैं।
(घ) मेरे तो यहाँ अनेक लोग परिचित हैं।

8. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) आजकल दोस्त सच्चे बहुत कम मिलते हैं।
(ख) छोटा उम्र में उसका मौत हो गया।
(ग) वह बेवकूफ आदमी है।
(घ) हमने तो तुम्हें मना करा था।

संकेत :

(क) आजकल सच्चे दोस्त बहुत कम मिलते हैं।
(ख) छोटी उम्र में उसकी मौत हो गई।
(ग) वह बेवकूफ है।
(घ) हमने तो तुम्हें मना किया था।

9. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) महेश को काटकर फल खिलाओ।
(ख) मेरे को उनकी बात पसंद नहीं आई।
(ग) रावणवध के दिन अनेकों लोगों ने रामलीला देखी।
(घ) क्या आप पढ़ लिए हैं ?

संकेत :

(क) फल काटकर महेश को खिलाओ।
(ख) मुझे उनकी बात पसंद नहीं आई।
(ग) रावणवध के दिन अनेक लोगों ने रामलीला देखी।
(घ) क्या आपने पढ़ लिया है?

10. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) तेरे को प्रधानाचार्य ने बुलाया है।
(ख) क्या आप चारों वेदों का नाम जानते हैं?
(ग) मैं गर्म दूध को पी रहा हूँ।
(घ) एक फूलों की माला ले आइए।

संकेत :

(क) तुम्हें प्रधानाचार्य ने बुलाया है।
(ख) क्या आप चारों वेदों के नाम जानते हैं?
(ग) मैं गर्म दूध पी रहा हूँ।
(घ) फूलों की एक माला ले आइए।

11. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) यहाँ पर कल एक लड़की और लड़का बैठा था।
(ख) तुम मेरे मित्र हो, मैं आपको गलत राय नहीं दे सकता।
(ग) केवल मात्र महिलाओं के लिए आरक्षित है।
(घ) तुम तुम्हारी पुस्तक पढ़ो।

संकेत :

(क) कल यहाँ एक लड़का और लड़की बैठे थे।
(ख) तुम मेरे मित्र हो, मैं तुम्हें गलत राय नहीं दे सकता।
(ग) केवल महिलाओं के लिए आरक्षित है।
(घ) तुम अपनी पुस्तक पढ़ो।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) देखते-देखते उसका प्राण निकल गया।
(ख) कंस बड़ा दुर्जन व्यक्ति था।
(ग) वह छत पर से गिर गया।
(घ) उसके पास केवल मात्र दो गाड़ियाँ हैं।

संकेत :

(क) देखते-देखते उसके प्राण निकल गए।
(ख) कंस बड़ा दुर्जन था।
(ग) वह छत से गिर गया।
(घ) उसके पास केवल दो गाड़ियाँ हैं।

13. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) वह उसकी सौंदर्यता पर मुग्ध हो गया।
(ख) रेखा हँस डाली।
(ग) इस पुस्तकालय में लगभग एक लाख के करीब पुस्तकें हैं।
(घ) लड़के ने भोजन करके स्कूल गया।

संकेत :

(क) वह उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गया।
(ख) रेखा हँस पड़ी।
(ग) इस पुस्तकालय में लगभग एक लाख पुस्तकें हैं।
(घ) लड़का भोजन करके स्कूल गया।

14. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) पाँच आदमी के लिए भोजन बना है।
(ख) वह ग्यारहवें कक्षा में पढ़ती है।
(ग) वे अभी-अभी भोजन किए हैं।
(घ) आठ बजने को पाँच मिनट हैं।

संकेत :

(क) पाँच आदमियों के लिए भोजन बना है।
(ख) वह ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती है।
(ग) उन्होंने अभी-अभी भोजन किया है।
(घ) आठ बजने में पाँच मिनट हैं।

नवीं कक्षा हेतु बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. कौन-सा वाक्य शुद्ध है ?

(क) यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है।
(ख) यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
(ग) यहाँ गाय का दूध शुद्ध मिलता है।

2. कौन-सा वाक्य शुद्ध है ?

(क) मुझे चाय का एक पैकिट चाहिए।
(ख) मुझे एक चाय का पैकिट चाहिए।
(ग) चाय का पैकिट एक मुझे चाहिए।

उत्तर : 1. (ख), 2. (क)।

विराम-चिह्न

(Punctuation)

अध्याय 17

हम बातचीत के समय बीच-बीच में दूसरों को अपनी बात समझाने के लिए या किसी कथन पर बल देने के लिए रुक हैं। इससे कथन का आशय स्पष्ट करने में सहायता मिलती है।

> ☞ *भाषा के लिखित रूप में भी रुकने अथवा विराम के लिए कुछ संकेत चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।*

इन चिह्नों के प्रयोग से भाषा की अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है और वहीं कथन प्रभावपूर्ण बन जाता है। उच्चारण की सुविधा की दृष्टि से भी विराम-चिह्न आवश्यक हैं। इनका प्रयोग बलाघात और अनुतान में भी सहायता करता है।

निम्नलिखित वाक्यों में विराम-चिह्न की स्थिति बदलने पर अर्थ-परिवर्तन पर ध्यान दीजिए :

रोको, मत जाने दो।

रोको मत, जाने दो।

हिंदी के प्रमुख विराम-चिह्न

1. पूर्ण विराम *(Full Stop)*	।
2. अर्ध विराम -*(Semi Colon)*	;
3. अल्प विराम *(Comma)*	,
4. प्रश्नवाचक चिह्न *(Question Mark)*	?
5. विस्मयवाचक चिह्न *(Sign of Exclamation)*	!
6. योजक या विभाजक *(Hyphen)*	-
7. निर्देशक (डैश) *(Dash)*	–
8. उद्धरण चिह्न *(Inverted Comma)*	"......"
9. विवरण चिह्न *(Sign of following)*	:-
10. कोष्ठक *(Bracket)*	( )
11. हंसपद/त्रुटिपूरक *(Sign of Leftout)*	^
12. लाघव चिह्न *(Sign of Abbreviation)*	०

आइए, अब इनके सही प्रयोग के बारे में जानें :

1. पूर्ण विराम *(Full Stop)* **(।)** : इस चिह्न का प्रयोग सरल, मिश्र और संयुक्त सभी प्रकार के वाक्यों के अंत (*प्रश्नवाचक और विस्मयवाचक वाक्यों को छोड़कर*) किया जाता है; जैसे–

1. राकेश स्कूल जाता है।
2. मेरा दृढ़ मत है कि आतंकवाद शीघ्र समाप्त होगा।
3. प्रातःकाल होता है और लोगों की चहल-पहल शुरू हो जाती है।

☞ अप्रत्यक्ष प्रश्न के अंत में भी पूर्ण विराम लगाते हैं; जैसे–

1. आपने बताया नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं।
2. तुम्हें क्या बताऊँ कि मैं क्या चाहता हूँ।

☞ हिंदी में दोहा, सोरठा, चौपाई आदि छंदों के पहले चरण के अंत में एक पूर्ण विराम (।) तथा दूसरे चरण के अंत में पूर्ण विराम (।।) लगाते हैं। जैसे—

निज दुख गिरि सम रज कर जाना ।
मित्रक दुख रज मेरु समाना ।।

❖ अब कहीं-कहीं पूर्णविराम के लिए अंग्रेजी का चिह्न (.) का प्रयोग होने लगा है, जो हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है।

2. अर्ध विराम *(Semi Colon)* (;) : पूर्ण विराम से कम देर ठहरने के लिए अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है। सका प्रयोग कुछ सीमित स्थितियों में ही होता है—

- समानाधिकरण उपवाक्यों के बीच में,
  गाँधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन का शंख बजाया; सत्य और अहिंसा के शस्त्र दिए; देश को स्वतंत्र कराया।
- मिश्र और संयुक्त वाक्य में विपरीत अर्थ प्रकट करने या विरोधपूर्ण कथन करने वाले उपवाक्यों के बीच में—
  जो उसे गालियाँ देते हैं; वह उन्हें अपना प्यार देता है।
- कारणवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य के बीच में—
  तुम्हारे दबाव से एक व्यक्ति भी नहीं टूट सकता; क्योंकि तुम्हारा पक्ष असत्य पर टिका है।
- विभिन्न उपवाक्यों पर अधिक जोर देने के लिए—
  निरंतर बढ़ते रहना ही जीवन है; आलस्य मौत है।
- किसी वाक्य में उदाहरणसूचक 'जैसे' से पहले—
  वाक्य के अंत में पूर्ण विराम लगाते हैं; जैसे— वह पुस्तक पढ़ता है।

3. अल्पविराम *(Comma)* (,) : अल्पविराम का प्रयोग वाक्य के मध्य में अर्ध विराम से कम समय रुकने के लिए कया जाता है। इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

- समानपदी शब्दों को अलग करने के लिए—
  ब्रजेश अपनी संपत्ति, भूमि, प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा सब खो बैठा।
- 'हाँ' या 'नहीं' के पश्चात्—
  हाँ, पढ़ सकता हूँ । नहीं, यह काम नहीं हो सकता।
- वाक्यांश/उपवाक्य को अलग करने के लिए—
  विज्ञान का पाठ्यक्रम बदल जाने से, मैं समझता हूँ, परीक्षा परिणाम गिरेगा।
- उपाधियों को अलग करने के लिए—एम.ए., पी-एच.डी., डी.लिट्.।
- उद्धरण से पूर्व—राम ने कहा, "मैं सदा सत्य बोलूँगा।"
- एक ही शब्द/शब्दांश की पुनरावृत्ति होने पर—दौड़ो, दौड़ो, आग लग गई।
- महीने की तारीख और सन् को अलग करने के लिए—15 अगस्त, 1947
- शब्द-युग्मों में अलगाव दिखाने के लिए—पाप और पुण्य, सच और झूठ, रात और दिन
- समानाधिकरण शब्द/पदबंध उपवाक्य के बीच में—
  1. रविमोहन के पुत्र, सचिन पधारे हैं। 2. सवेरा हुआ, सूरज निकला, पक्षी चहचहाने लगे।
- जब विशेषण उपवाक्य मध्य में आ जाए—
  वह लड़का, जिसे कल पढ़ाया था, आज परीक्षा देने गया है।
- संबोधन शब्द के बाद, यदि संबोधन शब्द मध्य में हो तो उसके पूर्व तथा बाद में—
  1. भाइयो, मैं आपका कल्याण चाहता हूँ । 2. यहाँ आओ, रमा, मेरी बात सुनो।
- पत्र में अभिवादन और समापन में—पूज्य पिताजी, भवदीय,

4. प्रश्नवाचक चिह्न *(Sign of Interrogation)* (?) : प्रश्नसूचक चिह्न मुख्य रूप से निम्नलिखित स्थानों पर आता है-

- प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में — तुम कब आए ?
- संदेह या अनिश्चय प्रकट करने के लिए संदेह स्थल पर कोष्ठक में — क्या कहा, वह निष्ठावान (?) है।

जब एक ही वाक्य में कई प्रश्नवाचक उपवाक्य हों, तब प्रत्येक उपवाक्य के अंत में अल्प विराम का प्रयोग कर सबसे अंत में प्रश्नसूचक चिह्न लगाते हैं; जैसे–

मैं क्या करता हूँ, मैं कहाँ जाता हूँ, मैं क्या खाता हूँ, यह सब जानने के लिए आप उत्सुक क्यों हैं ?

5. विस्मयवाचक चिह्न *(Sign of Exclamation)* (!) : विस्मय (*आश्चर्य*), घृणा, प्रसन्नता आदि मनोभावों को प्रकट करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ–

1. अरे ! वह चली गई । (*आश्चर्य*)
2. अहा ! वह मिठाई लाया है। (*प्रसन्नता*)
3. हाय ! बेचारा मारा गया। (*शोक*)
4. छि: छि: ! कितने गंदे स्थान पर रहते हो । (घृणा)

▸▸ प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में मनोवेग प्रदर्शित करने के लिए–

बोलते क्यों नहीं, क्या गूँगे हो!

▸▸ संबोधन के लिए –

1. रवि! इधर आओ ।　　भाइयो और बहनो ! मेरी बात सुनो।

6. योजक या विभाजक *(Hyphen)* (-) : इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

▸▸ तत्पुरुष तथा द्वंद्व समास के पदों के मध्य–

प्रयोग-स्थल, राज-पुत्र, सुख-दुख, दाल-रोटी।

▸▸ तुलनावाचक सा, सी, से के पहले–

चाँद-सा मुख, हाथी-सी चाल, तुम-से बच्चे।

▸▸ मध्य के अर्थ में – अंगद-रावण संवाद, राम-[illegible]

▸▸ द्वित्व और शब्द-युग्म में–

कभी-कभी, घट-घट, रग-रग, उठते-गिरते, खाते-पीते

▸▸ अक्षरों में लिखी जाने वाली संख्याओं के बीच में – एक-चौथाई, एक-तिहाई

7. निर्देशक *(Dash)* (—) : यह चिह्न योजक से बड़ा होता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :

▸▸ किसी के वाक्यों को उद्धृत करने के पूर्व–

अध्यापक — भारत के राष्ट्रपति कौन हैं?

▸▸ कहना, लिखना, बोलना, बताना आदि क्रियाओं के बाद–

रजनी ने कहा — मैं कल जाऊँगी।

▸▸ निम्नलिखित/निम्नांकित शब्द के बाद–

उनके विवरण निम्नलिखित हैं–

▸▸ संवादों/वार्तालापों में नाम के बाद–

नीलम—क्या मुझे यहाँ रहना पड़ेगा?

गोविंद—क्यों, यहाँ रहने में क्या बुराई है?

▸▸ निक्षिप्त पदों के आगे-पीछे–

छायावाद के प्रवर्तक–श्री जयशंकर प्रसाद–की कविताओं ने धूम मचाई।

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी–भगत सिंह–को कौन नहीं जानता।

▸▸ किसी शब्द/वाक्यांश की व्याख्या करने के लिए–

परिश्रम से ही सब कुछ प्राप्त हो सकता है–धन-दौलत, सुख, यश, प्रतिष्ठा आदि।

8. अवतरण या उद्धरण चिह्न *(Inverted Commas)* (".....") : इनका प्रयोग निम्नलिखित स्थलों पर होता है :

▸▸ किसी व्यक्ति के कथन को मूल रूप में उद्धृत करने के लिए–

महात्मा गाँधी ने कहा, "सत्य ही ईश्वर है।"

▸▸ किसी पुस्तक या लिखित सामग्री से कुछ अंश मूल रूप में उद्धृत करते समय–

अर्थशास्त्र कहता है, "आवश्यकता आविष्कार की जननी है।"

- किसी व्यक्ति, उपनाम, पुस्तक का नाम भी इकहरे उद्धरण चिह्न में लिखा जाता है—
    1. 'साकेत' एक महाकाव्य है ।
    2. रामधारी सिंह 'दिनकर' ओज और वीरता के कवि हैं।
    3. ये पंक्तियाँ निराला जी की कविता 'भिक्षुक' से अवतरित हैं।

. **विवरण चिह्न** *(Sign of Following)* (:-) : वाक्यांशों के विषय में कुछ सूचना, निर्देश आदि देने के लिए विवरण का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

संज्ञा के मुख्य भेद तीन हैं :-

व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक।

10. **कोष्ठक** *(Bracket)* ([ ]) : कोष्ठक के भीतर मुख्यतः उस सामग्री को रखते हैं जो मुख्य वाक्य का अंग होते हुए पृथक् की जा सकती है। जैसे—

– संज्ञा के तीनों भेदों (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक) के उदाहरण दीजिए।

– कालिदास (संस्कृत के महाकवि) को सभी जानते हैं।

- किसी कठिन शब्द को स्पष्ट करने के लिए, जैसे—
    लौकिक (सांसारिक) सुखों के पीछे मत भागो।
- क्रमसूचक अंकों/अक्षरों के साथ—
    (क), (ख), (10), (12)

11. **हंसपद** *(Sign of Leftout)* (‸) : लिखते समय जब कोई अंश शेष रह जाता है तो इस चिह्न को लगाकर उस शब्द ऊपर लिख दिया जाता है; जैसे —

मैंने ‸(तुमसे) पहले ‸(ही) कह दिया था।

12. **संक्षेपसूचक/लाघव चिह्न** *(Sign of Abbreviation)* (॰) : किसी बड़े अंश का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए इस का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

अर्जित अवकाश — अ॰अ॰	डॉक्टर — डॉ॰	बी॰ए॰	
कृपया पृष्ठ उलटिए — कृ॰पृ॰उ॰	संवत् — सं॰	एम॰ए॰	मेम्बर पार्लियामेंट — एम॰पी॰

स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- कथन को स्पष्ट करने के लिए लेखन में विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
- विराम-चिह्न अर्थ की स्थिति बदल सकते हैं।
- प्रमुख विराम-चिह्न हैं : पूर्ण विराम (।), अर्ध विराम (;), अल्प विराम (,), प्रश्नवाचक चिह्न (?), विस्मयवाचक चिह्न (!), योजक (-), निर्देशक (–), उद्धरण चिह्न ("...."), विवरण चिह्न (:-) आदि।
- पूर्ण विराम वाक्य के अंत में लगता है।
- प्रश्न पूछने वाले वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगता है।
- कम ठहरने के लिए अर्ध विराम (;) और उससे कम ठहरने के लिए अल्प विराम चिह्न (,) का प्रयोग होता है।
- आश्चर्य प्रकट करने के लिए विस्मयसूचक चिह्न (!) का प्रयोग होता है।
- किसी कथन को उद्धृत करते समय अवतरण/उद्धरण चिह्न ("....") का प्रयोग करते हैं।

अभ्यासार्थ (Practice)

विराम-चिह्न किसे कहते हैं?

विराम-चिह्नों का प्रयोग क्यों किया जाता है? कोई दो कारण दीजिए।

अल्पविराम और अर्ध विराम में क्या अंतर है? दोनों का एक-एक उदाहरण दीजिए।

4. **निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम-चिह्न लगाइए :**
(क) अमिताभ ने कहा अनुराग संघर्ष ही जीवन है तू हार जीत से क्यों घबराता है
(संकेत : *अमिताभ ने कहा — "अनुराग, संघर्ष ही जीवन है; तू हार-जीत से क्यों घबराता है?"*)
(ख) निम्नलिखित की परिभाषा दीजिए संज्ञा सर्वनाम विशेषण क्रिया
(संकेत : *निम्नलिखित की परिभाषा दीजिए — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया*)
(ग) बेटा सुबह जल्दी उठा करो नहा धोकर पढ़ा करो तभी तुम बी ए में अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हो
(संकेत : *बेटा ! सुबह जल्दी उठा करो; नहा-धोकर पढ़ा करो; तभी तुम बी.ए. में अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हो।*)

5. **नीचे दिए गए विराम-चिह्नों के साथ उपयुक्त नामों का मिलान कीजिए :**

–	अल्पविराम
( )	संक्षेपसूचक
,	कोष्ठक
०	योजक
;	प्रश्नसूचक
?	अर्ध विराम

C.B.S.E. की दसवीं कक्षा हिंदी (बी-कोर्स) की परीक्षाओं में पूछे गए विराम चिह्न संबंधी प्रश्न

1. **निम्नलिखित में सही विराम-चिह्न लगाइए :**
हे देवियो जागो क्या तुम्हें नहीं लगता कि महिलाओं के जागने आत्मनिर्भर बनने और देश के निर्माण में उनके भाग का अवसर आ गया है
(**संकेत :** *हे देवियो ! जागो। क्या तुम्हें नहीं लगता कि महिलाओं के जागने, आत्मनिर्भर बनने और देश के निमा उनके भाग लेने का अवसर आ गया है?*)
2. वाह तुमने तो कमाल कर दिया क्या मित्र के साथ ऐसा विश्वासघात ऐसा अन्याय तुम्हें शोभा देता है
(**संकेत :** *वाह ! तुमने तो कमाल कर दिया। क्या मित्र के साथ ऐसा विश्वासघात, ऐसा अन्याय, तुम्हें शोभा देता*
3. हिमालय जैसे अटल अडिग भारतवासियों का मस्तक किसी के सामने झुकने वाला नहीं है कोई ऐसा उनसे लोह वाला हो तो बताओ
(**संकेत :** *हिमालय जैसे अटल-अडिग भारतवासियों का मस्तक किसी के सामने झुकने वाला नहीं है; कोई उनसे लोहा लेने वाला, हो तो बताओ।*)
4. हमारे व्यवहार से ही जब कोई मित्र और शत्रु हो सकता है तो क्यों न अपने सद्व्यवहार से अपने पराए सभ अपना मित्र बनाएँ सही कहा न
(**संकेत :** *हमारे व्यवहार से ही जब कोई मित्र और शत्रु हो सकता है; तो क्यों न अपने सद्व्यवहार से अपने सभी को, अपना मित्र बनाएँ। सही कहा न?*)
5. हे राम यह अन्याय यह अत्याचार और यह पाखंड अब और नहीं सहा जाता
(**संकेत :** *हे राम ! यह अन्याय, यह अत्याचार और यह पाखंड; अब और नहीं सहा जाता।*)
6. जीवन में हम क्या पाना चाहते हैं सुख समृद्धि और शांति किंतु बिना कठिन प्रयत्न के इन्हें हम नहीं पा सकेंगे
(**संकेत :** *जीवन में क्या पाना चाहते हैं ? सुख-समृद्धि और शांति, किंतु बिना कठिन प्रयत्न के इन्हें हम नहीं पा स*

नवीं कक्षा हेतु कारक संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. **निम्नलिखित वाक्यों में से किस वाक्य में उचित विराम चिह्न प्रयुक्त किए गए हैं :**
(क) अध्यापक ने कक्षा में 'अपना घर' लघुकथा पढ़ाई।
(ख) अध्यापक ने कक्षा में 'अपना घर' लघुकथा पढ़ाई।
(ग) अध्यापक ने कक्षा में अपना घर लघुकथा पढ़ाई।
(घ) अध्यापन ने, कक्षा में आकर अपना घर लघुकथा पढ़ाई।

2. **':–' विराम चिह्न का नाम है।**
(क) त्रुतिपूरक चिह्न (ख) लाघव चिह्न
(ग) विवरण चिह्न (घ) उद्धहरण चिह्न

3. **किस वाक्य में सही विराम-चिह्न लगे हैं ?**
(क) राम बोला, तुम कहाँ चले।
(ख) राम बोला, तुम कहाँ चले ?
(ग) राम बोला तुम कहाँ चले।

उत्तर : 1. (ख), 2. (ग), 3. (ख)

अध्याय 18

अलंकार

(Figure of Speech)

● अनुप्रास ● यमक ● श्लेष ● उपमा ● रूपक ● उत्प्रेक्षा ● मानवीकरण

'अलंकार' शब्द का अर्थ है—आभूषण या गहना। जिस प्रकार आभूषण धारण करने से स्त्री के सौंदर्य में वृद्धि हो जाती है, ी प्रकार काव्य में अलंकारों के प्रयोग से उसकी सुंदरता में चमत्कार उत्पन्न हो जाता है।

साहित्य में शब्द और अर्थ दोनों का महत्त्व होता है। कहीं शब्द-प्रयोग से तथा कहीं अर्थ के चमत्कार से काव्य में सौंदर्य वृद्धि हो जाती है। इसी आधार पर अलंकार के दो मुख्य भेद माने जाते हैं :

(1) शब्दालंकार, (2) अर्थालंकार

(1) शब्दालंकार : काव्य में जहाँ किसी विशिष्ट शब्द-प्रयोग के कारण सौंदर्य में वृद्धि होती है अथवा चमत्कार आ ता है, वहाँ शब्दालंकार माना जाता है। शब्द को बदलकर उसके स्थान पर उसका पर्याय रख देने पर वह चमत्कार समाप्त हो ता है। जैसे —

तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए

(यहाँ 'तरनि' का पर्यायवाची 'सूर्य' और तनूजा की जगह 'पुत्री' रख देने पर — सूर्य पुत्री तट तमाल ··· सारा चमत्कार ता रहता है।)

(2) अर्थालंकार : काव्य में जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार हो रहा हो, वहाँ अर्थालंकार माना जाता है। जैसे–

मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला

प्रमुख शब्दालंकार

1. अनुप्रास : जिस रचना में व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक या अधिक बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। जैसे–

- **कल कानन कुंडल** मोरपखा उर पै **बनमाल विराजति** है। *('क' व्यंजन वर्ण की आवृत्ति) ('व' वर्ण की आवृत्ति)*
- **कालिंदी कूल कदंब की** डारन *('क' वर्ण की आवृत्ति)*
- **मुदित महीपति मंदिर** आए *('म' वर्ण की आवृत्ति)*
- **तट तमाल तरुवर** बहु छाए *('त' वर्ण की आवृत्ति)*
- विमल **वाणी** ने **वीणा** ली *('व' वर्ण की आवृत्ति)*

2. यमक : "वहै शब्द पुनि-पुनि परै, अर्थ भिन्न ही भिन्न" — अर्थात् जब कविता में एक ही शब्द दो या दो से अधिक र आए और हर बार उसका अर्थ भिन्न हो तो वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण :

- 'काली **घटा** का घमंड **घटा**।' *(घटा = वर्षा काल की मेघमाला, घटा = कम हुआ)*
- 'कहे कवि **बेनी बेनी** ब्याल की चुराई लीनी' *(बेनी = कवि का नाम, बेनी = चोटी)*
- **कनक कनक** तै सौ गुनी मादकता अधिकाय ।
  वा खाए बौराए जग या पाए बौराए ॥ *(कनक = सोना, कनक = धतूरा)*
- माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।
  कर का **मनका** डारि दै, **मन का** मनका फेर ॥ *(मनका = माला का दाना, मन का = हृदय का)*
- **'तीन बेर** खाती थी वे **तीन बेर** खाती थी' *(तीन बेर = तीन वार, तीन बेर = तीन बेर के फल)*

3. श्लेष : श्लेष का अर्थ है—चिपकना। जहाँ शब्द तो एक ही बार प्रयुक्त किया जाए, पर उसके एक से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :

1. मधुबन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी **कलियाँ**।
   ['कली' शब्द का प्रयोग एक बार है, पर अर्थ दो हैं :
   (क) खिलने से पूर्व फूल की दशा (ख) यौवन पूर्व की अवस्था, बच्चियाँ]
2. जो रहीम गति दीप की कुल कपूत की सोय ।
   बारे उजियारो करै, **बढ़े** अंधेरो होय ॥
   (यहाँ 'बारे' और 'बढ़े' दोनों शब्दों में श्लेष अलंकार है।)
   'बारे' — (क) बचपन, (ख) जलाने पर
   'बढ़े' — (क) बड़ा होने पर, (ख) बुझने पर
3. मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय ।
   जा तन की झाँई परै, स्याम **हरित** दुति होय ॥
   ('हरित' शब्द के तीन अर्थ हैं — हर लेना, हर्षित होना, हरे रंग का होना)
4. चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न सनेह गंभीर ।
   को घटि ये **वृषभानुजा**, वे **हलधर** के बीर ॥
   (वृषभानु + जा = राधा, वृषभ + अनुजा = बैल की बहन गाय
   हलधर = बलराम, हलधर = हल के धारण करने वाले)

प्रमुख अर्थालंकार

4. उपमा : जहाँ एक वस्तु या प्राणी की तुलना अत्यंत समानता के कारण किसी अन्य प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार माना जाता है। जैसे– 'चाँद-सा सुंदर मुख'।

उपमा के चार अंग (तत्त्व) हैं :

(क) उपमेय : वह वस्तु या प्राणी, जिसकी उपमा दी जाए अथवा काव्य में जिसका वर्णन अपेक्षित हो, उपमेय कहलाता है।
(ऊपर के उदाहरण में 'मुख' उपमेय है।)

(ख) उपमान : वह प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी, जिसके साथ उपमेय की तुलना की जाए, उपमान कहलाता है।
(ऊपर के उदाहरण में 'चाँद' उपमान है।)

(ग) साधारण धर्म : उपमेय तथा उपमान में पाया जाने वाला परस्पर समान गुण साधारण धर्म कहलाता है।
(ऊपर के उदाहरण में 'सुंदर' साधारण धर्म है।)

(घ) वाचक शब्द : जिस शब्द विशेष से समानता या उपमा का बोध होता है, उसे वाचक शब्द कहते हैं। जैसा, **सम, सी, सा, सरिस** आदि शब्द वाचक शब्द कहलाते हैं।

❖ जहाँ ये चारों तत्त्व विद्यमान हों वहाँ **पूर्णोपमा** अलंकार होता है।

नीचे दिए गए उदाहरण में चारों तत्त्वों की स्थिति समझो :

पीपर-पात	सरिस	मन	डोला।
उपमान	वाचक शब्द	उपमेय	साधारण धर्म

अन्य उदाहरण :

– हाय ! **फूल-सी कोमल बच्ची**, हुई राख की ढेरी थी।
– यह देखिए, **अरविंद-से शिशुवृंद** कैसे सो रहे
– मखमल के झूल पड़े **हाथी-सा टीला**।
– उषा सुनहले तीर बरसती
  जय-लक्ष्मी-सी उदित हुई।

– मुख **बाल रवि सम** लाल होकर **ज्वाल-सा बोधित** हुआ।
– तब तो बहता **समय शिला-सा** जम जाएगा।

❖ एक या अधिक तत्त्वों के अभाव में **लुप्तोपमा** अलंकार माना जाता है।

5. रूपक : जहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय में उपमान का अभेद आरोप कर दिया जाए, वहाँ रूपक लंकार होता है। इसमें वाचक शब्द का प्रयोग नहीं होता।

उदाहरण :

– मैया मैं तो **चंद्र खिलौना** लैहों।
  [यहाँ चंद्रमा *(उपमेय)* में खिलौना *(उपमान)* का आरोप होने से रूपक अलंकार है।]
– **चरण-कमल** बंदौ हरि राई।
  [यहाँ चरणों *(उपमेय)* में कमल *(उपमान)* का आरोप हुआ है।]
– आए **महंत बसंत**
– सब प्राणियों के **मत्तमनोमयूर** अहा नचा रहा।
– पायो जी मैंने **राम-रतन** धन पायो।
– **शशि-मुख** पर घूँघट डाले।
– **राम नाम मनि-दीप** धरु, **जीह देहरी** द्वार।
– एक राम घनस्याम हित **चातक तुलसीदास** ।।

6. उत्प्रेक्षा : जहाँ समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसके वाचक शब्द हैं — **मनु, मानो, जनु, ज्यों, जानो** आदि।

उदाहरण :

– कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए ।
  हिम के कणों से पूर्ण **मानो** हो गए पंकज नए।।
  [यहाँ उत्तरा के अश्रुपूर्ण नेत्रों *(उपमेय)* में ओस युक्त जल-कण युक्त पंकज *(उपमान)* की संभावना की गई है।]
– सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात ।
  मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात ।।
  (यहाँ श्रीकृष्ण के सुंदर स्याम शरीर में नीलमणि पर्वत की तथा पीतांबर में प्रातःकालीन धूप की संभावना प्रकट की गई है।)

अन्य उदाहरण :

– ले चला साथ मैं तुझे कनक,
  ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण-झनक।
– पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों की नोंकों से।
  मानो झूम रहे हों तरु भी, मंद पवन के झोंकों से।
– बहुत काली सिल
  जरा-से लाल केसर-से
  कि जैसे धुल गई हो।

7. मानवीकरण *(Personification)* **:** जड़ अथवा अचेतन तत्त्वों पर मानवीय भावों, संबंधों और क्रिया-कलापों का आरोप करके उन्हें मनुष्य की तरह व्यवहार करते हुए दिखाना मानवीकरण अलंकार होता है। जैसे–

1. दिवसावसान का समय
   मेघमय आसमान से उतर रही है
   वह संध्या सुंदरी परी-सी
   धीरे-धीरे-धीरे।

2. बीती विभावरी जाग री,
   अंबर पनघट में डुबो रही,
   तारा-घट ऊषा नागरी।

(इस कविता में ऊषा को अंबर रूपी पनघट पर गागर भरती हुई स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है, अतः यहाँ मानवीकरण है।)

- श्रद्धानत तरुओं की अंजलि से झरे पात,

  कोंपल के मुँदे नयन थर-थर-थर पुलकगात।

- खड़-खड़ करताल बजा रही बिसुध हवा।

- इस सोते संसार बीच,

  जगकर सजकर रजनी बाले।

- उषा सुनहरे तीर बरसती जय लक्ष्मी सी उदित हुई,

- मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

8. अतिशयोक्ति : जहाँ किसी वस्तु, पदार्थ, प्राणी (*उपमेय*) का वर्णन लोक-सीमा से अधिक बढ़ाकर प्रस्तुत किया ... वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। जैसे--

- आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।

  राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।

(यहाँ सोचने की क्रिया होने से पहले ही घोड़े का नदी पार पहुँचना लोक-सीमा का अतिक्रमण है, अतः अतिश... अलंकार है।)

- हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।

  लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।

(यहाँ हनुमान की पूँछ में आग लगने से पूर्व ही लंका के जल जाने का उल्लेख होने के कारण अतिशयोक्ति अलंकार

अन्य उदाहरण :

- देख लो साकेत नगरी है यही।

  स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।

9. अन्योक्ति : जहाँ उपमान (*अप्रस्तुत*) के वर्णन के माध्यम से उपमेय (*प्रस्तुत*) का वर्णन किया जाए, वहाँ अन... अलंकार होता है। इसे अप्रस्तुत प्रशंसा भी कहा जाता है।

उदाहरण :

- जिन दिन देखे वे कुसम, गई सु बीति बहार।

  अब, अलि रही गुलाब में, अपत कँटीली डार।

[यहाँ 'अलि' के माध्यम से एक ऐसे गुणी व्यक्ति की ओर संकेत किया गया है, जिसका आश्रयदाता पत्रहीन (*धनहीन*) के गुलाब जैसा रह गया है।]

- स्वारथ सुकृत न स्रम वृथा, देखि विहंग विचारि।

  बाज पराए पानि परि, तू पच्छी नु न मारि ।।

[यहाँ प्रत्यक्ष अर्थ तो यह है कि हे बाज ! तू शिकारी के हाथों में पड़कर अपनी जाति के पक्षियों को क्यों मार र... किंतु वास्तव में यहाँ संकेतार्थ में 'बाज' राजा जयसिंह है जो औरंगजेब (*शिकारी*) के कहने में आकर अपने पक्षियों (*राजाओं*) का वध करने पर तुल गया था। उसे चेताया गया है कि वह ऐसा न करे।]

- नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।

  अली कली ही सौं बिंध्यो, आगे कौन हवाल।।

[यहाँ अली भँवरा अर्थात् राजा जयसिंह है और 'कली' है उसकी अल्पवयस्का रानी। राजा की कामलोलुपता पर व्यंग...

नोट : दसवीं कक्षा हिंदी (अ) के पाठ्यक्रम में उपर्युक्त अलंकार ही निर्धारित हैं। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित अलंक... जानकारी प्राप्त कर लेना उपयोगी रहेगा :

10. पुनरुक्ति प्रकाश : काव्य में जहाँ एक शब्द की क्रमशः आवृत्ति तो हो, पर अर्थभिन्नता न हो, वहाँ पुनरुक्ति अलंकार का प्रयोग माना जाता है। जैसे--

- सूरज है जग का **बुझा-बुझा**
- **खड़-खड़** करताल बजा
- **डाल-डाल** अलि-पिक के गायन का बँधा समाँ।

❀ अंतर समझें

यमक और श्लेष अलंकार में

यमक अलंकार में एक शब्द अनेक बार प्रयुक्त होकर भिन्न-भिन्न अर्थ देता है।
श्लेष अलंकार में शब्द एक ही वार आता है पर उसके अर्थ अनेक निकलते हैं।

उदाहरण : – काली **घटा** का घमंड **घटा** (दोनों 'घटा' का अर्थ भिन्न है।) – (यमक)
– भिखारिन को देख **पट** देती बार-बार
('पट' शब्द एक वार, पर अर्थ दो (वस्त्र, किवाड़) – (श्लेष)

उपमा और रूपक में

उपमा अलंकार में वाचक शब्द का प्रयोग होता है जवकि रूपक अलंकार में नहीं होता।
उपमा : चाँद-सा मुख **रूपक :** चंद्र मुख

पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त अलंकार

1. सूरदास

1. अपरस रहत **सनेह तगा** तैं
प्रीति-नदी में पाऊँ न बोरयौ। (रूपक अलंकार)
2. गुरू चींटी ज्यौं पागी (उपमा अलंकार)
3. पुरइन पात रहत
ज्यौं जल (अनुप्रास अलंकार)
4. मन की मन ही माँझ (अनुप्रास अलंकार)
5. संदेसनि सुनि-सुनि,
बिरहिनि बिरह रही (अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)
6. सुनि-सुनि (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)
7. हमारैं हरि हारिल की लकरी (अनुप्रास, रूपक अलंकार)
8. सुनत जोग लागत ज्यौं ऐसी
ज्यौं करुई ककरी (उपमा, अनुप्रास अलंकार)
9. कान्ह-कान्ह जकरी (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)
10. बढ़ी बुद्धि जानी जो (अनुप्रास अलंकार)
11. हरि हैं राजनीति पढ़ि आए (वक्रोक्ति अलंकार)
12. समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए (वक्रोक्ति)

2. तुलसीदास

13. आयेसु काह कहिअ किन (अनुप्रास अलंकार)
14. सहसबाहु सम सो, सकल संसार (अनुप्रास अलंकार)
15. बिलगाउ बिहाइ (अनुप्रास अलंकार)
16. हसि हमरे, काज करिअ कत (अनुप्रास अलंकार)
17. भुजवल भूमि भूप (अनुप्रास अलंकार)
18. छुअत टूट रघुपतिहि न दोसू (अतिशयोक्ति अलंकार)
19. मुनीस महाभट मानी (अनुप्रास अलंकार)

20. कछु कहा, कछु कहहु, कोटि कुलिस (अनुप्रास अलंकार)
21. सुनि, सरोष, गिरा गंभीर (अनुप्रास अलंकार)
22. पुनि-पुनि (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)
23. कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा (उपमा अलंकार)
24. कुटिल, कालबस, कालकवलु,
करनी करहि, कहि कायर, बहु बसी (अनुप्रास अलंकार)
25. भानुवंस राकेस कलंकू (रूपक अलंकार)
26. तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा (उत्प्रेक्षा अलंकार)
27. असमय खाँड न ऊखमय (रूपक, अतिशयोक्ति अलंकार)
28. कौसिक कहा, केवल कौसिक
काटि कुठार कठोरे (अनुप्रास अलंकार)
29. लखन उतर आहुति सरिस (उपमा अलंकार)
30. जल-सम बचन (उपमा अलंकार)
31. व्याज वड़ बाढ़ा, सव सभा (अनुप्रास अलंकार)
32. मात पितहि उरिन भए नीके, ... थैली खोली (वक्रोकित अलंकार)

3. देव

33. कटि किंकनि, हिय हुलसै (अनुप्रास अलंकार)
34. मुखचंद जुन्हाई (रूपक अलंकार)
35. जग-मंदिर-दीपक (रूपक अलंकार)
36. मदन महीप जू को बालक बसंत (रूपक, अनुप्रास अलंकार)
37. केकी कीर, हलावै हुलसावै (अनुप्रास अलंकार)
38. कंजकली नायिका लतान सिर सारी है (मानवीकरण, अनुप्रास अलंकार)
39. दूध को सो फेन फैल्यो आँगन फरसबंद
तारा-सी तरुनि तामैं ठाढ़ी झिलमिलाती होति (मानवीकरण अलंकार)
40. फटिक सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधा मंदिर (उत्प्रेक्षा अलंकार)
41. उदधि दधि (सभंग यमक, रूपक अलंकार)
42. सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधा,
फेन फैल्यौ
मिल्यौ मल्लिका को मकरंद } (अनुप्रास अलंकार)

4. जयशंकर प्रसाद

43. कर कह जाता कौन कहानी (अनुप्रास अलंकार)
44. मधुप गुनगुनाकर कह जाता (मन रूपी भँवरा) (रूपक अलंकार)
45. 'गागर रीती' (जीवन रूपी खाली गागर) (रूपक अलंकार)
46. अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं (मानवीकरण अलंकार)
47. आलिंगन में **आते-आते** (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)
48. थकी सोई है मेरी मौन व्यथा (मानवीकरण, अनुप्रास अलंकार)

5. निराला

. घेर-घेर घोर गगन (अनुप्रास अलंकार)
. घेर-घेर, ललित-ललित (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)
. विकल-विकल उन्मन (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)
. घर-घर, पर-पर (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)
. कहीं साँस लेते हो
घर-घर भर देते हो
उड़ने को नभ में
पर-पर कर देते हो (मानवीकरण अलंकार)

6. नागार्जुन

. छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल उठे जलजात
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लगे पड़े शेफालिका के फूल (उत्प्रेक्षा अलंकार)
. तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान (अतिशयोक्ति अलंकार)
. पारस पाकर, धूलि-धूसर (अनुप्रास अलंकार)
. लाख-लाख, कोटि-कोटि (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)

7. गिरिजाकुमार माथुर

. दुःख दूना
सुरंग सुधियाँ सुहावनी
होगा दुख दूना (अनुप्रास अलंकार)

8. ऋतुराज

. लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो। (उत्प्रेक्षा अलंकार)
. वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के (उपमा अलंकार)
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना (विरोधाभास अलंकार)

9. मंगलेश डबराल

जटिल तानों के जंगल में (रूपक अलंकार)
आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ (उपमा अलंकार)
कभी-कभी (पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार)

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का नाम लिखिए :
   1. रघुपति राघव राजा राम
   2. काली घटा का घमंड घटा
   3. जीवन की जटिल समस्या,
      है बढ़ी जटा-सी कैसी ?
   4. चरण-कमल बंदौ हरि काई
   5. उषा सुनहले तीर बरसती
      जय लक्ष्मी-सी उदित हुई
2. उपमा अथवा उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

☞ स्मरणीय बिन्दु (Points to Remember)

- काव्य में अलंकारों के प्रयोग से सौंदर्य एवं चमत्कार आ जाता है।
- अलंकारों के दो मुख्य भेद हैं : शब्दालंकार और अर्थालंकार ।
- 'अनुप्रास' में व्यंजन वर्ण की आवृत्ति होती है।
- 'यमक' में शब्द जितनी बार आता है, उतने ही अर्थ निकलते हैं।
- 'श्लेष' में शब्द एक ही बार आता है, पर अर्थ अनेक निकलते हैं।
- उपमा और रूपक में उपमान-उपमेय का मेल होता है। ये समानता दर्शाते हैं।
- 'उत्प्रेक्षा' में संभावना प्रकट की जाती है।
- 'अतिशयोक्ति' में बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाता है।
- 'अन्योक्ति' किसी की ओर अप्रत्यक्ष संकेत होता है।
- 'मानवीकरण' में बेजान पर चेतना का आरोप किया जाता है।

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए अलंकार संबंधी प्रश्न

(CBSE 2009, Delhi) *(Set I)*

प्रश्न : निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों को पहचान कर उनके नाम लिखिए :

(*i*) बालकु बोलि बधौं नहिं तोही।
(*ii*) नयन तेरे मीन-से हैं।
(*iii*) पाट-पाट शोभा-श्री पट नहीं रही है।

उत्तर : (*i*) अनुप्रास अलंकार।
(*ii*) उपमा अलंकार।
(*iii*) यमक तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

(Set II)

निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़कर इनमें प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए :

(*i*) सत्य सनेह शील सुख सागर।
(*ii*) पहेली-सा जीवन है व्यस्त।
(*iii*) प्रीति नदी में पाँउ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।

उत्तर : (*i*) अनुप्रास अलंकार।
(*ii*) उपमा अलंकार।
(*iii*) रूपक अलंकार।

(Set III)

निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़कर इनमें अलंकारों के नाम लिखिए :

(*i*) मधुर मृदु मंजुल मुख मुसकान।
(*ii*) भानुबंस राकेस कलंकू।
(*iii*) तारा-सी तरुनि तामें ठाड़ी झिलमिल होति।

उत्तर : (*i*) अनुप्रास अलंकार।
(*ii*) रूपक अलंकार।
(*iii*) उपमा अलंकार।

(CBSE 2009, Outside)

प्रश्न : निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अ का नामोल्लेख कीजिए : *(Set I,*

(*i*) कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
(*ii*) दुख हैं जीवनतरु के फूल।
(*iii*) सूर समर करनी करहिं।

उत्तर : (*i*) यमक अलंकार।
(*ii*) रूपक अलंकार।
(*iii*) अनुप्रास अलंकार।

प्रश्न : निम्नलिखित पंक्तियों में आए, रेखांकित पदों के अलंकारों के नाम लिखिए : *(Set I, II, III)*

(*i*) सजना है मुझे सजना के लिए । 1

(*ii*) वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी। 1

(*iii*) वाल बिलोकि बहुत में बाँचा ।

उत्तर–(*i*) यमक अलंकार।

(*ii*) उपमा अलंकार।

(*iii*) अनुप्रास अलंकार ।

☞ अभ्यासार्थ (Practice)

1. अलंकार शव्द का अर्थ बताइए।
2. शव्दालंकार से क्या तात्पर्य है?
3. अर्थालंकार किसे कहते हैं?
4. उपमान और उपमेय किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. उपमा तथा रूपक अलंकार में अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. दो शव्दालंकारों तथा दो अर्थालंकारों के नाम बताइए।
7. निम्नलिखित में प्रयुक्त अलंकारों के नाम बताइए :

(1) तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर वहु छाए।

(2) मृदु मंद-मंद मंथर मंथर, लघु तरणि हंस-सी सुंदर

(3) प्रतिभट कटक कटीले केते काटि-काटि

(4) कालिका-सी किलकि कलेऊ देती काल को।

(5) रावनु रथी विरथ रघुवीरा

(6) रहिमन पानी राखिए विन पानी सव सून।
पानी गए न उवरे मोती मानस चून।।

(7) उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर वाल पतंग।
विकसे संत सरोज सव हरषे लोचन भृंग।।

(8) वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा-सी,
वह दीप शिखा-सी शांत भाव में लीन
वह टूटे तरु की टूटी लता-सी दीन,
दलित भारत की विधवा है।

(9) सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात।
मनो नीलमणि शैल पर आतप पर्‌यो प्रभात।।

(10) माली आवत देखकर कलियाँ करें पुकार।
फूले-फूले चुन लिए काल्हि हमारी बार।।

(11) राम नाम-अवलंव विनु, परमारथ की आस।
वरसत वारिद बूँद गहि, चाहत चढ़न अकास।

(12) पच्छी परछीनें ऐसे परे परछीने वीर,
तेरी वरछी ने वर छीने हैं खलन के।

संकेत : (1) अनुप्रास, (2) अनुप्रास, उपमा, (3) अनुप्रास (4) उपमा, अनुप्रास, (5) अनुप्रास, (6) श्लेष, अनुप्रास, (7) रूपक, (8) उपमा, (9) उत्प्रेक्षा, (10) श्लेष, (11) अनुप्रास, (12) यमक।

C.B.S.E. की दसवीं कक्षा हिंदी (अ) की परीक्षाओं में पूछे गए अलंकार संबंधी प्रश्न

1. (क) (*i*) 'उत्प्रेक्षा' अथवा 'श्लेष' अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

[संकेत : उत्प्रेक्षा : कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए ।।

श्लेष : मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ।]

(*ii*) अनुप्रास अथवा अतिशयोक्ति अलंकार का एक-एक उदाहरण दीजिए ।

[संकेत : अनुप्रास : कल कानन कुंडल मोरपखा उर पै बनमाल विराजति है।

अतिशयोक्ति : हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग ।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग ।।]

(*iii*) यमक अथवा रूपक अलंकार का एक-एक उदाहरण दीजिए।

[संकेत : यमक : कहै कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लीनी ।

रूपक : एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास ।]

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों के रेखांकित अंशों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए :

I. (*i*) प्रगति-स्मृति-गति गुंजित कलरव। (**संकेत :** *अनुप्रास*)

(*ii*) वह दीप-शिखा-सी शांत भाव से लीन । (**संकेत :** *उपमा*)

(*iii*) कनक-कनक तै सौ गुनी मादकता अधिकाय । (**संकेत :** *यमक*)

II. (*i*) जीवन-तरु की महिमा न्यारी (संकेत : *रूपक*)
(*ii*) कर का मनका डारि दै मन का मनका फेर । (संकेत : *यमक*)
(*iii*) वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी । (संकेत : *उपमा*)

III. (*i*) फूलों-सा कोमल मन मेरा । (संकेत : *उपमा*)
(*ii*) जब-जब जनक जोश में आए। (संकेत : *अनुप्रास*)
(*iii*) कहते हुए यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए
हिम के कणों से पूर्ण मानों हो गए पंकज नए। (संकेत : *उत्प्रेक्षा*)

2. (क) (*i*) श्लेष अथवा उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।
[संकेत : **श्लेष** – जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोय ।
बारे उजियारो करै, बढ़ै अँधेरो होय ।।
उत्प्रेक्षा – ले चला साथ मैं तुझे कनक,
ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण-झनक ।]

(*ii*) उपमा अथवा अन्योक्ति अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।
[संकेत : **उपमा** – मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला ।
अन्योक्ति – जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सुबीति बहार ।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कँटीली डार।।

(*iii*) यमक अथवा अतिशयोक्ति अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।
(संकेत : **यमक** – रती-रती सोभा सब रती के सरीर की।
अतिशयोक्ति – राणा ने सोचा इस पार ।
तब तक चेतक था उस पार ।]

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों के रेखांकित अंशों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम बताइए :
I. (*i*) कमल कोमल कर में सप्रीत । (संकेत : *अनुप्रास*)
(*ii*) काली घटा का घमंड घटा । (संकेत : यमक और अनुप्रास)
(*iii*) हाथी-सा टीला । (संकेत : *उपमा*)
II. (*i*) मधुर-मधुर मेरे दीपक जल । (संकेत : *अनुप्रास*)
(*ii*) बार-बार कर-कंज बढ़ाकर (संकेत : *रूपक*)
(*iii*) पद्मावति सब सखी बुलाई,
मनु फुलवारि सबै चली आई । (संकेत : *उत्प्रेक्षा*)
III. (*i*) मृदु मंद-मंद मंथर मंथर (संकेत : *अनुप्रास*)
(*ii*) लघु तरणि हंसिनी-सी सुंदर (संकेत : *उपमा*)
(*iii*) नियति नटी के कार्यकलाप (संकेत : *रूपक एवं अनुप्रास*)

3. (क) रूपक अथवा श्लेष अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।
[संकेत : **रूपक** – चरण-कमल बंदौ हरिराई।
श्लेष – मधुबन की छाती को देखो,
सूखी इसकी कितनी कलियाँ।]

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों के रेखांकित अंशों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए :
(*i*) मुख बाल रवि-सम लाल होकर ज्वाल-सा बोधित हुआ। (संकेत : *उपमा*)
(*ii*) ले चला साथ मैं तुझे कनक
ज्यों भिक्षु लेकर स्वर्ण झनक । (संकेत : *उत्प्रेक्षा*)
(*iii*) कालिंदी कूल कदम्ब की डारन। (संकेत : *अनुप्रास*)

4. (क) यमक अथवा उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

[**संकेत : यमक** - काली घटा का घमंड घटा ।
उत्प्रेक्षा - कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।]

(यहाँ उत्तरा के अश्रुपूर्ण नेत्रों (उपमेय) में ओस जल युक्त पंकज (उपमान) की संभावना की गई है।)

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों के रेखांकित अंशों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए :

(i) पीपर पात सरिस मन डोला। (**संकेत :** *उपमा*)
(ii) वन शारदी चंद्रिका-चादर ओढ़े। (**संकेत :** *रूपक*)
(iii) तरनि-तनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाए। (**संकेत :** *अनुप्रास*)

5. (क) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए :

(i) तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा। (**संकेत :** *उपमा*)
(ii) रती-रती सोभा सब रती के सरीर की। (**संकेत :** *यमक*)
(iii) प्रश्न-चिह्नों में उठी हैं भाग्य-सागर की हिलोरें। (**संकेत :** *रूपक*)

(ख) उत्प्रेक्षा अथवा अतिशयोक्ति अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

[**संकेत : उत्प्रेक्षा** - कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।
अतिशयोक्ति - हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।]

6. (क) उपमा अथवा यमक अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

[**संकेत : उपमा** - पीपर पात सरिस मन डोला।
यमक - काली घटा का घमंड घटा।]

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार बताइए :

(i) पानी गए न ऊबरै, मोती मानुस चून।
(**संकेत :** *श्लेष और अनुप्रास*)

(ii) मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहों।
(**संकेत :** *रूपक*)

(iii) आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार ।। (**संकेत : अतिशयोक्ति**)

7. (क) *(i)* श्लेष अथवा यमक अलंकार का उदाहरण दीजिए।
(ii) अतिशयोक्ति अथवा अन्योक्ति अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।
(iii) अतिशयोक्ति अथवा उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

[संकेत : श्लेष अलंकार]

भिखारिन को देख **पट** देत बार-बार (पट = वस्त्र, किवाड़)

मक अलंकार : काली **घटा** का घमंड **घटा।**

तिशयोक्ति अलंकार

हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।

न्योक्ति अलंकार

जिन दिन देखे वे कुसम, गई सु बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में अपत कंटीली डार।।

प्रेक्षा अलंकार

कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।]

अध्याय 19

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(Idioms and Proverbs)

☞ मुहावरे *(Idioms)*

जब किसी शब्द-समूह का सामान्य अर्थ नहीं लिया जाता, बल्कि उसी से मिलता-जुलता अर्थ (*लाक्षणिक अर्थ*) लिया जाता है, तब हम उसे मुहावरा कहते हैं। जैसे—**लोहे के चने चबाना, मुँह में पानी भर आना, नाक कटाना** आदि।

मुहावरे की विशेषताएँ :

1. मुहावरों के रूप में परिवर्तन नहीं होता। जैसे—'**फूलकर कुप्पा होना**' मुहावरे को स्त्री के संबंध में प्रयोग करते समय यह नहीं कहा जाएगा कि '**वह फूलकर कुप्पी हो गई।**'
2. मुहावरा वाक्य का अंग बनकर प्रयुक्त होता है, स्वतंत्र रूप से नहीं।
3. मुहावरे को पर्यायवाची या समानार्थक शब्दों से नहीं बदल सकते। जैसे—'कमर टूटना' के स्थान पर 'कटि टूटना' का प्रयोग नहीं कर सकते।
4. मुहावरे का शब्दार्थ नहीं बल्कि वाच्यार्थ ग्रहण किया जाता है।
5. मुहावरे में क्रिया-पद का होना आवश्यक है ; जैसे—नाक **कटाना**, हाथ **मलना** आदि।
6. मुहावरे का अक्षरशः अनुवाद दूसरी भाषा में नहीं किया जा सकता।

कुछ बहुप्रयुक्त मुहावरे — अर्थ और उनके वाक्य-प्रयोग

अ

1. **अंग-अंग ढीला होना** = *थक जाना।*
   ▶▶ दिन भर कड़ी मेहनत के बाद अब मेरा अंग-अंग ढीला हो गया।
2. **अपना राग अलापना** = *अपनी ही बात पर अड़े रहना।*
   ▶▶ रमेश बड़ा जिद्दी है, हमेशा अपना ही राग अलापता रहता है।
3. **अंगारे उगलना** = *क्रोध में कठोर वचन कहना।*
   ▶▶ गरीब किसान को देखते ही जमींदार अंगारे उगलने लगा।
4. **अंधे की लाठी** = *एकमात्र सहारा।*
   ▶▶ रामू अपनी विधवा माँ की अंधे की लाठी है।
5. **अँगूठा दिखाना** = *साफ इंकार करना।*
   ▶▶ मैंने जब मोहन से अपने रुपए माँगे तो उसने साफ अँगूठा दिखा दिया।
6. **अंत पाना** = *भेद जानना।*
   ▶▶ ईश्वर की महिमा का अंत पाना आसान बात नहीं है।
7. **अक्ल का दुश्मन** = *मूर्ख।*
   ▶▶ रमेश तो पूरी तरह से अक्ल का दुश्मन है, उसे समझाने का कोई फायदा नहीं है।
8. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** = *मूर्खता का काम करना।*
   ▶▶ मैंने तुम्हें क्या लाने को कहा था और तुम क्या ले आए ? कहीं तुम्हारी अक्ल पर पत्थर तो नहीं पड़ गए।
9. **अपना उल्लू सीधा करना** = *अपना काम बनाना।*
   ▶▶ आज के युग में सभी अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।

10. अगर-मगर करना = *टाल-मटोल करना।*
▶▶ अगर-मगर करने से अच्छा है कि साफ इंकार कर दो कि तुम मेरा काम नहीं करोगे।

11. अँधेरे घर का उजाला = *इकलौता पुत्र।*
▶▶ अकेला रमेश ही उस अँधेरे घर का उजाला था।

12. अपना-सा मुँह लेकर रह जाना = *लज्जित होकर चुप रहना।*
▶▶ जब मोहन ने सुरेश का भेद सबके सामने खोल दिया तो वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

13. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना = *अपनी प्रशंसा आप करना।*
▶▶ तुम अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बने घूमते हो, कभी किसी से तुम्हारी प्रशंसा नहीं सुनी।

14. अपने पैरों पर खड़ा होना = *आत्मनिर्भर होना।*
▶▶ कब तक पिता के पैसों के भरोसे रहोगे, अपने पैरों पर खड़े होना सीखो।

15. अपनी खिचड़ी अलग पकाना = *मिलकर काम न करना।*
▶▶ मोहन से मिलकर काम करने की आशा करना व्यर्थ है, वह सदा अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।

आ

16. आँखें दिखाना = *क्रोध से देखना।*
▶▶ कक्षा में छात्रों को शोर मचाता देख अध्यापक उन्हें आँखें दिखाने लगे।

17. आँखें फेरना = *बदल जाना।*
▶▶ अपना काम निकलते ही रमेश ने मुझसे आँखें फेर लीं।

18. आँखों में रात काटना = *रात भर जागते रहना।*
▶▶ बीमार पुत्र की देखभाल के लिए ममता ने सारी रात आँखों में काटी।

19. आपे से बाहर होना = *अधिक क्रोध में बेकाबू होना।*
▶▶ तुम्हें जरा-सी शक्ति क्या मिल गई कि तुम बात-बात पर आपे से बाहर हो जाते हो।

20. आँखों में धूल झोंकना = *धोखा देना।*
▶▶ वह ठग मेरी आँखों में धूल झोंककर मेरा बैग ले गया।

21. आँच न आने देना = *हानि न होने देना।*
▶▶ आप जरा भी चिंता न करें, मैं आप पर आँच भी नहीं आने दूँगा।

22. आकाश से बातें करना = *बहुत ऊँचा होना।*
▶▶ मुंबई की इमारतें आकाश से बातें करती प्रतीत होती हैं।

23. आगे-पीछे फिरना = *चापलूसी करना।*
▶▶ छोटे बच्चे अपने दादा-दादी के आगे-पीछे फिरकर अपनी माँगें मनवा लेते हैं।

24. आँखें पथरा जाना = *देखते-देखते थक जाना।*
▶▶ प्रतीक्षा करते-करते मेरी आँखें पथरा गईं, मगर पुत्र अभी तक नहीं आया।

25. आँखों से गिरना = *आदर घटना।*
▶▶ जब से रामदयाल की करतूतों का पता चला है वह सबकी आँखों से गिर गया।

26. आँसू पीकर रह जाना = *अति शोक में चुप रह जाना।*
▶▶ भरी सभा में अपना अपमान होते देखकर भी द्रौपदी आँसू पीकर रह गई।

27. आकाश-पाताल का अंतर = *बहुत फर्क होना।*
▶▶ उन दोनों भाइयों के व्यवहार में आकाश-पाताल का अंतर है।

28. आकाश-पाताल एक करना = *बहुत परिश्रम करना।*
▶▶ परीक्षा में सफलता पाने के लिए राम ने आकाश-पाताल एक कर दिया।

29. आकाश के तारे तोड़ना = *असंभव कार्य को कर दिखाना।*
▶▶ कर्मवीर हमेशा आकाश के तारे तोड़कर लाने वाली बात करता है।

30. **आटे-दाल का भाव मालूम होना** = *जीवन की वास्तविकता का सामना करना।*
▶▶ विवाह के पश्चात् ही तुम्हें आटे-दाल का भाव मालूम होगा।

31. **आँखें चुराना** = *सामने न आना।*
▶▶ जव से सुरेश की नौकरी छूटी है वह परिचितों से भी आँखें चुराने लगा है।

32. **आग में घी डालना** = *क्रोध को भड़काना।*
▶▶ तुम्हारी बातों ने तो मकान मालिक और किराएदार की लड़ाई में आग में घी डालने का काम किया।

33. **आसमान सिर पर उठाना** = *बहुत शोर करना।*
▶▶ पिता के घर से बाहर निकलते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

34. **आस्तीन का साँप होना** = *मित्र बनकर धोखा देना।*
▶▶ तुम रामलाल से वचकर रहना क्योंकि वह पूरा आस्तीन का साँप है।

35. **आँखों में खटकना** = *अच्छा न लगना।*
▶▶ तुम्हारा साला सदा मेरी आँखों में खटकता रहता है।

इ

36. **इधर-उधर की हाँकना** = *व्यर्थ बोलना।*
▶▶ परीक्षा में फेल हुए पुत्र से जव पिता ने कारण पूछा तो वह इधर-उधर की हाँकने लगा।

37. **ईद का चाँद होना** = *बहुत दिनों बाद दिखाई देना।*
▶▶ अरे मित्र, कहाँ रहते हो ? तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।

38. **ईंट से ईंट बजाना** = *पूर्ण रूप से नष्ट करना।*
▶▶ हमारी सेना ने दुश्मन के बंकरों की ईंट से ईंट वजा दी।

उ

39. **उड़ती चिड़िया पहचानना** = *दूर से मन के भाव जान लेना।*
▶▶ तुम हमसे कुछ नहीं छिपा सकते, हम उड़ती चिड़िया को पहचान लेते हैं।

40. **उल्टी गंगा बहाना** = *नियम विरुद्ध कार्य करना।*
▶▶ दिल्ली से पंजाब को गेहूँ भेजना तो उल्टी गंगा बहाना हुआ।

41. **उन्नीस-बीस होना** = *थोड़ा-सा अंतर होना।*
▶▶ तुम दोनों भाइयों में तो उन्नीस-बीस का ही अंतर है।

42. **उँगली उठाना** = *हानि पहुँचाने की चेष्टा करना।*
▶▶ मेरे रहते तुम पर कोई उँगली नहीं उठा सकता।

ए

43. **एक आँख से देखना** = *भेदभाव न रखकर सबको एक समान समझना।*
▶▶ माता-पिता अपनी सभी संतानों को एक ही आँख से देखते हैं।

44. **एक लाठी से हाँकना** = *अच्छे-बुरे का अंतर न होना।*
▶▶ तुम तो सभी को एक ही लाठी से हाँकते हो, शिक्षित-अशिक्षित का भेद नहीं करते।

45. **एड़ी-चोटी का जोर लगाना** = *बहुत परिश्रम करना।*
▶▶ तुम चाहे एड़ी-चोटी का जोर लगाओ, यह काम तुमसे नहीं होगा।

क

46. **कमर कसना** = *पूरी तरह तैयार हो जाना।*
▶▶ अब तुम परीक्षा के लिए पूरी तरह कमर कस लो।

47. **कफन सिर पर बाँधना** = *मरने को तैयार रहना।*
▶▶ राजपूत कफन सिर पर बाँधकर युद्ध क्षेत्र में जाते हैं।

48. **कमर टूटना** = *हिम्मत टूट जाना।*
▶▶ जवान पुत्र की मौत से हरिशंकर की तो कमर ही टूट गई।

49. **कलई खुलना** = *भेद खुल जाना।*
▶▶ झूठे आदमी की कलई खुलते देर नहीं लगती।

50. **कटे पर नमक छिड़कना** = *दुखी व्यक्ति को और दुखी करना।*
▶▶ उस गरीब के कटे पर नमक छिड़कना क्या तुम्हें शोभा दे रहा है, जाकर अपना काम करो।

51. **काम आना** = *वीरगति पाना।*
▶▶ देश की सीमाओं पर देश की रक्षा करते कितने ही वीर काम आ गए।

52. **कठपुतली होना** = *दूसरे के इशारे पर चलना।*
▶▶ तुम्हारा यूनियन लीडर तो कंपनी की कठपुतली है, वह तुम्हारी बात नहीं सुनेगा।

53. **कंगाली में आटा गीला** = *गरीबी में और नुकसान होना।*
▶▶ एक तो नगर वैसे ही भूकंप से तबाह हो गया था, ऊपर से महामारी फैल गई — कंगाली में आटा गीला।

54. **कोल्हू का बैल होना** = *सारा दिन कठोर परिश्रम करने वाला।*
▶▶ रमेश कोल्हू के बैल की तरह जुटा रहता है, फिर भी उसका मालिक हमेशा डाँटता रहता है।

55. **कान में तेल डालना** = *बात न सुनना।*
▶▶ मैं तो तुम्हें समझा-समझाकर थक गया, मगर तुमने तो अपने कान में तेल डाल रखा है।

56. **कान का कच्चा होना** = *चुगली पर ध्यान देने वाला।*
▶▶ हमारे मैनेजर साहब ईमानदार होने के बावजूद कान के कच्चे हैं।

57. **कान पर जूँ न रेंगना** = *कुछ असर न होना।*
▶▶ राम को उसके पिता ने काफी समझाया, मगर उसके कान पर जूँ तक न रेंगी।

58. **कान भरना** = *चुगली करना।*
▶▶ तुम दिनेश की बातों पर विश्वास मत करना, वह दूसरों के कान भरने में माहिर है।

59. **कलेजा मुँह को आना** = *मन विकल होना।*
▶▶ तुम्हारी दर्द भरी दास्तान सुनकर मेरा तो कलेजा मुँह को आ गया।

60. **काम तमाम करना** = *मार डालना।*
▶▶ शेर ने एक ही झटके में उस जानवर का काम तमाम कर दिया।

ख

61. **खाक छानना** = *भटकना।*
▶▶ आजकल रमेश नौकरी की तलाश में खाक छानता फिर रहा है।

62. **खून-पसीना एक करना** = *कठोर परिश्रम करना।*
▶▶ दिवाकर खून-पसीना एक करके अपने परिवार को पाल रहा है।

63. **ख्याली पुलाव पकाना** = *कोरी कल्पना में डूबे रहना।*
▶▶ ख्याली पुलाव पकाने से अच्छा है कि कुछ ठोस करके दिखाओ।

64. **खालाजी का घर** = *आसान काम।*
▶▶ आज के युग में नौकरी पाना खालाजी का घर नहीं है।

65. **खून खौलना** = *अत्यंत क्रोध करना।*
▶▶ तुम्हारी गालियाँ सुनकर मेरा खून खौल रहा है।

ग

66. **गाल बजाना** = *अपनी प्रशंसा बढ़ा-चढ़ाकर करना।*
▶▶ अनुराधा की बातों को गंभीरता से मत लेना उसे तो गाल बजाने की आदत है।

67. **गुड़-गोबर करना** = *बात का मज़ा खराब कर देना।*
▶▶ बारिश के अचानक आ जाने से सारा कार्यक्रम गुड़-गोबर हो गया।

68. **गुदड़ी का लाल** = *गरीबी में छिपा महान व्यक्ति।*
  ▶▶ लाल बहादुर शास्त्री गुदड़ी के लाल थे।

69. **गिरगिट की तरह रंग बदलना** = *सिद्धांतहीन होना।*
  ▶▶ आज के राजनीतिज्ञ गिरगिट की तरह रंग बदलने में माहिर होते हैं।

70. **गागर में सागर भरना** = *थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह देना।*
  ▶▶ बिहारीलाल ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।

71. **गड़े मुरदे उखाड़ना** = *व्यर्थ की पुरानी बातों को उभारना।*
  ▶▶ गड़े मुरदे उखाड़ने से तो तुम दोनों का झगड़ा और बढ़ जाएगा।

घ

72. **घड़ों पानी पड़ जाना** = *अत्यंत लज्जित होना।*
  ▶▶ अपने फेल होने की सूचना पाकर राकेश पर मानो घड़ों पानी पड़ गया।

73. **घाट-घाट का पानी पीना** = *बहुत अनुभवी होना।*
  ▶▶ तुम लाला परशुराम को नहीं ठग सकते, उसने घाट-घाट का पानी पी रखा है।

74. **घोड़े बेचकर सोना** = *गहरी नींद सोना।*
  ▶▶ परीक्षा के दिन निकट आ रहे हैं, इस तरह घोड़े बेचकर सोने से काम नहीं चलेगा।

75. **घी के दीये जलाना** = *बहुत खुश होना।*
  ▶▶ विकलांग रमेश जब परीक्षा में प्रथम आया, तो उसकी माँ ने घी के दीये जलाए।

76. **घाव पर नमक छिड़कना** = *दुखी को और सताना।*
  ▶▶ एक तो राधा को वैसे ही पति की मौत का गम है, तुम ऊपर से ज्यादा पूछ-ताछ करके क्यों घाव पर नमक छिड़क रहे हो।

77. **घुटने टेकना** = *पराजय स्वीकार करना।*
  ▶▶ शिवाजी ने औरंगजेब के सामने कभी घुटने नहीं टेके।

च

78. **चैन की बंसी बजाना** = *चिंतामुक्त होकर रहना।*
  ▶▶ मोहनलाल रिटायरमेंट के बाद चैन की बंसी बजा रहा है।

79. **चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना** = *डर जाना।*
  ▶▶ पुलिस द्वारा चारों तरफ से घेर लिए जाने के कारण चोरों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

80. **चिकना घड़ा** = *जिस पर कुछ असर न हो।*
  ▶▶ संजीव तो एकदम चिकना घड़ा हो गया है, किसी की बात नहीं मानता।

81. **चोली-दामन का साथ** = *घनिष्ठ संबंध।*
  ▶▶ परिश्रम और सफलता का तो चोली-दामन का साथ है।

82. **चार चाँद लगाना** = *अत्यधिक शोभा बढ़ाना।*
  ▶▶ ताजमहल की मौजूदगी से हमारे देश की सुंदरता में चार चाँद लग गए हैं।

83. **चिराग तले अँधेरा होना** = *महत्त्वपूर्ण जगह में ही कमी रह जाना।*
  ▶▶ हमारे राज्य के शिक्षामंत्री का पुत्र लगातार दो साल से परीक्षा में फेल हो रहा है। कहा भी है कि चिराग तले अँधेरा।

84. **छाती पर पत्थर रखना** = *दुःख सहने के लिए दिल कठोर कर लेना।*
  ▶▶ पुत्र के जेल जाने के बाद मैंने तो छाती पर पत्थर रख लिया।

85. **छक्के छुड़ाना** = *हौंसला पस्त कर देना।*
  ▶▶ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे।

86. **छठी का दूध याद आना** = *कठिनाई का अनुभव करना।*

▶▶ बिना पूरी तैयारी के परीक्षा में बैठने के कारण सुरेश को छठी का दूध याद आ गया।

87. **छाती पर मूँग दलना** = *बहुत तंग करना।*

▶▶ रामलाल के मेहमान साल भर उसकी छाती पर मूँग दलते रहे।

88. **छप्पड़ फाड़कर देना** = *बिना प्रयत्न के काफी धन प्राप्त होना।*

▶▶ ईश्वर जब देने पर आता है तो छप्पड़ फाड़कर देता है।

89. **छोटा मुँह बड़ी बात** = *अपनी सीमा से बढ़कर बोलना।*

▶▶ तुम्हारी बातों पर कौन ध्यान देगा, तुम तो छोटा मुँह बड़ी बात करते हो।

90. **छुपा रुस्तम** = *देखने में साधारण वास्तव में गुणी।*

▶▶ हम तो मोहनलाल को साधारण इंसान समझ रहे थे, मगर वह तो छुपा रुस्तम निकला।

91. **छाती पर साँप लोटना** = *जलना।*

▶▶ मेरी शानदार कोठी को देखकर पड़ोसियों की छाती पर साँप लोट रहा है।

ज

92. **जान पर खेलना** = *जोखिम उठाना।*

▶▶ इतनी गहरी नदी से बालक को बचाने के लिए विजय कुमार जान पर खेल गया।

93. **जूती चाटना** = *खुशामद करना।*

▶▶ कामचोर कर्मचारी अपनी नौकरी बनाए रखने के लिए अफसरों की जूती चाटते फिरते हैं।

94. **जान में जान आना** = *मन को चैन होना।*

▶▶ दोपहर से आपका इंतजार हो रहा था, अब आपको देखकर जान में जान आई है।

झ

95. **झख मारना** = *व्यर्थ समय नष्ट करना।*

▶▶ सारे दिन झख मारते फिरते हो, कुछ पढ़ाई क्यों नहीं कर लेते।

ट

96. **टस से मस न होना** = *किसी भारी चीज का तनिक भी न हटना।*

▶▶ राक्षसों ने सारा जोर लगा लिया, मगर वे अंगद के पाँव को टस से मस नहीं कर पाए।

97. **टेढ़ी खीर** = *कठिन काम।*

▶▶ अच्छे विद्यालय में प्रवेश पाना आजकल टेढ़ी खीर हो गया है।

98. **टका-सा जवाब देना** = *साफ इंकार करना।*

▶▶ जब मैंने पंकज से पुस्तक माँगी तो उसने टका-सा जवाब दे दिया।

99. **टाँग अड़ाना** = *हस्तक्षेप करना।*

▶▶ जब दो बड़े बात कर रहे हों तो छोटों को टाँग अड़ाना अच्छी बात नहीं।

100. **टूट पड़ना** = *सहसा आक्रमण कर देना।*

▶▶ वीर राजपूत अकबर की सेना पर बाज की तरह टूट पड़े।

ठ

101. **ठोकर खाना** = *हानि उठाना।*

▶▶ जब तक तुम जीवन में ठोकर नहीं खाओगे, सफलता नहीं पा सकते।

ड

102. **डंके की चोट पर कहना** = *चुनौती देकर बात कहना।*

▶▶ मैं डंके की चोट पर कहता हूँ कि मैं चुनाव जीत कर रहूँगा।

त

103. **तारे गिनना** = *व्यग्रता से प्रतीक्षा करना।*
   ▶▶ अनीता अपने पति की वापसी के लिए तारे गिन रही है।
104. **तिल धरने की जगह न होना** = *वहुत भीड़ होना।*
   ▶▶ आज की बैठक में इतनी भीड़ थी कि तिल धरने को भी जगह न थी।
105. **तूती बोलना** = *बहुत प्रभाव होना।*
   ▶▶ रामपाल के समाजसेवी होने के कारण सभी जगह उसकी तूती बोलती है।
106. **तिल का ताड़ बनाना** = *छोटी वात को वढ़ा-चढ़ाकर कहना।*
   ▶▶ एक छोटी-सी घटना को तुमने तिल का ताड़ बनाकर सवको परेशान कर दिया।

द

107. **दाँत खट्टे करना** = *बुरी तरह हराना।*
   ▶▶ हमारी सेना ने वहादुरी दिखाते हुए दुश्मन की सेना के दाँत खट्टे कर दिए।
108. **दाँत काटी रोटी होना** = *पक्की दोस्ती होना।*
   ▶▶ राजेश के साथ तो तुम्हारी दाँत काटी रोटी है।
109. **दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करना** = *अधिकाधिक उन्नति।*
   ▶▶ भगवान करे, तुम दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करो।
110. **दौड़-धूप करना** = *वहुत प्रयत्न करना।*
   ▶▶ नौकरी पाने के लिए मुझे वड़ी दौड़-धूप करनी पड़ी।
111. **दाल में काला होना** = *कुछ गड़वड़ होना।*
   ▶▶ तुम्हारी बातों से प्रतीत होता है कि दाल में कुछ काला अवश्य है।

न

112. **नमक-मिर्च लगाना** = *बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।*
   ▶▶ विभा की तो आदत है कि वह हर बात नमक-मिर्च लगाकर कहती है।
113. **निन्यानवे के फेर में पड़ना** = *धन की चिंता करते रहना।*
   ▶▶ तुम्हारे पास हमारे लिए समय कहाँ है, तुम तो निन्यानवे के फेर में पड़े रहते हो।
114. **नौ-दो ग्यारह होना** = *भाग जाना, गायव हो जाना।*
   ▶▶ पुलिस की आहट पाते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।
115. **नमक हलाल होना** = *कृतज्ञ होना।*
   ▶▶ मुझे मालिक का यह काम पूरा करके उनका नमक हलाल करना है।
116. **नाक में दम आना** = *तंग होना।*
   ▶▶ तुम्हारी शिकायतें सुनते-सुनते मेरी तो नाक में दम आ गया है।
117. **नाकों चने चबवाना** = *बहुत परेशान करना।*
   ▶▶ यदि मैंने उस घमंडी पड़ोसी को नाकों चने नहीं चबवाए तो मेरा नाम करीम नहीं।
118. **नाक रख लेना** = *इज्जत बनाए रखना।*
   ▶▶ इस मुसीबत की घड़ी में आपने सहायता करके मेरी नाक रख ली है।

प

119. **पगड़ी उछालना** = *इज्जत उतारना।*
   ▶▶ आज की पीढ़ी को वड़े-बूढ़ों की पगड़ी उछालने में कोई शर्म नहीं आती।
120. **पस्त होना** = *हार जाना।*
   ▶▶ खली के सामने इराकी पहलवान के हौंसले पस्त हो गए।

121. **पत्थर की लकीर होना** = *दृढ़ होना।*
▶▶ मेरे पिताजी के वचन मेरे लिए पत्थर की लकीर हैं।
122. **पाँव उखड़ जाना** = *स्थिर न रह पाना।*
▶▶ पुलिस की गोलियों की बौछार के आगे आतंकवादियों के पाँव जल्दी ही उखड़ गए।
123. **पहाड़ टूटना** = *बहुत भारी कष्ट आ जाना।*
▶▶ पिता की आकस्मिक मृत्यु से विमल पर तो मानो पहाड़ ही टूट पड़ा है।
124. **पानी फिरना** = *चौपट हो जाना।*
▶▶ बेवजह नौकरी से निकाल दिए जाने के कारण उसके सारे सपनों पर पानी फिर गया।
125. **पापड़ बेलना** = *कठोर परिश्रम करना।*
▶▶ समय बुरा होने के कारण रामदयाल को तरह-तरह के पापड़ बेलने पड़े हैं।
126. **पीठ दिखाना** = *लड़ाई के मैदान से भागना।*
▶▶ वीर पुरुष लड़ाई के मैदान में कभी पीठ नहीं दिखाते।
127. **पेट में दाढ़ी होना** = *बचपन में ही बहुत चतुर होना।*
▶▶ इस उम्र में ऐसी बातें सुनकर आश्चर्य होता है, लगता है इसके पेट में दाढ़ी है।
128. **पेट में बात न पचना** = *किसी बात को गुप्त न रख सकना।*
▶▶ सुधा से कुछ कहना खतरे से खाली नहीं, क्यांकि उसके पेट में बात नहीं पचती।
129. **पानी-पानी होना** = *अत्यंत लज्जित होना।*
▶▶ भरी सभा में पोल खुल जाने पर रामलाल पानी-पानी हो गया।

फ

130. **फूला न समाना** = *बहुत प्रसन्न होना।*
▶▶ जब से नवीन का विवाह एक एयर होस्टेज से पक्का हुआ है वह फूला नहीं समा रहा।
131. **फूँक-फूँककर कदम रखना** = *बड़ी सावधानी से काम करना।*
▶▶ जब से अनिल ने उस अजनबी से व्यापार में धोखा खाया है, वह हर कदम फूँक-फूँककर रखता है।
132. **फूटी आँख न सुहाना** = *जरा भी अच्छा न लगना।*
▶▶ मुझे तुम्हारा यह रिश्तेदार क्लर्क फूटी आँख भी नहीं सुहाता।

ब

133. **बगलें झाँकना** = *कुछ उत्तर न दे पाना।*
▶▶ मेरे प्रश्नों को सुनकर वह बगलें झाँकने लगा।
134. **बाएँ हाथ का खेल** = *अति सरल कार्य।*
▶▶ इस विशाल पेड़ पर चढ़ना तो मेरे लिए बाएँ हाथ का खेल है।
135. **बहती गंगा में हाथ धोना** = *अवसर का फायदा उठाना।*
▶▶ आज का हर नेता बहती गंगा में हाथ धोना चाहता है।
136. **बाल-बाल बचना** = *साफ बच जाना।*
▶▶ कार-दुर्घटना से इस तरह बाल-बाल बचना अच्छी तकदीर से ही संभव है।
137. **बाल की खाल निकालना** = *सूक्ष्म विवेचन करना।*
▶▶ हर बात में बाल की खाल निकालने की तुम्हारी आदत अच्छी नहीं है।

म

138. **मति मारी जाना** = *अक्ल मारी जाना।*
▶▶ क्या तुम्हारी मति मारी गई है जो अफसर के सामने अनाप-शनाप बोल रहे हो।
139. **मुट्ठी गर्म करना** = *रिश्वत देना।*
▶▶ आजकल भ्रष्टाचार इतना फैल गया है कि बिना मुट्ठी गर्म किए कोई काम नहीं होता।

140. मारा-मारा फिरना = *इधर-उधर भटकना।*
▶▶ अच्छी नौकरी पाने के लिए वह मारा-मारा फिर रहा है।

141. मुँह में पानी भर आना = *जी ललचाना।*
▶▶ स्वादिष्ट व्यंजन देखकर मेरे मुँह में पानी भर आया।

142. मुँह की खाना = *सबके सामने पराजित होना।*
▶▶ इस मुकदमे में तुम्हें मुँह की खानी पड़ेगी।

र

143. राई का पर्वत बनाना = *बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना।*
▶▶ तुम्हें बात को यहीं खत्म कर देना चाहिए, राई का पर्वत न बनाओ।

144. रात-दिन एक करना = *कठोर परिश्रम करना।*
▶▶ रात-दिन एक करके मैंने यह व्यवसाय खड़ा किया है।

ल

145. लकीर पीटना = *विना समझे-वूझे पुरानी प्रथा पर चलना।*
▶▶ वह समय के साथ नहीं चल सकता क्योंकि उसे लकीर पीटने की आदत है।

146. लँगोटिया यार = *जिगरी दोस्त।*
▶▶ तुम उन दोनों के बीच दरार नहीं डाल सकते क्योंकि वे दोनों लँगोटिया यार हैं।

147. लाल-पीला होना = *क्रोध करना।*
▶▶ तुम व्यर्थ ही मुझ पर लाल-पीले हो रहे हो।

व

148. विपत्ति मोल लेना = *जान-वूझकर संकट में पड़ना।*
▶▶ अब क्यों रोते हो, तुमने स्वयं विपत्ति मोल ली है।

149. वेद वाक्य मानना = *ईश्वर की वाणी समझ सत्य मानना।*
▶▶ तुम्हें महात्मा जी के कथन को वेद वाक्य मानना चाहिए।

स

150. सिर-आँखों पर बिठाना = *बहुत आदर करना।*
▶▶ हम अतिथियों को सिर-आँखों पर विठाते हैं।

151. सिर उठाना = *विरोध करना।*
▶▶ जुल्मों के सामने सिर उठाना ईश्वर की आज्ञा मानने के बराबर है।

152. सबको एक ही लाठी से हाँकना = *सबके साथ एक-सा व्यवहार करना।*
▶▶ अध्यापक के लिए सभी छात्र एक समान होते हैं, वे सभी को एक ही लाठी से हाँकते हैं।

153. सोने पे सुहागा होना = *अच्छी चीज का और अच्छा हो जाना।*
▶▶ तुम्हारी आर्थिक सहायता से समाज-सेवा के पुनीत कार्य में सोने पे सुहागा हो जाएगा।

ह

154. हवा से बातें करना = *बहुत तेज दौड़ना।*
▶▶ थोड़ी ही देर में घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

155. हाथ फैलाना = *याचना करना।*
▶▶ हट्टे-कट्टे होकर भी हाथ फैलाते तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

156. हाथ से निकलना = *वश में न रहना।*
▶▶ पहले तो बेटी को रोका नहीं, अब स्थिति हाथ से निकलने पर रोते क्यों हो।

157. हथियार डालना = *पराजय स्वीकार कर लेना।*

▸▸ तुमने तो बड़ी जल्दी हथियार डाल दिए, कुछ सामना तो करते।

158. होश उड़ना = *डर जाना।*

▸▸ पुलिस को घर पर आते देख मेरे तो होश उड़ गए।

159. हाथ मलना = *पछताना।*

▸▸ समय निकल जाने पर तुम हाथ मलते रह जाओगे।

160. होश ठिकाने लगाना = *घमंड चूर करना।*

▸▸ मैं तुम्हारे होश ठिकाने लगाकर ही चैन से बैठूँगा।

161. हाथ बँटाना = *सहयोग करना।*

▸▸ गरीबों की सहायता करने में तुम्हें मेरा हाथ बँटाना चाहिए।

162. हाथ धोना = *खो देना।*

▸▸ तुम अपनी लापरवाही से सोने की अँगूठी से हाथ धो बैठोगे।

163. हथेली पर सरसों उगाना = *असंभव काम को संभव करना।*

▸▸ मैं अपने परिश्रम से हथेली पर सरसों उगाकर दिखा दूँगा।

164. हवाई किले बनाना = *ऊँची-ऊँची काल्पनिक योजनाएँ बनाना।*

▸▸ श्यामलाल ! केवल हवाई किले बनाने से काम नहीं बनेगा, कुछ करो-धरो भी।

165. हाथ कटाना = *बाजी हाथ से निकल जाना।*

▸▸ तुमने अपने रहस्य पुलिस को बताकर अपने हाथ कटा लिए हैं।

☞ लोकोक्तियाँ *(PROVERBS)*

'लोकोक्ति' शब्द 'लोक+उक्ति' से मिलकर बना है। लोक में प्रचलित उक्ति को ही 'लोकोक्ति' या 'कहावत' कहते हैं। सामाजिक जीवन के अनुभव के आधार पर लोकोक्तियाँ बनती हैं। कथन की पुष्टि अथवा उपदेश आदि के लिए लोकोक्तियों का प्रयोग प्रभावकारी सिद्ध होता है।

लोकोक्तियाँ मुहावरे की भाँति वाक्य का अंग नहीं होतीं, वे प्राय: पूर्ण वाक्य होती हैं।

लोकोक्तियों के शब्दों का कभी सामान्य तो कभी विशेष या लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है, जैसे—

'कोयल होय न ऊजरी, सौ मन साबुन लाय।'

इसमें 'कोयल' का कालापन उसके जन्मजात गुण को प्रकट करता है। 'ऊजरी होना' इस गुण के परिवर्तन को प्रकट करता है। 'सौ मन साबुन लाय' विभिन्न उपायों का बोध कराता है। पूरी लोकोक्ति का अर्थ है—"भिन्न-भिन्न उपायों से भी व्यक्ति का जन्मजात गुण या अवगुण बदला नहीं जा सकता।"

मुहावरों और लोकोक्तियों में अंतर :

1. मुहावरे अपना शाब्दिक या कोशगत अर्थ छोड़कर नया अर्थ देते हैं, किंतु लोकोक्ति में कहीं कोशगत अर्थ लगता है और कहीं विशेष अर्थ।
2. मुहावरे का वाक्यांश की भाँति प्रयोग किया जाता है और लोकोक्ति का वाक्य की भाँति।

नीचे कुछ प्रमुख लोकोक्तियाँ, उनके अर्थ एवं वाक्य प्रयोग के उदाहरण दिए जा रहे हैं :

अ

1. अंत भला सो भला = *काम का अंत यदि अच्छा हो जाए तो भोगे कष्ट भूल जाते हैं।*

▸▸ सचिन कष्ट सहकर भी परिश्रम करके ईमानदारी से सचिव पद तक पहुँचा है। सच ही कहा है—अंत भला सो भला।

2. अंधा क्या चाहे, दो आँखें = *इच्छित वस्तु की प्राप्ति अभीष्ट होती है।*

▸▸ मुझे गणित-अध्यापक की आवश्यकता थी, अचानक एक गणित-अध्यापक मेरा किराएदार बनकर आ गया। अंधा क्या चाहे, दो आँखें।

3. **अंधे के आगे रोए, अपने नैना खोए** = *सहानुभूतिहीन व्यक्ति के आगे अपना दुःख कहना व्यर्थ है।*

▶▶ तुम मालिक के आगे व्यर्थ अपनी दुख भरी कहानी सुना रहे हो, वह तो निर्दय है। अंधे के आगे रोए, अपने नैना खोए।

4. **अंधे के हाथ बटेर लगना** = *संयोग से सफलता प्राप्त कर लेना।*

▶▶ परीक्षा में प्रथम श्रेणी आना तो तुम जैसे अंधे के हाथ बटेर लग जाना है।

5. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** = *अकेला व्यक्ति कोई बड़ा काम नहीं कर सकता।*

▶▶ इतने गुंडों से मैं अकेला कब तक टक्कर लेता, किसी ने साथ ही नहीं दिया, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

6. **अधजल गगरी छलकत जाए** = *ओछा आदमी बढ़-चढ़कर बोलता है।*

▶▶ तुम थोड़ी-सी संस्कृत पढ़कर स्वयं को विद्वान समझने लगे हो। सच है — अधजल गगरी छलकत जाए।

7. **अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत** = *अवसर बीत जाने पर पछताना व्यर्थ है।*

▶▶ जब समय था तब तो पढ़ाई की नहीं, अब फेल होने पर रो रहे हो, अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

आ

8. **आधी छोड़ सारी को धावे, आधी मिले न सारी पावे** = *लालची आदमी को कुछ नहीं मिलता।*

▶▶ उस समय मेरे मकान के दस लाख रुपए मिल रहे थे और मैं बारह लाख माँग रहा था। अब आठ लाख भी नहीं मिलते। सच है आधी छोड़ सारी को धावे, आधी मिले न सारी पावे।

9. **आगे कुआँ, पीछे खाई** = *चारों ओर से संकट से घिरा होना।*

▶▶ अब क्या करें ? ऑपरेशन से मौत का डर और न कराने से गुर्दे खराब हो जाने का भय। मेरे लिए तो आगे कुआँ, पीछे खाई वाली बात है।

10. **आसमान से गिरा, खजूर पर अटका** = *सफलता मिलते-मिलते बाधा आ जाना।*

▶▶ मेरी तरक्की हो रही थी कि अफसर बीमार पड़ गया। यह तो वही बात हुई कि आसमान से गिरा, खजूर पर अटका।

11. **आम के आम, गुठलियों के दाम** = *दोहरा लाभ होना।*

▶▶ मैंने जितने में कार खरीदी थी। एक साल चलाकर उतने में ही बिक गई। इसी को कहते हैं—आम के आम, गुठलियों के दाम।

उ

12. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे** = *दोषी व्यक्ति निर्दोष को ही दोषी ठहराए।*

▶▶ एक तो गलत स्कूटर चलाकर मुझे टक्कर मार दी और मुझे ही दोषी बता रहे हो। वाह ! खूब रही, उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

ऊ

13. **ऊँची दुकान फीका पकवान** = *दिखावा अधिक, वास्तविकता कम।*

▶▶ हमने माथू स्वीट का बड़ा नाम सुना था, पर मिठाई निकली बेकार। भई ऊँची दुकान फीका पकवान वाली बात है।

14. **ऊँट के मुँह में जीरा** = *आवश्यकता से कम देना।*

▶▶ इस पहलवान को नाश्ते में एक समोसा देना ऊँट के मुँह में जीरे के समान है।

ए

15. **एक अनार सौ बीमार** = *एक वस्तु के अनेक ग्राहक।*

▶▶ नौकरी तो एक है, पर प्रार्थना-पत्र हजारों आए हैं। स्थिति यह है कि एक अनार सौ बीमार।

16. **एक तो करेला, दूसरा नीम चढ़ा** = *स्वाभाविक दोष का और बढ़ जाना।*
  ▸▸ रवि जुआ तो पहले से ही खेलता था अब शराब भी पीने लगा। यह तो वही बात हुई—एक तो करेला, दूसरा नीम चढ़ा।
17. **एक पंथ दो काज़** = *दोहरा लाभ होना।*
  ▸▸ आगरा व्यापार के काम से तो जा रहा हूँ, ताजमहल भी देखता आऊँगा, एक पंथ दो काज हो जाएँगे।
18. **एक म्यान में दो तलवार** = *दो प्रतिद्वंदी साथ-साथ नहीं रह सकते।*
  ▸▸ इस घर में या तो मैं रहूँगी या गीता। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं।
19. **एक और एक ग्यारह होते हैं** = *एकता में बल होता है।*
  ▸▸ यदि तुम मेरे साथ आ जाओ तो मेरी ताकत बढ़ जाएगी, सुना नहीं एक और एक ग्यारह होते हैं।
20. **एक ही थैली के चट्टे-बट्टे** = *एक ही तरह के बुरे लोग।*
  ▸▸ तुम मोहनलाल का रोना क्या रोते हो, उसका भाई भी पूरा ठग है। दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

ओ

21. **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर** = *चुनौती स्वीकार कर लेने के बाद कष्टों से नहीं घबराना चाहिए।*
  ▸▸ जब राजनीति में आए हो तो आलोचनाएँ तो सुननी ही पड़ेंगी। ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्यों डरते हो।
22. **ओछे की प्रीत, बालू की भीत** = *दुष्ट की मित्रता शीघ्र समाप्त हो जाती है।*
  ▸▸ सुमन बड़ी स्वार्थी है, उससे तुम्हारी निभेगी नहीं। क्या तुमने सुना नहीं—ओछे की प्रीत, बालू की भीत।

क

23. **कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा** = *असंगत वस्तुओं का मेल बिठाना।*
  ▸▸ इस संयुक्त मोर्चा का क्या भरोसा, कब गिर जाए, क्योंकि यह तो है—कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा।
24. **कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर** = *एक दूसरे की सहायता लेनी ही पड़ती है।*
  ▸▸ एक समय था जब मैंने तुम्हें नौकरी दी थी, आज मुझे तुम्हारे सामने हाथ फैलाना पड़ रहा है। सच ही तो है—कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर।
25. **काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती** = *कपट और धोखे का व्यवहार हमेशा नहीं चलता।*
  ▸▸ यह दुकानदार हर बार सामान कम तौलता था, अब की बार पकड़ा गया तो जुर्माना भरना पड़ेगा, क्योंकि काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती।
26. **कोयले की दलाली में मुँह काला** = *बुरे काम में बुराई ही मिलती है।*
  ▸▸ शराब की दुकान पर काम करने के कारण लोग तुम्हें भी शराबी समझने लगे हैं। सच है, कोयले की दलाली में मुँह काला।
27. **का वर्षा जब कृषि सुखाने** = *काम बिगड़ने पर सहायता व्यर्थ होती है।*
  ▸▸ जब मुझे रुपयों की आवश्यकता थी तब तो आपने दिए नहीं, अब मैं इन रुपयों का क्या करूँ ? का वर्षा जब कृषि सुखाने।
28. **काला अक्षर भैंस बराबर** = *बिल्कुल अनपढ़ होना।*
  ▸▸ अपने छोटे भाई को क्या पत्र लिखूँ, उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

ख

29. **खग जाने खग ही की भाषा** = *चालाक ही चालाक को समझता है।*
  ▸▸ तुम्हारे इशारे शीला ही समझती होगी, मुझे कुछ नहीं पता चलता। खग जाने खग ही की भाषा।
30. **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है** = *संगति का प्रभाव अवश्य होता है।*
  ▸▸ कॉलेज में जाते ही तुम्हारे तो रंग-ढंग ही बदल गए, ठीक ही कहा गया है—खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

31. खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे = *लज्जित या पराजित होने पर अनावश्यक क्रोध दिखाना।*

▶▶ वर्मा जी दफ्तर में तो कुछ कह नहीं पाए अब घर में पत्नी पर गुस्सा निकाल रहे हैं। यह तो वही बात हुई—खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।

32. खोदा पहाड़ निकली चुहिया = *परिश्रम बहुत अधिक पर लाभ बहुत कम।*

▶▶ मैंने सारा दिन परिश्रम किया लेकिन शाम को मजदूरी मिली बीस रुपए। यह तो वही हुआ—खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

ग

33. गंगा गए तो गंगादास और जमुना गए तो जमुनादास = *परिस्थिति के अनुसार बदल जाना।*

▶▶ आजकल के नेता तो अवसरवादी हो गए हैं। उनकी दशा तो यह है कि गंगा गए तो गंगादास और जमुना गए तो जमुनादास।

34. गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है = *दोषी के साथ रहने पर निर्दोष को भी हानि उठानी पड़ती है।*

▶▶ यदि तुम चोरों के साथ रहोगे तो एक दिन तुम्हें भी जेल की हवा खानी पड़ेगी, क्योंकि गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है।

घ

35. घर की मुर्गी दाल बराबर = *अपने पास की वस्तु का महत्त्व न समझना।*

▶▶ तुम्हें अपनी पत्नी की कद्र करनी नहीं आती, तुम्हें तो वह घर की मुर्गी दाल बराबर लगती है।

36. घर फूँक तमाशा देखना = *शान के लिए औकात से बढ़कर खर्च करना।*

▶▶ समाज में सम्मान पाने के लिए घर फूँक तमाशा देखना पड़ता है।

च

37. चोर की दाढ़ी में तिनका = *अपराधी व्यक्ति स्वयं सशंकित रहता है।*

▶▶ इधर घर में चोरी हुई, उधर नौकर भाग गया। मैं समझ गया कि चोर की दाढ़ी में तिनका है।

38. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए = *बहुत कंजूस होना।*

▶▶ भला यह सेठ मंदिर के लिए क्या चंदा देगा। इसकी दशा तो यह है कि चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।

39. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात = *सुख के दिन अधिक नहीं रहते।*

▶▶ पिता की दौलत पर मजे कर लो, पर याद रखना—चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात होती है।

40. चोर-चोर मौसेरे भाई = *दुष्ट व्यक्तियों में सहज संबंध स्थापित हो जाता है।*

▶▶ तुम रामसिंह की क्या कहते हो, उसके सभी साथी मक्कार हैं। सुना नहीं, चोर-चोर मौसेरे भाई।

41. चौबे गए छब्बे होने, दूबे ही रह गए = *लाभ के स्थान पर हानि होना।*

▶▶ आपके भाई दिल्ली में कमाने गए थे, उल्टे अपनी जमा-पूँजी भी गँवा आए। इसी को कहते हैं चौबे गए छब्बे होने, दूबे ही रह गए।

छ

42. छछूँदर के सिर में चमेली का तेल = *अयोग्य व्यक्ति को मूल्यवान वस्तु का मिल जाना।*

▶▶ यह अनपढ़ लड़की भी कितनी भाग्यशाली है कि वकील पति मिल गया। इसे कहते हैं—छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।

ज

43. जंगल में मोर नाचा, किसने देखा = *ऐसे स्थान पर काम करना जहाँ गुणग्राहक न हों।*

▶▶ अरे ! नृत्य का कार्यक्रम शहर के मध्य रखो, भला वहाँ सुनसान में कौन आएगा देखने। अरे जंगल में मोर नाचा किसने देखा ?

44. जल में रहकर मगर से वैर = *जिसके आश्रय में रहना उसी से वैर साधना।*

▶▶ मुझे नए अफसर का कहना तो मानना ही पड़ेगा, जल में रहकर मगर से वैर नहीं रखा जाता।

45. **जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय** = *जिसका भगवान रक्षक हो, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।*

▶▶ डाकू ने पिताजी पर गोली चलाई, पर वे साफ बच गए। जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।

46. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** = *बलवान की ही विजय होती है।*

▶▶ जिसके पास रुपया और सिफारिश थी, वह नौकरी पा गया। तभी तो कहा है–जिसकी लाठी उसकी भैंस।

47. **जैसी करनी, वैसी भरनी** = *किए का फल भोगना ही पड़ता है।*

▶▶ उसने जीवन भर कालाबाजारी की, अब पकड़ में आने पर सलाखों में जिंदगी कट रही है, जैसी करनी वैसी भरनी।

48. **जो गरजते हैं वे बरसते नहीं** = *अधिक बोलने वाले व्यक्ति काम कम करते हैं।*

▶▶ नीरज की लंबी-चौड़ी बातें सुनकर मैं समझ गया कि यह कुछ करने वाला नहीं है, क्योंकि जो गरजते हैं बरसते नहीं।

49. **जिस बर्तन में खाना उसी में छेद करना** = *कृतघ्न होना।*

▶▶ तुम्हारे ऊपर विश्वास नहीं किया जा सकता, क्योंकि तुम जिस बर्तन में खाते हो उसी में छेद करते हो।

50. **जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ** = *दोनों दुष्ट प्रवृत्ति के होना।*

▶▶ मेरी दृष्टि में कालू और मालू दोनों एक समान दुष्ट हैं – जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ।

ड

51. **डूबते को तिनके का सहारा** = *मुसीबत के समय थोड़ी सहायता भी बहुत होती है।*

▶▶ मेरी आर्थिक दुर्दशा में तुम्हारी थोड़ी-सी सहायता मेरे लिए डूबते को तिनके का सहारा बन जाएगी।

त

52. **तेते पाँव पसारिए जेती लांबी सौर** = *शक्ति के अनुसार ही खर्च करना चाहिए।*

▶▶ तुम विवाह पर अपनी शक्ति से अधिक खर्च मत करना, नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा। हमेशा तेते पाँव पसारि जेती लांबी सौर।

53. **तेली का तेल जले मसालची का दिल जले** = *एक को खर्च करते देखकर दूसरा परेशान।*

▶▶ लाला खिचड़ीमल खुलकर खिलाने में यकीन रखते हैं, पर उसके कर्मचारी खिलाने में कंजूसता दिखाते हैं। स ही कहा है–तेली का तेल जले मसालची का दिल जले।

थ

54. **थोथा चना बाजे घना** = *ज्ञान कम, दिखावा अधिक।*

▶▶ यह व्यक्ति स्वयं को पंडित बताता है जबकि इसे शुद्ध श्लोक बोलना तक नहीं आता। इस पर तो वही कहाव लागू होती है – थोथा चना बाजे घना।

द

55. **दूध का दूध और पानी का पानी** = *निष्पक्ष न्याय करना।*

▶▶ तुम्हारे केस में जज साहब ने ऐसा न्याय किया कि दूध का दूध और पानी का पानी हो गया।

56. **दूर के ढोल सुहावने** = *दूर की चीज अच्छी लगती है।*

▶▶ नगरों की जिंदगी दूर से ही अच्छी लगती है जबकि यहाँ समस्याओं की भरमार है। दूर के ढोल सुहावने लगते हैं।

57. **देखें, ऊँट किस करवट बैठता है ?** = *देखें, भविष्य में क्या होता है ?*

▶▶ नौकरी के लिए सिफारिश तो लगा दी है, अब देखो ऊँट किस करवट बैठता है।

58. **दादा बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपया** = *रुपया ही सब कुछ होता है।*

▶▶ वर्तमान समय में सर्वत्र धनवान की ही कद्र है। सच ही है, दादा बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपया।

59. **दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम** = *अनिश्चय के कारण दोनों ओर से हानि होना।*

▶▶ अगर नई नौकरी पर जाना है तो इस नौकरी से इस्तीफा दो, कहीं ऐसा न हो कि दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम।

60. **दूध का जला छाछ को भी फूँक-फूँक कर पीता है** = *एक बार धोखा खाने पर व्यक्ति सावधान हो जाता है।*

▶▶ व्यापार में भारी घाटा उठाने के कारण अब राधेश्याम कोई भी सौदा बहुत सोच-समझकर करता है, सच ही है–दूध का जला छाछ को भी फूँक-फूँक कर पीता है।

ध

61. **धोबी का कुत्ता घर का न घाट का** = *अस्थिरता के कारण कहीं का न रहना।*

▶▶ मैं जल्दबाजी में पुरानी नौकरी से इस्तीफा दे आया और नई नौकरी मिली नहीं। मेरी दशा तो ऐसी हो गई है–धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।

न

62. **न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी** = *विवाद की जड़ को ही मिटा देना।*

▶▶ यदि इस नौकर के कारण घर में क्लेश है तो इसे ही हटा देते हैं। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

63. **नेकी कर दरिया में डाल** = *उपकार करके भूल जाना चाहिए।*

▶▶ तुम्हें बार-बार गरीबों की सहायता करने का बखान नहीं करना चाहिए। हम तो यह जानते हैं कि नेकी कर दरिया में डाल।

64. **न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी** = *असंभव शर्त लगा देना।*

▶▶ तुमसे गाना सुनाने को क्या कहा, तुम तो पूरे साज-सामान की माँग करने लगे। ठीक ही है–न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।

65. **नौ दिन चले अढ़ाई कोस** = *काम बहुत धीमी गति से होना।*

▶▶ सरकारी कार्यालयों में काम ऐसी ही धीमी गति से होता है। यहाँ तो यह कहावत लागू होती है, नौ दिन चले अढ़ाई कोस।

66. **नौ नकद न तेरह उधार** = *नकद लेन-देन हमेशा अच्छा रहता है।*

▶▶ लाओ भाई मुझे तो एक हजार रुपए की जगह अभी नौ सौ रुपए ही दे दो। नौ नकद, न तेरह उधार।

प

67. **पर उपदेश कुशल बहुतेरे** = *दूसरों को उपदेश देना सरल है।*

▶▶ नेताजी, पहले अपने भ्रष्टाचार पर रोक लगाओ तब ईमानदारी का भाषण देना। पर उपदेश कुशल बहुतेरे लगते हैं।

ब

68. **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद** = *मूर्ख व्यक्ति गुण की परख नहीं कर सकता।*

▶▶ इस मूर्ख को शास्त्रीय संगीत में क्या आनंद आएगा ? बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

69. **बिल्ली के भागों छीका टूटा** = *अचानक लाभ हो जाना।*

▶▶ मैं तो नौकरी पाने की उम्मीद छोड़ बैठा था कि अचानक सभी को ले लिया गया तो मेरा काम बन गया। इसी को कहते हैं बिल्ली के भागों छीका टूटा।

70. **बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख** = *माँगने से कुछ नहीं मिलता।*

▶▶ आज ऐसी स्थिति आ गई है कि जो लोग मुझे स्वयं बिन माँगे धन दे जाया करते थे, आज माँगने पर भी इंकार कर देते हैं। ठीक ही कहा है–बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।

71. **बोए पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय** = *बुरे काम का फल बुरा ही होता है।*

▶▶ पहले तो बच्चों को गलत आदतें सिखाईं, अब उनसे अच्छे आचरण की उम्मीद करते हो। क्या जानते नहीं, बोए पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय।

भ

72. **भागते भूत की लँगोटी ही सही** = *जो कुछ मिल जाए, वही काफी है।*

▶▶ रामकृष्ण पर मेरे सौ रुपए थे, जाते-जाते पचास ही दे गया। चलो भागते भूत की लँगोटी ही सही।

म

73. **मान न मान, मैं तेरा मेहमान** = *जबरदस्ती गले पड़ना।*
  ▸▸ तुम दो दिनों से मेरे घर टिके हुए हो और मैं तुम्हें ठीक से जानता तक नहीं। मान न मान मैं तेरा मेहमान।
74. **मुख में राम बगल में छुरी** = *मन में दुष्टता, पर बाहर से प्रेम दिखाना।*
  ▸▸ शिवकांत की मीठी बातों में मत आना, उसके मुख में राम बगल में छुरी रहती है।
75. **मन चंगा तो कठौती में गंगा** = *मन ठीक है तो सब ठीक है।*
  ▸▸ संत कबीर किसी मंदिर-मस्जिद में नहीं जाते थे। वे कहते थे – मन चंगा तो कठौती में गंगा।

य

76. **यह मुँह और मसूर की दाल** = *योग्यता से अधिक पाने का इच्छुक होना।*
  ▸▸ तुम तृतीय श्रेणी में एम.ए. करके प्रधानाचार्य का पद पाना चाहते हो। यह मुँह और मसूर की दाल।

र

77. **रस्सी जल गई, पर बल न गया** = *नष्ट होने पर भी अहंकार न जाना।*
  ▸▸ सेठ करोड़ीमल का घर तक बिक गया, पर अकड़ बरकरार है। उसकी दशा तो ऐसी है–रस्सी जल गई, पर ब नहीं गया।

ल

78. **लातों के भूत बातों से नहीं मानते** = *दुष्ट व्यक्ति सजा से ही डरते हैं।*
  ▸▸ अरे, यह आसानी से अपराध स्वीकार नहीं करेगा, इसे उल्टा लटकाओ। सुना नहीं, लातों के भूत बातों से न मानते।

ढ

79. **ढाक के वही तीन पात** = *स्थिति में कोई परिवर्तन न होना।*
  ▸▸ पिछले साल भी यह मकान टूटा-फूटा था, अब थोड़ी-सी मरम्मत के बाद भी वही हालत है। वही ढाक के त पात वाली स्थिति है।

स

80. **सस्ता रोए बार-बार महँगा रोए एक बार** = *सस्ती चीज खरीदकर रोज परेशान होना पड़ता है।*
  ▸▸ मेरी सलाह मानकर अच्छी कंपनी की मशीन खरीद लो, महँगी जरूर है। तुमने सुना ही होगा-सस्ता रोए बार-ब महँगा रोए एक बार।
81. **साँप मरे न लाठी टूटे** = *काम भी बन जाए और हानि भी न हो।*
  ▸▸ इस व्यक्ति को दफ्तर से ऐसे चुपचाप निकालो कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।
82. **सिर मुँड़ाते ओले पड़े** = *काम आरंभ करते ही मुसीबत आना।*
  ▸▸ अभी तो शेयर खरीदे ही थे कि आर्थिक मंदी छा गई और बाजार बुरी तरह लुढ़क गया। सिर मुंड़ाते ही ओ पड़े।
83. **सीधी अँगुली से घी नहीं निकलता** = *बिल्कुल सीधेपन से काम नहीं बनता।*
  ▸▸ मैंने तो तुम्हें बहुत समझाया था, पर तुम माने ही नहीं; तब मुझे यह कठोर कदम उठाना पड़ा। मैं जानता हूँ सीधी अँगुली से घी नहीं निकलता।
84. **सेवा करे सो मेवा पावे** = *सेवा का फल हमेशा अच्छा होता है।*
  ▸▸ बड़ों का आशीर्वाद पाने के लिए उनकी सेवा करनी पड़ती है। कहा भी गया है – सेवा करे सो मेवा पावे।

ह

85. **हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊँ** = *आश्रयदाता पर ही रौब जमाना।*
  ▸▸ कल मेरी ही सिफारिश पर नौकरी पाने वाला रमेश अब मुझे ही आँखें दिखाता है। हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊँ

86. हाथ कंगन को आरसी क्या = *प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।*

▶▶ इस दवा का असर देखना है तो दो खुराक लेकर देख लो, शाम तक पता चल जाएगा। हाथ कंगन को आरसी क्या।

87. हाथी के पाँव में सबका पाँव = *बड़े प्रयत्न में छोटे-छोटे प्रयत्न शामिल होते हैं।*

▶▶ हम तो प्रधान जी की बात का अनुकरण करते हैं, उन्हें ही मना लो। हाथी के पाँव में सबका पाँव।

88. हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और = *कहना कुछ और करना कुछ।*

▶▶ यह नेता जितना आदर्शवादी बनता है, उतना है नहीं, पूरा मक्कार है। सच ही है, हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और।

89. हाथी निकल गया, दुम रह गई = *थोड़ा-सा शेष रह जाना।*

▶▶ अरे ! सजा के दो वर्ष तो कट ही गए, अब तो एक मास की सजा ही रह गई है, घबराते क्यों हो ? अब तो हाथी निकल गया, दुम रह गई है।

90. हींग लगे न फिटकरी रंग भी चोखा = *बिना खर्च किए अच्छा परिणाम आना।*

▶▶ घर में ही कुछ ऐसी चीज बनाओ कि विशेष खर्च किए बिना मेहमानों की खातिर हो जाए। हींग लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आ जाए।

91. हीरे की कद्र जौहरी जाने = *गुणवान व्यक्ति ही गुणी को पहचानता है।*

▶▶ अरे तुम बिहारी के दोहों का मर्म क्या समझोगे ? हीरे की कद्र तो जौहरी ही जानता है।

92. होनहार बिरवान के होत चीकने पात = *प्रतिभाशाली व्यक्ति का पता बचपन में ही चल जाता है।*

▶▶ जयशंकर प्रसाद ने आठ वर्ष की आयु में ही कविता लिख डाली थी। सच ही है – होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए मुहावरे-लोकोक्तियों संबंधी प्रश्न

(CBSE 2009 Comptt. Outside)

प्रश्न (क) निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(Set I)

(*i*) बात गाँठ बाँधना

(*ii*) जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाना

उत्तर–

(*i*) **बात गाँठ बाँधना**–तुम्हें मेरी बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए।

(*ii*) **जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाना**–तुम्हारी कड़वी बातों से मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

(Set II)

(*i*) आग बबूला होना ।

(*ii*) चेहरा मुरझाना ।

उत्तर–

(*i*) **आग बबूला होना**–गाली सुनते ही रमेश आग बबूला हो गया ।

(*ii*) **चेहरा मुरझाना**–परीक्षा में असफलता से उसका चेहरा मुरझा गया।

(Set III)

(*i*) आवाज उठाना ।

(*ii*) प्राण निकलना । *(Set III)*

उत्तर–

(*i*) **आवाज उठाना**–तुम्हें अन्याय के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए।

(*ii*) **प्राण निकलना**–गर्मी के मारे प्राण निकल रहे हैं।

(ख) निम्नलिखित कथनों के लिए उपयुक्त लोकोक्तियाँ लिखिए : *(Set I, II, III)*

(*i*) सबके मना करने पर भी गंगाराम ने अपना सब कुछ उस धूर्त को सौंप दिया। अब सब कुछ लुट जाने पर रो रहा है। ठीक ही कहा गया है .... खेत।

(*ii*) संजय मुंबई जाकर पूरी तरह से वहाँ के रंग में ही रंग गया है। किसी ने सच ही कहा है .... वेश।

उत्तर–

(*i*) सबके मना करने पर भी गंगाराम ने अपना सब कुछ उस धूर्त को सौंप दिया। अब सब कुछ लुट जाने पर रो रहा है। ठीक ही कहा गया है ***अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई*** खेत।

(*ii*) संजय मुंबई जाकर पूरी तरह से वहाँ के रंग में ही रंग गया है। किसी ने सच ही कहा है ***जैसा देश वैसा*** वेश।

(*CBSE 2009, Delhi*)

प्रश्न : (क) दिए गए मुहावरों और लोकोक्तियों में से एक मुहावरा और लोकोक्ति का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए : *(Set I)*

(*i*) मुट्ठी गर्म करना।

(*ii*) सिर मारना।

(*iii*) काला अक्षर भैंस बराबर

(*iv*) खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

उत्तर : (*i*) सरकारी दफ्तरों में जब तक मुट्ठी गर्म न करो काम नहीं होता।

(*ii*) किसी-किसी प्रश्न में कितना ही सिर मार लो पर हल नहीं निकलता।

(*iii*) दादी के लिए यह किताब तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

(*iv*) सारा दिन कड़ा परिश्रम करने के बाद भी परिणाम नहीं निकला। यह तो वही बात हुई कि खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे और लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(*i*) वीर सन्तानों ने ------------ बाँधकर ही देश की रक्षा की।

(*ii*) मन रम जाने पर ही सबसे बड़ा चैन मिलता है, इसलिए कहते हैं कि, --------------

उत्तर : (*i*) वीर सन्तानों ने **सिर पर कफन** बाँधकर ही देश की रक्षा की।

(*ii*) मन रम जाने पर ही सबसे बड़ा चैन मिलता है, इसलिए कहते हैं कि, **मन चंगा तो कठौती में गंगा।**

(Set II)

(क) दिए गए मुहावरों और लोकोक्तियों में से एक मुहावरा और लोकोक्ति का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

(*ii*) आँच न आने देना।

(*iii*) साँप मरे न लाठी टूटे।

(*iv*) लोहे के चने चबाना।

उत्तर : (*i*) नाच न जाने आँगन टेढ़ा : तुम्हें लिखना तो आता नहीं व्यर्थ ही पेन को खराब बता रहे हो, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

(*ii*) आँच न आने देना : रानी लक्ष्मीबाई जब तक जीवित रहीं, झाँसी पर आँच न आने दी।

(*iii*) साँप मरे न लाठी टूटे : मैं तुम्हारा काम भी कर दूँगा और पिताजी को पता भी न चलेगा अर्थात् साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे।

(*iv*) लोहे के चने चबाना : अच्छे परिणाम के लि लोहे के चने चबाने पड़ते हैं।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे औ लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(*i*) उसने अपने बच्चों को ज्यादा प्यार करके उन्हें ------------

(*ii*) एक पद के लिए हजारों आवेदन पत्र आते हैं, त तो कहते हैं- **एक** ---------------

उत्तर : (*i*) उसने अपने बच्चों को ज्यादा प्यार क उन्हें सिर **पर चढ़ा लिया है।**

(*ii*) एक पद के लिए हजारों आवेदन पत्र आते हैं, त तो कहते हैं- एक **अनार सौ बीमार।**

(Set III)

(क) दिए गए मुहावरों और लोकोक्तियों में से ए मुहावरा और एक लोकोक्ति का वाक्य में इस प्रक प्रयोग करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) चार चाँद लगना।

(*ii*) नौ-दो-ग्यारह होना।

(*iii*) जिसकी लाठी उसकी भैंस।

(*iv*) चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात।

उत्तर : (*i*) चार चाँद लगना : यह परिधान तुम ऊपर चार चाँद लगा रहा है।

(*ii*) नौ-दो-ग्यारह होना : चोर सिपाही को देख नौ-दो ग्यारह हो गया।

(*iii*) जिसकी लाठी उसकी भैंस : यहाँ तो पुलिस वा का ही राज चलता है क्योंकि जिसकी लाठी उसकी भैंस।

(*iv*) चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात : थो सा धन आने पर इतराओ मत क्योंकि चार दिन की चाँद फिर अँधेरी रात है।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे औ लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(*i*) अपने छोटे से भाषण में उसने सब कुछ कह दि जैसे --------- भर दिया हो।

(*ii*) वह जो कहता है, सो करता नहीं। तभी तो कहते हाथी -----------

उत्तर : (*i*) अपने छोटे से भाषण में उसने सब कुछ क दिया, जैसे **गागर में सागर** भर दिया हो।

(*ii*) वह जो कहता है, सो करता नहीं। तभी तो कहते **हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और।**

(*CBSE 2009 Outside*)

प्रश्न : (क) दिए गए मुहावरों में से किन्हीं दो व प्रयोग वाक्य में इस प्रकार करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए

(*i*) हवा से बातें करना।

(*ii*) उँगली उठाना

(*iii*) निन्यानवे का फेर।

(*iv*) हाथ का मैल। *(Set I)*

उत्तर : (*i*) हवा से बातें करना : राणा प्रताप का घोड़ा चेतक हवा से बातें करता था।

(*ii*) उँगली उठाना : किसी के चरित्र पर उँगली उठाना अच्छी बात नहीं है।

(*iii*) निन्यानवे का फेर : कभी तो चैन लिया करो, हर समय निन्यानवे के फेर में रहते हो।

(*iv*) हाथ का मैल : धन खर्च करने में कंजूसी मत करो, यह तो हाथ का मैल है।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे और लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(*i*) आलसी के .... सवार हुए बिना काम नहीं होगा।

(*ii*) उस गाँव में पढ़े-लिखे लोग तो हैं नहीं, इसलिए राजीव से ही सब सलाह-मशवरा करते हैं, वह .... राजा है।

उत्तर : (*i*) आलसी के **सिर पर** सवार हुए बिना काम नहीं होगा।

(*ii*) उस गाँव में पढ़े-लिखे लोग तो हैं नहीं, इसलिए राजीव से ही सब सलाह-मशवरा करते हैं, वह **अंधों में काना** राजा है।

(Set II)

(क) दिए गए मुहावरों तथा लोकोक्तियों में से एक मुहावरा और एक लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य में इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) तूती बोलना

(*ii*) मान न मान मैं तेरा मेहमान

(*iii*) चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात

(*iv*) आग में घी डालना।

उत्तर : (*i*) तूती बोलना : इन दिनों सारे शहर में नेता जी की तूती बोल रही है।

(*ii*) मान न मान मैं तेरा मेहमान : रमेश तो तुम्हारे यहाँ आकर जम ही गया, मान न मान मैं तेरा मेहमान।

(*iii*) चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात : आजकल जितना कमा सको, कमा लो क्योंकि चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात है।

(*iv*) आग में घी डालना : तुमने गाली देकर झगड़े की आग में घी डाल दिया।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे और लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(*i*) आजकल ऐसे आश्चर्यजनक समाचार सुनने को मिलते हैं कि दाँतों तले .... रह जाना पड़ता है।

(*ii*) भाई की दुर्घटना का समाचार सुनकर उसके चेहरे पर .... लगीं।

उत्तर : (*i*) आजकल ऐसे आश्चर्यजनक समाचार सुनने को मिलते हैं कि दाँतों तले **उँगली दबाकर** रह जाना पड़ता है।

(*ii*) भाई की दुर्घटना का समाचार सुनकर उसके चेहरे पर **हवाइयाँ उड़ने** लगीं।

(Set III)

(क) दिए गए मुहावरों और लोकोक्तियों में से एक मुहावरे और एक लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य में इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(*i*) रंग में भंग होना

(*ii*) पीठ दिखाना

(*iii*) सौ सुनार की एक लोहार की

(*iv*) गुदड़ी के लाल

उत्तर : (*i*) रंग में भंग होना : वर्षा के आने से समारोह के रंग में भग पड़ गया।

(*ii*) पीठ दिखाना : सैनिक को युद्ध में पीठ नहीं दिखानी चाहिए।

(*iii*) सौ सुनार की एक लोहार की : मैं रोज-रोज नहीं बोलता केवल एक ही दिन बोलूँगा। मेरी तो सौ सुनार की एक लोहार की वाली बात है।

(*iv*) गुदड़ी के लाल : लाल बहादुर शास्त्री गुदड़ी के लाल थे।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे और लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(*i*) शलभ को आता-जाता कुछ नहीं, बहस करता रहता है, इसे ही कहते हैं .... घना।

(*ii*) बेटे की शैतानियों ने पिता की .... कर दिया।

उत्तर : (*i*) शलभ को आता-जाता कुछ नहीं, बहस करता रहता है, इसे ही कहते हैं **थोथा चना बाजे** घना।

(*ii*) बेटे की शैतानियों ने पिता की **नाक में दम** कर दिया।

(CBSE 2008 Comptt. Delhi)

प्रश्न : (क) नीचे दिए गए मुहावरों और लोकोक्तियों में से किन्हीं दो को वाक्य में इस प्रकार प्रयोग करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए : *(Set I, II, III)*

(*i*) चारपाई पकड़ना

(*ii*) टोपी उछालना

(*iii*) अधजल गगरी छलकत जाए

(*iv*) चोर की दाढ़ी में तिनका

उत्तर : (*i*) यदि तुम बीमार हो गए तो तुम्हें **चारपाई पकड़नी** पड़ेगी।

(*ii*) तुम्हें किसी भी सम्मानित व्यक्ति की **टोपी नहीं उछालनी** चाहिए।

(*iii*) मोहनलाल कुछ दिन बनारस के आश्रम में क्या रह आया, गाँव में भी संस्कृत में ही बात करता है, सच कहा है **अधजल गगरी छलकत जाए।**

(*iv*) जब भरी सभा में पुलिस ने लोगों को धमकी दी तो चोर खिसक लिया क्योंकि **चोर की दाढ़ी में तिनका** होता है।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे/लोकोक्ति से कीजिए : *(Set I, II, III)*

(*i*) ईश्वर जब देने पर आता है तो .... देता है।

(*ii*) इतने गुंडों को सामने देखकर मेरे तो ....गए।

उत्तर : (*i*) छप्पर फाड़कर।

(*ii*) होश उड़।

(*CBSE 2008 Comptt. Outside*)

प्रश्न : (क) नीचे दिए गए मुहावरों और लोकोक्तियों में से किन्हीं दो का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए : *(Set I,II,III)*

(*i*) अधजल गगरी छलकत जाए।

(*ii*) टेढ़ी खीर होना।

(*iii*) जान पर खेल जाना।

(*iv*) खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

उत्तर : (*i*) रामलाल की लाख रुपए की लाटरी क्या खुल गई, डींगे हाँकता फिर रहा है, इसी को कहते हैं- अध जल गगरी छलकत जाए।

(*ii*) आजकल सरकारी दफ्तरों से बिना रिश्वत दिए काम करवाना टेढ़ी खीर है।

(*iii*) रवि ने अपनी जान पर खेलकर दो डूबते बच्चों को वचाया है।

(*iv*) सारे दिन काम किया और शाम को मिले बीस रुपए। यह तो वही वात हो गई कि खोदा पहाड़ और निकली चुहिया।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे/लोकोक्ति से कीजिए :

(*i*) शरारती बच्चों को देखकर अध्यापक .... हो उठा।

(*ii*) एक जेबकतरा दूसरा चोर, दोनों में गहरी दोस्ती है। इन जैसों के लिए ही तो कहा गया है ....।

उत्तर : (*i*) आग-बबूला।

(*ii*) चोर-चोर मौसेरे भाई।

(*CBSE 2008 Delhi*)

प्रश्न : (*i*) दिए गए मुहावरों या लोकोक्तियों में किन्हीं दो का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(क) आकाश पाताल एक करना।

(ख) कलई खुलना।

(ग) आप भला तो जग भला।

(घ) साँप मरे न लाठी टूटे।

उत्तर : (क) उसने अच्छी नौकरी पाने के लिए **आकाश पाताल एक कर** दिए।

(ख) भरी सभा में नौकर की चोरी की **कलई खुल** गई।

(ग) मैं अपने कामों से मतलब रखता हूँ क्योंकि **आप भला तो जग भला।**

(घ) मैं उसे किसी काम से बाहर भेज दूँगा, फिर वह तुमसे लड़ ही नहीं पाएगा। इस प्रकार साँप भी मर जाएगा लाठी भी नहीं टूटेगी।

(*ii*) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे/लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(क) भारत शान्तिप्रिय देश है, पर वह शत्रु की ईं .... भी जानता है।

(ख) गलत रास्ता अपना कर कामयाब होने वालों की कभी-न-कभी .... जाती है।

उत्तर : (क) भारत शान्तिप्रिय देश है, पर वह शत्रु की **ईंट से ईंट बजाना** भी जानता है।

(ख) गलत रास्ता अपनाकर कामयाब होने वालों की कभी न कभी **कलई खुल** ही जाती है।

(*CBSE 2008 Outside*)

प्रश्न : रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे/लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(क) अनीता और सुनीता की .... जैसी दोस्ती है।

(ख) पत्थर के व्यापार में उसकी दिन .... उन्नति हो रही है।

उत्तर : (क) अनीता और सुनीता की **दाँत काटी रोटी** जैसी दोस्ती है।

(ख) पत्थर के व्यापार में **दिन दूनी, रात चौगुनी** उन्नति हो रही है।

(*CBSE Sample Paper-1*)

प्रश्न : (*i*) दिए गए मुहावरों अथवा लोकोक्तियों से किन्हीं दो को इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(क) घी के दीए जलाना

(ख) एक और एक ग्यारह होना

(ग) हाथ कंगन को आरसी क्या

(घ) बाट जोहना

उत्तर : (क) नेताजी के जेल से रिहा होने पर लोगों ने घी के दीए जलाए।

(ख) तुम मेरा साथ दो तो यह काम पूरा हो सकता है क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं।

(ग) जब यह नौकर चोरी की बात मान ही रहा है तब हाथ कंगन को आरसी की क्या जरूरत है।

(घ) मैं कल से तुम्हारी बाट जोह रहा हूँ।

(*ii*) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे/लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(क) रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के .... ।

(ख) बालक सिद्धार्थ बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी और चिंतनशील थे। उन्हें देखकर ही कहा जा सकता था ....।

उत्तर : (क) रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के **छक्के छुड़ा दिए।**

(ख) बालक सिद्धार्थ बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी और चिंतनशील थे। उन्हें देखकर ही कहा जा सकता था कि **होनहार बिरवान के होत चीकने पात।**

(CBSE Sample Paper-2)

प्रश्न : (*i*) दिए गए मुहावरों अथवा लोकोक्तियों में से किन्हीं दो को इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :

(क) आगे कुआँ पीछे खाई

(ख) सुध-बुध खोना

(ग) अंधे के हाथ बटेर लगना

(घ) आग-बबूला होना

उत्तर : (क) एक ओर बदमाश बंदूकें ताने खड़े थे तो दूसरी ओर गहरी खाई थी। मेरे लिए तो आगे कुआँ पीछे खाई वाली स्थिति थी।

(ख) पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर गीता अपनी सुध-बुध ही खो बैठी।

(ग) राकेश की लॉटरी क्या खुल गई अंधे के हाथ बटेर लग गई है।

(घ) तुम्हारी गालियाँ सुनकर अफसर आग-बबूला हो गया।

(*ii*) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे/लोकोक्ति द्वारा कीजिए :

(क) संजय ने जब से कपड़े का व्यापार किया है तब से उसकी .... ।

(ख) कक्षा में प्रथम आने के लिए रमेश ने .... ।

उत्तर : (क) संजय ने जब से कपड़े का व्यापार किया है तब से उसकी **पाँचों उँगलियाँ घी में हैं।**

(ख) कक्षा में प्रथम आने के लिए रमेश ने **एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया।**

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. **निम्नलिखित मुहावरे/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :**

   (*i*) अँगूठा दिखाना
   (*ii*) खोदा पहाड़, निकली चुहिया
   (*iii*) आकाश-पाताल एक करना
   (*iv*) चोर की दाढ़ी में तिनका
   (*v*) नौ-दो ग्यारह होना
   (*vi*) दूध का दूध, पानी का पानी
   (*vii*) जिसकी लाठी उसकी भैंस
   (*viii*) उल्टी गंगा बहाना
   (*ix*) आँख दिखाना
   (*x*) दाँतों तले उँगली दबाना

2. **खंड 'क' के साथ सही मिलान के लिए खंड 'ख' से मुहावरे चुनिए :**

'क'	'ख'
(क) अध्यापक को आते देखकर शरारती लड़के	नाक में दम करना
(ख) मैंने तो उसकी बड़ी मदद की थी पर मेरा काम पड़ने पर उसने	फूला न समाना
(ग) परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के समाचार से वह	अँगूठा दिखाना
(घ) रात भर लड़कों द्वारा शोर-गुल करने से	हाथ मलना
(ङ) गाडी छूट जाने पर वह	नौ-दो ग्यारह होना

3. निम्नलिखित अधूरे वाक्यों को उपयुक्त मुहावरों से पूरा कीजिए :
   (क) मैंने कोई कसूर नहीं किया फिर भी तुम व्यर्थ ही ——— रहे हो।
   (ख) रामलाल बड़ा चालाक है, अपना ——— होते ही गायब हो गया।
   (ग) मैं यहीं रहूँगा और तुम्हारी ——— दलता रहूँगा।
   (घ) अपना नाम सुनते ही मेरे ——— खड़े हो गए।
4. उपयुक्त लोकोक्तियों से अधूरे कथनों को पूरा कीजिए :
   (क) उसे आता-जाता तो कुछ है नहीं, व्यर्थ अपनी बड़ाई मारता फिरता है। उस पर तो यह कहावत लागू होती ——— घना।
   (ख) मैं तो उसे ठीक से जानता तक नहीं, फिर भी उसने मेरे घर डेरा जमा रखा है। यह तो वही बात हुई ——— मेहमान
   (ग) बचपन से ही सुभाषचन्द्र में क्रांतिकारी होने के लक्षण दिखाई दे रहे थे, क्योंकि ——— पात।
   (घ) मोहनसिंह को मकान बनाने के लिए धन चाहिए था कि अचानक एक लाख रुपया लाटरी में मिल गया, अंधा ———
   (ङ) जब भरी सभा में चोर तलाशने की बात कही गई तो कुशल घबराने लगा, लगता है ——— तिनका।

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा आयोजित नवीं कक्षा हिंदी ('ए' कोर्स) की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए मुहावरे संबंधी प्रश्न

1. केवल दो मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :
   (*i*) **आकाश के तारे तोड़ना** = असंभव कार्य को संभव कर दिखाना।
   मैं तुम्हारे लिए आकाश के तारे तोड़कर ला सकता हूँ।
   (*ii*) **कंगाली में आटा गीला** = गरीबी में और नुकसान हो जाना।
   इस समय मैं मुसीबत में फँसा हूँ और ऊपर से चोरी हो गई। यह तो कंगाली में आटा गीला वाली बात हो गई।
   (*iii*) **आम के आम गुठलियों के दाम** = दोहरा लाभ।
   मैंने पेड़ तो छाया के लिए लगाया था, अब उसमें फल भी लगने लगे—आम के आम, गुठलियों के दाम।
   (*iv*) **चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए** = शरीर को भले ही हानि सहनी पड़े पर पैसा खर्च न हो जाए।
   रामलाल से चंदा माँगने आए हो। इनकी तो यह दशा है—चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।
2. एक मुहावरे तथा एक लोकोक्ति का अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए :
   (*i*) **न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी** = असंभव शर्त लगा देना।
   रवि ने विवाह के लिए विदेश जाने का खर्च देने की शर्त लगाई है। यह तो वही बात हुई कि न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।
   (*ii*) **उड़ती चिड़िया पहचानना** = मन के भाव को जान लेना।
   तुम मुझसे कुछ मत छिपाना, मैं उड़ती चिड़िया को पहचानता हूँ।
   (*iii*) **अधजल गगरी छलकत जाए** = थोड़ा ज्ञान या धन रखने वाले अधिक दिखावा करते हैं।
   राकेश ने थोड़ी-सी संस्कृत क्या सीख ली, वह स्वयं को संस्कृत का पंडित समझने लगा है, इसी को कहते हैं—अधजल गगरी छलकत जाए।
   (*iv*) **आकाश-पाताल एक करना** = बहुत परिश्रम करना।
   गीता ने परीक्षा में प्रथम श्रेणी के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया था।
3. केवल दो मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर अपने बनाए वाक्य में प्रयोग भी कीजिए :
   रंगा सियार, नमक मिर्च लगाना, आग बबूला होना, अँगूठा दिखाना, नदी में रहकर मगर से वैर।

उत्तर (*i*) **रंगा सियार** = वास्तविकता से परे।
   इस व्यक्ति पर भरोसा मत करना, क्योंकि यह तो पूरा रंगा सियार है।
   (*ii*) **नमक-मिर्च लगाना** = बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।
   तुम सामान्य-सी बात को भी नमक-मिर्च लगाकर बताते हो और झगड़ा करवा देते हो।
   (*iii*) **आग बबूला होना** = बहुत क्रोधित हो जाना।
   मेरी खरी-खरी बातें सुनकर वह आग-बबूला हो गया।

(iv) **अँगूठा दिखाना** = साफ मना कर देना।
मैंने राजेश से अपने रुपए माँगे तो उसने साफ अँगूठा दिखा दिया।

(v) **नदी में रहकर मगर से वैर** = जहाँ रहना उन्हीं से दुश्मनी पालना।
मैं इस नये अफसर से कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि नदी में रहकर मगर से वैर नहीं किया जा सकता।

4. केवल दो मुहावरों के अर्थ लिखिए :

(i) आटे-दाल का भाव मालूम होना। (ii) ईद का चाँद होना। (iii) थाली का बैंगन।

उत्तर : (i) जीवन की वास्तविकता से परिचित होना।
(ii) बहुत दिनों बाद दिखाई देना।
(iii) सिद्धांतहीन व्यक्ति।

5. किन्हीं दो मुहावरों/लोकोक्तियों की पूर्ति कीजिए :

(i) कोल्हू **का बैल** होना। (ii) **नाच न जाने** आँगन टेढ़ा (iii) न रहेगा बाँस, न **बजेगी बाँसुरी** ।

6. केवल दो मुहावरों के अर्थ लिखकर उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) **इधर कुआँ उधर खाई** = दोनों ओर संकट होना।
मैं चोर के विरुद्ध गवाही देता हूँ तो उसके आदमी परेशान करते हैं और चुप रहने पर पुलिस तंग करती है। मेरे लिए तो इधर कुआँ उधर खाई वाली स्थिति है।

(ii) **अक्ल का दुश्मन** = महामूर्ख।
तुम तो पूरे अक्ल के दुश्मन हो, स्थिति को समझने का प्रयास ही नहीं करते।

(iii) **एड़ी-चोटी का जोर लगाना** = पूरी ताकत लगा देना।
मैं इस कार्य को समय पर पूरा करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा हूँ।

(iv) **तिल का ताड़ बनाना** = छोटी बात को बड़ा बना देना।
तुम्हें झगड़ा करने के लिए तिल का ताड़ बनाने की बुरी आदत है।

नवीं कक्षा हेतु मुहावरों से संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. सपेरे साँप को .... अच्छी तरह जानते हैं। वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति उचित मुहावरे द्वारा कीजिए।
(क) मौत के घाट उतारना (ख) वश में करना।
(ग) कफ़न बाँधना (घ) आँखों में बसाना

2. 'जुट जाना' मुहावरे का अर्थ है :
(क) जुड़ जाना (ख) मिल जाना
(ग) किसी काम में मुस्तैदी से लगना (घ) किसी काम को दूसरे काम से जोड़ देना

3. 'अक्ल पर पत्थर पड़ना' मुहावरे का सही अर्थ है :
(क) बुद्धि मारी जाना (ख) अक्ल आ जाना (ग) पत्थर पड़ने लगना

4. आँखों में 'खटकना' मुहावरे का सही अर्थ है–
(क) बुरा लगना (ख) चुभना (ग) सुहाना

5. 'आकाश-पाताल एक करना' मुहावरे का अर्थ है–
(क) पास-पास ले आना (ख) जी-तोड़ परिश्रम करना (ग) असंभव को संभव करना

6. 'आँखें खुलना' मुहावरे का सही अर्थ है ?
(क) नींद खुलना (ख) होश आना (ग) सो जाना

अध्याय 20

शब्द-ज्ञान

(Words Discretion)

● पर्यायवाची ● विलोम ● अनेकार्थी ● श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

शब्द-प्रयोग में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए उसके विभिन्न रूपों का ज्ञान होना आवश्यक है।

अर्थ की दृष्टि से विभिन्न शब्द-रूप निम्नांकित हैं :

1. पर्यायवाची शब्द
2. विलोम शब्द
3. अनेकार्थी शब्द
4. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द
5. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
6. विविध शब्द

1. पर्यायवाची शब्द *(Synonyms)*

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

परंतु स्मरणीय बात यह है कि अर्थ में सामनता होते हुए भी पर्यायवाची शब्द प्रयोग में सर्वथा एक-दूसरे का स्थान नहीं ले सकते। जैसे—

मृतात्माओं के तर्पण के लिए 'जल' शब्द का प्रयोग उपयुक्त है, 'पानी' का नहीं। जबकि दोनों समानार्थक (*पर्यायवाची*) हैं। प्रत्येक पर्यायवाची अपनी अर्थगत विशिष्टता लिए हुए होता है।

यहाँ कुछ प्रमुख शब्दों के पर्यायवाची शब्द दिए जा रहे हैं :

1	**अंधकार**	अँधेरा	तम	तिमिर	तमिस्र
2	**अग्नि**	आग	पावक	दहन	अनल
3	**अमृत**	पीयूष	सुधा	अमिय	सोम
4	**अश्व**	घोड़ा	वाजी	हय	तुरंग
5	**असुर**	दानव	दैत्य	राक्षस	निशाचर
6	**अहंकार**	दंभ	घमंड	दर्प	अभिमान
7	**अतिथि**	अभ्यागत	आगंतुक	मेहमान	पाहुना
8	**आँख**	चक्षु	नेत्र	लोचन	नयन
9	**आकाश**	गगन	व्योम	नभ	अंबर
10	**आभूषण**	अलंकार	भूषण	गहना	जेवर
11	**आनंद**	आमोद	प्रमोद	हर्ष	उल्लास
12	**इंद्र**	सुरेंद्र	देवेंद्र	देवेश	सुरपति
13	**इच्छा**	चाह	साध	अभिलाषा	कामना
14	**ईश्वर**	भगवान	परमात्मा	जगदीश	परमेश्वर
15	**उन्नति**	प्रगति	उत्थान	विकास	उत्कर्ष
16	**उपवन**	उद्यान	वाटिका	बाग	बगिया
17	**उपेक्षा**	अवहेलना	तिरस्कार	फटकार	अनादर
18	**कमल**	जलज	अंबुज	नीरज	पंकज
19	**कपड़ा**	वस्त्र	पट	अंबर	वसन

20	कामदेव	मदन	मनसिज	मनोज	काम
21	किनारा	तट	तीर	कगार	कूल
22	किरण	अंशु	कर	रश्मि	मरीचि
23	कृष्ण	श्याम	घनश्याम	गोपाल	केशव
24	कोयल	पिक	कोकिला	श्यामा	वसंतदूत
25	कुबेर	किन्नरेश	यक्षराज	धनपति	धनंद
26	गंगा	अलकनंदा	देवनदी	भागीरथी	सुरसरिता
27	गणेश	गणपति	विनायक	गजानन	लंबोदर
28	घर	निकेतन	गृह	आलय	भवन
29	घमंड	अहंकार	दंभ	दर्प	अभिमान
30	चंद्र	चंद्रमा	हिमांशु	राकेश	निशाकर
31	चमक	आभा	ज्योति	विभा	दीप्ति
32	चाँदनी	ज्योत्स्ना	कौमुदी	चंद्रिका	अमृतरंगिणी
33	जंगल	वन	कांतार	कानन	अरण्य
34	जल	पानी	पय	नीर	अंबु
35	तलवार	असि	करवाल	चंद्रहास	खड्ग
36	तालाब	जलाशय	सरोवर	ताल	सर
37	तारा	नखत	नक्षत्र	तारिका	तारक
38	तीर	वाण	शर	इषु	शिलीमुख
39	दुख	कष्ट	शोक	व्यथा	वेदना
40	दुर्गा	चंडी	चंडिका	भवानी	काली
41	दुष्ट	कुटिल	नीच	खल	अधम
42	दूध	गोरस	पय	क्षीर	दुग्ध
43	दिन	दिवस	वासर	वार	दिवा
44	देवता	सुर	देव	अमर	निर्जर
45	नदी	सरिता	सरित	तरंगिणी	सलिला
46	नाव	नौका	तरणी	तरी	डोंगी
47	नौकर	सेवक	दास	परिचारक	अनुचर
48	पक्षी	खग	नभचर	पतंग	विहग
49	पर्वत	पहाड़	गिरि	शैल	नग
50	पत्थर	पाषाण	पाहन	उपल	प्रस्तर
51	पति	कांत	स्वामी	नाथ	भर्ता
52	पत्नी	भार्या	दारा	गृहिणी	वधू
53	पवन	वायु	हवा	बयार	समीर
54	पुत्र	आत्मज	बेटा	लड़का	सुत
55	पृथ्वी	भू	धरा	धरती	वसुधा
56	प्रेम	प्यार	स्नेह	ममता	अनुराग
57	पार्वती	उमा	भवानी	दुर्गा	रुद्राणी
58	पत्ता	दल	पत्र	वर्ण	पात

					चमक
59	प्रकाश	ज्योति	रोशनी	प्रभा	चमक
60	पुष्प	सुमन	प्रसून	कुसुम	फूल
61	बालक	बच्चा	शिशु	बाल	लड़का
62	बंदर	कपि	वानर	मर्कट	हरि
63	बिजली	तड़ित	चपला	विद्युत	चंचला
64	ब्रह्मा	विधाता	प्रजापति	चतुरानन	विधि
65	भौंरा	मधुकर	मधुप	भँवर	भ्रमर
66	महादेव	शंकर	भूतनाथ	त्रिपुरारि	त्रिलोचन
67	मनुष्य	मानव	मनुज	आदमी	नर
68	माता	अंबा	अंबिका	धात्री	जननी
69	मित्र	दोस्त	सखा	सहचर	मीत
70	मृत्यु	निधन	मौत	देहावसान	शरीरान्त
71	मेघ	बादल	जलद	नीरद	जलधर
72	यमराज	धर्मराज	जीवनपति	सूर्यपुत्र	हरि
73	युद्ध	संग्राम	लड़ाई	संघर्ष	समर
74	रात	रजनी	तमसा	विभावरी	यामिनी
75	राजा	भूप	महीपति	सम्राट्	नृप
76	रावण	दशानन	दशकंध	लंकेश	दशकंठ
77	राक्षस	निशाचर	दनुज	रजनीचर	तमीचर
78	लक्ष्मी	कमला	विष्णुप्रिया	हरिप्रिया	रमा
79	वृक्ष	पादप	पेड़	विटप	द्रुम
80	विष्णु	नारायण	केशव	जनार्दन	लक्ष्मीपति
81	समुद्र	नीरधि	सागर	जलधि	वारिधि
82	सरस्वती	वागेश्वरी	भारती	महाश्वेता	शारदा
83	संसार	जगत्	विश्व	दुनिया	भव
84	साँप	नाग	भुजंग	विषधर	व्याल
85	सिंह	केसर	वनराज	मृगराज	मृगेंद्र
86	स्त्री	कामिनी	सुंदरी	महिला	नारी
87	सेवक	भृत्य	दास	चाकर	नौकर
88	सूर्य	दिनकर	दिवाकर	प्रभाकर	आदित्य
89	सोना	स्वर्ण	कनक	कंचन	सुवर्ण
90	सेना	कटक	वाहिनी	चमू	फौज
91	सुंदर	चारु	मनोहर	ललित	कमनीय
92	समूह	टोली	झुंड	गण	दल
93	स्वर्ग	सुरलोक	देवलोक	इंद्रलोक	नाक
94	शत्रु	रिपु	वैरी	अरि	अराति
95	शक्ति	बल	विक्रम	ताकत	पराक्रम
96	शरीर	देह	तन	तनु	काया
97	शोभा	कांति	छटा	प्रभा	द्युति
98	हाथ	कर	पाणि	हस्त	
99	हाथी	नाग	हस्ती	दंत	करी
100	हिरण	मृग	कुरंग	सारंग	हरिण

2. विलोम शब्द *(Antonyms)*

किसी शब्द से विपरीत अर्थ देने वाला शब्द उसका विलोम या विपरीतार्थक कहा जाता है। इन्हें उल्टे अर्थ वाले शब्द भी कहा जाता है। तत्सम शब्द का विलोम तत्सम और तद्‌भव शब्द का विलोम तद्‌भव में ही देना चाहिए।

यहाँ कुछ प्रचलित विलोम शब्दों की सूची दी जा रही है :

शब्द	विलोम
अनिवार्य	ऐच्छिक
अथ	इति
इहलोक	परलोक
अमृत	विष
उत्कर्ष	अपकर्ष
उदार	अनुदार
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अनुकूल	प्रतिकूल
अनुरक्त	विरक्त
उपकार	अपकार
अनुराग	विराग
अनुज	अग्रज
आगामी	गत
उपाय	निरुपाय
आदि	अंत
उपरिलिखित	निम्नलिखित
उग्र	शांत
उत्थान	पतन
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
आयात	निर्यात
एक	अनेक
आलस्य	स्फूर्ति
ऐच्छिक	अनैच्छिक
अंधकार	प्रकाश
ईश्वर	अनीश्वर
अर्थ	अनर्थ
उदय	अस्त
उधार	नकद
आग्रह	दुराग्रह
उष्ण	शीत
आशा	निराशा
एकता	अनेकता
आर्य	अनार्य
अल्प	अधिक
इच्छा	अनिच्छा
उचित	अनुचित
अल्पायु	दीर्घायु
उन्नति	अवनति
अभिमान	नम्रता
उपयोग	अनुपयोग
आकर्षण	विकर्षण
उद्यमी	आलसी
आकाश	पाताल
अधिक	न्यून
आदान	प्रदान
उतार	चढ़ाव
दाता	याचक
क्रिया	प्रतिक्रिया
दोषी	निर्दोष
खेद	प्रसन्नता
धनी	निर्धन
गमन	आगमन
जंगली	पालतू
नवीन	प्राचीन
गुप्त	प्रकट
निकट	दूर

शब्द	विलोम
उपस्थित	अनुपस्थित
उत्तर	अनुत्तर
आदर	अनादर
अँधेरा	उजाला
अपना	पराया
उत्कृष्ट	निकृष्ट
आय	व्यय
ऊँचा	नीचा
स्वाधीन	पराधीन
आहार	निराहार
कठोर	कोमल
कृत्रिम	स्वाभाविक
भाव	अभाव
मलिन	निर्मल
सजीव	निर्जीव
मित्र	शत्रु
सुगंध	दुर्गंध
मौखिक	लिखित
संक्षेप	विस्तार
वादी	प्रतिवादी
कटु	मधुर
कीर्ति	अपकीर्ति
दयालु	निर्दय
कृपालु	क्रूर
देव	दानव
खरा	खोटा
दुराचारी	सदाचारी
गरीब	अमीर
धीर	अधीर
निर्मल	मलिन
गुण	अवगुण
नश्वर	अनश्वर
मोक्ष	बंधन
वृद्धि	क्षय
आरंभ	अंत

शब्द	विलोम
निरर्थक	सार्थक
प्रत्यक्ष	परोक्ष
घृणा	प्रेम
न्याय	अन्याय
चर	अचर
जड़	चेतन
पूर्ण	अपूर्ण
जय	पराजय
जीवन	मरण
बुरा	भला
बुराई	भलाई
भद्र	अभद्र
घात	प्रतिघात
पंडित	मूर्ख
प्रवृत्ति	निवृत्ति
निंदा	स्तुति
चल	अचल
पतिव्रता	कुलटा
छूत	अछूत
जंगम	स्थावर
पुरस्कार	दंड
जटिल	सरल
बाढ़	सूखा
तरुण	वृद्ध
मितव्यय	अपव्यय
भारी	हल्का
मनुष्यता	पशुता
सरस	नीरस
मान	अपमान
सामिष	निरामिष
मिथ्या	सत्य
सौभाग्य	दुर्भाग्य
जन्म	मृत्यु
बंधन	मुक्ति
ठोस	तरल

शब्द	विलोम
कायर	वीर
कड़वा	मीठा
आवाहन	विसर्जन
कर्म	निष्कर्म
कृतज्ञ	कृतघ्न
दिन	रात
क्रय	विक्रय
दुर्लभ	सुलभ
धर्म	अधर्म
गहरा	उथला
नख	शिख
गुरु	शिष्य
निरक्षर	साक्षर
पक्ष	विपक्ष
नूतन	पुरातन
चंचल	स्थिर
पवित्र	अपवित्र
छल	निश्छल
पाप	पुण्य
जल	थंल
दुर्भाग्य	सौभाग्य
भद्र	अभद्र
वादी	प्रतिवादी
सार्थक	निरर्थक
वैध	अवैध
सुगंध	दुर्गंध
साकार	निराकार
यश	अपयश
सदाचार	दुराचार

शब्द	विलोम
भूत	भविष्यत्
यश	अपयश
मानव	दानव
सगुण	निर्गुण
मिलन	विछोह
सुर	असुर
मूक	वाचाल
रुग्ण	स्वस्थ
मंगल	अमंगल
हास्य	रुदन
रक्षक	भक्षक
राजा	रंक
ज्ञान	अज्ञान
वरदान	अभिशाप
विजय	पराजय
विरोध	समर्थन
शुष्क	आर्द्र
क्षम्य	अक्षम्य
हर्ष	शोक
हिंसा	अहिंसा
आदर्श	यथार्थ
आसक्ति	विरक्ति
तम	प्रकाश
चर	अचर
शांत	अशांत
सक्षम	अक्षम
संधि	विग्रह
रुदन	हास
संयोग	वियोग

3. अनेकार्थी शब्द *(Words with Various Meanings)*

हिंदी में ऐसे अनेक शब्द हैं, जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। इनका प्रयोग संदर्भ के अनुसार किया जाता है। प्रयोग के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न अर्थ देने वाले शब्द अनेकार्थी कहलाते हैं।

ऐसे कुछ शब्दों के उदाहरण प्रस्तुत हैं :

क्र.सं.	शब्द	अनेक अर्थ
1	अर्थ	धन, के लिए, प्रयोजन, कारण।
2	अर्क	सूर्य, रस, पंडित, रविवार, आक का पौधा।
3	अज	बकरा, ब्रह्मा, शिव।
4	अनंत	आकाश, ईश्वर, शेषनाग, अंतहीन।
5	अंबर	वस्त्र, आकाश, एक सुगंधित पदार्थ।
6	अरुण	सूर्य का सारथी, लाल।
7	अक्षर	वर्ण, शिव, ब्रह्मा, मोक्ष, सत्य, स्वर-व्यंजन।
8	अमृत	अन्न, दूध, पारा, जल, स्वर्ण।
9	अब्ज	शंख, कपूर, कमल, चंद्रमा।
10	अग्र	आगे का, पहले, श्रेष्ठ, सिरा।
11	अपेक्षा	आशा, आवश्यकता।
12	अवकाश	अवसर, छुट्टी।
13	अवधि	निर्धारित समय सीमा, काल।
14	अलि	भौंरा, सखि, कोयल।
15	आराम	बगीचा, विश्राम।
16	आत्मा	परमात्मा, सूर्य, अग्नि।
17	कर्ण	कान, कुंती का पुत्र।
18	कल	आगामी, बीता हुआ दिन, सुंदर, मशीन।
19	कनक	सोना, धतूरा, गेहूँ।
20	काल	समय, मृत्यु।
21	काम	कामदेव, कार्य।
22	कुल	सब, वंश।
23	ग्रहण	चाँद-सूर्य का ग्रहण, लेना।
24	गुण	खूबी, स्वभाव, रस्सी, शील।
25	गुरु	शिक्षक, बड़ा, भारी।
26	गौ	इंद्रिय, गाय, पृथ्वी।
27	घट	घड़ा, शरीर, मन।
28	घन	बादल, घना, हथौड़ा।

29	घर	मकान, कुल, कार्यालय।
30	चीर	वस्त्र, रेखा, चीरना (*क्रिया*)।
31	जीवन	जल, प्राण, वायु।
32	तीर	किनारा, बाण।
33	जलज	कमल, शंख, मोती, मछली।
34	तनु	पतला, सुंदर, कोमल।
35	तरणि	सूर्य, नाव, उद्धार।
36	नभ	आकाश, शून्य, खाली स्थान, शिव।
37	पट	वस्त्र, परदा, चित्रपट, कपाट।
38	पशु	जीव मात्र, चार पैरों वाले प्राणी, मूर्ख।
39	पुरंदर	इंद्र, विष्णु, चोर।
40	पतंग	सूर्य, कीड़ा, आकाश में उड़ाने वाली पतंग।
41	पद	पैर, स्थान, रक्षा, उपाधि।
42	पोत	नाव, बच्चा, स्वभाव, वस्त्र।
43	पत्र	चिट्ठी, पत्ता, शंख।
44	पय	दूध, पानी।
45	प्राण	वायु, जीवन, श्वास, बल, शक्ति।
46	भानू	सूर्य, विष्णु, किरण, राजा।
47	मत	राय, वोट, संप्रदाय, न करना।
48	रस	खाने का स्वाद, तत्व/सार, आनंद, प्रेम।
49	विधु	चंद्रमा, विष्णु, ब्रह्मा।
50	श्यामा	यमुना नदी, रात, स्त्री, कोयल।
51	सूत	धागा, सारथी।
52	हरि	विष्णु, सिंह, सर्प, मेंढक, बंदर, पर्वत।
53	मुद्रा	मोहर, सिक्का, अँगूठी, मुख-मुद्रा।
54	रक्त	लहू, केसर, ताँबा, कमल, सिंदूर।
55	सारंग	मोर, सर्प, हिरण, सिंह, हाथी, स्त्री।
56	स्नेह	प्रेम, तेल, कोमलता, चिकनाहट।

4. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द *(Words Similar with Different Meaning)*

कुछ शब्द उच्चारण और सुनने में समान प्रतीत होते हैं, पर उनमें अर्थगत भिन्नता होती है। वे आकार और ध्वनि की से तो मिलते-जुलते हैं किंतु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं। इन्हें श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

गृह (घर) और ग्रह (नक्षत्र) ऐसा ही शब्द-युग्म है। यहाँ इसी प्रकार अन्य प्रचलित उदाहरण दिए जा रहे हैं-

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
1.	अंश	भाग	जायदाद में से मेरा अंश मुझे दे दीजिए।
	अंस	कंधा	मैं पिता के अंस पर सिर रखकर रोया।
	अंशु	किरण	सूर्य को अंशुमाली भी कहा जाता है।
2.	अंत	समाप्त	इस समस्या का अंत होने वाला है।
	अंत्य	अंतिम, नीच	अंत्योदय योजना में गरीब को सस्ता अनाज दिया जाता है।
3.	अंक	गोद	बच्चा माँ की अंक में सो रहा है।
	अंग	देह	मेरे सभी अंग ठीक हैं।
4.	अन्न	अनाज	अन्न हमारा पेट भरता है।
	अन्य	दूसरा	इसका अन्य उपाय सोचिए।
5.	अनल	आग	अनल धधक रहा है।
	अनिल	हवा	सुगंधित अनिल बह रहा है।
6.	असित	काला	यह असित रंग का वस्त्र है।
	अशित	खाया हुआ	यह गेहूँ अशित है।
7.	अंगना	स्त्री	अंगना घर की शोभा होती है।
	अँगना	घर का आँगन	घर के अँगना को साफ रखो।
8.	अंदर	भीतर	घर के अंदर चलिए।
	अंतर	भेद	दोनों बातों का अंतर समझाइए।
9.	अंबुज	कमल	अंबुज जल में खिलता है।
	अंबुधि	सागर	अंबुधि का जल खारा होता है।
10.	अणु	कण, न्यून	अणु बम बहुत घातक होता है।
	अनु	बाद, पीछा	आप मेरा अनुकरण कीजिए।
11.	अचर	स्थावर	पर्वत अचर होता है।
	अचिर	नित्य, नवीन	यह प्रकृति अचिर है।
12.	अपत	पापी	भगवान अपत का भी उद्धार करते हैं।
	अपति	बिना पति के	गीता अपति होकर यौवनकाल कैसे काटेगी ?
13.	अजर	देवता	अजर की पूजा की जाती है।
	अजिर	आँगन	अजिर में शिशु की किलकारी मन को भाती है।
14.	अशक्त	शक्तिहीन	अशक्त व्यक्ति कोई काम ठीक से नहीं कर सकता।
	आसक्त	मोहित	रमेश नंदिनी के प्रति आसक्त है।
15.	अगम	जहाँ जाना असंभव हो	बर्फीली चोटियाँ अगम हैं।
	आगम	उत्पत्ति, शास्त्र	धर्मग्रंथों को आगम भी कहते हैं।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
16.	अशन	भोजन	ठीक प्रकार से अशन करो।
	आसन	बैठने की वस्तु	आसन पर बैठकर भजन करो।
17.	अशनि	वज्र	अशनिपात से धरती भी हिल जाती है।
	आसन्न	समीप	उसकी मृत्यु आसन्न है।
18.	अर्ध	आधा	अर्ध मन से किया गया काम पूरा नहीं होता।
	अर्घ्य	पूजा का जंल	शिवजी को अर्घ्य चढ़ाओ।
19.	अभिज्ञ	जानने वाला	मैं तुम्हारी स्थिति से भली प्रकार अभिज्ञ हूँ।
	अनभिज्ञ	अनजान	तुम इस समस्या से अनभिज्ञ हो अतः हल नहीं कर सकते।
20.	अवलंब	सहारा	मुझे तो तुम्हारा ही अवलंब है।
	अविलंब	शीघ्र	सूखा पीड़ितों को अविलंब सहायता पहुँचाई गई।
21.	अपेक्षा	तुलना में	गीता की अपेक्षा सीता सुंदर है।
	उपेक्षा	तिरस्कार, निरादर	तुम्हें गरीबों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
22.	अविराम	लगातार	लंगर कल प्रातः से अविराम चल रहा है।
	अभिराम	सुंदर	यह दृश्य अत्यंत अभिराम है।
23.	आकर	खान	यहाँ लौह अयस्क की बहुत आकर हैं।
	आकार	रूप	उसका आकार ठीक-ठाक है।
24.	अंतर्गत	सम्मिलित	तुम्हारी समस्या मेरे अधिकारों के अंतर्गत आती है।
	अंतर्गति	चित्तवृत्ति	उसकी अंतर्गति साफ नहीं है।
25.	अभिनय	नाट्यक्रिया	इस विद्यालय में अभिनय करना सिखाया जाता है।
	अभिनव	नवीन	यह प्रयोग अभिनव है।
26.	अंबर	आकाश	अंबर में अनगिनत तारे हैं।
	अंबार	ढेर	सेठ के यहाँ धन का अंबार लगा है।
27.	अभय	निर्भय	ईश्वर सभी का अभय करता है।
	अभया	दुर्गा	अभया की पूजा करो।
28.	अमल	शुद्ध	पर्वत अमल-धवल होते हैं।
	अमला	दुर्गा	अमला की पूजा की जाती है।
29.	आर्त	दुःखी	स्त्री ने आर्त स्वर में पुकारा।
	आर्द्र	गीला	उसके नयन आर्द्र हो गए।
30.	अयन	घर, आश्रम	गुरु का अयन सुंदर है।
	अयना	मूर्ख	रवि तो अयना है, उसे समझाना व्यर्थ है।
31	अवधी	एक भाषा	'रामचरितमानस' की रचना अवधी भाषा में हुई है।
	अवधि	समय	बिल जमा करने की अवधि बीत गई है।
32.	अपचार	अपराध	उसका अपचार अक्षम्य है।
	उपचार	इलाज	डॉक्टर अच्छा उपचार कर रहे हैं।
33.	अरि	शत्रु	अरि की सेना आ रही है।
	आरी	एक औजार	आरी से लकड़ी काटी जाती है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
34.	अन्याय	अनुचित	तुम मेरे साथ अन्याय कर रहे हो।
	अन्यान्य	दूसरे-दूसरे	तुम असली काम को भूलकर अन्यान्य कामों में लगे रहते हो।
35.	अतल	गहरा	खाई की अतल गहराई में उतर जाओ।
	अतुल	जिसके समान कोई दूसरा न हो	उसका अतुल रूप प्रशंसनीय है।
36.	अश्व	घोड़ा	इस अश्व की चाल तेज है।
	अश्म	पत्थर	यह अश्म बहुत कीमती है।
37.	आदि	प्रारंभ	इतिहास का आदि काल भ्रमपूर्ण है।
	आदी	अभ्यस्त	वह खेलने का आदी है।
38.	आवृत्ति	दोहराना	अपने पाठ की भली प्रकार आवृत्ति करो।
	आवृत्त	घिरा हुआ	यह घर लताओं से आवृत्त है।
39.	अलिक	भाल	उसके अलिक पर लाल टीका है।
	अलीक	अमर्यादा	वह अलीक का उल्लंघन कर रहा है।
	अलक	बाल	गीता की अलकें घनी काली हैं।
40.	अक्ष	धुरी	पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है।
	अक्षि	आँख	उसकी अक्षि में पीड़ा है।
41.	अविहित	अनुचित	उसका कथन सर्वथा अविहित है।
	अभिहित	कहा हुआ	यह मंत्र ऋषि द्वारा अभिहित है।
42.	अत्र	यहाँ	अत्र कुशल है।
	अत्रि	एक ऋषि	अत्रि ऋषि बहुत ज्ञानी थे।
43.	अवसाद	विषाद	मेरे अवसाद का हल निकलेगा।
	अवसान	अंत	संसद सत्र का अवसान हो गया।
	आसान	सरल	यह कार्य बहुत आसान है।
44.	आमरण	मरते समय तक	वह आमरण अनशन पर बैठ गया।
	आभरण	गहना	स्त्रियों को आभरण प्रिय होते हैं।
45.	अपर्ण	बिना पत्ते का	पतझड़ में वृक्ष अपर्ण हो जाते हैं।
	अपर्णा	पार्वती	अपर्णा की पूजा की जाती है।
46.	अलि	भ्रमर	फूलों पर अलि मँडरा रहे हैं।
	आली	सखी	आली दुःख में ढाढस बँधाती है।
47.	अवरोधी	रोकने वाला	इस रास्ते में कई अवरोधी लगे हैं।
	अविरोधी	जो विरोध न करे	अविरोधी स्थिति सभी को भाती है।
48.	अभियान	युद्ध-यात्रा	सैनिक शत्रु-नाश अभियान पर चल पड़े हैं।
	अभिनय	एक्टिंग, नाट्य कला	यह व्यक्ति अभिनय में बड़ा कुशल है।
49.	अविलेय	जो घुले नहीं	यह पदार्थ पानी में अविलेय है।
	अवलि	पंक्ति	दीपों की अवलि को दीपावली कहते हैं।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
50.	आभास	अंदाजा	मुझे तुम्हारे दुःखी होने का आभास तक न था।
	आवास	रहने का स्थान	यहाँ सुंदर आवास बनेंगे।
51.	आहूत	बुलाया गया	संसद-सत्र अगले सप्ताह के लिए आहूत किया गया है।
	आहुति	होम	यज्ञ में आहुति डाली जाती है।
52.	आरति	विपत्ति, दुःख	आरति की घड़ी में कोई काम नहीं आता।
	आरती	धूप, दीप घुमाना	भगवान की आरती उतारो।
53.	अमित	बहुत	सेठजी के पास अमित धन है।
	अमीत	शत्रु	अमीत से सावधान रहो।
54.	अनिष्ट	संकट	मुझे अनिष्ट होने की आशंका हो रही है।
	अभीष्ट	जो इष्ट हो	मुझे अभीष्ट की प्राप्ति हो गई।
55.	असाधना	अनिच्छा शक्ति	असाधना से किए गए कार्य में सफलता नहीं मिलती।
	आराधना	पूजन	ईश्वर की आराधना करो।
56.	अरूप	जिसका रूप न हो	ईश्वर अरूप भी माना जाता है।
	अनुरूप	के समान	मेरे कहने के अनुरूप कार्य करो।
57.	अपकार	बुराई	किसी का अपकार मत करो।
	उपकार	भलाई	दूसरों का उपकार करना अच्छी बात है।
58.	अथ	प्रारंभ	इस कथा का अथ रोचक है।
	अर्थ	मतलब	प्रारंभ शब्द का अर्थ बताओ।
		धन	यह समस्या अर्थ संबंधी है।
59.	अचल	पर्वत	पर्वत को अचल भी कहते हैं।
	अचला	पृथ्वी	इस अचला पर विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं।
60.	असमान	जो बराबर न हो	भारतवर्ष में आय का असमान वितरण है।
	आसमान	आकाश	आसमान में बादल छाए हुए हैं।
61.	ओर	तरफ	वह पश्चिम दिशा की ओर गया।
	और	तथा, दूसरा	राम और श्याम भाई-भाई हैं।
62.	अपरा	दूसरी	अपरा स्त्री से प्रेम करना व्यर्थ है।
	अपार	जिसे पार न किया जा सके	यह नदी अपार प्रतीत होती है।
63.	ईति	दैवी बाधा	इस कार्य की सफलता में ईति आ रही है।
	इति	समाप्त	इस पुस्तक की इति होने वाली है।
64.	इतर	भिन्न, दूसरा	इस काम को करने वाला मित्रों से इतर व्यक्ति था।
	इत्र	सुगंधित द्रव्य	शरीर की दुर्गंध दूर करने के लिए इत्र का प्रयोग करो।
65.	उद्यत	तैयार	वह परीक्षा देने को उद्यत प्रतीत होता है।
	उद्धत	उद्दंड	इस उद्धत बालक को दंड जरूर मिलेगा।
66.	उपस्थित	हाजिर	स्वागत कक्ष में कोई व्यक्ति उपस्थित नहीं है।
	उपस्थिति	हाजिरी	कल तुम्हारी उपस्थिति अनिवार्य है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
67.	उपयुक्त	ठीक	विजय इस पद के लिए उपयुक्त उम्मीदवार है।
	उपर्युक्त	ऊपर कहा गया	उपर्युक्त कथन स्मरणीय है।
68.	उद्यम	मेहनत	उद्यम के बिना काम सफल नहीं होता।
	ऊधम	उपद्रव	बच्चे ऊधम मचा रहे हैं।
69.	उद्धार	मुक्ति	भगवान मेरा उद्धार करो।
	उधार	ऋण	उधार लेना बुरी आदत है।
70.	उदार	दानी, विशाल हृदय	भगवान राम बहुत उदार थे।
	उदर	पेट	मनोज के उदर में आज दर्द है।
71.	उर	हृदय	उसके उर में दूसरों के लिए प्यार है।
	उरु	जंघा	उसके उरु में दर्द है।
72.	कटक	सेना	हमारी कटक शक्तिशाली है।
	कटुक	कड़ुवा	किसी को कटुक वचन मत बोलो।
73.	कहा	कहना	अध्यापक ने काम पूरा करने को कहा।
	कहाँ	किसी स्थान पर	यह मंदिर कहाँ पर स्थित है ?
74.	कुल	वंश	वह उच्च कुल में पैदा हुआ था।
	कूल	किनारा	ताजमहल यमुना के कूल पर है।
75.	कृति	रचना	इस कृति को मैंने लिखा है।
	कृती	पुण्यात्मा	वह बहुत कृती है।
76.	कृपाण	तलवार	उसकी कृपाण बहुत तेज है।
	कृपण	कंजूस	रामलाल बहुत कृपण व्यक्ति है।
77.	कलि	कलियुग	कलियुग में पाप बढ़ रहे हैं।
	कली	फूल का बंद रूप	पौधों पर कलियाँ खिल रही हैं।
78.	कोर	किनारे	नदी के कोर पर बैठने में बड़ा आनन्द आता है।
	कौर	ग्रास	मदन रोटी के एक कौर के लिए तरस गया।
79.	कर्म	काम	श्रीकृष्ण ने गीता में कर्म करने पर बल दिया।
	क्रम	तरतीब	अस्पताल में मरीजों के आने का क्रम चलता जा रहा था।
80.	करोड़	सौ लाख	मोहन की एक करोड़ की लाटरी निकली है।
	क्रोड़	गोद	बच्चा माँ की क्रोड़ में खुश रहता है।
81.	कपट	छल	भूतनाथ ने कपट से गद्दी हथिया ली।
	कपाट	किवाड़	कृपया कपाट खोल दो।
82.	कुपथ	कुमार्ग	हमें कुपथ से बचना चाहिए।
	कुपथ्य	अनुचित भोजन	कुपथ्य खाने से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।
83.	कल	आने वाला दिन / बीता हुआ दिन	राजेश कल दिल्ली आएगा / राजेश कल दिल्ली आया था।
	काल	समय, मृत्यु	राजकुमार अचानक काल को प्राप्त हो गया।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
84.	कटु	कड़वा	किसी को भी कटु वचन न बोलो।
	कूट	भरपूर	लक्ष्मीबाई में देशभक्ति कूट-कूट कर भरी थी।
	कूटनीति		अमेरिकी की कूट चालों ने प्रस्ताव पास नहीं होने दिया।
85.	कांति	चमक	ज्योति के चेहरे पर आजकल कांति छायी हुई है।
	क्रांति	परिवर्तन	हरित क्रांति से हमारा देश खुशहाल हो गया।
86.	कड़ाई	सख्ती	इस स्कूल के प्रधानाचार्य स्कूल कड़ाई से चलाते हैं।
	कढ़ाई	बेल-बूटे काढ़ना	मैंने सफेद चादर पर लाल और हरे धागे से कढ़ाई की है।
87.	किला	गढ़	राजस्थान में वहुत से किले हैं।
	कील	खूँटी	कील पर कपड़े टँगे हैं।
88.	कुच	स्तन	नारी के कुच होते हैं।
	कूच	प्रस्थान	सेना कूच कर रही है।
89.	कमल	पद्म	कमल का फूल कीचड़ में खिलता है।
	कलम	लेखनी	कलम लिखने के काम आती है।
90.	कान	एक इंद्रिय	उसके कान में दर्द है।
	कानि	मर्यादा	कुल की कानि का पालन करो।
91.	केसर	अयाल	सिंह को केसर होने के कारण केसरी कहा जाता है।
	केशर	कुंकुम	मस्तक पर केशर का तिलक करो।
92.	कँटीली	काँटेदार	यह झाड़ी कँटीली है।
	कटीली	काटने वाली सुंदर आँखें	उस स्त्री की आँखें कटीली हैं।
93.	कुंजन	दुर्जन	कुजन से दूर रहने में ही भलाई है।
	कूजन	पक्षियों का कलरव	पक्षियों का कूजन मन को भाता है।
94.	खग	पक्षी	आकाश में खग उड़ रहे हैं।
	खंग	तलवार	खंग की धार बड़ी तेज है।
95.	खल	दुष्ट	खल व्यक्ति समाज में उपद्रव करते हैं।
	खलु	ही, निश्चय	मैं खलु विरोध करूँगा।
	खाल	त्वचा	उसकी खाल कोमल है।
96.	खारी	क्षारीय	यह जल खारी है अतः पीने योग्य नहीं है।
	ख्वारी	बर्बादी	तुम समाज में अपनी ख्वारी मत करवाओ।
97.	चिर	पुराना, दीर्घ	यह समस्या चिर काल से चली आ रही है।
	चीर	वस्त्र	कृष्ण चीर-हरण की लीला करते थे।
98.	चंचल	अस्थिर	उसका चित्त चंचल है।
	चंचला	स्त्री/बिजली	स्त्री को चंचला भी कहते हैं। आकाश में चंचला चमक रही है।
99.	चर्म	चमड़ा	जानवरों की खाल से चर्म मिलता है।
	चरम	अंतिम	यह कहानी चरम सीमा पर है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
100.	चपल	चंचल	बालक स्वभाव से चपल होते हैं।
	चपला	बिजली	आसमान में चपला चमक रही है।
101.	चरित	जीवन-गाथा	रामचरितमानस में राम का चरित है।
	चरित्र	आचरण, स्वभाव	उसका चरित्र उत्तम है।
102.	चरण	पैर	माताजी के चरणों में सिर झुका दो।
	चारण	भाट	आजकल शहर में चारण आए हुए हैं।
103.	चिता	मृतक को जलाने के लिए लकड़ियों का ढेर	थोड़ी देर में ही चिता में आग जल उठी।
	चिंता	फिक्र	तुम व्यर्थ की चिंता करते रहते हो।
	चीता	बाघ	चीता हमारा राष्ट्रीय पशु है।
104.	चषक	प्याला, घूँट	चाय का चषक आराम पहुँचाता है।
	चसका	लत, आदत	उसे जुआ खेलने का चसका है।
105.	गत	बीता हुआ	गत दुःखों को याद मत करो।
	गति	चाल	उसकी गति बहुत तेज है।
106.	गीत	गान	खुशी का अवसर है, गीत गाओ।
	गीता	एक विशेष ग्रंथ	गीता एक धार्मिक ग्रंथ है।
107.	ग्रह	सूर्य, चंद्रादि	आकाश में नौ ग्रह हैं।
	गृह	घर	गृह की सफाई रखना आवश्यक है।
108.	ग्रंथ	पुस्तक	इस ग्रंथ का अध्ययन करो।
	ग्रंथि	गाँठ	उसके मन में अनेक ग्रंथियाँ हैं।
	ग्रंथी	सिक्खों का पुरोहित	ग्रंथी जी गुरुद्वारे में उपदेश देते हैं।
109.	गुर	उपाय, सूत्र	मैंने इस समस्या का गुर खोज लिया है।
	गुरु	शिक्षक	संतों ने गुरु की महिमा का बखान किया है।
110.	गज	हाथी	गज मतवाली चाल से चलता है।
	गाज	बिजली	आज गाज किस पर गिरेगी?
111.	गुड़	रस का बना गुड़	गुड़ मीठा होता है।
	गुण	विशेषता	उसके गुण सभी को भाते हैं।
112.	क्षति	हानि	भूकंप से कभी-कभी बहुत क्षति हो जाती है।
	क्षिति	पृथ्वी	पृथ्वी को क्षिति भी कहते हैं।
113.	छत्र	छाता	तेज हवा मेरे छत्र को उड़ा ले गयी।
	छात्र	विद्यार्थी	इस स्कूल के छात्र बहुत होनहार हैं।
114.	घट	घड़ा, हृदय	मिट्टी का घट फूट गया। ईश्वर घट-घट में व्याप्त है
	घटा	समूह, बादलों की घटा	आसमान में घटा छाई है।
	घटक	अवयव	हाइड्रोजन गैस पानी का एक घटक है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
115.	घालक	घातक	यह बीमारी घालक है।
	पालक	पालने वाला	तुम्हारा पालक कौन है ?
116.	रज	धूल	भारत भूमि की रज का स्पर्श करो।
	रज्जु	रस्सी	रज्जु के सहारे ऊपर चढ़ जाओ।
117.	जरठ	पुराना	उसका रोग जरठ है।
	जठर	उदर	जठर की अग्नि जठराग्नि कहलाती है।
118.	ज़रा	बुढ़ापा	जरा व्यक्ति को अशक्त बना देता है।
	जरा	थोड़ा	ज़रा यह काम तो कर दो।
119.	जघन	नितंब	उसके जघन भारी हैं।
	जघन्य	नीच	उसने जघन्य अपराध किया है।
120.	जलद	बादल	जलद जल बरसाते हैं।
	जलज	कमल	जलज कीचड़ में खिलता है।
121.	जगत्	संसार	यह जगत् असार है।
	जगत	कुएँ का चबूतरा	कुएँ की जगत पक्की बनी है।
122.	ज्वाला	लपट	आग की ज्वाला चारों ओर फैल रही है।
	जाला	फंदा	वह जाले में फँस गया है।
123.	जाया	व्यर्थ	तुम धन को जाया मत करो।
	जाया	पत्नी	रमेश की जाया सुंदर है।
124.	जल्द	जल्दी	यह काम जल्द करो।
	जलद	बादल	जलद जल बरसाते हैं।
125.	जुआ	द्यूत-क्रीड़ा	जुआ सर्वनाश कर देता है।
	जूआ	बैलों के कंधों पर रखी जाने वाली लकड़ी	बैलों के कंधों पर जूआ रखा है।
126.	छत्र	छाता	आपकी छत्र-छाया में हम सुरक्षित हैं।
	क्षात्र	क्षत्रिय संबंधी	क्षात्र-धर्म का पालन करो।
	छात्र	विद्यार्थी	छात्र पढ़ने का काम करता है।
127.	झगा	चोला	सुदामा का झगा फटा हुआ था।
	झाग	फेन	समुद्र के पानी में झाग है।
128.	टेव	आदत	तुम्हें शराब पीने की टेव है।
	टेवा	ब्याह की चिट्ठी	पंडित जी टेवा लिख रहे हैं।
129.	डेरा	ठहरने की जगह	यहाँ बाबाजी का डेरा है।
	डरा	भयभीत	वह बुरी तरह डरा हुआ है।
130.	ढिलाई	ढील	अनुशासन के मामले में ढिलाई ठीक नहीं है।
	ढुलाई	ढोना	माल की ढुलाई हो रही है।
131.	तरंग	लहर	आज समुद्र में ऊँची तरंगें उठ रही हैं।
	तुरंग	घोड़ा	मुझे सफेद तुरंग बहुत अच्छा लगता है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
132.	तप	तपस्या	ऋषि वन में तपस्या करते हैं।
	ताप	गर्मी	जेठ का ताप सहा नहीं जाता।
133.	तरणी	सूर्य	आसमान में तरणी बिंब छिप रहा है।
	तरुणी	युवती	उस तरुणी का रंग बहुत साफ है।
	तरणी	नौका	नदी को तरणी से पार करते हैं।
134.	तोषक	धैर्यदाता	तोषक आपका हितचिंतक होता है।
	तोशक	रुईदार गद्दा	तोशक पर विश्राम करो।
135.	तोष	संतोष	तुम्हारी बातें तोष प्रदान करती हैं।
	तोश	हिस्सा	यह पुरस्कार का तोश है।
136.	तृप्त	संतुष्ट	वह कभी तृप्त नहीं होता।
	तप्त	गर्म	तप्त रेगिस्तान में चलना कठिन है।
137.	तर्क्र	तकुआ	चरखे में तर्कु लगे होते हैं।
	तर्क	बहस	तर्क करने से समस्या का हल नहीं होगा।
138.	तव	तुम्हारा	इस पुरस्कार में तव क्या है ?
	तब	इसके बाद	तब क्या होगा ?
139.	तम	अंधेरा	अमावस्या का तम गहरा होता है।
	तोम	समूह	हाथियों का तोम चला जा रहा है।
140.	तन	शरीर	हमें तन की सफाई का ध्यान रखना चाहिए।
	तान	धुन	बाँसुरी की तान मन मोह रही है।
141.	तृण	तिनका	घास का तृण तोड़कर लाओ।
	त्राण	मुक्ति/छुटकारा	मैं तुम्हें अत्याचार से त्राण दिलाऊँगा।
142.	थल	भूमि	हमारी सेना थल मार्ग से आगे बढ़ रही है।
	थाल	एक बर्तन (थाली)	मोहन के घर चाँदी का एक थाल है।
143.	दशन	दाँत	उसके दशन मोती से चमकते हैं।
	दर्शन	झाँकी	भगवान के दर्शन करो।
144.	दिन	वार, दिवस	नेताजी चार दिन बाद आएँगे।
	दीन	गरीब	दीन-दु:खियों की सहायता करो।
145.	दमन	दबाना	विद्रोह का दमन करना चाहिए।
	दामन	पल्ला	मैंने इस झगड़े से दामन झाड़ लिया है।
146.	दारा	स्त्री	राम की दारा का नाम सीता है।
	द्वार	दरवाजा, निकास	सिपाही द्वार पर खड़ा है।
147.	दारु	लकड़ी	होली पर दारु जलायी जाती है।
	द्वार	दरवाजा	सुदामा, कृष्ण जी के द्वार पर खड़े थे।
148.	दीप	दीपक	दीपावली पर दीप जलाये जाते हैं।
	द्विप	हाथी	जंगल में द्विप समूह जा रहा था।
	द्वीप	टापू, समुद्र से घिरा थल प्रदेश	वह अंडमान द्वीप में रहता है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
149.	दंश	डंक मारने की क्रिया	सर्प-दंश से कोई नहीं बच पाता।
	दश	दस	दश तक गिनो।
150.	दर्शन	दिखना	भगवान के दर्शन कर लो।
	दंशन	काटना (दाँत से)	सर्प दंशन से मारता है।
151.	दूत	वाहक	यह व्यक्ति हमारा दूत बनकर जा रहा है।
	द्यूत	जुआ	द्यूत-क्रीड़ा निंदनीय है।
	द्युति	चमक	राधा की द्युति देखते बनती है।
152.	दशा	हालत	उसकी दशा स्थिर है।
	दिशा	ओर	उत्तर दिशा में हिमालय है।
153.	दाई	धात्री, धाय	दाई बच्चे का पालन-पोषण करती है।
	दायी	देने वाला	यह वस्तु सुखदायी है।
154.	द्रव	तरल पदार्थ	यह दवा द्रव रूप में है।
	द्रव्य	धन, पदार्थ	उसके पास बहुत द्रव्य है।
155.	दुरित	पाप	दुरित पाप को कहते हैं।
	दुरत	छिपना	हिरन दुरत हो गया।
156.	दौत्य	दूत कर्म	वह दौत्य कर्म में कुशल है।
	दैत्य	राक्षस	दैत्य का वध करना उचित है।
157.	दवा	दवाई	यह दवा बहुत असरदार है।
	दावा	कब्जा	सीमा की चौकी पर हमारा दावा बनता है।
158.	धन्य	कृतार्थ	भगवान के दर्शन कर भक्त धन्य हुए।
	धान्य	अनाज	धान्य किसानों की पूँजी होती है।
159.	धरा	पृथ्वी	यह धरा अनेक खनिजों से भरी है।
	धारा	नदी की धारा	यहाँ जल की धारा बहुत तेज है।
160.	धेनु	गाय	धेनु का दूध लाभकारी होता है।
	धनु	धनुष	राम ने धनु पर प्रत्यंचा चढ़ाई।
161.	नय	नीति	यह नययुक्त बात है।
	नव	नया/नौ	यह नव वस्त्र है। नव रात्र में व्रत रखते हैं।
162.	नग	नगीना	इस अँगूठी का नग बहुत महँगा है।
	नाग	साँप	नाग देवता की पूजा की जाती है।
163.	नीर	पानी	इस नदी का नीर शीतल है।
	नीड़	घोंसला	पक्षी अपना नीड़ वृक्ष पर बनाते हैं।
164.	नियत	निश्चित	ट्रेन अपने नियत समय से आधा घंटा लेट है।
	नीयत	स्वभाव, मंशा	उसकी नीयत बिगड़ रही है।
	नियति	भाग्य	सबकी नियति भगवान तय करता है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
165.	नव	नौ, नया	हम नव-ग्रह की पूजा करेंगे।
	नाव	नौका	नाव पर सवार होकर राम ने नदी पार की।
166.	नत	झुका हुआ	बड़ों को नत होकर प्रणाम करना चाहिए।
	नित	सदैव	वह नित्य नई समस्या उत्पन्न करता है।
	नीत	लाया हुआ	यह पुरस्कार सरकार से नीत है।
167.	निर्जर	देवता	हम निर्जर की पूजा करते हैं।
	निर्झर	झरना	इस निर्झर का जल शीतल है।
168.	निर्माण	रचना, बनाना	भवन का निर्माण शीघ्र कराओ।
	निर्वाण	मोक्ष	तप करके निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
169.	निशीथ	आधी रात	निशीथ काल में सभी गहरी निद्रा में होते हैं।
	निशित	तीक्ष्ण	यह शस्त्र निशित है।
170.	निसान	झंडा	रथ पर निसान फहरा रहा था।
	निशान	चिह्न	घाव का निशान अभी तक शेष है।
171.	नगर	शहर	इस नगर में शांति है।
	नागर	शहर का	नागर व्यक्ति चतुर होता है।
	नाहर	शेर	नाहर वन का राजा होता है।
172.	निर्वचन	मौन	उसकी निर्वचन सहमति ले ली गई है।
	निर्वाचन	चुनाव	पार्षद का निर्वाचन रद्द कर दिया गया।
173.	नेक	अच्छा	उसकी सलाह नेक है।
	नकु	तनिक	नकु पीछे हटो।
174.	निराधार	बेसहारा	पति ने पत्नी को निराधार छोड़ दिया।
	निराहार	आहार रहित	मैं व्रत के कारण निराहार हूँ।
175.	पग	कदम	वह चार पग चला ही था कि गिर पड़ा।
	पाग	पगड़ी	उसने सिर पर पीली पाग पहन रखी है।
176.	पथ	राह	उसका पथ सरल नहीं है।
	पथ्य	रोगी का आहार	रोगी को पथ्य दीजिए।
177.	परिणाम	फल	दसवीं का परिणाम आज आने वाला है।
	परिमाण	मात्रा	इस डिब्बे में घी का परिमाण कितना है ?
178.	प्रधान	मुख्य	प्रधान वाक्य छाँटकर लिखो।
	परिधान	वस्त्र	उसके परिधान सुंदर हैं।
179.	प्राचीन	पुराना	यह मंदिर बहुत प्राचीन है।
	प्राचीर	दीवार	किले की प्राचीर टूट रही है।
180.	प्रमाण	सबूत	अपने आरोप का प्रमाण प्रस्तुत करो।
	प्रणाम	नमस्कार	बड़ों को प्रणाम करना चाहिए।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
181.	प्रतिमा	मूर्ति	गणेश जी की प्रतिमा स्थापित की गई है।
	प्रतिभा	बुद्धिमता	उसकी प्रतिभा का सभी लोहा मानते हैं।
182.	प्रसाद	कृपा	भगवान के प्रसाद का उपहास नहीं करना चाहिए।
	प्रासाद	महल	प्राचीन काल के प्रासाद आज भी दर्शनीय हैं।
183.	पवन	हवा	आज बड़ी ठंडी पवन चल रही है।
	पावन	पवित्र	'गीता' हिन्दुओं की पावन पुस्तक है।
184.	पका	पकाया हुआ	भोजन ठीक प्रकार से पका हुआ है।
	पक्का	मजबूत	कोई पक्का प्रबंध कीजिए।
185.	पता	ठिकाना	पत्र के ऊपर उसका पता भी लिखो।
	पत्ता	पर्ण, दल	यह पत्ता पीला पड़ गया है।
186.	पर्ण	पत्ता	यह पर्ण कुटी सुंदर बनी है।
	प्रण	प्रतिज्ञा	मैंने तुम्हारी सहायता का प्रण किया है।
187.	पुरुष	नर	यह पुरुष ईमानदार है।
	परशु	फरसा	ऋषि परशु रखने के कारण परशुराम कहलाते थे।
188.	प्रदेश	प्रांत या राज्य	यह प्रदेश धन-धान्य से परिपूर्ण है।
	परदेश	दूसरा देश	परदेश में रहना अत्यंत कठिन है।
189.	प्रवाह	बहाव	नदी में जल का प्रवाह ठीक है।
	परवाह	चिन्ता	मुझे किसी की परवाह नहीं है।
190.	पानी	जल	खूब पानी पीना चाहिए।
	पाणि	हाथ	पाणि-ग्रहण संस्कार विवाह को ही कहते हैं।
191.	पाश	बंधन	वह पत्नी के पाश में बँधकर रह गया है।
	पास	समीप	तुम मेरे पास ठहरना।
192.	पिक	कोयल	पिक मीठा गाती है।
	पीक	पान की पीक	पान की पीक यहाँ मत थूकना।
193.	पशु	जानवर	यह दुधारू पशु है।
	पांशु	धूल, रेत	बच्चा पांशु में खेलकर बड़ा होता है।
194.	परिघ	भाला, बर्छी	उसने परिघ से शत्रु पर हमला किया।
	परिधि	सीमा	यह काम हमारी परिधि में नहीं आता।
195.	प्रकार	तरह	एक प्रकार से काम हो गया।
	प्राकार	किला	प्राकार पर राष्ट्र ध्वज फहराओ।
196.	प्रतिहार	द्वारपाल	प्रतिहार द्वार पर खड़ा पहरा दे रहा था।
	प्रत्याहार	निवारण	इस समस्या का प्रत्याहार करना आवश्यक है।
197.	प्रकृत	यथार्थ	प्रकृत दशा को समझो।
	प्रकृति	स्वभाव	उसकी प्रकृति अच्छी है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
198.	पदत्राण	जूता	सुदामा पदत्राण के बिना थे।
	परित्राण	रक्षा	प्रभु ही परित्राण करने वाले हैं।
199.	प्रबल	बलवान	काम होने की संभावना प्रबल है।
	प्रवाल	मूँगा	प्रवाल एक बहुमूल्य पदार्थ है।
200.	प्रमाद	मद से उत्पन्न भ्रम	इस काम में प्रमाद ठीक नहीं है।
	प्रमदा	स्त्री	स्त्री को प्रमदा भी कहते हैं।
201.	प्रणत	नम्र	उसका प्रणत निवेदन स्वीकार करो।
	प्रणति	नम्रता	दूसरों के साथ प्रणति का व्यवहार करो।
202.	फ़न	कला, गुण	वह शहनाई बजाने के फ़न में माहिर है।
	फण	साँप का फन	साँप फण फैलाकर झूम रहा है।
203.	फूट	वैर, कलह	घर की फूट नाश कर देती है।
	फुट	एक नाप	यह व्यक्ति पाँच फुट लंबा है।
204.	बलि	बलिदान	पशु-बलि निंदनीय है।
	बली	बलवान, वीर	भीम बड़े बली थे।
205.	बहु	बहुत	उसने बहु उपाय किए।
	बहू	पत्नी, दुल्हन	रवि की बहू सुशील है।
206.	बात	बातचीत	उसने मुझसे बात नहीं की।
	वात	वायु	शीतल वात चल रही है।
207.	बधिर	बहरा	यह बालक बधिर होने के कारण सुनता नहीं।
	बधिक	शिकारी	बधिक ने हिरण मार डाला।
208.	बहन	बहिन	गीता मेरी बहन है।
	वहन	ढोना	मार्ग व्यय मैं वहन करूँगा।
209.	वास	निवास	मेरा यहाँ वास अल्पकाल के लिए है।
	बास	गंध	नाले के कारण बास आ रही है।
210.	बाट	राह, रास्ता	यह बाट पथरीला है।
	बाँट	बँटवारा	धन को बाँट दीजिए।
211.	बद्ध	बँधा हुआ	मैं प्रतिज्ञाबद्ध हूँ।
	बिद्ध	छिदा हुआ	वह बाण से बिद्ध है।
212.	बाँका	वक्र	यह बाँका नवयुवक कौन है ?
	बाँचा	पढ़ा	यह पत्र बाँचा हुआ है।
213.	बार	दफा	तुम कितनी बार कहोगे ?
	वार	दिन, चोट	आज रविवार है। उसका वार संभाला नहीं जाएगा।
214.	बानक	वेश	कृष्ण का पीतांबर धारी बानक शोभा देता है।
	वाणिक	बनिया	वह जाति से वाणिक है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
215.	वरण	चुनना	मोहिनी ने सचिन को पति के रूप में वरण किया।
	व्रण	घाव	उसका व्रण भरने में नहीं आ रहा है।
216.	भजन	ईश्वर-स्तुति	उसे कई भजन याद हैं।
	भाजन	वर्तन	काँच का भाजन टूट गया।
217.	भवन	मकान	यह भवन अगले माह तक तैयार हो जाएगा।
	भुवन	संसार	इस भुवन में कुछ भी स्थायी नहीं है।
218.	भारती	सरस्वती	भारती की उपासना करना विद्वानों का काम है।
	भारतीय	हिन्दुस्तानी	मुझे भारतीय होने पर गर्व है।
219.	भक्त	भजन करने वाला	भक्त पूजा कर रहे हैं।
	भुक्ति	भोगना	कष्टों की भुक्ति कठिन है।
220.	भीत	डरा हुआ	वह हर समय भीत अवस्था में रहता है।
	भीति	दीवार	वरामदे की भीति गिर गई।
221.	भाषण	व्याख्यान	वह भाषण देने में कुशल है।
	भीषण	भयंकर	आजकल भीषण गर्मी पड़ रही है।
222.	भीम	अर्जुन का भाई	भीम बहुत बलशाली था।
	भूमि	पृथ्वी	भूमि पर बैठ जाओ।
223.	भव	संसार	भव के कष्टों से भगवान मुक्त करेंगे।
	भाव	विचार	उसके भाव बड़े अच्छे हैं।
224.	भरण	पोषण	मैं आपका भरण-पोषण करूँगा।
	भ्रमण	घूमना	प्रातः भ्रमण के लिए जाइए।
225.	भाजन	पात्र	यह काँसे का भाजन है।
	भंजन	तोड़ना	धनुष का भंजन हो गया।
226.	मांस	महीना	जनवरी मास में बहुत ठंड होती है।
	माँस	गोश्त	मोहन माँस बहुत शौक से खाता है।
227.	मात्र	सिर्फ	मात्र चार दिनों में राम अंग्रेजी बोलना सीख गया।
	मात्रा	संख्या	मेरे लिए गेहूँ की मात्रा ज्यादा खरीदकर लाना।
228.	मुक्त	स्वतंत्र	भारत दासता से मुक्त हो गया।
	मुक्ता	मोती	यह मुक्ता हार सुंदर है।
229.	मूल	जड़, आरंभ	मनोज ही इस लड़ाई का मूल है।
	मूल्य	कीमत	इस मशीन का मूल्य बहुत ज्यादा है।
230.	मद	अभिमान	कभी धन का मद मत करो।
	मादा	स्त्री	मादा संतान उत्पन्न करती है।
	मद्य	मदिरा	मद्यपान बुरा है।
231.	मातृ	माता	मातृ का सम्मान करो।
	मात्र	केवल	इसका मूल्य मात्र दस रुपए है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
232.	मत	राय, सलाह	मेरे मत के अनुसार चलो।
	मति	बुद्धि	उसकी मति मारी गई है।
233.	मैथिल	मिथिला निवासी	विद्यापति मैथिल कवि थे।
	मैथिली	जानकी	सीता जी को मैथिली कहा जाता है।
234.	मराल	राजहंस	मराल सफेद रंग का होता है।
	मल्हार	राग विशेष	सावन में मल्हार गाया जाता है।
235.	मंजीर	नूपुर	नर्तकी के पैरों में मंजीर बँधे हैं।
	मंजरी	मुकुल	साहित्य-मंजरी पठनीय है।
236.	मणि	रत्न	मणियों को आभूषण में प्रयुक्त किया जाता है।
	मणी	सर्प	मणीधर सर्प जा रहा है।
237.	मौर	मुकुट	दूल्हे के सिर पर मौर बँधा है।
	मोर	मयूर पक्षी	मोर सुंदर पक्षी है।
238.	मंदर	पर्वत	मंदर पर सुग्रीव रहता था।
	मंदिर	देवालय	मैं मंदिर जा रहा हूँ।
239.	मलिन	मैला	मलिन वस्त्र मत पहनो।
	म्लान	मुरझाया हुआ	उसका चेहरा म्लान है।
240.	मरु	रेत, मरुस्थल	मरु प्रदेश में जल का अभाव रहता है।
	मेरु	सुमेर, पर्वत विशेष	हनुमान मेरु उठा लाए थे।
241.	मनुज	मनुष्य	मनुज काम करता है।
	मनोज	कामदेव	मनोज कामदेव का अवतार है।
	मनोज्ञ	सुंदर	सीता मनोज्ञ है।
242.	योग्य	सक्षम	वह एक योग्य प्रधानाचार्य सिद्ध होगा।
	योग	मेल	वर-वधू का योग ठीक बनता है।
243.	युग्म	जोड़ा	शब्द-युग्म याद करो।
	युगल	दो	राधा-कृष्ण के युगल रूप को प्रणाम है।
244.	याम	पहर	आठों याम प्रभु को याद करो।
	यामा	रात	यामा में सितारे चमकते हैं।
	यम	यमराज	यम मृत्यु का देवता है।
245.	रजत	चाँदी	रजत पात्रों में भोजन करो।
	रजक	धोबी	रजक वस्त्र धोता है।
246.	रजनी	रात	इस समय रजनी बेला है।
	रमणी	स्त्री	रमणी सुंदर होती है।
247.	रक्त	खून	राम में रक्त की कमी है।
	रिक्त	खाली	मेरे कार्यालय में एक स्थान रिक्त है।
248.	रत	लीन	मैं साधना में रत हूँ।
	रति	प्रेम, कामदेव की स्त्री	रति कामदेव की पत्नी है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
249.	राज्य	प्रदेश, शासन	इस राज्य की प्रगति हो रही है।
	राज	रहस्य	तुम्हारा राज मैं जानता हूँ।
250.	रुष्ट	नाराज	तुम मुझसे क्यों रुष्ट हो ?
	रिष्ट	टूटा हुआ, रोगी	यह रिष्ट व्यक्ति कुछ न कर सकेगा।
251.	लक्ष	लाख	कौरवों के पास कई लक्ष सेना थी।
	लक्ष्य	उद्देश्य	उसका लक्ष्य महान है।
252.	लपट	ज्वाला	हवन में ऊँची लपटें उठने लगीं।
	लिपट	गले मिलना	भरत राम से लिपट कर रोए।
253.	लब्ध	पाया हुआ	मुझे यह धन लब्ध हुआ है।
	लुब्ध	मोहित होना	अभिनेत्री की मोहक अदाओं पर दर्शक लुब्ध हो गए।
254.	लेख	लिखा हुआ, निवंध	इस विषय पर एक लेख लिखो।
	लेखा	हिसाब	लेखा सही-सही तैयार करो।
255.	ललित	सुंदर	भगवान की ललित मूर्ति देखो।
	ललिता	गोपी विशेष, सहेली	ललिता कृष्ण की सखी थी।
256.	ललाट	मस्तक	उसका ललाट चमक रहा है।
	ललाम	सुंदर	यह दृश्य ललाम है।
257.	लोटना	लेटना	वह लोट रहा है।
	लौटना	वापस आना	उसका लौटना कल संभव होगा।
258.	वसन	वस्त्र	हमें साफ-सुथरे वसन पहनने चाहिएँ।
	व्यसन	बुरी आदत	मोहन को सिगरेट का व्यसन लग गया है।
259.	व्याकरण	भाषा शास्त्र	भाषा का व्याकरण सीखो।
	वैयाकरण	व्याकरण जानने वाला	यह व्यक्ति कुशल वैयाकरण है।
260.	वदन	मुख	उसका वदन सुंदर है।
	बदन	शरीर	उसके बदन में खुजली है।
261.	वेश्या	रंडी	वेश्या समाज की बुराई है।
	वैश्या	वैश्य की पत्नी	वैश्य की पत्नी वैश्या कहलाती है।
262.	वारिद	मेघ	वारिद जल बरसाते हैं।
	वारिधि	समुद्र	वारिधि का जल खारा होता है।
263.	विलक्षण	अद्भुत	वह विलक्षण बुद्धि वाला है।
	विचक्षण	विद्वान	वह वहुत विचक्षण है।
264.	व्यजन	पंखा	व्यजन से हवा करो।
	व्यंजन	खाने का पदार्थ	खाने के लिए विविध व्यंजन हैं।
	विजन	सुनसान	यह जंगल विजन है।
265.	विषमय	जहर भरा	यह भोजन विषमय है।
	विस्मय	हैरानी	मुझे तुम्हारी बातें सुनकर विस्मय हुआ।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
266.	वर्ण	रंग, अक्षर	उसका वर्ण गोरा है।
	व्रण	घाव	यह व्रण नहीं भर रहा ।
267.	वक्ष	छाती	उसने वक्ष पर वार किया।
	वृक्ष	पेड़	यह आम का वृक्ष है।
268.	व्यक्त	प्रकट	अपनी भावनाओं को व्यक्त करो।
	व्यक्ति	मनुष्य	यह व्यक्ति ठीक नहीं है।
269.	व्यंग्य	ताना, उपालंभ	उसने मुझ पर व्यंग्य किया है।
	व्यंग	विकलांग	वह व्यंग है।
270.	वपन	बोना	बीज का वपन करो।
	विपिन	वन	इस विपिन में शांति है।
271.	वस्तु	चीज	मुझे इस वस्तु की आवश्यकता है।
	वास्तु	मकान ज्ञान	वास्तुकला की दृष्टि से यह मकान गलत बना है।
272.	वाद	तर्क, संप्रदाय	मुझसे वाद-विवाद न करो।
			छायावाद के प्रमुख कवि प्रसाद जी थे।
	वाद्य	बाजा	वाद्य यंत्रों के साथ गाओ।
273.	वासना	कामना	मन की वासना को दूर करो।
	बासना	महकना	फूल बास रहे हैं।
274.	वित्त	धन	यह वित्त संबंधी समस्या है।
	वृत्त	गोलाकार	वृत्त बनाकर बैठ जाओ।
275.	विष	जहर	विष पीने से मृत्यु हो जाती है।
	बिस	कमलनाल	तालाब में बिस दिखाई दे रहे हैं।
276.	विशुद्ध	बिल्कुल शुद्ध	यह व्यक्ति विशुद्ध ब्राह्मण है।
	विरुद्ध	प्रतिकूल	मेरे विरुद्ध कुछ मत कहना।
277.	विधा	साहित्य का रूप	गीति कांव्य की एक विधा है।
	विद्या	शिक्षा	उसकी विद्या गुरुकुल में हुई है।
278.	व्याज	बहाने से, छल से	वह तुम्हारी व्याज स्तुति कर रहा है।
	ब्याज	सूद	बैंक में ब्याज की दर घट रही है।
279.	शशक	खरगोश	इस सफेद शशक को देखो।
	शशांक	चंद्रमा	आकाश में शशांक चमक रहा है।
280.	शस्त्र	हाथ में लेकर चलाए जाने वाले हथियार	हमारे पास रक्षा के लिए पर्याप्त शस्त्र हैं।
	शास्त्र	धर्म की पुस्तक	हमारे शास्त्रों में नैतिक शिक्षा भरी पड़ी है।
281.	श्वेत	सफेद	श्वेत वस्त्र अच्छे लगते हैं।
	स्वेद	पसीना	मुझे बहुत स्वेद आता है।
282.	शिला	पत्थर	वन में शिला पर बैठना अच्छा लगता है।
	शील	कोमल स्वभाव	उसका शील व्यवहार प्रशंसनीय है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
283.	शूर	वीर	वह शूर वीर है।
	सुर	देवता	सुर की पूजा की जाती है।
284.	शुक्ल	सफेद	हंस शुक्ल होता है।
	शुल्क	फीस	इस लाइसंस के लिए शुल्क जमा करो।
285.	शिखर	चोटी	वह पर्वत के शिखर तक पहुँच गया।
	शेखर	मस्तक	शिवजी के शेखर पर भी नेत्र माना जाता है।
286.	शाम	सायंकाल	तुम शाम के समय आना।
	श्याम	काला	कृष्ण का श्याम रंग सुहाता है।
287.	शर	बाण	अर्जुन ने भीष्म के लिए शर की शैय्या बनाई।
	सर	तालाब	इस सर का पानी स्वच्छ है।
288.	शंकर	शिव	शंकर की पूजा करो।
	संकर	मिश्रित	संकर बीज अधिक पैदावार देते हैं।
289.	शक्ल	सूरत	उसकी शक्ल भोली प्रतीत होती है।
	सकल	सब	परमात्मा सकल विश्व का रखवाला है।
290.	शम	संयम	जरा शम से काम लो।
	सम	बराबर	धन का सम विभाजन करो।
291.	शुचि	पवित्र	यज्ञ की शुचिता का ध्यान रखना।
	सूची	तालिका	जरूरत के सब सामान की सूची बना दो।
292.	शारद	शरद ऋतु संबंधी	आजकल शारदीय नवरात्र चल रहे हैं।
	सारद	सरस्वती	सारद की उपासना करो।
293.	सतत	लगातार	यह कार्य सतत चल रहा है।
	संतति	संतान	सभी अपनी संतति के बारे में सोचते हैं।
294.	समान	बराबर	मेरे समान सुंदर कोई नहीं है।
	सम्मान	आदर	बड़ों का सम्मान करना चाहिए।
295.	सूत	धागा	यह साड़ी रेशमी सूत से बनी है।
	सुत	पुत्र	अमर के दो सुत हैं।
296.	सुपुत्र	अच्छा पुत्र	तुम्हारा सुपुत्र खूब नाम कमा रहा है।
	सपुत्र	पुत्र के साथ	समारोह में सपुत्र आना।
297.	समर	युद्ध	समर के लिए तैयार हो जाइए।
	स्मर	कामदेव	कामदेव को स्मर भी कहते हैं।
298.	सदा	हमेशा	सदा सत्य बोलो।
	सादा	सरल	सादा जीवन बिताना अच्छा रहता है।
299.	सलिल	पानी	इस नदी का सलिल शीतल रहता है।
	सलिला	नदी	हिमालय से अनेक सलिला निकली हैं।
300.	सर	तालाब	सर में कमल खिले हैं।
	सार	सारांश	इस कहानी का सार लिखो।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
301.	संबंध	रिश्ता	राम और लक्ष्मण के संबंध बहुत मजबूत हैं।
	संबद्ध	जुड़ा हुआ	भ्रष्टाचार राजनीति से संबद्ध है।
302.	सहर	सवेरा	उठो, सहर हो गया।
	शहर	नगर	शहर में बड़ी हलचल है।
303.	सप्त	सात	सप्त ऋषियों की पूजा करो।
	शप्त	शापित	यह तालाब शप्त है।
304.	सुधि	स्मरण	तुम्हें मेरी सुधि नहीं आ रही।
	सुधी	विद्वान्	सुधी विद्वानों का आदर करो।
305.	सन्मति	मति सहित	भगवान सभी को सन्मति दीजिए।
	सम्मति	परामर्श	मेरी सम्मति मानकर चलो।
	समिति	सभा	समिति की बैठक कल होगी।
306.	संघ	समुदाय	शिक्षक संघ का चुनाव कल होगा।
	संग	साथ	तुम मेरे संग चलो।
307.	सर्ग	अध्याय	इस पुस्तक में दस सर्ग हैं।
	स्वर्ग	एक लोक	सभी व्यक्ति स्वर्ग की कामना करते हैं।
308.	सत्व	सार	इस कविता का सत्व क्या है ?
	स्वत्व	अधिकार	अपने स्वत्व को कभी नहीं छोड़ो।
309.	सुरति	स्मरण	तुम्हें कुछ सुरति है या नहीं ?
	सुरती	तंबाकू	वह सुरती फाँकता रहता है।
310.	समर्थ	शक्तिवान	यह काम करने में समर्थ हूँ।
	सामर्थ्य	शक्ति	यह काम तुम्हारी सामर्थ्य से बाहर का है।
311.	संस्कृत	एक भाषा	संस्कृत भाषा प्राचीनतम है।
	संस्कृति	संस्कार	अपनी संस्कृति की रक्षा करो।
312.	सिख	एक धर्म	सिख धर्म में गुरु नानकदेव जी प्रथम गुरु माने जाते हैं।
	सीख	उपदेश	तुम मेरी सीख पर चलो।
	शिखी	मोर	शिखी का नृत्य मनोहारी है।
313.	सबल	शक्तिशाली	शत्रु बड़ा सबल है।
	संबल	सहारा	मुझे ईश्वर का ही संबल है।
314.	शकठ	मचान	शेर के शिकार के लिए शकठ बनाना पड़ता है।
	शकट	बैलगाड़ी	शकट का प्रयोग गाँवों में होता है।
315.	शशधर	चंद्रमा	शशधर रात को चमकता है।
	शशिधर	शिव	शशिधर की पूजा करो।
316.	श्रवण	सुनना	संतों का उपदेश श्रवण करो।
	श्रमण	बौद्ध संन्यासी	बौद्धों में श्रमण परंपरा है।

क्र. सं.	शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
317.	हँसी	हँसना	उसकी हँसी मोहक है।
	हंसी	मादा हंस	हंसी जल में तैर रही है।
318.	हिय	हृदय	हिय की आवाज सुनो।
	हय	घोड़ा	हय की चाल मस्तानी है।
319.	ज्ञान	जानकारी	मोहन के ज्ञान की थाह नहीं है।
	ज्ञात	मालूम	मुझे इस बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है।
320.	हास	हँसी	उसका हास सुनाई दे रहा है।
	ह्रास	पतन	तुम्हारा ह्रास होकर रहेगा।
321.	हेम	स्वर्ण	हेम आभूषण चमकते हैं।
	हिम	बर्फ	पर्वत पर हिम है।
322.	शोक	दु:ख	मैं मित्र के शोक में शामिल हुआ।
	शौक	आदत	मुझे संगीत का शौक है।

5. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द *(One Word Substitution)*

हिंदी भाषा में अनेक शब्दों, पदबंधों या वाक्यांशों के लिए प्राय: एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। इससे लेखन में संक्षिप्तता आती है तथा लेख सुगठित हो जाता है।

यहाँ कुछ ऐसे ही उदाहरण दिए जा रहे हैं :

क्र.सं.	अनेक शब्द/पदबंध/वाक्यांश	एक शब्द
1	जिसका आदि न हो	**अनादि**
2	जिसका कोई शत्रु न हो	**अजातशत्रु**
3	जिसकी कभी मृत्यु न हो	**अमर**
4	जिसके समान कोई दूसरा न हो	**अद्वितीय**
5	कोई काम-काज न करने वाला	**अकर्मण्य**
6	अपने आप पर बीती हुई	**आपबीती**
7	जो कभी बूढ़ा न हो	**अजर**
8	जो दिखाई न देता हो	**अदृश्य**
9	जिसकी कोई उपमा न हो	**अनुपम**
10	जिसमें कोई परिवर्तन न हो	**अपरिवर्तनीय**
11	दोपहर के बाद का समय	**अपराह्न**
12	दोपहर के पूर्व का समय	**पूर्वाह्न**
13	जीवन भर रहने वाला	**आजीवन**
14	जो पहले कभी न हुआ हो	**अभूतपूर्व**
15	जो बिना वेतन के कार्य करे	**अवैतनिक**

क्र.सं.	अनेक शब्द/पदबंध/वाक्यांश	एक शब्द
16	जिसके हृदय में दया और ममता न हो	निर्दय
17	जिसका वर्णन न किया जा सके	अवर्णनीय
18	जो इस लोक में संभव न हो	अलौकिक
19	जो थोड़ा ही जानता हो	अल्पज्ञ
20	हृदय की बात जानने वाला	अंतर्यामी
21	जिसकी कोई तुलना न हो	अतुलनीय
22	जो मनुष्य स्वभाव के अनुकूल न हो	अमानवीय
23	जिसे शाप दिया गया हो	अभिशप्त
24	जिसका दमन न हो सके	अदमनीय
25	जो ऊपर कहा गया हो	उपर्युक्त
26	पत्र-पत्रिकाओं में समाचार भेजने वाला	संवाददाता
27	जो सब जगह व्याप्त हो	सर्वव्यापक
28	जिसका आकार न हो	निराकार
29	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
30	जो हाथ से लिखा हुआ हो	हस्तलिखित
31	चार भुजाओं वाला	चतुर्भुज
32	आठ भुजाओं वाला	अष्टभुजी
33	हजार भुजाओं वाला	सहस्त्रबाहु
34	उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
35	उपकार को न मानने वाला	कृतघ्न
36	अपनी इंद्रियों को जीतने वाला	जितेन्द्रिय
37	परशु धारण करने वाला	परशुधर
38	इतिहास को जानने वाला	इतिहासज्ञ
39	इतिहास लिखने वाला	इतिहासकार
40	धर्म को जानने वाला	धर्मज्ञ
41	शत्रु की हत्या करने वाला	शत्रुघ्न
42	जो कठिनाई से मिले	दुर्लभ
43	जो आसानी से मिल सके	सुलभ
44	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
45	गणित को जानने वाला	गणितज्ञ
46	जिसकी कल्पना न की जा सके	कल्पनातीत
47	जिसका कोई अंत न हो	अनंत
48	जो दिखाई न देता हो	अदृश्य
49	जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष

क्र.सं.	अनेक शब्द/पदबंध/वाक्यांश	एक शब्द
50	शरण में आया हुआ	शरणागत
51	रचना करने वाला	रचयिता
52	जो बहुत अधिक बोलता हो	वाचाल
53	पृथ्वी के चारों ओर फैली वायु	वातावरण
54	भाषण देने वाला	वक्ता
55	जो सबको समान दृष्टि से देखता हो	समदर्शी
56	जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
57	व्याकरण का जानने वाला	वैयाकरण
58	जिस बात में कोई संदेह न हो	असंदिग्ध
59	जिसके प्रति संदेह हो	संदिग्ध
60	जहाँ जाना कठिन हो	दुर्गम
61	जिस पर अभियोग लगाया गया हो	अभियुक्त
62	जो आत्मा-परमात्मा से संबंधित हो	आध्यात्मिक
63	ग्रंथ लिखने वाला	ग्रंथकार
64	जो किसी का पक्ष न ले	निष्पक्ष
65	जिसका निर्देश किया गया हो	निर्दिष्ट
66	पुरुषार्थ से काम करने वाला	पुरुषार्थी
67	शरीर को पुष्ट बनाने वाला	पौष्टिक
68	जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो	हतोत्साहित
69	ईश्वर में आस्था रखने वाला	आस्तिक
70	ईश्वर में आस्था न रखने वाला	नास्तिक
71	तप करने वाला	तपस्वी
72	बहुत तेज चलने वाला	द्रुतगामी
73	रात में घूमने वाला	निशाचर
74	नगर में रहने वाला	नागरिक
75	जिसे गुप्त रखा जाए	गोपनीय
76	जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो	खंडित
77	हाथ की लिखी पुस्तक	पांडुलिपि
78	जिसको छूना वर्जित हो	अस्पृश्य
79	जिसका होना संभव न हो।	असंभव
80	जिसे काटा न जा सके	अकाट्य
81	जो पहले न पढ़ा हो	अपठित
82	अवसर के अनुसार बदल जाने वाला	अवसरवादी
83	जिसे सहन न किया जा सके	असह्य

क्र.सं.	अनेक शब्द/पदबंध/वाक्यांश	एक शब्द
84	जिसको पार न किया जा सके	अपार
85	जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
86	जिसका दमन न किया जा सके	अदम्य
87	जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
88	जो बिना वेतन के काम करे	अवैतनिक

6. विविध शब्द *(Miscellaneous Words)*

पुनरुक्त शब्द

पुनरुक्त शब्द यौगिक शब्दों का ही एक भेद है। इनमें से बहुत से सामासिक भी हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं—पूर्ण पुनरुक्त, अपूर्ण पुनरुक्त और अनुकरणवाचक।

1. पूर्ण पुनरुक्त शब्द : जब कोई शब्द एक ही साथ लगातार दो बार अथवा तीन बार प्रयुक्त होता है, तब उन सब पूर्ण पुनरुक्त शब्द कहते हैं। जैसे—

दाने-दाने	कानों-कान	मन-ही-मन	कहीं-न-कहीं
बोल-बोलकर	गाँव का गाँव	हाथों-हाथ	आम के आम
आ-आकर	जल्दी-जल्दी	मुसीबत ही मुसीबत	शोर ही शोर
दर्द ही दर्द	अरे-अरे	काम ही काम	दौड़-दौड़ (कर)
कोई-कोई	अच्छा-अच्छा	राम-राम	सोते-सोते

2. अपूर्ण पुनरुक्त शब्द : ये शब्द दो शब्दों के मेल से बनते हैं, जिनमें दूसरा शब्द पहले शब्द का समानुप्रास होता है। जैसे—

भूख-भाख	सीधा-साधा	पूछ-ताछ	फाड़-फूड़
मार-मूर (कर)	भोला-भाला	हाँ-हूँ	हँस-हँसा
दे-दिला (कर)	दौड़-भाग	ले-लिवा	चला-चली

3. अनुकरणवाचक शब्द : मिलती-जुलती आवाजों के लिए प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द मिलते हैं जिनमें ध्वन्यात्मकता को सुना जा सकता है। नीचे ऐसे शब्दों के उदाहरण दिए जा रहे हैं :

सन्न	छम-छम	दहाड़ना	टाँय-टाँय
सड़ाक	फटका	सनसनी	भों-भों
चट	भनभनाहट	हिनहिनाना	फड़क
फुसफुसाहट	धम-धम	कुकुड़ूँ-कूँ	सरसराहट

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा नवीं कक्षा की विभिन्न परीक्षाओं (Common Exams) में पूछे गए 'शब्द-ज्ञान' संबंधी प्रश्न

विलोम शब्द

आकाश	×	पाताल	ज्ञात	×	अज्ञात
आदि	×	अंत	शिष्ट	×	अशिष्ट
गुण	×	अवगुण	यश	×	अपयश
प्रशंसा	×	निंदा	साकार	×	निराकार
महान	×	नीच	उत्तीर्ण	×	अनुत्तीर्ण
उद्दंड	×	विनम्र	सज्जन	×	दुर्जन
आज्ञा	×	अवज्ञा	आस्तिक	×	नास्तिक
प्रवृत्ति	×	निवृत्ति	जीवन	×	मरण
विक्रय	×	क्रय	नूतन	×	पुरातन
अनुज	×	अग्रज	निंदा	×	स्तुति
घृणा	×	प्रेम	लाभ	×	हानि
दृश्य	×	अदृश्य	हर्ष	×	शोक
पाप	×	पुण्य	साक्षर	×	निरक्षर
अस्त	×	उदय	विद्वान	×	मूर्ख
अवनति	×	उन्नति	यश	×	अपयश
अधिक	×	कम	सरल	×	कठिन
स्थूल	×	सूक्ष्म	शांति	×	अशांति
अनुकूल	×	प्रतिकूल	जड़	×	चेतन
आदान	×	प्रदान			

पर्यायवाची शब्द (दो-दो)

कमल	= पंकज, सरोज	अध्यापक	= गुरु, शिक्षक
बादल	= घन, पयोद	आँख	= चक्षु, लोचन
अमृत	= सोम, सुधा	देवता	= सुर, देव
सूर्य	= रवि, भास्कर	नदी	= तटिनी, सरिता
झंडा	= ध्वज, पताका	आकाश	= नभ, गगन
नयन	= नेत्र, चक्षु	साँप	= सर्प, नाग
हनुमान	= महावीर, पवनसुत	गणेश	= लंबोदर, विनायक
पृथ्वी	= धरा, भू	महिला	= स्त्री, नारी
अश्व	= घोड़ा, हय	अग्नि	= आग, पावक
रात्रि	= रात, निशा	अंबर	= आसमान, गगन
पवन	= वायु, समीर	वायु	= हवा, समीर
जल	= नीर, पानी	पानी	= जल, नीर
बिजली	= विद्युत, चपला	कमल	= पंकज, नीरज

युग्म-शब्द

अपेक्षा	—	आशा
उपेक्षा	—	तिरस्कार
सुखी	—	खुश
सूखी	—	शुष्क
अन्न	—	अनाज
अन्य	—	दूसरा
नारी	—	स्त्री
नाड़ी	—	शरीर की नाड़ी (नब्ज)
सुर	—	देवता
सूर	—	सूरदास
तरणी	—	नाव
तरुणी	—	युवा स्त्री
सुत	—	पुत्र
सूत	—	धागा
अवलंब	—	सहारा
अविलंव	—	शीघ्र
अवधि	—	समय सीमा
अवधी	—	एक भाषा का नाम
परिणाम	—	नतीजा
परिमाण	—	मात्रा
अनल	—	आग
अनिल	—	वायु
आदि	—	और
आदी	—	अभ्यस्त
ग्रह	—	नक्षत्र
गृह	—	घर
तुरंग	—	घोड़ा
तरंग	—	लहर
बहुमूल्य	—	बहुत कीमती
अमूल्य	—	जिसका मूल्य आँका न जा सके
शुक्ल	—	सफेद
शुल्क	—	फीस
आयु	—	उम्र
अवस्था	—	दशा

कहा	—	कहना
कहाँ	—	किधर
धन	—	दौलत
धान्य	—	अनाज
पत्र	—	पत्ता
पात्र	—	बर्तन, योग्य
ग्रह	—	नक्षत्र
विग्रह	—	बिखराव, झगड़ा
हरि	—	विष्णु
हर	—	शिव
अपकार	—	बुरा करना
उपकार	—	भलाई
प्रमाण	—	सबूत
परिमाण	—	मात्रा
कूल	—	वंश
कूल	—	किनारा

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए शब्द-ज्ञान संबंधी प्रश्न

(*CBSE 2008 Comptt. Delhi*)

प्रश्न 1. (*i*) (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पर्वत, चंद्रमा, लक्ष्मी, शत्रु।

(ख) किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

अपना, पंडित, रुग्ण, प्रेम।

(ग) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

उत्तर, कर।

उत्तर : (क) पर्वत–पहाड़, नग

चंद्रमा–पीयूष, चाँद

लक्ष्मी–कमला, रमा

शत्रु–दुश्मन, अरि।

(ख) **अपना** × पराया

पंडित × मूर्ख

रुग्ण × स्वस्थ

प्रेम × घृणा

(ग) **उत्तर**–उत्तर दिशा, जवाब।

1. हिमालय भारत के उत्तर में है।
2. चौथे प्रश्न का उत्तर दो।

कर–हाथ, टैक्स।

1. ईश्वर को नमन करने के लिए **कर** जोड़ो।
2. हमें **कर** समय पर भरना चाहिए।

(*CBSE 2008 Comptt. Delhi*)

प्रश्न 1. नीचे लिखे शब्दों में से किसी एक के दो विभिन्न अर्थ वाले वाक्य बनाकर स्पष्ट कीजिए :

पत्र, वर्ण।

उत्तर : पत्र : पेड़ों से पत्र झड़ रहे हैं।

राम को एक पत्र लिखो।

वर्ण : उसका वर्ण गोरा है।

वर्ण का सही उच्चारण कीजिए।

प्रश्न 2. नीचे लिखे शब्दों में से किसी एक के विभिन्न अर्थ वाले वाक्य बनाकर स्पष्ट कीजिए :

दल, कर, फल, उत्तर।

उत्तर : दल : पुष्प-दल महक रहा है।

सैनिकों के दल चले आ रहे हैं।

कर : अपना कर बढ़ाओ।

आय कर का भुगतान करो।

फल : उसने फल खाया।

उसे काम का फल मिल गया।

उत्तर : मुझे उत्तर दिशा में जाना है।

मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए।

(*CBSE 2008 Comptt. Delhi*)

प्रश्न 1. (*i*) (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो विलोम शब्द लिखिए :

मधुर, मिलन, जन्म, आदर।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आनंद, संसार, हाथ, तट।

(ग) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

फल, स्नेह।

उत्तर : (क) मधुर × कटु

मिलन × विछोह

जन्म × मरण

आदर × निरादर।

(ख) **आनंद**–हर्ष, उल्लास

संसार–जगत, विश्व

हाथ–कर, हस्त

तट–किनारा, कूल।

(ग) **फल**–परिणाम, खाने वाला फल

1. राम को अपनी करनी का **फल** मिल गया।

2. मैं **फल** खाना पसंद करता हूँ।

स्नेह–प्रेम, तेल

1. दोनों भाइयों में बहुत **स्नेह** है।

2. दीपक की बाती **स्नेह** से प्रकाश देती है।

(*ii*) (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

अग्नि, वृक्ष, पवन, माँ।

(ख) किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

अनुकूल, मान, क्रय, संयोग।

(ग) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

अंक, शून्य।

उत्तर : (क) अग्नि–अनल, आग

वृक्ष–पेड़, तरु

पवन–अनिल, वायु

माँ–जननी, माता।

(ख) अनुकूल × प्रतिकूल

मान × अपमान

क्रय × विक्रय

संयोग × वियोग।

(ग) अंक–गोद, गणना के अंक

1. माँ ने बच्चे को अपने **अंक** में ले लिया।

2. परीक्षा में तुम्हारे कितने **अंक** आए?

शून्य–ब्रह्म, अभावसूचक

1. साधक **शून्य** में लीन हो गया।

2. परीक्षा में तुम्हें **शून्य** मिला है।

(*CBSE 2008 Comptt., Outside*)

प्रश्न 1. (क) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के दो विभिन्न अर्थ वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए :

दंड, कल। *(Set I)*

चरण, कल। *(Set II)*

वर्ण, कर। *(Set III)*

उत्तर :

दंड = सजा-आज अध्यापक ने रमेश को दंड दिया।
व्यायाम - तुम्हें पचास दंड लगाने हैं।

कल = चैन-मुझे दर्द के कारण कल नहीं पड़ रहा है।
मशीन - आज का युग कलों का युग है।

चरण = पैर - महानुभावों के चरण-स्पर्श करो।
पंक्ति - चौपाई में चार चरण होते हैं।

वर्ण = रंग - उसका वर्ण गोरा है।
अक्षर - वर्णों का ज्ञान कीजिए।

कर = हाथ - उसके कर-कमलों से उद्घाटन हुआ।
टैक्स - सरकार के कर चुकाओ।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

आयात, कृतज्ञ, निरक्षर, संयोग।

उत्तर : आयात × निर्यात कृतज्ञ × कृतघ्न,
निरक्षर × साक्षर संयोग × वियोग

(ग) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

जड़, मधु।

उत्तर : जड़- मूल, मूर्ख

1. पेड़ की **जड़** को सींचो।

2. मोहन तो **जड़** है उसे कुछ समझ नहीं आता।

मधु- शहद, वसंत ऋतु

1. **मधु** मीठा होता है।

2. **मधु**मास में प्रकृति रंग-बिरंगी हो जाती है।

(*ii*) (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

शेर, नदी, आकाश, साँप।

उत्तर : शेर-सिंह, मृगेन्द्र **नदी**-सरिता, तटिनी
आकाश-गगन, अम्बर **साँप**- सर्प, विषधर

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

मूक, उत्कृष्ट, विष, उन्नति।

उत्तर : मूक × वाचाल **उत्कृष्ट** × अनुत्कृष्ट
विष × अमृत **उन्नति** × अवनति

(ग) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

कनक, तीर।

उत्तर : कनक-सोना, गेहूँ

1. कविवर बिहारी की नायिका की देह **कनक**लता के समान है ।

2. इस वर्ष **कनक** का कितना उत्पादन हुआ?

तीर—किनारा, धनुष का तीर

1. सोहन नदी के तीर पर बैठा है।

2. श्रीराम के धनुष के तीर शत्रुओं का संहार करते थे।

(*iii*) (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

सत्कर्म, दुर्लभ, साकार, सीमित।

उत्तर : सत्कर्म × दुष्कर्म दुर्लभ × सुलभ

साकार × निराकार **सीमित** × असीमित

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पर्वत, स्त्री, हाथ, फूल।

उत्तर : पर्वत - पहाड़, नग **स्त्री** - वामा, दारा

हाथ - कर, हस्त **फूल** - सुमन, कुसुम

(ग) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

आम, योग।

उत्तर : आम- मैं आम खा रहा हूँ।

यह आम रास्ता नहीं है।

योग- प्रातःकाल योग करना चाहिए।

दो संख्याओं का योग करो।

(CBSE 2008 Delhi) *(Set I)*

प्रश्न : (*i*) निम्नलिखित में से किसी एक के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आग, हाथी

उत्तर : आग = अग्नि, पावक **हाथी** = हस्ती, करी।

(*ii*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

आदि, उत्थान, जन्म, लाभ

उत्तर : आदि × अंत उत्थान × पतन

जन्म × मरण लाभ × हानि

(*iii*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

कूल, कर।

उत्तर : कुल = वह उच्च कुल में उत्पन्न हुआ है।

मेरे पास कुल पचास रुपए हैं।

कर = आयकर का भुगतान करो।

मेरे कर में चोट लगी है।

(Set II)

(*i*) निम्नलिखित में से किसी एक के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आकाश, नदी।

उत्तर : आकाश = नभ, गगन। नदी = सरिता, तटिनी

(*ii*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

अथ, उपकार, जाग्रत, संयोग।

उत्तर : अथ × इति जाग्रत × निद्रित

उपकार × अपकार संयोग × वियोग

(*iii*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

अलि, वर्ण

उत्तर : अलि = सखी – सीता मेरी पक्की अलि है।

भौंरा – कलियों पर अलि मँडरा रहे हैं।

वर्ण = रंग – इसका वर्ण काला है।

अक्षर-वर्ण दो प्रकार के हैं—स्वर और व्यंजन।

(Set III)

(*i*) निम्नलिखित में से किसी एक के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

कमल, गणेश।

उत्तर : कमल = पंकज, सरोज

गणेश = लंबोदर, गणपति

(*ii*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

अचल, कटु, दयालु, संपत्ति

उत्तर : अचल × सचल कटु × मृदु

दयालु × निर्दय संपत्ति × विपत्ति

(*iii*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

राज, मधु

उत्तर : राज = मेरे राज को छिपाकर रखना।

अंग्रेजों के राज में अत्याचार हुए।

मधु = शहद की मक्खियों से मधु मिलता है।

दूसरों के साथ मधु व्यवहार करो।

(CBSE 2008 Outside) (Set I)

प्रश्न : (*i*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

वन, ईश्वर।

उत्तर : वन = जंगल, विपिन, **ईश्वर** = भगवान, परमात्मा

(*ii*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

आदर, कनिष्ठ, दुर्लभ, विष।

उत्तर : आदर × अनादर कनिष्ठ × वरिष्ठ

दुर्लभ × सुलभ विष × अमृत

(*iii*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

अंक, अपेक्षा।

उत्तर : अंक = मुझे परीक्षा में अच्छे अंक मिले हैं।
बच्चा माँ के अंक में सा रहा है।

अपेक्षा = तुम्हारी अपेक्षा गीता सुंदर है।
मुझे तुमसे ऐसी अपेक्षा न थी।

(*Set II*)

(*i*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

वृक्ष, चन्द्रमा।

उत्तर : वृक्ष = पेड़, पादप

चंद्रमा = शशि, सोम

(*ii*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

क्रोध, दंड, वीर, अल्प।

उत्तर : क्रोध × शांत   दंड × पुरस्कार
वीर × कायर   अल्प × अधिक

(*iii*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

उत्तर, कल।

उत्तर : उत्तर : हिमालय उत्तर दिशा में है।
तुम्हारा उत्तर कब आएगा?

कल : तुम मेरे साथ कल चलना।
मुझे कल नहीं पड़ रही है।

(*Set III*)

(*i*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

फूल, सूर्य।

उत्तर : फूल = पुष्प, सुमन।
सूर्य = रवि, भास्कर।

(*ii*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

अंधकार, गुरु, सुख, हिंसा।

उत्तर : अंधकार × प्रकाश   गुरु × लघु
सुख × दु:ख   हिंसा × अहिंसा

(*iii*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

कर, कुल।

उत्तर : कर = सरकार का कर चुकाओ।
तुम्हारे कर बड़े कोमल हैं।

कुल = वह उच्च कुल का है।
घर में कुल चार सदस्य हैं।

(*CBSE Sample Paper-1*)

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक के दो विभिन्न अर्थ वाक्य बनाकर स्पष्ट कीजिए :

ग्रहण, कुल

उत्तर : ग्रहण – स्वीकार : तुम यह पुरस्कार ग्रहण करो।
– दोष : इस समय सूर्य ग्रहण लगा हुआ है।

कुल-वंश : वह उच्च कुल का बेटा है।
योग : मेरे पास कुल पचास रुपए हैं।

प्रश्न 2. (*i*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

घोड़ा, पुत्र, गंगा, आँख

(*ii*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के विलोम शब्द लिखिए :

अनुकूल, बाह्य, तीव्र, स्वार्थ

(*iii*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

ग्रहण, गुरु

उत्तर : (*i*) घोड़ा = अश्व, घोटक
पुत्र = सुत, आत्मज
गंगा = जाह्नवी, सुरसरि
आँख = चक्षु, नेत्र

(*ii*) **अनुकूल** = प्रतिकूल
बाह्य = आंतरिक
तीव्र = धीमा
स्वार्थ = नि:स्वार्थ

(*iii*) **ग्रहण** = तुम यह प्रसाद ग्रहण करो।
= आज रात को चंद्रग्रहण होगा।

गुरु = गुरु पूजनीय होते हैं।
= हथौड़े के गुरु भार सहन करना कठिन है।

(*CBSE Sample Paper-2*)

प्रश्न : (*i*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

नारी, भाई, पक्षी, नदी

(*ii*) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

प्राचीन, सार्थक, पराधीन, अमृत

(*iii*) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द से दो अलग-अलग अर्थ देने वाले वाक्य बनाइए :

जड़, अर्थ

उत्तर : (*i*) नारी = स्त्री, महिला
भाई = भ्राता, सहोदर
पक्षी = विहग, खग
नदी = सरिता, तटिनी

(*ii*) प्राचीन = नवीन
सार्थक = निरर्थक
पराधीन = स्वाधीन
अमृत = विष

(*iii*) जड़ = निर्जीव : यह जड़ बुद्धि वाला व्यक्ति है।
पेड़ की जड़ : जड़ जमीन के नीचे रहती है।
अर्थ = मतलब : इस शब्द का अर्थ बताओ।
धन : यह समस्या अर्थ संबंधी है।

नवीं कक्षा हेतु शब्द ज्ञान से संबंधी बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. 'आकाश' का कौन-सा शब्द पर्यायवाची नहीं है ?
(क) गगन (ख) अंबर (ग) अंबुज
2. 'आयात' का विलोमार्थी है :
(क) निर्यात (ख) आवक (ग) अर्थ
3. कौन-सा शब्द 'राक्षस' का पर्यायवायी नहीं है ?
(क) देव (ख) दानव (ग) असुर
4. अल्पायु का विलोमार्थी शब्द है :
(क) दीर्घायु (ख) अल्पज्ञ (ग) दीर्घतर
5. 'घोड़ा' का पर्यायवाची कौन सा नहीं है ?
(क) अश्व (ख) तुरंग (ग) गज
6. कौन-सा शब्द 'दूध' का पर्यायवाची नहीं है ?
(क) दुग्ध (ख) क्षीर (ग) मधु
6. 'अमृत' का कौन सा शब्द पर्यायवाची नहीं है ?
(क) सुधा (ख) पीयूष (ग) सलिल
8. 'सिंह' का जो शब्द पर्यायवाची नहीं है उसे छाँटो–
(क) केसरी (ख) शेर (ग) हस्ती
9. 'मित्व्यय' का विलोमार्थी शब्द है –
(क) अल्पव्यय (ख) अपव्यय (ग) व्यय
10. 'प्रसन्नता' का कौन-सा शब्द पर्यायवाची नहीं है ?
(क) हर्ष (ख) उल्लास (ग) निर्देश
11. 'विश्व' शब्द का अर्थ है–
(क) संसार (ख) परमात्मा (ग) भारती
12. 'मलिन' शब्द का विलोम है–
(क) निर्मल (ख) मलिनता (ग) अमलिन
13. 'धारणा' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है–
(क) ज्ञान (ख) विचार
(ग) बुद्धि (घ) समझ
14. 'जो ईश्वर पर विश्वास करे' के लिए एक शब्द है–
(क) सदाचारी (ख) भगवान
(ग) आस्तिक (घ) ईश्वरीय
15. 'मनोहारी' शब्द के लिए उपयुक्त वाक्यांश है–
(क) मन को हराने वाला (ख) मन का मानने वाला
(ग) हार मानने वाला (घ) मन को हरने वाला
16. कौन सा रूप सही है ?
(क) सूर्य (ख) सूर्य (ग) सूरय्

उत्तर : 1. (ग), 2. (ग), 3. (क), 4. (क), 5. (ग), 6. (ग), 7. (ग), 8. (ग), 9. (ख), 10. (ग), 11. (क), 12. (क), 13. (ख), 14. (ग), 15. (घ), 16. (ख)।

17. पूछ-पूँछ में अंतर बताओ।
उत्तर : पूछ : पूछना; पूँछ : जानवर की पूँछ
18. फन-फ़न में अंतर बताओ।
उत्तर : फन : (साँप का फन) फ़न : (हुनर)।
19. 'अग्नि' का कौन-सा शब्द पर्यायवाची नहीं है ?
(क) आग (ख) सुधा (ग) अनल
20. 'विटप' किसका पर्यायवाची है ?
(क) वृक्ष (ख) पुष्प (ग) पत्ता
21. 'जंगल' का विलोमार्थी है–
(क) स्थावर (ख) वन (ग) स्थूल
22. 'पतंग' के अनेकार्थी हैं–
(क) सूर्य, उड़ने वाली वस्तुं
(ख) पद, पैर (ग) वस्त्र, परदा
23. कौन-सा रूप सही है ?
(क) जवाला (ख) ज्वाला (ग) ज्वाला
24. कौन-सा रूप सही है ?
(क) रामाचयण (ख) रामायन (ग) रमायण

उत्तर : 19. (ख), 20. (क), 21. (क), 22. (क)।

25. अंतर स्पष्ट करो : सवार - सँवार।
उत्तर : सवार - जो किसी के ऊपर हो।
सँवार - सँवारना।
26. हंस - हँस में अंतर स्पष्ट करो।
उत्तर : हंस - एक पक्षी।
हँस - हँसना।
27. राज - राज़ में अंतर स्पष्ट करें।
उत्तर : राज - शासन
राज़ - रहस्य
26. पक - पंक में अंतर स्पष्ट करो।
उत्तर : पक - पकना
पंक - कीचड़।

रचना-खंड (Composition)

● अपठित बोध ● संवाद-लेखन ● अनुच्छेद-लेखन ● पत्र-लेखन ● निबंध-लेखन

अध्याय 1

अपठित बोध

(Unseen Passages for Comprehension)

'अपठित' से अभिप्राय है -- जिसे पहले पढ़ा न गया हो। ऐसा अवतरण गद्य अथवा पद्य दोनों में हो सकता है। परीक्षा में केवल अपठित गद्यांश देकर उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। इनका उत्तर लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. सर्वप्रथम दिए गए गद्यांश को कम-से-कम दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए, जिससे उसका मूल भाव आपकी समझ में आ जाए।
2. इसके पश्चात् पूछे गए प्रश्नों को पढ़ना चाहिए।
3. पूछे गए प्रश्नों के संभावित उत्तरों को रेखांकित कीजिए।
4. ध्यान रखें कि प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद में दी हुई सामग्री पर आधारित हों।
5. प्रश्नों के उत्तर अत्यंत सरल भाषा और अपने शब्दों में दीजिए।
6. प्रश्नों के उत्तर सीधे, संक्षिप्त एवं सटीक होने चाहिए, उनमें अनावश्यक विस्तार, उदाहरण, अलंकार, सूक्तियों, मुहावरों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
7. कभी-कभी कठिन शब्दों के अर्थ, विलोम शब्द तथा मुहावरे भी पूछे जाते हैं। शब्दों के अर्थ प्रसंग के अनुकूल होने आवश्यक हैं।
8. उचित स्थानों पर विराम-चिह्नों का प्रयोग करना न भूलें।
9. अपठित बोध में सार और शीर्षक लिखने को भी कहा जा सकता है।

यहाँ अपठित बोध के पर्याप्त उदाहरण दिए जा रहे हैं :

● (क) गद्यांश ●

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कुछ लोगों के अनुसार मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य धन-संग्रह है। नीतिशास्त्र में धन-संपत्ति आदि को ही 'अर्थ' कहा गया है। बहुत से ग्रंथों में अर्थ की प्रशंसा की गई है; क्योंकि सभी गुण अर्थ अर्थात् धन के आश्रित ही रहते हैं। जिसके पास धन है वही सुखी रह सकता है, विषय-भोगों को संगृहीत कर सकता है तथा दान-धर्म भी निभा सकता है। वर्तमान युग में धन का सबसे अधिक महत्त्व है। आज हमारी आवश्यकताएँ बहुत बढ़ गई हैं, इसलिए उनको पूरा करने के लिए धन-संग्रह की आवश्यकता पड़ती है। धन की प्राप्ति के लिए भी अत्यधिक प्रयत्न करना पड़ता है और सारा जीवन इसी में लगा रहता है। कुछ लोग तो धनोपार्जन को ही जीवन का उद्देश्य बनाकर उचित-अनुचित साधनों का भेद भी भुला बैठते हैं। संसार के इतिहास में धन की लिप्सा के कारण जितनी हिंसाएँ, अनर्थ और अत्याचार हुए हैं, उतने और किसी दूसरे कारण से नहीं हुए हैं। अतः धन को जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य नहीं माना जा सकता; क्योंकि धन अपने आप में मूल्यवान् वस्तु नहीं है। धन को संचित करने के लिए छल-कपट आदि का सहारा लेना पड़ता है, जिसके कारण जीवन में अशांति और चेहरे पर विकृति बनी रहती है। इतना ही नहीं इसके संग्रह की प्रवृत्ति के पनपने के कारण सदा चोर, डाकू और दुश्मनों का भय बना रहता है। धन का अपहरण या नाश होने पर कष्ट होता है। इस प्रकार अशांति, संघर्ष, दुष्प्रवृत्ति, दुख, भय एवं पाप आदि का मूल होने के कारण, धन को जीवन का परम लक्ष्य नहीं माना जा सकता।

(CBSE 2008 Comptt. Outside)

प्रश्न :

1. जीवन में धन का सर्वाधिक महत्त्व क्यों माना गया है?
2. आज के युग में धन-संग्रह की आवश्यकता क्यों अधिक बढ़ गई है?
3. धन-संग्रह को ही जीवन का परम उद्देश्य मानने के कारण जीवन और जगत् में क्या दुष्परिणाम देखने को मिलते हैं?
4. धन को जीवन का परम लक्ष्य क्यों नहीं माना जा सकता?
5. उपर्युक्त गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
6. 'छल-कपट' का समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए।
7. 'धनोपार्जन' और 'धन-संग्रह' में अंतर स्पष्ट कीजिए।
8. 'मूल्यवान' शब्द की भाँति किसी अन्य शब्द की रचना कीजिए।

उत्तर :

1. जीवन में धन-संग्रह का महत्त्व इसलिए माना गया है क्योंकि सभी गुण धन पर ही आश्रित रहते हैं। जिसके पास धन है, वही सुखी रह सकता है। धन से दान किया जा सकता है।
2. आज के युग में धन-संग्रह की आवश्यकता इसलिए बढ़ गई है क्योंकि हमारी आवश्यकताएँ बढ़ गई हैं। उनकी पूर्ति के लिए धन-संग्रह की जरूरत पड़ती है।
3. धन-संग्रह को ही परम उद्देश्य मानने के कारण जीवन और जगत में उचित-अनुचित का भेद समाप्त हो जाता है। इस प्रवृत्ति ने हिंसा, अनर्थ और अत्याचार को बढ़ावा दिया है।
4. धन को जीवन का परम लक्ष्य इसलिए नहीं माना जा सकता क्योंकि धन अपने आप में मूल्यवान वस्तु नहीं है। धन को जोड़ने के लिए छल-कपट का सहारा लेना पड़ता है।
5. **शीर्षक :** जीवन में धन-संग्रह का महत्त्व।
6. 'छल-कपट' का विग्रह - छल और कपट - द्वंद्व समास।
7. 'धनोपार्जन' का अर्थ है- धन कमाना।
   'धनसंग्रह' का अर्थ है-धन एकत्रित कर जमा करना।
8. 'मूल्यवान' की भाँति अन्य शब्द-धनवान।

2. **अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत के प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रावधान किया है। इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि, कर्त्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और सेवा की भावना आदि नियम बहुत महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये सभी नियम यदि एक व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के रूप में भी अनिवार्य माने जाएँ तो उसका अपना जीवन भी सुखी और आनंदमय हो सकता है। इन सभी गुणों का विकास एक बालक में यदि उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है। इन गुणों के कारण वह अपने परिवार, आस-पड़ोस, विद्यालय में अपने सहपाठियों एवं अध्यापकों के प्रति यथोचित व्यवहार कर सकेगा।**

वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है, समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है किंतु अहंकारहीन व्यक्ति ही स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है। अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी होता है। जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे आदमी के व्यवहार से समाज में शांति और सौहार्द का वातावरण नहीं बनता।

जिस प्रकार एक व्यक्ति समाज में रहकर अपने व्यवहार से कर्त्तव्य और अधिकार के प्रति सजग रहता है, उसी तरह देश के प्रति भी उसका व्यवहार कर्त्तव्य और अधिकार की भावना से भावित रहना चाहिए। उसका कर्त्तव्य हो जाता है कि न तो वह स्वयं कोई ऐसा काम करे और न ही दूसरों को करने दे, जिससे देश के सम्मान, संपत्ति और स्वाभिमान को ठेस लगे।

समाज एवं देश में शांति बनाए रखने के लिए धार्मिक सहिष्णुता भी बहुत आवश्यक है। यह वृत्ति तभी आ सकती है जब व्यक्ति संतुलित व्यक्तित्व का हो।

(CBSE 2008 Comptt. Delhi

प्रश्न :

1. *समाज एवं राष्ट्र के हित में नागरिक के लिए कैसे गुणों की अपेक्षा की जाती है?*
2. *ये गुण किसी व्यक्ति के निजी जीवन में किस प्रकार उपयोगी हो सकते हैं?*
3. *वाणी और व्यवहार की मधुरता सबके लिए सुखदायक क्यों मानी गई है?*
4. *देश के संदर्भ में नागरिक के कर्त्तव्यों का क्या स्वरूप होना चाहिए?*
5. *'धार्मिक सहिष्णुता' से क्या आशय है? यह गुण मनुष्य में कब आ सकता है?*
6. *'अहंकारहीन' अथवा 'सद्भाव' का समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए।*
7. *इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।*

उत्तर :

1. समाज एवं राष्ट्र के हित में नागरिकों के लिए इन गुणों की अपेक्षा की जाती है :
   वाणी और व्यवहार की शुद्धि, कर्त्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और सेवा की भावना।
2. ये गुण व्यक्ति के निजी जीवन में बहुत उपयोगी होते हैं। इनसे व्यक्ति का अपना जीवन सुखी और आनंदमय हो जाता है। वह देश का श्रेष्ठ नागरिक बन जाता है। इन गुणों के कारण वह सभी के साथ यथोचित व्यवहार कर सकेगा।
3. वाणी और व्यवहार की मधुरता सबके लिए सुखदायक इसलिए मानी जाती है क्योंकि इनसे समाज में सद्भाव बढ़ता है। इनसे व्यक्ति का अहंकार मिटता है, समाज में शांति और सौहार्द का वातावरण बनता है।
4. देश के संदर्भ में नागरिक के कर्त्तव्यों का स्वरूप यह होना चाहिए कि उसे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे देश के सम्मान, संपत्ति और स्वाभिमान को ठेस पहुँचती हो।
5. 'धार्मिक सहिष्णुता' से यह आशय है कि हम दूसरों के धर्म के प्रति सहनशीलता की भावना बनाए रखें, सभी धर्मों का आदर करें तथा उनका सम्मान करें।
6. **अहंकारहीन :** अहंकार से हीन – तत्पुरुष समास।
   सद्भाव : सत् भाव – कर्मधारय समास।
7. **शीर्षक :** सच्चे नागरिक के गुण।

3. **संसार के सभी देशों में शिक्षित व्यक्ति की सबसे पहली पहचान यह होती है कि वह अपनी मातृभाषा में दक्षता से काम कर सकता है। केवल भारत ही एक देश है जिसमें शिक्षित व्यक्ति वह समझा जाता है जो अपनी मातृभाषा में दक्ष हो या नहीं, किंतु अंग्रेजी में जिसकी दक्षता असंदिग्ध हो। संसार के अन्य देशों में सुसंस्कृत व्यक्ति वह समझा जाता है जिसके घर में अपनी भाषा की पुस्तकों का संग्रह हो और जिसे बराबर यह पता रहे कि उसकी भाषा के अच्छे लेखक और कवि कौन हैं तथा समय-समय पर उनकी कौन सी कृतियाँ प्रकाशित हो रही हैं। भारत में स्थिति दूसरी है। यहाँ प्रायः घर में साज-सज्जा के आधुनिक उपकरण तो होते हैं किंतु अपनी भाषा की कोई पुस्तक या पत्रिका दिखाई नहीं पड़ती। यह दुरवस्था भले ही किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, किन्तु वह सुदशा नहीं, दुरवस्था ही है और जब तक यह दुरवस्था कायम है, हमें अपने-आप को, सही अर्थों में शिक्षित और सुसंस्कृत मानने का ठीक-ठीक न्यायसंगत अधिकार नहीं है।**

इस दुरवस्था का एक भयानक दुष्परिणाम यह है कि भारतीय भाषाओं के समकालीन साहित्य पर उन लोगों की दृष्टि नहीं पड़ती जो विश्वविद्यालयों के प्रायः सर्वोत्तम छात्र थे और अब शासन-तंत्र में ऊँचे ओहदों पर काम कर रहे हैं। इस दृष्टि से भारतीय भाषाओं के लेखक केवल यूरोपीय और अमेरिकी लेखकों से ही हीन नहीं हैं, बल्कि उनकी किस्मत मिस्र, बर्मा, इंडोनेशिया, चीन और जापान के लेखकों की किस्मत से भी खराब है क्योंकि इन सभी देशों के लेखकों की कृतियाँ वहाँ के अत्यंत सुशिक्षित लोग भी पढ़ते हैं। केवल हम ही हैं जिनकी पुस्तकों पर यहाँ के तथाकथित शिक्षित समुदाय की दृष्टि प्रायः नहीं पड़ती। हमारा तथाकथित उच्च शिक्षित समुदाय जो कुछ पढ़ना चाहता है, उसे अंग्रेजी में ही पढ़ लेता है, यहाँ तक कि उसकी कविता और उपन्यास पढ़ने की तृष्णा भी अंग्रेजी की कविता और उपन्यास पढ़कर ही समाप्त हो जाती है और उसे यह जानने की इच्छा ही नहीं होती कि शरीर से वह जिस समाज का सदस्य है उसके मनोभाव उपन्यास और काव्य में किस अदा से व्यक्त हो रहे हैं।

(CBSE 2009 Outside)

प्रश्न :

1. भारत में शिक्षित व्यक्ति की क्या पहचान है?

2. भारत तथा अन्य देशों के सुशिक्षित व्यक्ति में मूल अंतर क्या है?

3. 'यह दुरावस्था ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है' कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है?

4. भारतीय भाषाओं के साहित्य के प्रति समाज के किस वर्ग में अरुचि की भावना है?

5. भारतीय शिक्षित समुदाय प्राय: किस भाषा का साहित्य पढ़ना पसंद करता है? उनके लिए 'तथाकथित' विशेषण का प्रयोग क्यों किया गया है?

6. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

7. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी बताइए : संसार, दक्षता।

8. 'उच्चवर्गीय' तथा 'शिक्षित' शब्दों के प्रत्यय अलग कीजिए।

9. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थी बताइए : आधुनिक, अच्छे।

उत्तर :

1. भारत में शिक्षित व्यक्ति की यह पहचान है कि उसे अंग्रेजी में दक्षता प्राप्त हो, भले ही वह अपनी मातृभाषा में दक्ष हो या नहीं।
2. संसार के अन्य देशों में सुशिक्षित व्यक्ति वह समझा जाता है जिसे अपनी भाषा के लेखकों एवं कवियों का पता हो तथा वह उनकी रचनाओं के बारे में जानता हो। भारत में स्थिति दूसरी है। यहाँ के सुशिक्षित व्यक्ति के पास अंग्रेजी भाषा की रचनाएँ तो मिल जाएँगी पर अपनी भाषा की कोई पुस्तक या पत्रिका दिखाई नहीं पड़ेगी।
3. इस कथन से लेखक का यह अभिप्राय है कि भारतीयों की इस बुरी अवस्था के पीछे ऐतिहासिक कारण भी रहे हैं। अंग्रेजों की गुलामी ने हमें मानसिक तौर पर भी गुलाम बना दिया।
4. भारतीय भाषाओं के साहित्य के प्रति समाज के उस वर्ग में अरुचि की भावना है जो कभी विश्वविद्यालयों में सर्वोत्तम छात्र थे अर्थात् मेधावी थे और अब शासनतंत्र में उच्च पदों पर आसीन हैं।
5. भारतीय शिक्षित समुदाय प्राय: अंग्रेजी भाषा का साहित्य पढ़ना पसंद करता है। उनके लिए 'तथाकथित' विशेषण का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि प्राय: उन्हीं को शिक्षित कहा जाता है, जबकि लेखक इससे पूरी तरह सहमत नहीं है।
6. **शीर्षक** – भारत में अंग्रेजी के प्रति मोह।
7. **समानार्थी शब्द :** संसार = विश्व
   दक्षता = कुशलता, निपुणता
8. **प्रत्यय** – उच्चवर्गीय – ईय   शिक्षित – इत
9. **विपरीतार्थक** = आधुनिक × प्राचीन   अच्छे × बुरे

4. जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में तीर्थ कहने का रिवाज है। और यह केवल रिवाज की बात नहीं है; हम, सचमुच, मानते हैं कि अलग-अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य होता है, उससे कहीं अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किन्तु, भारत आज जिस दौर से गुजर रहा हे, उसमें असली संगम स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं। नदियों की विशेषता यह है कि अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ, अनेक जनपदों के आँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन वास्तव में नाना जनपदों के मिलन का ही प्रतीक है। यही हाल भाषाओं का भी है। उनके भीतर नाना जनपदों में बसने वाली जनता के आँसू और उमंगें, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। अत: जहाँ भाषाओं का मिलन होता है, वहाँ वास्तव में, विभिन्न जनपदों के हृदय ही मिलते हैं, उनके भावों और विचारों का ही मिलन होता है तथा भिन्नताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष हो उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है, वह भारत की एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है।

हमारी भाषाएँ जितनी ही तेजी से जगेंगी, हमारे विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतना ही बढ़ता जाएगा। भारतीय लेखकों की बहुत दिनों से यह आकांक्षा रही थी कि वे केवल अपनी ही भाषा में प्रसिद्ध होकर न रह जाएँ

बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में भी उनके नाम पहुँचें और उनकी कृतियों की चर्चा हो। भाषाओं के जागरण के आरंभ होते ही एक प्रकार का अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है। आज प्रत्येक भाषा के भीतर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है कि भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है, उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं जिनकी कृतियाँ उल्लेखनीय हैं तथा कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है। *(CBSE 2009 Delhi)*

प्रश्न :

1. *लेखक ने आधुनिक संगम स्थल किसको माना है और क्यों?*
2. *भाषा-संगमों में भारत की किन विशेषताओं का संगम होता है?*
3. *लेखक ने सबसे बड़ा सिपाही और सन्त किसको कहा है?*
4. *अलग-अलग प्रदेशों में आपसी ज्ञान किस प्रकार बढ़ सकता है?*
5. *स्वराज्य-प्राप्ति के उपरांत विभिन्न भाषाओं के लेखकों में क्या जिज्ञासा उत्पन्न हुई?*
6. *भाषाओं के जागरण से लेखक का क्या अभिप्राय है?*
7. *गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।*
8. *निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी बताइए : सौरभ, आकांक्षा*
9. *'उल्लेखनीय' तथा 'पारस्परिक' शब्दों में प्रत्यय अलग कीजिए।*
10. *निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थी बताइए : भिन्नता, प्रत्यक्ष*

उत्तर :

1. लेखक ने आधुनिक संगम-स्थल उन स्थलों, सभाओं और मंचों को माना है जहाँ पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्रित होती हैं। इसका कारण यह है कि इन स्थानों पर विविध भाषा-भाषी लोग एकत्रित होते हैं और आपस में मिलते जुलते हैं।
2. भाषा-संगमों में भारत की जिन विशेषताओं का संगम होता है, वे हैं–लोगों के आँसुओं, भावों, उमंगों, आशाओं और शंकाओं का संगम तथा विभिन्न जनपदों के लोगों के हृदय के विचारों एवं भावों का संगम। ये सबसे बड़े तीर्थ हैं।
3. भाषाओं का संगम एक तीर्थ के समान है और जो भारतवासी इसमें श्रद्धा से स्नान करता है – वह सबसे बड़ा सिपाही और संत है।
4. अलग-अलग प्रदेशों की भाषाएँ जितनी तेजी से जागेंगी अर्थात् विकसित होंगी, उतना ही आपसी ज्ञान बढ़ेगा।
5. स्वराज प्राप्ति के उपरांत विभिन्न भाषाओं के लेखकों में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि वे केवल अपनी भाषा तक सिमटकर न रह जाएँ, बल्कि अन्य भाषाओं में भी उनका नाम पहुँचे।
6. भाषाओं के जागरण से लेखक का यह अभिप्राय है कि एक भाषा के लेखक को अन्य भाषाओं के लेखकों और उनकी रचनाओं के बारे में पता होना चाहिए। उनकी विचारधारा के बारे में भी जानना चाहिए।
7. **शीर्षक** –'भाषाओं का संगम।'
8. **समानार्थी शब्द** – सौरभ – सुगंध आकांक्षा – मन की इच्छा।
9. **प्रत्यय** – उल्लेखनीय – नीय पारस्परिक – इक
10. **विपरीतार्थी** – भिन्नता – समानार्थी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष/परोक्ष

5. इस संसार को कर्मक्षेत्र कहा गया है। सारी सृष्टि कर्मरत है। छोटे से छोटा प्राणी भी कर्म का शाश्वत संदेश दे रहा हैं। प्रकृति के साम्राज्य में कहीं भी अकर्मण्यता के दर्शन नहीं हो रहे हैं। सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, ग्रह-नक्षत्रादि निरंतर गतिशील हैं। नियमानुकूल सूर्योदय होता है और सूर्यास्त तक किरणें प्रकाश बिखेरती रहती हैं। रात्रिकालीन आकाश में तारावलि तथा नक्षत्रादि का सौंदर्य विहँस उठता है। क्रमशः बढ़ती-घटती चंद्रकला के दर्शन होते हैं। इसी तरह विभिन्न ऋतुओं का चक्र अपनी धुरी पर चलता रहता है। नदियाँ अविरल गति से बहती रहती हैं। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सबके जीवन में सक्रियता है। वस्तुतः कर्म से परे जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है।

मनुष्य का जन्म पाकर हाथ-पैर तो हिलाने ही होंगे। हमारे प्राचीन ऋषियों ने शतायु होने की किंतु कर्म करते हुए जीने की इच्छा प्रकट की थी। इतिहास साक्षी है कि कितने ही भारतीय युवकों ने कर्मशक्ति के बल पर चंद्रगुप्त की

भाँति शक्तिशाली साम्राज्यों की स्थापना की। आधुनिक युग में भारत जैसे विशाल जनतंत्र की स्थापना करने वाले गाँधी, नेहरू, पटेल आदि कर्मपथ पर दृढ़ता के ही प्रतिरूप थे। दूसरी ओर इतिहास उन सम्राटों को भी रेखांकित करता है जिनकी अकर्मण्यता के कारण महान् साम्राज्य नष्ट हो गए। वेद, उपनिषद्, कुरान, बाइबिल आदि धर्मग्रंथ कर्मठ मनीषियों की ही उपलब्धियाँ हैं। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की गौरव-गरिमा उन वैज्ञानिकों की देन है जिन्होंने साधना की बलि-वेदी पर अपनी हर साँस समर्पित कर दी। विज्ञान कर्म का साक्षात् प्रतीक है। सुख-समृद्धि के शिखर पर आसीन प्रत्येक व्यक्ति अथवा जाति कर्म-शक्ति का परिचय देती है। *(CBSE 2009 Outside*

प्रश्न :

1. *गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए ।*
2. *कर्म का संदेश निरंतर हमे किनसे मिल रहा है?*
3. *प्रकृति की कौन-सी अन्य वस्तुएँ हैं जिनसे सक्रियता का संदेश मिलता है?*
4. *ऋषियों ने सौ वर्ष का कैसा जीवन चाहा था?*
5. *कर्म के बल पर किन साम्राज्यों की स्थापना हुई ?*
6. *भारत जैसे विशाल जनतंत्र की स्थापना किस बल पर की गई?*
7. *अकर्मण्यता के क्या परिणाम होते हैं?*
8. *धर्मग्रंथों को कर्मठ व्यक्तियों की उपलब्धि क्यों कहा है?*
9. *विज्ञान कर्म का प्रतीक कैसे है?*
10. *'सक्रियता' और 'विशाल' के विपरीतार्थक लिखिए।*
11. *'चंद्र' और 'पृथ्वी' के दो-दो पर्यायवाची लिखिए।*

उत्तर :

1. **शीर्षक**–कर्म का संदेश।
2. कर्म का संदेश निरंतर हमें प्रकृति में सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्रों से तथा इतिहास के महापुरुषों से मिलता है।
3. प्रकृति के सभी प्राणी, सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, ग्रह-नक्षत्र, तारे, विभिन्न ऋतुएँ, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी हमें सक्रियता का संदेश देते हैं।
4. ऋषियों ने सौ वर्ष का सक्रिय जीवन चाहा था। उन्होंने कर्म करते हुए जीने की इच्छा प्रकट की थी।
5. कर्म के बल पर चंद्रगुप्त की भाँति अनेक साम्राज्यों की स्थापना हुई। इनमें मौर्य साम्राज्य और गुप्त साम्राज्य प्रमुख थे।
6. भारत जैसे विशाल जनतंत्र की स्थापना कर्म की शक्ति के बल पर ही हुई। इस जनतंत्र की स्थापना करने वाले गाँधी, नेहरू और पटेल आदि कर्मपथ पर दृढ़ता के ही प्रतिरूप थे।
7. अकर्मण्यता के कारण महान साम्राज्य तक नष्ट हो जाते हैं। इससे हर क्षेत्र में असफलता मिलती है। बना-बनाया काम बिगड़ जाता है।
8. धर्मग्रंथों को कर्मठ व्यक्तियों की उपलब्धि इसलिए कहा गया है क्योंकि इनकी रचना करना कोई सरल काम नहीं था। कर्मठ व्यक्ति ही ऐसा काम कर सकते थे। यह एक महान उपलब्धि थी।
9. विज्ञान में काम करके देखने को महत्त्व दिया जाता है। यह प्रयोगात्मक ज्ञान है। विज्ञान तो कर्म का साक्षात् प्रतीक है।
10. **विलोम शब्द –** सक्रियता × निष्क्रियता   विशाल × लघु
11. **पर्यायवाची शब्द –** चन्द्र = सोम, चाँद   पृथ्वी = धरती, भू

6. मानव जीवन में आत्मसम्मान का अत्यधिक महत्त्व है। आत्मसम्मान में अपने व्यक्तित्व को अधिकाधिक सशक्त एवं प्रतिष्ठित बनाने की भावना निहित होती है। इससे शक्ति, साहस, उत्साह आदि गुणों का जन्म होता है जो जीवन की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आत्मसम्मान की भावना से पूर्ण व्यक्ति संघर्षों की परवाह नहीं करता है और विषम परिस्थिति से टक्कर लेता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में पराजय का मुँह नहीं देखते तथा निरंतर यश की प्राप्ति करते हैं। आत्मसम्मानी व्यक्ति धर्म, सत्य, न्याय और नीति के पथ का अनुगमन करता है। उसके जीवन में ही सच्चे सुख और शांति का निवास होता है। परोपकार, जनसेवा जैसे कार्यों में उसकी रुचि होती है। लोकप्रियता और सामाजिक प्रतिष्ठा उसे सहज ही प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति में अपने राष्ट्र के प्रति सच्ची निष्ठा होती है तथा मातृभूमि की उन्नति

के लिए वह अपने प्राणों को उत्सर्ग करने में भी सुख की अनुभूति करता है। चूँकि आत्मसम्मानी व्यक्ति अपनी अथवा दूसरों की आत्मा का हनन करना पसंद नहीं करता है, इसलिए वह ईर्ष्या-द्वेष जैसी भावनाओं से मुक्त होकर मानव मात्र को अपने परिवार का अंग मानता है। उसके हृदय में स्वार्थ, लोभ और अहंकार का भाव नहीं होता। निश्छल हृदय होने के कारण वह आसुरी प्रवृत्तियों से सर्वथा मुक्त होता है। उसमें ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति एवं विश्वास होता है, जिससे उसकी आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है। जीवन को सरस और मधुर बनाने के लिए आत्मसम्मान रसायन-तुल्य है।

आत्मसम्मान प्रत्येक जाति तथा राष्ट्र की प्रेरणा का दैवी स्रोत है। मानव मात्र के मौलिक गुणों की यह विभूति है। प्रत्येक व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है कि आत्मसम्मान की सुरक्षा के लिए सतत प्रस्तुत रहे। इसे खोकर हम सर्वस्व खो देंगे। हमारी संस्कृति, हमारा धर्म, यहाँ तक कि हमारा अस्तित्व ही इसके अभाव में लुप्त हो जाएगा। परतंत्रता के युग में हमारे सार्वजनिक जीवन में आत्मसम्मान को निरंतर ठेस लगती रही है। चूँकि विदेशी प्रभुसत्ता ने उसका दमन करने में कोई कसर उठा नहीं रखी, इसलिए भारतीयों ने राष्ट्रपिता के नेतृत्व में आत्मसम्मान की प्रतिष्ठा के लिए स्वतंत्रता का संग्राम किया तथा उसमें सफलता प्राप्त की। आज प्रत्येक भारतीय को उच्च नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता तथा आत्मसम्मान की रक्षा करनी है।

(CBSE 2009 Delhi)

प्रश्न :

1. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
2. आत्मसम्मान से किन गुणों का जन्म होता है?
3. आत्मसम्मानी व्यक्ति मानव मात्र को अपने परिवार का अंग क्यों मानता है?
4. निश्छल हृदय होने से स्वाभिमानी व्यक्ति को क्या लाभ होता है?
5. कोई व्यक्ति आत्मसम्मान के अभाव में सर्वस्व कैसे खो सकता है?
6. लेखक ने स्वतंत्रता संग्राम का क्या कारण बताया है?
7. 'लोकप्रियता' और 'आध्यात्मिक' शब्दों के प्रत्यय अलग करके लिखिए।
8. 'एकता' और 'विदेशी' का विपरीतार्थक शब्द लिखिए।
9. 'पथ' और 'ईश्वर' के दो-दो पर्यायवाची लिखिए।

उत्तर :

1. **शीर्षक**–'आत्मसम्मान की रक्षा।'
2. आत्मसम्मान से व्यक्ति में शक्ति, साहस और उत्साह के गुणों का जन्म होता है।
3. आत्मसम्मानी व्यक्ति मानव मात्र को अपने परिवार का अंग इसलिए मानता है क्योंकि वह सभी में एक आत्मा को देखता है। उसमें दूसरों के प्रति ईर्ष्या-द्वेष की भावना नहीं होती। वह स्वार्थ, लोभ और अहंकार से परे रहता है।
4. निश्छल हृदय होने से स्वाभिमानी व्यक्ति को यह लाभ होता है कि वह आसुरी प्रवृत्तियों से सर्वथा मुक्त रहता है। उसमें ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति एवं विश्वास होता है, जिससे उसमें आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है।
5. आत्मसम्मान के अभाव में व्यक्ति अपना सर्वस्व खो सकता है। इसके अभाव में उसकी संस्कृति, धर्म और अस्तित्व ही लुप्त हो जाता है।
6. लेखक ने स्वतंत्रता संग्राम का यह कारण बताया है कि भारतीयों ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आत्मसम्मान की प्रतिष्ठा करनी चाही थी।
7. **प्रत्यय**–लोकप्रियता – ता, आध्यात्मिक–इक
8. **विपरीतार्थक शब्द** – एकता × अनेकता, विदेशी × देशी
9. **पर्यायवाची शब्द** – पथ – रास्ता, मार्ग
   ईश्वर – भगवान, परमात्मा।

7. श्रीकृष्ण पांडवों के शिविर में पहुँचे। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण का अभिवादन किया। फिर वे श्रीकृष्ण से बोले–"अगर युद्ध हुआ तो भयंकर नर-संहार होगा। कोई उपाय कीजिए नहीं तो कोई भी जीवित नहीं बचेगा। मैं युद्ध से नहीं, युद्ध के परिणाम से चिंतित हूँ।"

श्रीकृष्ण बोले–"धर्मराज, मेरी एक शांति-योजना है। मैं दुर्योधन के पास जाता हूँ। युद्ध रोकने का यह मेरा अंतिम प्रयास होगा।" यह कहकर श्रीकृष्ण पांडव-शिविर से चले गए।

दुर्योधन की राजसभा में युद्ध-नीति की चर्चा चल रही थी। वातावरण गर्म हो चुका था। उसी समय श्रीकृष्ण ने प्रवेश किया। अभिवादन में सभी लोग खड़े हो गए। श्रीकृष्ण ने अभिवादन स्वीकार किया।

श्रीकृष्ण ने कहा–"हे दुर्योधन, मैं आपके समक्ष एक शांति-प्रस्ताव लेकर उपस्थित हुआ हूँ।"

दुर्योधन बोले–"अब शांति प्रस्ताव का कोई अर्थ नहीं रहा। युद्ध की तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं। दोनों ओर की सेनाएँ मोर्चे संभाल चुकी हैं। अब या तो पांडव युद्ध करें या अपनी पराजय स्वीकार करके मैदान से हट जाएँ।"

श्रीकृष्ण ने गंभीरता से कहा–"भाइयों की समस्या का हल हार-जीत से नहीं होता दुर्योधन! सोचने का विषय युद्ध का परिणाम है।"

"युद्ध का परिणाम हमारे पक्ष में ही होगा," दुर्योधन ने कहा।

श्रीकृष्ण ने कहा–"युद्ध का अंत तो हार या जीत से ही होता है, किंतु विनाश का भयंकर परिणाम दोनों पक्षों को भुगतना पड़ता है। अतः युद्ध रोकना ही चाहिए।"

दुर्योधन बीच में ही बोल पड़े–"युद्ध से पीछे हटना कायरों का काम है।" "क्रोध से नहीं, विवेक से मेरी बात सुनिए"–श्रीकृष्ण ने कहा, "पांडवों का प्रस्ताव है कि आप उन्हें केवल पाँच गाँव सौंप दें। तब वे हस्तिनापुर पर अपना अधिकार नहीं माँगेंगे। इससे शांति स्थापित हो सकती है और युद्ध टल सकता है।"

दुर्योधन क्रोध में भरकर बोले–"बस, बस रहने दो। पाँच गाँव तो क्या, मैं उन्हें एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा। राज्य माँगा नहीं जाता, युद्ध-भूमि में जीता जाता है। पांडव या तो युद्ध में शक्ति दिखाएँ या चुल्लू भर पानी में डूब मरें।"

श्रीकृष्ण बोले–"महाराज दुर्योधन, आप अपना ही राग अलाप रहे हैं। एक अच्छे योद्धा की तरह अवसर का लाभ उठाना नहीं जानते। जब लीला समाप्त हो जाएगी तो देखने वाला कोई भी नहीं रह जाएगा। यदि यह अवसर निकल गया तो आप हाथ मलते रह जाएँगे। अब युद्ध के कारण जो विनाश होगा, उसका उत्तरदायित्व केवल आप पर होगा।" यह कहते हुए श्रीकृष्ण भारी कदमों से पांडव-शिविर की ओर लौट चले। *(CBSE 2008 Comptt. Delhi)*

प्रश्न :

1. श्रीकृष्ण के पांडव-शिविर में पहुँचने पर युधिष्ठिर ने क्या कहा?
2. युद्ध के परिणाम के विषय में श्रीकृष्ण के क्या विचार थे?
3. पांडवों का क्या प्रस्ताव था और दुर्योधन ने उस प्रस्ताव के उत्तर में क्या कहा?
4. शांति-प्रस्ताव अस्वीकृत हो जाने पर श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को क्या चेतावनी दी?
5. युद्ध के न टालने के लिए आप किसे उत्तरदायी मानते हैं और क्यों?
6. इस गद्यांश में से कोई दो मुहावरे छाँटकर लिखिए।
7. इस गद्यांश का कोई उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर :

1. पांडव शिविर में पहुँचने पर युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण का अभिवादन करने के पश्चात् कहा कि अगर युद्ध हुआ तो भयंकर नर-संहार होगा, अतः इस युद्ध को रोकने का कोई-न-कोई उपाय अवश्य कीजिए अन्यथा कोई भी नहीं बचेगा। मैं युद्ध के परिणाम से चिंतित हूँ।
2. युद्ध के परिणाम के विषय में श्रीकृष्ण के ये विचार थे कि युद्ध का अंत तो हार या जीत से ही होता है, पर कारण होने वाले विनाश का भयंकर परिणाम दोनों पक्षों को भुगतना पड़ता है। अतः युद्ध को रोकना चाहिए।
3. पांडवों का यह प्रस्ताव था कि कौरव उनको केवल पाँच गाँव सौंप दें। तब वे हस्तिनापुर पर अपना अधिकार माँगेंगे। इससे शांति स्थापित हो जाएगी। दुर्योधन ने उस प्रस्ताव के उत्तर में यह कहा–मैं पाँडवों को पाँच गाँव तो उन्हें सुई की नोंक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा।
4. शांति-प्रस्ताव अस्वीकृत हो जाने पर श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को यह चेतावनी दी कि आप एक अच्छे अवसर को गँवा इस युद्ध में सब कुछ नष्ट हो जाएगा। कोई देखनेवाला भी नहीं बचेगा। युद्ध के विनाश का पूरा उत्तरदायित्व (दुर्योधन) पर ही होगा।

5. युद्ध को न टालने के लिए हम दुर्योधन को उत्तरदायी मानते हैं क्योंकि उसने अपनी हठधर्मिता के कारण अवसर का लाभ नहीं उठाया। वे चाहते तो पाँच गाँव देकर पांडवों से समझौता कर सकते थे और संभावित युद्ध को टाल सकते थे।

6. दो मुहावरे–1. हाथ मलते रह जाना, 2. चुल्लू भर पानी में डूब मरना।

7. शीर्षक–'शांतिदूत के रूप में श्रीकृष्ण'।

8. स्पष्टता, आत्म-विश्वास, विषय की अच्छी पकड़ और प्रभावशाली भाषा में अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करना ही, संप्रेषण-कला है, जो निरंतर अभ्यास से निखारी जा सकती है। एक दिन में कोई अच्छा वक्ता नहीं बन सकता तथा भाषा पर अनायास ही किसी की पकड़ नहीं हो पाती। इसी अभ्यास के बल पर स्वामी विवेकानंद ने जिस संप्रेषण-कला का विकास किया था, उसने विश्वधर्म-सम्मेलन में लाखों अमेरिका-निवासियों को चकित और मोहित कर दिया था और वे उनके दीवाने हो गए थे। स्वामी विवेकानंद का यही गुण आज के युवाओं के लिए आदर्श है और इसी गुण के बल पर वे साक्षात्कार एवं अन्य परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप अपने संप्रेषण में थोड़ा हास्य-व्यंग्य भी शामिल कर लें तो उससे आपको विशेष लाभ होगा और आपकी संप्रेषण-कला और अधिक प्रभावशाली और धारदार हो जाएगी। लोगों पर आपकी भावनाओं और विचारों का स्थायी प्रभाव पड़ेगा।

आज के समय में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा पर भी प्रभावशाली नियंत्रण, किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक हो गया है। भले ही आपके पास उच्च कोटि की डिग्री हो, किंतु यदि आपका लिखित और बोलचाल की अंग्रेजी और हिंदी पर अधिकार नहीं है तो आपकी उन्नति की संभावनाएँ उज्ज्वल नहीं हैं, अतएव जो विद्यार्थी अंग्रेजी और हिंदी के लेखन, पठन और भाषण में दक्ष हैं, वे हर प्रतियोगिता में अन्य प्रत्याशियों की तुलना में लाभ की स्थिति में रहते हैं। उनके लिए रोजगार और उन्नति के द्वार सदा खुले रहते हैं।

इन भाषाओं में अधिक प्रभावी बनने और इनमें दक्षता प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को दैनिक समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और विविध प्रकार की पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ टेलीविजन-प्रसारण, कमेन्ट्री, नेशनल ज्योग्राफिक चैनल और डिस्कवरी जैसे अन्य चैनल भी देखने-सुनने चाहिए। जैसे-जैसे आप अपने ज्ञान को विकसित करते जाएँगे, आपकी शब्दावली भी बढ़ती जाएगी। ध्यान रहे कि नए-नए ज्ञान को प्राप्त करने और सीखने की प्रक्रिया जीवन-भर चलती रहती है। नए ज्ञान को प्राप्त करने और अपने संप्रेषण-कौशल को विकसित करने से अधिक रुचिकर और कुछ भी नहीं है। इसके लिए आपको कठिन श्रम करना ही होगा। स्मरण रखिए कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती तथा सीखने की कोई उम्र नहीं होती। इसे जीवन-भर निखारने और बढ़ाने के प्रयोग-प्रयास करने होते हैं। *(CBSE 2008 Foreign)*

प्रश्न :

1. *उपर्युक्त गद्य-खंड का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।*
2. *संप्रेषण-कला से क्या तात्पर्य है? इस कला का विकास किस प्रकार किया जा सकता है?*
3. *स्वामी विवेकानंद की भाषण-कला का श्रोताओं पर क्या प्रभाव पड़ा?*
4. *हिंदी और अंग्रेजी दोनों पर समान अधिकार होना क्यों आवश्यक माना गया है?*
5. *संप्रेषण में हास्य-व्यंग्य के प्रयोग से क्या लाभ है?*
6. *निम्नलिखित पंक्ति का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए :*
   'ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती तथा सीखने की कोई उम्र नहीं होती।'
7. *'उल्लेखनीय' शब्द की भाँति दो नए शब्द बनाइए।*
8. *निम्नलिखित में से किसी एक समस्त पद का विग्रह करते हुए समास का नाम भी लिखिए :*
   (अ) विवेकानंद, (ब) संप्रेषण-कला।

उत्तर :

1. शीर्षक–संप्रेषण-कला।
2. संप्रेषण-कला से तात्पर्य है-प्रभावशाली भाषाओं में अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की कला। इस कला का विकास अभ्यास के बल पर ही किया जा सकता है। इसमें आत्म-विश्वास की भी आवश्यकता होती है।

3. स्वामी विवेकानंद की भाषण-कला ने अमेरिका के लाखों श्रोताओं को चकित और मोहित कर दिया। श्रोता उनके दीवाने बन गए।
4. हिंदी और अंग्रेजी दोनों पर समान अधिकार होना इसलिए आवश्यक माना गया है क्योंकि इससे किसी भी क्षेत्र में सफलता पाई जा सकती है। बोलचाल में हिंदी और अंग्रेजी पर अधिकार उन्नति का दरवाजा खोलता है।
5. हास्य-व्यंग्य के प्रयोग से संप्रेषण में निखार आ जाता है। इससे बात प्रभावशाली और धारदार हो जाती है। इसका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।
6. ज्ञान का भंडार असीमित है। इसे किसी भी आयु में, कभी भी प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान जीवन भर सीखा जा सकता है। यह कोई बंधन स्वीकार नहीं करता।
7. 'उल्लेखनीय' की भाँति के दो अन्य शब्द : प्रशंसनीय, अनुकरणीय।
8. विवेक का आनंद है जिसमें अर्थात् विवेकानंद–बहुब्रीहि समास।
   संप्रेषण-कला–संप्रेषण की कला–तत्पुरुष समास।

9. प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि जब तक वह जीवित रहे तब तक उसे सभी प्रकार का सुख प्राप्त होता रहे। अतः वह अधिक से अधिक सुख-समृद्धि की कामना करता है। मनुष्य जीवन-भर अपने लिए तथा अपने परिवार के लिए जूझता रहता है ताकि वह सुखपूर्वक जी सके।

व्यक्ति से अगली इकाई परिवार की है। पति-पत्नी, माता-पिता तथा बच्चों से परिवार बनता है। परिवार एक ऐसी इकाई है जो समाज और राष्ट्र से जुड़ी रहती है। अतः परिवार की सुख-समृद्धि और उसकी मंगल-कामना के लिए प्रयत्न करना 'परिवार-नियोजन' कहलाता है।

परिवार का नियोजन कैसा होगा? इस प्रश्न पर विचार करना समीचीन है। परिवार को सीमित रखने के प्रयत्न में ही परिवार-कल्याण का भाव निहित है। मनुष्य को यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि परिवार को बिना सोचे-समझे बढ़ाते चले जाना मूर्खता के सिवाय कुछ नहीं है। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश की जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्धि हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप परिवार-कल्याण का कार्य पिछड़ जाता है। परिवार के सभी लोगों को सुख-समृद्धि तभी प्राप्त होगी जब परिवार के सदस्यों की संख्या सीमित होगी। एक व्यक्ति की आय को बाँटने वाले जब कम होंगे तब उसे पाने वालों को अधिक धन की प्राप्ति होगी। जनसंख्या वृद्धि ने देश के सम्मुख ऐसी विकट समस्याएँ उपस्थित कर दी हैं कि उनका हल खोजना कठिन होता चला जा रहा है। जिधर देखो, उधर ही लंबी-लंबी कतारें दिखाई देती हैं। इसी कारण नौकरी के अवसरों की भी कमी होती चली जा रही है। परिणामस्वरूप बेरोजगारी बढ़ती जा रही है।

यह प्रश्न विचारणीय है कि परिवार-नियोजन को ध्यान में रखते हुए परिवार को छोटा कैसे रखा जाए? इसके लिए आम जनता में चेतना जागृत करनी होगी। जनसंख्या-शिक्षा भी इस विषय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। लोगों को समझाया जाना चाहिए कि जनसंख्या-वृद्धि से उनके परिवार को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। अन्न का अभाव, परिवहन-सुविधा में कमी, चिकित्सा में कठिनाई, शिक्षा तथा नौकरी के अवसरों में कमी आदि का प्रत्यक्ष प्रभाव हम सभी पर पड़ेगा। परिणामस्वरूप परिवार की ही नहीं, पूरे समाज की सुख-सुविधा में कमी आ जाएगी।

देश की गरीबी को दूर करने के लिए भी परिवार को सीमित रखना आवश्यक है। बढ़ती जनसंख्या को रोकने के लिए परिवार को सीमित रखना ही होगा। इस कार्य की सफलता के लिए शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अज्ञान के कारण ही परिवार में वृद्धि होती है। शिक्षा के माध्यम से हमें इन तथ्यों को जनता के सामने रखना चाहिए। परिवार का कल्याण इसी में है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार को सीमित रखे जिससे कि परिवार में सुख-समृद्धि बनी रहे।

प्रत्येक परिवार को एक या दो बच्चों तक ही सीमित रखा जाना चाहिए। यह तभी संभव हो सकता है जब हम लड़का-लड़की में भेद करना बंद कर दें। आज लड़कियाँ नई-नई बुलंदियों को छू रही हैं। शिक्षा में भी वे लड़कों से आगे निकल रही हैं। अतः हमें 'लड़का-लड़की एक समान' का नारा बुलंद करना होगा।

(CBSE 2008 Comptt. Outside

प्रश्न :

1. प्रत्येक मनुष्य की क्या कामना रहती है?

2. जनसंख्या-वृद्धि के कुछ दुष्परिणाम बताइए।

3. आपके विचार से परिवार-कल्याण की दिशा में क्या-क्या किया जाना चाहिए?

4. परिवार-नियोजन में शिक्षा की क्या भूमिका है?

5. लड़का-लड़की को एक समान क्यों समझना चाहिए?

6. प्रत्यय अलग करके लिखिए : ***प्राकृतिक, विचारणीय***

7. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर :

1. प्रत्येक मनुष्य की यह कामना रहती है कि जब तक वह जीवित रहे तब तक उसे सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते रहें। वह अधिक से अधिक सुख-समृद्धि की कामना करता है।
2. जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम ये हैं : परिवार-कल्याण का काम पिछड़ता जा रहा है, सभी ओर लंबी-लंबी कतारें लगी दिखाई देती हैं, नौकरी के अवसर कम होते चले जा रहे हैं, बेरोजगारी बढ़ती चली जा रही है। इसके अलावा अन्न का अभाव, परिवहन सुविधाओं की कमी, चिकित्सा सुविधाओं की कमी, शिक्षा के अवसरों की कमी आदि दुष्परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं।
3. हमारे विचार से परिवार-कल्याण की दिशा में ये कार्य किए जाने चाहिए : परिवार को सीमित रखने के प्रयत्न किए जाने चाहिए। इससे परिवार सुखी एवं समृद्ध हो सकेंगे। उनकी आय कम लोगों में बँटेगी।
4. परिवार-नियोजन में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा के माध्यम से ही लोगों का अज्ञान मिटाया जा सकता है। शिक्षा के माध्यम से लोगों को तथ्यों से अवगत कराया जा सकता है। उन्हें छोटे परिवार के लाभों से अवगत कराया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही वे बड़े परिवारों की कठिनाइयों को समझ सकेंगे।
5. लड़का-लड़की को एक समान इसलिए समझना चाहिए क्योंकि आज लड़कियाँ भी नई-नई बुलंदियों को छू रही हैं, शिक्षा में वे लड़कों से भी आगे निकल रही हैं। अतः अब हमें लड़कियों को किसी भी तरह से लड़कों से कम नहीं समझना चाहिए। दोनों एक समान हैं।
6. प्राकृतिक – इक विचारणीय – ईय
7. शीर्षक : बढ़ती जनसंख्या : एक अभिशाप।

10. अनुशासन का अर्थ है अपने को कुछ नियमों से बाँध लेना और उन्हीं के अनुसार कार्य करना। कुछ व्यक्ति अनुशासन की व्याख्या 'शासन का अनुगमन' करने के अर्थ में करते हैं, परंतु यह अनुशासन का संकुचित अर्थ है। व्यापक रूप में अनुशासन सुव्यवस्थित ढंग से उन आधारभूत नियमों का पालन ही है, जिनके द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के मार्ग में बाधक बने बिना व्यक्ति अपना पूर्ण विकास कर सके।

अनुशासन में रहने का भी एक आनंद है, लेकिन आज व्यक्तियों में अनुशासनहीनता की भावना बढ़ रही है। समाचार-पत्रों में हमेशा यही पढ़ने को मिलता है कि आज अमुक नगर में दस दुकानें लूटी गईं, बसों में आग लगा दी गई, दो गिरोहों में लाठियाँ चल गईं, आदि। ये बातें आए दिन पढ़ने को मिलती हैं। यदि किसी भी कर्मचारी को कोई गलत काम करने से रोका जाए तो वह अपने साथियों से मिलकर काम बंद करा देगा। बहुत दिनों तक हड़तालें चलती रहेंगी। कारखानों और कार्यालयों में काम बंद हो जाएँगे।

अनुशासन के अभाव में समाज में अराजकता और अशांति का साम्राज्य होता है। वन्य पशुओं में अनुशासन का कोई महत्त्व नहीं है, इसी कारण उनका जीवन अरक्षित, आतंकित एवं अव्यवस्थित रहता है। सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ-साथ जीवन में अनुशासन का महत्त्व भी बढ़ता गया। आज के वैज्ञानिक युग में तो अनुशासन के बिना मनुष्य का कार्य भी नहीं हो सकता।

कुछ व्यक्ति सोचते हैं कि अब मानव सभ्य और शिक्षित हो गया है, उस पर किसी भी प्रकार के नियमों का बंधन नहीं होना चाहिए। वह स्वतंत्र रूप से जो भी करे, उसे करने देना चाहिए। लेकिन यदि व्यक्ति को यह अधिकार दे दिया जाए तो हर तरफ वन्य जीवन जैसी अव्यवस्था आ जाएगी। मानव, मानव ही है, देवता नहीं। उसमें सुप्रवृत्तियाँ और कुप्रवृत्तियाँ दोनों ही होती हैं। मानव सभ्य तभी तक रहता है जब तक वह अपनी सुप्रवृत्तियों की आज्ञा के अनुसार कार्य करे। इसलिए मानव के पूर्ण विकास के लिए कुछ बंधनों और नियमों का होना आवश्यक है। अनुशासनबद्धता मानव-जीवन के मार्ग में बाधक नहीं अपितु उसको पूर्ण उन्नति तक पहुँचाने के लिए अनुकूल अवसर प्रदान करती है। अनुशासन के बिना तो मानव-जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

विद्यार्थी जीवन में तो अनुशासन का बहुत महत्त्व है। आज अनुशासनहीनता के कारण साल में छह महीने विश्वविद्यालयों में हड़तालें हो जाती हैं। तोड़-फोड़ करना तो विद्यार्थी का कर्तव्य बन गया है। छोटी-छोटी बातों पे मारपीट हो जाती है।

अतः हर मनुष्य का कर्तव्य है कि अनुशासन का उल्लंघन न करे। यह विचित्र होते हुए भी कितना सत्य है कि अनुशासन एक प्रकार का बंधन है परंतु मनुष्य को स्वच्छंद रूप से अपने अधिकारों का पूरा सदुपयोग करने का अवसर भी प्रदान करता है। वह एक ओर बंधन है तो दूसरी ओर मुक्ति भी। *(CBSE Sample Paper-I)*

प्रश्न :

1. अनुशासन का वास्तविक अर्थ क्या है?

2. अनुशासन के अभाव में क्या होता है?

3. मानव विकास के लिए अनुशासन क्यों आवश्यक है?

4. वन्य जीव असुरक्षित क्यों होते हैं? इसका क्या परिणाम होता है?

5. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व क्यों है?

6. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

7. 'अनुशासन' का विलोम शब्द लिखिए।

उत्तर :

1. अनुशासन का वास्तविक अर्थ है–उन व्यवस्थित आधारभूत नियमों का पालन करना जिनके द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के मार्ग में वाधक बने व्यक्ति अपना पूर्ण विकास कर सके।
2. अनुशासन के अभाव में समाज में अराजकता और अशांति का साम्राज्य होता है जिससे लोगों का जीवन असुरक्षित, आतंकित एवं अव्यवस्थित रहता है।
3. मानव के पूर्ण विकास के लिए कुछ बंधनों और नियमों का होना आवश्यक है। अनुशासन मानव को पूर्ण उन्नति तक पहुँचाने के लिए अनुकूल अवसर प्रदान करता है।
4. वन्य जीवों में अनुशासन का सर्वथा अभाव होता है। इसी कारण उनका जीवन असुरक्षित, आतंकित एवं अव्यवस्थित रहता है। इसका परिणाम 'अराजकता' है जहाँ किसी प्रकार की नियमबद्धता नहीं होती है।
5. क्योंकि अनुशासन में रहकर ही छात्र अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम कर पूर्ण उन्नति अथवा समुचित विकास कर सकते हैं, साथ ही वह समाज एवं देश निर्माण तथा विकास में योगदान कर सकता है।
6. शीर्षक : अनुशासन का महत्त्व।
7. स्वच्छंद अथवा अनुशासनहीन।

11. परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है। जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है। कहा है-उद्योगी पुरुष सिंह को लक्ष्मी वरण करती है। जो भाग्यवादी हैं उन्हें कुछ नहीं मिलता। वे हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रह जाते हैं। अवसर उनके सामने से निकल जाता है। भाग्य कठिन परिश्रम का ही दूसरा नाम है।

प्रकृति को ही देखिए। सारे जड़-चेतन अपने कार्य में लगे रहते हैं। चींटी को भी पल-भर चैन नहीं। मधुमक्खी जाने कितनी लंबी यात्रा कर बूँद-बूँद मधु जुटाती है। मुरगे को सुबह बाँग लगानी ही है। फिर मनुष्य को बुद्धि मिली है, विवेक मिला है। वह निठल्ला बैठे तो सफलता की कामना करना व्यर्थ है।

विश्व में जो देश आगे बढ़े हैं, उनकी सफलता का रहस्य कठिन परिश्रम ही है। जापान को दूसरे विश्व युद्ध में मिट्टी में मिला दिया गया था। उसकी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी। दिन-रात जी-तोड़ श्रम करके वह पुनः विश्व का प्रमुख औद्योगिक देश बन गया। चीन को शोषण से मुक्ति भारत से देर में मिली, वह भी श्रम के बल पर आज भारत से आगे निकल गया है। जर्मनी ने भी युद्ध की विभीषिकाएँ झेलीं, पर श्रम के बल पर सँभल गया।

परिश्रम का महत्त्व वे जानते हैं जो स्वयं अपने बल पर आगे बढ़े हैं। संसार के अनेक महापुरुष परिश्रम के प्रमाण हैं। कालिदास, तुलसी, टैगोर और गोर्की परिश्रम से ही अमर हुए। संसार के इतिहास में अनेक चमकते सितारे केवल परिश्रम के ही परिणाम हैं।

बड़े-बड़े धन-कुबेर निरंतर श्रम से ही असीम संपत्ति के स्वामी बने हैं। फोर्ड साधारण मैकेनिक था। धीरू भाई अंबानी शिक्षक थे। लगन और दृढ़-संकल्प परिश्रम को सार्थक बना देते हैं। गरीबी के साथ परिश्रम जुड़ जाए तो सफलता मिलती है और अमीरी के साथ श्रमहीनता या निठल्लापन आ जाए तो असफलता मुँहबाए खड़ी रहती है।

भारतीय कृषक के परिश्रम का ही फल है कि देश में हरित क्रांति हुई। अमेरिका के सड़े गेहूँ से पेट भरने वाला देश आज गेहूँ का निर्यात कर रहा है। कल-कारखाने रात-दिन उत्पादन कर रहे हैं। हमारे वस्त्र दुनिया के बाजारों में बिकते हैं। उन्नत औद्योगिक देश भी हमसे वैज्ञानिक उपकरण खरीद रहे हैं।

किसी क्षेत्र में हम पिछड़े हैं तो उसका कारण है, वहाँ परिश्रम का अभाव। विद्यार्थी जीवन तो परिश्रम की पहली पाठशाला है। यहाँ से परिश्रम की आदत पड़ जाए तो ठीक, अन्यथा जाने कहाँ-कहाँ की ठोकरें खानी पड़ें। एडीसन से किसी ने कहा-आपकी सफलता का कारण आपकी प्रतिभा है। एडीसन ने चटपट सुधारा-प्रतिभा के माने एक औंस बुद्धि और एक टन परिश्रम। *(CBSE Sample Paper-1)*

प्रश्न :

1. *भाग्यवादी और परिश्रमी व्यक्ति में क्या अंतर है?*
2. *परिश्रम के संदर्भ में प्रकृति से कौन-कौन से उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं?*
3. *परिश्रम के बल पर कौन-कौन से देश किस प्रकार आगे बढ़ गए हैं?*
4. *भारत किस प्रकार उन्नति कर रहा है?*
5. *परिश्रम द्वारा विद्यार्थी किस प्रकार सफलता प्राप्त कर सकता है?*
6. *उपर्युक्त गद्यांश में से दो परिमाणवाचक विशेषण छाँटकर लिखिए।*
7. *गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।*

उत्तर :

1. भाग्यवादी भाग्य के भरोसे बैठा रहता है और अवसर को हाथ से निकाल देता है। उसे असफलता का सामना करना पड़ता है। परिश्रमी व्यक्ति उद्योग करके अर्थात् कर्म करके अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करता है।
2. परिश्रम के संदर्भ में प्रकृति से चींटी, मधुमक्खी और मुर्गे के उदाहरण दिए गए हैं। चींटी परिश्रम करती रहती है। मधुमक्खी बूँद-बूँद शहद जुटाती है तथा मुर्गा नियमपूर्वक सुबह बाँग देता है।
3. परिश्रम के बल पर जापान, चीन और जर्मनी बहुत आगे बढ़ गए हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो गई थी, पर परिश्रम के बलबूते पर विश्व का प्रमुख औद्योगिक देश बन गया। चीन और जर्मनी भी परिश्रम के बल पर सँभल गए।
4. परिश्रम करके भारत कृषि तथा उद्योग के क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त कर रहा है। आज भारत अन्न निर्यात करने की स्थिति में आ गया है। भारत विश्व के अन्य देशों को वस्त्र और वैज्ञानिक उपकरण भी निर्यात कर रहा है।
5. परिश्रम के द्वारा विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर सकता है। विद्यार्थी जीवन तो परिश्रम की पहली पाठशाला है। बिना परिश्रम किए विद्यार्थी आगे नहीं बढ़ सकता।
6. **दो परिमाणवाचक विशेषण : बूँद-बूँद मधु एक औंस बुद्धि**
7. **शीर्षक :** परिश्रम का महत्त्व।

12. आत्मनिर्भरता का अर्थ है–अपने ऊपर निर्भर रहना, जो व्यक्ति दूसरे के मुँह को नहीं ताकते वे ही आत्मनिर्भर होते हैं। वस्तुतः आत्मविश्वास के बल पर कार्य करते रहना आत्मनिर्भरता है। आत्मनिर्भरता का अर्थ है–समाज, निज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करना। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र में आत्मविश्वास की भावना, आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। स्वावलंबन जीवन की सफलता की पहली सीढ़ी है। सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को स्वावलंबी अवश्य होना चाहिए। स्वावलंबन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के जीवन में सफलता प्राप्ति का महामंत्र है। स्वावलंबन जीवन का अमूल्य आभूषण है, वीरों तथा कर्मयोगियों का इष्टदेव है। सर्वांगीण उन्नति का आधार है।

जब व्यक्ति स्वावलंबी होगा, उसमें आत्मनिर्भरता होगी, तो ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे वह न कर सके। स्वावलंबी मनुष्य के सामने कोई भी कार्य आ जाए, तो वह अपने दृढ़ विश्वास से अपने आत्मबल से उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में कभी भी असफलता का मुँह नहीं देखता। वह जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर कामयाब होता जाता है। सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है। जिस व्यक्ति का स्वयं अपने आप पर ही विश्वास नहीं वह भला क्या कर पाएगा? परंतु इसके विपरीत जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता होगी, वह कभी किसी के सामने नहीं झुकेगा। वह जो करेगा सोच-समझ कर धैर्य से करेगा। मनुष्य में सबसे बड़ी कमी स्वावलंबन का न होना है। सबसे बड़ा गुण भी मनुष्य की आत्मनिर्भरता ही है।

आत्मनिर्भरता मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है। स्वावलंबी मनुष्य को अपने आप पर विश्वास होता है जिससे वह किसी के भी कहने में नहीं आ सकता। यदि हमें कोई काम सुधारना है तो हमें किसी के अधीन नहीं रहना चाहिए बल्कि उसे स्वयं करना चाहिए। एकलव्य स्वयं के प्रयास से धनुर्विद्या में प्रवीण बना। निपट, दरिद्र विद्यार्थी लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री बने, साधारण से परिवार में जनमे जैल सिंह स्वावलंबन के सहारे ही भारत के राष्ट्रपति बने। जिस प्रकार अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाते हैं, सूक्ति भाषा को चमत्कृत करती हैं, गहने नारी का सौंदर्य बढ़ाते हैं, उसी प्रकार आत्मनिर्भरता मानव में अनेक गुणों की प्रतिष्ठा करती है। *(CBSE Sample Paper-2)*

प्रश्न :

1. 'आत्मनिर्भर व्यक्ति' से आप क्या समझते हैं ?
2. 'सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है।' कैसे ?
3. एकलव्य और लाल बहादुर शास्त्री के उदाहरण लेखक ने किस संदर्भ में दिए हैं ?
4. आत्मनिर्भरता मनुष्य को श्रेष्ठ किस प्रकार बनाती है ?
5. 'आत्म' शब्द में 'निर्भरता' जोड़कर 'आत्मनिर्भरता' बना। इसी प्रकार 'आत्मा' में कुछ अन्य शब्द जोड़कर दो शब्द बताइए। ध्यान रहे कि वे शब्द उपर्युक्त अनुच्छेद में न हों।
6. 'सफल' और 'कोशिश' शब्दों के लिए अनुच्छेद में प्रयुक्त किए गए शब्दों को छाँटकर लिखिए।
7. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर :

1. आत्मनिर्भर व्यक्ति से हम यह समझते हैं कि ऐसा व्यक्ति जो स्वयं पर निर्भर रहता है। वह अपने काम के लिए किसी दूसरे का मुँह नहीं ताकता।
2. सफलता स्वावलंबी व्यक्ति की गुलामी करती है। स्वावलंबी व्यक्ति को सभी कामों में सफलता मिलती है। वह अपने दृढ़ विश्वास के आधार पर सफलता प्राप्त करता है।
3. एकलव्य ने स्वावलंबन के आधार पर धनुर्विद्या में सफलता प्राप्त की थी। इसी प्रकार लाल बहादुर शास्त्री ने अपने आत्मविश्वास, स्वावलंबन, परिश्रम तथा आत्मनिर्भरता के बल पर प्रधानमंत्री के पद तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की थी। इन दोनों के उदाहरण आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन के संदर्भ में दिए गए हैं।
4. 'आत्मनिर्भरता' मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है। आत्मनिर्भर व्यक्ति कभी दूसरों का मुँह नहीं ताकता। उसे अपने ऊपर ही विश्वास होता है। इससे उसके काम में प्रवीणता आती है।
5. आत्म + सम्मान = आत्मसम्मान। **आत्म** + मर्यादा = आत्ममर्यादा।
6. 'सफल' के लिए – कामयाब। **'कोशिश'** के लिए – प्रयास।
7. **शीर्षक** : आत्मनिर्भरता।

13. हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम-से-उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी-से-अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों को झीखने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीटस 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी ही का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है– 'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल खाक जिया करते हैं।'

मनुष्य के शरीर के वर्णन में एक विलायती विद्वान ने एक पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय चित्त को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है।

एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई से लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है। डॉक्टर हस्फलेंड ने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है। वह लिखता है कि हँसी बहुत उत्तम चीज पाचन के लिए है, इससे अच्छी औषधि और नहीं है। एक रोगी ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत ही काम की वस्तु है।

हँसी शरीर के स्वास्थ्य का शुभ संवाद देने वाली है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती है और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। एक डॉक्टर कहता है कि वह जीवन की मीठी मदिरा है। डॉक्टर ह्यूड कहता है कि आनंद से बढ़कर बहुमूल्य वस्तु मनुष्य के पास और नहीं है। कारलाइल एक राजकुमार था। संसार त्यागी हो गया था। वह कहता है कि जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसो, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ, तुम से कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुख घटेगा। एक निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी। एक बूढ़े को हँसाओ, वह अपने को जवान समझने लगेगा। एक बालक को हँसाओ, उसके स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। वह प्रसन्न और प्यारा बालक बनेगा। पर हमारे जीवन का उद्देश्य केवल हँसी ही नहीं है, हमको बहुत काम करने हैं। तथापि उन कामों में, कष्टों में और चिंताओं में एक सुंदर आंतरिक हँसी, बड़ी प्यारी वस्तु भगवान ने दी है।

हँसी सबको भली लगती है। मित्र-मंडली में हँसी विशेषकर प्रिय लगती है। जो मनुष्य हँसते नहीं, उनसे ईश्वर बचावे। जहाँ तक बने हँसी से आनंद प्राप्त करो। प्रसन्न लोग कोई बुरी बात नहीं करते। हँसी वैर और बदनामी की शत्रु है और भलाई की सखी है। हँसी स्वभाव को अच्छा करती है। जी बहलाती है और बुद्धि को निर्मल करती है।

(CBSE Sample Paper-1)

प्रश्न :

1. हँसी भीतरी आनंद को कैसे प्रकट करती है?

2. पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्त्व क्यों दिया?

3. हँसी को एक शक्तिशाली इंजन की तरह क्यों माना गया है?

4. हेरीक्लेस और डेमाक्रीटस के उदाहरण से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है?

5. इस गद्यांश में हँसी का क्या महत्त्व बताया गया है?

6. हँसी सभी के लिए उपयोगी किस प्रकार है?

7. इस गद्यांश को उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

8. 'मित्र-मंडली' का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए।

9. 'प्रफुल्लित' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय अलग कीजिए।

उत्तर :

1. जब व्यक्ति के हृदय में आनंद की अनुभूति होती है तभी वह हँसता है। उसकी इस हँसी में उसका भीतरी आनंद प्रकट होता है।
2. पुराने समय में लोगों की मान्यता थी कि हँसने से आयु बढ़ती है। वे कहते थे हँसो और पेट फुलाओ। हँसना शरीर को स्वस्थ रखता है। अतः उन लोगों ने हँसी को महत्त्व दिया।

3. जिस प्रकार एक शक्तिशाली इंजन अपने सामने की सभी दीवारों को गिरा देता है, उसी प्रकार हँसी भी शोक और दुख की दीवारों को ढा सकती है। हँसी में भी इंजन के समान शक्ति होती है। दोनों में प्रबलता होती है। अतः हँसी को शक्तिशाली इंजन कहा गया है।
4. हेरीक्लेस और डेमाक्रीटस के उदाहरण से लेखक यह कहना चाहता है कि हँसी-खुशी और प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति लंबे समय तक जीता है। रोते-झीखते रहने वाला व्यक्ति कम समय तक जीता है। जिंदगी तो जिंदादिल इंसान जीते हैं, मुर्दा नहीं।
5. इस गद्यांश में हँसी का यह महत्त्व बताया गया है कि हँसना बहुत अच्छी चीज है। हँसी पाचन के लिए औषधि का काम करती है। यह शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखती है। हँसी से हमें दीर्घायु प्राप्त होती है।
6. हँसी सभी के लिए उपयोगी है। इससे मित्र प्रसन्न रहता है, शत्रु कम घृणा करता है, अनजान भरोसा करता है। इससे उदास व्यक्ति का दुख घटता है तथा बूढ़ा स्वयं को जवान समझने लगता है। इससे बालक भी स्वस्थ बनता है।
7. **शीर्षक :** जीवन में हँसी का महत्त्व ।
8. **मित्र-मंडली :** मित्रों की मंडली – तत्पुरुष समास।
9. 'प्रफुल्लित' शब्द में 'इत' प्रत्यय का प्रयोग है।

14. 13वीं-14वीं शताब्दी तक भारत में मुस्लिम सत्ता पूरी तरह स्थिर हो चुकी थी। अब वह सड़कों, इमारतों आदि के निर्माण में रुचि लेने लगी थी। इन निर्माण कार्यों में समाज के दुर्बल वर्ग ने काम किया जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया। इस्लाम के धुआँधार प्रचार के कारण हिंदुओं में अपने धर्म की सुरक्षा की चिंता हुई। इस स्थिति में दुर्बल वर्ग को समाज में प्रतिष्ठा दिलाने की तथा हिंदू और इस्लाम के संघर्ष को मिटाने की आवश्यकता थी। 15वीं-16वीं शताब्दी का उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन इसी माँग की उपज था।

भक्ति की यह लहर दक्षिण से उत्तर भारत की ओर आई। भक्ति में आदि आचार्य रामानुज दक्षिण के ही थे। इनकी तीसरी पीढ़ी में रामानंद आते हैं। रामानंद ने उत्तर भारत में भक्ति को जन-जन तक पहुँचाकर इसे लोकप्रिय बनाया। इनके शिष्यों में निर्गुण और सगुण दोनों ही प्रकार के भक्त थे। भक्ति-आंदोलन अखिल भारतीय था। उत्तर भारत के आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें मुसलमान भी शामिल हुए।

प्रश्न :

1. भारत में मुस्लिम सत्ता कब तक स्थिर हो चुकी थी?
2. निर्माण कार्यों से किस वर्ग को, किस रूप में लाभ पहुँचा?
3. उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन किसकी उपज था?
4. भक्ति की लहर को उत्तर में किसने लोकप्रिय बनाया?
5. इस भक्ति आंदोलन की क्या विशेषता थी?
6. इस गद्यांश का सार एक-तिहाई शब्दों में लिखिए।
7. 'दुर्बल' शब्द का विलोम लिखिए।
8. 'आर्थिक' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय अलग करके लिखिए।

उत्तर :

1. भारत में मुस्लिम सत्ता 13वीं-14वीं शताब्दी तक स्थिर हो चुकी थी।
2. शासन द्वारा किए गए निर्माण कार्यों से समाज के दुर्बल वर्ग के लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार पहुँचा।
3. उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन हिंदू और इस्लाम के संघर्ष को मिटाने की आवश्यकता की माँग की उपज था।
4. भक्ति की लहर दक्षिण से उत्तर भारत में आई और इसे रामानंद ने जन-जन में लोकप्रिय बनाया।
5. इस भक्ति आंदोलन की यह विशेषता थी कि इसमें मुसलमान भी शामिल हुए।
6. सार : 13वीं-14वीं शताब्दी तक भारत में मुस्लिम सत्ता स्थिर हो चुकी थी और निर्माण कार्यों के माध्यम से निर्धन वर्ग को लाभ पहुँचा रही थी। भक्ति आंदोलन ने हिंदू-मुस्लिम संघर्ष को टाला। दक्षिण के रामानुज द्वारा चलाए भक्ति-आंदोलन को रामानंद ने उत्तर भारत में लोकप्रिय बनाया। इसमें निर्गुण-सगुण भक्त एवं मुसलमान भी शामिल थे।
7. 'दुर्बल' शब्द का विलोम है–'सबल'।
8. 'आर्थिक' शब्द में 'इक' प्रत्यय का प्रयोग है।

15. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है – चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे, ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है – हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे कर्म, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत से अवगुण और थोड़े गुण सब इस बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है; जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चट-पट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसके अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है। *(C.B.S.E. 2009 Delhi Comptt.)*

प्रश्न–

(i) विनम्रता और स्वतंत्रता का परस्पर क्या संबंध है ?

(ii) मर्यादापूर्वक जीवन जीने के लिए किन गुणों की आवश्यकता है?

(iii) नम्रता और दब्बूपन में क्या अंतर है ?

(iv) उन कारणों का उल्लेख कीजिए जिनसे मनुष्य आगे बढ़ने की बजाय पीछे रह जाता है?

(v) 'परमावश्यक' शब्द में संधि-विच्छेद कीजिए ।

(vi) 'नम्रता' शब्द में कौन-सा प्रत्यय लगा है ?

(vii) 'अभिमान' शब्द में कौन-सा उपसर्ग लगा है ?

(viii) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर–

(i) विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है। आत्मसंस्कार के लिए दोनों आवश्यक हैं।

(ii) मर्यादापूर्वक जीने के लिए आत्मनिर्भरता का गुण आवश्यक है। इसमें नम्रता और स्वतंत्रता के गुण भी चाहिए ।

(iii) नम्रता एक गुण है जबकि दब्बूपन एक अवगुण है। दब्बूपन में मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, उसका संकल्प क्षीण पड़ जाता है, प्रज्ञा मंद हो जाती है।

(iv) वे कारण हैं–
- मनुष्य का दूसरों पर निर्भर रहना ।
- अनिर्णय की स्थिति में रहना।
- संकल्प शक्ति का क्षीण पड़ जाना।

(v) परमावश्यक = परम + आवश्यक

(vi) 'नम्रता' शब्द में 'ता' प्रत्यय लगा है।

(vii) 'अभिमान' शब्द में 'अभि' उपसर्ग लगा है।

(viii) शीर्षक – विनम्रता और स्वतंत्रता ।

16. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए तथा इसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।' बिना विचारे कार्य करने वाला जीवन-भर नौ-नौ आँसू रोया करता है। अतः कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व भली प्रकार से सोच-समझ कर निर्णय लेना चाहिए। जिस प्रकार मुँह से निकली बात, कमान से छूटा तीर वापिस नहीं आते; उसी प्रकार बीता हुआ समय कभी लौट कर नहीं आता। अतः उचित समय पर उचित निर्णय करना ही मानव का परम कर्तव्य है। विचारपूर्वक आगे बढ़ना ही सफलता का मूल मंत्र है। गलती करके पश्चात्ताप करना तो एक गलती के ऊपर दूसरी गलती करना है। जो बात हो चुकी उस पर चिंता करना, खेद

करना, पश्चात्ताप करना व्यर्थ है; क्योंकि इससे कोई लाभ है ही नहीं। यदि पृथ्वीराज मोहम्मद गौरी के विषैले दाँतों को पहली बार हराते ही तोड़ देता, तो भारत का इतिहास कुछ और ही होता। कैकेयी के अविवेकपूर्ण निर्णय से न केवल उसे वैधव्य ही झेलना पड़ा बल्कि वह सामाजिक निंदा का शिकार भी बनी। उसने पश्चात्ताप-स्वरूप राम को वापस लाने का प्रयास किया किन्तु सब व्यर्थ। रावण जैसे पराक्रमी शिवभक्त राजा ने अविवेक के कारण सीता-हरण कर लिया और उसकी यही भूल उसके लिए ही नहीं, बल्कि उसके समस्त परिवार के लिए विनाश का कारण बनी। निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता कि बिना सोचे, विचारे किए कार्य नहीं करना चाहिए क्योंकि उनका परिणाम अमंगलकारी होता है।

(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)

प्रश्न–

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए ।

(ii) 'परम कर्तव्य' में समास का नाम लिखिए ।

(iii) 'अविवेक' शब्द में से उपसर्ग छाँटिए ।

(iv) 'अमंगल' शब्द का विलोम शब्द लिखिए ।

(v) बीता समय वापिस नहीं लौटता – यह बताने के लिए कौन-से उदाहरण दिए गए हैं ?

(vi) कैकेयी का अविवेकपूर्ण निर्णय क्या था? उसका क्या परिणाम निकला ?

(vii) 'पश्चाताप' को दूसरी गलती क्यों कहा गया है ?

(viii) 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–

(*i*) शीर्षक : 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत ।'

(*ii*) कर्मधारय समास।

(*iii*) 'अ' उपसर्ग।

(*iv*) मंगल।

(*v*) इसे बताने के लिए पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी का उदाहरण, कैकेयी का उदाहरण, रावण का उदाहरण दिए गए हैं।

(*vi*) कैकेयी का अविवेकपूर्ण निर्णय यह था कि उसने राम को 14 वर्ष के लिए वनवास भिजवाया और अपने पुत्र भरत के लिए अयोध्या का राजा बनाने का निर्णय लिया । अंततः यह निर्णय गलत सिद्ध हुआ ।

(*vii*) एक गलती तो पहले गलत निर्णय लेने की होती है और दूसरी गलती उस पर पश्चाताप करने की होती है। यह एक गलती पर दूसरी गलती करना है।

(*viii*) जब मौका हाथ से निकल जाता है तब फिर पछताने का कोई लाभ नहीं होता। फिर वह बिगड़ा काम नहीं बन सकता।

17. शिक्षित व्यक्ति सिद्धांतवादी होने पर भी विनम्र होता है। जिन गुणों को अंग्रेजी में 'कल्चर' कहते हैं, उन्हें संस्कृत में संस्कृति नहीं, विनय कहने का रिवाज था। विनय का अर्थ 'झुकना' होता है, विनम्रता शिक्षा का परिणाम समझी जाती थी। जो विनयशील है, उसे अनुशासन सिखाने की आवश्यकता नहीं होती। जो विनयशील है, वही अहिंसक भी होता है। सच्ची विनयशीलता अथवा सच्ची अहिंसा केवल कर्म और वाणी तक ही सीमित नहीं रहती, उसका आचरण विचारों के धरातल पर भी किया जाता है।

शिक्षित व्यक्ति के भीतर चिन्तन की शक्ति होती है, सवाल पूछने की योग्यता होती है। सही जवाब वही पा सकता है जो सही सवाल पूछ सकता है। मनुष्य के पास जो अपरिमित ज्ञान का भंडार है, वह सब-का-सब प्रश्नों के उत्तरों से ही उत्पन्न हुआ है। प्रश्न मनुष्य की जिज्ञासा का नाम है।

जिसे हम सोचने की शक्ति कहते हैं, वह असल में चीजों पर शंका करने की शक्ति है और सच्ची शिक्षा वह है, जो इस शक्ति को अधिक-से-अधिक जगाकर मनुष्य को चिन्तनशील बनाती है।

परंपरा और विद्रोह, ये दोनों ही जीवन के चिरन्तन सहचर हैं। परंपरा रास्ते में बाँध डालकर पानी को गहरा बनाती है, विद्रोह बाँध को तोड़कर पानी को दूर-दूर तक ले जाता है। परंपरा की रक्षा जितनी आवश्यक है, विद्रोह की आवश्यकता उससे कम नहीं है। विद्रोही आगे बढ़ने के लिए जोर लगाता है। परंपरा उसके पाँवों को जकड़कर उसे रोकना चाहती है। परंपरा और विद्रोह के इस संघर्ष के बाद समाज जितना आगे बढ़ पाता है, वही उसकी वास्तविक प्रगति है। विद्रोह के भाव शंका करने की प्रवृत्ति से जन्म लेते हैं। इस प्रवृत्ति को उकसाना शिक्षा का मुख्य ध्येय है। जिस दिन शंका करने

प्रवृत्ति समाप्त हो जाएगी, उस दिन मानवीय स्वतंत्रता का सर्वनाश हो जाएगा। शिक्षा वही श्रेष्ठ है जो मनुष्य को शंकालु बनाकर उससे ज्ञान की नई-नई दिशाओं का अनुसंधान कराती है।

(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)

प्रश्न–

(i) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ii) विनयशील व्यक्ति की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(iii) लेखक ने जिज्ञासा और ज्ञान का क्या संबंध माना है?

(iv) 'परंपरा' और 'विद्रोह' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

(v) परंपरा और विद्रोह के संघर्ष का क्या परिणाम होता है?

(vi) शिक्षा का मुख्य ध्येय क्या है?

(vii) 'विनय' एवं 'आचरण' शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए।

(viii) 'विद्रोह', 'विद्रोही' शब्दों के शब्द-भेद बताइए।

(ix) 'अनुशासन' एवं 'शंकालु' शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए।

(x) 'बाँध' शब्द का तत्सम तथा 'कर्म' शब्द का तद्भव रूप लिखिए।

उत्तर–

(i) **शीर्षक**–विनम्रता।

(ii) **विनयशील व्यक्ति की दो विशेषताएँ–**

(क) वह अनुशासन प्रिय होता है।

(ख) वह अहिंसक भी होता है।

(iii) जिज्ञासा मनुष्य से प्रश्न कराती है। प्रश्नों के उत्तर से ज्ञान प्राप्त होता है।

(iv) 'परंपरा' और 'विद्रोह' दोनों का जीवन से चिरन्तन साथ है। परंपरा व्यक्ति के पाँवों को जकड़कर रोकती है जबकि विद्रोह आगे बढ़ने के लिए जोर लगाता है।

(v) परंपरा और विद्रोह के संघर्ष के बाद समाज जितना आगे बढ़ पाता है, वही उसकी वास्तविक प्रगति होती है। यही उसका परिणाम है।

(vi) शिक्षा का मुख्य ध्येय शंका करने की प्रवृत्ति को उकसाना है।

(vii) **विपरीतार्थक शब्द–**

विनय × अविनय आचरण × अनाचरण

(viii) **शब्द-भेद**

विद्रोह- भाववाचक संज्ञा विद्रोही - गुणवाचक विशेषण

(ix) अनुशासन – अनु (उपसर्ग) शंकालु – आलु (प्रत्यय)

(x) 'बाँध' का तत्सम – बँध 'कर्म' का तद्भव – काम

18. रॉकेट के विकास में आवश्यक कठोर परिश्रम और उसके लिए प्रतिबद्धता के विषय पर बातचीत में ब्रान मुसकराए और बोले– ''राकेट-विज्ञान में कठोर परिश्रम ही पर्याप्त नहीं है। यहाँ न सिर्फ तुम्हें लक्ष्य को पाना है, बल्कि इसे जितना जल्दी संभव हो सके, हासिल करने के तरीके भी निकालने हैं।''

संपूर्ण प्रतिबद्धता का अर्थ केवल कड़ी मेहनत नहीं है। इसमें पूर्ण रूप से शामिल होने का पक्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह लक्ष्य ही है जो अंतर पैदा करता है। तुम रॉकेट विज्ञान को अपना पेशा, अपनी जीविका मत बनाओ–इसे अपना धर्म समझो, अपना मिशन बनाओ।

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित्त होकर समर्पित होना चाहिए। मेरे जैसे लोग प्रायः 'कार्य-आधिक्य' से ग्रस्त कहे जाते हैं। लेकिन मुझे इस पर आपत्ति है, क्योंकि यह एक प्रकार की रोगात्मक स्थिति अथवा बीमारी का सूचक है; जबकि वचनबद्धता एवं एकाग्रचित्तता लक्ष्य प्राप्त करने के साधन हैं। यदि मैं वह करता हूँ जिसके लिए मेरी इच्छा दुनिया में कुछ भी होने से ज्यादा करने की है और जो मुझे खुशी प्रदान करती है, तो ऐसा काम करने को मानसिक आनंद का कारण ही कहा जा सकता है।

लक्ष्य-प्राप्ति के लिए वचनबद्धता का मूलभूत गुण होना आवश्यक है। पूरी क्षमता के साथ काम करने की इच्छा के बाद मुश्किल से ही कोई और इच्छा जन्म लेने पाती है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो हर हफ्ते सौ घंटे तक भी काम करते हैं; क्योंकि उन्हें अपना काम रोमांच पैदा करने वाला, चुनौती भरा एवं अच्छा प्रतिफल देने वाला लगता है। सफल मनुष्यों में पूर्ण वचनबद्धता का गुण जरूर पाया जाता है।

शीर्ष पर पहुँचने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति जरूरी होती है, चाहे वह माउंट एवरेस्ट हो या आपके कार्यक्षेत्र का स्थल हो। हर व्यक्ति अलग-अलग ऊर्जा लेकर जन्मा है और जो सबसे पहले प्रयास करेगा और अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल करेगा, वही सबसे जल्दी अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पाएगा।" *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Out)*

प्रश्न–

(i) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

(ii) 'रॉकेट-विज्ञान को पेशा नहीं धर्म मानो।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iii) पूर्ण प्रतिबद्धता से आप क्या समझते हैं?

(iv) लेखक किस व्यवहार को मानसिक आनंद का कारण मानता है?

(v) 'कार्य-आधिक्य' से ग्रस्त कहे जाने पर लेखक को आपत्ति क्यों है?

(vi) लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कौन-सा गुण आवश्यक है?

(vii) कैसे व्यक्ति अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पाते हैं?

(viii) 'विज्ञान' एवं 'वचनबद्धता' शब्दों में उपसर्ग एवं प्रत्यय छाँटिए।

(ix) 'गुण' तथा 'कठोर' शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए।

(x) 'लक्ष्य' एवं 'परिश्रम' शब्दों के पर्याय लिखिए।

(xi) 'अंतर' शब्द का विशेषण बनाइए।

उत्तर–

(*i*) **शीर्षक**–दृढ़ इच्छाशक्ति।

(*ii*) इस कथन का आशय यह है कि रॉकेट-विज्ञान को एक व्यवसाय नहीं मान लेना चाहिए। यह तो एक धर्म है अर्थात् कर्तव्य है।

(*iii*) पूर्ण प्रतिबद्धता से हम समझते हैं कि किसी लक्ष्य को पाने या किसी काम को करने के लिए पूरे जी-जान से जुट जाना, उसमें पूर्ण समर्पण होना चाहिए।

(*iv*) जब हम एकाग्रचित्त होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं तब हमें इस उपलब्धि पर मानसिक आनंद की प्राप्ति होती है। खुशी ही मानसिक आनंद का कारण है।

(*v*) काम की अधिकता को 'कार्य-आधिक्य' कहा जाता है। जो लोग अधिक काम से घिरे रहते हैं उन्हें कार्य-आधिक्य ग्रस्त कहा जाता है, लेकिन लेखक को यह कहे जाने पर आपत्ति है क्योंकि यह एक बीमारी का सूचक है।

(*vi*) लक्ष्य-प्राप्ति के लिए वचनबद्धता का गुण आवश्यक है।

(*vii*) जो सबसे पहले प्रयास करते हैं और अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल करते हैं वे ही अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पाते हैं।

(*viii*) विज्ञान – वि (उपसर्ग) वचनबद्धता – वचन + बद्ध + ता (प्रत्यय)

(*ix*) गुण × अवगुण कठोर × कोमल

(*x*) लक्ष्य = ध्येय परिश्रम = श्रम

(*xi*) अंतर – आंतरिक

19. उद्देश्य की सिद्धि के लिए मन में तीव्र कामना करते हुए दृढ़ता, उत्साह तथा एकाग्रता से उसी के बारे में विचार करते रहना उद्देश्य-सिद्धि की पहली सीढ़ी है। व्यक्ति के जीवन का जो महान उद्देश्य है, क्या उसे पाने के लिए वह लालायित है? क्या उसे प्राप्त करने के लिए वह निरंतर चिंतन करता है? यदि इसका उत्तर हाँ है, तो स्पष्ट है कि वह व्यक्ति अपनी समस्त शक्तियों का आह्वान कर रहा है। यह शक्ति उसे अवश्य प्राप्त होगी और उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।

व्यक्ति का जैसा आत्मविश्वास होगा, वैसी ही उसकी सिद्धि भी होगी। आत्मविश्वास के परिमाण के अनुसार ही उसकी सफलता भी होगी, न उससे अधिक, न उससे कम। जिसे अपने ऊपर भरोसा नहीं, वह थोड़ा ही पाएगा, थोड़े में ही संतुष्ट

हो जाएगा, दीन-हीन अवस्था में ही दिन काटेगा। इसके विपरीत, जिसमें आत्मविश्वास प्रबल होगा, वह विपुल ज्ञान तथा धन-संपत्ति का स्वामी होगा। कारण यह है कि जैसा व्यक्ति का आत्मविश्वास होगा, वैसी ही उसकी योग्यता होगी, वैसा ही उसका प्रयत्न होगा और निश्चय ही उसी अनुपात में उसे फल की प्राप्ति भी होगी।

हमें जिस पदार्थ की कामना है, उसे पाने की तीव्र इच्छा ही हमारे मन में होना पर्याप्त नहीं है, यही आवश्यक नहीं कि हमारी संपूर्ण इच्छाओं से वह इच्छा सर्वोपरि रहे; बल्कि अपने मनचाहे पदार्थ को प्राप्त करने के लिए उसी के अनुरूप हमारा प्रयत्न भी अटूट, अथक तथा सतत् होना चाहिए। यदि इच्छा अदम्य है तो प्रयत्न भी अदम्य होना चाहिए और उसका मूलाधार आत्मविश्वास ही है। यह आत्मविश्वास ही उत्साह का जनक है। लोहे को पिघलाने के लिए जितने तापमान की आवश्यकता होती है, उससे कम ताप देने पर लोहा नहीं पिघल सकता। ठीक इसी प्रकार किसी कार्य की सिद्धि हेतु जितने श्रम, प्रयत्न तथा साहस की आवश्यकता है, उससे कम में सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। उसी परिणाम में श्रम, प्रयत्न तथा साहस तभी किया जा सकता है, यदि हमारा आत्मविश्वास सघन, अटूट और अविचल हो।

दृढ़ निश्चय कीजिए, अटूट निश्चय कीजिए, अक्षय संकल्प कीजिए–ऐसा संकल्प कीजिए कि आप कभी पीठ नहीं दिखाएँगे, कभी पराजित नहीं होंगे, कभी हार नहीं मानेंगे और तब तक श्रम तथा प्रयत्न जारी रखेंगे, जब तक कि कार्य सिद्धि नहीं हो जाती। आत्मविश्वास वस्तुतः अपनी शक्तियों की सच्ची पहचान का नाम है अर्थात् अपनी कार्यक्षमता, कार्यकुशलता तथा कार्ययोजना का ज्ञान होना अभिमान नहीं है। कठोर परीक्षाएँ सम्मुख आयें और कठिनाइयाँ बाधा डालें, परंतु फिर भी जो हतोत्साह नहीं होता, इतिहास में उसी व्यक्ति का नाम गौरव से लिया जाता है। उसकी सिद्धि का आधार आत्मविश्वास ही होता है। हम अपने मन में जिस कार्य के बारे में हीन भावना लाते हैं वही काम हमसे नहीं होता। यदि हमें यह ज्ञान हो जाए कि हम उस महान शक्ति के अंश हैं, जो सर्वशक्तिमान है, तो हमारी शक्ति विराट् हो जाती है। तब हमारा हृदय वीर और साहसी हो जाता है। आत्मविश्वास एक भावना है, उसका क्रियात्मक रूप ही साहस है। जब हम अपने विचारों को कार्यरूप में परिणत करने का साहस करते हैं तो हमें तुरंत सिद्धि मिल जाती है।

प्रश्न :

(क) *उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।*

(ख) *उद्देश्य सिद्धि की पहली सीढ़ी क्या है?*

(ग) *उत्साह का जनक किसे कहा गया है?*

(घ) *आत्मविश्वास क्या है?*

(ङ) *इतिहास में किसका नाम गौरव से लिया जाता है?*

(च) *हमारी शक्ति विराट कब और कैसे हो जाती है?*

(छ) (*i*) ***उपसर्ग अलग कीजिए :*** *आत्मविश्वास, प्रयत्न*

(*ii*) ***प्रत्यय अलग कीजिए :*** *योग्यता, लालायित।*

उत्तर :

(क) **शीर्षक :** जीवन में आत्मविश्वास का महत्त्व।

(ख) उद्देश्य प्राप्ति की पहली सीढ़ी है : उद्देश्य प्राप्ति की तीव्र कामना करते हुए दृढ़ता, उत्साह तथा एकाग्रता से उसी के बारे में विचार करते रहना। महान उद्देश्य को पाने के लिए उसके लिए निरंतर चिंतन करना आवश्यक है।

(ग) आत्मविश्वास को उत्साह का जनक कहा गया है।

(घ) आत्मविश्वास वस्तुतः अपनी शक्तियों की सच्ची पहचान का नाम है। इसमें व्यक्ति अपनी कार्यक्षमता, कार्यकुशलता एवं कार्ययोजना का ज्ञान पाता है।

(ङ) इतिहास में उस व्यक्ति का नाम गौरव से लिया जाता है जो परीक्षाओं, कठिनाइयों और बाधाओं में भी हतोत्साहित नहीं होता।

(च) जब हमें यह ज्ञान हो जाता है कि हम उसी महान शक्ति (परमात्मा) के अंश हैं, जो सर्वशक्तिमान है, तब हमारी शक्ति विराट हो जाती है। इस स्थिति में हमारे अंदर साहस और आत्मविश्वास आ जाता है।

(छ) (*i*) **उपसर्ग :** आत्मविश्वास → आत्म, प्रयत्न → प्र

(*ii*) **प्रत्यय :** योग्यता → ता, लालायित → इत।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हिमपात का दृश्य बड़ा मोहक होता है। आकाश का तापमान शून्य से नीचे जाने पर ही मसूरी में बर्फ पड़ती है। निम्न तापमान बर्फ *(छोटे-छोटे नरम ओले)* के रूप में गिरती है। ठंडक बढ़ने पर हिम रुई जैसे फाहों के रूप में गिरती है। हल्की हवा में ये फाहे पर तिरछे गिरते हैं। चाँदनी रात की हिमवृष्टि का दृश्य अद्‌भुत होता है।

बर्फ सौंदर्य पूर्ण है, परंतु उसका आनंद सब नहीं ले सकते। लोगों में इसका सौंदर्य देखने की इच्छा नहीं होती। दिल्ली से मसूरी द्वारा पाँच घंटे, सहारनपुर से दो घंटे और देहरादून से पौना घंटे में पहुँचा जा सकता है परंतु हिम दर्शन साधारण आदमी के बस की नहीं है। इसके लिए मोटा ओवरकोट, मोटा गरम स्वैटर, चमड़े की जर्सी या फतुई, मोटा ऊनी मोजा, फुल बूट, चमड़े या ऊन की तथा हाथों में चमड़े के दस्ताने चाहिए।

हिमराशि की श्वेतिमा देखने में मोहक होती है। एक दो दिन तक तो बर्फ बहुत नरम होती है। हिलते ही उसमें धँस सकते हैं। हाँ से न कपड़े भीगते हैं और न गंदे होते हैं। अपरिचित स्थानों पर गहरे गड्ढे हो सकते हैं। यूरोप में गड्ढों का खतरा नहीं होता क्योंकि वहाँ इलाके हैं। हमारे यहाँ सर्दी के कारण ऊबड़-खाबड़ जमीन में चलने को मन नहीं करता। घर में ही आग सेंकने की इच्छा होती है।

प्रश्न :

1. हिमपात का दृश्य कैसा होता है?
2. मसूरी में बर्फ कब पड़ती है और किस रूप में?
3. चाँदनी रात में हिम वृष्टि का दृश्य कैसा होता है?
4. हिमदर्शन साधारण आदमी के वश की बात क्यों नहीं है?
5. हिम-दर्शन के लिए क्या-क्या चीजें चाहिएं?
6. हमारे यहाँ हिम पर चलने में क्या खतरा हो सकता है?
7. उपर्युक्त गद्यांश का सार एक-तिहाई शब्दों में लिखिए।
8. 'श्वेतिमा' शब्द का अर्थ लिखो।

2. 'सदाचार' शब्द 'सद् + आचार' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है अच्छा व्यवहार। सदाचार व्यक्ति को सच्चरित्र बनाता जीवन में सदाचार का बहुत महत्त्व है। प्रभु से भी प्रार्थना की जाती है –

"लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
हम ब्रह्मचारी, धर्म-रक्षक, वीर व्रतधारी बनें।"

सदाचार के अंतर्गत जिन गुणों की अपेक्षा की जाती है। वे हैं–सत्य बोलना, अहिंसा के मार्ग पर चलना, दूसरों की सहायता करना निःस्वार्थ भावना को अपनाना, सादा जीवन बिताना, उच्च विचार रखना, बड़ों का आदर-सम्मान करना एवं दृढ़-प्रतिज्ञ होना आदि। गुणों को अपनाकर हमारा जीवन सदाचारपूर्ण हो सकता है। सदाचारी बनने के लिए मनुष्य को सुशिक्षा, सत्संगति और स्वानुशासन वहुत आवश्यकता होती है। वैसे अशिक्षित व्यक्ति भी सत्संगति और अनुभवों के आधार पर सदाचारी देखे गए हैं, परंतु बुद्धि परिष्कार और विकास शिक्षा के बिना अधूरा रह जाता है। शिक्षा और सत्संगति का संयोग व्यक्ति को सदाचारी बनाता है। तुलसीदास ने लिखा भी है–

"सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परस कुधात सुहाई।"

प्रश्न :

1. 'सदाचार' शब्द किस प्रकार बना है? इसका क्या अर्थ है?
2. सदाचारी व्यक्ति प्रभु से क्या प्रार्थना करता है?
3. सदाचार के अंतर्गत किन-किन गुणों की अपेक्षा की जाती है?
4. अशिक्षित व्यक्ति भी कैसे सदाचारी वन सकता है?
5. तुलसीदास द्वारा रचित काव्य-पंक्तियों का क्या आशय है?
6. इस गद्यांश का सार लिखिए।
7. 'सदाचारी' शब्द का विलोम लिखो।

3. प्रसिद्ध कवि एवं नाटककार का कथन है–"समय को मैंने नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।"

मनुष्य का जीवन अमूल्य है, जो संसार में विशिष्ट स्थान रखता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। प्रकृति के समस्त नियत समय पर होते हैं। समय की गति बड़ी तीव्र होती है। जो उससे पिछड़ जाता है। वह सदैव पछताता रहता है। तुलसीदास ने ही कहा है–

"समय चूकि पुनि का पछताने
का वर्षा जब कृषि सुखाने।"

अतः आवश्यकता है समय के सदुपयोग की। समय वह धन है जिसका सदुपयोग न करने से वह व्यर्थ चला जाता है। हमें समय का महत्त्व तब ज्ञात होता है जब दो मिनट विलंब के कारण गाड़ी छूट जाती है। जीवन में वही व्यक्ति सफल हो पाते हैं जो समय का पालन करते हैं। हमारे देश में समय का दुरुपयोग बहुत होता है। बेकार की बातों में व्यर्थ समय गंवाया जाता है। मनोरंजन के नाम पर भी बहुत समय गंवाया जाता है। बहुत से व्यक्ति समय गंवाने में ही आनंद का अनुभव करते हैं। यह प्रवृत्ति हानिकारक है। समय को खोकर कोई व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता। जूलियस सीजर सभा में पाँच मिनट देर से पहुँचा और अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। अपनी सेना के कुछ मिनट देर से पहुँचने के कारण नेपोलियन को नेल्सन से पराजित होना पड़ा। समय किसी की बाट नहीं देखता।

प्रश्न :

1. एक प्रसिद्ध नाटककार का क्या कथन है?
2. मनुष्य का जीवन कैसा है?
3. 'समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता'-आशय स्पष्ट कीजिए।
4. जीवन में कौन से व्यक्ति सफल होते हैं?
5. हमारे देश में समय का दुरुपयोग कैसे किया जाता है?
6. उपर्युक्त गद्यांश का एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए।
7. 'प्राणों से हाथ धो बैठना' मुहावरे का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए।
8. 'दुरुपयोग' शब्द का विलोम लिखो।

4. हमारा अस्तित्व, हमारी प्रवृत्तियाँ तथा जीवन का प्रत्येक क्षण सत्य की आराधना के लिए होना चाहिए। ऐसा होने पर सारे नियम प्राप्त हो जाते हैं तथा उनका पालन आसान बन जाता है। सत्य हमारी वाणी, विचार तथा आचार में होना चाहिए। सत्य ही जगत का सार है तथा सत्य की प्राप्ति सच्चा आनंद है। सत्य से ही हमें उचित-अनुचित का ज्ञान होता है।

सत्य को अभ्यास तथा वैराग्य से प्राप्त किया जा सकता है। 'सत्य' नाम ही परमेश्वर है। सत्य की खोज के साथ तपश्चर्या, आत्म कष्ट तथा मर मिटना होता है। वहाँ स्वार्थ नहीं होता। अतः स्वयं ही भूल-सुधार हो जाती है। जिस प्रकार परमात्मा के सब को अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं, उसी प्रकार सत्य भी सब के लिए भिन्न हो सकते हैं।

सत्य की आराधना भक्ति है। भक्ति हरि का मार्ग है, उसमें कायरता नहीं होती, हार नहीं होती, वह तो सिर हथेली पर लेकर चलने का सौदा है। वह तो मर मिटना है। सत्य रूपी परमेश्वर रत्न चिंतामणि है। सत्य और अहिंसा का मार्ग सीधा परंतु तंग है। खाँडे की धार पर चलने के समान है। वह पल-पल साधना से ही प्राप्त होता है। यह शरीर क्षण भंगुर है। इससे संपूर्ण सत्य-शाश्वत धर्म का दर्शन असंभव है। मार्ग में आने वाले संकटों को सहने से जिज्ञासु आगे बढ़ सकता है परंतु संकटों का नाश करने से वह वहीं का वहीं रहता है। नाश करने से सत्य दूर भागता है।

प्रश्न :

1. हमारा जीवन किसके लिए होना चाहिए?
2. सत्य हमारे अंदर किस प्रकार समाना चाहिए?
3. सत्य को कैसे पाया जा सकता है?
4. 'सत्य की आराधना भक्ति है'-कैसे?
5. "सत्य और अहिंसा का मार्ग सीधा परंतु तंग है।" इसका क्या आशय है?
6. 'खांडे की धार पर चलना' का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए।
7. इस गद्यांश का एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए।

5. भारत एक विशाल देश है और इसका इतिहास प्राचीन और उतार-चढ़ावों से भरा है। यह बहुभाषाओं वाला देश है और अनेक नस्लें एवं जातियाँ सदियों से इसमें निवास कर रही हैं। दुनिया के लगभग सभी धर्म यहाँ पल रहे हैं। इसमें हम सभ्यता के विभिन्न स्तरों को साथ पनपते देखते हैं और हम देखते हैं कि फिर भी हम एक राष्ट्र हैं।

हम अनेक में एक के खोजी हैं। वैदिक आर्य इंद्र, वरुण, अग्नि इत्यादि नाना देवताओं के आराधक थे लेकिन उन्होंने एकत्व की भावना विकसित की और यह घोषित किया कि वे सब एक ही सत्य के विभिन्न नाम हैं-'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति।'

एकत्व की इस अनुभूति ने उन्हें सामाजिक-राजनीतिक जीवन के निर्माण में सहायता दी। प्रकृति के सतत् संपर्क के कारण आर्य मानस ने मानव-आत्मा के बीज की समरसता को समझने का प्रयत्न किया। महावीर और बुद्ध ने प्रेम और भ्रातृ-भाव पर ज्यादा बल देते हुए यही उपदेश दिया।

जब हम मध्ययुगीन संतों को देखते हैं तो पाते हैं कि प्रेम का संदेश एक बार फिर उद्घोषित हो उठा। इन संतों ने भारतीय भाषाओं-हिंदी, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड़ आदि सभी को समृद्ध बनाया है। भाषाएँ अलग-अलग हैं, परंतु संदेश एक ही है।

प्रश्न :

1. भारत कैसा देश है?
2. भारत में विविधता कहाँ-कहाँ देखने को मिलती है?
3. भारत में एकत्व की भावना किस रूप में विद्यमान है?
4. महावीर और बुद्ध ने किस बात पर बल दिया?
5. मध्ययुगीन संतों ने क्या संदेश दिया?
6. इस गद्यांश का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए।
7. 'एकत्व' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय अलग करके लिखो।

नवीं कक्षा हेतु गद्यांशों पर बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चुनिए :

1. आधुनिक युग में नारी को जहाँ अधिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, वहीं वह अनेक समस्याओं से घिर भी गई है। आज की की जिम्मेदारियाँ बहुत हद तक बढ़ गई हैं। समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान पा लेने के पश्चात् उसके उत्तरदायित्वों में वृद्धि हो गई है। आर्थिक समस्याओं के लिए निरंतर संघर्ष कर रही है।

नौकरी जीविका का साधन है। नौकरी आर्थिक समस्याओं का एक समाधान है। नौकरी स्वावलंबन के प्रश्न का उत्तर नारी-सौंदर्य-बोध का मूर्त रूप है। वह मातृत्व और करुणा की सजीव मूर्ति है। उसके नयन-कोर उज्ज्वल चाँदनी की बौछार हैं। सबके बावजूद वह नौकरी करने के लिए क्यों विवश हुई? वह पुरुष के समान दफ्तर जाती है या कोई व्यवसाय चलाती है, क्यों इसका एकमात्र उत्तर आर्थिक दबाव और विषमता तो है ही, इसके साथ-साथ युग-युग के बंधनों से मुक्ति की चिर कामना भी

नारी को नौकरी क्यों करनी पड़ती है? इस प्रश्न के कई उत्तर हैं। एक तो यह है कि इस प्रकार वह घर-परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में सहायक होती है। दूसरे, अनेक प्रकार की विषम आर्थिक स्थिति में उसे नौकरी करने को विवश होना पड़ता तीसरे, स्वतंत्र आर्थिक निर्भरता मिटती है। इस निर्भरता के कारण उसे अनेक बार शारीरिक और मानसिक यंत्रणा झेलनी पड़ती आर्थिक आश्रय देकर पुरुष वर्ग ने नारी को गुड़िया या मन बहलाव का खिलौना-मात्र समझ लिया है, अतः नारी उसके चंगुल मुक्ति की कामनावश नौकरी की राह पर चल रही है।

अनेक प्रकार की विषम आर्थिक स्थिति में उसे नौकरी करने को विवश होना पड़ता है। स्वतंत्र आर्थिक स्थिति का प्रलोभन नौकरी की ओर आकर्षित करता है। नारी के नौकरी की ओर आकर्षित होने ने अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है। परिवार सुख-सुविधा का मुख्य दायित्व नारी पर ही है, पर नौकरी के चक्कर में घर की स्थिति होटल जैसी हो गई है। कार्य की अधिक ने नारी सुलभ कोमलता को छीन लिया है और वह नीरस होती जा रही है। नौकरी करने वाली स्त्री मातृत्व का दायित्व कुशलतापूर्वक नहीं निभा पाती है। ममता और वात्सल्य के अभाव में बच्चों का जीवन पूर्णतः विकसित नहीं हो पाता है।

प्रश्न :

1. आधुनिक नारी किनसे घिर गई है?
   (क) युग से (ख) समस्याओं से
   (ग) संघर्ष से (घ) उत्तरदायित्वों से
2. नारी किसके लिए विवश हुई है?
   (क) सौंदर्य-बोध के लिए (ख) व्यवसाय के लिए
   (ग) नौकरी करने के लिए (घ) मुक्ति के लिए
3. 'आश्रय' शब्द का अर्थ है :
   (क) सहारा (ख) आश्रय
   (ग) शरण (घ) श्रम
4. 'विकसित' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग है?
   (क) वि (ख) सित
   (ग) इत (घ) त
5. 'नीरस' शब्द का विलोम है :
   (क) विरस (ख) सरस
   (ग) किरस (घ) पीरस

उत्तर : 1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (ग), 5. (ख)।

2. एक बार स्वामी विवेकानंद का एक शिष्य उनके पास आया और उसने कहा, 'स्वामी जी, मैं आप की तरह भारत की संस्कृति, दर्शन और रीति-रिवाज का प्रचार प्रसार करने के लिए अमेरिका जाना चाहता हूँ। यह मेरी पहली यात्रा है। आप मुझे विदेश की अनुमति और अपना आशीर्वाद दें ताकि मैं अपने मकसद में सफल होऊँ।' स्वामी जी ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा फिर 'सोच कर बताऊँगा।' शिष्य हैरत में पड़ गया। उसने विवेकानंद जी से इस उत्तर की कल्पना भी नहीं की थी। उसने फिर कहा, जी, मैं आप की तरह सादगी से अपने देश की संस्कृति का प्रचार करूँगा। मेरा ध्यान और किसी चीज पर नहीं जाएगा।' विवेकानंद ने फिर कहा, 'सोच कर बताऊँगा।' शिष्य ने समझ लिया कि स्वामी जी उसे विदेश नहीं भेजना चाहते इसलिए ऐसा कह रहे हैं उनके पास ही रुक गया। दो दिनों के बाद स्वामी जी ने उसे बुलाया और कहा, 'तुम अमेरिका जाना चाहते हो तो जाओ। मेरा आशी

तुम्हारे साथ है।' शिष्य ने सोचा कि स्वामी जी ने इतनी छोटी सी बात के लिए दो दिन सोचने में क्यों लगाया। उसने अपनी यह दुविधा स्वामी जी को बताई। स्वामी जी ने कहा, 'मैं दो दिनों में यह समझना चाहता था कि तुम्हारे अंदर कितनी सहनशक्ति है। कहीं तुम्हारा आत्मविश्वास डगमगा तो नहीं रहा है। लेकिन तुम दो दिनों तक यहाँ रह कर निर्विकार भाव से मेरे आदेश की प्रतीक्षा करते रहे। न क्रोध किया, न जल्दबाज़ी की और नहीं धैर्य खोया। जिसमें इतनी सहनशक्ति और गुरु के प्रति प्रेम का भाव होगा, वह शिष्य कभी भटकेगा नहीं। मेरे अधूरे काम को वही आगे बढ़ा सकता है। किसी दूसरे देश के नागरिक के मन में अपने देश की संस्कृति को अंदर तक पहुँचाने के लिए ज्ञान के साथ-साथ, धैर्य, विवेक और संयम की आवश्यकता होती है। मैं इसी बात की परीक्षा ले रहा था। 'शिष्य स्वामी जी की इस अनोखी परीक्षा से अभिभूत हो गया।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर सही विकल्पों को चुनकर लिखिए–

(i) स्वामी जी के शिष्य का अमेरिका जाने का उद्देश्य था–

(क) अमेरिका की संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना

(ख) भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म का प्रचार करना

(ग) भारतीय धर्मों का प्रचार प्रसार करना

(घ) भारत की संस्कृति, दर्शन और रीति-रिवाज का प्रचार करना

(ii) विवेकानंद जी ने शिष्य को अमेरिका जाने की अनुमति नहीं दी क्योंकि–

(क) शिष्य को भारतीय रीति-रिवाजों का ज्ञान नहीं था

(ख) शिष्य के धैर्य, विवेक और संयम की परीक्षा लेना चाहते थे

(ग) शिष्य को ज्ञान देना चाहते थे

(घ) शिष्य के पास पर्याप्त धन नहीं था

(iii) विवेकानंद जी के उत्तर न देने पर शिष्य की प्रतिक्रिया थी–

(क) क्रोध से भर गया (ख) निर्विकार भाव से प्रतीक्ष करता रहा

(ग) स्वामी जी से विनती करने लगा (घ) धैर्य खोकर विचलित हो गया

(iv) शिष्य स्वामी जी के पास क्यों गया था–

(क) अमेरिका जाने की अनुमति माँगने (ख) ज्ञान-प्राप्त करने

(ग) स्वामी की जी सेवा करने (घ) स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त करने

(v) गद्यांश का उचित शीर्षक होगा–

(क) स्वाभिमान की रक्षा (ख) धैर्य-परीक्षा

(ग) अनोखी परीक्षा (घ) पहली परीक्षा

उत्तर : *(i)* (घ), *(ii)* (ख), *(iii)* (ख), *(iv)* (क), *(v)* (ग)

3. व्यक्ति के जीवन में संतोष का बहुत महत्त्व है। संतोषी व्यक्ति सुखी रहता है। असंतोष सब व्याधियों की जड़ है। महात्मा कबीर ने कहा है कि धन-दौलत से कभी संतोष नहीं मिलता। संतोष रूपी धन मिलने पर समस्त वैभव धूल के समान प्रतीत होता है। व्यक्ति जितना अधिक धन पाता जाता है उतना ही असंतोष उपजता जाता है। यह असंतोष मानसिक तनाव उत्पन्न करता है जो अनेक रोगों की जड़ है। धन व्यक्ति को उलझनों में फँसाता जाता है। साधु को संतोषी बनाया गया है क्योंकि भोजन मात्र की प्राप्ति से उसे संतोष मिल जाता है। हमें भी साधु जैसा होना चाहिए। हमें अपनी इच्छाओं को सीमित रखना चाहिए। जब इच्छाएँ हम पर हावी हो जाती हैं तो हमारा मन सदा असंतुष्ट रहता है। सांसारिक वस्तुएँ हमें कभी संतोष नहीं दे सकतीं। संतोष का संबंध मन से है। संतोष सबसे बड़ा धन है। इसके सम्मुख सोना-चाँदी, रुपया-पैसा व्यर्थ है।

प्रश्न :

1. 'संतोष' का विलोमार्थी शब्द है :

(क) संतोषी (ख) असंतोष

(ग) संतुष्ट

2. संतोष रूपी धन मिलने से क्या होता है?

(क) वैभव धूल के समान लगते हैं (ख) मन में संतुष्टि आ जाती है

(ग) धन की लालसा बढ़ जाती है

3. जब इच्छाएँ हम पर हावी हो जाती हैं तब क्या होता है?

(क) मन में खुशी होती है (ख) मन सदा असंतुष्ट रहता है

(ग) मन संसार में रम जाता है

4. संतोष का संबंध किससे है?

(क) मन से (ख) धन से

(ग) वस्तुओं से

5. इस गद्यांश का शीर्षक क्या हो सकता है?

(क) संसार (ख) संतोष का महत्त्व

(ग) जीवन

उत्तर : 1. (ख), 2. (क), 3. (ख), 4. (क), 5. (ख)।

4. 'साँच बराबर तप नहीं' सूक्ति में सत्य की महत्ता को स्वीकारा गया है। संच के मार्ग पर चलना अपने आप में तप है। त का अर्थ है 'तपना'। सच का मार्ग सदैव कंटीला होता है, कठिन होता है। तप करने की ताकत रखने वाला ही इस पर चल सक है। तप वही कर सकता है जिसका हृदय साफ, निष्पाप व एकाग्रचित हो। 'सत्य' मानव हृदय के गौरव का प्रतीक है। सच बोल वाले के मुख पर एक अलग तरह का तेज रहता है, सोच रहता है। ऐसा व्यक्ति निडर होता है व लोगों के दिल में जगंह बनाता है अप्रिय सत्य मनुष्य को कभी नहीं बोलना चाहिए। सत्य असत्य की परिभाषा अपने आप में कुछ नहीं, परंतु दूसरों की भलाई, कल्या के लिए बोला गया बड़े-से बड़ा झूठ भी सत्य है और वास्तविक सत्य जो दूसरों को कठिनाई में डाल दे, बोला जाए तो वह झू की परिधि में आता है। सत्य का पालन करने के लिए सत्यवादी हरिशचंद्र अपने पूरे जीवन को तपस्वी की तरह जीने पर मजबू हुए। तप और सत्य मिलकर मानव जीवन को विकास की राह पर अग्रसर करते हैं। सत्य की प्राप्ति ही कठोरतम तप है यह संसा का वह सर्वोत्तम धर्म है जिसके बिना जीवन सारहीन हो जाता है। सत्य अटल है। लाख झूठ भी उसके समक्ष टिक नहीं सकते। झू बुलबुले की भाँति है जिसका अस्तित्व क्षणिक है। सच स्थायी है, चिरंतर है। एक सच को छुपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं और अंत में सौ झूठों का आवरण भेद कर सत्य बाहर निकल ही आता है। सत्य से व्यक्ति जितना मुँह मोड़ता है वह उतना पल-प में सामने आता है। कठिन अवश्य है तप का मार्ग, सत्य का मार्ग, परंतु कल्याणकारी है।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के सही विकल्पों को चुन कर लिखें-

(क) 'सच' का मार्ग कैसा होता है।

(*i*) कंटीला और कमजोर (*ii*) काँटों से भरा एवं सरल

(*iii*) कंटीला और आसान (*iv*) काँटों से भरा एवं कठिन

(ख) तप कैसा व्यक्ति कर सकता है ?

(*i*) जिसका दिमाग एकाग्रचित, कुशाग्र एवं निष्पाप हो।

(*ii*) जिसका हृदय निष्पाप, एकाग्रचित एवं साफ हो।

(*iii*) जिसका हृदय संयमी, सत्यवादी एवं निष्पाप हो।

(*iv*) जिसका दिमाग तीव्र, कुशाग्र एवं एकाग्रचित हो।

(ग) सच बोलने वाले की क्या पहचान हैं?

(*i*) निडर, साहसी एवं परोपकारी (*ii*) निडर, परोपकारी एवं पक्षपात करने वाला

(*iii*) पक्षपात न करने वाला, साहसी एवं कुशल वक्ता।

(*iv*) निडर , सबका प्रिय एवं मुख पर विशेष तेज

(घ) मानव जीवन के विकास की राह को आगे बढ़ाते है।

(*i*) स्वास्थ्य और तप (*ii*) सत्य और तप

(*iii*) तप और संयम (*iv*) संयम और सत्य

(ङ) 'सच' और 'झूठ' में क्या अंतर है ?

(*i*) झूठ एक बार बोलना पड़ता है और सच सौ बार।

(*ii*) सच बुलबुले की तरह क्षणिक है और झूठ चिरंतर व स्थायी है।

(*iii*) झूठ बुलबुले की तरह क्षणिक हैं और सच चिरंतर व स्थायी है।

(*iv*) सच बोलने में खतरा अधिक होने पर झूठ बोलना सत्य की कहलाता है।

उत्तर : (क) (*iv*), (ख) (*ii*), (ग) (*iv*), (घ) (*ii*), (ङ) (*iii*)

5. वर्तमान समाज में नैतिक मूल्यों का विघटन चहुँ ओर दिखाई दे रहा है। विलास और भौतिकता के मद में भ्रांत लोग बेतहाशा धनोपार्जन की अंधी दौड़ में शामिल हो गए हैं। आज का मानव स्वार्थपरता में इस तरह आकंठ डूब चुका है कि उसे उचित-अनुचित, नीति-अनीति का भान नहीं हो रहा है। व्यक्ति विशेष की निज स्वार्थपूर्ति से समाज का कितना अहित हो रहा है इसका शायद किसी को आभास नहीं है। आज के अभिभावक भी धनोपार्जन एवं भौतिकता के साधन जुटाने में इतने लीन हैं कि उनके वात्सल्य का स्रोत ही उनके लाड़लों के लिए सूख गया है। उनकी इस उदासीनता ने मासूम दिलों को गहरे तक चीर दिया है। आज का बालक अपने एकाकीपन की भरपाई या तो घर में दूरदर्शन-केबिल से प्रसारित अश्लील फूहड़ कार्यक्रमों से करता है अथवा कुसंगति में पड़कर जीवन का नाश करता है। समाज के इस संक्रांति काल में छात्र किन जीवन मूल्यों को सीख पाएगा यह कहना नितान्त कठिन है।

जब-जब समाज पथभ्रष्ट हुआ है, तब-तव युग सर्जक की भूमिका का निर्वाह शिक्षकों ने बखूवी किया है। आज की दशा में भी जीवन मूल्यों की रक्षा का गुरुतर दायित्व शिक्षक पर ही आ जाता है। वर्तमान स्थिति में जीवनमूल्यों के संस्थापन का भार शिक्षकों पर पहले की अपेक्षा अधिक हो गया है क्योंकि आज का परिवार बालक के लिए सद्गुणों की पाठशाला जैसी संस्था नहीं रह गया है जहाँ से बालक एक संतुलित व्यक्तित्व की शिक्षा पा सके। शिक्षक, विद्यालय परिसर में छात्र के लिए आदर्श होता है।

प्रश्न :

1. वर्तमान समाज में क्या दिखाई दे रहा है?
   (क) नैतिक मूल्य (ख) मूल्यों का विघटन
   (ग) नैतिकता
2. लोग किस दौड़ में शामिल हो गए हैं?
   (क) धनोपार्जन की (ख) भौतिकता की
   (ग) विलासिता की
3. स्वार्थपूर्ति से क्या हो रहा है?
   (क) समाज का हित (ख) समाज का अहित
   (ग) नीति-अनीति
4. 'संक्रांति काल' क्या होता है?
   (क) संक्रमण काल (ख) परिवर्तन का दौर
   (ग) कठिनता का काल
5. जीवन मूल्यों की संस्थापना का भार किस पर आ गया है?
   (क) शिक्षकों पर (ख) समाज पर
   (ग) हम पर

उत्तर : 1. (ख), 2. (क), 3. (ख), 4. (ख), 5. (क)।

6.भारतीय दर्शन सिखाता है कि जीवन का एक आशय और लक्ष्य है, उस आशय की खोज हमारा दायित्व है और अंत में उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेंना, हमारा विशेष अधिकार है। इस प्रकार दर्शन जो कि आशय को उद्घाटित करने की कोशिश करता है और जहाँ तक उसे इसमें सफलता मिलती है, वह इस लक्ष्य तक अग्रसर होने की प्रक्रिया है। कुल मिलाकर आखिर यह लक्ष्य क्या है? इस अर्थ में यथार्थ की प्राप्ति वह है जिसमें पा लेना, केवल जानना नहीं है, वल्कि उसी का अंश हो जाना है। इस उपलब्धि में बाधा क्या है? बाधाएँ कई हैं। पर इनमें प्रमुख है–अज्ञान । अशिक्षित आत्मा नहीं है, यहाँ तक कि यथार्थ संसार भी नहीं है। यह दर्शन ही है जो उसे शिक्षित करता है और अपनी शिक्षा से उसे उस अज्ञान से मुक्ति दिलाता है, जो यथार्थ दर्शन नहीं होने देता। इस प्रकार एक दार्शनिक होना एक बौद्धिक अनुगमन करना नहीं है, बल्कि एक शक्तिप्रद अनुशासन पर चलना है, क्योंकि सत्य की खोज में लगे हुए सही दार्शनिक को अपने जीवन को इस प्रकार आचरित करना पड़ता है ताकि उस यथार्थ से एकाकार हो जाय जिसे वह खोज रहा है। वास्तव में, यही जीवन का एकमात्र सही मार्ग है और सभी दार्शनिकों को इसका पालन करना होता है, और दार्शनिक ही नही, बल्कि सभी मनुष्यों को, क्योंकि सभी मनुष्यों के दायित्व और निर्यात एक ही हैं।

1. भारतीय दर्शन किस लक्ष्य की ओर संकेत करता है ?
   (क) यथार्थ की प्राप्ति कर लेना (ख) जीवन का एक आशय और लक्ष्य है
   (ग) यथार्थ के साथ एकाकार हो जाना (घ) शिक्षित हो जाना
2. लक्ष्य प्राप्त करने में प्रमुख बाधा क्या है ?
   (क) अशिक्षित होना (ख) ज्ञान का अभाव
   (ग) यथार्थ दर्शन (घ) अनुशासन हीनता

3. जीवन का एक मात्र उद्देश्य क्या है ?
   (क) एक शक्तिप्रद अनुशासन पर चलना (ख) बौद्धिक अनुगमन करना
   (ग) शिक्षित होना (घ) अज्ञान से मुक्त होना
4. 'अनुशासन' शब्द में उपसर्ग का सही विकल्प है–
   (क) अन + शासन (ख) अ + नुशासन
   (ग) अनु + शासन (घ) अनुशा + सन
5. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है –
   (क) जीवन दर्शन (ख) दार्शनिकता
   (ग) सत्य की खोज (घ) भारतीय दर्शन

उत्तर : 1. (ग), 2. (ख), 3. (क), 4. (ग), 5. (घ)।

7. आज मानव विज्ञान के युग में श्वास ले रहा है। उसका दैनिक जीवन विज्ञान से प्रभावित है और उसने प्राकृतिक साधनों को सुख व समृद्धि के लिए प्रयुक्त करना सीख लिया है। उसने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नित नए आविष्कार किए हैं। आज विश्व के कोने-कोने में विज्ञान ने धूम मचा दी है। आविष्कारों ने मानव जीवन को भरपूर कर दिया है। लिखने के लिए सुंदर पैन से लेकर चिकने सफेद कागज तक सभी वस्तुएँ यंत्रों में ढलकर उसकी सेवा में प्रस्तुत हो जाती हैं। बटन दबाते ही कक्ष का गहन अंधकार विद्युत के प्रकाश से जगमगाने लगता है। विश्व में इसने व्यापार, चिकित्सा और यातायात सभी क्षेत्रों में अपना प्रभाव जमा रखा है। आज मानव बिना विज्ञान के जीवन-निर्वाह करने की कल्पना भी नहीं कर सकता है। सच पूछो, तो विज्ञान और मानव जीवन पर्याय बन गए हैं। इसकी कृपा से हर क्षेत्र में मानव गति तीव्र हो गई है और उसकी पहुँच दूर तक बढ़ गई है। विज्ञान ने भूखे को रोटी, गरीब को दौलत, नंगे को कपड़ा, बीमार को दवा और स्वास्थ्य, बेकार को रोजगार, अंधे को आँख, बहरे को कान, लँगड़े को टाँग और जिन्हें जो चाहिए उन्हें मुँहमाँगा वरदान दिया है।

प्रश्न :

1. मानव का जीवन किससे प्रभावित है?
   (क) युग से (ख) विज्ञान से (ग) श्वास से
2. मनुष्य ने नित नए आविष्कार क्यों किए हैं?
   (क) आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए (ख) अपना प्रभाव जमाने के लिए
   (ग) लाभ कमाने के लिए
3. बटन दबाते ही क्या हो जाता है?
   (क) सभी चीजें उपस्थित हो जाती हैं
   (ख) गहन अंधकार मिटाकर प्रकाश जगमगाने लगता है
   (ग) धमाका हो जाता है
4. किसकी कृपा से मानव गति तीव्र हो गई है?
   (क) *बुद्धि से* (ख) *शक्ति से* (ग) *विज्ञान की कृपा से*
5. विज्ञान ने लोगों को क्या दिया है?
   (क) मुँहमाँगा वरदान (ख) धन-दौलत (ग) बीमारी

उत्तर : 1. (ख), 2. (क), 3. (ख), 4. (ग), 5. (क)।

8. मैं सावन-भादों में भी वहाँ गया हूँ और मैंने इस प्रपात के यौवन के वेग को भी देखा है जो सौ-डेढ़ सौ फीट की अपनी चौड़ी धारा की प्रबल भुजाओं में धरती के चटकीले धानी आंचल में उफनते सावन को कसने के लिए व्याकुल हो जाता है और मैंने देखा है कि जब अंबर में बादलों का आलिंगन करने वाली सौदामिनी धरती के इस सौभाग्य की ईर्ष्या में तड़प उठती है तब यह प्रपात फूलकर दुगुना हो जाता है।

शरद् की चाँदनी में जब रात्रि पुलकित हो गई है और जब इस प्रपात के यौवन का मद खुमार पर आ गया है और उस खुमार में इसका सौंदर्य बढ़ गया है और तभी जाकर मैंने शरदिंदु को इस प्रपात की शांत तरल स्फटिक-धारा पर बिछलते हुए देखा है।

पहली बार जब मैं गया था तो वहाँ ठहरने के लिए कोई स्थान बना नहीं था और इसलिए खड़ी दुपहरी में चट्टानों की ओट ही छाँह मिल सकी थी। ये भूरी-भूरी चट्टानें पानी के आघात से घिस-घिसकर काफी समतल बन गई हैं और इनकी ढाल बिल्कुल खड़ी है।

एक शिला की शीतल छाया में कगार के नीचे पैर डाले मैं बड़ी देर तक बैठे-बैठे सोचता रहा कि मृत्यु के गहरे कुएँ की जगत पर पैर लटकाए भले ही कोई बैठा हो किंतु यदि उसे किसी ऐसे सौंदर्य का दर्शन मिलता रहे तो वह मृत्यु की भयावह गहराई भूल जाएगा। मृत्यु स्वयं ऐसे उन्मादी सौंदर्य के आगे हार मान लेती है।

प्रश्न :

1. लेखक ने क्या देखा है?
   (क) सावन-भादों को (ख) प्रपात को
   (ग) प्रपात के यौवन को (घ) जल-धारा को
2. आसमान में बादलों का आलिंगन कौन करता है?
   (क) बिजली (ख) अंबर
   (ग) बादल (घ) अन्य
3. 'स्फटिक' शब्द का अर्थ है :
   (क) सपाट (ख) सफेद संगमरमर
   (ग) स्फोट (घ) जल-धारा
4. मृत्यु किसके सामने हार मान लेती है?
   (क) उन्मादी सौंदर्य के आगे (ख) भयावह गहराई के आगे
   (ग) भूलने के आगे (घ) किसी के आगे नहीं
5. इस गद्यांश का कौन-सा शीर्षक सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है?
   (क) सावन-भादों (ख) प्रपात-सौंदर्य
   (ग) शरद् की चाँदनी (घ) सौंदर्य-दर्शन

उत्तर : 1. (ग), 2. (क), 3. (ख), 4. (क), 5. (ख)।

● (ख) काव्यांश ●

निर्देश : निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1.
हँस लो दो क्षण खुशी मिली गर
वरना जीवन-भर क्रंदन है।
किसका जीवन हँसी-खुशी में
इस दुनिया में रहकर बीता ?
सदा-सर्वदा संघर्षों को
इस दुनिया में किसने जीता ?
खिलता फूल म्लान हो जाता
हँसता-रोता चमन-चमन है।
कितने रोज चमकते तारे
कितने रह-रह गिर जाते हैं,
हँसता शशि भी छिप जाता है
जब-सावन घन घिर आते हैं।
उगता-ढलता रहता सूरज
जिसका साक्षी नील गगन है।
आसमान को छूने वाली,
वे ऊँची-ऊँची मीनारें।
मिट्टी में मिल जाती हैं वे
छिन जाते हैं सभी सहारे।

दूर तलक धरती की गाथा
मौन मुखर कहता कण-कण है।
यदि तुमको मुसकान मिली तो
मुसकाओ सबके संग जाकर।
यदि तुमको सामर्थ्य मिला तो
थामो सबको हाथ बढ़ाकर।
झाँको अपने मन-दर्पण में
प्रतिबिम्बित सबका आनन है। (CBSE 2008 Comptt. Outside)

प्रश्न :

1. कवि दो क्षण के लिए मिली खुशी पर हँसने के लिए क्यों कह रहा है?
2. कविता में संसार की किस वास्तविकता को प्रस्तुत किया गया है?
3. धरती का कण-कण कौन-सी गाथा सुनाता रहा है?
4. भाव स्पष्ट कीजिए :
झाँको अपने मन-दर्पण में
प्रतिबिम्बित सबका आनन है।

उत्तर :

1. कवि दो क्षण के लिए मिली खुशी पर हँसने के लिए इसलिए कह रहा है क्योंकि शेष जीवन में तो रोना-पीटना ही है। हँसी का अवसर मिलने पर उसका भरपूर लाभ उठा लेना चाहिए। समय गँवाना नहीं चाहिए।
2. कविता में संसार की इस वास्तविकता को प्रस्तुत किया गया है कि जीवन में सदा संघर्ष रहता है, दुख उठाना पड़ता है और सुख की घड़ियाँ बहुत कम समय के लिए आती हैं। प्रकृति में भी ऐसा ही होता रहता है।
3. धरती का कण-कण यह गाथा सुनाता है कि इस संसार में चमक-दमक क्षण भर की माया है। यहाँ सभी कुछ नश्वर है, कुछ देर में ही सब कुछ नष्ट हो जाता है।
4. इन पंक्तियों का भाव यह है कि हमें अपने मन के अंदर झाँककर देखना चाहिए। मन की बातें चेहरे पर झलकती हैं। मन कभी झूठ नहीं बोलता, उसकी बात को सुनने-समझने का प्रयास करो।

2. मैं चला, तुम्हें भी चलना है असिधारों पर
सर काट हथेली पर लेकर बढ़ आओ तो।
इस युग को नूतन स्वर तुमको ही देना है,
अपनी क्षमता को आज जरा अजमाओ तो।
दे रहा चुनौती समय अभी नवयुवकों को
मैं किसी तरह मंजिल तक पहले पहुँचूँगा।
इस महाशांति के लिए हवन-वेदी पर मैं
हँसते-हँसते प्राणों की बलि दे जाऊँगा।
तुम बना सकोगे भूतल का इतिहास नया,
मैं गिरे-हुए लोगों को गले लगाऊँगा।
क्यों ऊँच-नीच, कुल, जाति, रंग का भेद-भाव?
मैं रूढ़िवाद का कल्मष-महल ढहाऊँगा।
जिनका जीवन वसुधा की रक्षा हेतु बना
मर कर भी सदियों तक यों ही वे जीते हैं।
दुनिया को देते हैं यश की रसधार विमल

खुद हँसते-हँसते कालकूट को पीते हैं।
है अगर तुम्हें यह भूख 'मुझे भी जीना है।'
तो आओ मेरे साथ नींव में गड़ जाओ।
ऊपर इसके निर्मित होगा आनंद-महल
मरते-मरते भी दुनिया में कुछ कर जाओ।

(*CBSE 2008 Comptt. Outside*)

प्रश्न :

1. *कवि युग को नूतन स्वर देने के लिए किन्हें प्रेरित कर रहा है ? इसके लिए उन्हें क्या करना होगा ?*
2. *'रूढ़िवाद का कल्मष-महल' से कवि का क्या तात्पर्य है और वह उसे ढहाने की बात क्यों कर रहा है ?*
3. *'दुनिया को देते .... कालकूट को पीते हैं' – का अर्थ स्पष्ट कीजिए।*
4. *'तो आओ मेरे साथ नींव में गड़ जाओ' – इस काव्य-पंक्ति का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि किन्हें आमंत्रित कर रहा है ?*

उत्तर :

1. कवि युग को नूतन स्वर देने के लिए नवयुवकों को प्रेरित कर रहा है। इसके लिए नवयुवकों को कष्टों एवं मुसीवतों भरे रास्ते पर चलना होगा। उन्हें सर्वस्व वलिदान देने को तैयार रहना होगा।
2. 'रूढ़िवाद का कल्मष महल' से कवि का यह तात्पर्य है–रूढ़ियों से वना पापमय, दोषपूर्ण महल। इस महल में बुराइयाँ ही बुराइयाँ हैं। कवि उसे ढहाने की बात इसलिए कर रहा है क्योंकि रूढ़ियाँ हमें पतन की ओर ले जाती हैं। इन्हें जड़ से समाप्त करना ही होगा।
3. परोपकारी व्यक्तियों का जीवन दुनिया की भलाई के लिए होता है। वे दुनिया को अमृत पिलाकर स्वयं सहर्ष विषपान करते हैं अर्थात् स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों के जीवन को सुखी वनाते हैं।
4. कवि इस पंक्ति में नवयुवकों को आमंत्रित करते हुए कहता है कि यदि तुम्हें इस संसार में सदा-सदा के लिए अपना नाम अमर करना है तो समाज रूपी महल की नींव का पत्थर बनना होगा। इसी से समाज सुखी बन सकेगा। परोपकारी बनो और स्वयं का बलिदान दो।

3. मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है।
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है?
जिसके बड़े रसीले फल-कंद-नाज मेवे,
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है?
जिसमें सुगंध वाले सुंदर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है?
मैदान-गिरि-वनों में हरियालियाँ लहकतीं,
आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसके अनंत धन से धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है?
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी,
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है?
पृथ्वी-निवासियों को जिसने प्रथम जगाया,
शिक्षित किया, सुधारा, वह देश कौन-सा है?
जिसमें हुए अलौकिक तत्त्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी,
गौतम, कपिल, पतंजलि वह देश कौन-सा है?

(*CBSE 2009 Outside*)

प्रश्न :

1. कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. कवि ने एक ही प्रश्न को बार-बार क्यों पूछा है?

3. सागर और हिमालय की किस रूप में कल्पना की गई है?

4. किन पंक्तियों में कहा गया है कि भारत की सभ्यता सबसे प्राचीन है?

5. भारत की नदियों को 'सुधा की धारा' क्यों कहा गया है?

6. 'अनंत धन' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर :

1. **शीर्षक**—मेरा प्यारा देश।
2. कवि ने एक ही प्रश्न को बार-बार इसलिए पूछा है ताकि वह अपने देश के महत्त्व एवं विशेषताओं को अधिक प्रभावशाली ढंग से बता सके। बार-बार पूछकर वह इन सभी विशेषताओं वाले अपने देश का परिचय कराना चाहता है।
3. सागर को भारतमाता के चरणों को धोने वाला बताया गया है तथा हिमालय की कल्पना भारत माता के मुकुट के रूप में की गई है।
4. निम्नलिखित पंक्तियों में भारत की सभ्यता को प्राचीन बताया गया है—
   संसार का शिरोमणि वह देश कौन-सा है?
   सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी।
5. भारत की नदियों को 'सुधा की धारा' इसलिए कहा गया है क्योंकि इस देश की नदियों में बहने वाला पानी सामान्य पानी न होकर अमृत की धारा के समान जीवनदायिनी एवं पवित्र है।
6. 'अनंत धन' से कवि का आशय है—इस भारत देश की धरती के मध्य खनिज पदार्थों के रूप में अनंत धन छिपा पड़ा है। यह धरती धन-धान्य से परिपूर्ण है। यहाँ अपार खनिज संपदा भरी पड़ी है।

4. **ऐ अमरों की जननी, तुझको शत-शत बार प्रणाम**
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम !
तेरे उर में शायित गाँधी, बुद्ध, कृष्ण औ राम,
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम !
हिमगिरि-सा उन्नत तव मस्तक
तेरे चरण चूमता सागर
श्वासों में हैं वेद-ऋचाएँ
वाणी में है गीता का स्वर,
ऐ संसृति की आदि तपस्विनि, तेजस्विनि अभिराम।
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम।
हरे भरे हैं खेत सुहाने
फल-फूलों से युत वन-उपवन
तेरे अंदर भरा हुआ है
खनिजों का कितना व्यापक धन
मुक्तहस्त तू बाँट रही है सुख-संपति, धन-धाम!
प्रेम-दया का इष्ट लिए तू
सत्य-अहिंसा तेरा संयम
नई चेतना, नई स्फूर्ति-युत
तुझमें चिर-विकास का है क्रम
चिर नवीन तू जरा-मरण से मुक्त सबल उद्दाम।

एक हाथ में न्याय-पताका
ज्ञान-दीप दूसरे हाथ में
जग का रूप बदल दे, हे माँ !
कोटि-कोटि हम आज साथ में
गूँज उठे 'जय हिंद' नाद से सकल नगर औ ग्राम ।
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम॥

(CBSE 2009 Outside)

प्रश्न :

1. *प्रस्तुत कविता का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।*
2. *खेत और उपवनों की क्या विशेषता है?*
3. *न्याय और ज्ञान की बात किन पंक्तियों में कही गई है?*
4. *'कोटि-कोटि हम आज साथ में' का भाव स्पष्ट कीजिए।*
5. *कविता का मूल भाव लिखिए।*
6. *सागर और हिमालय की किस रूप में कल्पना की गई है?*
7. *कविता में गाँधी जी के किन सिद्धांतों का उल्लेख हुआ है?*

उत्तर :

1. मातृभूमि महान।
2. इस मातृभूमि के खेत हरे-भरे और सुहावने हैं। यहाँ के वन-उपवन फल-फूलों से लदे रहते हैं।
3. न्याय और ज्ञान की बात निम्नलिखित पंक्तियों में कही गई है–
   एक हाथ में न्याय-पताका
   ज्ञान-दीप दूसरे हाथ में
4. 'कोटि-कोटि हम आज साथ में' का भाव यह है कि हम करोड़ों भारतवासी एकजुट होकर भारतमाता के साथ हैं, ताकि वह इस जग के स्वरूप को बदल सके। हम सब मिलकर इस काम में सहयोग करेंगे।
5. कविता का मूल भाव यह है कि भारत भूमि अत्यंत महान एवं गरिमामयी है। यहाँ अनेक महापुरुष अवतरित हुए हैं। यह धरती प्राकृतिक सौंदर्य एवं संपदा से भरपूर है। यहाँ की संस्कृति उच्च जीवन मूल्यों पर आधारित है।
6. सागर इस भारतमाता के चरणों को चूमने वाला है और हिमालय इस मातृभूमि का उन्नत भाल है। सागर की एक सेवक के रूप में और हिमालय की उज्ज्वल मस्तक के रूप में कल्पना की गई है।
7. कविता में गाँधी जी के सत्य और अहिंसा, प्रेम और दया के सिद्धांतों का उल्लेख हुआ है।

5. जैसे नदी में
सिर्फ पानी नहीं बहता
फूल-पत्ते, लकड़ी, नावें,
दीप और
मुर्दे तक बहते हैं;
इसी तरह मन में
सिर्फ विचार नहीं रहते
सुगंध और प्रकाश
विश्वास और उदासी
सब रहते हैं एक साथ
वहाँ बहाव का आधार पानी है
यहाँ प्राण और वाणी है।
पानी कहीं थम न जाए
धारा सूखने न पाए
वाणी चूकने न पाए

तो सब ठिकाने लग जाते हैं –
फूल-पत्ते लकड़ी
नावें दीप और शरीर
सुगंध और प्रकाश
विश्वास और
इच्छाएँ अधीर।

(CBSE 2008 Comptt. Delhi

प्रश्न :

1. *कविता में नदी और मन की तुलना क्यों की गई है?*
2. *मन के संदर्भ में 'सुगंध और प्रकाश' तथा 'विश्वास' और 'उदासी' शब्दों से कवि का क्या आशय है?*
3. *'ठिंकाने लग जाना' से क्या तात्पर्य है? मन और नदी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।*
4. *भाव स्पष्ट कीजिए :*
   धारा सूखने न पाए
   वाणी चूकने न पाए।

उत्तर :

1. कविता में नदी और मन की तुलना इसलिए की गई है क्योंकि दोनों में बहुत कुछ होता है। सामान्यत: नदी में केवल पानी होना माना जाता है जबकि नदी में पानी के अलावा फूल, पत्ते, लकड़ी, दीपक तथा मुर्दे तक बहते हैं। इसी प्रकार मन में विचारों के अतिरिक्त सुगंध, प्रकाश, विश्वास एवं उदासी के भाव भी रहते हैं।
2. मन में सकारात्मक विचार भी आते हैं तथा नकारात्मक विचार भी। 'सुगंध', 'प्रकाश', 'विश्वास' सकारात्मकता के प्रतीक हैं तथा 'उदासी' नकारात्मकता का। मन में सभी प्रकार के विचार समाए होते हैं।
3. जब तक मुख्य बात अपना अस्तित्व बनाए रखती है तब तक अन्य सब ऊपरी बातें निरर्थक होकर रह जाती हैं। मुख्य बात है नदी में जल की धारा और व्यक्ति की वाणी। अन्य सब बातें स्वयं ठिकाने लग जाती हैं अर्थात् समाप्त हो जाती हैं।
4. जब तक नदी में जल धारा प्रवाहमान है तब तक नदी का अस्तित्व कायम है। इसी प्रकार वाणी का अपना महत्त्व है। व्यक्ति की पहचान उसकी वाणी से ही होती है।

6. सुख और शोक
अंधकार और आलोक
मोह और मत्सर
शांति और संघर्ष
आते-जाते बने रहें
तो आदमी को लगता है
वह जी रहा है अभी,
जब से पैदा हुआ है वह
मंशाएँ इसी तरह
उधेड़ रहा है, सी रहा है
और इसी में रमा हुआ है
कभी सुख से एक होता है.
कभी शोक से
कभी अंधकार से
कभी आलोक से
गति और दुर्गति इसीलिए

उसके पाँवों में है
और अ-गति अगर कहीं है
तो सिर्फ
उसके घावों में है
शुरू से अब तक
वे हरे हैं, जैसे के तैसे।

(CBSE 2008 Comptt. Delhi)

प्रश्न :

1. कवि ने आदमी के जीने का आधार किसको माना है?

2. पैदा होने के बाद इंसान किस उधेड़बुन में जीवित रहता है और क्यों?

3. 'गति और दुर्गति इसीलिए उसके पाँवों में है' कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

4. 'घावों के हरे होने' से कवि का क्या तात्पर्य है? वे घाव कैसे बने होंगे?

उत्तर :

1. कवि ने आदमी के जीने का आधार विरोधी भाव को माना है। उसे सुख के साथ शोक, अंधकार के साथ प्रकाश, मोह के साथ ईर्ष्या, शांति के साथ संघर्ष की स्थिति में लगता है कि वह जी रहा है।
2. पैदा होने के बाद इंसान इस उधेड़बुन में लगा रहता है कि वह शोक से सुख में जाए, अंधकार से प्रकाश में जाए, दुर्गति से गति की ओर जाए।
3. गति और दुर्गति व्यक्ति के पाँवों में बनी रहती है ताकि वह क्रियाशील बना रहे, वह जीवन जीता रहे।
4. 'घावों के हरे होने' से कवि का यह आशय है कि व्यक्ति के दुख की यादें सदा बनी रहती हैं, वे मिटाए मिटती नहीं हैं। ये घाव अ-गति से बने होंगे।

7. **वीर जवानों, सुनो, तुम्हारे सम्मुख एक सवाल है।**
जिस धरती को तुमने सींचा
अपने खून-पसीनों से,
हार गई दुश्मन की गोली
वज्र सरीखे सीनों से
जब-जब उठीं तुम्हारी बाँहें, होता वश में काल है।
जिस धरती के लिए सदा
तुमने सब कुछ कुर्बान किया,
शूली पर चढ़ चढ़ हँस-हँस कर
कालकूट का पान किया
जब-जब तुमने कदम बढ़ाया, हुई दिशाएँ लाल हैं।
उस धरती को टुकड़े-टुकड़े
करना चाह रहे दुश्मन,
बड़े गौर से अजब तुम्हारी
चुप्पी थाह रहे दुश्मन,
जाति-पाँति, वर्गों-फिरकों के, वह फैलाता जाल है।
कुछ देशों की लोलुप नज़रें
लगी तुम्हारी ओर हैं,
कुछ अपने ही जयचंदों के
मन में बैठा चोर है।
सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है।

(CBSE 2009 Delhi)

प्रश्न :

1. 'धरती' शब्द से कवि का क्या अभिप्राय है? उसके लिए वीरों ने क्या किया है?
2. 'धरती' के दुश्मन कौन हैं? वे किन रूपों में उसके टुकड़े करना चाहते हैं?
3. 'अपने ही जयचंदों' से क्या तात्पर्य है? उनके मन में कौन-सा चोर बैठा हुआ है?
4. 'सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. 'धरती' शब्द से कवि का अभिप्राय है–जन्मभूमि अर्थात् भारतमाता। इस धरती को वीरों ने खून-पसीने से सींचा अर्थात् अपना सर्वत्र समर्पित किया है।
2. धरती के दुश्मन वे लोग हैं जो इस देश की धरती को टुकड़ों में बाँट देना चाहते हैं। ये लोग हमारी खामोशी को लेने की कोशिश में लगे रहते हैं। वे जाति-पाँति, वर्गों के रूपों में देश को बाँटना चाहते हैं।
3. 'अपने ही जयचंदों' से तात्पर्य है अपने देश में छिपे देशद्रोही। उनके मन में स्वार्थ और कपट का चोर बैठा हुआ है।
4. इस पंक्ति का आशय यह है कि जो लोग कपट का आवरण पहने हुए हैं उनको सावधान करने की आवश्यकता है उनको पता लग जाना चाहिए कि हमें उनके असली रूप का पता है।

8. **ऋषि-मुनियों, साधु-सन्तों को**
नमन, उन्हें मेरा अभिनन्दन।
जिनके तप से पूत हुई है
भारत देश की स्वर्णिम माटी
जिनके श्रम से चली आ रही
युग-युग से अविरल परिपाटी।
जिनके संयम से शोभित है
जन-जन के माथे पर चंदन।
कठिन आत्म-मंथन के हित
जो असि-धारा पर चलते हैं
पर-प्रकाश हित पिघल-पिघल कर
मोम-दीप-सा जलते हैं।
जिनके उपदेशों को सुनकर
सँवर जाए जन-जन का जीवन
सत्य-अहिंसा जिनके भूषण
करुणामय है जिनकी वाणी
जिनके चरणों से है पावन
भारत की यह अमिट कहानी।
उनके ही आशीष, शुभेच्छा,
पाने को करता पद-वंदन।

(CBSE 2009 Delhi)

प्रश्न :

1. भारत के ऋषि-मुनियों ने भारत को किन-किन रूपों में स्वर्णिम बनाया है?
2. 'कठिन आत्म-मंथन के हित, जो असि धारा पर चलते हैं' काव्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. दूसरों के लिए 'मोम-दीप-सा' जलने का क्या तात्पर्य है?
4. ऋषि-मुनि किन विशेषताओं के कारण वंदनीय हैं?

उत्तर :

1. भारत के ऋषि-मुनियों ने भारत को अपने तप से पवित्र कर स्वर्णिम बनाया है। उन्हीं के श्रम से देश की परंपराएँ स्वर्णिम हुई हैं।
2. इस काव्यांश का आशय यह है कि आत्म-मंथन करने के लिए व्यक्ति को तलवार की धार पर चलना पड़ता है। अपना विश्लेषण करना अत्यन्त कठिन काम है।

3. दूसरों के लिए 'मोम-द्वीप-सा' जलने का तात्पर्य यह है कि परोपकार के लिए स्वयं को मोम के दीपक के समान जलाना पड़ता है अर्थात् बड़े कष्ट झेलने पड़ते हैं।
4. ऋषि-मुनि अपने परोपकार, सत्य अहिंसा, करुणामयी वाणी, दूसरों को आशीर्वाद तथा शुभेच्छा रखने जैसी विशेषताओं के कारण वंदनीय हैं।

9.

गति प्रवल पैरों में भरी,
फिर क्यों रहूँ दर-दर खड़ा।
जब आज मेरे सामने-
है, रास्ता इतना पड़ा!
जब तक न मंजिल पा सकूँ, तव तक मुझे न विराम है।
चलना हमारा काम है, राही हमारा नाम है॥
इस विशद विश्व-प्रवाह में,
किसको नहीं बहना पड़ा!
सुख-दुःख हमारी ही तरह,
किसको नहीं सहना पड़ा!
फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ, मुझ पर विधाता वाम है।
चलना हमारा काम है, राही हमारा नाम है॥
मैं पूर्णता की खोज में,
दर-दर भटकता ही रहा।
पर क्यों निराशा है मुझे, जीवन इसी का नाम है।
राही हमारा नाम है, चलना हमारा काम है॥

(CBSE 2008 Foreign)

प्रश्न :

1. कवि के पास ऐसा क्या-कुछ है, जिससे उसके लिए रास्ते पर आगे ही आगे वढ़ना आवश्यक हो गया है?
2. वह कब तक विश्राम लेना नहीं चाहता और क्यों?
3. 'मुझ पर विधाता वाम है' कहना कवि को व्यर्थ क्यों लगता है?
4. क्या पा लेने के लिए कवि दर-दर भटकता फिर रहा है?
5. 'राही' नाम होने से कवि ने चलना आवश्यक क्यों माना है?

उत्तर :

1. कवि के पैरों में गति है और उसके सामने रास्ता पड़ा हुआ है। इसी कारण उसके लिए रास्ते पर आगे वढ़ना आवश्यक हो गया है।
2. वह तब तक विश्राम नहीं लेना चाहता जब तक वह अपनी मंजिल को न पा ले अर्थात् लक्ष्य की प्राप्ति न कर ले क्योंकि तभी उसका ध्येय पूरा होगा।
3. कवि इस बात को कहना नहीं चाहता कि विधाता उस पर वाम है अर्थात् उसका भाग्य खराव है। इस संसार में सभी को सुख-दुःख झेलने ही पड़ते हैं अतः वह भी झेल लेगा। इसमें ईश्वर को दोष देना व्यर्थ है।
4. कवि पूर्णता की खोज में दर-दर भटकता फिर रहा है।
5. 'राही' उसे कहते हैं जो राह पर चलता है। जब कवि का नाम ही राही है तव तो उसके लिए चलना और भी आवश्यक हो जाता है।

10.

दो में से क्या तुम्हें चाहिए, कलम या कि तलवार ?
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति अजेय अपार!
कलम देश की बड़ी शक्ति है, भाव जगाने वाली,
दिल ही नहीं, दिमागों में भी आग लगाने वाली।
पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,

और प्रज्वलित-प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे ?
लहू गर्म रखने को रक्खो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किंतु तलवार!

एक भेद है और जहाँ निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिनगारी।
जहाँ मनुष्यों के भीतर, हर दम जलते हैं शोले,
बाँहों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।
जहाँ लोग पालते लहू में हालाहल की धार,
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार। (*CBSE 2008 Forei*

प्रश्न :

1. *उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में 'कलम' और 'तलवार' का प्रयोग मनुष्य की किन शक्तियों के लिए हुआ है?*
2. *आप कलम को अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण समझते हैं अथवा तलवार को और क्यों?*
3. *व्यक्ति और देश के जीवन में कलम से क्या-क्या परिवर्तन हो सकते हैं?*
4. *कवि के अनुसार व्यक्ति और देश को तलवार की आवश्यकता कब पड़ती है?*
5. *कवि के अनुसार क्या-कुछ पा लेने के बाद शस्त्र-बल की आवश्यकता नहीं रह जाती?*

उत्तर :

1. उपर्युक्त पंक्तियों में 'कलम' लेखनी शक्ति का प्रतीक है और 'तलवार' हिंसा से बचाव के हथियार की प्रतीक है। क का प्रयोग दिल-दिमाग में भावों की आग लगाने के लिए होता है तो तलवार का प्रयोग हिंसक जीवों से बचने के होता है।
2. हम 'कलम' को अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण मानते हैं। यह तलवार की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। 'क व्यक्ति में ऐसा उत्साह पैदा कर देती है कि वह देश के लिए मर-मिटता है। 'कलम' आग उगलती है। भावों-वि के बिना तलवार भी नहीं चलती।
3. व्यक्ति के जीवन में 'कलम' उत्साह का संचार करती है, उसकी बाँहों में बिजली भरती है। देश के जीवन में परिवर्तन होता है कि वह देश कभी गुलाम नहीं बन सकता, कभी मर नहीं सकता।
4. व्यक्ति को तलवार की आवश्यकता तब पड़ती है जब कोई हिंस्र जीव उस पर हमला कर दे और देश को तलवार आवश्यकता तब पड़ती है जब कोई शत्रु उस पर हमला कर दे।
5. कवि के अनुसार जब देशवासियों में निर्भयता की भावना आ जाती है, उसमें उत्साह का संचार होता है। लहू में होता है तब शस्त्र-बल की आवश्यकता नहीं रह जाती।

11. माटी, तुझे प्रणाम !
मेरे पुण्यदेश की माटी, तू कितनी अभिराम !
तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर,
क्षण-भर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर,
सुख-स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुनः संचार –
लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम !
माटी, तुझे प्रणाम !
तुझसे बिछुड़ मिला प्राणों को कभी न पल-भर चैन,
तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन,
धन्य हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व–
हुई साधना सफल, भक्त को प्राप्त हो गए राम !
माटी, तुझे प्रणाम !

अमर मृत्तिके ! लगती तू पारस से बढ़ कर आज,
कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझ को छू कर आज,
मरणशील हम, किंतु अमर तू, है अमर्त्य यह धाम-
हम मर-मर कर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम !

(*CBSE 2009 Outside*)

प्रश्न :

1. कवि किसे प्रणाम कर रहा है? उसे 'पुण्य देश की' क्यों कहा है?

2. मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद कैसी अनुभूति होती है?

3. माटी से बिछुड़ने तथा मिलने पर कवि को कैसा अनुभव हुआ?

4. 'अमर मृत्तिके ! लगती तू पारस से बढ़कर आज'– इस पंक्ति में किस भाव को व्यक्त किया गया है?

उत्तर :

1. कवि अपने देश की मिट्टी को प्रणाम कर रहा है। इसे पुण्य देश की माटी इसलिए कहा गया है क्योंकि इस देश की मिट्टी में अनेक पुण्य आत्माओं ने जन्म लिया है। यह अत्यंत पवित्र है।
2. मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद अत्यंत सुखद अनुभूति होती है। इसका स्पर्श करके सारे कष्ट दूर हो जाते हैं, मन के संताप मिट जाते हैं और शरीर में उत्साह का संचार होने लगता है।
3. माटी से बिछुड़ने पर कवि को कभी भी पलभर के लिए भी चैन नहीं मिला। वह इसके दर्शनों के लिए तरसता रहा। इसके मिलने पर कवि स्वयं को धन्य समझने लगा। मानो उसकी साधना सफल हो गई हो।
4. मिट्टी को अमर माना है। इसका स्पर्श पारस पत्थर के समान है जो हमारे अवगुणों को दूर कर पवित्र बना देता है। इसमें कवि ने मिट्टी की शाश्वतता के भाव को व्यक्त किया है।

12. मन दीपक निष्कम्प जलो रे!

सागर की उत्ताल तरंगें,
आसमान को छू-छू जाएँ
डोल उठे डगमग भूमंडल
अग्निमुखी ज्वाला बरसाए
धूमकेतु बिजली की द्युति से,
धरती का अन्तर हिल जाए
फिर भी तुम जहरीले फन को
कालजयी बन उसे दलो रे।
कदम-कदम पर पत्थर, काँटे
पैरों को छलनी कर जाएँ
श्रांत-क्लांत करने को आतुर
क्षण-क्षण में जग की बाधाएँ
मरण-गीत आकर गा जाएँ
दिवस-रात आपद-विपदाएँ
फिर भी तुम हिमपात-तपन में
बिना आह चुपचाप चलो रे।
कालकूट जितना हो पी लो
दर्द, दंश दाहों को जी लो
जीवन की जर्जर चादर को
अटल नेह साहस से सी लो
आज रात है तो कल निश्चय
अरुण हँसेगा, खुशियाँ ले लो
आकुल पाषाणी अंतर से

निर्झर-सा अविराम ढलो रे !
जन-हिताय दिन-रात गलो रे !

(CBSE 2009 Outside)

प्रश्न :

1. कवि ने किन बाधाओं को जहरीले फन के रूप में कल्पित किया है? वह किनको कालजयी बनकर कुचलने के लिए कह रहा है?

2. 'हिमपात-तपन' से कवि का क्या अभिप्राय है? वह जीवन की किन रुकावटों की परवाह किए बिना आगे चलने के लिए कह रहा है?

3. जीवन में अटल नेह और साहस की क्या आवश्यकता है?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :
निर्झर-सा अविराम ढलो रे !
जन-हिताय दिन-रात गलो रे !

उत्तर :

1. कवि ने विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक बाधाओं को जहरीले फन के रूप में कल्पित किया है। वह लोगों को कालजयी बनकर इन बाधाओं को कुचलने के लिए कह रहा है।
2. 'हिमपात-तपन' से कवि का अभिप्राय है–सर्दी-गर्मी की भयंकर मार। वह जीवन में कदम-कदम पर आने वाली बाधाओं की परवाह किए बिना आगे चलने के लिए कह रहा है। ये बाधाएँ तो आती रहती हैं, इनसे घबराना नहीं चाहिए।
3. जीवन में अटल नेह और साहस बनाए रखकर ही जीवन की बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यह साहस ही हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।
4. इसका आशय यह है कि हमारा जीवन झरने के समान निरंतर प्रवाहमान रहना चाहिए। हमें परोपकार के लिए अपने जीवन को पूरी तरह समर्पित कर देना चाहिए। इसी में जीवन की सार्थकता है।

13. **जिसमें स्वदेश का मान भरा**
आजादी का अभिमान भरा
जो निर्भय पथ पर बढ़ आए
जो महाप्रलय में मुस्काए
जो अंतिम दम तक रहे डटे
दे दिए प्राण, पर नहीं हटे
जो देश-राष्ट्र की वेदी पर
देकर मस्तक हो गए अमर
ये रक्त-तिलक-भारत-ललाट!
उनको मेरा पहला प्रणाम !

फिर वे जो आँधी बन भीषण
कर रहे आज दुश्मन से रण
बाणों के पवि-संधान बने
जो ज्वालामुख-हिमवान बने
हैं टूट रहे रिपु के गढ़ पर
बाधाओं के पर्वत चढ़कर
जो न्याय-नीति को अर्पित हैं
भारत के लिए समर्पित हैं
कीर्तित जिससे यह धरा धाम
उन वीरों को मेरा प्रणाम ।

श्रद्धानत कवि का नमस्कार
दुर्लभ है छंद-प्रसून हार
इसको बस वे ही पाते हैं

जो चढ़े काल पर आते हैं
हुंकृति से विश्व कँपाते हैं
पर्वत का दिल दहलाते हैं
रण में त्रिपुरांतक बने शर्व
कर ले जो रिपु का गर्व खर्व
जो अग्नि-पुत्र, त्यागी, अकाम
उनको अर्पित मेरा प्रणाम!

(*CBSE 2009 Delhi*)

प्रश्न :

1. कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. कवि ने भारत के माथे का लाल चंदन किन्हें कहा है?

3. प्रणाम के योग्य वीरों की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

4. कवि की श्रद्धा किन वीरों के प्रति है?

5. कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

6. 'अग्निपुत्र, त्यागी, अकाम' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. **शीर्षक**—देशभक्तों को प्रणाम।
2. कवि ने भारत के माथे का लाल चंदन शहीदों के रक्त को कहा है। ये शहीद ही भारत के माथे का लाल चंदन हैं। इन्होंने अपना अमर बलिदान देकर भारत का मस्तक ऊँचा किया है।
3. प्रणाम के योग्य वीरों की ये विशेषताएँ बताई गई हैं–

- इन्होंने राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति चढ़ा दी।
- वे दुश्मन पर आँधी बनकर टूट पड़े।
- वे विघ्न-बाधाओं रूपी पर्वत पर चढ़ जाते हैं।
- वे भारत के प्रति पूर्णतः समर्पित रहे।

4. कवि की श्रद्धा उन वीरों के प्रति है जिन्होंने काल की परवाह न करके अपनी हुँकार से विश्व को हिलाकर रख दिया। उन्होंने शत्रु के गर्व को चकनाचूर कर दिया।
5. कविता का मूल भाव उन अनगिंनत, गुमनाम देशभक्तों का गुणगान करना है जो स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़ गए।
6. 'अग्निपुत्र, त्यागी, अकाम' कथन का आशय यह है कि साहसी और परोपकारी व्यक्ति ही देश और समाज का भला करते हैं। ऐसे लोग वंदनीय हैं।

14.

नवीन कंठ दो कि मैं नवीन गान गा सकूँ,
स्वतंत्र देश की नवीन आरती सजा सकूँ!
नवीन दृष्टि का नया विधान आज हो रहा,
नवीन आसमान में विहान आज हो रहा,
खुली दसों दिशा खुले कपाट ज्योति-द्वार के-
विमुक्त राष्ट्र-सूर्य भासमान आज हो रहा।

युगांत की व्यथा लिए अतीत आज रो रहा,
दिगंत में वसंत का भविष्य बीज बो रहा,
सुदीर्घ क्रांति झेल, खेल की ज्वलंत आग से -
स्वदेश बल सँजो रहा, कड़ी थकान खो रहा।
प्रबुद्ध राष्ट्र की नवीन वंदना सुना सकूँ,
नवीन बीन दो कि मैं अगीत गान गा सकूँ!

नए समाज के लिए नवीन नींव पड़ चुकी,
नए मकान के लिए नवीन ईंट गढ़ चुकी,

सभी कुटुम्ब एक, कौन पास, कौन दूर है–
नए समाज का हरेक व्यक्ति एक नूर है।
कुलीन जो उसे नहीं गुमान या गरूर है
समर्थ शक्तिपूर्ण जो किसान या मजूर है।

भविष्य-द्वार मुक्त से स्वतंत्र भाव से चलो,
मनुष्य बन मनुष्य से गले मिले चले चलो।
समान भाव के प्रकाशवान सूर्य के तले -
समान रूप-गंध फूल-फूल-से खिले चलो ।

पुरान पंथ में खड़े विरोध वैर भाव के
त्रिशूल को दले चलो, बबूल को मले चलो।
प्रवेश-पर्व है स्वदेश का नवीन वेश में
मनुष्य बन मनुष्य से गले मिलो चले चलो।
नवीन भाव दो कि मैं नवीन गान गा सकूँ,
नवीन देश की नवीन अर्चना सुना सकूँ ! (*CBSE 2009 Delhi*)

प्रश्न :

1. *कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।*
2. *प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने किन नवीनताओं की चर्चा की है?*
3. *राष्ट्र को प्रबुद्ध क्यों कहा गया है?*
4. *मनुष्य के लिए कवि की क्या सलाह है?*
5. *'नए समाज का हरेक व्यक्ति एक नूर है'–का भाव स्पष्ट कीजिए।*
6. *किसान, मजदूर और कुलीन व्यक्तियों की विशेषता किन पंक्तियों में बताई गई है?*
7. *कवि कैसी नवीनता की कामना कर रहा है?*

उत्तर :

1. **शीर्षक** –नवीन राष्ट्र का उदय।
2. प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने नवीन कंठ से नवीन गान, नवीन विधान, नवीन दृष्टि तथा नवीन आसमान की चर्चा की है।
3. राष्ट्र को प्रबुद्ध इसलिए कहा गया है क्योंकि यहाँ के नागरिक बहुत बुद्धिमान हैं। यह जागरूक राष्ट्र है।
4. मनुष्य के लिए कवि की यह सलाह है कि नए समाज की नींव तो पड़ चुकी है, अब बस नवनिर्माण करना है। सभी लोगों को एक समान मानो। कभी अपनी कुलीनता पर घमंड मत करो। आपसी बैर-विरोध को मत पालो।
5. 'नए समाज का हरेक व्यक्ति एक नूर है' पंक्ति का भाव यह है कि नए समाज में प्रत्येक व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई विशेषता अवश्य होती है।
6. किसान, मजदूर और कुलीन व्यक्तियों की विशेषता निम्नलिखित पंक्तियों में बताई गई है–
   कुलीन जो उसे नहीं गुमान या गरूर है।
   समर्थ शक्तिपूर्ण जो किसान या मजूर है।
7. कवि ऐसी नवीनता चाहता है जिससे उसमें नवीन भावों का उदय हो सके ताकि वह गान गा सके। वह नवीन देश की नवीन अर्चना सुनाना चाहता है।

15. सामने कुहरा घना है
और मैं सूरज नहीं हूँ
क्या इसी अहसास में जिऊँ
या जैसा भी हूँ नन्हा-सा
एक दिया तो हूँ
क्यों न उसी की उजास में जिऊँ ?

हर आने वाला क्षण
मुझे यही कहता है–
अरे भई, सूरज तो नहीं हो तुम
और मैं कहता हूँ–
न सही सूरज
एक नन्हा दिया तो हूँ
जितनी भी है लौ मुझ में
उसे लेकर जिया तो हूँ।
कम-से-कम मैं उनमें तो नहीं
जो चाँद दिल के बुझाए बैठे हैं
रात को अमावस बनाए बैठे हैं
उड़ते फिर रहे थे जो जुगनू आँगन में
उन्हें भी मुर्गियों में दबाए बैठे हैं।

(*CBSE 2008 Comptt. Delhi*)

प्रश्न :

1. *'सामने कुहरा घना है और मैं सूरज नहीं हूँ'–कथन में कुहरा और सूरज किसके प्रतीक हैं? स्पष्ट कीजिए।*
2. *'जैसा भी हूँ नन्हा-सा एक दिया तो हूँ' कथन में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।*
3. *'यह कविता आशावादी है।' सिद्ध कीजिए।*
4. *सारी सुविधाओं को अपने वश में किए बैठे लोगों को कवि ने किन रूपों में चित्रित किया है?*

उत्तर :

1. इस कथन में 'कुहरा' अंधकार एवं निराशा का प्रतीक है और 'सूरज' ज्ञान, रोशनी तथा आशा का प्रतीक है।
2. इस कथन का भाव यह है कि मैं भले ही सूरज जैसी रोशनी देने वाला नहीं हूँ पर एक नन्हे दिये की तरह आशा की एक किरण तो अवश्य हूँ। उसी के सहारे प्रकाश की ओर बढ़ने का साहस किया जा सकता है।
3. हाँ, यह कविता आशावादी है। इस कविता में नन्हे दिये को आशा की किरण का प्रतीक माना गया है। कवि की मान्यता है कि चारों ओर फैले अंधकार अर्थात् निराशा को चीरने के लिए आशा की एक किरण ही काफी है। इसी के सहारे आगे बढ़ा जा सकता है।
4. सारी सुविधाओं को अपने वश में किए बैठे लोगों को कवि ने निराशावादी के रूप में चित्रित किया है। उनके दिल बुझे हुए हैं। वे रात को अमावस बनाए बैठे रहते हैं। उनके दिल में अंधकार भरा है। यह अंधकार निराशा का प्रतीक है।

16.

यह समर तो और भी अपवाद है
चाहता कोई नहीं इसको, मगर
जूझना पड़ता सभी को, शत्रु जब
आ गया हो द्वार पर ललकारता।
हीनता हो स्वत्व कोई, और तू
त्याग-तप से काम ले, यह पाप है।
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।
युद्ध को तुम निंद्य कहते हो मगर
जब तलक हैं उठ रहीं चिनगारियाँ
भिन्न स्वार्थों के कुलिश संघर्ष की,
युद्ध तब तक विश्व में अनिवार्य है।
और जो अनिवार्य है, उसके लिए
खिन्न या परितप्त होना व्यर्थ है।

(*CBSE 2008 Comptt. Delhi*)

प्रश्न :

1. जिस युद्ध को कोई न चाहता हो उसी में जूझना विवशता क्यों बन जाता है?

2. किसे पाप कहा गया है और क्यों?

3. युद्ध निंदनीय होते हुए भी अनिवार्य क्यों हो जाता है?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।

उत्तर :

1. जिस युद्ध को कोई न चाहता हो, उसी से जूझना तब मजबूरी बन जाता है जब शत्रु दरवाजे पर आकर ललकारने लगता है। तब उसका जवाब देना ही पड़ता है।
2. यदि कोई हमारी आजादी को छीनता है और हम चुप बैठे रहते हैं, उसे कुछ नहीं कहते तथा त्याग और तप से काम लेते हैं, तो इसे पाप कहा गया है क्योंकि यह कायरता होती है।
3. युद्ध यद्यपि निंदनीय होता है, पर जब बात आत्म-सम्मान पर बन आती है तब यह अनिवार्य हो जाता है। स्वार्थ के कुलिश संघर्ष को मिटाने के लिए भी युद्ध अनिवार्य हो जाता है।
4. इन पंक्तियों का आशय यह है कि यदि कोई व्यक्ति आपके सम्मान को चोट पहुँचाने के लिए आगे बढ़ता है तो उस हाथ को काट देना ही पुण्य का काम है। आत्मसम्मान की रक्षा सर्वोपरि है।

17.

जब तक साथ एक भी दम हो,
हो अवशिष्ट एक भी धड़कन।
रखो आत्म-गौरव से ऊँची
पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन।
एक बूँद भी रक्त शेष हो,
जब तक तन में है शत्रुंजय।
दीन वचन मुख से न उचारो,
मानो नहीं मृत्यु का भी भय।

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नवजीवन-संबल।
मृत्यु एक सरिता है जिसमें,
श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है,
काया-रूपी वस्त्र बहा कर।

(CBSE 2008 Comptt. Outside

प्रश्न :

1. कवि मृत्यु का स्वागत करने को क्यों कहता है?

2. इस काव्यांश में किस प्रकार का जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है?

3. मृत्यु को सरिता क्यों कहा गया है?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

दीन वचन मुख से न उचारो।

उत्तर :

1. कवि मृत्यु का स्वागत करने के लिए इसलिए कहता है क्योंकि यह डरने की वस्तु न होकर, एक विश्राम-स्थल के समान है। यहाँ आराम लेकर जीवन फिर चल पड़ता है!
2. इस काव्यांश में आत्म-गौरव बनाकर जीने के लिए कहा गया है। जब तक शरीर में एक बूँद भी रक्त शेष है, तब तक स्वाभिमान के साथ जीने की प्रेरणा दी गई है।
3. मृत्यु को सरिता (नदी) इसलिए कहा गया है क्योंकि जिस तरह नदी में नहाकर मनुष्य नए वस्त्र धारण करता है, उसी तरह मृत्यु के बाद भी व्यक्ति पुराने शरीर रूपी वस्त्र को छोड़कर नए शरीर रूपी वस्त्र को धारण करता है।
4. जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक व्यक्ति को अपने मुख से दीनता प्रकट करने वाले वचन नहीं उचारने (बोलने) चाहिए। हमें किसी की दया का पात्र नहीं बनना चाहिए।

18. **रणबीच चौकड़ी भर-भर कर,**
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।
गिरता न कभी चेतक-तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
या आसमान पर घोड़ा था।
जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।
कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में।
है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, अब वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं।

(CBSE 2008 Comptt. Outside)

प्रश्न :

1. *चेतक के शरीर पर चाबुक क्यों नहीं पड़ता था?*
2. *चेतक युद्ध के मैदान में क्या-क्या कौशल दिखाता था?*
3. *किन पंक्तियों का आशय है कि चेतक बड़े वेग से सारी युद्धभूमि को रौंद रहा था?*
4. *चेतक से हवा का पाला पड़ा—ऐसा क्यों कहा गया है?*

उत्तर :

1. चाबुक का प्रयोग तब किया जाता है जब घोड़ा तेज न भागता हो। चेतक तो बिना चाबुक के ही रणभूमि में तेजी के साथ दौड़ता था अतः उसके शरीर पर चाबुक पड़ने की नौबत ही नहीं आती थी।
2. चेतक युद्ध के मैदान में शत्रुओं के मस्तक पर दौड़ लगाता था, भालों के बीच घुस जाता था। वह अपने सवार को लेकर उड़ जाता था। वह सरपट दौड़ता था।

3. इन पंक्तियों से पता चलता है :

है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, अब वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि–मस्तक पर कहाँ नहीं।

4. हवा बड़ी तेजी से चलती है और वह दिखाई भी नहीं देती। इसी प्रकार चेतक की चाल भी बहुत तेज थी। वह एक जगह टिककर नहीं रहता था, कभी यहाँ तो कभी वहाँ। ऐसा लगता था कि उसका हवा से पाला पड़ गया है।

19.

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी इक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।
देव, मेरे भाग्य में है क्या बदा।
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
जल उठूँगी गिर अँगारे पर किसी,
चू पडूँगी या कमल के फूल में।
बह उठी उस काल इक ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का था मुँह खुला,
वह उसी में जा गिरी, मोती बनी।
लोग अकसर हैं झिझकते-सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर का छोड़ना अकसर उन्हें,
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।

(CBSE Sample Paper-2)

प्रश्न :

1. बूँद द्वारा कहा गया 'आह' शब्द किस भाव को व्यक्त करता है और क्यों?
2. बूँद की चिंता का विषय क्या है?
3. कविता में बूँद के साथ किन लोगों की समानता दिखाई गई है?
4. उपर्युक्त काव्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
5. 'वह समंदर ओर आई अनमनी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. बूँद द्वारा कहा गया 'आह' शब्द शोक (अफसोस) भाव को व्यक्त करता है, क्योंकि घर से निकलने के बाद अस्तित्व का संकट हो सकता है।
2. बूँद की चिंता का विषय है – भविष्य। वह सोच रही है कि वह बचेगी या नहीं। कहीं अस्तित्वहीन होकर विलीन तो न हो जाएगी।
3. कविता में बूँद के साथ ऐसे लोगों की समानता दिखाई गई है जो अपना घर छोड़कर किसी कारणवश अन्यत्र जाते हैं। उन्हें भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष एवं संकट की चिंता होती है।
4. **शीर्षक :** 'एक बूँद'।
5. न चाहते हुए भी परिस्थिति-जन्य समझौता करना। किसी काम को बेमन से करना।

20. विषुवत रेखा का वासी जो,
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक
वह भी अपनी मातृभूमि पर।
ध्रुववासी जो हिम में, तम में
जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृभूमि पर
कर देता है प्राण-निछावर।
तुम तो हे प्रिय बंधु! स्वर्ग-सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर
धरा शिरोमणि मातृभूमि में,
धन्य हुए हो जीवन पाकर।

(CBSE Sample Paper-2)

प्रश्न :

1. भारतवासी का जीवन धन्य क्यों है?

2. ध्रुवीय क्षेत्र में रहने वालों के जीवन में क्या-क्या कठिनाइयाँ हैं?

3. विषुवत रेखा का वासी हाँफ-हाँफ कर क्यों जीता है?

4. उपर्युक्त काव्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

5. 'धरा-शिरोमणि मातृभूमि' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. भारतवासी का जीवन इसलिए धन्य है, क्योंकि भारत भूमि स्वर्ग-सी, सुखद, सभी प्रकार के धन-वैभव से पूर्ण, प्राकृतिक विविधता के कारण सर्वोत्तम देश है।
2. ध्रुवीय क्षेत्र में रहने वालों के जीवन में अत्यधिक सर्दी एवं अंधकार, हर प्रकार की सुख-सुविधा का अभाव आदि कठिनाइयाँ हैं।
3. विषुवतीय क्षेत्रों में सूर्य की सीधी किरणें पड़ती हैं जिसके कारण अत्यधिक गर्मी पड़ती है। फलतः गर्मी के कारण विषुवत रेखा के वासी हाँफ-हाँफ कर जीते हैं।
4. **शीर्षक** : मातृभूमि।
5. इसका आशय है—भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है। यह धरती का शिरोमणि देश है।

21. कुछ भी बन, बस, कायर मत बन ।
ठोकर मार, पटक मत माथा, तेरी राह रोकते पाहन ।
कुछ भी बन, बस, कायर मत बन ।
ले-दे कर जीना क्या जीना, कब तक गम के आँसू पीना
मानवता ने सींचा तुझको, बहा युगों तक खून पसीना ।
कुछ न करेगा ? किया करेगा – रे मनुष्य, बस कातर क्रंदन ?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन ।
'युद्धम् देहि' कहे जब पामर, दे न दुहाई पीठ फेर कर
या तो जीत प्रीत के बल पर या तेरा पग चूमे तस्कर
प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है पर कायरता अधिक अपावन ।
कुछ भी बन, बस कायर मत बन ।

(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)

प्रश्न–

(i) 'ले-देकर जीना क़्या जीना' से क्या अभिप्राय है ?

(ii) कवि ने कायरता को अपावन क्यों कहा है ?

(iii) राह में रुकावटें आने पर कवि क्या सलाह देता है ?

(iv) 'प्रतिहिंसा' से क्या तात्पर्य है ?

(v) आशय स्पष्ट कीजिए – मानवता ने सींचा तुझको, बहा युगों तक खून पसीना ।

उत्तर–

(i) 'ले-देकर जीना क्या जीना' से अभिप्राय है - समझौता करके जीवन बिताना। इस प्रकार का जीवन व्यर्थ होता है।

(ii) कायरता 'अपावन' अर्थात् अपवित्र है। यह एक अवगुण है। इसे अपनाना घातक होता है। इसमें भय का भाव समाया रहता है।

(iii) राह में रुकावटें आने पर कवि यह सलाह देता है कि उनको ठोकर मारो, उनके सामने माथा मत पटको अर्थात् रुकावटों का दृढ़ता के साथ सामना करो ।

(iv) 'प्रतिहिंसा' से तात्पर्य है–हिंसा के बदले में हिंसा करना । यह ठीक नहीं है।

(v) एक मनुष्य को सही मानव बनाने में बहुत लंबा समय लगता है। इसमें समाज को अपना खून-पसीना बहाना पड़ता है।

22. **जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं।**
धुन है एक-न-एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन भर आतप यह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।
जिस पंर गिरकर उदर-दरी से तुमने जन्म लिया है,
जिसका खाकर अन्न सुधासम नीर समीर पिया है ।
वही स्नेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य मही है।
उसके प्रति कर्त्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है ?
पैदा कर जिस देश-जाति ने तुमको पाला-पोसा,
किए हुए है वह निज हित का तुमसे बड़ा भरोसा
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्त्तव्य तुम्हारा,
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा ।

प्रश्न–

(i) स्वकर्म में पत्ते की तत्परता को कैसे सराहा गया है ?

(ii) 'स्नेह की मूर्ति' किसे कहा गया है, और क्यों ?

(iii) कौन, क़िससे निज हित की अपेक्षा रखता है ? और वह कैसे पूरी की जा सकती है ?.

(iv) आशय स्पष्ट कीजिए – धुन है एक-न-एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं ।

उत्तर–

(i) स्वकर्म में पत्ते की तत्परंता को इस प्रकार सराहा गया है कि वह जीवन भर धूप-गर्मी सहकर भी धरती पर छाया प्रदान करता है।

(ii) 'स्नेह की मूर्ति' धरती माता को कहा गया है। वह अपने ऊपर रहने वालों को संतान की भाँति प्रेम-स्नेह करती है। वह उनका पालन-पोषण करती है।

(iii) देश अपने नागरिकों से अपने हित की अपेक्षा करता है। नागरिक अपना शेष जीवन प्रदान कर इस अपेक्षा को पूरा कर सकते हैं।

(iv) इस संसार में सभी प्राणियों एवं प्रकृति के उपादानों को एक न एक धुन है और उनके अपने-अपने व्रत हैं। इनके पालन में वे लगे रहते हैं ।

23.

दो में से क्या तुम्हें चाहिए, कलम या कि तलवार ?
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति अजेय, अपार ?
अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे, मीठे गान ?
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर जा मैदान ?
जला ज्ञान का दीप सिर्फ फैलाओगे उजियाली ?
अथवा उठा कृपाण करोगे घर की भी रखवाली ?
कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगानेवाली,
दिल ही नहीं, दिमागों में भी आग लगानेवाली
पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे
और प्रज्वलित-प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे ?
लहू गर्म रखने को रक्खो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किंतु तलवार ।
एक भेद है और जहाँ निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिनगारी।
जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बाँहों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले ।
जहाँ लोग पालते लहू में हालाहल की धार,
क्या चिन्ता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार ? *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

प्रश्न–

(i) कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।
(ii) 'कलम' और 'तलवार' किनके प्रतीक हैं और उनका क्या उपयोग है?
(iii) कवि कलम को देश की बड़ी शक्ति क्यों मानता है ? दो कारण लिखिए ।
(iv) उन दो स्थितियों का वर्णन कीजिए जहाँ पर तलवार न होने पर भी हमें चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं होगी ।
(v) आप तलवार और कलम में से किसे श्रेष्ठ मानते हैं और क्यों ?

उत्तर–

(i) **शीर्षक**–कलम और तलवार
(ii) **कलम**–विचारों को लिखने की शक्ति है।
तलवार–शारीरिक शक्ति को प्रदर्शित करती है।
(iii) कलम की शक्ति को कवि इसलिए बड़ी मानता है
(क) यह मन में भाव जगाती है। (ख) क़लम लोगों में उत्साह पैदा करती है।
(iv) **दो स्थितियाँ**–
(क) जहाँ के लोग निर्भय हों।
(ख) जहाँ कलम लोगों के हृदय में आग उगलती हो ।
(v) हम कलम को श्रेष्ठ मानते हैं। कलम जब व्यक्ति को उत्साहित करती है तभी व्यक्ति तलवार भी उठा पाता है। तलवार उठाने की प्रेरणा भी कलम ही देती है।

24.

डरो नहीं मेरे बच्चे !
सारे सपने डराऊ नहीं होते
न अँधेरे में ही इतना दम
कि तुम्हारी मासूम दुनिया को

तुमसे छिपा कर रख सके ।
सवेरा होते ही
फिर ठंडी हवा में तैरने लगेगी
ताजा फूलों की गंध
फिर आबाद हो उठेंगी गलियाँ
चौक में उभरेगा उन्हीं साथियों का शोर
सूरज की पहली किरण के साथ
फिर फूटेंगे खुशी के फव्वारे !
तुम्हारी नन्हीं आँखों के सामने
घूमता ये दुनिया का गोल नक्शा
तुम्हारी इच्छाओं से बहुत छोटा है।
दुनिया को अगर तुमने
गेंद की तरह समझा और खेलना चाहा है
तो इसमें डरने की कोई बात नहीं ;
बस इतना भी ख्याल रहे–
गेंद की हिफाजत करना
तुम्हारा अपना जिम्मा है !
वक्त कभी ठहरता नहीं है मेरे बच्चे !
न करता है किसी के लिए इन्तजार,
वह निरंतर चलता रहता है
हमारी साँस की तरह –
आग, पानी और हवा से
हमारी पहचान कराता हुआ।

(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi

प्रश्न–

(i) कविता का उचित शीर्षक दीजिए ।

(ii) 'अँधेरा' किसका प्रतीक है ? अँधेरे में क्या करने की शक्ति नहीं है ?

(iii) सवेरे के समय होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

(iv) भाव स्पष्ट कीजिए – 'गेंद की हिफाजत करना, तुम्हारा अपना जिम्मा है'।

(v) समय की किन्हीं दो विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–

(*i*) **शीर्षक**–डरना मना है।

(*ii*) अँधेरा अभाव का प्रतीक है। अँधेरे में किसी की मासूम दुनिया को छिपाने की शक्ति नहीं है।

(*iii*) सवेरे के समय ठंडी हवा चलने लगती है। ताजा फूलों की सुगंध फ़ैल जाती है, गलियों में चहल-पहल होने लगती है, शोर प्रारंभ हो जाता है।

(*iv*) जिस प्रकार गेंद की हिफाजत खिलाड़ी करता है, उसी प्रकार दुनिया रूपी गेंद की हिफाजत करना हम सभी का कर्तव्य है।

(*v*) **समय की दो विशेषताएँ**–

(क) समय कभी ठहरता नहीं। (ख) वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।

25. **विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी।**
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।

हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न 'आप' के लिए ।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे –
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

क्षुधार्त रन्तिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी ।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस-दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीरचर्म भी दिया ।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे ?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे । *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

प्रश्न–

(i) आशय स्पष्ट कीजिए – 'यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे ।'

(ii) किन्हीं दो दानवीरों के महान दान के बारे में बताइए ।

(iii) किस उदारता का उल्लेख हुआ है और कौन उसकी गाथा गाता है?

(iv) कवि ने किस प्रकार की मृत्यु को श्रेष्ठ बताया है और कैसे मरण को मरण नहीं माना है ?

उत्तर–

(*i*) इसका आशय यह है कि स्वयं अपने ही खाने-पीने के बारे में सोचने वाला पशु के समान है। पशु केवल अपने बारे में ही सोचता है।

(*ii*) रंतिदेव ने अपने हाथ में आएं भोजन के थाल को भूखे व्यक्ति को दे दिया था। यद्यपि वे स्वयं भी भूखे थे। ऋषि दधीचि ने वृत्रासुर के वध हेतु बनाए जाने वाले वज्र हथियार के लिए अपनी अस्थियाँ दान में दे दी थीं।

(*iii*) दूसरों के काम आने की उदारता का उल्लेख हुआ है। इस प्रकार की उदारता का बखान सरस्वती तक करती है। सारा संसार उसका गुणगान करता है।

(*iv*) जब हमारी मृत्यु परोपकार के लिए होती है तब वह सुमृत्यु होती है। इसे सभी याद करते हैं। जब मनुष्य केवल स्वार्थवश जीकर मरता है तब अच्छी मृत्यु नहीं होती। वह तो वृथा जीता है और वृथा मरता है। जो दूसरों के लिए जीता-मरता है, वह कभी नहीं मरता।

26.

आज सवेरे
जब वसंत आया उपवन में चुपके-चुपके
कानों-ही-कानों मैंने उससे पूछा –
मित्र ! पा गए तुम तो अपने यौवन का उल्लास दुबारा
गमक उठे फिर प्राण तुम्हारे
फूलों-सा मन फिर मुस्काया
पर साथी !
क्या दोगे मुझको ?

मेरा यौवन मुझे दुबारा मिल न सकेगा ?
सरसों की उंगलियाँ हिलाकर संकेतों में वह यूँ बोला–
मेरे भाई !
व्यर्थ प्रकृति के नियमों की यों दो न दुहाई;
होड़ न बाँधों तुम यों मुझसे ।
जब मेरे जीवन का पहला पहर झुलसता था लपटों में
तुम बैठे थे उशीर-पटों से घिरकर
जब मैं वर्षा की बाढ़ों में डूब-डूब कर उतराया था
तुम हँसते थे वाटर-प्रूफ कवच को ओढ़े
और शीत के पाले में जब गल कर मेरी देह जम गई
तब बिजली के हीटर से तुम सेंक रहे थे अपना तन-मन ।
जिसने झेला नहीं, खेल क्या उसने खेला ?
जो कष्टों से भागा-दूर हो गया सहज जीवन के क्रम से
उसको दे क्या दान प्रकृति की यह गतिमयता, यह नव बेला
पीड़ा के माथे पर ही आनंद-तिलक चढ़ता आया है।
मुझे देखकर आज तुम्हारा मन यदि सचमुच ललचाया है
तो कृत्रिम दीवारें तोड़ो
बाहर जाओ,
खुलो, तपो, भीगो, गल जाओ
आँधी तूफानों को सिर लेना सीखो।
जीवन का हर दर्द सहेजो/स्वीकारो हर चोट समय की । *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

प्रश्न–

(i) खुलो, तपो, भीगो, गल जाओ शब्द किन मौसमों का संकेत कर रहे हैं ?

(ii) ''पीड़ा के माथे पर ही आनंद-तिलक चढ़ता आया है'' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

(iii) 'होड़ न बाँधो तुम यों मुझसे' – कहकर वसंत क्या समझाना चाहता है?

(iv) वसंत ने क्या झेला ? तब उसका साथी क्या कर रहा था?

उत्तर–

(*i*) ये शब्द क्रमशः वसंत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु और शीत ऋतु के मौसमों का संकेत कर रहे हैं।

(*ii*) जब व्यक्ति पीड़ा भोगता है अर्थात् तकलीफ उठाता है तभी उसे आनंद की सच्ची अनुभूति होती है। उसे ही आनंद मिलता है।

(*iii*) यह कहकर वसंत समझाना चाह रहा है कि तुम मुझसे मुकाबला करने की कोशिश मत करो। मेरे और तुम्हारे स्वभाव में काफी अंतर है।

(*iv*) वसंत ने गर्मी की झुलसती लपटों को झेला, वर्षा की बाढ़ों में उतराया-डूबा, शीत का पाला झेला। तब उसका साथी घर में छिपकर बैठा हुआ था। वह वाटरप्रूफ कवच ओढ़े हुए था, शीत में बिजली का हीटर सेंक रहा था।

27.

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर देखी
पकी-सुनहली फसलों की मुसकान
बहुत दिनों के बाद।
बहुत दिनों के बाद
अबकी मैं जी भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान

बहुत दिनों के बाद।
बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे-टटके फूल
बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी भर छू पाया
अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
बहुत दिनों के बाद।

(CBSE Delhi 2009)

प्रश्न :

(क) बहुत दिनों के बाद कवि ने क्या देखा?
(ख) कवि ने क्या जी भर कर सुना?
(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने किन-किन ज्ञानेन्द्रियों को तृप्त किया है?
(घ) कविता में वर्णित अनुभव कवि को बहुत दिनों के बाद क्यों हुए?
(ङ) धूल के लिए प्रयुक्त विशेषण शब्द बताइए।
(च) इन पंक्तियों में से अनुप्रास तथा पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का एक-एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।

उत्तर :

(क) कवि ने बहुत दिनों के बाद खेतों में पकी-सुनहली फसलों की मुसकान देखी।
(ख) कवि ने बहुत दिनों के बाद गाँव में धान कूटती किशोरियों के कंठ से कोयल जैसे तान में गीत सुने।
(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने इन इंद्रियों को तृप्त किया–दृश्य इंद्रिय (आँख), श्रवण इंद्रिय (कान), सूँघने की इंद्रिय (नाक), स्पर्श इंद्रिय (हाथ)।
(घ) कवि बहुत दिनों बाद अपने गाँव जा पाया था। अतः उसे ये अनुभव बहुत दिनों बाद हुए।
(ङ) धूल के लिए प्रयुक्त विशेषण : चंदनवर्णी।
(च) **अनुप्रास अलंकार :** किशोरियों की कोकिल कंठी तान ('क' वर्ण की आवृत्ति)
पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार : ढेर-ढेर।

नवीं कक्षा हेतु काव्यांशों पर बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)

1. अपठित काव्यांश–1

जिस पर गिरकर उदर-दरी से तुमने जन्म लिया है।
जिसका खाकर अन्न, सुधा-सम नीर,समीर पिया।
वह स्नेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य मही है।
उसके प्रति कर्त्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है ?।।
केवल अपने लिए सोचते, मौज भरे गाते हो।
पीते, खाते, सोते, जगते, हँसते, सुख पाते हो।
जग से दूर, स्वार्थ-साधन ही सतत तुम्हारा यश है।
सोचो, तुम्हीं, कौन अग-जग में तुम सा स्वार्थ विवश है ?
पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला-पोसा।
किए हुए हैं वह निज-हित का तुमसे बड़ा भरोसा।
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्त्तव्य तुम्हारा।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।

उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त विकल्प छाँटकर लिखिए–

(क) मातृभूमि से मनुष्य क्या-क्या प्राप्त करता है ?–

(i) अन्न, जल, फल
(ii) अन्न, फल, फूल
(iii) अन्न, जल, वायु
(iv) फल, फूल, जल

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में धरती की तुलना किससे की गई है ?

(i) ईश्वर से (ii) पिता से
(iii) माता से (iv) विश्व से

(ग) उपरोक्त काव्यांश में मनुष्य की किस प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है–

(i) देश व देशवासियों के प्रति सेवाभाव (ii) स्वार्थी और आत्मकेंद्रित
(iii) निःस्वार्थ और उदार (iv) विश्व बंधुता

(घ) कवि के अनुसार मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य क्या होना चाहिए ?

(i) माता-पिता के ऋण से उऋण होना (ii) देश व जाति के ऋण से उऋण होना
(iii) शिक्षकों के ऋण से उऋण होना (iv) भाई-बहनों के ऋण से उऋण होना

(ङ) उपरोक्त काव्यांश का मुख्य संदेश है–

(i) सेवा भाव (ii) परोपकार
(iii) दयालुता (iv) देशभक्ति

उत्तर : (क) (iii), (ख) (iii), (ग) (ii), (घ) (ii), (ङ) (iv)

2. *'दो न्याय अगर तो आधा दो,*
पर इसमें भी यदि बाधा हो।
तो दे दो केवल पाँच गाँव,
रखो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खाएँगे,
परिजन पर असि न उठाएँगे।
दुर्योधन वह भी दे न सका,
आशीष समाज की ले न सका,
उलटे हरि को बाँधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।

प्रश्न :

1. यह बात कौन, किससे कह रहा है?
(क) कृष्ण अर्जुन से (ख) कृष्ण दुर्योधन से
(ग) अर्जुन दुर्योधन से (घ) कृष्ण युधिष्ठिर से

2. केवल पाँच गाँव क्यों माँगे गए होंगे?
(क) पाँचों पांडवों के लिए (ख) इतने गाँव ही काफी थे
(ग) इतने ही गाँव उपलब्ध थे (घ) कोई और बात थी

3. 'असि' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) ढाल (ख) तलवार
(ग) धनुष (घ) रथ

4. कौन किसको बाँधने चला?
(क) दुर्योधन कृष्ण को (ख) कृष्ण दुर्योधन को
(ग) दुर्योधन अर्जुन को (घ) अर्जुन दूत को

5. विवेक पहले कब मर जाता है?
(क) जब नाश मनुष्य पर छाता है (ख) जब व्यक्ति अहंग्रस्त हो जाता है
(ग) जब उसे कुछ नहीं सूझता (घ) कोई अन्य कारण

उत्तर : 1. (ख), 2. (क), 3. (ख), 4. (क), 5. (क)।

3. *मनाना चाहता है आज ही?*
तो मान ले
त्योहार का दिन
आज ही होगा
उमंगे यों अकारण ही नहीं उठतीं,
न अनदेखे इशारों पर
कभी यों नाचता है मन,
खुले से लग रहे हैं द्वार मंदिर के?
बढ़ा पग,
मूर्ति के शृंगार का दिन
आज ही होगा।
कोई तो, कहीं तो
प्रेरणा का स्रोत होगा ही–
उमंगें यों अकारण ही नहीं उठतीं,
नदी में बाढ़ आई है,
कहीं पानी गिरा होगा।

प्रश्न :

1. कवि क्या मनाना चाहता है?
   (क) त्योहार (ख) खाना (ग) खेलना
2. मंदिर के द्वार कैसे लग रहे हैं?
   (क) बंद से (ख) खुले से (ग) दोनों तरह से
3. कवि क्या बढ़ाने को कहता है?
   (क) पग (ख) हाथ (ग) मूर्ति
4. 'अकारण' शब्द का विलोमार्थी शब्द है :
   (क) विकारण (ख) सकारण (ग) नकारण
5. 'पानी गिरा होगा' से आशय है :
   (क) बाढ़ आई होगी (ख) नदी बही होगी (ग) वर्षा हुई होगी

उत्तर : 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख), 5. (ग)।

4. *लाल पत्थर लाल मिट्टी*
   लाल कंकड़ लाल बजरी
   लाल फूले ढाक के बन
   डाँग गाती फाग कजरी
   सनसनाती साँझ सूनी
   वायु का कंठला खनकता
   झींगुरों की खंजड़ी पर
   झाँझ सा बीहड़ झनकता।
   बीच सूने में
   बनैये ताल का फैला अतल जल
   ये कभी आये यहाँ पर
   छोड़ दमयन्ती दुःखी नल।
   भूख व्याकुल ताल से ले
   मछलियाँ थीं जो पकायीं
   शाप के कारण जली ही
   वे उछल जल में समायीं
   है तभी से साँवली
   सुनसान जंगल की किनारी।

प्रश्न :

1. चारों ओर के वातावरण में कौन-सा रंग समाया है?
   (क) लाल (ख) काला (ग) पीला
2. साँझ कैसी है?
   (क) नाचती (ख) सोती (ग) गाती
3. खंजड़ी किसकी है?
   (क) झींगुरों की (ख) झाँझ की (ग) बीहड़ की
4. ताल पर कौन आए थे?
   (क) दमयन्ती (ख) नल (ग) दोनों
5. जंगल की किनारी साँवली क्यों है?
   (क) पकाई गई मछलियाँ जल में समा गई थीं
   (ख) भूख की व्याकुलता के कारण
   (ग) जंगल का रंग ही काला है

उत्तर : 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख), 5. (क)।

5. *जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला*
   उस-उस राही को धन्यवाद।
   जीवन अस्थिर, अनजाने ही
   हो जाता पथ पर मेल कहीं
   सीमित पग-डग, लंबी मंजिल
   तय कर लेना कुछ खेल नहीं।
   दाएँ-बाएँ सुख-दुःख चलते
   सम्मुख चलता पथ का प्रमाद
   जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
   उस-उस राही को धन्यवाद।
   साँसों पर अवलम्बित काया,
   जब चलते-चलते चूर हुई।
   दो स्नेह शब्द मिल गए, मिली-
   नव स्फूर्ति, थकावट दूर हुई।
   पथ के पहचाने छूट गए,
   पर साथ-साथ चल रही याद।
   जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला
   उस-उस राही का धन्यवाद।
   इस पथ पर वे ही चलते हैं,
   जो चलने का पा गए स्वाद।
   जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला,
   उस-उस राही को धन्यवाद॥

प्रश्न :

1. कवि किसे धन्यवाद देता है ?
   (क) जीवन-मार्ग पर जिस-जिससे स्नेह मिला (ख) राही को
   (ग) सभी को
2. मंजिल तय कर लेना खेल क्यों नहीं है ?
   (क) सीमित पग-डग (ख) समय का अभाव (ग) जीवन छोटा
3. 'थकावट' कब दूर हुई ?
   (क) जब स्नेह के दो शब्द मिल गए (ख) जब आराम मिल गया
   (ग) जब स्फूर्ति आ गई
4. 'उस-उस, साथ-साथ' में किस अलंकार का प्रयोग है ?
   (क) अनुप्रास (ख) पुनरुक्ति (ग) मंजिल
5. इस कविता का कौन-सा शीर्षक उपयुक्त रहेगा ?
   (क) धन्यवाद (ख) राही (ग) मंजिल

उत्तर : 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख), 5. (ख)।

6. *निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,*
   मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
   जीव जहाँ से फिर चलता है।
   धारण कर नव-जीवन-संबल।
   मृत्यु एक सरिता है, जिसमें,
   श्रम से कातर जीवन नहाकर।
   फिर नूतन धारण करता है,
   काया-रूपी वस्त्र बहाकर।

प्रश्न :

1. कवि ने मृत्यु को क्या बताया है?
   (क) अच्छा (ख) विश्रामस्थल (ग) निर्भय
2. 'जीव' से क्या तात्पर्य है?
   (क) मनुष्य (ख) आत्मा (ग) मन
3. मृत्यु को एक सरिता क्यों बताया गया है?
   (क) मृत्यु नदी की भाँति बहती रहती है (ख) दोनों में जीव नहाता है
   (ग) दोनों में पानी होता है
4. 'काया-रूपी वस्त्र' में कौन-सा अलंकार है?
   (क) उपमा (ख) रूपक (ग) अनुप्रास
5. इस कविता की भाषा कौन-सी है?
   (क) ब्रज (ख) अवधी (ग) खड़ी बोली

उत्तर : 1. (ख), 2. (ख), 3. (ख), 4. (ख), 5. (ग)।

7. *युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी*
   'रघुकुल में थी एक अभागिन रानी'
   निज जन्म-जन्म में सुने जीव यह मेरा –
   'धिक्कार! उसे था महास्वार्थ ने घेरा।'
   "सौ बार धन्य वह एक लाल की माई,
   जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई।"
   पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई –
   "सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।"

प्रश्न :

1. रघुकुल में यह अभागिन रानी कौन थी?
   (क) कौशल्या (ख) कैकेयी
   (ग) उर्मिला (घ) सुमित्रा
2. किस जननी ने भरत-सा भाई जना?
   (क) कैकेयी ने (ख) कौशल्या ने
   (ग) सुमित्रा ने (घ) अन्य ने
3. 'प्रभु' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है?
   (क) भरत के लिए (ख) लक्ष्मण के लिए
   (ग) राम के लिए (घ) किसी अन्य के लिए
4. 'धिक्कार उसे था.....' पंक्ति में कौन-सा भाव प्रकट हो रहा है?
   (क) प्रेम का (ख) प्रायश्चित का
   (ग) गर्व का (घ) चुप रहने का
5. इस काव्यांश की भाषा कौन-सी है?
   (क) खड़ी बोली (ख) ब्रज
   (ग) अवधी (घ) अन्य

उत्तर : 1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (ख), 5. (क)।

8. *मैं बढ़ा ही जा रहा हूँ, पर तुम्हें भुला नहीं हूँ।*
चल रहा हूँ, क्योंकि चलने से थकावट दूर होती,
चाहता तो था कि रुक लूँ पार्श्व में क्षण-भर तुम्हारे
किंतु अगणित स्वर बुलाते हैं मुझे बाँहें पसारे,
अनसुनी करना उन्हें भारी प्रवंचन का पुरुषता,
मुँह दिखाने योग्य रखेगी न मुझको स्वार्थपरता।
इसलिए ही आज युग की देहली को लाँघकर मैं–
पथ नया अपना रहा हूँ–
पर तुम्हें भूला नहीं हूँ।
आज शोषक-शोषितों में हो गया जग का विभाजन
अस्थियों की नींव पर अकड़ खड़ा प्रासाद का तन।

प्रश्न :

1. कवि क्यों चल रहा है?
   (क) चलने से थकावट दूर होती है (ख) वह आगे बढ़ना चाहता है
   (ग) वह प्रिया को भूलना चाहता है
2. कवि क्या चाहता था?
   (क) आगे बढ़ना (ख) प्रिया के पार्श्व में रुकना
   (ग) बाँहें पसारना
3. जग का विभाजन किस-किस में हो गया है?
   (क) शोषक-शोषितों में (ख) धनिकों में
   (ग) किसान-मजदूरों में
4. कवि कौन-सा पथ अपना रहा है?
   (क) नया (ख) पुराना
   (ग) दोनों
5. 'शोषक' कौन है?
   (क) मजदूर (ख) पूँजीपति
   (ग) काम करने वाले

उत्तर : 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (क), 5. (ख)।

अध्याय
2

संवाद-लेखन

(Dialogue-writing)

संवाद से अभिप्राय 'बातचीत' या 'वार्तालाप' से है। यह अभिव्यक्ति के मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में आता है। प्रभावशाली संवाद बोलना और लिखना भी एक कला है। इसके लिए हमें निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. संवाद छोटे, सरल एवं संक्षिप्त हों।
2. संवादों में रोचकता एवं सरलता हो।
3. संवादों में कलात्मक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
4. संवादों में बलाघात एवं अनुतान का बड़ा महत्त्व है।

उपयुक्त विराम-चिह्नों का उचित स्थान पर प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

उदाहरणस्वरूप यहाँ संवाद-लेखन के कुछ नमूने दिए जा रहे हैं :

1. अध्यापक और छात्र के मध्य संवाद

छात्र. : (प्रवेश कर) गुरु जी प्रणाम।

अध्यापक : प्रसन्न रहो। राजन, तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए ?

छात्र : गुरु जी, कल मेरी माता जी की तबीयत बहुत खराब हो गई थी। मुझे उनके साथ डॉक्टर के यहाँ जाना पड़ा।

अध्यापक : 'यह तो तुमने अच्छा किया राजन ! माता-पिता की सेवा करना तुम्हारा कर्त्तव्य है।'

छात्र : गुरु जी ! मुझे पता चला है कि कल आपने एक सूचना प्रसारित की थी, जिसमें ग्रीष्मावकाश में निरक्षरों को पढ़ाने के लिए नाम माँगे गए थे।

अध्यापक : राजन, तुम्हें ठीक सूचना मिली है। क्या तुम अपना नाम लिखवाना चाहते हो?

छात्र : जी हाँ, गुरुजी।

अध्यापक : ठीक है। तुम अपना नाम कक्षा के मॉनीटर सचिन को लिखवा दो। वही इस कार्यक्रम का संचालन करेगा।

छात्र : आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं सचिन को नाम लिखवा दूँगा तथा अन्य जानकारी भी ले लूँगा।

2. बढ़ती जनसंख्या पर दो मित्रों में संवाद

रविकांत : मित्र, आजकल तो नौकरी का मिलना अत्यंत दूभर होता जा रहा है।

शशांक : यह तो सच है, पर क्या तुम इसका कारण जानते हो?

रविकांत : इसका कारण अवसरों की कमी ही हो सकता है।

शशांक : मित्र, इसका मूल कारण है जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्धि।

रविकांत : जनसंख्या वृद्धि से नौकरी कम होने का क्या संबंध है?

शशांक : बहुत बड़ा संबंध है। जनसंख्या वृद्धि के कारण नौकरी पाने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

रविकांत : हाँ, यह बात तो ठीक प्रतीत होती है।

शशांक : इस बढ़ती जनसंख्या ने अन्य समस्याओं को भी जन्म दिया है।

रविकांत : वे समस्याएँ कौन-कौन सी हैं ?

शशांक : बढ़ती जनसंख्या के कारण स्कूलों में दाखिले की समस्या, मकानों की कमी होना, अस्पतालों में रोगियों की भीड़ तथा खान-पान की चीजों का अभाव होना जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

रविकांत : इस समस्या पर काबू कैसे पाया जा सकता है?

शशांक : हमें छोटे परिवार का महत्त्व समझना होगा। परिवार में एक-दो बच्चे ही होने से उनका लालन-पालन भी अच्छे ढंग से हो सकता है।

रविकांत : तुम्हारा कथन बिल्कुल सच है। इसी से हमारा देश समृद्ध हो सकता है।

3. दुकानदार एवं ग्राहक के मध्य संवाद

ग्राहक : सेठ जी ! कोई साफ-सुथरी चीनी आई है क्या ?

दुकानदार : भई, खुली चीनी तो थोड़ी गंदी ही है।

ग्राहक : फिर कौन-सी चीनी अच्छी है?

दुकानदार : मवाना चीनी पैकिटों में सीलबंद होकर आई है। एक-एक किलो के पैकिट हैं। इन पर एगमार्क की मोहर भी लगी है।

ग्राहक : यह चीनी तो महँगी होगी?

दुकानदार : हाँ, है तो महँगी। सामान्य चीनी से दो रुपए किलो महँगी है, पर है उच्चकोटि की। इसकी खपत भी कम होगी।

ग्राहक : भाव तो बताओ, सेठ जी !

दुकानदार : छपा हुआ मूल्य तो 40 रुपए 50 पैसे प्रति किलो है, पर आप हमारे नियमित ग्राहक हैं, इसलिए आपको 40 रुपए के भाव पर ही देंगे।

ग्राहक : ठीक है। मुझे पाँच पैकिट दे दीजिए।

4. दो विद्यार्थियों के मध्य दूरदर्शन की उपयोगिता पर संवाद

राहुल : आजकल जिसे भी देखो, दूरदर्शन से चिपका रहता है।

कमल : यह ठीक है कि दूरदर्शन पर कई उपयोगी एवं मनोरंजक कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं, पर कई विदेशी-चैनल अश्लील कार्यक्रम भी दिखा रहे हैं।

राहुल : इन कार्यक्रमों को देखकर हमारी युवा पीढ़ी गलत दिशा में जा रही है।

कमल : इस प्रवृत्ति पर रोक लगानी आवश्यक है।

राहुल : पर इस पर रोक कैसे लगाई जा सकती है?

कमल : सरकार को 'दूरदर्शन नियंत्रण बोर्ड' बनाना चाहिए। इस बोर्ड की स्वीकृति के बाद ही कार्यक्रम प्रसारित किया जाना चाहिए।

राहुल : वह तो ठीक है, पर समाज को भी तो कुछ करना चाहिए।

कमल : हाँ, समाज में चेतना जगानी होगी। ऐसा वातावरण तैयार करना होगा कि दूरदर्शन हिंसा और अश्लीलता भरे कार्यक्रम न दिखाने को विवश हो जाए।

राहुल : हमें घरों में ऐसे कार्यक्रम न देखने का वातावरण भी बनाना होगा।

5. बूढ़ी अमीना और पोते हामिद के मध्य संवाद

अमीना : बेटे हामिद, तू मेले से इतनी जल्दी लौट आया।

हामिद : हाँ, दादी।

अमीना : देखूँ तो, मेरा बेटा मेले से क्या लाया है?

हामिद : (*चिमटा दिखाते हुए*) दादी मैं यह चिमटा लाया हूँ।

अमीना : चिमटा ! क्या तुझे मेले में लेने के लिए और कुछ खिलौना नहीं मिला?

हामिद : दादी, खिलौने तो टूट जाते हैं। मुझे तो यह चिमटा ही सबसे अच्छा लगा।

अमीना : क्यों ?

हामिद : दादी, यह चिमटा मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ। रोटी सेंकते समय तुम्हारी अँगुलियाँ जल जाती हैं इसीलिए इसे लाया।

अमीना : (*हर्ष मिश्रित आश्चर्य से*) अरे ! तू यह चिमटा मेरे लिए लाया है। तुझे मेले में भी मेरी चिंता रही क्या ? क्या मिठाई खाने को तेरा मन नहीं हुआ?

हामिद : दादी, मिठाई से तो दाँत खराब हो जाते हैं। चिमटा तो तुम्हारे बहुत काम आएगा।

अमीना : बेटे ! आज मैं निहाल हो गई। तेरे जैसा बेटा सबको मिले। (*हामिद को गले लगाती है।*)

6. दो युवकों के मध्य ग्रीष्मावकाश बिताने के बारे में संवाद

रोशन : मित्र मोहन! गर्मियों की छुट्टियाँ होने वाली हैं और दिल्ली की गर्मी झेली नहीं जा रही।

मोहन : बात तो तुमने ठीक कही है, पर इतने रुपए कहाँ से आएँ कि पर्वतीय स्थल की सैर करके आएँ।

रोशन : उसकी चिंता तुम मत करो। मसूरी में हमने एक 'होली डे होम' बुक करवा रखा है। वह हमें दस दिन के लिए मिल जाएगा।

मोहन : वहाँ हम खूब सैर-सपाटा करेंगे। एक हजार रुपयों का प्रबंध तो मैं कर सकता हूँ।

रोशन : देखो, हम वहाँ कम खर्च में अपना गुजारा चला लेंगे। हमारा मुख्य उद्देश्य तो घूमना-फिरना है।

मोहन : तो ठीक है। मुझे तो खाना पकाना भी आता है। दोपहर का खाना हम मिलकर बना लिया करेंगे।

रोशन : यदि यह बात है तो मसूरी चलना पक्का रहा। मैं पंद्रह तारीख की टिकटें सबके लिए बुक करवा लेता हूँ।

7. देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर दो नागरिकों के मध्य संवाद

आदित्य : मित्र रंजन ! कहाँ से चले आ रहे हो ?

रंजन : अरे, क्या बताऊँ ? बिजली बोर्ड के दफ्तर से आ रहा हूँ।

आदित्य : क्यों, क्या बात हो गई?

रंजन : बात तो कुछ नहीं हुई, ये दो हजार रुपए का बिजली-बिल आया था, जबकि हर बार यह पाँच-छह सौ रुपए का होता था।

आदित्य : क्या उन्होंने बिल ठीक कर दिया?

रंजन : उनके मुँह तो खून लग गया है। पहले तो सुनते ही नहीं हैं और ज्यादा कहो तो पाँच सौ रुपए रिश्वत माँगते हैं।

आदित्य : क्या रिश्वत देने के लिए हाँ कर आए हो?

रंजन : क्या करूँ, कुछ समझ नहीं आता। मन तो नहीं करता, पर कोई और उपाय भी नहीं सूझ रहा।

आदित्य : उपाय तो है। मैं बताता हूँ। इससे काम भी हो जाएगा और बिल-क्लर्क के होश भी ठिकाने आ जाएँगे।

रंजन : मुझे बता, वह उपाय।

आदित्य : हम दोनों 'सतर्कता विभाग' में चलकर उसकी लिखित शिकायत कर देते हैं। वे उसे रंगे हाथों पकड़ लेंगे।

रंजन : यही ठीक रहेगा। कभी-न-कभी तो हमें इस भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़ा होना ही होगा।

आदित्य : अच्छा, अब वहीं चलें।

8. डॉक्टर और रोगी के मध्य संवाद

रोगी : डॉक्टर साहब, मुझे दो दिन से बुखार आ रहा है।

डॉक्टर : लो, यह थर्मामीटर मुँह में लगाओ। देखें, अब कितना बुखार है? (थर्मामीटर मुँह में लगाता है) (थोड़ी देर बाद) इस समय तो तुम्हें बुखार नहीं है।

रोगी : डॉक्टर साहब, रात भर सर्दी लगकर बुखार चढ़ता रहा।

डॉक्टर : तुम्हें मलेरिया हो गया प्रतीत होता है। तुम खून की जाँच भी करवा लो।

रोगी : जैसा आप उचित समझें। मुझे एक-दो दिन में ठीक कर दीजिए।

डॉक्टर : मैं तुम्हें अभी एक दिन की दवा दे रहा हूँ। शाम तक खून की रिपोर्ट आ जाएगी, तब दवा बदलेंगे।

रोगी : मुझे बेचैनी वहुत है। इसकी भी कोई दवा दीजिए।

डॉक्टर : वह मैंने इसमें ही दे दी है। तुम घर पर जाकर आराम करो। कल तक बिल्कुल ठीक हो जाओगे।

9. बढ़ती जनसंख्या पर दो मित्रों में संवाद/बातचीत

ंत : मित्र, आजकल तो नौकरी का मिलना अत्यंत दूभर होता जा रहा है।

क : यह तो सच है, पर क्या तुम इसका कारण जानते हो?

ंत : इसका कारण अवसरों की कमी ही हो सकता है।

क : मित्र, इसका मूल कारण है जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्धि।

त : जनसंख्या वृद्धि से नौकरी कम होने का क्या संबंध है?

क : बहुत बड़ा संबंध है। जनसंख्या वृद्धि के कारण नौकरी पाने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

त : हाँ, यह बात तो ठीक प्रतीत होती है।

: इस बढ़ती जनसंख्या ने अन्य समस्याओं को भी जन्म दिया है।

त : वे समस्याएँ कौन-कौन सी हैं?

: बढ़ती जनसंख्या के कारण स्कूलों में दाखिले की समस्या, मकानों की कमी होना, अस्पतालों में रोगियों की भीड़ तथा खान-पान की चीजों का अभाव होना जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

त : इस समस्या पर काबू कैसे पाया जा सकता है?

: हमें छोटे परिवार का महत्त्व समझना होगा। परिवार में एक-दो बच्चे ही होने से उनका लालन-पालन भी अच्छे ढंग से हो सकता है।

त : तुम्हारा कथन बिल्कुल सच है। इसी से हमारा देश समृद्ध हो सकता है।

10. भाई-बहन के मध्य संवाद

: यह मोबाइल फोन मुझे चाहिए। तू इसका क्या करेगा?

: अरे वाह! तू कॉलेज पढ़ने जाती है या फोन पर बातें करने?

: मैं कॉलेज पढ़ने ही जाती हूँ, पर मुझे अपनी सहेलियों से पढ़ाई के बारे में बातें करनी पड़ती हैं।

: क्या मुझे अपने दोस्तों को फोन नहीं करना पड़ता?

: तेरे सारे दोस्त लफंगे हैं। उनसे तू कौन-सी अच्छी बातें करता है ?

: रहने दे, मैं भी तेरी सहेलियों को जानता हूँ। वे फोन पर क्या-क्या बातें करती हैं, यह भी मुझे अच्छी तरह पता है।

: तुझे मेरी सहेलियों से क्या लेना-देना ? बस मैंने कह दिया कि इस मोबाइल फोन का प्रयोग मैं करूँगी, तो बस मैं ही करूँगी।

: चल, तू आई इस फोन का प्रयोग करने वाली। पापा ने इसे मेरे लिए खरीदा है। मैं ही इसका प्रयोग करूँगा।

: जब बिल आएगा तभी तुझे पता चलेगा।

: आने दे। मैं तुझसे पैसे नहीं मागूँगा।

: आगे से तू मुझसे भी कुछ नहीं माँगना।

: नहीं माँगूगा।

11. दो विद्यार्थियों के बीच वार्षिक परीक्षा की तैयारी पर चर्चा करते हुए संवाद

: मोहन, वार्षिक परीक्षा सिर पर आ गई है और अभी तक कोर्स पूरा भी नहीं हो पाया है।

: इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। स्कूल में तो कोर्स इसी प्रकार पूरा होता है। हमें शेष कोर्स स्वयं ही पूरा करना होगा।

: हम स्वयं कोर्स पूरा कैसे कर पाएँगे?

: क्यों नहीं कर पाएँगे? हमारे अंदर पढ़ने और समझने की लगन होनी चाहिए। कोर्स तो पूरा हो ही जाएगा।

: मुझे तो यह काम मुश्किल प्रतीत हो रहा है।

: मुश्किल कुछ नहीं। तुम शाम को दो घंटे के लिए मेरे पास आ जाया करो। हम दोनों मिलकर वार्षिक परीक्षा की तैयारी कर लेंगे।

: हाँ, यह ठीक रहेगा। आपस में विचार-विमर्श से तैयारी भी अच्छी हो जाएगी। मैं सायं छह बजे तक तुम्हारे यहाँ पहुँच जाऊँगा।

: रमेश, परीक्षा को भूत कभी नहीं समझो। इसे सहज रूप से लेना चाहिए। इससे तनाव नहीं होता।

12. दूरदर्शन की उपयोगिता को लेकर दो सखियों में संवाद

: रीता, आजकल दूरदर्शन की उपयोगिता तो निरंतर बढ़ती ही जा रही है।

: हाँ, वह तो है ही। पर मैं इसका उपयोग ज्यादा करने के पक्ष में नहीं हूँ।

: क्यों?

: दूरदर्शन पर कई अच्छे कार्यक्रमों के साथ-साथ कई बुरे कार्यक्रम भी आ रहे हैं। उनका हमारी युवा पीढ़ी पर बुरा असर पड़ रहा है।

: तुम्हें यह किस रूप में दिखाई दे रहा है?

: अधिकतर घरेलू धारावाहिकों में स्त्री को विलेन के रूप में दिखाया जा रहा है। वह संयुक्त परिवार को तोड़ने में लगी रहती है। क्या यह असलियत है?

: ऐसा बहुत कम घरों में है। इसी प्रकार सास को भी दुष्ट, क्रूर औरत के रूप में दिखाना भी अनुचित है।

: अब तुम मेरी बात समझ गई हो।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

खित विषयों पर संवाद लिखिए :

ा अध्यापिका के व्यवहार को लेकर दो सखियों में संवाद।

ालय में बढ़ती अनुशासनहीनता को लेकर प्रधानाचार्य एवं शिक्षक के मध्य वार्तालाप।

ाष्ट्रीय कंपनियों के कारण अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले दुष्परिणामों को लेकर दो व्यक्तियों के मध्य संवाद।

र्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के आयोजन के बारे में दो अध्यापिकाओं के मध्य वार्तालाप।

ाण की समस्या पर चिंता प्रकट करते हुए दो व्यक्तियों के मध्य संवाद।

अध्याय 3

अनुच्छेद-लेखन

(Paragraph Writing)

किसी एक वाक्य, सूक्ति या काव्य-पंक्ति के विषय में सात-आठ पंक्तियाँ लिखना 'अनुच्छेद-लेखन' कहलाता है। एक अनुच्छेद में एक विचार या भाव विस्तार से लिखा जाता है। कभी-कभी दैनिक अनुभवों को भी एक अनुच्छेद में लिखते हैं। सामान्यतया यह अनुच्छेद 100 शब्दों में होता है। इसमें छोटे-छोटे वाक्य रहते हैं। ये वाक्य विषय के आधार पर एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। विषय को अच्छी तरह स्पष्ट करना इनका लक्ष्य होता है। कभी-कभी उदाहरण देकर भी बात स्पष्ट की जाती है। अनुच्छेद लिखते समय किसी प्रकार की भूमिका या उपसंहार की आवश्यकता नहीं होती। सीधे ही विषय का प्रारंभ कर दिया जाता है। अनुच्छेद रोचक होना चाहिए जिससे पढ़ने वाले की अंत तक पढ़ने की उत्सुकता वनी रहे। निबंध के समान अनुच्छेद-लेखन भी कला है जिसके अभ्यास की आवश्यकता है।

अनुच्छेद को अंग्रेजी में Paragraph कहा जाता है। एक अनुच्छेद में एक भाव, विचार या घटना आदि के बारे में लिखा जाता है। अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें :

1. विषय से संबंधित सभी मुख्य बातों को ध्यान में रखें। उन्हें संकेत रूप में लिख लें।
2. विचार के संकेतों को क्रमानुसार लिखना चाहिए।
3. सरल एवं सुवोध भाषा का प्रयोग करना चाहिए और वाक्य छोटे हों।
4. बेकार की बातों को अनुच्छेद में नहीं लिखना चाहिए।
5. अनुच्छेद सुगठित एवं संक्षिप्त हो।
6. अनुच्छेद लिखने के पश्चात् एक बार उसे अवश्य पढ़ना चाहिए, ताकि अशुद्धियाँ दूर हो जाएँ।

यहाँ कुछ अनुच्छेद उदाहरणस्वरूप दिए जा रहे हैं :

1. कामकाजी नारी का एक दिन

(CBSE 2009 Delhi)

संकेत बिंदु : (*i*) तनाव और तैयारी, (*ii*) कार्यालय में, (*iii*) घर में।

कामकाजी नारी वह है जो प्रतिदिन अपने काम पर जाती है और परिवार के लिए धन कमा कर लाती है। उसका प्रत्येक दिन व्यस्त रहता है। दिन निकलते ही उसका तनाव शुरू हो जाता है। वह प्रातःकाल उठते ही सारे दिन की गतिविधियों की रूपरेखा बना लेती है। प्रातः से ही उसका तनाव शुरू हो जाता है। उसे स्वयं तैयार होना होता है, साथ ही बच्चों को भी स्कूल के लिए तैयार करना होता है। उन्हें बिस्तर से उठाना, तैयार करना, नाश्ता बनाना, पति के लिए नाश्ता और लंच तैयार करना, ये सभी काम उसे प्रातः ही निपटाने पड़ते हैं। सभी की अपनी-अपनी फरमाइशें होती हैं, जो उसे पूरी करनी पड़ती हैं। जैसे-तैसे करके वह ऑफिस के लिए निकलती है, तो बस-स्टॉप पर बस की प्रतीक्षा का तनाव झेलना पड़ता है। मेट्रो में उसे धक्का-मुक्की का दंश झेलना पड़ता है। किसी तरह ऑफिस पहुँच जाती है तो वहाँ लेट हो जाने का डर बना रहता है। दफ्तर में मेज पर ढेर सारी फाइलों से जूझना पड़ता है। थोड़ी-सी भी गलती हो जाए तो बॉस की डाँट भी खानी पड़ती है। लंच टाइम में थोड़ा आराम महसूस होता है। सायंकाल घर लौटना होता है। घर पहुँचकर बच्चों की फरमाइशें पूरी करनी पड़ती हैं। रात होने तक काम में जुटे रहना पड़ता है। ऐसे बीतता है कामकाजी नारी का दिन।

2. जब हम दो गोलों से पिछड़ रहे थे

(CBSE 2009 Delhi)

संकेत बिंदु : (*i*) खिलाड़ियों का जोश, (*ii*) दर्शकों की दशा, (*iii*) प्रयास और परिणाम।

हमारे स्कूल की टीम का सरदार पटेल स्कूल की टीम से फुटबॉल मैच था। दोनों टीमें पूरी तैयारी के साथ आई थीं। टॉस उछाला गया, तो टॉस हमने जीता। मैच शुरू हो गया। हमारी टीम ने पहले दस मिनट में ही विपक्षी टीम पर एक गोल दाग

दिया। अब तो विपक्षी टीम जी-जान से गोल उतारने में जुट गई। उसके खिलाड़ियों ने पाँच मिनट में ही यह गोल उतार दिया। लोग तालियाँ बजा रहे थे। हमारे खिलाड़ी भी पूरा जोर लगा रहे थे, पर बात बन नहीं रही थी, तभी विपक्षी टीम ने एक गोल और कर दिया। अब तो उनका उत्साह देखते ही बनता था। जोश में आकर उन्होंने तीसरा गोल भी कर दिया। हम दो गोलों से पिछड़ रहे थे। हमारी टीम में निराशा फैली थी, पर हमारे उत्साहवर्द्धन ने जादू का काम किया। हमारी टीम ने दस मिनट में ही दोनों गोल उतार दिए। अब मैच बराबरी पर था। तभी रैफरी ने सीटी बजाकर मैच समाप्त होने की घोषणा कर दी। यह मैच ड्रॉ रहा।

3. हिमालय : भारत का मुकुट

(*CBSE 2009 Delhi*)

संकेत बिंदु : (*i*) मुकुट क्यों, (*ii*) सौंदर्य, (*iii*) उपयोगिता।

हिमालय भारत के उत्तर में स्थित है। यह सर्वोच्च स्थान पर है अतः हिमालय को भारत का मुकुट कहा जाता है। बर्फीला हिमालय मुकुट की तरह चमकता भी है। यह भारत का गौरव है अतः मुकुट कहलाने का सच्चा अधिकारी भी है। हिमालय का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है। यहाँ तुषार मंडित चोटियाँ हैं, झीलें हैं, हरे-भरे वृक्ष हैं तथा ऋषि-मुनियों के तप करने वाली गुफाएँ भी हैं। हिमालय का सौंदर्य सभी को लुभाता है। तभी तो अनेक साहसी व्यक्ति इस पर चढ़ाई करते हैं। भारत के लिए हिमालय की उपयोगिता भी बहुत है। यह भारत का रक्षक है। ठंडी हवाओं को भारत में आने से रोकता है। हिमालय से अनेक पवित्र नदियाँ निकल कर भारत भूमि को सींचती हैं। हिमालय में अपार औषधीय संपदा के भंडार हैं।

4. मातृभूमि

(*CBSE 2008 (C) Delhi*)

संकेत बिंदु : (*i*) मातृभूमि 'माँ' के समान, (*ii*) स्वाभाविक लगाव, (*iii*) मातृभूमि के प्रति हमारे कर्तव्य।

मातृभूमि 'माँ' के समान होती है। भूमि के साथ 'मातृ' शब्द जुड़ना इसी भावना को अभिव्यक्त करता है। जिस प्रकार माँ हमारा पालन-पोषण करती है, उसी प्रकार मातृभूमि भी हम सभी का पालन-पोषण करती है। हम इसी भूमि पर जन्म लेते हैं, इसी पर खेल-कूद कर विकसित होते हैं। जन्म से मृत्युपर्यंत यह मातृभूमि हमें सभी प्रकार के पदार्थ और सुख के साधन उपलब्ध करवाती है। अंत में हम इसी की गोद में समा जाते हैं। हम अपनी मातृभूमि से कभी उऋण नहीं हो सकते। जिस प्रकार बच्चे का अपनी माँ के प्रति लगाव होता है, उसी प्रकार मातृभूमि के प्रति हमारा लगाव होना स्वाभाविक ही है। यही मातृभूमि हमारे व्यक्तित्व को सँवारती है, हमारे अस्तित्व की रक्षा करती है। बुलबुल भी जिस चमन में रहती है, उससे प्रेम रखती है। हम भी मातृभूमि के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रखते हैं। कहा भी गया है–

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

इस मातृभूमि के प्रति हमारा भी कुछ कर्तव्य हो जाता है। हमें इसके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देना चाहिए। मातृभूमि की रक्षा का भाव सर्वोपरि होना चाहिए। मातृभूमि की रक्षा में प्राण समर्पित करने वाले वीरगति प्राप्त करते हैं। देश उन्हें सदा स्मरण रखता है।

5. मेरी काल्पनिक अंतरिक्ष यात्रा

(*CBSE 2008 (C) Delhi*)

संकेत बिंदु : (*i*) कब-कहाँ-क्यों, (*ii*) अंतरिक्ष से धरती का दृश्य, (*iii*) अंतरिक्ष के रोमांचक अनुभव।

अब अंतरिक्ष की यात्रा करना मनुष्य के वश में है। अनेक व्यक्ति अंतरिक्ष यात्रा कर आए हैं। भारत का पहला अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा था। कल्पना चावला भी अंतरिक्ष यात्रा पर गई थी। मैं भी अपने मन में अंतरिक्ष यात्रा की कल्पना करता रहता हूँ। काश! मुझे अंतरिक्ष यात्रा का अवसर प्राप्त होता। मुझे लगने लगा है कि मैं भारत की ओर से अंतरिक्ष यात्रा के लिए उड़ान भरने वाला हूँ। अनेक वैज्ञानिक और मेरे शुभचिंतक मुझे शुभकामनाएँ देने के लिए एकत्रित हैं। मेरा रॉकेट थुंबा से उड़ान भरने वाला है। मैं अंतरिक्ष यात्री की वेशभूषा पहनकर यान में प्रवेश कर रहा हूँ। बटन दबाते ही मेरा यान तेजी के साथ ऊपर की ओर बढ़ चला है। नीचे आग की लपटें दिखाई दे रही हैं। मैं बादलों में खोता चला जा रहा हूँ। मेरे साथ एक यात्री और बैठा है। अब हमारा यान अंतरिक्ष में चक्कर लगाने लगा है। वहाँ से नीचे की धरती बहुत सुंदर प्रतीत हो रही है। देश की सीमाएँ एकाकार हो गई हैं। चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। मुझे रोमांच हो रहा है। यहाँ मैं स्वयं को अत्यंत हल्का-सा अनुभव कर रहा हूँ। भूख लगने पर तरल खाद्य पदार्थ ले लेता हूँ। पता नहीं कितने घंटे-दिन बीत गए। अब मेरी यह रोमांचक यात्रा समाप्ति पर है। मैं यथार्थ के धरातल पर लौट रहा हूँ। काश! यह सब सच हो जाए।

6. पुस्तक मेले में अधूरी खरीददारी

(CBSE 2009 Outside)

संकेत बिंदु : (*i*) मेले में, (*ii*) रुचि की पुस्तकें, (*iii*) मूल्य अधिक, बजट कम।

सितंबर मास में दिल्ली के प्रगति मैदान में पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। यह मेला हिंदी दिवस पर लगता है। इसमें देश भर के पुस्तक-प्रकाशक भाग लेते हैं। इस मेले का लाभ यह है कि यहाँ श्रेष्ठ प्रकाशन एक ही छत के नीचे उपलब्ध हो जाते हैं। इस पुस्तक मेले में नई पीढ़ी को ध्यान में रखकर पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया था। यहाँ सभी पुस्तकों पर 20 प्रतिशत कमीशन भी दिया जा रहा था। लगभग 150 प्रकाशन संस्थाओं ने इसमें भाग लिया। यहाँ प्रदर्शित अधिकांश पुस्तकें आकर्षक एवं नवीन थीं। यहाँ इन पुस्तकों की बिक्री भी की गई, पर आशा से कम पुस्तकें बिकीं। इसका कारण यह था कि इन पुस्तकों की कीमत अधिक थी, लोगों का बजट कम था। कई पुस्तकें तो सौ पेज के आस-पास थीं, पर उनका मूल्य भी 70-80 रुपए था। आम आदमी 30-40 रुपए तक ही पुस्तक खरीदता है। मूल्य कम करने की दिशा में प्रकाशकों को गंभीरता से सोचना होगा।

7. चुनाव का दिन

(CBSE 2008 (C) Delhi)

संकेत बिंदु : (*i*) बस्ती में हलचल, (*ii*) मतदान-केंद्र का दृश्य, (*iii*) विशेष अनुभव।

आज चुनाव का दिन है। लोकसभा के चुनाव होने वाले हैं। हमारी बस्ती में भी हलचल मची है। हमारी बस्ती में अनेक नेता रहते हैं। उनके राजनीतिक दल अलग-अलग हैं अत: वे सभी अपने-अपने मतदाताओं को लुभाने में लगे हैं। हमारी बस्ती के सरकारी स्कूल में मतदान केंद्र बनाया गया है। मतदान केंद्र के बाहर सभी राजनीतिक पार्टियों के व्यक्ति मेज-कुर्सी डाले हुए बैठे हैं। वे मतदाताओं को अपनी ओर खींचने के प्रयास में लगे हैं। वे मतदाताओं को अपने दल की प्रचार सामग्री बाँट रहे हैं। मतदान केंद्र के द्वार पर पुलिस का सख्त पहरा है। सभी अपना पहचानपत्र दिखाकर ही अंदर प्रवेश कर रहे हैं। मतदान केंद्र के बाहर लंबी कतार लगी है। केंद्र के अंदर चार पोलिंग बूथ बनाए गए हैं। प्रत्येक बूथ में पाँच सरकारी कर्मचारी नियुक्त हैं। वे सही मतदाताओं की पहचान करके 'इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन' से मतदान करने में उनकी मदद कर रहे हैं। इस बार चुनाव के दिन मेरा बड़ा अच्छा अनुभव हुआ। मेरी चुनाव की समझ बढ़ी। मैंने चुनाव की प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया। मैं भी अपने मताधिकार का प्रयोग सोच-समझकर कर सकूँगा।

8. शिक्षक दिवस पर मेरी भूमिका

(CBSE 2009 Outside)

संकेत बिंदु : (*i*) भूमिका क्या थी, (*ii*) कैसे निभाई, (*iii*) प्रभाव और परिणाम।

प्रतिवर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस दिन शिक्षकों का सम्मान किया जाता है। इस दिवस पर मेरी भूमिका एक शिक्षक के उत्तरदायित्व को निर्वाह करने की थी। मुझे अपने हिन्दी शिक्षक के स्थान पर नवीं-दसवीं कक्षाओं को पढ़ाना था। मैं घर से अपने पाठ्य-विषय की तैयारी भली प्रकार करके आया था। मैं बड़े आत्मविश्वास के साथ कक्षा में गया और हिंदी शिक्षक की भूमिका का निर्वाह सफलतापूर्वक किया। इसके बाद मुझे शिक्षकों के सम्मान में एक समारोह आयोजित करने का उत्तरदायित्व दिया गया। मैंने मंच संचालन की भूमिका का निर्वाह भी अत्यंत कुशलतापूर्वक किया। इस कार्यक्रम का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। बच्चों में अपने अध्यापकों के प्रति सम्मान का भाव जागृत हुआ। मेरी भूमिका सकारात्मक रही।

9. दुर्लभ होता है अच्छा मित्र

(CBSE 2009 Outside)

संकेत बिंदु : (*i*) अच्छा मित्र कौन, (*ii*) क्यों होता है दुर्लभ, (*iii*) कैसे करें चुनाव।

अच्छा मित्र एक खजाने के समान होता है। वह हमारी विपत्ति के समय में काम आता है। अच्छा मित्र वह है जो हमारी कमियों को तो सुधरवाता है तथा गुणों को प्रकाश में लाता है। कष्ट के समय में भी हमारे प्रति स्नेह बनाए रखने वाला मित्र सच्चा मित्र होता है। ऐसा मित्र मिलना दुर्लभ अवश्य होता है पर असंभव कतई नहीं होता। प्रयास करने पर ऐसा मित्र मिल अवश्य जाता है। सच्चे मित्र का चुनाव करते समय अत्यंत सावधानी की आवश्यकता होती है। कई लोग स्वार्थवश मित्रता करते हैं। ऐसे तथाकथित मित्र आपके सामने तो आपकी प्रशंसा करेंगे और पीठ पीछे बुराई करने से बाज नहीं आते। सच्चे मित्र की कसौटी विपत्ति होती है। जो इस पर खरा उतरता है, वही सच्चा मित्र होता है।

10. 20-20 क्रिकेट

(CBSE 2008 (C) Outside)

संकेत बिंदु : (*i*) यह क्रिकेट क्या है, (*ii*) इस क्रिकेट का रोमांच, (*iii*) भारत की उपलब्धि।

क्रिकेट के खेल में कई बदलाव आए हैं। पहले पाँच दिन का टैस्ट मैच होता था, फिर वन डे मैच शुरू हुआ। क्रिकेट का नवीनतम रूप है : 20-20 का क्रिकेट। इस रूप में कम समय लगता है तथा 5-6 घंटे में ही खेल का निर्णय हो जाता है। यह एक दिवसीय क्रिकेट का लघु रूप है। इसमें क्रिकेट प्रेमियों को लंबे समय तक परिणाम की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। इस

क्रिकेट का रोमांच भी बहुत है। युवा खिलाड़ियों को इस रूप ने बहुत लुभाया है। इससे उन्हें बहुत प्रोत्साहन मिला है। जाता है कि युवा खिलाड़ियों की रगों में खून दौड़ता है और वे 20-20 क्रिकेट में दौड़ते खून की रफ्तार से रन बनाते हैं। पूरे खेल में उत्साह बना रहता है। इसमें कुछ करने या मरने की स्थिति बनी रहती है। विकेट पर सभी की आँखें टिकी हैं। रन रफ्तार के साथ बनते हैं, इससे यह रोमांचक बना रहता है। 20-20 क्रिकेट में कई नए खिलाड़ी उभरे हैं। वे नए-रिकॉर्ड भी बना रहे हैं। यह खेल टीम के खिलाड़ियों की शक्ति का पाँच घंटे का शक्ति परीक्षण है। पूरे मैच में सक्रियता रोमांच बना रहता है। भारत 20-20 के प्रथम विश्व कप का चैंपियन है। इसके बाद IPL ने भारत का नाम विश्व में सर्वो स्थान पर ला दिया है।

11. आलस किया : सफलता गई

(CBSE 2008 (C) Outside)

संकेत बिंदु : (*i*) आलस क्या है, (*ii*) आलस की बुराइयाँ, (*iii*) सफलता के लिए क्या करें।

आलस किसी काम के प्रति लापरवाह होना या जी चुराने का नाम है। जब हम किसी काम में तत्परता न दिखाकर टालते जाते हैं और उसके प्रति अनिच्छा प्रकट करते हैं तब यह हमारा आलस ही होता है। आलस करने से अनेक बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। आलस से हमारे काम बिगड़ जाते हैं। आलसी व्यक्ति भाग्यवादी होते हैं और कर्म करने में विश्वास नहीं करते। इसी कारण उनका कोई भी काम समय पर पूरा नहीं होता। इससे शरीर में भी आलस छाया रहता है और हर समय अस्वस्थ अनुभव करते हैं। हमें सफलता प्राप्त करने के लिए आलस्य को दूर भगाकर परिश्रम करना चाहिए। परिश्रम करने से ही सभी प्रकार की सफलता प्राप्त होती है। पुरुषार्थी व्यक्ति ही परिश्रम कर सकता है। विश्व का इतिहास इस बात का गवाह है कि कठोर श्रम करने वालों ने ही सफलता के शिखर को चूमा है। परिश्रम ही जीवन का सारभूत तत्त्व है। अत: व्यक्ति को जीवन में अकर्मण्यता का परित्याग करके कठोर परिश्रम करना चाहिए। ध्यान रहे आलस किया तो सफलता हाथ से चली गई।

12. विपत्ति मित्रता की कसौटी है

संकेत बिंदु : (*i*) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी, (*ii*) मित्रों का संसर्ग, (*iii*) विपत्ति में जाँच।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में उसके संपर्क में विविध प्रकार के व्यक्ति आते हैं। इनमें कुछ मित्र भी होते हैं और कुछ शत्रु भी। कुछ व्यक्तियों का चरित्र स्पष्ट होता है और उनकी पहचान भली प्रकार हो जाती है। कुछ व्यक्ति दोहरे चरित्र वाले होते हैं। उनका प्रकट रूप और होता है और छिपा रूप उसके विपरीत होता है। दोनों प्रकार के व्यक्ति मित्र बनने का प्रयास भी करते हैं। कुछ लोग तो स्वार्थवश मित्र बनते हैं और स्वार्थपूर्ति होते ही किनारा कर जाते हैं। इस संसार में मित्र तो बहुत मिल सकते हैं, पर सच्चा मित्र मिलना कठिन होता है। मित्रता की कसौटी विपत्ति है। जो मित्र विपत्ति में आपका साथ देता है, वही सच्चा मित्र है। रहीमदास ने कहा भी है–

रहिमन विपदा हू भली, जो थोड़े दिन होय।
हित-अनहित या जगत में, जान परत सब कोय।।

विपत्ति की घड़ी में सच्चा मित्र आपको धैर्य बँधाता है और अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अनुसार आपकी सहायता भी करता है। जो मित्र विपत्ति की कसौटी पर खरा उतरता है, वह अमूल्य खजाने के समान है। आप उस पर पूरा भरोसा कर सकते हैं।

13. थोथा चना बाजे घना

संकेत बिंदु : (*i*) बड़बोलापन, (*ii*) कम बोलो, (*iii*) उदाहरण।

गंभीरता तथा कर्मठता और बड़बोलापन में विरोध है। जो व्यक्ति बहुत बढ़-चढ़कर बातें करता है, वह प्राय: गंभीर और कर्मठ नहीं होता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति गंभीर और कर्मठ होता है, वह प्राय: कम बोलता है। गंभीरता और कर्मठता व्यक्ति को इतना संयत और संतुलित बना देती है कि वह बिना सोचे-विचारे नहीं बोलता है, और जिस व्यक्ति को भली-भाँति सोच-समझकर, तोलकर बोलने की आदत पड़ गई, वह बहुत नहीं बोल सकता, बहुत बोलना भी नहीं चाहता। यह बात एक सार्वभौम सत्य है। इसीलिए विश्व की भाषाओं और बोलियों में तरह-तरह की लोकोक्तियों द्वारा लोगों ने इस सत्य को अभिव्यक्ति दी है। अंग्रेजी में "जो भौंकते हैं, वे काटते नहीं" *(Barking dogs seldom bite)* में भी यही बात है कि काम करने वाले बोलते नहीं। हिंदी में कहते हैं, "आधे जल का घड़ा छलकता जाता है।" *(अधजल गगरी छलकत जाय)*। इसमें भी वही कहा गया है। अंग्रेजी में "खाली बर्तन बहुत शोर मचाता है" *(Empty vessel makes much noise)* का भी मूल स्वर यही है। हिंदी की एक और "जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं" भी अपने कथ्य में इससे बहुत दूर नहीं है। इस तरह क्या घड़ा, बर्तन, बादल जैसे निर्जीव और क्या कुत्ता और आदमी जैसे सजीव, सभी अपने-अपने स्तर पर इसी कथ्य को दोहरा रहे हैं। चना के माध्यम से प्रस्तुत लोकोक्ति भी इसी बात को

रेखांकित कर रही है कि "आदमी तो आदमी चना भी थोथा होने पर बहुत बजता है।" अतः आदमी को चाहिए कि वह बहुत न बोले, नहीं तो सुनने वाले यही निष्कर्ष निकालेंगे कि वह निकम्मा और अगंभीर है।

14. परहित सरिस धर्म नहिं दूजा

संकेत बिंदु : (*i*) परोपकार का महत्त्व, (*ii*) उदाहरण, (*iii*) मनुष्य-पशु में अंतर।

'परहित' अर्थात् परोपकार से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं है। परोपकारी व्यक्ति को जहाँ दूसरों को सुखी बनाने का अवसर मिलता है, वहीं उसे स्वयं भी सुख-संतोष की प्राप्ति होती है। महाकवि रहीम ने परोपकार की महिमा का बखान करते हुए कहा है –

यों रहीम सुख होत है, उपकारी के अंग।
बाँटनवारे को लगै, ज्यों मेहंदी को रंग॥

जिस प्रकार मेहंदी रचाने वाले के अपने हाथ भी मेहंदी से रच जाते हैं, उसी प्रकार परोपकारी स्वयं भी परोपकार का सुख भोगता है। प्रकृति के कण-कण में परोपकार की भावना दृष्टिगोचर होती है। अनंत जलराशि का भार वहन करती हुई नदियाँ आजीवन परोपकार करती रहती हैं। पुष्प अपनी सुगंध बाँटते हैं तो वृक्ष लोगों के पत्थर खाकर भी उन्हें फल प्रदान करते हैं – "इतते वे पाहन हनैं, उततें वे फल देत।" सूर्य स्वयं तपकर हमें प्रकाश देता है। भारतीय संस्कृति में तो परोपकार को बहुत महत्त्व दिया गया है। इसे एक पावन कर्तव्य बताया गया है। दधीचि का अस्थिदान, शिवि का मांसदान आदि उदाहरण परोपकार की महिमा का गुणगान करने को पर्याप्त हैं। दूसरों की पीड़ा को दूर करना सबसे बड़ा परोपकार है। मनुष्य और पशु में अंतर बताते हुए कहा गया है –

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥

15. सबै सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय

संकेत बिंदु : (*i*) मनुष्य सामाजिक प्राणी, (*ii*) संसार शक्तिशाली का, (*iii*) कमजोर का कोई नहीं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन-निर्वाह के लिए मनुष्यों को एक-दूसरे का आश्रय लेना ही पड़ता है। इस समाज में सभी प्रकार के व्यक्ति मिलते हैं। प्रायः देखने में आता है कि यह संसार शक्ति का लोहा मानता है। इस संसार में चढ़ते सूर्य को नमस्कार किया जाता है। शक्तिशाली व्यक्ति की ही सब सहायता करते हैं, निर्बल की सहायता करने को कोई आगे नहीं आता। दिनकर जी ने सत्य ही कहा है –

सच पूछो तो शर में ही, बसती है दीप्ति विनय की।
संधि-वचन संपूज्य उसी का, जिसमें शक्ति विजय की॥

यह संसार सबल व्यक्तियों का है, निर्बलों को कोई नहीं पूछता। यदि हमें अपनी धाक जमानी है तो शक्तिशाली बनना होगा। सर्वत्र **जिसकी लाठी उसकी भैंस** वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। सबल राष्ट्र ही अपनी बात अन्य राष्ट्रों से मनवाते हैं। घर-परिवार में भी ताकतवर अधिक वस्तु ले जाता है और निर्बल उपेक्षा का शिकार होता है। अतः हमें इससे शिक्षा लेकर शक्ति-संपन्न बनने की प्रेरणा लेनी चाहिए, तभी हमारी बात सुनी जाएगी। निर्बल व्यक्ति या राष्ट्र सभी से उपेक्षा पाता है। कमजोर व्यक्ति कुछ नहीं पा सकता। कोई उसकी मदद नहीं करता। ताकतवर व्यक्ति के पीछे अनेक व्यक्ति खड़े हो जाते हैं और वह अपना इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

16. अपना हाथ जगन्नाथ अथवा दैव-दैव आलसी पुकारा

संकेत बिंदु : (*i*) अपनी शक्ति पर भरोसा, (*ii*) आलसी भाग्यवादी, (*iii*) स्वावलंबी सफल।

इस कहावत का अर्थ है – व्यक्ति को अपने हाथों की शक्ति पर भरोसा करना चाहिए। आत्मबल पर विश्वास करने वाला व्यक्ति कभी असफल नहीं होता। हमारे हाथों में अपार शक्ति है। हमें इसे पहचानना और सदुपयोग करना आना चाहिए। अकर्मण्य व्यक्ति ही भाग्य का सहारा लेते हैं। उनका तो इस कथन में विश्वास होता है –

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम॥

ऐसे व्यक्ति संकट की हर घड़ी में दैव-दैव पुकारा करते हैं। इसके विपरीत कर्मवीर व्यक्ति अपनी शक्ति के बलबूते संकट का सामना करते हैं। उनके लिए हरिऔध जी ने कहा है –

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं ॥

विश्व का इतिहास ऐसे कर्मठ व्यक्तियों के उदाहरणों से भरा पड़ा है जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने पुरुषा झंडे गाड़े। आलस्य व्यक्ति, समाज और देश के लिए कलंक है।

यदि जीवन में सदा सफलता पानी है तो अपनी शक्ति पर भरोसा रखो। पुरुषार्थी व्यक्ति कभी किसी की परवाह नहीं क

17. साँच को आँच नहीं

संकेत बिंदु : (*i*) सच को आँच नहीं, (*ii*) असत्यवादी क्षणिक सफल, (*iii*) उदाहरण।

सत्य बोलने वाले व्यक्ति पर कोई आँच नहीं आती अर्थात् कोई उसे हानि नहीं पहुँचा सकता। सत्यवादी व्यक्ति की समाज में बड़ी प्रतिष्ठा होती है। उसके यश का सौरभ मृत्यु के उपरांत भी फैला रहता है। सत्यवादी अपने यश रूपी शरीर से समाज में सदा जीवित रहता है। गाँधी जी तो 'सत्य को ही ईश्वर' मानते थे। ऐंसी कौन-सी सफलता है, ऐसी कौन-सी सिद्धि है जो सत्य-साधन से प्राप्त नहीं की जा सकती। यह भी सच है कि सत्य बोलने वाले व्यक्ति को पग-पग पर संघर्ष करना पड़ता है पर अंत में उसे विजय अवश्य प्राप्त होती है। संस्कृत में कहा भी गया है–"सत्यमेव जयते, नानृतम्" और "सत्येन रक्ष्यते धर्मः।"

यह कटु सत्य है कि असत्यवादी क्षणिक सफलता भले ही प्राप्त कर ले, पर अंततः उसे पराजय का सामना करना ही पड़ता है। हमारा इतिहास सत्यवादी महापुरुषों के उदाहरणों से भरा पड़ा है। महाराजा हरिश्चंद्र ने सत्य की रक्षा के लिए अनेक कष्ट सहे, पर सत्य को नहीं छोड़ा –

चंद्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार ।
पै दृढ़ व्रत हरिश्चंद्र कौ, टरै न सत्य विचार॥

भारतीय समाज ने सदा उन व्यक्तियों को सम्मान दिया गया है जिन्होंने सत्य के मार्ग पर चलकर आदर्श उपस्थित किया।

18. जैसी संगति बैठिए, तैसो ही फल होत

संकेत बिंदु : (*i*) मनुष्य सामाजिक प्राणी, (*ii*) संगति का प्रभाव, (*iii*) मूल्यांकन।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज से पृथक् नहीं रह सकता। समाज में भिन्न-भिन्न रुचि एवं प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। इनमें कुछ सदाचारी होते हैं तो कुछ दुराचारी। हमें मित्रता कायम करने से पूर्व मित्रों की आदतों एवं कार्य-शैली का बारीकी से अध्ययन करना चाहिए। हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि हम जिस प्रकार के लोगों की संगति में बैठेंगे ह वैसा ही फल प्राप्त होगा। अतः हमें अच्छे सदाचारी लोगों की ही संगति करनी चाहिए। बुरे लोगों की संगति में हम पर भी बु प्रभाव पड़ता है। काजल की कोठरी में प्रवेश करने पर हम पर कहीं-न-कहीं काला दाग अवश्य लगता है। दुर्जन व्यक्ति क अपनी दुष्प्रवृत्तियों को नहीं छोड़ते, चाहे वे भला बनने का ढोंग क्यों न कर लें, अतः संगति करने से पूर्व उस व्यक्ति के बारे आश्वस्त होना अत्यंत आवश्यक है। सत्संगति का हमारे चरित्र-निर्माण में बहुत बड़ा योगदान होता है। सत्संगति को स मंगलकारी कार्यों का मूल कहा गया है। हम जैसी संगति में उठते-बैठते हैं, हमारा मूल्यांकन उसी के अनुरूप होता है। अच्छ संगति सदा हितकारी होती है। रहीमदास ने सही कहा है–

कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन ।
जैसी संगति बैठिए, तैसो ही फल दीन ॥

19. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

संकेत बिंदु : (*i*) हिम्मत से सफलता, (*ii*) उदाहरण, (*iii*) गीता में कर्म का उपदेश।

एक उक्ति है–**'हारिए न हिम्मत, बिसारिए न हरि नाम'** अर्थात् व्यक्ति को कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। मानव जीव में सफलता उसी को मिलती है जो हिम्मत वाला होता है। जब हमें किसी काम में असफलता मिलती है तो हम निराशा सागर में डूबने लगते हैं। हमें यह स्मरण रखना चाहिए, जय-पराजय तो लगी ही रहती है। हमें अपना कर्तव्य पूरी तन्मयता सम्पन्न करना चाहिए। जीवन में संघर्ष अवश्यंभावी है, अतः साहस की बहुत अधिक आवश्यकता है। मनुष्य की इच्छा-शक्ति दृढ़ होनी चाहिए। संकल्पवान व्यक्ति ही सिद्धि प्राप्त करता है। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि नेपोलियन ने क

कि "आल्प्स पर्वत नहीं है" तो वास्तव में आल्प्स पर्वत नहीं रहा और उसकी सेना ने उसे आसानी से पार कर लिया। उसके शब्द-कोष में 'असंभव' शब्द था ही नहीं। भगवान श्रीकृष्ण ने भी 'गीता' में कर्म करने का उपदेश दिया है। हमें विषम परिस्थितियों में भी अपना मनोबल ऊँचा बनाए रखना चाहिए। मन के जीते रहने से ही जीत मिलती है।

20. विज्ञान के बढ़ते चरण

(CBSE S.P.-2008)

संकेत बिंदु : (*i*) विज्ञान के बढ़ते चरण : एक शुभ संकेत, (*ii*) बढ़ती वैज्ञानिक प्रगति एक चुनौती, (*iii*) संतुलन आवश्यक।

विज्ञान ने मानव को बहुत अधिक सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं। मानव जीवन से संबद्ध समस्त घटनाओं में यही तथ्य परिलक्षित होता है। विज्ञान ने विद्युत का आविष्कार करके मानव जीवन में क्रांति ही ला दी है। विद्युत ने मानव को प्रकाश और शक्ति प्रदान की, जिससे वह अनेक यंत्रों को चलाने में सफल रहा है। वह घर बैठे ही शिमला की ठंडी हवा खा सकता है तथा सर्दियों में कमरे को गर्म रख सकता है। विज्ञान ने कंप्यूटर का आविष्कार करके मानव के सभी कार्यों को सरल एवं गतिमान बना दिया है। अब तो लगभग प्रत्येक कार्यालय में कंप्यूटर अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। इसकी मदद से रिकार्ड को व्यवस्थित करने का कार्य अत्यंत सुगमता से संपन्न हो जाता है। हिसाब-किताब रखने, आँकड़ों के संग्रह एवं विश्लेषण करने, परीक्षा परिणाम तैयार करने, पुस्तक प्रकाशन करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। विज्ञान ने इंटरनेट के द्वारा विभिन्न कंप्यूटरों को जोड़ने का अद्भुत कार्य कर दिखाया है। फैक्स के माध्यम से पत्र या फाइल को तुरंत भेजा जा सकता है। इस प्रकार विज्ञान नित्य नए चमत्कार उत्पन्न कर रहा है।

अभिशाप : परंतु आज मानव के सामने एक बड़ा प्रश्न उपस्थित हो गया है कि विज्ञान के नित्य नए आविष्कारों के कारण यह बदली हुई स्थिति उसके लिए वरदान होगी या अभिशाप ? आज एक देश दूसरे देश को वैज्ञानिक शक्ति के आधार पर दबा रहा है। आज जिस देश के पास अधिक वैज्ञानिक शक्ति है, वह देश अपने को गौरवान्वित मान रहा है।

21. बढ़ती जनसंख्या

(CBSE S.P.-2008)

संकेत बिंदु : (*i*) जनसंख्या वृद्धि एक भयावह समस्या, (*ii*) परिणाम, (*iii*) कारण और समाधान।

भारत की जनसंख्या अत्यंत तीव्र गति से बढ़ती चली जा रही है। देश को आजादी मिलते समय भारत की आबादी कुल 35 करोड़ थी जो अब बढ़कर 107 करोड़ के आँकड़े को पार कर गई है। यह अंधाधुंध वृद्धि भयावह समस्याओं को जन्म दे रही है। इसके कारण शिक्षा, चिकित्सा, आवास तथा रोजगार की विकट समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। बेरोजगारी तीव्र गति से बढ़ रही है। स्वास्थ्य सेवाएँ बुरी तरह चरमरा गई हैं। सड़कों पर वाहनों की लंबी कतारें लगी रहती हैं। जमीन की भारी कमी हो गई है। मकान बनाने के लिए जमीन उपलब्ध नहीं हो पाती। चारों ओर भीड़ ही भीड़ है। जीवनोपयोगी वस्तुओं का अभाव बना रहता है। अगले वर्षों में यह समस्या और विकराल रूप धारण कर लेगी। इस बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण पाना अत्यंत आवश्यक है वरना प्रगति की रफ्तार में हम बुरी तरह पिछड़ जाएँगे। इस बढ़ती जनसंख्या ने संसाधनों का घोर अकाल उत्पन्न कर दिया है। हमारी योजनाएँ दम तोड़ती प्रतीत होती हैं। हमें जनसंख्या की अंधाधुंध वृद्धि पर तुरंत रोक लगानी होगी। इसके लिए अनेक उपाय बरतने होंगे। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण आवश्यक है।

22. दिल्ली की बदलती तस्वीर

(CBSE S.P.-2008)

संकेत बिंदु : (*i*) भूमिका, (*ii*) क्षेत्र एवं आबादी, (*iii*) बुनियादी सुविधाओं का विस्तार, (*iv*) शहरी सौंदर्यकरण।

दिल्ली भारत की राजधानी है। दिल्ली में 2010 में राष्ट्रमंडल खेल आयोजित किए जाने हैं अतः पिछले कुछ समय से दिल्ली की तस्वीर बदलती जा रही है। पिछले 4–5 वर्षों में दिल्ली में अनेक फ्लाईओवरों का निर्माण हुआ है। इससे यातायात अधिक सुचारु हुआ है। अब प्रमुख चौराहों पर जाम लगने की नौबत नहीं आती। इसके अतिरिक्त मेट्रो रेल ने दिल्ली की तस्वीर को काफी कुछ बदल दिया है। अब लोग अत्यंत आरामदायक यात्रा का आनंद लेने लगे हैं। यह रेल-सेवा विश्व स्तर की है। इसके अतिरिक्त दिल्ली में अनेक बहुमंजिला इमारतों का निर्माण भी हुआ है। इन इमारतों ने दिल्ली की सुंदरता को बढ़ाया है। द्वारका जैसी भव्य नगरी दिल्ली की शान है। यहाँ कृष्ण की द्वारका के दर्शन होते हैं। दिल्ली की सड़कें भी साफ-सुथरी रहने लगी हैं। दिल्ली को भारत के शहरों में प्रथम घोषित किया गया है। दिल्ली में फ्लाईओवरों के निर्माण, मेट्रो ट्रेन के परिचालन तथा सड़कों एवं हरियाली ने इसे विश्वस्तर का शहर बना दिया है। दिल्ली की पूरी तस्वीर 2010 तक बदल जाएगी। इस समय दिल्ली की आबादी डेढ़ करोड़ के आँकड़े को छू रही है अतः चारों ओर भीड़ ही भीड़ दिखाई देती है।

23. विद्यार्थियों पर दूरदर्शन का प्रभाव (CBSE S.P.-20

संकेत बिंदु : (*i*) प्रस्तावना, (*ii*) मनोरंजन के साधन के रूप में, (*iii*) शिक्षा के माध्यम के रूप में, (*iv*) निष्कर्ष।

विज्ञान की एक चमत्कारी देन है–दूरदर्शन अर्थात् टी.वी.। आज के युग में दूरदर्शन मनोरंजन का पर्याय बन चुका है। दूरद पर अनेक मनोरंजक और शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। दूरदर्शन पर नृत्य-संगीत, फिल्म तथा धारावाहिक आदि हम मनोरंजन करते हैं। हँसी के भी अनेक कार्यक्रम आ रहे हैं। इन कार्यक्रमों को सभी देखते हैं। विद्यार्थी वर्ग भी इन कार्यक्रमों को देखता है। उस पर दूरदर्शन के कार्यक्रमों का व्यापक प्रभाव देखने में आता है। यह प्रभाव सकारात्मक तथा नकारात्मक दो प्रकार का है। इनसे विद्यार्थी काफी कुछ नया सीखते हैं। उनका मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही वे भी ऐसा करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। शिक्षाप्रद कार्यक्रम उनका ज्ञान बढ़ाते हैं। दूरदर्शन का नकारात्मक प्रभाव है–अश्लीलता, हिंसा तथा फूहड़ फैशन को बढ़ावा देना। इनका युवा पीढ़ी पर शीघ्र प्रभाव पड़ता है। उन्हें इससे बचाना होगा। विद्यार्थी वर्ग को दूरदर्शन से वंचित नहीं रखा जा सकता। पर इसके कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार अवश्य लाया जाना चाहिए। दूरदर्शन के माध्यम से उनको शिक्षित किया जा सकता है और उनका स्वस्थ मनोरंजन किया जा सकता है। दूरदर्शन के कार्यक्रमों का उन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

24. प्रदूषण की समस्या (CBSE S.P.-2008)

संकेत बिंदु : (*i*) भूमिका, (*ii*) विकट समस्या, (*iii*) कारण, (*iv*) निवारण।

आज प्रदूषण की समस्या अत्यंत विकराल होती जा रही है। अब हमें शुद्ध वायु तक उपलब्ध नहीं है। वैज्ञानिक आविष्कारों और बढ़ते हुए औद्योगीकरण के फलस्वरूप वायु सर्वाधिक दूषित और विषैली हो चली है। बेशुमार धुआँ उगलते कल-कारखाने, सड़कों पर पेट्रोल और डीजल का विशाल धुआँ सारे पर्यावरण को रुग्ण, विषैला और निर्जीव बना रहा है। कल-कारखानों से निकलने वाले कचरे के ढेर नदी-नालों और जलाशयों के [illegible] को प्रदूषित और जहरीला बना रहे हैं। कचरे के बचे-खुचे ढेर से खुली भूमि पर सड़ते हुए जहरीले रसायनों और उनसे निकलने वाली विषैली गैसों से हवा, पानी और मिट्टी प्रदूषित हो रही है। अनवरत दौड़ती हुई बसों, रेलगाड़ियों, मोटरकारों और स्कूटरों का निरंतर बढ़ता उमड़ता हुआ भारी शोर कल-कारखानों के शोर को दुगुना करता हुआ हमें धीरे-धीरे बधिर बनाने पर तुला हुआ है। यदि इसी गति से हमारे पर्यावरण की स्थिति बद से बदतर होती गई तो मानव जीवन की समस्त आशाप्रद संभावनाएँ विनष्ट हो जाएँगी। अतएव आवश्यक है कि कल-कारखानों की चिमनियों को न केवल ऊँचा उठाया जाए, बल्कि उसकी गंदगी को रोकने का प्रयास किया जाए। यातायात के साधनों से भी धुआँ कम-से-कम निकले, विषैले पदार्थ और कूड़ा-कचरा नदियों तथा जलाशयों में प्रवाहित न किया जाए। अधिकाधिक वृक्ष लगाए जाएँ। हमारा पर्यावरण और उसके संरक्षण का प्रश्न ही हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है।

25. इंटरनेट

संकेत बिंदु : (*i*) जनसंचार का लोकप्रिय माध्यम, (*ii*) विविध उपयोग, (*iii*) दुरुपयोग।

इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया लेकिन तेजी से लोकप्रिय हो रहा माध्यम है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, पुस्तक, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण विद्यमान हैं। इसकी पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक है और इसकी गति का कोई जवाब नहीं। इसमें सारे माध्यमों का समागम है। इंटरनेट पर दुनिया के किसी भी कोने में छपने वाले अखबार या पत्रिका में छपी सामग्री को पढ़ा जा सकता है। इंटरनेट एक विश्वव्यापी जाल है, जिसके भीतर जमा करोड़ों पन्नों में से पलभर में अपने मतलब की सामग्री खोजी जा सकती है। यह एक अंतरक्रियात्मक साधन है अर्थात् इसमें आप एक मूकदर्शक मात्र नहीं होते। आप सवाल-जवाब, बहस आदि में भाग ले सकते हैं। आप चैट कर सकते हैं और मन हो तो अपना ब्लाग बनाकर पत्रकारिता की किसी बहस के सूत्रधार बन सकते हैं। इंटरनेट ने हमें मीडिया समागम यानी कनवरजेंस के युग में पहुँचा दिया है और संचार की नई संभावनाएँ जगा दी हैं। इंटरनेट ने पढ़ने-लिखने वालों के लिए, शोधकर्ताओं के लिए संभावनाओं के नए कपाट खोल दिए हैं और हमें विश्वग्राम का सदस्य बना दिया है। इन विशेषताओं के साथ-साथ इंटरनेट की कुछ खामियाँ भी हैं। इसमें लाखों अश्लील पन्ने भर दिए गए हैं जिनका बच्चों के कोमल मन पर बुरा असर पड़ सकता है। इंटरनेट का दुरुपयोग भी किया जा सकता है। ऐसे दुरुपयोग की अनेक घटनाएँ भी सामने आई हैं।

26. जनसंचार माध्यम

संकेत बिंदु : (*i*) संचार का अर्थ, (*ii*) जनसंचार का स्वरूप, (*iii*) जनसंचार के कार्य, (*iv*) जनसंचार के विविध उपकरण।

संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचना, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान है। संचार के कई प्रकार हैं जिनमें मौखिक और अमौखिक संचार के अलावा अंतः वैयक्तिक, अंतरवैयक्तिक, समूह संचार और जनसंचार प्रमुख हैं। जनसंचार सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के अलावा एजेंडा तय करने का काम भी करता है। जनसंचार माध्यमों का लोगों पर सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। 'संचार' शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है– चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना। संचार एक जटिल प्रक्रिया है। संचार प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता (रिसीवर) की भी अहम् भूमिका होती है। संचार का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकार है– जनसंचार (मास कम्युनिकेशन)। जब हम व्यक्तियों के समूह के साथ प्रत्यक्ष संवाद की बजाय किसी तकनीकी या यांत्रिक माध्यम के जरिए समाज के एक विशाल वर्ग से संवाद कायम करने की कोशिश करते हैं तो इसे जनसंचार कहते हैं। इसमें संदेश को यांत्रिक माध्यम से बहुगुणित किया जाता है ताकि उसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सके। इसके लिए हम अनेक उपकरणों का सहारा लेते हैं; जैसे– अखबार, रेडियो, टी.वी., सिनेमा या इंटरनेट। जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी पत्र-पत्रिकाएँ या प्रिंट मीडिया है। इसके बाद इलैक्ट्रोनिक मीडिया की भूमिका आती है। इनमें रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट प्रमुख हैं। इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया तथा तेजी से उभरा लोकप्रिय माध्यम है।

27. मोबाइल फोन

संकेत बिंदु : (*i*) भूमिका, (*ii*) मोबाइल फोन का स्वरूप, (*iii*) लाभ, (*iv*) हानियाँ।

विज्ञान ने हमें जो अनेक लाभकारी उपकरण प्रदान किए हैं, उनमें मोबाइल फोन सर्वाधिक लोकप्रिय है। अब तक जो टेलीफोन उपलब्ध थे, उनमें घर तक की सीमा थी। इनमें तारों का भी झंझट था। मोबाइल फोन के आने से इन सब झंझटों से मुक्ति मिल गई। इसे कहीं भी, कभी भी आसानी से ले जाया जा सकता है। एक छोटा-सा मोबाइल फोन अनेक प्रकार की सुविधाओं से लैस रहता है। आप दफ्तर में हों, घर में हों अथवा यात्रा पर हों, मोबाइल फोन के माध्यम से आप अपने सभी परिचितों के साथ जुड़े रहते हैं। अब तो मोबाइल फोनों के अति आधुनिक मॉडल आ गए हैं। ये रंगीन भी हैं तथा बोलने वाले का चित्र भी दिखाते हैं। मोबाइल फोन से आप फोटो भी खींच सकते हैं। बच्चे इससे तरह-तरह के खेल खेलते हैं। मोबाइल फोन आपात् स्थिति में बहुत काम की चीज है। इसे कहीं भी इस्तेमाल किया जा सकता है। हाँ, इसका अत्यधिक प्रयोग हानिकारक अवश्य है। इससे कान संबंधी और हृदय संबंधी बीमारियाँ हो सकती हैं। अपराधी और समाज विरोधी तत्त्व भी इसका दुरुपयोग कर सकते हैं लेकिन है यह कमाल की चीज।

28. दिल्ली मेट्रो : मेरा मेट्रो

संकेत बिंदु : (*i*) प्रारंभ, (*ii*) विभिन्न रूट, (*iii*) आरामदायक, (*iv*) विकास की संभावनाएँ।

दिल्ली मेट्रो का प्रारंभ 25 दिसंबर, 2002 को हुआ। तब केवल एक रूट सीलमपुर से तीस हजारी तक का शुरू किया गया था। आज दिल्ली में मेट्रो का जाल बिछ गया है। तीस हजारी से रिठाला, कश्मीरी गेट से दिल्ली विश्वविद्यालय, द्वारका से कनॉट प्लेस (राजीव चौक) तथा चाँदनी चौक तक के कई रूटों पर मेट्रो ट्रेन कुशलतापूर्वक संचालित हो रही है। सन् 2010 तक अन्य कई नए रूट भी शुरू हो जाएँगे। मेट्रो ट्रेन ने दिल्ली परिवहन व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। इससे दिल्ली विश्व स्तर का शहर बनने की ओर अग्रसर है। मेट्रो ट्रेन वातानुकूलित होने के कारण अत्यंत आरामदेह है। इसमें यात्रा करना सुरक्षित एवं आरामदायक है। इससे समय की बचत भी होती है। मेट्रो ट्रेन जमीन पर भी चलती है, जमीन के नीचे भी चलती है और खंभों पर भी चलती है। यह विश्व स्तर की सेवा है। इन ट्रेनों में ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन सिस्टम लगाया गया है। इसी सिस्टम के कारण यह संभव हो सका है कि मेटो ट्रेन को हर दो मिनट के बाद चलाया जा सके। इस सिस्टम से ट्रेन को चलाने के लिए ड्राइवर की भी जरूरत नहीं होती। इन ट्रेनों के लिए कंप्यूटरीकृत कंट्रोल सेंटर भी बनाया गया है। यह सेंटर अत्याधुनिक सिस्टम से लैस है। कुछ ही समय में मेट्रो ट्रेन एन.सी.आर. को जोड़ने वाली है। इसके विकास की अपार संभावनाएँ हैं।

29. हिंदी नेट संसार

संकेत बिंदु : (*i*) हिंदी में नेट पत्रकारिता का प्रारंभ, (*ii*) कौन-कौन से अखबार इस क्षेत्र में हैं?, (*iii*) हिंदी की वेबसाइट, (*iv*) समस्याएँ।

हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। इंदौर की 'नयी दुनिया समूह' से शुरू हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। इसके साथ ही हिंदी के अखबारों ने भी विश्वजाल में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू की। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नयी दुनिया', 'हिंदुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा' के वेब

प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है। आज
संस्करण शुरू हो चुके हैं। 'प्रभा साक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है। आज
पत्रकारिता की दृष्टि से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट 'बी.बी.सी.' है, यही एक साइट है जो इंटरनेट के मानदंडों के हिसाब से चल
रही है। हिंदी वेबजगत का एक अच्छा पहलू यह है कि इसमें कई साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं। अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिंदी
नेस्ट, सराय आदि अच्छा काम कर रहे हैं। कुल मिलाकर हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशवकाल में ही है। इसमें कई
समस्याएँ भी हैं। डायनमिक फौंट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की अधिकांश साइटें खुलती ही नहीं हैं।

30. विज्ञापन की दुनिया

संकेत बिंदु : (*i*) विज्ञापन से तात्पर्य, (*ii*) विज्ञापन के विविध रूप, (*iii*) विज्ञापनों से लाभ, (*iv*) हानियाँ।

आज का युग विज्ञापन का युग है। जिधर देखिए उधर विज्ञापन ही विज्ञापन दिखाई देते हैं। चाहे दूरदर्शन के कार्यक्रम हों, पत्र-पत्रिकाएँ हों, शहर की ऊँची-ऊँची दीवारें हों, बाजार हों या गलियाँ हों– सर्वत्र विज्ञापन नजर आते हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ एवं उत्पादक अपने उत्पादनों को प्रचारित करने के लिए भाँति-भाँति के विज्ञापनों का सहारा लेते हैं। विज्ञापनों के अभाव में कोई भी वस्तु बाजार में टिक नहीं पाती है। विज्ञापनों पर करोड़ों रुपए व्यय किए जाते हैं। विज्ञापनों के लिए बड़े-बड़े फिल्मी सितारों, खिलाड़ियों एवं अन्य क्षेत्रों के प्रसिद्ध व्यक्तियों का आश्रय लिया जाता है। विज्ञापनों को देखकर ही हमें नई-नई वस्तुओं के बारे में पता चल पाता है। इन्हें देखकर हमें वस्तुओं के सही चुनाव में मदद मिलती है। हाँ, कई विज्ञापनों में वस्तु की गुणवत्ता बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई जाती है। कई विज्ञापन हास्यास्पद एवं भ्रामक भी होते हैं। अब तो एक वस्तु दूसरी वस्तु का विज्ञापन बनकर रह गई है। एक वस्तु खरीदो तो दूसरी वस्तु मुफ्त में दी जाती है ताकि उसका विज्ञापन हो सके। कुछ विज्ञापनों में स्त्री को अश्लील रूप में दर्शाया जाता है, जिसे कतई सही नहीं कहा जा सकता।

31. आतंकवाद : एक चुनौती

संकेत बिंदु : (*i*) आतंकवाद विश्व की समस्या, (*ii*) यह निंदनीय है, (*iii*) आतंकवाद का रूप, (*iv*) भारत में आतंकवाद।

आतंकवाद आज विश्व के समक्ष उपस्थित गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह लोकतंत्र के विरुद्ध युद्ध और मानवता के विरुद्ध अपराध है। यह क्रूरतापूर्ण नरसंहार का एक नया रूप है जो राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता और अंतर्राष्ट्रीय कानून के लिए खतरा है। आतंकवाद एक प्रकार से इक्कीसवीं सदी में मानवता के लिए नई चुनौती है। आतंकवाद मानव जाति के विरुद्ध कुछ सिरफिरों की हिंसा है। आतंकवादी क्रूर, हृदयहीन और विवेकशून्य अपराधी हैं। वे बिना अपराध-बोध के खून खराबा और अपराध करते हैं। प्राय: सभी आतंकवादी किसी न किसी प्रशंसनीय उद्देश्य का दावा करते हैं, जिनके लिए संवैधानिक माध्यम प्रभावकारी नहीं होते। आतंकवादी सरकार को हतोत्साहित कर अंतत: जवाबी हिंसा के लिए विवश कर देते हैं। आतंकवादी एक व्यक्ति को मारकर दस व्यक्तियों को डराना चाहते हैं। पिछले कुछ दशकों से भारत आतंकवादी गतिविधियों से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में जम्मू-कश्मीर में सीमा-पार आतंकवाद में वृद्धि हुई है। अब इनका निशाना देश भर के प्रमुख नगर और प्रमुख संस्थान हैं।

32. अप्रभावी बाल मजदूरी कानून

संकेत बिंदु : (*i*) बाल मजदूरी नोटिफिकेशन, (*ii*) सरकार में इच्छाशक्ति का अभाव, (*iii*) बाल मजदूरी की रोकथाम के उपाय।

10 अक्टूबर, 2006 को सरकार ने बाल मजदूरी (प्रोहिबेशन एंड रेगुलेशन) एक्ट 1986 के नोटिफिकेशन का जो नाटक
किया, उसमें राजनीतिक इच्छाशक्ति का घोर अभाव दिख रहा था। एक तो इस कानून को लागू करने के लिए खतरनाक उद्योगों
की सूची बनाने में ही छह-सात साल लगा दिए और फिर जो सूची बनाई, वह भी आधी-अधूरी रही। सूची को आधा-अधूरा
इस आधार पर कहा जा सकता है कि जो उद्योग वास्तव में खतरनाक हैं, जिनमें काम करते रहने से बाल मजदूरी की प्रथा पर
कोई रोक मुमकिन नहीं है, वे उद्योग इस लिस्ट से गायब हैं। इस कानून में पहली गड़बड़ तो तब हुई जब इसमें प्रोहिबेशन एंड
रेगुलेशन जैसी शर्त जोड़ी गई। अरे भाई, बाल मजदूरी ही गलत है, उसके रेगुलेशन की बात कहाँ से आ गई ? आपको केवल
बाल मजदूरी पर रोक लगानी थी, पर आपने तो उसके नियम की व्यवस्था बना दी। कह दिया कि अगर कोई बच्चा परिवार का
हिस्सा बनकर काम करता है, तो वह बाल मजदूरी नहीं है। इस तरह से तो आपने बाल मजदूरी को वैध ही ठहराया है। दूसरी
अहम् बात यह है कि जिन उद्योगों को खतरनाक श्रेणी में रखा जाना था, उन्हें इस लिस्ट में नहीं जोड़ा गया। जैसे कि कालीन
उद्योग, खदान और ढाबे। आप कहेंगे कि चाय के ढाबे खतरनाक उद्योग कैसे हो गए, तो जो काम-धंधे बच्चों को शिक्षा से दूर

कर रहे हैं, वे सभी खतरनाक हैं। हमारे देश में 6-14 वर्ष के 10 करोड़ बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। वे अगर स्कूल में नहीं हैं, तो जाहिर है कि वे कहीं मजदूरी कर रहे हैं। वे या तो खेतों में काम कर रहे हैं या फिर निर्माण क्षेत्र में, ईंट-भट्टों पर काम कर रहे हैं। बाल मजदूरी पर रोकथाम अफसरशाही के भरोसे नहीं हो सकती। शिक्षा ही एकमात्र तरीका है, जो इस कुप्रथा पर अंकुश लगाएगी। अफसोस इसका है कि शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाने की बात संविधान संशोधन के बावजूद अटकी हुई है, उसका कानून नहीं बनाया जा रहा है। इसीलिए यह कहा जा सकता है कि कमी राजनीतिक इच्छा की है।

33. भूमंडलीकरण

संकेत बिंदु : (*i*) भूमंडलीकरण का अर्थ, (*ii*) इसका प्रभाव, (*iii*) इसका भारत पर प्रभाव।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में देश एक-दूसरे पर परस्पर निर्भर हो जाते हैं और लोगों के बीच की दूरियाँ घट जाती हैं। प्रौद्योगिक परिवर्तनों ने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भूमंडलीकरण दो क्षेत्रों पर बल देता है- उदारीकरण और निजीकरण। उदारीकरण का अर्थ है- औद्योगिक और सेवा क्षेत्र की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित नियमों में ढील देना और विदेशी कंपनियों को घरेलू क्षेत्र में व्यापारिक और उत्पादन इकाइयाँ लगाने हेतु प्रोत्साहित करना। निजीकरण के माध्यम से निजी क्षेत्र की कंपनियों को उन वस्तुओं के उत्पादन और सेवाओं की अनुमति प्रदान की जाती है, जिनकी पहले अनुमति नहीं थी। भूमंडलीकरण कई देशों में सरकार के स्थान पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को मुख्य भूमिका निभाने की छूट देता है। भूमंडलीकरण प्रत्येक देश को भिन्न-भिन्न ढंग से प्रभावित करता है। भूमंडलीकरण का प्रभाव विकसित और विकासशील देशों पर अलग-अलग होता है। इससे विकसित देशों में नौकरियाँ कम हुई हैं क्योंकि कई कंपनियों ने उत्पादन इकाइयाँ विकासशील देशों में स्थापित की हैं। भारत में भूमंडलीकरण के अंतर्गत विगत वर्षों में कई विदेशी कंपनियों द्वारा ऑटोमोबाइल सूचना प्रौद्योगिकी, इलैक्ट्रॉनिक्स, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के क्षेत्र में उत्पादन इकाइयाँ लगाई हैं।

34. मानवाधिकार

संकेत बिंदु : (*i*) ये अधिकार क्या हैं ?, (*ii*) इनका अधिकारी कौन है ?, (*iii*) ये अधिकार कौन-कौन से हैं ?

मानवाधिकार वे अधिकार हैं जिनके लिए प्रत्येक व्यक्ति मानव होने के नाते अधिकारी है। ये अधिकार मानव होने के नाते अंतर्भूत, अंतर्निहित और अदेय हैं। सभी मनुष्य जन्म से समान हैं और इसलिए नस्ल, लिंग, भाषा, क्षेत्र, राष्ट्रीयता, संपत्ति, जन्म या स्थिति के भेद-भाव बिना सभी इन अधिकारों के लिए समान रूप से अधिकृत हैं। मानवाधिकार सार्वभौमिक हैं और सभी मनुष्यों को मिलने चाहिएँ। मानव अधिकारों को प्रायः बुनियादी अधिकार, जन्मसिद्ध अधिकार, प्राकृतिक अधिकार और नैतिक अधिकार भी कहा जाता है। इनका अभिप्राय जीवन, स्वतंत्रता, समानता और व्यक्ति की गरिमा से संबंधित अधिकारों से है। मानवाधिकार प्रत्येक व्यक्ति के अस्तित्व, विकास और कल्याण के लिए होते हैं। मानवाधिकारों के दो पक्ष हैं- प्राकृतिक और कानूनी। मानवाधिकार सार्वभौमिक हैं तथा इन्हें सरकार द्वारा लागू किया जाता है। मानवाधिकारों को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार के एकल प्रलेख में संग्रहित किया गया है। इन अधिकारों में प्रमुख हैं-लोगों की स्वतंत्रता एवं सुरक्षा का अधिकार, दासता से मुक्ति का अधिकार, घूमने-फिरने का अधिकार, मताधिकार और अभिव्यक्ति का अधिकार, सामाजिक सुरक्षा पाने का अधिकार, सभी बच्चों के सर्वांगीण विकास का अधिकार आदि।

35. आपदा प्रबंधन

संकेत बिंदु : (*i*) आपदा प्रबंधन की आवश्यकता, (*ii*) दमकल सेवा, (*iii*) बहुमंजिली इमारतें, (*iv*) भूकंप मैनुअल।

बहुमंजिला इमारतों के महानगर में तेजी से बदल रही दिल्ली के लिए अब विश्वस्तरीय आपदा प्रबंधन (डिजास्टर मैनेजमेंट) का खाका तैयार किया जा रहा है। आपदाओं से निपटने के लिए पूरी दिल्ली में दमकल केंद्र ऐसी जगहों पर बनाए जाएँगे, जहाँ से दमकलें अपने एरिया में आग लगने, भूकंप या किसी अन्य प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए तीन से पाँच मिनट के अंदर घटनास्थल पर पहुँच जाएँगी।

आपदा प्रबंधन के लिए दिल्ली दमकल सेवा को नोडल एजेंसी बनाया गया है। मास्टर प्लान 2021 के तहत दमकल सेवा केंद्रों का बड़ा जाल बिछाया जाएगा। इस वक्त राजधानी की एक करोड़ से भी ज्यादा आबादी के लिए केवल 36 दमकल सेवा केंद्र हैं। पहले चरण में इनकी संख्या चार गुना करने पर विचार हो रहा है। इसके अलावा, बड़ी संख्या में दमकल चौकियाँ बनाई जाएँगी।

मास्टर प्लान के तहत तीन से चार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में एक दमकल चौकी और पाँच से सात किलोमीटर क्षेत्र में एक दमकल केंद्र स्थापित होगा। इस सेवा को नए आधुनिक उपकरणों से लैस किया जाएगा। बहुमंजिला इमारतों तक पहुँचने के लिए

निकट भविष्य में हेलीकॉप्टरों का इस्तेमाल करने की भी योजना पर गौर किया जाएगा। बहुमंजिली इमारतों के निर्माण को भूकं निरोधक बनाने के लिए कड़े नियम तो बनाए गए हैं, पर किसी भी आपात हालत से निपटने और ऐसी आपदाओं के प्रभावों क्र कम करने के लिए पूरी दिल्ली का सर्वे कर संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान की जाएगी। नई प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल को निर्मा नियमों के तहत अनिवार्य बनाया जा रहा है। अब किसी भी क्षेत्र में नगरीय सेवाओं के विकास का खाका तैयार करते वक्त सबद्ध एजेंसियों को दमकल विभाग से अग्नि नियंत्रण उपायों के लिए अनुमोदन लेना होगा। भारतीय भूकंप क्षेत्र मानचित्र के अनुसार दिल्ली भूकंप जोन-चार में आती है, जो कि दूसरा सबसे खतरनाक जोन है। अभी तक के रिकॉर्ड के मुताबिक राजधानी में 5.5 से 6.7 रिक्टर तीव्रता वाले कई भूकंप आए हैं।

इसे ध्यान में रखते हुए ही तैयार किए गए भूकंप मैनुअल और राष्ट्रीय भवन कोड के अनुसार संवेदनशील ढाँचों की फि से मरम्मत करने का फैसला किया गया है। खतरे की पहचान के आधार पर, जिसमें मृदा स्थितियाँ, भूकंप की तीव्रता की संभावना, क्षेत्र की भू-आकृति संबंधी स्थितियों का आकलन कर दिल्ली में भूमि उपयोग क्षेत्र का वर्गीकरण किया जाएगा।

36. दूरदर्शन : शिक्षा एवं मनोरंजन का साधन

संकेत बिंदु : (*i*) शिक्षा का माध्यम, (*ii*) समाचार पाने का साधन, (*iii*) मनोरंजन के क्षेत्र में प्रगति, (*iv*) लोकप्रियता।

दूरदर्शन शिक्षा एवं मनोरंजन का प्रमुख साधन है। दूरदर्शन के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रम निरंतर प्रसारित होता रहा है। विद्यालय एवं कॉलेज के छात्रों के लिए पाठ्य-सामग्री का प्रसारण अत्यंत योग्य अध्यापकों द्वारा होता है। इसके द्वारा सर्वश्रेष्ठ अध्यापकों की सेवाएँ सभी छात्रों को उपलब्ध हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रौढ़, बच्चों एवं अन्य लोगों के लिए भी पाठ तैयार कराए जाते हैं और उनका प्रसारण दूरदर्शन पर होता है। इस शैक्षिक सामग्री के अतिरिक्त किसानों के लिए कृषि-ज्ञान संबंधी जानकारी भी दूरदर्शन के माध्यम से दी जाती है। कई बार विशेषज्ञों की सेवाएँ भी इस कार्य के लिए ली जाती हैं। महिलाओं के लिए ज्ञानवर्धक सामग्री प्रसारित की जाती है। चिकित्सा-जगत् की नवीनतम जानकारी भी दूरदर्शन पर उपलब्ध कराई जाती है। विश्व के नवीनतम समाचार प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम दूरदर्शन ही है। इसमें हम घटनाओं का सचित्र विवरण प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि हम इन घटनाओं के प्रत्यक्ष गवाह हैं। इसके माध्यम से प्रमुख व्यक्ति अपना संदेश जनता तक पहुँचाते हैं। राष्ट्रीय-उत्सवों का सीधा प्रसारण भी दूरदर्शन पर होता है। मनोरंजन के क्षेत्र में तो दूरदर्शन ने क्रांति ही ला दी है। दूरदर्शन पर विभिन्न प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। फीचर फिल्म, चित्रहार, हास्य-व्यंग्य के कार्यक्रम तथा अनेक प्रायोजित कार्यक्रम इस पर प्रसारित होते हैं। 'रामायण' और 'महाभारत' ने तो लोकप्रियता के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। इन कार्यक्रमों को देखने के लिए लोग सब काम छोड़ देते थे। इसके अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी बहुत लोकप्रिय हुए हैं। दूरदर्शन पर मैचों का प्रसारण भी होता है। रंगीन दूरदर्शन ने तो इसकी लोकप्रियता बहुत बढ़ा दी है। दूरदर्शन के कार्यक्रमों में गुणात्मक सुधार आ रहा है। अब दूरदर्शन के अनेक चैनल कार्य कर रहे हैं। केबल की सहायता से दूरदर्शन पर अनेक कार्यक्रम देखे जा सकते हैं। दूरदर्शन ने हमारे पारिवारिक जीवन पर बड़ा प्रभाव डाला है। इसके कुछ दुष्परिणाम भी देखने में आ रहे हैं। इन पर नियंत्रण करना परमावश्यक है।

37. नर हो, न निराश करो मन को

संकेत बिंदु : (*i*) मन में चाह का होना, (*ii*) संघर्ष का युग, (*iii*) इतिहास से उदाहरण, (*iv*) हिम्मती एवं आशावादी दृष्टिकोण।

व्यक्ति के मन में जिस चीज की चाहना होती है, वह किसी-न-किसी राह पर चलकर उसे पा ही लेता है। इस संघर्ष-युग में व्यक्ति कई बार परिस्थितियों से टकराते-टकराते थक-सा जाता है। उसमें ऐसा भाव आ जाता है कि अब वह आगे नहीं बढ़ पाएगा। ऐसी मनोदशा में वह निराश हो जाता है। वह परिस्थितियों के सम्मुख हार मानने को विवश-सा हो जाता है, किंतु यह स्थिति ठीक नहीं है, क्योंकि कहा गया है– **"नर हो, न निराश करो मन को।"** मनुष्य होकर मन में निराशा का भाव नहीं लाना चाहिए। अंग्रेजी में एक कहावत है– 'If there is a will, there is a way.' अर्थात् जहाँ चाह है वहाँ राह अवश्य है। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि नेपोलियन ने सेना से कहा कि 'आल्पस (पर्वत) नहीं हैं' और आल्पस नहीं रहा। उसके यह कहते ही उसकी सेना ने आनन-फानन में आल्पस पार कर लिया। वह कहता था–'**असंभव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में होता है।**' मनुष्य आगे बढ़ने का जो प्रयास करता है वह मन की हिम्मत और आशा के बलबूते पर ही करता है। यदि मनुष्य का मन हार जाता है तो वह निराश हो उठता है। उस समय उसे चारों ओर निराशा का वातावरण प्रतीत होता है। वह अपनी पराजय स्वीकार कर बैठता है, लेकिन उसे यह सोचकर संघर्षशील रहना चाहिए कि जीवन में हार-जीत लगी ही रहती

हैं। संघर्ष से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। हमें भी जीवन में आशावादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। आशावादी दृष्टिकोण हमारे अंदर आत्मविश्वास का संचार करता है। आप अपना लक्ष्य जितना ऊँचा रखोगे, सफलता का तीर उतना ही ऊँचा जाएगा, क्योंकि जहाँ चाह होती है, वहाँ राह निकल ही आती है।

38. महानगरीय जीवन

संकेत बिंदु : (*i*) महानगरों का जीवन, (*ii*) उच्च वर्ग और मध्य वर्ग का जीवन, (*iii*) महानगरों की समस्याएँ, (*iv*) महानगरों में सुविधाएँ।

वर्तमान समय में भारत के अनेक प्रमुख नगर महानगरों में परिवर्तित होते जा रहे हैं। एक नई महानगरी सभ्यता पनपती जा रही है। महानगरों का जीवन जहाँ एक ओर आकर्षित करता है, वहीं वह अभिशाप से कम नहीं है। आधुनिकता की चमक-दमक इन महानगरों में दृष्टिगोचर होती है। यही आकर्षण सामान्य नगर-कस्बे एवं गाँवों के लोगों को महानगर की ओर खींचता है, पर यहाँ की समस्याएँ उन्हें ऐसे चक्र में उलझाकर रख देती हैं जिससे बाहर निकलना आसान नहीं होता। महानगरों का जीवन जहाँ वरदान है, वहीं अभिशाप भी है। इसके साथ-साथ निम्न-मध्यवर्ग महानगरीय जीवन के दुष्चक्र में पिसकर रह गया है। बढ़ती जनसंख्या और सिकुड़ते साधनों ने उनका जीवन दूभर बना दिया है। महानगरों में अनेक समस्याओं से उन्हें जूझना पड़ता है। आवास की समस्या बड़ी विकराल होती जा रही है। झोंपड़पट्टीनुमा बस्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। एक ओर विशाल अट्टालिकाएँ खड़ी हैं तो दूसरी ओर गंदी बस्तियाँ जन्मती जा रही हैं। महानगरों में खाने-पीने की कठिनाई का भी सामना करना पड़ता है। न तो वहाँ स्वच्छ जल मिल पाता है, न शुद्ध दूध। हर वस्तु प्रदूषित मिलती है। यही कारण है कि महानगरों में लोग प्रायः बीमार रहते हैं। न उन्हें खुली वायु साँस लेने के लिए उपलब्ध हो पाती है और न धूप। कुछ लोगों को छोड़कर अधिकांश लोगों को पौष्टिक भोजन भी उपलब्ध नहीं होता। महानगरों में शिक्षा की सुविधाएँ अवश्य उपलब्ध हैं पर इस क्षेत्र में भी पर्याप्त भेदभाव है। धनिक वर्ग को पब्लिक स्कूलों की सुविधाएँ मिल जाती हैं, जबकि निम्न-मध्य वर्ग सामान्य सरकारी स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने के लिए विवश है। वह पब्लिक स्कूलों की महँगी शिक्षा झेल नहीं पाता। उच्च शिक्षा की व्यवस्था महानगरों में एक वरदान के रूप में है। इसका लाभ निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग भी उठाते हैं। महानगरों में सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी होती रहती हैं। इसमें रुचि रखने वालों को यहाँ का जीवन वरदान से कम प्रतीत नहीं होता। उन्हें आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है, पर महानगर के व्यस्त जीवन में अपने लिए स्थान बना पाना इतना सहज नहीं है। उसके लिए अथक परिश्रम और लगन की आवश्यकता होती है।

39. दैव-दैव आलसी पुकारा

संकेत बिंदु : (*i*) कहावत का अर्थ, (*ii*) अकर्मण्य व्यक्ति भाग्य के भरोसे, (*iii*) आलसी व्यक्ति दैव-दैव पुकारते हैं।

इस कहावत का अर्थ है–अपने हाथों की शक्ति पर भरोसा करना चाहिए। जिस व्यक्ति में आत्म-विश्वास है, वह व्यक्ति जीवन में कभी असफल नहीं हो सकता; हाँ, जो व्यक्ति हर बात के लिए दूसरों का मुँह जोहता है, उसे अनेक बार निराशा का सामना करना पड़ता है। अकर्मण्य व्यक्ति ही भाग्य के भरोसे बैठता है। कर्मवीर व्यक्ति तो बाधाओं की उपेक्षा करते हुए अपने बाहुबल पर विश्वास रखते हैं। केवल आलसी लोग ही हमेशा दैव-दैव पुकारा करते हैं और कर्मशील व्यक्ति 'दैव-दैव आलसी पुकारा' कहकर उनका उपहास किया करते हैं। जीवन में सफलता केवल पुरुषार्थ से ही पाई जा सकती है। अकर्मण्य व्यक्ति सदा दूसरों का मुँह ताका करता है। वह पराधीन हो जाता है। स्वावलंबी व्यक्ति अपने भरोसे रहता है। वे तो असंभव को भी संभव बना देते हैं। पुरुषों में सिंह के समान उद्योगी पुरुष को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है। 'दैव देगा' ऐसा कायर पुरुष कहा करते हैं। दैव को छोड़कर अपनी भरपूर शक्ति से पुरुषार्थ करो और फिर भी कार्य सिद्ध न हो तो सोचिए कि कहाँ और क्या कमी रह गई है। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। इससे जीवन का पतन हो जाता है। आलसी व्यक्ति न व्यापार कर सकता है, न शिक्षा ग्रहण कर सकता है। वह तो कायर बन जाता है। संसार की समस्त बुराइयाँ उसे बुरी तरह घेर लेती हैं। उसका जीवन निरर्थक हो जाता है। आलसी मनुष्य ही दैव या प्रारब्ध का सहारा लेते हैं। कायर मनुष्य का जीवन निन्दित एवं तिरस्कृत होता है। उससे समस्त समाज घृणा करता है।

40. महँगाई की समस्या

संकेत बिंदु : (*i*) वर्तमान समय में महँगाई, (*ii*) जीवन उपयोगी वस्तुएँ, (*iii*) बढ़ती महँगाई के कारण।

वर्तमान समय में निम्न-मध्य वर्ग महँगाई की समस्या से त्रस्त है। यह महँगाई रुकने का नाम ही नहीं लेती, यह तो सुरसा की तरह बढ़ती ही चली जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार का महँगाई पर कोई नियंत्रण रह ही नहीं गया है। रोटी,

कपड़ा और मकान प्रत्येक व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताएँ हैं। वह इन्हें पाने के लिए दिन-रात प्रयास करता रहता है। एक सामान्य व्यक्ति केवल इतना चाहता है कि उसे जीवनोपयोगी वस्तुएँ आसानी से और उचित दर पर उपलब्ध होती रहें। सभी राजनीतिक दल महँगाई को चुनावी मुद्दा बनाते हैं, पर सत्ता में आने के पश्चात् या तो उसे भूल जाते हैं या कुछ कर पाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। महँगाई अथवा मूल्य-वृद्धि का सीधा संबंध अर्थव्यवस्था से जुड़ा है। विकासशील देशों के पास धन का अभाव होता है और जनता अपनी आय में वृद्धि चाहती है। इसके परिणामस्वरूप मुद्रा का फैलाव बढ़ता है। दामसूचक सिक्के की कीमत घट जाती है और महँगाई उसी अनुपात में बढ़ जाती है। जब यह महँगाई या मूल्य-वृद्धि नियंत्रण से बाहर हो जाती है, तब यह समस्या का रूप ले लेती है। महँगाई बढ़ने के कई कारण हैं। उत्पादन में कमी तथा माँग में वृद्धि होना महँगाई का एक प्रमुख कारण है। माँग और पूर्ति के असंतुलित होते ही महँगाई को अपने पाँव फैलाने का अवसर मिल जाता है। कभी-कभी सूखा, बाढ़, अतिवृष्टि जैसे प्राकृतिक प्रकोप भी उत्पादन को प्रभावित करते हैं। जमाखोरी भी महँगाई बढ़ाने का प्रमुख कारण है। जमाखोरी से शुरू होती है कालाबाजारी। दोषपूर्ण वितरण प्रणाली, अंधाधुंध मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति तथा सरकारी अंकुश का अप्रभावी होना भी महँगाई के कारण हैं। कालाबाजारी के अंतर्गत व्यापारी पहले वस्तुओं का नकली अभाव उत्पन्न करते हैं और फिर जब उन वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है, महँगे दामों पर बेचते हैं। इस पर नियंत्रण पाने के उपाय करने नितांत आवश्यक हैं। सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

41. सत्संगति

संकेत बिंदु : (*i*) सत्संगति से तात्पर्य, (*ii*) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी, (*iii*) कवियों के उदाहरण, (*iv*) बुरी संगति का दुष्प्रभाव।

सत्संगति अच्छी संगति को कहते हैं। दूसरे शब्दों में सत्संगति उन अच्छे और सदाचरण वाले मनुष्यों के अच्छे साथ को कहते हैं, जिनके संग हम उठते-बैठते हैं और बातचीत करते हैं। सत्संग का मनुष्य के जीवन पर गहरा असर पड़ता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता। बचपन से ही मनुष्य को एक-दूसरे के साथ मिलने-बैठने और बातचीत करने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है। इसी को संगति कहा जाता है। बचपन में बालक अबोध होता है। उसे अच्छे-बुरे की पहचान नहीं होती। जब वह एक-दूसरे के संपर्क में आता है तब उसके मन की कोरी स्लेट पर दूसरों का प्रभाव अंकित हो जाता है। वह दूसरों की संगति में उनके कार्यों का अनुकरण करता है। यदि वह अच्छी संगति में रहता है तो उस पर अच्छे संस्कार पड़ते हैं और यदि उसकी संगति बुरी है तो उसकी आदतें भी बुरी हो जाती हैं। जहाँ सत्संगति है वहीं स्वर्ग है। दुष्ट आत्माओं के निवास को तो नरक ही कहा जाएगा, चाहे वह स्वर्ग में ही क्यों न हो। सत्संग ही परमतीर्थ है। सत्संग ही परमपद अर्थात् मुक्ति है, अतः सब कुछ छोड़कर सत्संग का ही सेवन करो। मनुष्य, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, संगति से ही पहचाना जाता है। संगति की छाप उसके आचरण पर पड़ती है।

42. ऊर्जा-बचत : हमारा उत्तरदायित्व

- *ऊर्जा-बचत क्यों आवश्यक है ?*
- *हम किस प्रकार सहायक हो सकते हैं ?*
- *उपयोगी सुझाव*

ऊर्जा की बचत करना हम सभी का दायित्व है। ऊर्जा घटती जा रही है। इसे बचाकर रखना है। ऊर्जा अनेक साधनों से प्राप्त होती है। बिजली, गैस, पैट्रोल-डीजल आदि साधनों से ऊर्जा मिलती है। सूर्य ऊर्जा का प्राकृतिक और एकमात्र साधन है। हमें सभी साधनों से ऊर्जा प्राप्त करनी चाहिए। ऊर्जा बचाने में हम कई प्रकार से सहायक हो सकते हैं। हमें ऊर्जा को व्यर्थ के कामों में खर्च नहीं करना चाहिए। बहुत आवश्यक होने पर ही ऊर्जा खर्चनी चाहिए। ऊर्जा की बचत के लिए सौर ऊर्जा का प्रयोग करना इस दिशा में आवश्यक कदम है।

43. बच्चों की शिक्षा में माता-पिता की भूमिका

- शिक्षा का महत्त्व
- माता-पिता का उत्तरदायित्व
- माता-पिता का कर्तव्य-निर्वाह।

शिक्षा का बहुत महत्त्व है। शिक्षा के बिना मनुष्य पूँछविहीन पशु के समान है। शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करती है। बच्चे को शिक्षित करने में सबसे पहली भूमिका माता-पिता की ही है। माता-पिता बच्चे को अच्छे संस्कार प्रदान करते हैं। बच्चों को नैतिकता का पाठ माता-पिता ही पढ़ाते हैं। माता-पिता के बाद स्कूल का नंबर आता है। माता-पिता को अपने कर्तव्य का निर्वाह भली प्रकार करना चाहिए। माता-पिता बच्चे को अच्छी या बुरी, जैसी चाहे, शिक्षा दे सकते हैं। यह माता-पिता पर ही निर्भर है कि वे बच्चे के व्यक्तित्व का निर्माण किस प्रकार का करें। माता-पिता को अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति पूरी तरह से सचेत रहना चाहिए।

अभ्यासार्थ (Practice)

निर्देश : दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए :

1. महानगरों का जीवन

(*i*) महानगरों का स्वरूप, (*ii*) महानगरों का जीवन, (*iii*) महानगरों की समस्याएँ, (*iv*) समाधान।

2. बेकारी की समस्या

(*i*) बेकारी से तात्पर्य, (*ii*) बेकारी के विविध प्रकार, (*iii*) बेकारी के कारण, (*iv*) समाधान।

3. आज की नारी

(*i*) नारी का वर्तमान स्वरूप, (*ii*) नारी और नौकरी, (*iii*) नारी पर बढ़ते तनाव, (*iv*) नारी स्वतंत्रता।

4. कैसा शासन, बिन अनुशासन

(*i*) अनुशासन का अर्थ, (*ii*) देश की शासन व्यवस्था, (*iii*) अनुशासनहीनता, (*iv*) दुष्प्रभाव।

5. पेयजल की समस्या

(*i*) पेयजल की आवश्यकता, (*ii*) पेयजल की कमी, (*iii*) लोगों के जीवन पर प्रभाव, (*iv*) समस्या का समाधान।

6. अपहरण की समस्या

(*i*) समस्या का स्वरूप, (*ii*) बच्चों का अपहरण, (*iii*) अपहरण के कारण, (*iv*) समस्या का समाधान।

7. महानगरों में बढ़ती यौन शोषण की घटनाएँ

(*i*) महानगरों में कामकाजी नारी का बढ़ता प्रतिशत, (*ii*) महिलाओं की असुरक्षा, (*iii*) कारण, (*iv*) समाधान।

8. प्राकृतिक आपदाएँ

(*i*) प्राकृतिक आपदाओं का स्वरूप, (*ii*) कारण, (*iii*) प्रभाव, (*iv*) समाधान।

9. विज्ञापन और हम

(*i*) विज्ञापनों का स्वरूप, (*ii*) विज्ञापनों का हम पर प्रभाव, (*iii*) लाभ, (*iv*) हानियाँ।

10. विद्यार्थी और फैशन

(*i*) विद्यार्थी का स्वरूप, (*ii*) फैशन का प्रचलन, (*iii*) विद्यार्थी पर फैशन का प्रभाव, (*iv*) बचने के उपाय।

11. पुस्तकालय

(*i*) पुस्तकालय से तात्पर्य, (*ii*) पुस्तकालयों की आवश्यकता, (*iii*) प्रकार, (*iv*) लाभ।

12. आदर्श नागरिक

(*i*) आदर्श नागरिक कौन?, (*ii*) गुण, (*iii*) देश की उन्नति में योगदान, (*iv*) निष्कर्ष।

13. दैव-दैव आलसी पुकारा

(*i*) सूक्ति का अर्थ, (*ii*) आलसी व्यक्ति का स्वरूप, (*iii*) आलस्य के दुष्परिणाम, (*iv*) शिक्षा।

14. मेरा प्यारा भारत

(*i*) भारत का स्वरूप, (*ii*) प्यारा लगने के कारण, (*iii*) देश के प्रति कर्तव्य, (*iv*) विश्व में अनोखा देश।

अध्याय 4
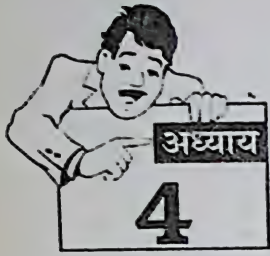
पत्र-लेखन

(Letter Writing)

पत्र हमारे जीवन में विचारों के आदान-प्रदान का सरल और सशक्त साधन है। लेखन की अन्य विधाओं से पत्र इस बात में भिन्न है कि यह किसी-न-किसी व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करके लिखा जाता है। पत्र लिखने में स्थान और तिथि का आरंभ में ही उल्लेख रहता है। लिखने वाले का नाम, पता भी रहता है। संबोधन द्वारा इस बात का भी पता लग जाता है कि पत्र-लेखक और संबोधित व्यक्ति के मध्य क्या संबंध है।

पत्र-लेखन की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं :

1. **सरलता** : पत्र की भाषा सरल, सुबोध और ग्रहणशील होनी चाहिए। उसमें स्पष्टता का होना आवश्यक है। जटिल और अस्पष्ट भाषा पत्र के कथ्य को निरर्थक बना देती है। पत्र में लेखक का आशय पूर्णत: व्यक्त होना अपेक्षित है।
2. **संक्षिप्तता** : पत्र-लेखक को अनावश्यक विस्तार से बचने का प्रयास करना चाहिए। उसे **'गागर में सागर'** भरने का प्रयास करना चाहिए। लंबे पत्र उबाऊ हो जाते हैं।
3. **निश्चयात्मकता** : पत्र में लेखक का दुविधाग्रस्त होना नहीं झलकना चाहिए। उसे अपनी बात निश्चयपूर्वक कहनी चाहिए।
4. **शिष्टता** : पत्र-लेखक का शिष्ट होना अच्छा गुण माना जाता है। असहमति होने पर भी लेखक को कटु भाषा का प्रयोग न करके शिष्ट भाषा में अपना विरोध जताने की कला आनी चाहिए।

आवश्यकता और स्थिति के अनुसार पत्र अनेक प्रकार के होते हैं, किंतु उन्हें मोटे तौर पर निम्नलिखित **दो वर्गों** में विभाजित कर लेना सुविधाजनक होगा :

1. पारिवारिक पत्र *(Family letters)* 2. औपचारिक पत्र *(Formal letters)*

1. पारिवारिक पत्र : पारिवारिक सदस्यों, संबंधियों या मित्रों के बीच होने वाला पत्र-व्यवहार पारिवारिक पत्रों की श्रेणी में आता है। घरेलू बातें तथा आत्मीयता की भावना इन पत्रों की विशेषता होती है। इन्हें अनौपचारिक *(Informal)* या निजी पत्र *(Personal letter)* भी कहते हैं।

2. औपचारिक पत्र : ये पत्र अनेक प्रकार के हो सकते हैं, जैसे–

1. आवेदन-पत्र *(Application)* 2. शिकायती पत्र *(Complaint letter)*
3. संपादक को पत्र *(Letter to Editor)* 4. व्यावसायिक पत्र *(Business letter)*
5. अवसर विशेष पर लिखित पत्र *(Letter on special occasion)*

1. आवेदन पत्र : ये पत्र किसी विशेष कार्य के लिए प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य, किसी कार्यालय के अधिकारी आदि को लिखे जाते हैं। इनमें कोई-न-कोई प्रार्थना की गई होती है; जैसे– अवकाश के लिए, फीस माफी के लिए, नौकरी के लिए आदि।

2. शिकायती पत्र : सार्वजनिक व्यवस्था में किसी गड़बड़ी या व्यक्तिगत कठिनाई की ओर ध्यान आकृष्ट कराने के लिए लिखे गए पत्र शिकायती पत्र कहलाते हैं। जैसे– बिजली संबंधी अनियमितता की शिकायत, सफाई व्यवस्था में कमी की शिकायत आदि।

3. संपादक को पत्र : समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर किसी सार्वजनिक या जनहित समस्या की ओर सरकार अथवा समाज का ध्यान आकृष्ट कराया जाता है। संपादक से उस पत्र को अपने समाचार पत्र में प्रकाशित करने का अनुरोध किया जाता है।

4. **व्यावसायिक पत्र :** ऐसे पत्र विभिन्न व्यावसायिक कार्यों के संबंध में लिखे जाते हैं, जैसे– पुस्तकें मँगवाना, गलत माल की शिकायत करना आदि।

5. **अवसर विशेष के पत्र :** इसके अंतर्गत सामान्यत: वे पत्र आते हैं जिन्हें विशेष अवसर पर लिखकर या छपवाकर भेजा जाता है। जैसे– विवाह का निमंत्रण-पत्र, बधाई-पत्र, शोक-संवेदना पत्र आदि।

पत्र के आवश्यक अंग *(Parts of letter)*

1. **भेजने वाले का पता**	:	सामान्य पत्रों में ऊपर दाईं ओर भेजने वाले का पता लिखते हैं, जिससे पत्र पाने वाले को उत्तर देने के लिए सही पता ज्ञात हो सके।
2. **पत्र भेजने की तिथि**	:	पत्र-भेजने के पते के नीचे तिथि, महीना और वर्ष लिखा जाता है।
3. **संबोधन और अभिवादन**	:	इसे पत्र में ऊपर बाईं ओर लिखा जाता है। पारिवारिक पत्रों में संबंध के अनुसार संबोधन लिखा जाता है। जैसे– पूज्य पिताजी, प्रिय मित्र। व्यावसायिक या सरकारी पत्रों में महोदय/ प्रिय महोदय जैसे संबोधन लिखे जाते हैं। अभिवादन के लिए संबंध और मर्यादा के अनुसार शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे– चरण-स्पर्श, सादर प्रणाम, नमस्ते, आशीर्वाद आदि।
4. **विषय सामग्री**	:	यह पत्र का मुख्य भाग है। इसमें पत्र का विवरण अलग-अलग अनुच्छेदों में दिया जाता है।
5. **अंतिम भाग**	:	पत्र के अंत में दाहिनी ओर पत्र लिखने वाला अपने संबंध के अनुरूप शब्द, जैसे– आपका प्रिय पुत्र, प्रिय मित्र, भवदीय, आपका कृपाकांक्षी, शुभचिंतक आदि लिखकर नीचे अपने हस्ताक्षर करता है।
6. **पत्र पाने वाले का पता**	:	पत्र समाप्त करने के बाद पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफाफे के ऊपर पत्र पाने वाले का पता साफ-साफ अक्षरों में लिखा जाता है, जैसे–

पोस्टकार्ड

टिकट

प्रति–

श्री रामचंद्र वर्मा,
5611/2, माडर्न हाउसिंग कॉम्प्लेक्स,
मनीमाजरा, चंडीगढ़
(के.शा. क्षेत्र)

लिफाफा

टिकट | टिकट

सेवा में,

श्री विजय प्रकाश गुप्ता
402-ए, गोपाल नगर,
जयपुर (राजस्थान)

प्रेषक :

राजीव शुक्ल,
विकास नगर,
नई दिल्ली ।

संबोधन, अभिवादन तथा पत्र के अंत में लिखे जाने वाले शब्दों के कुछ उदाहरण

संबंध	*संबोधन*	*अभिवादन*	*अंत में लिखे जाने वाले शब्द*
अपने से बड़ों को	पूज्य/पूज्या, पूजनीय, आदरणीय,	चरण-स्पर्श, सादर प्रणाम,	आपका प्रिय पुत्र, भाई, प्रिय पुत्री, आपका आज्ञाकारी शिष्य, भवदीय
	मान्यवर, पूज्यवर, श्रद्धेय, माननीय।	नमस्कार।	कृपाकांक्षी, विनीत, स्नेहाकांक्षिणी।
बराबर वालों/ मित्रों को	प्रिय मित्र, प्रियवर, प्रिय बंधु, प्रिय बहन, बंधुवर।	नमस्ते, नमस्कार, सप्रेम नमस्ते।	तुम्हारा/आपका मित्र/ अनुज/ भाई, तुम्हारी प्रिय सखी/बहन/ आपका अपना
अपने से छोटों को	प्रिय (नाम), चिरंजीव, आयुष्मान/आयुष्मती (नाम)	चिरंजीव रहो, शुभाशीष, आशीर्वाद, प्रसन्न रहो।	शुभचिंतक/ शुभाकांक्षी/शुभेच्छु/ हितैषी
परिचित/ अपरिचित/ अधिकारी को	प्रिय महोदय, महोदय, मान्यवर।	नमस्ते/नमस्कार	आपका/ भवदीय / भवदीया

☞ विभिन्न पत्रों के नमूने *(Examples of different types of letters)*

1. पिता को मनीआर्डर प्राप्ति तथा पढ़ाई के बारे में सूचना देते हुए घर आने के कार्यक्रम के बारे में बताइए।

कमल छात्रावास,
लोहगाँव, पुणे-32
दिनांक 28 अगस्त, ...
पूज्य पिताजी,
सादर चरण-स्पर्श

आपका कृपा-पत्र और धनादेश *(Money-order)* प्राप्त हुआ। मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होंगे।

आपके भेजे हुए रुपयों में से मैंने फीस जमा करा दी है। मेरी पढ़ाई ठीक प्रकार चल रही है। हमारे स्कूल में दशहरे की छुट्टियाँ 15 अक्तूबर से 25 अक्तूबर तक हो रही हैं। मैं इन छुट्टियों में घर आऊँगा। बड़े भैया का पत्र भी आया है। वे भी इन दिनों वहीं होंगे। मैं सितंबर मास की प्रथमावधिक परीक्षा की तैयारी करने में जुटा हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि मैं 85% अंक प्राप्त करने में सफल हो जाऊँगा।

माँ को सादर-प्रणाम और गरिमा को प्यार।
आपका प्रिय पुत्र
राहुल

2. आपका छोटा भाई कुसंगति में पड़ गया है। आप उसकी बड़ी बहन हैं। उसे इस आदत से छुड़ाने के लिए सत्संगति का महत्त्व बताइए।
(C.B.S.E. 2001 Comptt. Delhi)

पी.एम.जी., टी नगर,
चेन्नई।
दिनांक ....
प्रिय रंजन,
शुभाशीर्वाद।

कल माताजी का पत्र मिला। इसे पढ़कर ज्ञात हुआ कि आजकल तुम्हारा मन पढ़ाई में न लगकर बुरे लड़कों की संगति में लगता है। यही कारण है कि प्रथम सत्र की परीक्षा में अनुत्तीर्ण भी हो गए हो।

प्रिय भाई ! बुरे लोगों की संगति जीवन को बर्बाद करके रख देती है। इससे तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। सभी विद्वानों ने सत्संगति का बड़ा महत्त्व बताया है। इससे हमारा जीवन निरंतर प्रगति की ओर जाता है। हमें सज्जनों के वचनों को सुनकर उनका पालन करना चाहिए। कुसंगति तो कालिमा के समान है जिससे हमारा भविष्य अंधकारमय हो जाता है। कहा गया है–

'जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल होत'।

आशा है, तुम सत्संगति में अपना मन लगाओगे और पुनः शिकायत का अवसर नहीं दोगे।

माता जी को प्रणाम कहना।

तुम्हारी शुभचिंतिका
वंदना वर्मा

3. आपकी छोटी बहन को परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त हुई है। उसे बधाई देते हुए एक पत्र लिखिए।

(C.B.S.E. 2001 Delhi)

एम 28/104, यमुना विहार,
दिल्ली-110062
दिनांक : ....

प्रिय बहन विमला,

शुभाशीर्वाद।

पूज्य पिताजी के टेलीफोन से अभी-अभी ज्ञात हुआ कि तुम इस वर्ष की परीक्षा में बहुत अच्छे अंकों से सफल हुई हो। इस सुखद समाचार से मेरी प्रसन्नता का पारावार न रहा। मेरी ओर से तुम्हें हार्दिक बधाई। इस परीक्षा के लिए तुमने जो नियमित रूप से जी-तोड़ परिश्रम किया था, उससे मुझे तुम्हारी इस सफलता की पूरी आशा थी। तुमने सिद्ध कर दिया कि परिश्रम तथा दृढ़-संकल्प के बल पर कोई भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

मुझे पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि आगामी परीक्षाओं में भी तुम इसी प्रकार शानदार सफलता प्राप्त करके अपने परिवार तथा विद्यालय का नाम ऊँचा करोगी। शेष मिलने पर।

तुम्हारा शुभचिंतक
संजय

4. एक बस-दुर्घटना में आपके मित्र के पिता की मृत्यु हो गई है। मित्र को संवेदना-पत्र लिखिए।

(C.B.S.E. 2001 Outside, B-Course)

56/2, रेलवे रोड
अंबाला।
दिनांक : ....

प्रिय रवि,

कल यह समाचार सुनकर कि तुम्हारे पूज्य पिताजी का कार-दुर्घटना में निधन हो गया, हृदय को असीम वेदना हुई। मुझे तो इस समाचार पर सहसा विश्वास ही नहीं हुआ। पिछले मास ही तो मुझे उनके दर्शन करने का अवसर मिला था। वे पूर्णतः स्वस्थ प्रतीत होते थे। मुझे तो वे अपना पुत्र ही मानते थे।

ईश्वर की लीला भी बड़ी विचित्र होती है। उसकी आज्ञा के सम्मुख हमें अपना सिर झुकाना ही पड़ता है। मित्र ! मैं जानता हूँ कि तुम्हारे ऊपर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है, पर धैर्य धारण करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय भी तो नहीं है।

मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह पूज्य पिताजी की आत्मा को अपने चरणों में शरण प्रदान करे। परिवारजनों को धैर्य धारण करने की शक्ति दे।

तुम्हारे दुख में दुखी
अनुज

5. आपके बड़े भाई ने आपके जन्मदिन पर उपहार भेजा है। उसको धन्यवाद देते हुए एक पत्र लिखिए।
(C.B.S.E. 2000 Comptt. Outside. B-Course)

सी-225. डिफेंस कालोनी.
नई दिल्ली।
दिनांक ....
आदरणीय भाई साहब,
सादर प्रणाम !

मेरे जन्मदिन पर आपकी भेजी हुई एच.एम.टी. की घड़ी प्राप्त हुई। यह मुझे कितनी सुंदर और उपयोगी लगी. इसका किन शब्दों में वर्णन करूँ। कई वर्षों से इसका अभाव मुझे खटक रहा था।

कई बार स्कूल जाने में देर हो जाती थी। निस्संदेह अब मैं अपने आपको नियमित बनाने का प्रयत्न करूँगा। इसको पाकर मुझे असीम प्रसन्नता हुई है। इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

पूज्य भाभीजी को प्रणाम। गुलशन को नमस्ते। मुझे गीता बहुत याद आती है, उसे मेरी ओर से प्यार कहना।

आपका अनुज
महेन्द्र

6. आपका एक मित्र विदेश में रहता है। उसे ग्रीष्मावकाश के दौरान भारत के किसी पर्वतीय क्षेत्र में भ्रमण हेतु आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए। *(CBSE 2009 Delhi)*

A-50 ग्रेटर कैलाश.
नई दिल्ली।
दिनांक ....
प्रिय मित्र डेनियल,
सप्रेम नमस्ते!

तुम्हारा पत्र एक माह पूर्व आया था और उसमें तुमने भारत के किसी पर्वतीय क्षेत्र के भ्रमण की इच्छा प्रकट की थी।

हमारा स्कूल मई-जून के ग्रीष्मावकाश के लिए बंद हो रहा है। इन दिनों दिल्ली में बहुत गर्मी पड़ती है अतः इस बार मैंने दो सप्ताह के लिए शिमला जाने का कार्यक्रम बनाया है। तुम भी मई के तीसरे सप्ताह तक भारत आ जाओ तो हम मिलकर शिमला के भ्रमण पर साथ-साथ चलेंगे। मैंने वहाँ ठहरने और भ्रमण की पूरी योजना तैयार कर ली है। यह स्थल बहुत ही लुभावना है। यह हिमाचल प्रदेश की राजधानी होने के कारण अनेक प्रकार की सुविधाओं से सम्पन्न है। यहाँ कुफरी जाने का अपना आनंद है। कालका-शिमला रूट पर छोटी रेलगाड़ी में यात्रा करने का अनुभव लंबे समय तक याद रहता है।

आशा है तुम अपनी स्वीकृति शीघ्र भिजवाओगे और भारत आने का कार्यक्रम निश्चित करोगे।

तुम्हारा प्रिय मित्र
भारत

7. छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर प्रातःकाल नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करने के लिए प्रेरित कीजिए। *(CBSE 2009 Delhi)*

8/71. प्रशांत विहार,
नई दिल्ली।
दिनांक ....
प्रिय अनुज,
शुभाशीर्वाद।

मुझे ज्ञात हुआ है कि छात्रावास में रहकर तुम्हारा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। यह विषय निश्चय ही चिंताजनक है।

तुम्हें अपने स्वास्थ्य के लिए छात्रावास में नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम करना चाहिए। इसका निरंतर अभ्यास करना आवश्यक है। पहले तुम किसी योग्य प्रशिक्षक की देख-रेख में योग करना प्रारंभ करो, बाद में इसका प्रतिदिन प्रातःकाल अभ्यास करो। इससे तुम्हारा शरीर स्वस्थ एवं कांतिमान बनेगा।

प्राणायाम का अपना विशेष महत्त्व है। इसकी सहायता से हमें स्वच्छ वायु को फेफड़ों के अंदर ले जाने का सुअवसर मिलता है। प्राणायाम भी अनेक बीमारियों से छुटकारा दिलाता है।

मुझे पूर्ण आशा है कि तुम कल से ही योगाभ्यास एवं प्राणायाम शुरू कर दोगे।

तुम्हारा शुभचिंतक

नवीन शर्मा

8. धूम्रपान करने वाले मित्र को इस व्यसन के दोषों का उल्लेख करते हुए पत्र लिखकर इससे मुक्त होने की सलाह दीजिए। *(CBSE 2009 Delhi)*

4/26, रमेश नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक ....

प्रिय मित्र रवि,

सप्रेम नमस्ते।

मुझे तुम्हारे पिताजी के पत्र से यह जानकर अत्यंत दु:ख हुआ कि इन दिनों तुम्हें धूम्रपान का व्यसन लगा हुआ है। इसी व्यसन के कारण तुम्हें खाँसी रहने लगी है। तुम्हें पता होना चाहिए कि धूम्रपान का सेहत पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अभी तो तुम्हें धूम्रपान का चस्का ही लगा है, आगे चलकर तुम्हें इसके दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे। यह व्यसन तुम्हारे फेफड़ों को बेकार कर देगा। धूम्रपान सामान्य स्वास्थ्य पर भी बहुत बुरा प्रभाव डालता है।

तुम्हें इस बुरे व्यसन से तुरंत मुक्ति पाने का प्रयास करना चाहिए, अन्यथा बहुत देर हो चुकी होगी और तुम कुछ भी नहीं कर पाओगे। इस व्यसन को छोड़ने के प्रारंभ में तुम्हें कष्ट तो अवश्य होगा, पर दृढ़ निश्चय से इसे तुम कुछ ही समय में छोड़ने में सफल हो जाओगे।

आशा है कि तुम मेरी बातों को गंभीरता से लोगे।

तुम्हारा प्रिय मित्र

रविकांत

9. अंतर्विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में आपने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। अपनी इस उल्लेखनीय उपलब्धि का समस्त विवरण अपने मित्र को लिखे पत्र में प्रस्तुत कीजिए। *(CBSE 2009 Outside)*

6/22 नवीन निकेतन,

नई दिल्ली।

दिनांक ....

प्रिय मित्र रविकांत,

सप्रेम नमस्ते!

तुम्हें यह जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि पिछले सप्ताह आयोजित 'अंतर्विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता' में मैंने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। पुरस्कार प्राप्त करते समय मुझे बहुत गर्व का अनुभव हो रहा था।

इस प्रतियोगिता में हमारे क्षेत्र के लगभग 80 स्कूलों ने भाग लिया था। कई विद्यार्थी तो मेरे से बड़ी कक्षाओं के भी थे। वे पूरी तैयारी करके आए थे। उनके साथ उनके अध्यापक भी थे, जो उन्हें तरह-तरह से प्रतियोगिता की बारीकियाँ समझा रहे थे।

मुझे अपने पर पूरा आत्मविश्वास था। मैं किसी भी प्रकार से विचलित नहीं था। मैंने अपने लिए निर्धारित समय में अपने विषय को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया। निर्णायकों को मेरी शैली बहुत पसंद आई। उन्हें मेरा विषय-प्रस्तुतीकरण बड़ा अच्छा लगा। इन्हीं कारणों से मुझे सर्वप्रथम घोषित किया गया। मुझे मुख्य अतिथि उपशिक्षानिदेशक के हाथों पुरस्कार पाने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। मैं इस पुरस्कार को पाकर बहुत उत्साहित हूँ। इस पत्र में मैंने अपनी खुशी तुम्हारे साथ बाँटनी चाही है।

तुम्हारा प्रिय मित्र

श्याम वर्मा

10. कार-दुर्घटना में मित्र के माता-पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर मन में उठे भावों को व्यक्त करते हुए मित्र को संवेदना-पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 Foreign)*

ए-6/52, विकास नगर,

नई दिल्ली ।

दिनांक ....

प्रिय मित्र रवि,

आज के समाचार पत्र में एक कार-दुर्घटना में तुम्हारे माता-पिता की असामयिक मृत्यु का समाचार पढ़कर मन अत्यंत विचलित हो उठा है। समाचार से ज्ञात हुआ कि वे तो हरिद्वार गंगा-स्नान के लिए जा रहे थे कि एक ट्रक की टक्कर से यह दुर्घटना घटित हो गई। तुम्हारे ऊपर तो विपत्ति का पहाड़ ही टूट पड़ा है। मैं तो उस दुर्घटना की कल्पना करके ही सिहर उठा हूँ।

अभी तो तुम्हें उनकी छत्र-छाया की बहुत आवश्यकता थी। असमय ही काल के क्रूर हाथ उन्हें हमसे छीनकर ले गए। ईश्वर की लीला बड़ी विचित्र है। उसकी आज्ञा के सम्मुख हमें नतमस्तक होना पड़ता है।

मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह माता-पिता को अपने चरणों में स्थान दे तथा तुम्हें इस दारुण दुःख को झेलने की शक्ति प्रदान करे।

तुम्हारे दुःख में दुःखी,

रचित

11. फिजूलखर्च मित्र को पत्र लिखते हुए समझाइए कि फिजूलखर्ची पर नियंत्रण हमारे आहार-विहार और चरित्र की बहुत-सी बुराइयों पर अंकुश लगा देता है। *(CBSE 2008 Foreign)*

65/4, रमेश नगर,
नई दिल्ली।
दिनांक ....

प्रिय मित्र सचिन,
सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पत्र में तुमने दो हजार रुपए भिजवाने का आग्रह किया है। मुझे पता चला है कि तुम कुछ नए ढंग के कपड़े खरीदना चाह रहे हो। तुम्हारी फिजूलखर्ची तुम्हें हर वक्त परेशान रखती है। तुम्हें अपनी फिजूलखर्ची पर नियंत्रण करना चाहिए। यह फिजूलखर्ची मनुष्य के आहार-विहार और चरित्र को बुरी तरह प्रभावित करती है।

यदि तुमने अपनी फिजूलखर्ची पर नियंत्रण लगा लिया तो स्वतः ही तुम्हारे आहार-विहार और चरित्र पर अंकुश लग जाएगा। जब हाथ में काफी धन खर्चने को होता है तभी हमारी आदतें खराब होती हैं। हमारी सोच भी गड़बड़ा जाती है। आशा है तुम मेरी बातों को अन्यथा नहीं लोगे। मैं तो तुम्हें पतन की ओर जाने से रोकना चाहता हूँ। अभी मैं तुम्हें आवश्यक खर्चों के लिए पाँच सौ रुपए भिजवा रहा हूँ। तुम अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाओ।

तुम्हारा शुभचिंतक
सौरभ

12. बड़े भाई की ओर से छोटे भाई को कुमित्रों से सावधान करते हुए पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 Foreign)*

5/27, प्रशांत विहार,
नई दिल्ली।
दिनांक ....

प्रिय रचित,
सप्रेम नमस्ते।

कल माताजी का पत्र मिला। इसे पढ़कर ज्ञात हुआ कि आजकल तुम्हारा मन पढ़ाई में न लगकर बुरे लड़कों की संगति में लगता है। यही कारण है कि प्रथम सत्र की परीक्षा में अनुत्तीर्ण भी हो गए हो। ये कुमित्र तुम्हें ले डूबेंगे।

प्रिय भाई! बुरे लोगों की संगति जीवन को बर्बाद करके रख देती है। इससे तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। सभी विद्वानों ने सत्संगति का बड़ा महत्त्व बताया है। इससे हमारा जीवन निरंतर प्रगति की ओर जाता है। हमें सज्जनों के वचनों को सुनकर उनका पालन करना चाहिए। कुसंगति तो कालिमा के समान है जिससे हमारा भविष्य अंधकारमय हो जाता है।

आशा है, तुम सत्संगति में अपना मन लगाओगे और पुनः शिकायत का अवसर नहीं दोगे। माता जी को प्रणाम कहना।

तुम्हारा शुभचिंतक
आदित्य सक्सेना

13. आपके छोटे भाई ने बोर्ड की परीक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। पुरस्कार में वह पिताजी से एक मोटर साइकिल चाहता है। उसे पत्र लिखकर समझाइए कि वयस्क होने से पहले वाहन चलाना ठीक नहीं है।

(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)

5/16, डैंपियर नगर, मथुरा (उ.प्र.)

दिनांक ....

प्रिय अनुज

शुभाशीर्वाद।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि तुमने बोर्ड की दसवीं कक्षा की परीक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। तुम्हें प्रथम बीस छात्रों में स्थान मिलना, हमारे लिए गर्व एवं सम्मान की बात है। इस शानदार सफलता के लिए मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ और तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

मुझे पता चला है कि तुम पुरस्कार के रूप में पिताजी से मोटरसाइकिल लेना चाहते हो। मैं तुम्हारी इच्छा को गलत नहीं मानता। पर क्या तुम्हें पता है कि ड्राइविंग लाइसेंस पाने के लिए 18 वर्ष की आयु का होना आवश्यक है और तुम अभी 15 वर्ष के हो। अतः जब तुम कॉलेज जाने लगो तब तुम मोटरसाइकिल अवश्य ले लेना। तब तक तुम्हें इसके लिए प्रतीक्षा करनी होगी। इस समय तुम मोटरसाइकिल से दुर्घटनाग्रस्त भी हो सकते हो। तुम्हें किसी अन्य वस्तु की इच्छा हो तो पिताजी को बताना या मुझसे कहना। तुम्हारी उस इच्छा को अवश्य पूरा किया जाएगा।

तुम्हारा शुभचिंतक

रवि शर्मा

14. नैनीताल में सैर-सपाटे के दौरान एक स्थानीय विद्यार्थी आनंद से आपकी मित्रता हो गई। उसने पर्वतीय गाँवों के जनजीवन से भी आपका परिचय कराया। अपने घर लौट आने पर उस मित्र का आभार व्यक्त करते हुए उसे पत्र लिखिए।

(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)

56/4, मोहन गार्डन,

नई दिल्ली।

दिनांक ....

प्रिय मित्र आनंद,

सप्रेम नमस्ते।

मैं कल सकुशल अपने घर लौट आया हूँ। अभी भी मेरे मन में तुम्हारी मोहिनी छवि अंकित है। मेरी आँखों के सामने अभी तक नैनीताल के दृश्य घूम रहे हैं जिन्हें तुमने मुझे दिखाया था। इन प्राकृतिक दृश्यों के अलावा तुमने जो मुझे पर्वतीय जनजीवन से परिचित कराया, वह एक विचित्र एवं सुखद अनुभव रहा। यदि तुमसे वहाँ मित्रता न होती तो मैं इस अनुभव से सर्वथा वंचित रह जाता। सामान्य पर्यटक तो ऊपर-ऊपर से ही साधारण रूप से जान पाता है, वहाँ के जन-जीवन की झाँकी उसे नहीं मिल पाती है। पर्वतीय क्षेत्र पर्यटकों को तो बड़ा आकर्षक लगता है, पर वहाँ के निवासी जिन कष्टों के मध्य जीते हैं, इन्हें पर्यटक नहीं समझ पाते। तुमने मुझे जीवन की इस वास्तविकता से परिचित कराया। इसके लिए मैं तुम्हारा आभार व्यक्त करता हूँ। यह मेरा सौभाग्य ही था कि वहाँ मेरी मित्रता तुम जैसे व्यक्ति के साथ हुई।

आशा है कि तुम इन सर्दियों में दिल्ली आने का वायदा अवश्य पूरा करोगे। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

तुम्हारा प्रिय मित्र

नवीन चंद

☞ आवेदन-पत्र (*Application*)

15. किसी संस्था में लिपिक (हिंदी) पद हेतु प्रारूप पर आधारित आवेदन-पत्र लिखिए।

पद. जिसके लिए आवेदन किया जा रहा है : अवर श्रेणी लिपिक (हिंदी)

1. नाम : रविकांत वर्मा
2. पिता का नाम : श्री सूर्यकांत वर्मा
3. जन्मतिथि : 25 अक्तूबर, 1988
4. वर्तमान पता : सी-152, सुदर्शन पार्क, नई दिल्ली।
5. स्थायी पता : – वही –
6. क्या आप अनुसूचित जाति/जनजाति/पिछड़ा वर्ग के हैं ? : नहीं
7. यदि हाँ, तो जाति लिखिए : —
8. क्या आप भारतीय नागरिक हैं ? : हाँ
9. शैक्षणिक योग्यताएँ/अर्हताएँ :

परीक्षा	प्राप्तांक %	वर्ष	बोर्ड/वि.वि.	विषय
सेकेंडरी परीक्षा (दसवीं)	76%	2003	के.मा. शिक्षा बोर्ड (C.B.S.E.), नई दिल्ली	अंग्रेजी, हिंदी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान
सीनियर सेकेंडरी परीक्षा (बारहवीं)	80%	2005	के. मा. शिक्षा बोर्ड (C.B.S.E.), नई दिल्ली	अंग्रेजी, हिंदी, इतिहास. राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र
बी.ए. (कला)	62%	2008	दिल्ली विश्वविद्यालय	अंग्रेज़ी, हिंदी, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान
टंकण एवं आशुलिपि डिप्लोमा	50 शब्द प्र. मि. की गति	2009	आई. टी. आई., नई दिल्ली	हिंदी टंकण एवं आशुलिपि लेखन

कार्यानुभव : गत एक वर्ष से जीवन बुक्स इंटरनेशनल प्रा.(लि.) संस्था में इसी पद पर कार्यरत हूँ। प्रमाण पत्र संलग्न है। मैं प्रमाणित करता हूँ कि जो सूचनाएँ इस आवेदन-पत्र में दी गई हैं, वे पूर्णत: सत्य हैं।

(आवेदक के हस्ताक्षर)........................

(रविकांत वर्मा)

दिनांक........................

संलग्न : सभी अर्हताओं के प्रमाणपत्रों की फोटोस्टेट प्रतिलिपियाँ।

16. आप मेधावी छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं। इसके लिए उप शिक्षा निदेशक को पूरा विवरण देते हुए आवेदन-पत्र लिखिए।

सेवा में,
उपशिक्षा निदेशक
(छात्रवृत्ति शाखा)
पुराना सचिवालय,
दिल्ली।

विषय : मेधावी छात्रवृत्ति योजना

महोदय,

आज दिनांक .... के 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित विज्ञापन के आधार पर मैं उपर्युक्त छात्रवृत्ति हेतु अपना नाम उचित माध्यम से भिजवा रहा हूँ। आशा है आप मुझे यह छात्रवृत्ति प्रदान करने की कृपा करेंगे। मेरा विवरण निम्नलिखित है :

नाम	:	राजकुमार वर्मा
पिता का नाम	:	श्री रविकुमार वर्मा
कक्षा	:	दसवीं (अ)
विद्यालय	:	राजकीय आदर्श बाल विद्यालय, रूप नगर, नई दिल्ली
पिछली कक्षा में प्राप्तांक	:	87% (प्रमाणपत्र संलग्न)
पिता की मासिक आय	:	1500 रु. मासिक (सत्यापित प्रमाणपत्र संलग्न)
निवास स्थान का पता	:	3/6, रूप नगर, दिल्ली।

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
राजकुमार

कक्षा अध्यापक के हस्ताक्षर ....

प्रधानाचार्य की संस्तुति : मैं राजकुमार के उपर्युक्त विवरण सत्यापित करता हूँ तथा मेधावी छात्रवृत्ति हेतु अनुशंसा करता हूँ।

....
(हस्ताक्षर) दिनांक ....
प्रधानाचार्य

17. 'जनसंख्या-विभाग' को घर-घर जाकर सूचनाएँ एकत्रित करने वाले ऐसे युवाओं की आवश्यकता है, जो हिंदी और अंग्रेजी में भली-भाँति बात कर सकते हों और सूचनाओं को सही-सही दर्ज कर सकते हों। इसके साथ ही आवेदकों में विनम्रतापूर्वक बात करने की योग्यता होनी चाहिए। इस काम में अपनी रुचि प्रदर्शित करते हुए जनसंख्या विभाग के सचिव को आवेदन-पत्र लिखिए।

सेवा में,
सचिव,
जनसंख्या विभाग,
नई दिल्ली।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा दिनांक.................. के 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित विज्ञापन के प्रत्युत्तर में मैं 'घर-घर जाकर सूचनाएँ एकत्रित करने वाले युवाओं' के लिए आवेदन करना चाहता हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं यह कार्य अत्यंत रुचि एवं परिश्रमपूर्वक सम्पन्न कर सकूँगा। मुझे हिंदी एवं अंग्रेजी-दोनों भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान है तथा मैं विनम्रतापूर्वक बात करना भी भली-भाँति जानता हूँ। मुझे यह बात भली प्रकार ज्ञात है कि लोगों से किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए। मैंने इसी वर्ष केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से बारहवीं कक्षा 68% अंक लेकर उत्तीर्ण की है। मेरी आयु 18 वर्ष है। मैं यह कार्य करने का इच्छुक हूँ।

आशा है आप मुझे अवसर प्रदान कर कृतार्थ करेंगे।

धन्यवाद सहित,
भवदीय
रामलाल सचदेव
5/22, संत नगर, नई दिल्ली
दिनांक ....
संलग्न : दसवीं एवं बारहवीं कक्षा के प्रमाण-पत्रों की सत्यापित फोटो कॉपी।

☞ शिकायती पत्र (*Complaint Letter*)

18. आपके क्षेत्र में पेयजल की समस्या गंभीर है। इसकी ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए जिला स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 Foreign)*

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
रोहतक जिला,
हरियाणा।

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान क ख ग नगर में पेयजल की अपर्याप्त जल-आपूर्ति की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

इस क्षेत्र में प्रातःकाल केवल आधे घंटे ही नलों में पानी आता है। ऊपर की मंजिलों में तो पानी चढ़ता ही नहीं, क्योंकि पानी का दबाव बहुत कम होता है। सायंकाल भी पेयजल की आपूर्ति बहुत ही अनियमित है। इस स्थिति से यहाँ के नागरिक अत्यंत परेशान हैं। स्थानीय अधिकारियों का ध्यान इस समस्या की ओर कई बार दिलाया गया, पर स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। गर्मियों में पानी का संकट झेलना कितना कठिन है, इसका आप सहज ही अनुमान लगा सकते हैं।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस क्षेत्र में पेयजल की समुचित व्यवस्था कराने हेतु उचित कदम उठाने की कृपा करें। हम आपके सदा आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित,
भवदीय
भारत मैदीरत्ता (सचिव)

19. बस-कंडक्टर के सहानुभूतिपूर्ण और विनम्र व्यवहार की प्रशंसा करते हुए परिवहन-निगम के प्रबंधक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)*

सेवा में
महाप्रबंधक,
दिल्ली परिवहन निगम,
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली।

महोदय,

मुझे इस बात की सूचना देते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि दिल्ली परिवहन निगम की बस सं. DL-1P-3845 (शादीपुर डिपो) के कंडक्टर श्री रामाश्रय ने कल अत्यंत प्रशंसनीय तथा साहसिक कार्य किया। एक व्यक्ति लड़की की शादी के लिए गहने खरीदकर आ रहा था। वह बस में सवार हुआ। थोड़ी ही देर में चिल्लाने लगा कि उसका बैग छीनकर गठकतरा बस से उतर गया है। श्री रामाश्रय ने तुरंत बस रुकवा दी। वह बस से उतरकर गठकतरे के पीछे दौड़ा। गठकतरे ने चाकू निकाल लिया। रामाश्रय ने बड़े साहस और चतुराई से चाकू छीन लिया। फिर गठकतरे से बैग भी छीन लिया। रामाश्रय ने चोटों की परवाह न की। वह गठकतरे को घसीटकर बस में ले आया और फिर बस वैस्ट पटेल नगर थाने में ले गया। जिस व्यक्ति के गहने थे, वह रामाश्रय को 500 रुपए पुरस्कार दे रहा था, परंतु रामाश्रय ने यह कहते हुए लेने से इंकार कर दिया, "मैंने अपना कर्तव्य पालन किया है।"

मैं जोरदार आग्रह करता हूँ कि श्री रामाश्रय को पुरस्कृत और सम्मानित किया जाए।

आपका
उशनाक राय
डी-1, कीर्तिनगर, नई दिल्ली-15

दिनांक ....

20. स्वास्थ्य-विभाग के लापरवाह रवैये के कारण खाद्य-पदार्थों में मिलावट की समस्या गंभीर होती जा रही है। विभाग के निदेशक के नाम पत्र लिखकर इस समस्या की ओर उनका ध्यान आकर्षित कीजिए।

(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)

सेवा में

निदेशक,

स्वास्थ्य विभाग,

दिल्ली नगर निगम, दिल्ली।

विषय : खाद्य-पदार्थों में मिलावट की समस्या।

महोदय,

मैं आपका ध्यान खाद्य-पदार्थों में मिलावट की समस्या की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। यह समस्या निरंतर गंभीर होती जा रही है। खाद्य-तेलों, मसालों तथा दूध में मिलावट की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती चली जा रही है। इसके कारण पेट की बीमारियाँ एवं चर्म रोग बढ़ते जा रहे हैं। इंसपेक्टर दुकानदारों से रिश्वत पाकर उनकी जाँच नहीं करते। कभी-कभी सैंपल तो भरा जाता है, पर वह भी पूर्व सूचना देकर। इससे सभी सैंपल सही पाए जाते हैं। स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी लापरवाह और भ्रष्ट हो गए हैं। इसका खामियाजा सामान्य नागरिकों को भुगतना पड़ता है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि एक छापामार दस्ते का गठन किया जाए जो आकस्मिक रूप से दुकानों और प्रतिष्ठानों पर छापा मारे तथा किसी भी प्रकार से दवाव में न आए। आशा है आप इस दिशा में आवश्यक कदम उठाएँगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

भरत कुमार

संयोजक

जनचेतना मंच, दिल्ली

दिनांक ....

21. अपने क्षेत्र में पार्क विकसित कराने के लिए नगर निगम के मुख्य उद्यान-निरीक्षक को पत्र लिखिए।

(CBSE 2008 Foreign)

सेवा में,

मुख्य उद्यान निरीक्षक

दिल्ली नगर निगम,

राजा गार्डन, नई दिल्ली

विषय : पार्क का विकास।

महोदय,

हम रघुवीर नगर के निवासी, आपका ध्यान इस क्षेत्र में पार्क के अभाव की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। पच्चीस गज प्लॉट वाले मकानों के क्षेत्र में कोई भी पार्क नहीं है। यद्यपि बीच में काफी स्थान खाली पड़ा है। इस क्षेत्र के नागरिकों को व्यायाम करने तथा बच्चों को खेलने के लिए एक पार्क की अत्यंत आवश्यकता है। इस ओर पहले भी कई बार ध्यान आकर्षित किया गया, पर अभी तक कोई ठोस कार्यवाही नहीं की गई है।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि यहाँ शीघ्र ही एक पार्क का विकास करवाएँ। स्थानीय जनता इसमें भरपूर सहयोग देगी। आपकी इस कृपा के लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

हरीश रावत, सचिव

रघुवीर नगर सुधार सभा

दिनांक ....

22. अपने प्रधानाचार्य को एक अनुरोध-पत्र लिखते हुए निवेदन कीजिए कि वे विद्यालय की हर कक्षा में कम-से-कम बीस प्रतिशत गरीब बच्चों को प्रवेश देने की व्यवस्था करें। (*CBSE 2008 Foreign*)

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

राजकमल पब्लिक स्कूल,

पालम विहार, नई दिल्ली।

विषय-गरीब बच्चों को प्रवेश।

महोदय,

निवेदन है कि हमारा स्कूल इस क्षेत्र का एक प्रतिष्ठित स्कूल है पर इसमें गरीब बच्चे अधिक फीस होने के कारण प्रवेश नहीं ले पाते हैं ।

माननीय उच्च न्यायालय का भी स्पष्ट निर्देश है कि स्कूल में बीस प्रतिशत गरीब बच्चों को निःशुल्क दाखिला दिया जाए। दिल्ली सरकार भी यही चाहती है। मेरा भी आपसे विनम्र अनुरोध है कि प्रत्येक कक्षा में बीस प्रतिशत गरीब बच्चों को प्रवेश दिलाने की व्यवस्था कराएँ। इस प्रकार हम समाज के सभी वर्गों की सेवा कर पाएँगे। इससे हमारे स्कूल की प्रतिष्ठा और भी बढ़ जाएगी।

आशा है आप मेरे सुझाव पर गंभीरतापूर्वक विचार कर आवश्यक निर्देश जारी करेंगे।

धन्यवाद सहित,

आपका प्रिय शिष्य

रामपाल सिंह, कक्षा-दसवीं-ए

दिनांक ....

23. परिवहन विभाग की लापरवाही से सड़क-दुर्घटनाओं में हो रही वृद्धि की ओर राज्य परिवहन मंत्री का ध्यान आकर्षित करते हुए ठोस उपाय करने का अनुरोध कीजिए। (*CBSE 2008 (Comptt.) Delhi*)

सेवा में,

राज्य परिवहन मंत्री

हरियाणा सरकार, चंडीगढ़।

दिनांक ....

विषय : सड़क-दुर्घटनाओं में वृद्धि।

महोदय,

मैं आपका ध्यान परिवहन विभाग की लापरवाही के प्रति आकर्षित कराना चाहता हूँ। आपने भी यह अनुभव किया होगा कि परिवहन विभाग के ड्राइवरों की लापरवाही से प्रतिदिन दो-तीन दुर्घटनाओं का होना सामान्य-सी बात हो गई है। यह ठीक है कि सड़कों की दशा भी ठीक नहीं है, पर यही एकमात्र कारण इन दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार नहीं है। ड्राइवर जल्दबाजी में अपनी बसों को दौड़ाते हैं। बसों में स्पीड-गवर्नर भी नहीं हैं। रास्ते में उनकी स्पीड को देखने वाला भी कोई नहीं होता। उनकी लापरवाही से निर्दोष लोगों की जानें जा रही हैं। सड़क दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों को समय पर चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध नहीं हो पाती।

आशा है आप इस समस्या पर गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे और इसकी रोकथाम के ठोस उपाय करेंगे।

भवदीय

रजनीकांत

सचिव

दैनिक यात्री संघ,

रोहतक (हरियाणा)

24. आपकी बहन अपने विद्यालय की टीम के साथ शैक्षिक भ्रमण पर जा रही है। उसे पत्र लिखकर समझाइए कि इस प्रकार के पर्यटन से वह किस प्रकार अधिक से अधिक लाभ उठा सकती है। *(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)*

गाँधी छात्रावास

गाँधी विद्यालय

लखनऊ।

दिनांक ....

प्रिय बहन,

पिताजी द्वारा भेजे गए पत्र से मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारी पढ़ाई सुचारु रूप से चल रही है। यह भी पता चला कि तुम विद्यालय की टीम के साथ दशहरे की छुट्टियों में शैक्षिक भ्रमण पर जा रही हो। अपने अनुभव के आधार पर मैं तुम्हें कुछ सुझाव देना चाहता हूँ जिससे तुम्हें अवश्य ही लाभ होगा।

इस भ्रमण को मात्र घूमने-फिरने या मनोरंजन का साधन समझ बैठना भारी भूल होगी। ऐसे अवसर विद्यार्थी जीवन में दुर्लभ होते हैं। तुम्हें इस अवसर का भरपूर लाभ उठाना है। जिस स्थल पर भी जाओ उसके विषय में जानकारी, उसका इतिहास, वर्तमान, वहाँ के लोग, लोक-संस्कृति आदि का विस्तृत ज्ञान तुम्हारे भावी जीवन में काफी काम आएगा। अपने मन-मस्तिष्क के चक्षु खोलकर संबंधित विषय-वस्तु, स्थान आदि का गहन अध्ययन एवं मनन आगे चलकर तुम्हारे अध्ययन में सहायक होगा।

आशा है तुम मेरे सुझावों पर अमल करोगी और इस भ्रमण को यादगार बनाओगी। अपना ख्याल रखना।

शेष मिलने पर।

तुम्हारा अग्रज

शिवकांत मिश्रा

25. परीक्षा के दिनों में अनियमित विद्युत-आपूर्ति की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए प्रबंधक, राज्य विद्युत-आपूर्ति निगम को पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)*

सेवा में,

प्रबंधक,

राज्य विद्युत आपूर्ति निगम, देहरादून (उत्तराखंड)।

विषय : विद्युत आपूर्ति में अनियमितता की समस्या।

महोदय,

मैं आपका ध्यान देहरादून में अनियमित विद्युत आपूर्ति की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

इन दिनों बोर्ड की परीक्षाएँ चल रही हैं और बिजली की अघोषित कटौती चल रही है। बिजली कब चली जाएगी, यह कहा नहीं जा सकता। हम विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी करने में भारी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इन दिनों विद्युत आपूर्ति को नियमित कराने का कष्ट करें ताकि परीक्षाओं की तैयारी निर्बाध रूप से हो सके।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

रामकुमार वर्मा

5/6, सुभाष बाजार, देहरादून

दिनांक ....

26. आप विद्यालय की 'साहित्य-परिषद्' के सचिव की हैसियत से अपने विद्यालय में एक अंतर्विद्यालय युवा कवि सम्मेलन कराना चाहते हैं। इस आयोजन के लिए आपको विद्यालय की ओर से क्या-क्या सुविधाएँ चाहिए, उनका उल्लेख करते हुए अपने प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए। *(CBSE 2009 Outside)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य

जीवन पब्लिक स्कूल,

रमेश नगर, नई दिल्ली।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि इस विद्यालय की 'साहित्य परिषद्' एक 'अंतर्विद्यालय युवा कवि सम्मेलन' का आयोजन कराना चाहती है। मैं इस परिषद् का सचिव हूँ, अतः इसके आयोजन का भार मुझे सौंपा गया है।

इस सम्मेलन के आयोजन के लिए हमें विद्यालय की ओर से निम्नलिखित सुविधाएँ चाहिएँ–

1. हम यह सम्मेलन विद्यालय के सभागार में आयोजित करना चाहते हैं। अतः हमें 14 सितम्बर को इसके उपयोग की अनुमति प्रदान की जाए।

2. हमें विद्यालय का फर्नीचर प्रयोग करने की अनुमति दी जाए।

3. सम्मेलन में विद्यालय के माइक का प्रयोग करना होगा। इसके तीन चार सेट हमें उपलब्ध कराने की कृपा की जाए।

4. यदि विद्यालय युवा कवियों के लिए जलपान में सहयोग कर दे, तो हमारी संस्था कृतज्ञ रहेगी।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

राकेश गुप्ता

सचिव

साहित्य परिषद्, नई दिल्ली

दिनांक ....

27. आपसे अपने बचत खाते की चेक-बुक खो गई है। इस संबंध में तत्काल उचित कार्यवाही करने के लिए निवेदन करते हुए बैंक-प्रबंधक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2009 Outside)*

सेवा में

प्रबंधक महोदय,

पंजाब नेशनल बैंक,

जनकपुरी, नई दिल्ली।

विषय : नई चेक बुक जारी करना

(बचत खाता संख्या 4847484730)

मान्यवर,

निवेदन यह है कि मेरे उपर्युक्त वर्णित बचत खाते की चैक बुक कहीं खो गई है। काफी प्रयास करने पर भी वह नहीं मिल रही है। उसमें अभी अंतिम तीन चेक शेष थे। आप शेष चेकों 89747–50 तक पर कोई धनराशि न निकलने दें।

मुझे अपना खाता संचालित करने के लिए एक नई चेक बुक जारी करने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

भवदीय

रामकृष्ण शर्मा

बी-15ए जनकपुरी, नई दिल्ली

दिनांक ....

28. पढ़ाई का सत्र प्रारंभ हो चुका है किंतु बाजार में पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। इस समस्या को उठाते हुए किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(CBSE 2009 Outside)

सेवा में
संपादक महोदय,
नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली ।
दिनांक ....

विषय : पाठ्यपुस्तकों की अनुपलब्धता।

मान्यवर,

मैं आपके दैनिक लोकप्रिय समाचार पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों की भारी कमी की ओर आकर्षित कराना चाहती हूँ। आशा है कि आप जनहित में मेरा पत्र अवश्य प्रकाशित करेंगे।

नया शिक्षा-सत्र प्रारंभ हो चुका है। इसे प्रारंभ हुए दो सप्ताह बीत चुके हैं पर अभी तक सभी पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। इससे कालाबाजारी को बढ़ावा मिल रहा है। इससे बच्चों की पढ़ाई भी रुकी हुई है। सरकार इस ओर ध्यान नहीं देती। लगता है शिक्षा विभाग और निजी प्रकाशकों में साठ-गाँठ है। पाठ्यपुस्तकों के अभाव में नकली पुस्तकें तथा गाइडें खूब बिक रही हैं। एन.सी.ई.आर.टी. को यह बात पता होती है कि मार्च-अप्रैल में नई पुस्तकों की आवश्यकता होती है, पर वह कोई निश्चित योजना नहीं बनाती। इस विषय पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है।

भवदीया
नीरजा शर्मा
संयोजिका, जनहित मोर्चा, रोहिणी
नई दिल्ली।

29. राशनकार्ड खो जाने पर आपूर्ति अधिकारी को दूसरा कार्ड बनाने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए।

(CBSE 2009 Delhi)

सेवा में,
खाद्य एवं आपूर्ति अधिकारी,
पश्चिमी मंडल,
जनकपुरी, नई दिल्ली।
दिनांक ....

विषय : दूसरा राशनकार्ड बनवाने का अनुरोध।

महोदय,

मैं जनकपुरी, पंखां रोड के वशिष्ठ पार्क का स्थायी निवासी हूँ। मुझे आपके कार्यालय द्वारा एक राशनकार्ड प्रदान किया गया था। उस पर मैं पिछले चार वर्ष से राशन ले रहा था, पर गत दो मास से वह कार्ड मिल नहीं रहा है। उसे ढूँढने का काफी प्रयास किया गया है, लगता है राशन-कार्ड कहीं खो गया है। मेरे पास उसकी फोटोकॉपी है जिसे मैं इस प्रार्थनापत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ। इससे पूरा विवरण स्वतः उपलब्ध हो जाएगा।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे शीघ्र ही दूसरा राशनकार्ड जारी किया जाए, ताकि मैं राशन ले सकूँ।

आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद सहित,
भवदीय
रामचरण सिंह
5/20, वशिष्ठ पार्क, पंखा रोड, नई दिल्ली

30. आप अपनी कॉलोनी/कस्बे की हितकारी समिति के सचिव हैं। समिति के वार्षिक उत्सव के अवसर पर क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक को मुख्य अतिथि के रूप में पधारने के लिए आग्रह करते हुए एक निमंत्रण पत्र लिखिए।

(CBSE 2009 Delhi)

सेवा में,
पुलिस अधीक्षक,
दरियागंज थाना,
नई दिल्ली ।
दिनांक ....

महोदय,

निवेदन है कि हमारी संस्था 'दरियागंज हितकारी समिति' का वार्षिक उत्सव 25 मार्च, 2009 को अत्यंत समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। समिति की कार्यकारिणी ने यह निश्चय किया है कि इस समारोह का मुख्य अतिथि आपको बनाया जाए। सचिव के नाते मुझे अधिकार दिया गया है कि मैं आपको मुख्य अतिथि के रूप में पधारने के लिए निमंत्रित करूँ। इस समारोह में आप सादर आमंत्रित हैं। आपके आने से समारोह की शोभा तो बढ़ेगी ही, साथ ही लोगों का पुलिस के प्रति विश्वास भी बढ़ेगा।

समारोह 25 मार्च को सायं 5 बजे प्रारंभ होगा और रात्रि 8 बजे तक चलेगा। दो घंटे का सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह का मुख्य आकर्षण होगा। आशा है आप अपनी स्वीकृति प्रदान कर समिति को कृतार्थ करेंगे।

धन्यवाद सहित,
भवदीय
उमाकांत शर्मा
सचिव
दरियागंज हितकारी समिति, नई दिल्ली

31. आपके शहर में सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों में मिलावट का धंधा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अपने राज्य के खाद्य मंत्री को पत्र लिखकर इस समस्या के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए। *(CBSE 2009 Delhi)*

सेवा में
खाद्य मंत्री,
उत्तर प्रदेश सरकार,
लखनऊ।
दिनांक ....

विषय: खाद्य-पदार्थों में मिलावट का धंधा।

महोदय,

मैं गाजियाबाद शहर का निवासी हूँ। यहाँ गत एक दशक से यहाँ खाद्य पदार्थों में मिलावट का धंधा बड़े पैमाने पर फल-फूल रहा है। इसमें स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों की भी मिली भगत है। वे अपना हिस्सा लेकर इस अवैध धंधे की उपेक्षा करते रहते हैं। इसकी शिकायत कई बार पुलिस एवं प्रशासन में की गई है, पर वही ढाक के तीन पात। यह मिलावट का धंधा निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। दूध, घी, मसाले, खाद्य सामग्री सभी में मिलावट हो रही है। इससे जन-स्वास्थ्य को भारी खतरा उत्पन्न हो रहा है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस मिलावट के धंधे पर तुरंत रोक लगाने के लिए सक्रिय कदम उठाए जाएँ।

धन्यवाद सहित
भवदीय
रामस्वरूप शर्मा
संयोजक जनहित मोर्चा,
गाजियाबाद (उ.प्र.)

32. दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखकर देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता संबंधी अच्छे कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए निवेदन कीजिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)*

सेवा में,
निदेशक,
दिल्ली दूरदर्शन केंद्र,
मंडी हाउस, नई दिल्ली।
दिनांक ....

महोदय,
मैं आपका ध्यान दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की ओर दिलाना चाहता हूँ। इन दिनों हिंसा एवं घरेलू षड्यंत्र संबंधी कार्यक्रमों की बाढ़ आई हुई है। दिल्ली दूरदर्शन को भेड़चाल में शामिल न होकर देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता संबंधी अच्छे कार्यक्रम प्रसारित करने की योजना तैयार करनी चाहिए। इनसे देश के नागरिकों में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास किया जा सकेगा। वर्तमान में इस प्रकार के कार्यक्रमों की बहुत आवश्यकता है।
आशा है आप इस दिशा में पहल करेंगे।
भवदीय
राधाकृष्ण,
सचिव 'जन चेतना मंच', दिल्ली।

33. पड़ोस में हुई चोरी की रिपोर्ट अपने क्षेत्र के थाना अधिकारी को कीजिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)*

सेवा में,
थानाध्यक्ष,
जनकपुरी थाना, नई दिल्ली।
दिनांक ....
विषय : चोरी की रिपोर्ट।
महोदय,
मैं आपका ध्यान कल दिनांक .... रात को दस बजे सी–5 ब्लॉक में हुई चोरी की ओर दिलाना चाहता हूँ। यह चोरी हमारे पड़ोस में हुई। पड़ोसी तीन दिनों के लिए बाहर गए हुए हैं। अतः चोरी की रिपोर्ट मैं लिखवा रहा हूँ।
कल रात के समय चोर घर में ताला लगा देखकर आ गए और ताला तोड़कर अंदर घुस गए। वे कितना सामान ले गए हैं, इसका पता तो पड़ोसी (सी–5/18 निवासी) के लौटने पर ही चलेगा। पर वे उनकी सैंट्रो कार नं. सी–4 जी 4085 चुराकर ले गए हैं।
आपसे निवेदन है कि आप इस चोरी की प्राथमिक सूचना रिपोर्ट दर्ज कर लें। चोरों का पता लगाने का प्रयास भी करें।
सधन्यवाद
भवदीय
उश्नाक राय
सी–5/20, जनकपुरी, नई दिल्ली

34. नगरपालिका के स्वास्थ्य-अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें अपने मोहल्ले की सफाई-समस्या का वर्णन हो। *(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)*

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,
नगर निगम (पश्चिमी क्षेत्र),
अँधेरी (पूर्व), मुंबई।
दिनांक ....
मान्यवर,
निवेदन है कि मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र की दुर्दशा की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

यहाँ जगह-जगह पर कूड़े के ढेर जमा हैं। बरसात के दिनों में यहाँ का वातावरण इतना बदबूदार हो जाता है कि स्वच्छ वायु में साँस तक लेना दूभर हो जाता है। चारों ओर पानी सड़ रहा है। मक्खी और मच्छरों की भरमार है। घर-घर में मलेरिया के रोगी पड़े हुए हैं। मच्छरों ने चैन की नींद लेना हराम कर दिया है। इस दूषित वातावरण में मनुष्य के रहने तक की कल्पना नहीं की जा सकती।

हमने इस क्षेत्र के स्वास्थ्य निरीक्षक से कई बार प्रार्थना की, पर उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि यहाँ सफाई की उचित व्यवस्था कराने की कृपा करें, ताकि हम स्वच्छ वातावरण में रह सकें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

रामलाल

सचिव, जलरतनदीप सोसाइटी,

अँधेरी (पूर्व) मुंबई

35. आपके घर के पास पूजा-स्थल में रात-दिन लाउडस्पीकर का शोर होता रहता है और आप पढ़ नहीं पाते। इसकी शिकायत करते हुए अपने क्षेत्र के थाना-अध्यक्ष को पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)*

सेवा में,
थानाध्यक्ष,
जनकपुरी थाना,
नई दिल्ली।
विषय : पूजा-स्थलों में लाउड-स्पीकरों का प्रयोग।
महोदय,

मैं आपका ध्यान पूजा-स्थलों में रात-दिन बजने वाले लाउडस्पीकरों की ओर दिलाना चाहता हूँ। मेरे घर C-3/240 के पास ही मंदिर है। उसमें प्रातः पाँच बजे से ही लाउडस्पीकर पर शोर मचना प्रारंभ हो जाता है और यह शोर रात बारह बजे तक चलता रहता है। इसके कारण बच्चे पढ़ाई भी नहीं कर पाते। पड़ोस के लोग ध्वनि-प्रदूषण के शिकार हैं। मंदिर वाले कोई बात सुनने को तैयार नहीं हैं।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप अदालत द्वारा निर्धारित समय-सीमा का पालन करवाएँ। आपकी अति कृपा होगी।
धन्यवाद सहित,
भवदीय
रामकृष्ण सतीजा
दिनांक ....

36. किसी प्रख्यात समाचारपत्र के संपादक के नाम पत्र लिखकर रेल आरक्षण व्यवस्था में हुए सुधार की प्रशंसा कीजिए। *(CBSE 2009 Delhi)*

सेवा में,
संपादक,
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली।
दिनांक ....
विषय : रेल आरक्षण की नई व्यवस्था
महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से रेल आरक्षण में आए सुधार की प्रशंसा करना चाहता हूँ ताकि इसका लाभ सभी यात्री उठा सकें।

रेलवे ने ई-टिकटिंग व्यवस्था लागू कर घर बैठे कम्प्यूटर पर रेल टिकटों का आरक्षण करना आरंभ कर दिया है। इससे आरक्षण कार्यालय जाने और लंबी-लंबी लाइनों में लगने के झंझट से छुटकारा मिल गया है। टिकटों की कालाबाजारी भी प्रायः

समाप्त हो गई है। इस व्यवस्था के लिए रेल मंत्रालय बधाई का पात्र है। आशा है रेलवे भविष्य में भी जनहितकारी योजनाएँ लागू करता रहेगा।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

रमाकांत झा

संयोजक, दैनिक रेल यात्री संघ,

साहिबाबाद

37. चुनाव के कारण आपके घर की दीवारें नारे लिखने और पोस्टर चिपकाने से गंदी हो गई हैं। इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए दैनिक हिंदुस्तान के संपादक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)*

सेवा में,

संपादक,

हिंदुस्तान

के.जी. मार्ग, नई दिल्ली।

दिनांक ....

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार पत्र के माध्यम से अपनी एक समस्या का ध्यान संबंधित व्यक्तियों तक पहुँचाना चाहता हूँ। चूँकि हम एक लोकतंत्र में रह रहे हैं अत: यहाँ प्राय: किसी न किसी चुनाव का बिगुल बजता रहता है। हाल के चुनावों के दौरान पोस्टरबाजी ने शहर के सौंदर्यीकरण को नष्ट किया। मेरे घर की सभी बाहरी दीवारों पर पोस्टर चिपकाने की जैसे प्रतियोगिता हुई। सभी पार्टियों के पोस्टर एक-दूसरे के ऊपर चिपकाए गए हैं, आधे-अधूरे फटे पोस्टरों ने मेरे घर को एक प्रदर्शनी स्थल में तबदील कर दिया। आने-जाने वाले सहज ही वहाँ रुककर आँखों का आनंद लेने से नहीं चूकते।

सर, मैं पूछना चाहता हूँ कि एक आम नागरिक का इसमें क्या कसूर है? किसी पार्टी के चुनाव से उसे क्या लेना-देना है? साथ ही मैं चुनाव आयोग से भी पूछना चाहता हूँ कि उसकी आचार-संहिता क्या कागजी ही है?

अंत में मैं संबंधित अधिकारियों से माँग करता हूँ कि वे मेरे घर की दीवारों को साफ करवाकर यह कृत्य करने वालों से जुर्माना वसूलें।

निवेदक

राधेश्याम मिश्रा,

4/5, हवेली हैदर कुली

दिल्ली

38. बढ़ती हुई महँगाई पर चिंता प्रकट करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के प्रधान संपादक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)*

सेवा में,

प्रधान संपादक,

नवभारत टाइम्स,

बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-110002

दिनांक ....

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान बढ़ती हुई महँगाई की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ ताकि इस पर नियंत्रण पाने के कारगर उपाय किए जा सकें। कृपया इस पत्र को अपने समाचार-पत्र में प्रकाशित करने का कष्ट करें।

वर्तमान समय में देश की मध्य एवं निम्नवर्गीय जनता महँगाई के बोझ तले दबती चली जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार का दामों पर कोई नियंत्रण रह ही नहीं गया है। जीवन उपयोगी सामान्य वस्तुओं के मूल्य निरंतर बढ़ते रहने की एक प्रवृत्ति-सी बन गई है।

बच्चों के लिए दूध जुटा पाना सामान्य व्यक्ति की सीमा से बाहर हो गया है। सरकारी उपक्रम (मदर डेयरी, डी.एम.एस.) भी दाम बढ़ाने में किसी से पीछे नहीं हैं। साबुन, दालें, तेल, चीनी, मसाले आदि की कीमतें निरंतर बढ़ रही हैं। सरकार के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। कोई भी मंत्री इस पर चिंता तक प्रकट नहीं करता। लगता है कि यह सब उनकी मिली-भगत के परिणामस्वरूप ही हो रहा है।

जनता के सब्र का बाँध टूट रहा है। समय रहते सरकार महँगाई पर काबू पाने के प्रयास करे, अन्यथा स्थिति बेकाबू हो जाएगी।

भवदीय
राकेश वर्मा
सचिव, उपभोक्ता सहकारी संघ,
नई दिल्ली।

☞ प्रधानाचार्य को पत्र/प्रार्थना पत्र (*Letter/Application to the Principal*)

39. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए जिसमें आपके सहपाठी के प्रशंसनीय और साहसिक व्यवहार के लिए उसे सम्मानित करने का अनुरोध हो।

सेवा में,
प्रधानाचार्य,
नवनिकेतन पब्लिक स्कूल,
जम्मू।
दिनांक ....

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने सहपाठी रविकुमार के प्रशंसनीय एवं साहसिक व्यवहार की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

कल चौथे पीरियड में मनोज कुमार की नाक से खून बहने लगा। सभी उसे देखने लगे, पर रवि ने तत्काल उसे लिटाया और अपना रूमाल भिगोकर उसकी नाक पर रखा। उसकी नाक ऊपर से दबाई। इससे थोड़ी देर में उसका खून रुक गया। फिर रवि कुछ देर में सामान्य हो गया।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप रवि को इस साहसिक एवं प्रशंसनीय व्यवहार के लिए सम्मानित करें, इससे अन्य छात्रों को प्रेरणा मिलेगी।

आपका आज्ञाकारी
भारत

40. प्रधानाचार्य को चरित्र-प्रमाणपत्र देने का अनुरोध करते हुए आवेदन-पत्र लिखिए।

(CBSE 2008 & 2009 (Comptt.) Delhi)

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
वेंकटेश्वर पब्लिक स्कूल,
नई दिल्ली।

विषय : चरित्र प्रमाणपत्र हेतु आवेदन।

श्रीमान जी,

सविनय निवेदन है कि मैंने इस वर्ष इस स्कूल से दसवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की है। अब मुझे व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना है। वहाँ मुझे पिछले विद्यालय का चरित्र प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना है।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे ऐसा चरित्र प्रमाणपत्र बनाकर देने की कृपा करें जिसमें मेरे व्यवहार एवं खेल संबंधी उपलब्धियों का उल्लेख किया गया हो। मैं विद्यालय की जूनियर हॉकी टीम का दो वर्ष तक कप्तान रहा हूँ। मेरे व्यवहार से सभी अध्यापक संतुष्ट रहे हैं।

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

राकेश वर्मा

दिनांक ....

41. अपनी बहन के विवाह के कारण विद्यालय के प्रधानाचार्य को तीन दिन के अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

लवली पब्लिक स्कूल,

क.ख.ग. नगर, नई दिल्ली।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरी बहन का विवाह दिनांक .... को होना निश्चित हुआ है। इस कारण मैं वैवाहिक कार्यों में व्यस्त रहूँगा। अतः विद्यालय नहीं आ सकूँगा।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे दिनांक .... से .... तक तीन दिन का अवकाश प्रदान कर कृतार्थ करें।

आपकी अति कृपा होगी।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रविकांत

कक्षा-दसवीं (ब)

दिनांक ....

42. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र लिखिए कि पुस्तकालय में हिंदी की पत्रिकाएँ मँगवाने का समुचित प्रबंध किया जाए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

ममता माडर्न पब्लिक स्कूल,

विकासपुरी, नई दिल्ली।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की पत्रिकाओं का अभाव खटकता है। अंग्रेजी की आठ पत्रिकाएँ आती हैं जबकि हिंदी की केवल एक पत्रिका आती है। पुस्तकालयाध्यक्ष ने इसके लिए कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया है।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि पुस्तकालय में निम्नलिखित हिंदी पत्रिकाओं के मँगाने की समुचित व्यवस्था की जाए :

1. बाल भारती, 2. इंडिया टुडे (हिंदी), 3. सारिका, 4. नवनीत, 5. चंपक।

आशा है, आप हमारी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे।

धन्यवाद सहित,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

पुनीत महाजन

दिनांक ....

43. विद्यालय में खेल की उपयुक्त सामग्री की कमी की ओर ध्यान दिलाते हुए समुचित व्यवस्था करवाने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

रमन पब्लिक स्कूल,

चंडीगढ़।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में खेल-सामग्री का नितांत अभाव है। इस विद्यालय में लगभग 1200 विद्यार्थी हैं, लेकिन वर्ष भर में केवल 10,000 रुपए का सामान खरीदा गया है और उसे भी हमें खेलने के लिए नहीं दिया जाता। यही कारण है कि हमारा विद्यालय खेल-प्रतियोगिताओं में निरंतर पिछड़ता चला जा रहा है। दसवीं कक्षा के छात्र क्रिकेट में विशेष रुचि रखते हैं।

मैं समस्त छात्रों की ओर से आपसे अनुरोध करता हूँ कि इस वर्ष कम-से-कम 50,000 रुपए की खेल-सामग्री अवश्य खरीदी जाए और उसमें क्रिकेट का सामान पर्याप्त मात्रा में लिया जाए, ताकि हमें खेलने का अवसर मिल सके।

आपकी इस कृपा के लिए हम सब खिलाड़ी आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

पवन मल्होत्रा

क्रिकेट कप्तान (सीनियर टीम)

दिनांक ....

44. विद्यालय की विज्ञान-प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाने की आवश्यकता समझाते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। *(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

एम.बी.डी. पब्लिक स्कूल,

उत्तम नगर, नई दिल्ली।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय की प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाने की आवश्यकता है। इसका सामान बहुत पुराना हो चुका है। आज विज्ञान-जगत में नित्य नई खोजें हो रही हैं तथा पाठ्यक्रम में भी काफी बदलाव आ गया है। इसके अनुरूप वैज्ञानिक उपकरणों का सर्वथा अभाव है।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि हमारी विज्ञान प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाने की दिशा में आवश्यक सामग्री की खरीद करने के लिए उपयुक्त कदम उठाएँ।

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

पुनीत शर्मा

मॉनीटर, दसवीं कक्षा

दिनांक ....

विभिन्न विषयों से संबंधित अन्य पत्र

45. आप विद्यालय की हिंदी परिषद के मंत्री हैं। परिषद ने तुलसी जयंती मनाने का निर्णय किया है। उसकी अध्यक्षता के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के अध्यक्ष को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

(*CBSE S.P.-2008*)

सेवा में,

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

दिल्ली विश्वविद्यालय,

दिल्ली।

विषय : तुलसी जयंती समारोह

मान्यवर महोदय,

निवेदन है कि गगन भारती पब्लिक स्कूल, ओम विहार, नई दिल्ली की हिंदी परिषद् ने इस वर्ष 14 दिसम्बर, 200..... को तुलसी जयंती मनाने का निर्णय किया है। हम सभी की हार्दिक इच्छा है कि आप इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करें। आपने तुलसी-साहित्य पर पर्याप्त शोध कार्य भी किया है, अत: आप इस समारोह की अध्यक्षता के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं। आशा है आप अपनी स्वीकृति प्रदान कर हमें कृतार्थ करेंगे।

कार्यक्रम शाम पाँच बजे से सात बजे तक चलेगा। आपकी स्वीकृति मिलते ही शेष कार्यक्रम से आपको सूचित कर दिया जाएगा।

प्रार्थी

निशान्त अग्रवाल

मंत्री, विद्यालय हिंदी परिषद्

दिनांक ....

46. सूचना और संचार माध्यमों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण पत्र-लेखन पीछे छूट गया है। पत्र-लेखन के महत्त्व को रेखांकित करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

(*CBSE S.P.-2008*)

सी 5/13, मानसरोवर गार्डन

नई दिल्ली-110015

दिनांक ....

प्रिय मित्र सुयश,

सप्रेम नमस्ते।

काफी दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं मिला। प्रतीत होता है कि सूचना और संचार माध्यमों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण अब पत्र-लेखन पीछे छूटता जा रहा है।

मित्र, पत्र-लेखन का अपना विशेष महत्त्व है। पत्र लिखने से आत्मीयता का भाव झलकता है जबकि संचार माध्यमों द्वारा समाचार भेजने में यांत्रिकता का अहसास होता है। संचार माध्यम में शब्द-सीमा का भी ध्यान रखना पड़ता है जबकि पत्र में आप अपने मन की बात खुलकर लिख सकते हैं। पत्र में अपनत्व की भावना होती है। पत्र पाने वाला व्यक्ति प्रतीक्षारत रहता है। पत्र लिखने से भाषा की अभिव्यक्ति में कुशलता एवं सटीकता आती है।

आशा है कि तुम नियमित रूप से पत्र लिखकर अपने बारे में सूचित करते रहोगे।

तुम्हारा प्रिय मित्र

राजीव

47. आप अपने विद्यालय की छात्र-सभा के सचिव हैं । 14 सितंबर को हिंदी-दिवस मनाया जाना है। मुख्य अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग, गृह-मंत्रालय के सचिव को बुलाने के लिए पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

सेवा में,
सचिव,
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, नई दिल्ली।
दिनांक ....

विषय : हिंदी दिवस कार्यक्रम

महोदय,

निवेदन है कि हमारे विद्यालय की छात्र-सभा ने इस वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का निश्चय किया है। इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन के साथ-साथ 'हिंदी व्यवहार प्रदर्शनी' भी लगाई जा रही है। छात्र सभा की यह हार्दिक इच्छा है कि इस समारोह में आप मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर हमारा मार्गदर्शन करें।

यह कार्यक्रम सायं 4 से 6 बजे के मध्य सम्पन्न होगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अपनी स्वीकृति भिजवाकर कृतार्थ करेंगे।

औपचारिक निमंत्रण-पत्र आपकी स्वीकृति के उपरांत प्रेषित कर दिया जायेगा।

सधन्यवाद

भवदीय,
क ख ग
सचिव

48. बस-यात्रा के दौरान आपका जो सामान छूट गया था वह, 'श्री देवराज', एफ-27 सेक्टर 2, वसंत कुंज, दिल्ली ने आपके पास भिजवाया है। आभार व्यक्त करते हुए उन्हें धन्यवाद पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

अ ब स नगर,
नई दिल्ली
दिनांक ....

आदरणीय श्री देवराज जी,

आपके द्वारा बस में छूटा मेरा सामान प्राप्त हुआ। आपने यह सामान मुझ तक भिजवा कर अत्यंत कृपा की है। इसके बिना मैं अत्यंत असहज अनुभव कर रहा था। इसमें मेरे कई आवश्यक कागज-पत्र थे। आपकी इस कृपा के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

आशा है आप मुझे भविष्य में सेवा का अवसर प्रदान करेंगे।

एक बार पुन: आभार ।

आपका अपना
क ख ग

प्रति श्री देवराज
एफ-27, सेक्टर 2
वसंत कुंज, दिल्ली ।

49. आपके विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया गया। पूरे कार्यक्रम का संचालन आपने किया और लोगों ने आपकी खूब प्रशंसा की। उत्सव और आपकी प्रसन्नता दोनों का उल्लेख करते हुए पिताजी को पत्र लिखिए।

(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)

52 ए, दिलशाद गार्डन
दिल्ली।
दिनाँक ....

पूज्य पिताजी,

चरण स्पर्श।

आपका कृपा-पत्र मिला। उत्तर देने में इसलिए विलंब हुआ क्योंकि हमारे विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया गया था। मैं इसकी तैयारी एवं प्रस्तुति के साथ सीधे तौर पर जुड़ा था, अतः व्यस्त रहा।

इस पूरे कार्यक्रम का संचालन मैंने ही किया। प्रधानाचार्य ने यह दायित्व बड़े विश्वास के साथ मुझे सौंपा था। आपकी कृपा से मैं इस कसौटी पर खरा उतरा। मैंने सांस्कृतिक कार्यक्रम के मंच का संचालन भली प्रकार किया। लोगों ने मेरे प्रस्तुतिकरण के ढंग की खूब प्रशंसा की। यह उत्सव हर दृष्टि से सफल रहा। इससे मुझमें आत्मविश्वास का संचार हुआ है। आशा है भविष्य में मैं इस दिशा में और कुछ बेहतर कर सकूँगा।

अब मैं पूरी तरह से पढ़ाई में लग गया हूँ। परीक्षा में भी आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरूँगा। माताजी पूर्णतः स्वस्थ हैं। रिंकी आपको बहुत याद करती है।

आपका प्रिय पुत्र

राहुल

50. आपके गाँव में प्राथमिक विद्यालय है। आगे पढ़ने वाले लड़के-लड़कियों को चार किलोमीटर पैदल जाना पड़ता है। अपनी कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए शिक्षा निदेशक को पत्र लिखिए जिसमें उच्चतर स्तर का विद्यालय खोलने का अनुरोध किया गया हो । *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

सेवा में,

शिक्षा निदेशक,

दिल्ली सरकार, दिल्ली।

दिनांक ....

महोदय,

निवेदन है कि हम पालम क्षेत्र के ककरौला गाँव के निवासी हैं। इस गाँव में केवल एक प्राथमिक विद्यालय है। आगे पढ़ने वाले लड़के-लड़कियों को चार किलोमीटर दूर नजफगढ़ जाना पड़ता है। इसमें उन्हें भारी असुविधा होती है। इसी कारण अनेक बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस क्षेत्र में एक उच्चतर स्तर का विद्यालय खोला जाए। इससे यहाँ के विद्यार्थियों को बहुत लाभ पहुँचेगा।

धन्यवाद सहित

भवदीय

अमित कौशल

सचिव, ककरौला विकास समिति, दिल्ली।

51. अपने साथी के साथ अभद्र व्यवहार करने के लिए खेद व्यक्त करते हुए उसे एक पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

16/2, रमेश नगर,
नई दिल्ली।
दिनाँक ....

प्रिय रघुवीर,

सप्रेम नमस्ते ।

कल मैंने आपके साथ बड़ा अभद्र व्यवहार किया, इसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मुझे घर आकर अपनी गलती का अहसास हुआ। उस समय मैं उत्तेजना में आपके प्रति गलत शब्दों का प्रयोग कर गया। यह मेरी बहुत बड़ी भूल थी।

आशा है आप मुझे क्षमा कर, अपना पूर्ववत् प्रेम बनाए रखेंगे।

आपका प्रिय मित्र

सचिन

52. आपका मित्र किसी दुर्घटना में घायल हो गया और उसे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। कुशल-क्षेम पूछते हुए उसे एक सांत्वना पत्र लिखिए । *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

5/16, साकेत,

नई दिल्ली

दिनांक ....

प्रिय मित्र मनोज,

सप्रेमं नमस्ते !

मुझे यह जानकर अत्यंत दुख हुआ कि कल तुम एक स्कूटर दुर्घटना में घायल हो गए थे। इसमें तुम्हें काफी चोटें लगीं और तुम्हें अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। आशा है अब तुम्हारी स्थिति में निरंतर सुधार आ रहा होगा।

मित्र, मुसीबत अनचाहे मेहमान की तरह है जो बिना बुलाए, गलत समय पर आ जाती है। मुसीबत की घड़ी में धैर्य बनाए रखने से कष्ट की मारक क्षमता कम हो जाती है। मुझे पूर्ण आशा है कि तुम इस कष्ट को सहज ही झेल जाओगे। संभवत: एक सप्ताह बाद तुम्हें अस्पताल से छुट्टी मिल जाएगी। मैं समय मिलते ही तुम्हें देखने आऊँगा ।

तुम्हारे शीघ्र स्वस्थ होने की कामना सहित,

तुम्हारा प्रिय मित्र

राकेश

53. ग्यारहवीं कक्षा में विज्ञान विषय देने की प्रार्थना करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए । *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य जी,

जीवन पब्लिक स्कूल,

रमेश नगर, नई दिल्ली ।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैंने आपके विद्यालय से दसवीं कक्षा की परीक्षा 85% अंक लेकर उत्तीर्ण की है। ग्यारहवीं कक्षा में मैं विज्ञान विषय लेना चाहता हूँ। दसवीं की परीक्षा में विज्ञान विषय में मेरे 82% अंक आए थे। मैं बारहवीं कक्षा के बाद इंजीनियरिंग में जाना चाहता हूँ।

अत: आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे ग्यारहवी कक्षा में विज्ञान वर्ग में प्रवेश दिंया जाए।

आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद

आपका शिष्य

नवीन चावला

दिनांक ....

54. अपनी बस्ती के निकट नया बस-स्टॉप बनाने का अनुरोध करते हुए क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

सेवा में,

क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी,

दिल्ली परिवहन निगम,

नई दिल्ली।

दिनांक ....

विषय : सागरपुर में नया बस स्टॉप बनाना।

महोदय,

निवेदन है कि हम सागरपुर निवासी दिल्ली परिवहन निगम की बसों का समुचित लाभ इसलिए नहीं उठा पाते क्योंकि इस बस्ती के लिए कोई बस स्टॉप नहीं है। हमें दो किलोमीटर दूर पैदल चलकर डी-ब्लॉक जनकपुरी के स्टॉप तक जाना पड़ता है। इसमें हमें भारी असुविधा होती है।

आपसे विनम्र निवेदन है कि सागरपुर से गुजरने वाली बसों के लिए अग्रवाल स्वीट के निकट एक बस स्टॉप बनाया जाए। इससे सागरपुर निवासियों को काफी सुविधा हो जाएगी।

आशा है आप हमारी माँग पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर हमारे पक्ष में निर्णय लेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

रामकुमार

संयोजक

सागरपुर सुधार समिति, नई दिल्ली

55. पर्यावरण संरक्षण से संबंधित एक अंतः विद्यालय प्रतियोगिता आयोजित करने की अनुमति माँगते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

राजकीय प्रतिभा विद्यालय,

रमेश नगर, नई दिल्ली।

महोदय,

निवेदन है कि हमारे विद्यालय की बाल समिति पर्यावरण संरक्षण से संबंधित एक अंतः विद्यालय प्रतियोगिता आयोजित करना चाहती है। यह प्रतियोगिता अगस्त के तीसरे सप्ताह में आयोजित की जानी प्रस्तावित है। हम इस प्रतियोगिता को विद्यालय के हॉल में करना चाहते हैं। इसके लिए आपकी अनुमति चाहिए।

आशा है आप प्रतियोगिता के महत्त्व को समझते हुए हमें इसे आयोजित करने की अनुमति प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद,

आपका शिष्य

रवि सक्सेना

दसवीं 'बी'

सचिव, बाल समिति

दिनांक ....

56. अपने क्षेत्र के बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायता के लिए विद्यालय के छात्रों से धन एवं कपड़े एकत्रित करने की अनुमति के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

जीवन पब्लिक स्कूल,

मानसरोवर गार्डन, पटना (बिहार)

महोदय,

निवेदन है कि हमारे क्षेत्र के अनेक गाँवों में बाढ़ आई है। इन गाँवों के लोग बाढ़ग्रस्त हैं। इन लोगों के पास खाद्य सामग्री एवं वस्त्रों का भारी अभाव है।

इस विद्यालय के विद्यार्थी बाढ़ग्रस्त लोगों के लिए धन एवं कपड़े एकत्रित करना चाहते हैं। इससे जरूरतमंद लोगों की सहायता हो सकेगी। यह एक पवित्र एवं समाज-सेवा का कार्य है। इस धन एवं सामग्री को आपके माध्यम से जरूरतमंदों को भिजवाएँगे।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि स्कूल के विद्यार्थियों को इस पुनीत कार्य को करने की अनुमति प्रदान कर कृतार्थ करें ।

धन्यवाद सहित,

आपका शिष्य,

रविकांत

कक्षा दसवीं बी

दिनांक ....

57. दूरदर्शन पर छात्रों के लिए प्रसारित कार्यक्रम विशेष की सराहना करते हुए दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

सेवा में,

निदेशक

दूरदर्शन केन्द्र,

कोपरनिक्स मार्ग, नई दिल्ली।

दिनांक ....

महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से दूरदर्शन पर छात्रों के लिए प्रसारित हो रहे कार्यक्रम 'ज्ञान चैनल' के बारे में अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ।

आपका यह कार्यक्रम छात्रों के लिए बहुत उपयोगी है। इससे एक ओर तो उनका ज्ञान बढ़ता है तो साथ ही मनोरंजन भी करता है। इसे देखने वाले विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। यह एक लोकप्रिय प्रोग्राम बन गया है।

आशा है आप भविष्य में भी ऐसे ही रोचक एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रम दिखाते रहेंगे।

भवदीय

भारत मैंदीरत्ता

सचिव

दूरदर्शन दर्शक मंच, नई दिल्ली

58. हिन्दी विषय को अधिक रुचिकर बनाने के लिए सुझाव देते हुए शिक्षा-अधिकारी को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

सेवा में,

शिक्षा अधिकारी,

पश्चिमी क्षेत्र मंडल

विकासपुरी, नई दिल्ली

महोदय,

मैं आपका ध्यान हिंदी विषय को रुचिकर बनाने की दिशा में कुछ सुझाव देना चाहता हूँ ताकि विद्यार्थी इस विषय को मन लगाकर पढ़ सकें।

हिंदी पाठों से संबंधी सी. डी. तैयार की जाएँ और उन्हें कम्प्यूटर पर स्कूल में प्रदर्शित किया जाए। इसमें बच्चे अधिक रुचि लेंगे।

समय-समय पर स्कूलों में कवियों एवं साहित्यकारों को बुलाया जाए और विद्यार्थियों से उनकी सीधी बात करवाई जाए। इससे बच्चों में उत्साह का संचार होगा। हिंदी नाटकों को प्रोत्साहित किया जाए। उनके मंचन की व्यवस्था की जाए। हिंदी की अधिकाधिक पत्र-पत्रिकाएँ स्कूलों के पुस्तकालयों में उपलब्ध कराई जाएँ।

आशा है आप मेरे सुझावों पर गंभीरतापूर्वक विचार कर क्रियान्वित करने के उपाय करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

क ख ग

दिनांक ....

59. छात्रों के लिए विद्यालय में कैंटीन की सुविधा उपलब्ध कराने का अनुरोध करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

जीवन भारती स्कूल,

मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली।

दिनांक...................

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि हमारे स्कूल में कैंटीन का अभाव बहुत खलता है। सभी अच्छे स्कूलों में कैंटीन की सुविधा है। लंच टाइम में बच्चों को खाने की स्तरीय चीजें चाहिएँ। बाहर खड़े खोमचेवाले गंदी चीजें बेचते हैं। इनसे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

आशा है आप इस स्कूल में कैंटीन की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास शीघ्र ही करेंगे। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

नवीन चावला

(प्रीफेक्ट-दसवीं)

60. अपनी पसंद के किसी कार्यक्रम के प्रसारण के समय में परिवर्तन का अनुरोध करते हुए दूरदर्शन अधिकारी को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

सेवा में,

कार्यक्रम अधिकारी,

दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र,

नई दिल्ली।

महोदय,

निवेदन है कि आजकल दूरदर्शन द्वारा प्रसारित रहस्य रोमांच से भरपूर कार्यक्रम 'लाल हवेली' लोकप्रियता की चरम सीमा पर है, पर इसके प्रसारण का समय गलत है। इसे रात्रि आठ बजे दिखाया जाता है। इस समय तक काफी लोग घर नहीं पहुँच पाते अतः वे इसे देखने से वंचित रह जाते हैं। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इसे रात्रि 9.00 या 9.30 बजे दिखाया जाए। इससे दर्शकों को बहुत लाभ होगा।

सधन्यवाद।

भवदीय

भारत शर्मा

संयोजक, खुला मंच, नई दिल्ली।

दिनांक ....

61. विद्यालय के परिसर में 'इंजीनियरिंग' की प्रवेश परीक्षा की कोचिंग कक्षाओं की व्यवस्था कराने का अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

ज्ञान भारती पब्लिक स्कूल,

नई दिल्ली।

विषय : इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा की कोचिंग।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि आजकल अधिकांश विद्यार्थी इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा की तैयारी करना चाहते हैं। उन्हें इसके लिए कोचिंग की आवश्यकता है। इसके लिए यदि इस कोचिंग की व्यवस्था विद्यालय के परिसर में हो जाए तो विद्यार्थियों को बहुत सुविधा हो जाएगी। इधर-उधर जाने में काफी समय, धन और शक्ति का अपव्यय हो जाता है। इस व्यवस्था के लिए विद्यार्थी फीस जमा करवाने को भी तैयार हैं। आशा है आप इस प्रकार की व्यवस्था में रुचि लेंगे।

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

नितिन बोस

अध्यक्ष, विद्यार्थी संघ

दिनांक ....

62. खराब सेल फोन के सेट की शिकायत करते हुए संबद्ध कंपनी के स्थानीय अधिकारी को पत्र लिखिए। *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

सेवा में

प्रबंधक

एयरटेल फोन सर्विस केन्द्र,

ओखला, नई दिल्ली।

मान्यवर,

मैं आपके फोन का नियमित उपभोक्ता हूँ। मेरे पास आपकी कंपनी का कनेक्शन नं. 9842468407 है। यह फोन सेट ठीक प्रकार से काम नहीं कर रहा है। इससे भारी असुविधा होती है। इसकी शिकायत पहले भी की जा चुकी है। अब आपसे विनम्र निवेदन है कि या तो इस सेट को ठीक करवा दें अथवा इसे बदल दें। अभी यह गारंटी पीरियड में ही है।

आशा है कि आप अपनी कंपनी की प्रतिष्ठा के अनुरूप व्यवहार करेंगे।

भवदीय

राजू अग्रवाल

उत्तम नगर, नई दिल्ली

दिनाँक ....

सी.बी.एस.ई. की परीक्षाओं में पूछे गए पत्र

1. आपके विद्यालय में होने वाले वार्षिक उत्सव में आपको पुरस्कृत किया जाएगा। आप चाहते हैं कि आपकी माताजी भी इसे देखें। माताजी को बुलाने के लिए पत्र लिखिए।
2. आपके मोहल्ले में आए दिन चोरियाँ हो रही हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को गश्त बढ़ाने हेतु पत्र लिखिए।
3. आपने किसी पुस्तक विक्रेता से पुस्तक मँगायी थी, किंतु अभी तक पुस्तक नहीं मिली। पुस्तक विक्रेता को शिकायती पत्र लिखिए।
4. परिवहन निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखिए जिसमें आपके गाँव/कॉलोनी तक बस चलाने का अनुरोध हो।

5. नगर निगम में कार्यालय सहायक के पद के लिए एक आवेदन पत्र लिखिए।
6. अपने क्षेत्र में पेयजल की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए जिला स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।
7. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में लिपिक पदों के रिक्त स्थानों को भरने के लिए रोजगार समाचार में विज्ञापन आया है, उसका हवाला देते हुए सचिव के नाम आवेदन-पत्र लिखिए।
8. दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर अवकाश हेतु प्रधानाचार्य जी को आवेदन पत्र लिखिए।
9. गली-मुहल्ले की सड़कों और नालियों की नियमित और समुचित सफाई न होने की शिकायत करते हुए नगरपालिका के अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए।
10. अपने प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र लिखिए, जिसमें उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी विषय पढ़ाने के लिए निवेदन किया गया हो।
11. दिन-दिन बढ़ते बिजली संकट की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के मुख्य संपादक को पत्र लिखिए।
12. स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार लाने के लिए नित्य व्यायाम करने की प्रेरणा देते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।
13. अपने क्षेत्र में डाक वितरण की व्यवस्था ठीक न होने की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए डाकपाल को शिकायती पत्र लिखिए।
14. बड़ी बहन की ओर से छोटे भाई को समय का अपव्यय न करने और कठिन परिश्रम करने की प्रेरणा देते हुए पत्र लिखिए।
15. अपने राज्य के परिवहन-प्रबंधक को पत्र लिखिए जिसमें आपकी वस्ती तक नया बस रूट आरंभ कराने का अनुरोध हो।
16. आपके क्षेत्र में अनधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं। इसकी रोकथाम के लिए जिलाधिकारी को पत्र लिखिए।
17. सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत चल रहे रात्रिकालीन शिक्षण केंद्रों में प्रौढ़ों को पढ़ाने के लिए अंशकालिक शिक्षकों की आवश्यकता है जो कम-से-कम सेकेंडरी तक पढ़े हों। इस कार्य के लिए निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा जयपुर, राजस्थान को आवेदन-पत्र लिखिए।
18. वाशिंग पाउडर बनाने वाली कंपनी 'क-ख-ग लिमिटेड' को ग्रीष्मावकाश में घर-घर जाकर प्रचार करने वाले युवक-युवतियों की आवश्यकता है। कंपनी के व्यापार-प्रबंधक को आवेदन पत्र लिखिए।
19. अपने पिताजी की ओर से भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंधक को पत्र लिखकर ट्रेक्टर खरीदने के लिए ऋण स्वीकृत करने का अनुरोध कीजिए।
20. अस्थायी आधार पर भरे जाने वाले लिपिक पद हेतु माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष को अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए आवेदन पत्र लिखिए।
21. अपने क्षेत्र की समस्याओं और असुविधाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए क्षेत्र के संसद सदस्य को पत्र लिखकर उन्हें दूर करने का अनुरोध कीजिए।
22. अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए अपने जिले के बेसिक शिक्षा अधिकारी को प्राथमिक शिक्षक के पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए।
23. ग्रीष्मावकाश में आपके पर्वतीय मित्र ने आपको आमंत्रित कर दर्शनीय स्थलों की सैर कराई। उसका आभार व्यक्त करते हुए उसे धन्यवाद पत्र लिखिए।
24. बनाव-शृंगार में अधिक समय नष्ट न करने की सलाह देते हुए बड़ी बहन की ओर से छोटी बहन को पत्र लिखिए।
25. चुनाव के दिनों में आपके शहर की दीवारें नारे लिखने और पोस्टर चिपकाने से गंदी हो गई हैं। इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
26. अपने जन्मदिन पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए उसे धन्यवाद पत्र लिखिए।
27. सांप्रदायिकता और जातिवाद के विरोध में जन-जागृति पैदा करने के लिए समाचार पत्र के प्रधान संपादक को पत्र लिखिए।
28. समय के सदुपयोग और परिश्रम पर बल देते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

29. पटना स्थित 'चेतना' नामक संस्था को महिला साक्षरता के आँकड़े जानने के लिए सर्वेक्षण-कर्ताओं की आवश्यकता है, जो सेकेंडरी उत्तीर्ण हों और सर्वेक्षण कार्य में रुचि रखते हों। संस्था के सचिव को उक्त पद के लिए आवेदन पत्र लिखिए।
30. विदेश में रहने वाले अपने पत्र-मित्र को होली पर्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए पत्र लिखिए।
31. आपकी बस्ती में वन-महोत्सव पर बहुत से वृक्ष लगाए गए किंतु सरकारी उपेक्षा के कारण वे सूख रहे हैं। समाचारपत्र के संपादक को पत्र लिखकर इस समस्या के प्रति अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कीजिए।
32. कालिदास मार्ग, उज्जैन में रहने वाली तन्वी की ओर से छात्रावास में रहने वाले भाई को नियमित व्यायाम का महत्त्व बताते हुए पत्र लिखिए।
33. बाल-भवन, उदयपुर के विवेक व्यास की ओर से उसके मित्र के पिता की असामयिक मृत्यु पर एक संवेदना-पत्र लिखिए।
34. कावेरी छात्रावास के अधीक्षक को अनुराधा की ओर से पत्र लिखकर छात्रावास की भोजनशाला के निरंतर गिरते स्तर की ओर ध्यान आकृष्ट कीजिए।
35. सरदार पटेल विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि विद्यालय के पुस्तकालय के लिए हिंदी की कुछ नई पुस्तकें खरीदी जाएँ।
36. विदेश में रहने वाले अपने मित्र को पत्र लिखकर बताइए कि इस देश में ईद कैसे मनाई जाती है।
37. गत कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बढ़ने लगे हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को पीयूष की ओर से पत्र लिखिए।
38. डेंगू और मलेरिया के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए चिकित्सालयों में अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं की ओर ध्यान आकर्षित कराने हेतु राज्य के स्वास्थ्य मंत्री को पत्र लिखिए।
39. अपनी विशेष रुचियों का परिचय देते हुए अपने विदेशी पत्र-मित्र को पत्र लिखिए।
40. अपने भाई के विवाह के समस्त आयोजनों का उल्लेख करते हुए अपने विदेशी मित्र को पत्र लिखकर उसे विवाह-समारोह में आमंत्रित कीजिए।
41. कुछ समय पूर्व आपने एक टेलीविजन खरीदा है जो अनेक कमियों के कारण आपके लिए समस्या बना हुआ है। अपनी समस्या की जानकारी देते हुए विक्रेता के नाम पत्र लिखिए।
42. आप विद्यालय की हिंदी परिषद के मंत्री हैं। परिषद ने तुलसी-जयंती मनाने का निर्णय किया है। उसकी अध्यक्षता करने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।
43. सूचना और संचार माध्यमों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण पत्र-लेखन पीछे छूट गया है। पत्र-लेखन के महत्त्व को रेखांकित करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
44. श्री दिनेश डी.आर. डिस्ट्रीब्यूटर कंपनी के प्रबंधक हैं। उन्हें विश्वनाथ माहेश्वरी को साक्षात्कार के लिए बुलाना है। वे अपने व्यक्तिगत सहायक को पत्र लिखने का आदेश देते हैं। पत्र लिखिए।
45. सैफ का सर्टिफिकेट का बैग कहीं छूट गया था जो 55 पंतनगर, जयपुर निवासी नीलम को मिला। वह बैग उन्होंने सैफ तक पहुँचाया। आप सैफ की तरफ से उस अपरिचिता को पत्र लिखिए।

अभ्यासार्थ
(*Practice*)

1. आगरा शहर में व्याप्त जल-संकट की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए महापौर को एक पत्र लिखिए।
2. अपने कार्यालय के अधीक्षक को पत्र लिखकर अपनी माताजी की बीमारी में सेवा करने के लिए एक मास तक एक घंटे विलंब से आने की अनुमति माँगिए।
3. मेरठ नगर परिवहन प्राधिकरण के प्रबंधक को पत्र लिखकर स्थानीय बस सेवा में सुधार करने के लिए प्रार्थना कीजिए।
4. बस कंडक्टर के दुर्व्यवहार की शिकायत करते हुए दिल्ली परिवहन निगम के महाप्रबंधक को एक शिकायती पत्र लिखिए।
5. महानगर टेलीफोन निगम के कर्मचारी भूमिगत केबल डालने के लिए गड्ढे खोदकर चले गए हैं। इसे एक महीना बीत गया है पर इन्हें भरने के लिए कुछ काम नहीं हो रहा। इससे होने वाली असुविधा की ओर ध्यान आकर्षित कराने के लिए महाप्रबंधक को पत्र लिखिए।

6. आपकी कॉलोनी में रसोई गैस के सिलेंडर मिलने में भारी असुविधा होती है। इंडियन ऑयल गैस के प्रबंधक को पत्र लिखकर अपनी कॉलोनी में गैस एजेंसी खोलने का अनुरोध कीजिए।
7. आपके क्षेत्र का डाकिया अत्यंत लापरवाही से डाक फेंकता है। इससे आवश्यक पत्र गुम हो जाते हैं। मुख्य डाकघर को इस बारे में शिकायती-पत्र लिखिए।
8. आपके इलाके में कुछ असामाजिक तत्त्व महिलाओं पर फब्तियाँ कसते हैं तथा चेन खींचने जैसी घटनाओं में संलिप्त रहते हैं। उनकी शिकायत करते हुए थानाध्यक्ष को एक पत्र लिखिए।
9. आपकी अनुपस्थिति में आपके घर में चोरी हो गई है। अपने सामान का विवरण देते हुए थानाध्यक्ष को शिकायत दर्ज कराने का पत्र लिखिए।
10. आपने राजधानी एक्सप्रैस में नई दिल्ली से अहमदावाद तक की यात्रा की थी। उस यात्रा के दौरान जो खाना दिया गया वह अत्यंत घटिया स्तर का था। इसकी शिकायत करते हुए रेलवे विभाग को पत्र लिखिए।
11. आपका वचत खाता फरीदाबाद की पंजाव नेशनल बैंक शाखा में है। आपकी चैक बुक खो गई है। इसकी शिकायत करते हुए नई चैक बुक जारी करने की प्रार्थना करते हुए पत्र लिखिए।
12. दिल्ली जल बोर्ड के अध्यक्ष को पत्र लिखकर अभी-अभी नियमित की गई बस्ती में पानी की पाइपलाइन बिछाने तथा जल कनेक्शन देने का अनुरोध कीजिए।
13. जीवन पब्लिशिंग हाउस को कुछ ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो स्कूलों में जाकर अध्यापकों को कंपनी के नए-नए प्रकाशनों की जानकारी दे सकें। आप अपनी योग्यता का उल्लेख करते हुए इस पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए।
14. विक्रांत डिटर्जेंट पाउडर को कुछ ऐसे युवक-युवतियों की आवश्यकता है जो घर-घर जाकर इसका प्रचार कर सकें। अपने राज्य के शिक्षामंत्री को पत्र लिखकर बच्चों को दी जाने वाली शारीरिक और मानसिक सजा पर रोक लगाने का अनुरोध कीजिए।
15. आपके स्कूल ने गणतंत्र दिवस की परेड में एक समूह नृत्य प्रस्तुत किया। इस नृत्य के बारे में मित्र/सखी को पत्र लिखिए।
16. अपने क्षेत्र के जल-संकट की ओर स्थानीय प्रशासन का ध्यान आकर्षित कराने के लिए 'दैनिक सहारा' के संपादक को पत्र लिखिए।
17. 'नवभारत टाइम्स' के संपादक को पत्र लिखकर नित्य बदलते पाठ्यक्रमों पर चिंता प्रकट करते हुए शिक्षा विभाग का ध्यान आकर्षित कीजिए।
18. पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए सी.एन.जी. गैस से चलित वाहनों की आवश्यकता पर वल देते हुए 'दैनिक भास्कर' पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित कीजिए।
19. आजकल टमाटर और प्याज की कीमतें आसमान छू रही हैं। इससे सामान्य व्यक्ति प्रभावित हो रहे हैं। दैनिक हिंदुस्तान समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखकर इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कीजिए।
20. दिल्ली में महिलाओं की असुरक्षा को लेकर अपनी चिंता प्रकट करते हुए 'दैनिक जागरण' के संपादक को पत्र लिखिए।
21. आजकल टेलीविजन पर जो कार्यक्रम आ रहे हैं उनमें से अधिकांश में सेक्स और हिंसा को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके विरुद्ध जनचेतना विकसित करने के लिए नवभारत टाइम्स के संपादक को पत्र लिखिए।
22. विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर आर्थिक सहायता हेतु प्रार्थना कीजिए।
23. अपने मित्र को पत्र लिखकर ग्रीष्मावकाश अपने साथ बिताने के लिए आमंत्रित कीजिए।
24. अपने चाचाजी को पत्र लिखकर उन्हें जन्मदिन पर भेजे गए उपहार के लिए कृतज्ञता प्रकट कीजिए। उपहार की प्रशंसा भी कीजिए।
25. अपने मित्र को पत्र लिखकर स्कूल में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में आमंत्रित कीजिए।
26. परीक्षा में असफल हो जाने पर मित्र को ढाढस बँधाते हुए पुनः मन लगाकर परिश्रम करने के लिए प्रेरित करते हुए पत्र लिखिए।
27. अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर समय का सदुपयोग करने तथा पढ़ाई में मन लगाकर पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
28. अपने मित्र को पत्र लिखकर किसी विशेष पुस्तक को पढ़ने की प्रेरणा दीजिए। उस पुस्तक की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
29. अपने पत्र-मित्र को दिल्ली के दर्शनीय स्थलों का परिचय देते हुए पत्र लिखिए।
30. अपने स्कूल के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए जिसमें खेल सुविधाएँ उपलब्ध कराने की प्रार्थना की गई हो।
31. बिजली विभाग के महाप्रबंधक को एक पत्र लिखकर बिजली कटौती पर अपना विरोध प्रकट कीजिए।
32. समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर भ्रष्टाचार के बढ़ते रूप पर अपनी चिंता प्रकट कीजिए।
33. अपने जन्मदिन के अवसर पर कार्यक्रम बताते हुए अपने मित्र/अपनी सखी को आमंत्रित कीजिए।
34. आपकी माताजी अस्वस्थ चल रही हैं। अपने पिताजी को पत्र लिखकर माताजी की दशा से परिचित कराइए।
35. अगले मास ग्रीष्मावकाश होने वाला है। अपने मित्र सचिन को कम से कम दो सप्ताह अपने साथ बिताने के लिए आमंत्रित कीजिए।
36. एक सांस्कृतिक संस्था को कार्यक्रम संचालक की आवश्यकता है। आप अपनी रुचियों एवं योग्यताओं का विवरण देते हुए इस पद हेतु आवेदन-पत्र लिखिए।
37. आपका मित्र विदेश-यात्रा पर जा रहा है। मंगलकामना करते हुए उसे एक पत्र लिखिए।

अध्याय 5

निबंध-लेखन

(Essay Writing)

☞ निबंध (*Essay*)

लिखित अभिव्यक्ति के विकास के लिए भाषा-शिक्षण में निबंध-लेखन का बहुत महत्त्व है। निबंध को गद्य की कसौटी माना गया है। निबंध में भाषा का मानक और प्रांजल रूप सामने आता है। निबंध लिखने में विद्यार्थी विषय-संबंधी विचारों का संयोजन करता है, उन्हें निश्चित क्रम में संजोता है, उनके समर्थन में उदाहरण जुटाता है, उन्हें व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्दों का चयन करता है, मुहावरे-लोकोक्तियों का प्रयोग करता है और इस प्रकार विचारों को निबंध के रूप में प्रस्तुत करता है। गद्य का उत्कृष्ट रूप निबंध में ही मिलता है।

अनुभव और ज्ञान का कोई भी क्षेत्र निबंध का विषय बन सकता है; जैसे—कोई त्योहार, यातायात के साधन, प्रकृति का रूप, समाज एवं राष्ट्र की समस्याएँ आदि।

निबंध की प्रमुख विशेषताएँ :

1. सुसंबद्धता : निबंध शब्द का अर्थ है—भली प्रकार बँधा हुआ। निबंध में भाव या विचार पूर्णतया एक सूत्र में बँधे रहते हैं। निबंध के विचारों में एक क्रम होता है और उनमें कार्य-करण का संबंध होता है। अनर्गल और फालतू बातों के लिए निबंध में कोई स्थान नहीं होता।

2. संक्षिप्तता : संक्षिप्तता अच्छे निबंध की विशेषता है। निबंध आकार में इतना छोटा होता है कि उसे एक बैठक में सरलता से पढ़ा जा सके। निबंध अपने आप में पूर्ण होता है।

3. विषयानुकूल भाषा : निबंध-लेखन की शक्ति है–**भाषा।** भाषा-व्यवहार के द्वारा ही लेखक भावों को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करता है। निबंध की शब्दावली उसके विषय के अनुकूल होनी चाहिए। निबंध की भाषा में कसावट का गुण भी होना चाहिए।

4. विचारों का समर्थन : लेखक अपने विचारों के समर्थन में यदि एकाध सूक्ति, सुभाषित अथवा किसी महापुरुष के कथन का समावेश कर ले तो इससे निबंध प्रभावशाली हो जाता है। अतः विद्यार्थियों को ऐसी सूक्तियों, सुभाषितों तथा कथनों का संग्रह कर निबंध में यथास्थान प्रयोग करना चाहिए।

निबंध के मुख्य प्रकार : विषय और शैली की दृष्टि से निबंध अनेक प्रकार के हो सकते हैं :

1. वर्णनात्मक या विवरणात्मक : किसी वस्तु, घटना, समारोह आदि का वर्णन अथवा विवरण देना।

2. विचारात्मक : समाज अथवा देश की कोई समस्या, देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, विद्यार्थी–जीवन आदि विषयों पर विचार व्यक्त करना।

3. भावात्मक : क्रोध, प्रेम, साहस अथवा किसी घटना आदि पर भावात्मक प्रस्तुति।

❖ निबंध-लेखक को विषय की सम्यक् जानकारी होनी चाहिए। इसके लिए अनेक स्रोतों से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। निबंध-लेखन में लेखक के निजी अनुभव अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी होते हैं। अतः इनका समावेश निबंध-लेखन में मौलिकता लाता है। निबंध को अपनी भाषा में ही लिखना चाहिए अन्यथा मौलिक रूप से स्वतंत्र-लेखन कुशलता का विकास कभी नहीं हो पाएगा।

निबंध की रूपरेखा : किसी विषय पर निबंध लिखने से पूर्व निबंध की रूपरेखा बना लेनी चाहिए। रूपरेखा के मुख्य बिंदु हैं : 1. प्रस्तावना अथवा भूमिका, 2. विषय प्रतिपादन, 3. उपसंहार / समापन।

1. प्रस्तावना : प्रस्तावना निबंध का प्रारंभिक अंश है। इसमें लेखक निबंध के विषय से परिचित कराता है। अतः प्रस्तावना अत्यंत आकर्षक, सारगर्भित और प्रभावपूर्ण होनी चाहिए। प्रस्तावना का अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।

2. विषय-प्रतिपादन : विषय का प्रतिपादन करने के लिए विषय को विचार की क्रमिक इकाइयों में विभाजित कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् इन विचार-बिंदुओं को एक-एक करके क्रम से स्पष्ट करना चाहिए। प्रत्येक विचार बिंदु को एक अनुच्छेद में स्पष्ट करें। अनुच्छेदों में अलग-अलग विचार होने पर भी उनमें परस्पर संबंध होना आवश्यक है, क्योंकि वे एक ही विषय के अंग

हैं। किसी एक विचार को अनावश्यक विस्तार न दें। लंबे अनुच्छेद निबंध में नीरसता ला सकते हैं। इसलिए लेखक को यथासंभव छोटे एवं पूर्ण अनुच्छेदों का प्रयोग करना चाहिए।

3. **उपसंहार :** उपसंहार निबंध की चरमावस्था का द्योतक है। इसमें निम्नलिखित बिंदु लाए जा सकते हैं :

(क) विषय का निष्कर्ष, (ख) सार-संक्षेप, (ग) संदेश।

उपसंहार इतना प्रभावी होना चाहिए कि पाठक के मन पर अपनी छाप छोड़ सके।

सी.बी.एस.ई. की विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए निबंध

1. किसी मेले का आँखों देखा वर्णन
2. यदि मैं अपने विद्यालय का प्रधानाचार्य होता
3. मेरा आदर्श अध्यापक
4. युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव
5. उस दिन जब हम पिकनिक पर गए
6. प्रदूषण एक समस्या
7. पराधीन को सुख नहीं
8. शिक्षा का गिरता स्तर
9. मेरी वह बस यात्रा
10. दया धर्म का मूल है
11. मेरा प्यारा भारत देश
12. बेरोजगारी की समस्या
13. युवा पीढ़ी और व्यायाम
14. यदि मैं पूँजीपति होता
15. मेरी प्रिय पुस्तक
16. मनोरंजन के आधुनिक साधन
17. शिक्षा उन्नति के लिए आवश्यक है
18. वनों से पर्यावरण संरक्षण
19. पुस्तक जो मुझे प्रिय है
20. व्यायाम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक
21. समाचार-पत्र
22. मेरा प्रिय मित्र
23. बेरोजगारी : समस्या और समाधान
24. मेरा प्रिय नेता
25. वन रहेंगे-हम रहेंगे अथवा वन हैं तो हम हैं
26. गणतंत्र दिवस का आँखों देखा हाल अथवा कैसा रहा गणतंत्र दिवस समारोह
27. बढ़ती जनसंख्या, घटते साधन
28. महँगाई : एक समस्या
29. सामाजिक जीवन में बढ़ता भ्रष्टाचार
30. इक्कीसवीं सदी का भारत
31. भुलाए नहीं भूलता वह दृश्य
32. सच्चा मित्र-महा वरदान
33. दिन-दिन बढ़ती जनसंख्या : एक भीषण समस्या
34. शिक्षा में खेल-कूद का साधन
35. वर्षाकाल मेघ नभ छाए
36. यदि मैं शिक्षा मंत्री होता
37. भयंकर बाढ़ का दृश्य
38. प्रदूषण और स्वास्थ्य
39. मेरे जीवन की आकांक्षा
40. भारत जैसा देश कहाँ है!
41. मेरी सर्वाधिक प्रिय ऋतु
42. सत्संगति सब विधि उपकारी
43. काल्ह करै सो आज कर
44. स्वास्थ्य और व्यायाम
45. विज्ञापन और हमारा जीवन
46. विद्यार्थी और फैशन
47. मीठी वाणी बोलिए
48. अविस्मरणीय यात्रा
49. मेरा जीवन-स्वप्न
50. विज्ञापन की दुनिया न्यारी
51. हमारा प्यारा भारतवर्ष
52. जहाँ चाह वहाँ राह
53. आँखों देखी दुर्घटना
54. परिश्रम का महत्त्व
55. हमारा भारत
56. छात्र और शिक्षक
57. किसी प्राकृतिक स्थल की यात्रा
58. दैव-दैव आलसी पुकारा
59. दैवी आपदा बाढ़
60. कैसे मनाया स्वतंत्रता दिवस
61. बहु ऋतुओं का देश हमारा
62. दूरदर्शन का विद्यार्थियों पर प्रभाव
63. समय का प्रभाव
64. अवसर को मत खोइए
65. भोर का सौंदर्य
66. परोपकार
67. दहेज : एक कुप्रथा

1. हमारा प्यारा भारतवर्ष

अथवा

भारत की विशेषताएँ

हमारा देश भारत अत्यंत महान् एवं सुन्दर है। यह देश इतना पावन एवं गौरवमय है कि यहाँ देवता भी जन्म लेने को लालायित रहते हैं। हमारी यह जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। कहा भी गया है–**"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"** अर्थात् जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद जी ने अपने एक नाटक के गीत में लिखा है–

"अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।"

हमारे देश का नाम भारत है, जो महाराज दुष्यंत एवं शकुंतला के प्रतापी पुत्र **'भरत'** के नाम पर रखा गया। पहले इसे **'आर्यावर्त'** कहा जाता था। इस पावन देश में राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, वर्धमान महावीर आदि महापुरुषों ने जन्म लिया। इस देश में अशोक और अकबर जैसे प्रतापी सम्राट् भी हुए हैं। इस देश के स्वतंत्रता-संग्राम में महात्मा गाँधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, लोकमान्य तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, सरोजिनी नायडू आदि ने कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया।

भौगोलिक रचना की दृष्टि से हमारे देश का प्राकृतिक स्वरूप अत्यंत मनमोहक है। इसके पर्वतीय प्रदेशों की हिमाच्छादित पर्वतमालाएँ, दक्षिणी प्रदेशों के समुद्रतटीय नारियल के वृक्ष, गंगा-यमुना के उर्वर-मैदान प्रकृति की अनुपम भेंट हैं। इस देश में हर प्रकार की जलवायु पाई जाती है। इसी भूमि पर 'धरती का स्वर्ग' कश्मीर है, जिसकी मनोरम घाटियाँ, डल झील, शालीमार-निशात बाग हमें स्वप्नलोक की दुनिया में ले जाते हैं। हिमालय हमारे देश का सशक्त प्रहरी है, तो हिंद महासागर इस भारतमाता के चरणों को निरंतर धोता रहता है। हमारा यह विशाल देश उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैला हुआ है। इस देश की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन करते हुए कवि राम नरेश त्रिपाठी लिखते हैं–

"शोभित है सर्वोच्च मुकुट से, जिनके दिव्य देश का मस्तक।
गूँज रही हैं सकल दिशाएँ, जिनके जयगीतों से अब तक ।।"

हमारे देश में **'विभिन्नता में एकता'** की भावना निहित है। यहाँ प्राकृतिक दृष्टि से तो विभिन्नताएँ हैं ही, इसके साथ-साथ खान-पान, वेशभूषा, भाषा-धर्म आदि में भी विभिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। ये विभिन्नताएँ ऊपरी हैं, हृदय से हम सब भारतीय हैं। भारतीय संविधान के अनुसार सभी धर्मावलंबियों को अपनी उपासना पद्धति तथा सामाजिक व्यवस्था का अनुसरण करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। भारतवासी उदार हृदय वाले हैं और **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना में विश्वास करते हैं।

हमारा प्यारा भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है। जनसंख्या की दृष्टि से यह विश्व में दूसरा स्थान रखता है। इस देश में सौ करोड़ से अधिक व्यक्ति निवास करते हैं। इस देश में अनेक राज्य हैं। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है तथा राज्यों की अपनी-अपनी भाषाएँ भी हैं। प्रत्येक राज्य की अपनी सामाजिक परंपराएँ, लोकनृत्य एवं लोकगीत हैं। असम का बिहू, केरल का कथकली, पंजाब का भंगड़ा, गुजरात का गरबा अत्यंत प्रसिद्ध लोकनृत्य हैं। हमारी संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। इसे मिटाने के अनेक प्रयास किए गए, पर यह अक्षुण्ण रही है। सुप्रसिद्ध शायर इकबाल ने कहा भी है–

"यूनान मिस्र रोमां, सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।"

हमने दूसरे देशों पर कभी कब्जा जमाने का प्रयास नहीं किया। जयशंकर प्रसाद बताते हैं :

"विजय केवल लोहे की नहीं,
धरा पर रही धर्म की धूम।
भिक्षु होकर रहते सम्राट्
दया दिखलाते घर-घर घूम।"

हमें अत्यंत सावधानीपूर्वक अपने भारतवर्ष की रक्षा करनी चाहिए। गिरिजाकुमार माथुर के शब्दों में–

पहरुएं सावधान रहना
खुले देश के द्वार, अचल दीपक समान रहना।

यह देश महान् है। इसका धरती पर कोई मुकावला नहीं है। कवि सुब्रह्मण्यम भारती के शब्दों में–

यह है देश हमारा भारत, पूर्ण ज्ञान का शुभ्र निकेतन।
यह है देश जहाँ पर बरसी, बुद्धदेव की करुणा चेतन।
है महान, अति भव्य पुरातन, गूँजेगा यह गान हमारा।
है क्या हम-सा कोई जग में, यह है भारत देश हमारा।।

2. भारत के गाँव *अथवा* भारतीय गाँव *(C.B.S.E. 2001 Delhi)*

भारत की 80 प्रतिशत जनता, इसके दस लाख छोटे-बड़े गाँवों में बसती है। भारतीय गाँवों में मिट्टी के घर हैं, फूस या खपरैल की छतें हैं, आँगन में एक जोड़ी या दो जोड़ी बैल बँधे रहते हैं। किसी-किसी के घर में चार-छः मुर्गियाँ, एक-दो गाय-भैंसें होती हैं। गाँव में एक-दो घरों में घोड़े या ऊँट भी दिखाई पड़ते हैं। भारतीय गाँव किसी योजना के अनुसार बने नहीं होते, टेढ़ी-मेढ़ी गलियाँ, मार्ग, कीचड़ और कूड़े के ढेर दिखाई देते हैं। कहीं-कहीं कूड़े के ढेर पर सूअर आपस में भिड़ते या गधे रेंकते दिखाई पड़ जाते हैं।

परंतु इन्हीं गाँवों के घरों से जब ग्रामीण बालक बाहर आते हैं, तो उनकी चमकती आँखें और भोली शक्लें देखकर किसका चित्त नहीं प्रसन्न हो जाता। लहलहाते खेतों को देखकर पता चलता है कि भारतीय किसान अत्यंत परिश्रमी हैं। जब खेतों में पीली सरसों की चादर बिछी होती है या गेहूँ की सुनहरी बालें खेतों में लहलहाती हैं, तो चित्त आह्लादित हो जाता है।

गाँव में चक्की के मधुर स्वर से प्रभात का आरंभ होता है। यहाँ उषा की लालिमा अपने हाथों में सोने का थाल लिये आती है। पेड़ों तथा लताकुंजों में पक्षी प्रभात-वेला का स्वागत करते हैं। सूर्य की पहली किरण के साथ उठकर किसान अपने कंधे पर हल रखकर अपने सखा बैलों को हाँकता हुआ खेतों की ओर जाता है, तो बैलों के गले में बँधी घंटियों से आस-पास का वातावरण गुंजित हो उठता है।

भारतीय गाँवों में सिंचाई के भिन्न-भिन्न साधन अपनाए जाते हैं। पर्वतीय गाँवों में नाले या झरने सिंचाई के साधन हैं। मैदानी क्षेत्रों मे कुएँ हैं, जिनमें रहट, चरस आदि चलाए जाते हैं। कई स्थानों पर विजली आ जाने से ट्यूबवैल लग गए हैं और कई स्थानों पर नहरें बन जाने से सिंचाई सुलभ हो गई है।

गाँवों में नवयुवक ऊँचा, बलिष्ठ शरीर और मुस्कराता मुखड़ा लिए हुए सबसे मिलते हैं। इनमें से कई कारखानों में काम करने शहर जाते हैं और कड़ा परिश्रम करके जीविका उपार्जित करते हैं। ये ही सेना में भर्ती होकर राष्ट्र की सेवा करते हैं।

गाँव की स्त्रियाँ दिन के कामों से निवृत्त होकर मंडली बनाकर बैठती हैं। चरखे की चर्रम से गाँव गूँज उठता है। अब कई गाँवों में सिलाई की मशीनें आ गई हैं और स्त्रियाँ अपने तथा बच्चों के कपड़े सीती दिखाई पड़ती हैं, परंतु आठवीं कक्षा से आगे ग्रामीण बालक बहुत कम हैं जो पढ़ते हैं।

गाँवों की स्त्रियाँ बहुत परिश्रमी होती हैं। बैल-गाय-भैंस की सानी करती हैं। सिर पर मटके उठाकर पनघट पर जाती हैं। वहाँ अपनी सहेलियों से सुख-दुःख की चर्चा करती हैं। ये गाँव की गृह-लक्ष्मियाँ हैं। इन्हीं की बदौलत हमारे गाँव गरीबी में भी सुख के आगार बने हुए हैं। गाँवों में बिजली आ जाने के कारण पीने का पानी भी सुलभ हो गया है। स्त्रियाँ कढ़ाई-बुनाई-सिलाई में रुचि लेने लगी हैं। कुछ चतुर किसान शाक-भाजी और फलों की भी खेती करते हैं। उनके परिवार को इन चीजों की बहुत मौज हो जाती है।

परंतु कुल मिलाकर हमारे गाँव अभी भी दरिद्र हैं। अधिकांश के पास अपनी भूमि नहीं है। छोटे किसान भी तंग हैं। शिक्षा का पूरी तरह प्रसार अभी तक नहीं हो पाया है। भारतीय गाँवों के सुधार के लिए अभी भारत सरकार और राज्य सरकारों को बहुत प्रयत्न करना होगा। सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है। इन प्रयासों में तेजी लानी होगी। गाँवों की तरक्की से ही भारत की तरक्की होगी।

3. मोबाइल फोन *(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)*

इन दिनों मोबाइल फोन का चलन दिनों-दिन बढ़ रहा है। हर किसी के हाथ में मोबाइल फोन दिखाई दे जाता है। यहाँ तक कि गाँवों में भी इसका चलन बढ़ता जा रहा है। उच्च अधिकारियों के साथ-साथ सामान्य लोगों के पास भी मोबाइल फोन का होना अनिवार्य-सा हो गया है। मजदूर, रिक्शेवाले, कामगार भी मोबाइल फोन रख रहे हैं। अब मोबाइल फोन उपभोक्ताओं की संख्या करोड़ों में जा पहुँची है।

अब प्रश्न उठता है कि यह मोबाइल फोन फैशन है या इसकी उपयोगिता भी है। यह सच है कि मोबाइल फोन का रखना फैशन बन गया है। एक प्रकार से यह 'स्टेटस सिंबल' बन गया है। मोबाइल फोन के एक से एक नए रूप सामने आ रहे हैं, इनमें से कुछ काफी महँगे भी हैं-रंगीन भी, कैमरे वाले भी। इन फोनों में अनेक सुविधाएँ भी मिल रही हैं। लड़कियों के लिए तो यह एक फैशन की वस्तु है। उनके हाथ में मोबाइल होता है, कानों में उससे संगीत सुनने का यंत्र।

इसके बावजूद मोबाइल फोन की उपयोगिता से इंकार नहीं किया जा सकता। अब आप हर समय, हर जगह पहुँच के अंदर रहते हैं। आप घर-दफ्तर से सीधे रूप से जुड़े रहते हैं। अब आपको घर पर बैठकर फोन की प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं रह

गई है। अब आप कहीं से भी किसी से संपर्क कर सकते हैं। इसके साथ-साथ इससे कामगारों को काफी काम मिलना शुरू हो गया है। अब उन्हें ढूँढने की जरूरत नहीं है आप उन्हें फोन से बुला सकते हैं।

ये मोबाइल फोन कई बार परेशानी के कारण बन जाते हैं। कई बार अनचाही कॉलों से परेशानी होती है तथा कई बार जब आप किसी मीटिंग में या अन्य किसी काम में व्यस्त होते हैं तो मोबाइल फोन की घंटी आपको परेशान कर देती है। दफ्तर के काम-काज में भी ये बाधा उपस्थित करते हैं। एस.एम.एस. भेजने में भी इनका दुरुपयोग किया जाता है।

विद्यालय-परिसर में मोबाइल फोन के प्रयोग पर प्रतिबंध लगना चाहिए। विद्यार्थियों को इसकी विशेष आवश्यकता नहीं होती। वे इस पर व्यर्थ समय बर्बाद करते हैं। इससे उनकी पढ़ाई भी बाधित होती है। शिक्षक भी पढ़ाने में रुचि कम लेते हैं, मोबाइल फोन पर बातें अधिक करते हैं। कक्षा में मोबाइल फोन की घंटियाँ बजते रहना बड़ा अटपटा-सा लगता है।

4. यदि मैं शिक्षा मंत्री होता *(C.B.S.E. 2001 Delhi)*

वर्तमान समय में सरकार का ध्यान शिक्षा-प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन करने की ओर है। नई शिक्षा-नीति निर्धारित हो रही है। मेरी रुचि भी शिक्षा के क्षेत्र में है। मैं एक समाजसेवक हूँ और समाज की भलाई के लिए चाहता हूँ कि मैं शिक्षा मंत्री बन जाऊँ। यह पद मैं किसी स्वार्थवश नहीं चाहता, अपितु अपनी शिक्षा-नीति को कार्यरूप में परिणत करना चाहता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति के मन में उसकी आकांक्षाएँ जन्म लेती हैं और फलती-फूलती रहती हैं। रुचि-भिन्नता मानव-स्वभाव है। मैं तो एक ही कामना मन में सँजोए हुए हूँ कि काश ! मैं किसी दिन शिक्षा मंत्री होता।

यदि मैं शिक्षा मंत्री बन जाता तो शिक्षा-जगत् में एक क्रांति का सूत्रपात करता। शिक्षा-नीति का पुनर्निर्धारण करने के लिए उच्च शिक्षा-शास्त्रियों एवं स्कूल अध्यापकों को आमंत्रित करके एक समिति बनाकर उन्हें दो मास में अपना प्रतिवेदन देने को कहता। समस्त देश में समान शिक्षा नीति लागू करता। स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए पाठ्यक्रम में थोड़े से परिवर्तन की गुंजाइश अवश्य रहेगी। पाठ्यक्रम को व्यावहारिक एवं जन-जीवन से जोड़ा जाएगा। मैं शिक्षा को आदर्शवादी के स्थान पर व्यावहारिक बनाने का पूरा प्रयास करता। मैं शिक्षा के उच्च मानदंड स्थापित करता।

मेरा दूसरा कार्य पाठ्य-पुस्तकों को नए ढंग से निर्माण करने का होगा। पाठ्य-पुस्तक निर्माण कार्य में विद्वानों के अतिरिक्त उन शिक्षकों का सक्रिय सहयोग लिया जाता जो कक्षाओं में पढ़ाते हैं। वर्तमान पाठ्यक्रम अत्यंत जटिल है और पाठ्य पुस्तकें बोझिल शब्दावली से आक्रांत हैं। पाठ्य-पुस्तकों को रियायती दरों पर उपलब्ध कराना मेरे शिक्षा-मंत्रालय का दायित्व होता। इन पाठ्य-पुस्तकों में देश के विकास की नवीनतम जानकारी दी जाती।

इसके पश्चात् मेरा सर्वाधिक ध्यान शिक्षकों की दशा सुधारने की ओर होता। उनके दायित्व की बातें तो बहुत कही जाती हैं, पर उनकी समस्याओं की अनदेखी की गई है। मैं भरसक प्रयास करता कि वे अपने देश से पूर्णतः संतुष्ट रहें। मैं उन्हें समाज में सम्मान दिलाने का हरसंभव प्रयास करता। उन्हें वेतन-वृद्धि के अतिरिक्त अन्य आवश्यक सुविधाएँ जुटाने का प्रयत्न करता। उनकी पदोन्नति की योजनाएँ भी लागू की जातीं। मैं प्रधानमंत्री पर दबाव डालकर कुल बजट का 10% शिक्षा-हेतु निर्धारित कराता।

मेरा अगला कदम छात्रों की समस्याओं के निराकरण की दिशा में होता। मैं स्पष्ट कर दूँ कि अनुशासनहीनता मुझे कतई पसंद नहीं है। मैं अपने छात्रों को अनुशासनप्रिय देखना चाहता। उन्हें पुस्तकालय, खेल-सुविधाएँ, निर्धन छात्रों की आर्थिक सहायता, बस-ट्रेन आदि की रियायती दर पर यात्रा-सुविधा, छात्रावास सुविधा आदि उपलब्ध कराने के भरपूर प्रयास करता। परीक्षा व्यवस्था को चौकस किया जाता। नकल की प्रवृत्ति को जड़ से उखाड़ फेंकता।

मैं सरकारी विद्यालयों की दशा सुधारने का भरसक प्रयास करता। उनके भवनों के रख-रखाव की दशा में सुधार लाता। विद्यालय-भवन से ही शिक्षा का उपयुक्त वातावरण बनता है। इन्हें विद्यार्थियों के आकर्षण का केंद्र होना चाहिए। नए भवनों का निर्माण एवं पुराने भवनों की मरम्मत करके उनमें आवश्यक सुविधाएँ जुटाता।

मैं प्रत्येक विद्यालय की प्रगति की रिपोर्ट की समीक्षा कराता। पुरस्कार एवं दंड का नियम लागू करता। योग्य एवं परिश्रमी अध्यापकों को सम्मानित करता।

काश ! मुझे शिक्षा मंत्री बनने का अवसर प्राप्त होता।

5. टी.वी. *(CBSE 2008 (Comptt.) Outside)*

अथवा

दूरदर्शन की उपयोगिता *(CBSE 2009 Delhi)*

वर्तमान समय में टी.वी. का प्रयोग निरंतर बढ़ता चला जा रहा है। टी.वी. लोकप्रियता की चरम सीमा को छूता प्रतीत होता है। टी.वी. के कार्यक्रम जन-जन में लोकप्रिय हो रहे हैं। वर्तमान समय में टी.वी. की लोकप्रियता चरम सीमा पर है। अब तो इसकी घुसपैठ प्रत्येक परिवार में हो चुकी है। शहरों के साथ-साथ इसके कार्यक्रम गाँवों में भी अत्यंत रुचि के साथ देखे जाते

हैं। इतने लोकप्रिय माध्यम का हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। टी.वी. के साथ जब से केबल संस्कृति जुड़ी है तब से इसके कार्यक्रमों में विविधता एवं नवीनता की बाढ़ आ गई है। अब 100 चैनल तक देखे जा सकते हैं। आप अपना मनचाहा कार्यक्रम देखने को स्वतंत्र हैं। इससे टी.वी. की पहुँच दूर-दूर तक होती चली गई है।

टी.वी. दूरदर्शन का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसने हमारे पारिवारिक जीवन पर अच्छे और बुरे दोनों के प्रकार के प्रभाव डाले हैं। इससे हमारे मनोरंजन का पक्ष अत्यंत सुदृढ़ हुआ है। टी.वी. पर अनेक प्रकार के रोचक कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं। इनमें अपनी रुचि के कार्यक्रम चुनकर हम अपना मनोरंजन कर सकते हैं। फीचर फिल्मों के अतिरिक्त टेली फिल्में, धारावाहिक, चित्रहार, चित्रगीत, संगीत-नाटक, कवि-सम्मेलन, खेल-जगत आदि से हमारा पर्याप्त मनोरंजन होता है।

टी.वी. शिक्षा का भी सशक्त माध्यम बन गया है। इस पर औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा दी जा रही है। इस पर स्कूली विद्यार्थियों के लिए नियमित पाठों का प्रसारण किया जाता है। इसके अतिरिक्त किसानों के लिए कृषि-दर्शन, अनपढ़ों के लिए साक्षरता के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इस प्रकार घर बैठे ही सभी को ज्ञानवर्धक कार्यक्रम देखने को मिल जाते हैं। टी.वी. के माध्यम से परिवार के प्रयोग में आने वाले नवीनतम उत्पादों की जानकारी पूरे विवरण के साथ घर बैठे ही मिल जाती है। दूरदर्शन की सामग्री अधिक ग्राह्य एवं स्पष्ट प्रभाव डालने वाली होती है। इसका प्रभाव अधिक व्यापक होता है। अतः इस बारे में अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है।

टी.वी. ने हमारे पारिवारिक जीवन पर जो बुरा प्रभाव डाला है वह है-हिंसा और सैक्स का भौंडा रूप। आजकल प्रसारित होने वाले अधिकांश मनोरंजक कार्यक्रमों पर पाश्चात्य प्रभाव की झलक अधिक दिखाई देती है। इसके परिणामस्वरूप उनमें हिंसा को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया जाता है। इससे हमारे दैनिक जीवन में हिंसा का समावेश होता जा रहा है। चोरी-डकैती की घटनाओं में वृद्धि भी इसी का दुष्परिणाम है। टी.वी. पर कुछ चैनल भूत-प्रेत, नाग, पुनर्जन्म जैसे कार्यक्रम दिखाकर समाज में अंधविश्वास फैला रहे हैं। वे भूत-प्रेत की बनावटी कथाएँ गढ़कर लोगों को डराने का काम कर रहे हैं। पौराणिक चरित्रों के काल्पनिक किस्सों द्वारा अपनी टी.आर.पी बढ़ाने का चक्कर चलाते रहते हैं। आज कहाँ विज्ञान का युग और कहाँ ये दकियानूसी विचारों पर आधारित कार्यक्रम? टी.वी. को तो समाज में व्याप्त अंधविश्वास को मिटाने का काम करना चाहिए, न कि अंधविश्वास को बढ़ावा देने का। टी.वी. के अनेक कार्यक्रमों से जहाँ बच्चों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि हुई है वहीं उनका स्वभाव चिड़चिड़ा होता जा रहा है। वे अंतर्मुखी बनते जा रहे हैं। सामाजिकता की भावना का लोप होना एक अशुभ संकेत है। यह भी सही है कि बच्चों की तर्कशक्ति बढ़ी है, उनकी मान्यताओं में भी अंतर आया है। अब वे किसी बात पर आँख मूँदकर विश्वास नहीं करते हैं।

टी.वी. नैतिकता के मूल्यों में भी गिरावट ला रहा है। अब ये मूल्य अपना स्वरूप बदल रहे हैं। सैक्स का बोलबाला बढ़ रहा है। टी.वी. के अश्लील दृश्य इसको बढ़ावा दे रहे हैं। इनका हमारी संस्कृति से मेल नहीं बैठता है। टी.वी. ने हमारे सामाजिक दायरे को समेट कर रख दिया है। अब हम टी.वी. कार्यक्रम देखने में अधिक व्यस्त रहने लगे हैं।

यही सही है कि वर्तमान परिस्थितियों में हम दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखने से स्वयं को बचाकर नहीं रख सकते। पर अब हमारे पास सही कार्यक्रम के चुनाव की सुविधा उपलब्ध है। हम किसी एक चैनल पर प्रसारित कार्यक्रम को देखने के लिए विवश कतई नहीं हैं। इस प्रकार टी.वी. ने हमारे पारिवारिक जीवन को बहुत हद तक प्रभावित किया है। इसके प्रभाव से हम बच भी नहीं सकते। अतः हमें टी.वी. के स्तर में सुधार लाना होगा ताकि इसके दुष्प्रभावों से बच सकें।

6. समाचार-पत्र

(CBSE 2008 Comptt. Delhi)

वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति देश-विदेश के समाचारों से अवगत रहना चाहता है। व्यक्ति और समाज का आपस में घनिष्ठ संबंध है। समाज एक परिवर्तनशील इकाई है। समय के साथ-साथ समाज में भी परिवर्तन होता रहता है। इन सबकी सूचना देने और हमारी खबर लेने का सबसे सरल और सस्ता माध्यम है समाचार-पत्र।

प्रत्येक साक्षर व्यक्ति समाचार-पत्र पढ़ता है। प्रातःकाल उठते ही हमारी पहली दृष्टि समाचार-पत्र की ओर जाती है। जिस दिन समाचार-पत्र नहीं आता, वह दिन खाली-खाली सा प्रतीत होता है। समाचार-पत्र पढ़ने के उपरांत ही घर के अन्य कार्य शुरू होते हैं।

समाचार-पत्र के प्रकाशन एवं समाचारों के एकत्र करने की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। विश्व भर में फैले संवाददाता एवं संवाद एजेंसियाँ समाचार एकत्र करके समाचार-पत्र के कार्यालयों में द्रुतगति से भिजवाती हैं। संपादक इनका संपादन करके प्रकाशन योग्य बनाते हैं। फिर इनका तीव्र गति से प्रकाशन होता है। इसके पश्चात् इनके वितरण का कार्य शुरू होता है और प्रातः काल होते ही ये समाचार-पत्र हम तक पहुँच जाते हैं।

समाचार-पत्र का महत्त्व असंदिग्ध है। इसे प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। समाचार-पत्र प्रजा को चेतनासंपन्न बनाते हैं और उसके अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज उठाते हैं। सरकारी घोटालों का पर्दाफाश करके सरकार के क्रिया-कलापों का कच्चा चिट्ठा खोलने में उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रहती है।

समाचार-पत्रों से विश्व भर के समाचार हमें घर बैठे आसानी से मिल जाते हैं। यह समाचारों का लिखित रूप है। इसे रिकार्ड के रूप में भी देखा जा सकता है। समाचार पाने का यह सबसे सस्ता और सुलभ साधन है।

समाचार-पत्रों में समाचारों के अतिरिक्त अन्य भी बहुत सी सामग्री होती है। इसमें अनेक ज्ञानवर्धक लेख छपे होते हैं। संपादकीय लेख काफी महत्त्व रखता है। अन्य लेख भी विद्वानों द्वारा लिखे जाते हैं। इनमें सामयिक विषयों पर चर्चा की जाती है।

समाचार-पत्रों में मनोरंजन सामग्री भी पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित होती है। इनमें कहानियाँ, चुटकले आदि भी होते हैं। कार्टूनों के माध्यम से तत्कालीन घटनाओं एवं व्यक्तियों पर व्यंग्य किया जाता है। समाचार-पत्रों में विज्ञापन भी प्रकाशित होते हैं। ये उनके माल की बिक्री में तो सहायक होते ही हैं, साथ में हमें नए-नए उत्पादों की जानकारी हो जाती है। समाचार-पत्रों में नौकरी तथा वैवाहिक विज्ञापन भी प्रकाशित होते हैं। ये हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। समाचार-पत्र में पुस्तकों, सिनेमा, नाटकों आदि की समीक्षा भी छपती है जिससे हमें उनके बारे में पता चल जाता है।

इस प्रकार समाचार-पत्रों की उपयोगिता सर्वविदित है। इनका निष्पक्ष रहना अत्यंत आवश्यक है। यद्यपि आज के समाचार पत्रों से निष्पक्षता झलकती हुई दिखाई नहीं देती। वे किसी औद्योगिक घराने तथा राजनीतिक दल के साथ प्रतिबद्ध होते प्रतीत होते हैं। ऐसा होना समाचार-पत्र की निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

7. मेरे जीवन का लक्ष्य

जब मैं तीन-चार वर्ष का ही था, तो हथौड़ी से तारों को कूटा करता था। कीलें उखाड़ना और कीलें गाड़ना ही दिन भर मेरा काम था। लोहे का जो भी घिसा-पिटा, नया पुराना पुर्जा मुझे मिलता, मैं उठा लाता था। एक बार मैंने कील गाड़ते-गाड़ते अपना हाथ कुचल डाला था। मेरे बाएँ हाथ पर जो घाव का चिह्न है, वह एक गहरे लगे हुए चाकू का है। इस प्रकार की कील-काँटों से मुझे स्वाभाविक प्रेम है। मेरे लक्षणों को देखकर मेरे पिताजी कहा करते हैं, 'मेरा कमल तो इंजीनियर बनेगा।' सचमुच यह मेरी इच्छा है, यह मेरी आकांक्षा है। यही मेरा जीवन लक्ष्य है। इसे किसी अन्य ने मेरे लिए नहीं चुना, यह तो मेरा स्वयं का लक्ष्य है। मैं सोचता हूँ, कितने सुनहले होंगे वे दिन, जब मैं सचमुच इंजीनियर बन जाऊँगा।

'जहाँ चाह वहाँ राह'। जब मेरी आकांक्षा है, तो एक न एक दिन मैं अवश्य इंजीनियर बनकर दिखा दूँगा।

भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान में मेरे पचहत्तर प्रतिशत अंक हैं। गणित में मैं श्रेणी-भर में प्रथम आया हूँ। इंगलिश में भी अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ हूँ। इंजीनियर बनने के लिए क्या ये लक्षण अनुकूल नहीं हैं ? मैं इस यत्न में हूँ कि इस वार्षिक परीक्षा में सर्वप्रथम रहूँ। आशा है दो-तीन विषयों में डिस्टिंक्शन भी ले आऊँगा। फिर यह भी संभव है कि इंजीनियरिंग के लिए मुझे सरकार की ओर से छात्रवृत्ति भी मिल जाए।

मुझे विदित है कि समाज में इंजीनियर का एक ऊँचा स्थान है। लोग उसे आदर की दृष्टि से देखते हैं। जनता उससे परिचित होने में गर्व का अनुभव करती है। आर्थिक दृष्टि से भी वह प्रथम श्रेणी का व्यवसाय है। इंजीनियर के लिए नौकरी और स्वतंत्र धंधा ये दोनों रास्ते खुले हैं। अच्छे काम की कद्र होती है। अनुभव और योग्यता के आधार पर पदोन्नति की संभावना रहती है। विदेशों में ऊँचे प्रशिक्षण के अवसर आते रहते हैं। सरकारी खर्चे पर प्रशिक्षण और विदेशों की सैर। निजी उद्योगों की नौकरी में उन्नति के इससे भी अधिक अवसर हैं, किंतु यदि इंजीनियर चाहे तो अपना स्वतंत्र धंधा भी चला सकता है।

मेरी यह भी कामना है कि मैं इंजीनियर बनकर देश के औद्योगिक विकास में योगदान करूँ। हमारा देश औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है, दुनिया की दौड़ में उसे आगे ले जाने का काम न तो क्लर्क कर सकते हैं और न दुकानदार। वह काम इंजीनियरों का है। यदि मैं इंजीनियर बन जाऊँ तो जहाँ अपने जीवन के लिए अच्छी-खासी आजीविका जुटाऊँ, वहाँ राष्ट्र की औद्योगिक प्रगति में सक्रिय योगदान दूँ। संभव है भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल मैं कोई नया सुधार या नवीन आविष्कार भी प्रस्तुत कर सकूँ।

संभवत: मैं स्वयं इंजीनियर बनकर भारत के अन्य बालकों को आर्थिक सहायता देकर उन्हें भी इंजीनियर बनने में सहायता दे सकूँ। संभव है भारत के प्रसिद्ध इंजीनियर स्वर्गीय सर गंगाराम की तरह लाखों रुपए, अस्पताल आदि समाज हितकर कार्यों के लिए देकर अपने जीवन को सफल बनाऊँ।

मुझे पूर्ण आशा है कि मैं अपने जीवन-लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकूँगा। मुझे कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ सदा प्रेरणा देती रहती हैं :

"धनुष से जो छूटता है बाण कब पथ में ठहरता ?
देखते ही देखते वह लक्ष्य का ही बेध करता।
लक्ष्य-प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा ?
लक्ष्य तक पहुंचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा ?"

8. देशभक्ति

(CBSE 2008 (Comptt.) Delhi)

जिस चमन में बुलबुल निवास करती है उससे परम प्रेम करती है। प्रेम का पवित्र भाव उसे बलिदान के लिए प्रेरित करता है। अतः बुलबुल जिस चमन का अन्न-जल ग्रहण करती है, जिसकी डालियों पर वह अपना बिछौना बनाकर क्रीड़ाएँ करती है, जिसकी सुमंद समीर से प्रसन्न होकर वह वनों में अपना स्वर गुंजरित करती है, उसी चमन पर जब कोई विपदा आती है, तो उसके लिए कुर्बान भी हो जाती है। जब चमन को आग लगती है, तो वह आग की ज्वाला से बचने के लिए चमन छोड़कर नहीं भागती अपितु उसी चमन के साथ जलकर भस्म हो जाती है। यह उसके प्रेम का स्पष्ट प्रमाण है। इसी भाँति मनुष्य की भी गाथा है। वह भी अपनी मातृभूमि की गोद में फल-फूल कर उसी के लिए समर्पित होने को सदा तैयार रहता है।

देशभक्ति क्या है ? इसका तात्पर्य यह नहीं है कि बातों में देश का बखान किया जाए, उसके प्रति भक्ति भावना का प्रदर्शन किया जाए। इसका आशय है कि हम तन-मन-धन से इसके मान-सम्मान और गौरव को बढ़ाने के लिए अपना सर्वस्व लुटाने के लिए तैयार रहें। जिस मिट्टी का हम अन्न खाते हैं उसके प्रति हमारा स्वाभाविक कर्तव्य हो जाता है कि हम उसकी आन-बान-मान की रक्षा करें। उसके लिए चाहे हमें अपना सर्वस्व भी लुटाना पड़े तो लुटा दें। सच्चे देशभक्त का यही कर्तव्य है कि वह बलिदान के अवसर पर सोच-विचार न करे, मन में लाभ-हानि का विचार न लाए, अपितु प्रभु-इच्छा मानकर कुर्बान हो जाए।

सच्चा देशभक्त वही है, जो देश के लिए जिए और उसी के लिए मरे। 'देश के लिए मरना' उतनी बड़ी बात नहीं है, जितनी कि 'देश के लिए जीना'। एक दिन आवेश, जोश और उत्साह की आँधी में बहकर कुर्बान हो जाना फिर भी सरल है क्योंकि उसके दोनों हाथों में लाभ है। मरने पर यश की कमाई और मरते वक्त देश-प्रेम का नशा किंतु जब देश के लिए क्षण-क्षण, तिल-तिल कर जलना पड़ता है, अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं की नित्य बलि देनी पड़ती है, रोज-रोज भगतसिंह बनना पड़ता है, तब यह मार्ग बहुत कठिन हो जाता है।

सच्चा देशभक्त वही है, जो अपनी योग्यता, शक्ति, बुद्धि को राष्ट्र-देवता के चरणों में अर्पित करे। वह ऐसा कोई काम न करे, जिससे राष्ट्र के हित या यश को धक्का लगता हो। साथ ही, वह ऐसा हर काम करे, जिससे राष्ट्र का गौरव बढ़ता हो। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने राष्ट्रपति बनने के बाद अपने प्रथम संभाषण में यही शब्द कहे थे-'अमेरिकावासियों तुम यह मत सोचो कि अमेरिका तुम्हारे लिए क्या कर रहा है, अपितु तुम यह सोचो कि तुम अमेरिका के लिए क्या कर रहे हो।' यह शुद्ध देशभक्ति है।

आज दुर्भाग्य से व्यक्ति इतना आत्मकेंद्रित हो गया है कि वह चाहता है कि सारा राष्ट्र मिलकर उसकी सेवा में जुट जाए। 'पूरा वेतन, आधा काम' उनका नारा बन गया है। आज देश में किसी को यह परवाह नहीं है कि उसके किसी कर्म का सारे देश के हित पर क्या प्रभाव पड़ेगा। यही कारण है कि भारतवर्ष नित्य समस्याओं के अजगरों से घिरता चला जा रहा है। जब तक हम भारतवासी यह संकल्प नहीं लेते कि हम देश के विकास के लिए अपने को समर्पित कर देंगे तब तक देशभक्ति का परिचय नहीं मिलेगा।

वर्तमान समय में हमारा राष्ट्र अनेक जटिल समस्याओं से घिरा हुआ है। आतंकवाद एवं विघटनकारी शक्तियों ने राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को खतरे में डाल रखा है। पंजाब, कश्मीर, असम, नागालैंड आदि राज्यों में अशांति का वातावरण है। हमारा कर्तव्य हो जाता है कि इन सांप्रदायिक एवं विघटनकारी तत्त्वों के बहकावे में न आएँ एवं इनसे संघर्ष करने से पीछे न हटें। राष्ट्र की एकता सर्वोपरि है। हमें यह याद रखना चाहिए कि राष्ट्र रहेगा तो हम भी रहेंगे और राष्ट्र के विनाश होने पर हम कहीं के न रहेंगे।

राष्ट्र के प्रति हमारा कर्तव्य है कि इसकी प्रगति में पूरा-पूरा सहयोग दें। राष्ट्र को स्वावलंबी बनाने में हमारी भूमिका निर्णायक सिद्ध होगी। औद्योगिक एवं कृषि की दृष्टि से राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाना अत्यंत आवश्यक है। ऐसा तभी संभव है जब हम अपने-अपने क्षेत्र में पूरी लगन एवं मेहनत के साथ कार्य करें। आर्थिक दृष्टि से राष्ट्र को सबल बनाना भी हमारा कर्तव्य है। हमें करों का भुगतान पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए। कर-वंचक राष्ट्र की आर्थिक दशा को खोखला करते हैं। सच्ची देशभक्ति देश को मजबूत और समृद्ध बनाने में निहित है।

9. मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना

[C.B.S.E. 2000 Comptt. (O)]

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनेक घटनाएँ घटित होती रहती हैं, पर कई घटनाएँ सदा के लिए स्मरणीय बनकर रह जाती हैं। मेरी विदेश यात्रा मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना है। मेरी इंग्लैंड-यात्रा मेरे जीवन की एक ऐसी घटना बन गई है जो सदा

याद रहेगी। वर्तमान समय में विदेश-यात्रा की लालसा किसे नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति विदेश-भ्रमण के लिए इच्छुक रहता है। मैं भी कई वर्षों से विदेश-यात्रा का सपना मन में सँजोए हुए था। मैं नाट्यकला में विशेष रुचि रखता हूँ। पिछले मास भारतीय सांस्कृतिक परिषद् की ओर से एक सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन किया गया। मुझे भी नाट्यकर्मी के रूप में इंग्लैंड जाने का अवसर मिला। यह सुअवसर पाकर मैं और मेरे परिवार के सभी सदस्य अत्यधिक प्रसन्न थे।

मेरी विदेश-यात्रा की तैयारी पंद्रह दिन पूर्व से ही प्रारंभ हो गई। पासपोर्ट और वीसा की औपचारिकताएँ पूरा करने में एक सप्ताह लग गया। मेरे साथ दस अन्य सदस्य भी जा रहे थे। हमें लंदन में अपने नाटक की पाँच प्रस्तुतियाँ मंच पर अभिनीत करनी थीं। हमारी नाट्य मंडली ने आवश्यक साज-सामान एवं वेशभूषा एकत्रित की। 10 मई का वह दिन आ पहुँचा जब हम इंदिरा गाँधी हवाई अड्डे से 'इंडियन एयर लाइंस' के विमान से लंदन के लिए उड़े। मेरे मित्र एवं परिजन मुझे विदाई देने हवाई अड्डे पर आए थे। सभी प्रसन्न थे।

प्रातः चार बजे हम लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर जा उतरे। रास्ते में विमान परिचारिकाओं ने हमारी आवश्यकताओं को यथाशक्ति पूरा करने में तत्परता का परिचय दिया। विमान तल पर उतरते ही इंग्लैंड के मेजबानों ने हमारा भरपूर स्वागत किया। उन्होंने हमें पुष्पहार पहनाए तथा शानदार गाड़ियों में हमें होटल तक ले गए। एक पाँच सितारा होटल में हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी। सभी कुछ स्वप्न जैसा प्रतीत हो रहा था।

हम इंग्लैंड में दो सप्ताह रुके। वहाँ के विभिन्न शहरों में हमारे नाटक के प्रदर्शन की उत्तम व्यवस्था की गई थी। लगभग प्रत्येक नाटकघर की क्षमता एक हजार दर्शकों की थी। दर्शकों में भारतीयों की संख्या काफी थी, तो उनके साथ-साथ अंग्रेजों की संख्या भी संतोषजनक थी। हमारे नाट्य-प्रदर्शन वहाँ बहुत पसंद किए गए। स्थानीय समाचार-पत्रों में भी हमारी बहुत प्रशंसा हुई।

रात्रि को नाट्य-प्रदर्शन होता, तो दिन में हमें इंग्लैंड घुमाने के लिए ले जाया जाता। हमने लंदन के अतिरिक्त वहाँ के लगभग सभी प्रमुख शहरों की यात्रा की। सब जगह साफ-सुथरा और हरा-भरा वातावरण देखने को मिला। मौसम तो सुहावना था ही। हम इंग्लैंड के गाँव भी देखने गए। हमें वहाँ के लोग काफी सभ्य लगे। उनकी गीत-संगीत और नाटक में रुचि देखकर हम दंग रह गए।

इंग्लैंड में प्राचीनता एवं नवीनता का अनूठा संगम देखने को मिलता है। वहाँ के लोग पुरानी वस्तुओं एवं इमारतों को सुरक्षित रखने में गर्व का अनुभव करते हैं। हमने वहाँ के बाजारों से वस्त्र एवं बिजली के नवीनतम उपकरण खरीदे। हमें लोगों ने उपहार भी बहुत दिए। पंद्रह दिन कब बीत गए, पता ही नहीं चला। हँसी-खुशी के साथ विदाई की कसक मन में लिए हम भारत लौट आए। मुझे अपनी यह पहली विदेश-यात्रा सदैव याद रहेगी।

10. निरक्षरता : एक अभिशाप (*CBSE 2008 Foreign*)

निरक्षरता एक अभिशाप है। अब निरक्षर कौन है ?

प्रश्न यह उठता है कि मूर्ख और अज्ञानी व्यक्ति में और पशु में क्या अंतर है। भर्तृहरि ने 'नीति शतक' में एक स्थान पर लिखा है-

येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यु-लोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।
साहित्य-संगीत-कला-विहीनः।
साक्षात्पशुः पुच्छ-विषाण हीनः।

अर्थात् जिनके पास विद्या नहीं, तप अथवा परिश्रम नहीं, दान देने का गुण नहीं, ज्ञान नहीं, अच्छा स्वभाव अर्थात् विनम्रता नहीं, वह मनुष्य इस मरणशील संसार में भार के समान है और मनुष्य के रूप में पशु है। साहित्य, संगीत और कला से विहीन व्यक्ति पूँछ और सींग के बिना पशु है। स्वार्थ और प्यार की भाषा पशु भी समझता है, अपने बच्चों को प्यार वह भी करता है। यहाँ तक कि संगीत और नृत्य के विषय में भी वह बिल्कुल अनभिज्ञ नहीं होता। शारीरिक चमत्कार भी मनुष्य के समान करके दिखा सकता है-अंतर है मात्र बुद्धि या शिक्षा का।

असंख्य नर-नारी और बच्चों को साक्षर बनाने का प्रयास किया गया। अनेक प्रकार के नारे गाँवों में गूँजने लगे। जैसे-"अशिक्षा का नाश हो", "अंगूठा लगाना पाप है" इत्यादि। साक्षरता-सप्ताहों का आयोजन होने लगा। यद्यपि 1939 ई में प्रांतीय सरकारें समाप्त कर दी गईं परंतु साक्षरता आंदोलन चलते ही रहे। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् इन आंदोलनों ने व्यापक रूप धारण कर लिया। लोगों में इतना जागरण तो अवश्य आ गया और वह जान गए कि शिक्षा के अभाव में मनुष्य में न तो साहस रहता है न जागृति ही। न वह अपने देश और राष्ट्र के कल्याण के लिए ही कुछ सोच सकता है न ही अपने सामाजिक एवं जातीय विकास

के लिए ही। यहाँ तक कि बिना शिक्षा के वह अपनी गौरवशाली प्राचीन संस्कृति को भी समझ नहीं सकता और न ही कुछ भविष्य के लिए ही सोच सकता है। अशिक्षित व्यक्ति न तो अच्छा नागरिक ही बन सकता है न ही अच्छा पिता या माता हो। अशिक्षा के कारण वह अपने घर के वातावरण को भी शिष्ट, मधुर और सुंदर नहीं बना सकता। अशिक्षा के कारण ही देश को राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और वैयक्तिक इत्यादि अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा, क्योंकि निरक्षरता के कारण न तो व्यापार ही विकसित किया जा सकता है और न ही उद्योग या विज्ञान के विषय में पूर्ण रूप से समझा जा सकता है।

अत: स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस अज्ञानरूपी अंधकार को देश से मिटाने के लिए विशेष प्रयास किए गए। धीरे-धीरे विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़ने लगी, जिनमें लड़कों को ही नहीं बल्कि लड़कियों के लिए भी समान रूप से स्थान निश्चित किए गए । स्कूलों, कॉलेजों की इस बाढ़ में भी हमारा देश आज पूर्ण रूप से शिक्षित नहीं हो पाया। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि आज भी भारत की तीन-चौथाई जनसंख्या अशिक्षित है। आज भी करोड़ों व्यक्ति अंगूठा छाप ही हैं। इस प्रजातंत्र देश में जहाँ करोड़ों व्यक्ति निरक्षर हों वहाँ प्रजातंत्र प्रणाली को कितनी ठेस लगती है। क्योंकि जो अपने कर्तव्य और अधिकार के ज्ञान से ही शून्य है वह अपने देश के लिए योग्य प्रतिनिधि का चुनाव भला कैसे कर सकते हैं। यह हमारे लिए दु:ख की बात है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के उन वर्षों के पश्चात् भी हमारे देशवासी अशिक्षा के कुएँ में गोते लगा रहे हैं। यह निरक्षरता हमारे लिए एक अभिशाप है, हमारे देश के मस्तक पर कलंक है।

वास्तव में हम आज मशीन के युग में जी रहे हैं जहाँ महँगाई सुरसा के समान मुँह फाड़े खड़ी है। यहाँ दो समय पेट भरने की समस्या अधिक भयानक है इसलिए आज का साधारण व्यक्ति शिक्षा को प्राप्त करने से कहीं ज्यादा रोजगार की तलाश में रहता है। फिर महँगाई शिक्षा के क्षेत्र में भी उतनी ही तीव्र गति से प्रवेश कर रही है जितनी तीव्रता से अन्य क्षेत्रों में। यद्यपि यह सच है कि सरकार ने निर्धन लोगों के लिए अनेकों मुफ्त स्कूलों का निर्माण भी किया है लेकिन उसका लाभ पूर्ण रूप से नहीं उठाया जा रहा है, परंतु हमें अपने देश, समाज की उन्नति के लिए इस अभिशाप को मिटाना ही होगा।

11. बढ़ती जनसंख्या : अनेक समस्याएँ *(CBSE 2008 Foreign)*

विश्व की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होती रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में यह बात स्पष्ट रूप से स्वीकार की गई है कि विश्व की जनसंख्या वृद्धि दर में जो कमी आई है, उसका कारण चीन सरकार द्वारा उठाए गए कारगर कदम हैं। चीन की सरकार यह भलीभाँति जानती है कि जनसंख्या को रोके बिना आर्थिक उपलब्धियाँ नहीं हो सकतीं।

यदि हम भारत की स्थिति पर विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि 2001 की जनगणना के अनुसार देश की जनसंख्या 100 करोड़ को पार कर गई है। अब यह आँकड़ा 108 करोड़ को छू रहा है। इतनी विशाल जनसंख्या को उपयोग की वस्तुएँ उपलब्ध कराना अपने आप में एक समस्या है। भारत एक गरीब देश है। इसके संसाधन भी सीमित हैं। जनसंख्या वृद्धि पर काबू पाए बिना देश में आर्थिक संपन्नता लाना अत्यंत कठिन है।

जनसंख्या वृद्धि से बहुत अधिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जनसंख्या वृद्धि से अधिक आवासीय स्थलों की आवश्यकता होती है। अधिक मकान बनाने के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता होती है। इससे भूमि पर दबाव पड़ता है। कृषि योग्य भूमि धन के लालच में बेच दी जाती है। कृषि-उत्पादन में गिरावट होती है। आज शहरीकरण के कारण सीमाएँ फैलती जा रही हैं। इस प्रवृत्ति को रोका जाना नितांत आवश्यक है।

अधिक आबादी के लिए अधिक वस्तुओं की आवश्यकता होगी। न केवल उदरपूर्ति के लिए बल्कि अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिक संसाधन जुटाने होंगे। यदि साधन पर्याप्त न हुए तो देश की स्थिति विषम हो जाएगी। अधिक आवादी के लिए अधिक अनाज, अधिक तेल, अधिक कपड़ा, अधिक पानी, अधिक यातायात के साधनों की आवश्यकता होगी। ईंधन अथवा ऊर्जा की भी अधिक आवश्यकता होगी। यह सब कैसे प्राप्त किया जाएगा ? पैट्रोलियम उत्पादों के बारे में विशेषज्ञों का मत है कि वह 40-50 वर्षों में समाप्त हो जाएँगे।

जनसंख्या-वृद्धि के कारण शिक्षा-सुविधाओं का अभाव महसूस किया जा रहा है। देश की बहुसंख्यक जनसंख्या को शिक्षा की प्राथमिक सुविधाएँ भी नहीं मिल पा रही हैं। देश में पर्याप्त मात्रा में स्कूल, कॉलेज व शैक्षणिक संस्थाओं का अभाव है। जब तक देश के सभी बच्चों को शिक्षा की सुविधा नहीं मिलेगी तब तक इस देश का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। इस देश की समस्त समस्याओं के मूल में अशिक्षा है।

जनसंख्या-वृद्धि के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं की भी बहुत कमी है। देश की अधिकांश जनसंख्या को स्वास्थ्य की बुनियादी सुविधाएँ भी प्राप्त नहीं हैं। सरकारी अस्पतालों की संख्या सीमित है। जो सरकारी अस्पताल हैं उनमें बहुत अधिक भीड़ है। देश की गरीब जनता निजी अस्पतालों का महँगा खर्च वहन नहीं कर सकती। इस वजह से गरीब लोग इन सुविधाओं के अभाव में मरने को मजबूर हैं।

हर व्यक्ति चाहता है कि उसे रोजगार उपलब्ध कराया जाए। इसके साथ-साथ अधिक संतान उत्पन्न करना भी प्रत्येक व्यक्ति अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है। सरकार के लिए यह संभव नहीं है कि वह नियोजन के बिना सबको रोजगार उपलब्ध कराए। इसके साथ-साथ सबको रोजगार न मिलने पर अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इससे आर्थिक अपराध बढ़ते हैं। समाज में अव्यवस्था फैलती है। राज्य के राजस्व पर अधिक बोझ पड़ता है। इससे देश में असंतोष पैदा होता है। शासन-व्यवस्था में अस्थिरता आती है। इससे देश कमजोर होता है और उसकी एकता एवं अखंडता खतरे में पड़ जाती है। छोटी-छोटी सी समस्याओं को लेकर आंदोलन चलते रहते हैं। इसके लिए राजनीतिक दल भी पूरी तरह उत्तरदायी हैं। वे निकृष्टतम हथकंडे अपनाने तक को तैयार हो जाते हैं।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि जनसंख्या-वृद्धि किसी भी दृष्टि से किसी भी देश के लिए हितकर नहीं है। इसे रोकना ही होगा। देश तभी प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकेगा जब परिवार नियोजित रहें। जनसंख्या वृद्धि सबसे अधिक निर्धन वर्ग में होती है। प्रश्न यह उठता है कि जनसंख्या पर काबू किन उपायों से पाया जा सकता है।

जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए सर्वप्रथम जागरूकता का होना आवश्यक है। लोगों को यह समझाना होगा कि छोटा परिवार सुखी परिवार होता है। यदि परिवार छोटा होगा तो माता-पिता अपनी संतान का पालन-पोषण ढंग से कर सकेंगे, उन्हें बढ़िया कपड़े, पौष्टिक भोजन एवं अच्छी शिक्षा दिलाई जा सकती है। बच्चों एवं माताओं के स्वस्थ रहने के लिए परिवार को नियंत्रण में रखना बहुत आवश्यक है।

आम जनता के दिमाग में यह बात बिठानी होगी कि परिवार-नियोजन उनके हित में है। इसका धार्मिक दृष्टि से कोई विरोध नहीं है। इस मामले में जोर-जबरदस्ती से कार्य नहीं चलेगा बल्कि धैर्यपूर्वक उन्हें समझाना होगा। परिवार-नियोजन को सरकार अब 'परिवार कल्याण' का नाम देती है। इसके लिए विभिन्न उपकरणों के प्रयोग पर बल दिया जा रहा है। लोगों को उन्हें अपनाना होगा। यदि आम जनता सरकार को जनसंख्या नियंत्रण में अपना सहयोग देगी तो देश विकास की राह पर अग्रसर हो सकेगा। सरकार गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से प्रभावशाली तरीके से निपट सकती है।

12. परोपकार *अथवा* परहित सरिस धर्म नहिं भाई

(C.B.S.E. 2001 Comptt. Outside)

भारतीय संस्कृति में सदैव से **'बहुजन हिताय'** को महत्त्व दिया जा रहा है। 'परोपकार' शब्द की रचना भी 'पर उपकार' से हुई है अर्थात् दूसरों की भलाई करना। परोपकार में स्वार्थ का दंश नहीं रहता। दूसरों की निःस्वार्थ सेवा ही परोपकार की श्रेणी में आती है। जिस कार्य में स्वार्थ छिपा हो, उसे परोपकार नहीं कहा जा सकता।

पकृति में भी परोपकार की भावना दृष्टिगोचर होती है। भर्तृहरि ने लिखा है–

"पिबन्ति नद्यः स्वमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति शस्यं खलु वारि वाहाः
परोपकाराय सतां विभूतयः।"

नदियाँ अपना जल कभी नहीं पीतीं, यद्यपि अनंत जलराशि समेटकर वे अनवरत रूप से प्रवाहित होती हैं। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते। आँधी और तूफान सहकर भी वे दूसरों को आश्रय देते हैं। बादल युग-युगांतर से जल लाकर पृथ्वी के अँचल को सिंचित करते हैं, परंतु प्रतिदान में कुछ भी नहीं माँगते। प्रकृति परहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करती रहती है। तुलसीदास जी ने भी कहा है–

"तुलसी संत सुअंब तरु, फूलहिं फलहिं पर हेत
इतते वे पाहन हनै उतते वे फल देत।"

हमारे इतिहास में परोपकार के अनेक दृष्टांत दृष्टिगोचर होते हैं। ऋषि दधीचि ने तो परोपकार के लिए अपनी अस्थियाँ तक दान दे दी थीं। महाराज शिवि ने अपना माँस तक दे डाला था। संतों का जीवन तो परोपकार के लिए ही होता है। रहीमदास जी ने लिखा है–

"वृच्छ कबहु नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।।"

महर्षि वेद व्यास जी ने पुराणों की रचना की तथा उनका सार इन शब्दों में व्यक्त किया–

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम्
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।"

अर्थात् परोपकार पुण्य है तथा दूसरों को कष्ट देना पाप है।

परोपकार मानव का सबसे श्रेष्ठ धर्म है। मनुष्य समस्त जीवन अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयत्नशील रहता है, परंतु सच्चा मानव वही होता है जो 'स्व' की संकुचित परिधि को लाँघकर 'पर' के लिए जीता तथा मरता है। तुलसीदास जी ने धर्म की व्याख्या करते हुए लिखा है–

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अध माई।।"

इन सब उदाहरणों से सिद्ध होता है कि परहित से अधिक महत्त्वपूर्ण अन्य कार्य नहीं है। हमें अपने जीवन का कुछ भाग परोपकार के कामों में लगाना चाहिए। परोपकार करके हमारे मन को बड़ी शांति का अनुभव होता है। यह एक ऐसा सद्‌गुण है जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपनाना चाहिए। यह सबसे बड़ा धर्म है। इससे बड़ा धर्म और कोई नहीं है।

13. चरित्र की दृढ़ता (*CBSE 2008 Foreign*)

यह कथन बिल्कुल सही है कि महापुरुष धन से नहीं, चरित्र से जाने जाते हैं। पाश्चात्य जगत् में भले धनी व्यक्ति को बड़ा माना जाता हो, पर भारत में उस व्यक्ति को बड़ा माना जाता है जिसमें चरित्र बल हो। ताम-झाम, फैशन-परस्ती थोड़े दिनों तक तो चर्चा में रख सकती है पर किसी व्यक्ति को महापुरुष के रूप में स्थापित नहीं कर सकती। एक कहावत भी है–"धन चला गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ चला गया, पर यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ नष्ट हो गया।"

चरित्र-भ्रष्ट व्यक्ति का समाज में कोई स्थान नहीं होता। उसे प्रत्येक व्यक्ति अपमान की दृष्टि से देखता है। सच्चरित्र ही व्यक्ति के मान, आदर, यश और सुख की एकमात्र कुंजी है।

आचरण की पवित्रता के महत्त्व एवं प्रभाव को प्रदर्शित करने वाले ऐसे कई उदाहरण मिल जाएँगे जिनमें एक या बहुत थोड़े से सदाचारी व्यक्ति के कारण उनके परिवार की ही नहीं बल्कि देश और जाति की उन्नति हुई, और वे सम्मान के शिखर तक पहुँच गए।

सदाचारी व्यक्ति के चरित्र का प्रभाव उसके संपर्क में आने वाले लोगों पर ही नहीं बल्कि समाज के बहुत बड़े भाग पर पड़ता है और उससे नैतिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उत्थान होता है। ऐसे सदाचारी व्यक्ति पर कोई भी जाति या राष्ट्र गर्व से अपना मस्तक ऊँचा कर सकते हैं। सच्चरित्रता वह धन है, जिसके सामने धन, संपत्ति, ऐश्वर्य सब तुच्छ हैं। विद्या, धन और शक्ति का सदुपयोग भी सदाचारी व्यक्ति ही कर सकता है। यदि ये ही चीजें किसी विवेकहीन दुष्ट मनुष्य को प्राप्त हो जाएँ तो दोनों द्वारा किस प्रकार उनका सदुपयोग और दुरुपयोग होगा, इसके अंतर को स्पष्ट करते हुए संस्कृत की एक सूक्ति में कहा गया है :

विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोविपरीतमेतद् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

अर्थात् दुष्ट लोग विद्या को विवाद में, धन को मद में और शक्ति को दूसरों को कष्ट देने में खर्च करते हैं परंतु सदाचारी मनुष्य विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए रखते हैं। सच्चरित्र व्यक्ति स्वाभिमानी, सहनशील, दयालु, साहसी और स्वतंत्रताप्रिय होता है।

सच्चरित्र बनने के लिए व्यक्ति को अनवरत संस्कार सुधार की साधना करनी होती है। सच्चरित्र व्यक्ति जीवन की प्रत्येक व्यावहारिकता में सावधानी से काम लेता है। वह सावधानी से गुणों का संचय करता है–अपने गुणों को छिपाता है, परंतु पुष्प की सुगंध कहीं छिपती नहीं है। दूसरे व्यक्ति उनका अनुकरण करते हैं। सबको बंधु समझकर, शत्रुता के भाव को भुलाते हुए सर्वहित की कामना लिए हुए जीवन समर्पण करने की उदात्त भावना ही सच्चरित्रता है, इसलिए सच्चरित्र के शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। सच्चरित्र को एक प्रकार से अजातशत्रु कहना चाहिए।

चरित्र-बल का प्रभाव अत्यंत तीव्रता से होता है। चरित्रवान व्यक्ति के सम्मुख हमारी दुर्बलताएँ नष्ट होने लगती हैं। महात्मा बुद्ध के चरित्र-बल के सम्मुख अँगुलिमाल जैसा दुर्दांत डाकू भी झुक गया था। जयप्रकाश नारायण के सम्मुख भी अनेक डाकुओं ने शस्त्र डाल दिए थे। चरित्र-बल में अपार शक्ति होती है।

14. नारी के विविध रूप (*CBSE 2008 Foreign*)

नारी के अनेक रूप हैं, अनेक भूमिकाएँ हैं। परिवार में वह माँ, दादी, पत्नी के रूप में विविध भूमिकाएँ निभाती है। इसके वावजूद वह नौकरी करके समाज को अपनी क्षमताओं का लाभ पहुँचाती है। हर भूमिका में उसका नया रूप झलकता है। हमें नारी के स्वरूप पर विचार करना होगा।

प्राचीन भारत के इतिहास पर दृष्टिपात करने से हमें ज्ञात होता है कि यहाँ महिलाओं को आदरपूर्ण स्थान दिया जाता है। हमारे पूर्वजों का कथन था–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"

अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। इससे स्पष्ट है कि भारतीय परिवारों में नारियों की महत्त्वपूर्ण स्थिति थी।

यह संसार परिवर्तनशील है। यहाँ प्रत्येक क्षण स्थिति बदलती रहती है। नारी-वर्ग की स्थिति में भी बदलाव आया है। मुगलकाल में नारी की दिशा गिरावट की ओर चली गई। स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व तक नारी जाति को शोषण का शिकार बनाया जाता रहा है। कुछ समाज सुधारकों ने इनकी इस दशा के विरुद्ध आवाज उठाई।

आधुनिक युग नव-जागरण का युग है। विश्व भर में नारी स्वातंत्र्य का युग चल रहा है। इसका प्रभाव भारत की नारियों पर भी पड़ा है। गत दो दशकों में नारी जागरण में काफी प्रगति दृष्टिगोचर हो रही है। इसका अन्य कारण नारी शिक्षा में विकास भी है।

आज की नारी आधुनिकता के परिवेश में जी रही है। वह अनेक समस्याओं के साथ संघर्ष कर रही है। सामाजिक समस्याओं के अतिरिक्त उसे आर्थिक समस्याओं से भी जूझना पड़ रहा है, इसलिए उसे नौकरी करनी पड़ रही है। वह इस प्रकार परिवार को आर्थिक संकट से उबारने का प्रयत्न कर रही है।

नारी के नौकरी करने से जहाँ परिवार का जीवन सुखद एवं संपन्न बनता जा रहा है, वहाँ अनेक समस्याएँ भी जन्म ले रही हैं। इससे उसके परिवार को वे सहूलियतें नहीं मिल पा रहीं, जिनकी उससे अपेक्षा की जाती है। उसके बच्चे सहज स्नेह से वंचित रह जाते हैं। परिवार के वातावरण में एक अनकहा तनाव व्याप्त हो जाता है। कई बार उसे गुंडागर्दी, बलात्कार एवं छेड़-छाड़ का शिकार भी बनना पड़ता है।

नारी की नौकरी के कई उज्ज्वल पक्ष भी हैं। इससे उसे आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। उसमें आत्मविश्वास का संचार होता है। वह समाज में अपने दायित्व का कूशलतापूर्वक निर्वाह कर सकती है। इसके कारण अब उसे शोषण का शिकार नहीं बनाया जा सकता। अब इस पर दहेज लाने के लिए दबाव नहीं डाला जा सकता।

नारी को नौकरी करते हुए 'सादा जीवन उच्च विचार' पर अमल करना लाभप्रद होगा। फैशनप्रियता के चक्कर में पड़कर वह अपना सम्मान गिराएगी तथा अपव्यय का शिकार भी बनेगी। नारी वर्ग को अपने अधिकारों के प्रति सचेष्ट होना चाहिए, पर कर्तव्यों के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

15. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात तै सिल पर परत निशान॥

वस्तुतः जो जड़मति हैं, वे अभ्यास से सुजान बन जाते हैं, जो सुजान हैं, वे कुशल बन जाते हैं, जो कुशल हैं वे अपनी कला में पूर्ण हो जाते हैं, जो पूर्ण हैं, उनकी पूर्णता स्थिर रहती है। इस प्रकार अभ्यास की कोई सीमा नहीं, उसका कोई अंत नहीं है। जितना गुड़ डालोगे, उतना ही मीठा होगा।

संसार में जन्म से ही कौन विद्वान बना है ? आरंभ में सभी जड़मति होते हैं, अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी उसी प्रकार चतुर बन जाता है जिस प्रकार कुएँ से बार-बार खींचने से पत्थर पर कोमल रस्सी भी निशान डाल देती है।

इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण दृष्टिगोचर हैं जिनमें बार-बार अभ्यास से सफलता प्राप्त हुई। मोहम्मद गौरी ने सत्रह बार पराजित होकर भी हार नहीं मानी और अठारहवीं बार युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर दिया।

'किंग ब्रूस एण्ड स्पाइडर' नामक कविता संसार में प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। राबर्ट ब्रूस की निरन्तर युद्ध में पराजय हो रही थी। वह कंदरा में छिप गया। वहीं उसने मकड़ी को बार-बार ऊपर चढ़ने का प्रयास करते देखा। सातवीं बार में मकड़ी अपने प्रयास में सफल हुई। इस घटना ने राबर्ट ब्रूस को उत्साहित किया। उसने एक बार युद्ध में पुनः प्रयास करने का निश्चय किया और सफलता प्राप्त की।

महान् संस्कृत नाटककार एवं कवि कालिदास वज्र मूर्ख थे। अपने निरंतर अभ्यास के कारण ही वह इतने बड़े विद्वान बने कि शेक्सपियर से टक्कर ले सके।

प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी ध्यानचंद की हॉकी का जादू विश्व में प्रसिद्ध है। वे भी निरंतर अभ्यास के कारण हॉकी के जादूगर कहलाए। लॉर्ड डिजरायली के प्रथम भाषण की ब्रिटिश संसद में खिल्ली उड़ाई गई। उन्हें अपना अपमान असह्य था। निरंतर

अभ्यास करके उन्होंने अद्वितीय भाषण कला सीखी, एक वर्ष बीतने के पश्चात् ही संसद में पुनः भाषण दिया। उनके गंभीर और ओजस्वी भाषण से संसद में ऐसा सन्नाटा छाया कि सदस्यों के रक्त की गति ही रुक गई। डिजरायली की यह सफलता उसके अभ्यास का परिणाम थी।

अभ्यास जीवन में सफलता दिलाने का मूल मंत्र है। समाज सुधार एवं राष्ट्र उत्थान में अभ्यास का विशेष महत्त्व है। अभ्यास से गलतियाँ दूर हो जाती हैं। किसी भी कौशल को सीखने के लिए अभ्यास की ही आवश्यकता होती है। नृत्य-संगीत आदि कलाओं में पारंगत होने के लिए भी निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। अंग्रेजी में कहावत है—"Practice makes a man perfect." अभ्यास से ही पूर्णता आती है, अतः हमें अभ्यास से नहीं घबराना चाहिए। बार-बार अभ्यास कर सफलता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

16. नई सदी भारत की सदी

(CBSE 2008 Foreign)

कभी समय था कि यूरोप के देश हमें पिछड़ा बताते थे। इसका कारण यह था कि हमारे यहाँ उत्पादन बहुत कम होता था। हमें विदेशी सहायता की आवश्यकता थी। हम उन पर काफी हद तक निर्भर थे। पर अब समय बदल रहा है। अब ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा जिसमें भारत आगे न बढ़ रहा हो। अब हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। यह सदी भारत की होगी।

21वीं सदी भारत के लिए उपलब्धियों से भरी होगी। इस सदी में **कंप्यूटर के प्रयोग का बाहुल्य** होगा। कंप्यूटर मशीनी मस्तिष्क का स्थान लेगा। कंप्यूटर चुनाव-विश्लेषण, राजनैतिक सूचनाओं का एकत्रीकरण एवं विश्लेषण एवं सरकारी कार्यालयों का काम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा। कई आलोचकों ने यह संभावना व्यक्त की है कि इससे बेरोजगारी की समस्या और भी विकराल रूप धारण कर लेगी। सरकार की योजना यह है कि मानव शक्ति का उपयोग दूसरे क्षेत्रों में किया जाएगा, अतः यह आशंका निर्मूल सिद्ध होगी।

भारत इस समय गरीबी की समस्या से उलझा हुआ है। वह गत 40-50 वर्ष से इस समस्या से मुक्त होने का प्रयास कर रहा है। आर्थिक स्वतंत्रता पाना भारत का एक लक्ष्य रहा है। भारत सरकार एक सुनियोजित ढंग से अर्थव्यवस्था के विकास की दिशा में प्रयत्नशील है। आशा की जाती है कि 21वीं शताब्दी में गरीबी का अभिशाप हमसे विदा ले चुका होगा। प्रत्येक देशवासी को रोजगार, वस्त्र, भोजन एवं आवास जुटाने का लक्ष्य पूरा होते ही गरीबी छूमंतर हो जाएगी। 21वीं सदी में सभी भारतवासियों के सुखी जीवन की कल्पना की जा रही है।

भारत सरकार शिक्षा-पद्धति में मूलभूत परिवर्तन करने का प्रयास कर रही है। **'नई शिक्षा नीति'** लागू करने की तैयारियाँ जोर-शोर से की जा रही हैं। नवोदय विद्यालयों की स्थापना जो 20वीं सदी में की गई थी उनका सुखद परिणाम तो 21वीं सदी के प्रारंभ में मिलना शुरू हो गया है। इन विद्यालयों से प्रतिभावान छात्र देश की काया पलटने में पूर्णतः समर्थ होंगे। तब तक भारत में निरक्षरता का नामोनिशान भी मिट चुका होगा। उस सदी में सभी मानव शिक्षित होंगे। इस दिशा में पर्याप्त कार्य किया जाएगा, ऐसी हम सबको पूर्ण आशा है।

भारत में **औद्योगिक विकास** की दर भी अभी तक कम है। इस दिशा में प्रयत्न जारी हैं। 21वीं सदी के आगमन के साथ हमारे उद्योग पूरी गति के साथ उत्पादन कर सकेंगे। उद्योगों की नई इकाइयाँ स्थापित की जा रही हैं। आशा की जाती है कि 21वीं सदी में उद्योगों का जाल बिछ जाएगा और हम विश्व बाजार की प्रतिस्पर्धा में टिक सकेंगे।

यद्यपि कृषि की दशा अब भी संतोषजनक है, फिर भी जनसंख्या वृद्धि की दर को देखते हुए और 21वीं सदी की कल्पना करते हुए कृषि को बेहतर सुविधाएँ प्रदान करना नितांत आवश्यक है। दालों का उत्पादन बढ़ाया जाना आवश्यक है। 21वीं सदी में हम अन्न संकट से पूरी तरह उबर सकेंगे।

21वीं सदी **सूचना प्रौद्योगिकी** की होगी। इस सदी में कंप्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल, फैक्स, चैटिंग आदि की सुविधाएँ चरम सीमा पर होंगी। भारत विश्व के अन्य विकसित देशों से टक्कर लेने में सक्षम हो जाएगा। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति महोदय श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का यह संकल्प पूरा होकर रहेगा कि भारत विकासशील प्रक्रिया से निकलकर विकसित देशों की श्रेणी में आ जाए। प्रयास करने से सब कुछ संभव है। उन्हीं के मार्गदर्शन में भारत परमाणु शक्ति संपन्न देश बन सका है तो अब विकसित देश भी बनकर रहेगा। 21वीं सदी भारत की होगी। भारत का झंडा विश्व में फहरेगा।

21वीं शताब्दी में भारत **बेरोजगारी की समस्या का हल** अवश्य ढूँढ लेगा। नौकरियों की उपलब्धता के साथ स्वरोजगार योजना को भी कारगर ढंग से लागू किया जा सकेगा। लोग अपना व्यवसाय चलाकर अपना जीवन-निर्वाह अच्छी प्रकार कर सकेंगे। आत्म-निर्भरता बहुत आवश्यक है। इसके बिना आजादी का कोई महत्त्व नहीं रह जाता।

21वीं सदी में भारत एक मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरेगा। आतंकवादी गतिविधियाँ समाप्त होंगी तथा देश में एकता एवं अखंडता की भावना का प्रसार हो सकेगा। भारत सदैव से शांतिपूर्ण देश रहा है। उसने विश्व में अपना आदर्श स्थापित किया है। उसकी इस छवि में और सुधार होगा।

17. सच्चा मित्र

(CBSE 2008 Foreign)

जीवन में मित्रों की बड़ी आवश्यकता होती है। प्राय: देखने में आता है कि मौज-मस्ती के लिए तो बहुत से दोस्त आ जाते हैं, पर दु:ख की घड़ी में कितने मित्रता की कसौटी पर खरे उतर पाते हैं, यह देखने की बात है।

मित्र के अनेक कर्तव्य होते हैं जिनमें से केवल कुछ प्रमुख कर्तव्यों पर नीचे विचार किया जाएगा। एक सच्चा मित्र सदैव अपने साथी को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। वह कभी नहीं देख सकता कि उसकी आँखों के सामने ही उसके मित्र का घर बर्बाद होता रहे, उसका साथी पतन के पथ पर अग्रसर होता रहे, कुवासनाएँ और दुर्व्यसन उसे अपना शिकार बनाते रहें, कुरीतियाँ उसका शोषण करती रहें, कुविचार उसे कुमार्गगामी बनाते रहें। वह उसे समझा-बुझाकर, लाड़-प्यार से या किसी न किसी तरह उसे कुमार्ग को छोड़ने के लिए विवश कर देगा। तुलसीदास ने सच्चे मित्र की पहचान बताई है–

''कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा।
गुण प्रगटहि अवगुणहिं दुरावा।।''

तात्पर्य यह है कि हम झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, धोखा देते हैं या हममें इसी प्रकार की और बुरी आदतें हैं, तो एक श्रेष्ठ मित्र का कर्तव्य है कि वह हमें सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे, हमें अपने दोषों के प्रति जागरूक कर दे तथा उनको दूर करने का निरंतर प्रयास करता रहे।

जब मनुष्य के ऊपर विपत्ति के काले बादल घनीभूत अंधकार के समान छा जाते हैं और चारों दिशाओं में निराशा के अंधकार के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं पड़ता, तब केवल सच्चा मित्र ही एक आशा की किरण के रूप में सामने आता है। तन से, मन से, धन से वह मित्र की सहायता करता है और विपत्ति के गहन गर्त में डूबते हुए अपने मित्र को निकाल कर बाहर ले आता है।

मित्रता होनी चाहिए मीन और नीर जैसी। सरोवर में जब तक जल रहा; मछलियाँ भी क्रीड़ा तथा मनोविनोद करती रहीं, परंतु जैसे-जैसे तालाब के पानी पर विपत्ति आनी आरंभ हुई; मछलियाँ उदास रहने लगीं, जल का अंत तक साथ दिया, उसके साथ संघर्ष में रत रहीं, परंतु जब मित्र न रहा, तो स्वयं भी अपने प्राण त्याग दिए, परंतु अपने साथी जल का अंत तक विपत्ति में भी साथ न छोड़ा।

रहीम के अनुसार मित्रता दूध और जल की-सी नहीं होनी चाहिए कि दूध पर विपत्ति आई और वह जलने लगा तो पानी अपना एक ओर को किनारा कर गया अर्थात् भाप बनकर भाग गया, बेचारा अकेला दूध अंतिम क्षण तक जलता रहा। स्वार्थी मित्र सदैव विश्वासघात करता है; उसकी मित्रता सदैव पुष्प और भ्रमर जैसी होती है। भंवरा जिस तरह रस रहते हुए फूल का साथी बना रहता है और इसके अभाव में उसकी बात भी नहीं पूछता। इसी प्रकार स्वार्थी मित्र भी विपत्ति के क्षणों में मित्र का सहायक सिद्ध नहीं होता। इसलिए तुलसीदास जी ने अच्छे मित्र की कसौटी विपत्ति ही बताई है–

''धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद् काल परखिए चारी।।
जे न मित्र दु:ख होंहि दुखारी।
तिनहिं विलोकत पातक भारी।।''

इसलिए संस्कृत में कहा गया है कि ''आपदगतं च न जहाति ददाति काले'' अर्थात् विपत्ति के समय सच्चा मित्र साथ नहीं छोड़ता, अपितु सहायता के रूप में कुछ देता ही है। जिस प्रकार स्वर्ण की परीक्षा सर्वप्रथम कसौटी पर घिसने से होती है, उसी प्रकार मित्र की विपत्ति के समय त्याग से होती है। इतिहास साक्षी है कि ऐसे मित्र हुए हैं, जिन्होंने अपने मित्र की रक्षा में अपने प्राणों की भी आहुति दे दी।

मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र के गुणों को प्रकाशित करे जिससे कि मित्र का समाज में मान और प्रतिष्ठा बढ़े। सच्चा मित्र अपने मित्र के मान को अपना ही मान समझता है, उसकी प्रतिष्ठा और ख्याति को अपनी प्रतिष्ठा और ख्याति समझता है। इसीलिए वह अपने मित्र के गुणों का गान करता है और अवगुणों को छुपाने का प्रयत्न करता है। साथ ही उन अवगुणों को दूर करने का भी प्रयास करता है।

18. पराधीन भारत में आजादी के लिए नवयुवकों की भूमिका (कल्पना में)

(CBSE 2009 Outside)

हमारा देश पराधीन है। हमारे देश पर अंग्रेजों का शासन है। मैं इस पराधीन देश का एक नवयुवक हूँ। मैं देख रहा हूँ कि शासक वर्ग अर्थात् अंग्रेजी शासन देश पर तरह-तरह के जुल्म ढा रहा है। विशेषकर उन नवयुवकों पर, जो देश की स्वतंत्रता के

लिए आंदोलन कर रहे हैं। सत्ता-पक्ष को आंदोलन कतई नहीं सुहाता। उसकी हर कोशिश इस आंदोलन को कुचलने की होती है। इसके लिए वह बल-प्रयोग से भी नहीं कतराता। वह नवयुवकों का मनोबल तोड़ देना चाहता है।

एक पराधीन देश के नवयुवक के नाते मेरी भूमिका देश को आजाद कराने की होती। मैं हरसंभव प्रयास करके देश को गुलामी के बंधन से मुक्त करवाता। मुझे एक पराधीन देश का नागरिक कहलवाने में शर्म का अनुभव होता। मुझे यह बात भली प्रकार ज्ञात है कि एक पराधीन देश के नागरिक को संसार में कहीं भी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। व्यक्ति को धन-दौलत या ऊँचा पद भी वह सम्मान नहीं दिला सकता जो एक स्वतंत्र देश के नागरिक को सहज ही प्राप्त हो जाता है। तब मुझे कदम-कदम पर अपमान का कड़वा घूँट पीना पड़ता। मुझे नीची नजरों से देखा जाता। मेरी उपलब्धियों को नकार दिया जाता। एक गुलाम देश में मुझे ऐसे कई अनुभवों से गुजरना भी पड़ा है।

मैं अपने देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देता। मुझे धन-दौलत की चाह नहीं है, मुझे एक स्वतंत्र देश के नागरिक के रूप में जीना है।

मैं सारे देश में जन-जागरण का काम करके लोगों में आजादी पाने की भावना उत्पन्न करूँगा। मैं लोगों को आजादी के महत्त्व से परिचित कराऊँगा। आजादी से बढ़कर अन्य कोई सुख नहीं है। पक्षी अपनी आजादी के लिए सोने के पिंजरे तक को ठुकरा देते हैं। वे कड़वी निबौरी खाना स्वीकार कर लेते हैं पर गुलामी में उन्हें अच्छी चीजें भी अस्वीकार होती हैं। मैं आंदोलन करके लोगों को संघर्ष करने के लिए तैयार करता।

मैं लोगों को अंग्रेजों के शासन के प्रति मोह त्यागने के लिए प्रेरित करता। उन्हें स्वाधीनता का महत्त्व बताता। मुझे इतना पता है कि नवयुवक जिस काम पर जुट जाएँ, उसे पूरा कर लेना उनके लिए कोई कठिन बात नहीं है। मैं अपने प्रयासों में अवश्य सफल होता। मैं अपने देश को स्वतंत्र अवश्य करा पाता। मुझे अपने देश में अपना तिरंगा लहराते हुए गर्व का अनुभव होता।

19. महानगरीय जीवन : अभिशाप या वरदान *(C.B.S.E. 1995 Delhi)*

वर्तमान समय में भारत के अनेक प्रमुख नगर महानगरों में परिवर्तित होते जा रहे हैं। एक नई महानगरी सभ्यता पनपती जा रही है। महानगरों का जीवन जहाँ एक ओर आकर्षित करता है, वहीं वह अभिशाप से कम नहीं है। आधुनिकता की चमक-दमक इन महानगरों में दृष्टिगोचर होती है। यही आकर्षण सामान्य नगर-कस्बे एवं गाँवों के लोगों को महानगर की ओर खींचता है, पर यहाँ की समस्याएँ उन्हें ऐसे चक्र में उलझाकर रख देती हैं जिससे बाहर निकलना आसान नहीं होता। महानगरों का जीवन जहाँ वरदान है, वहीं अभिशाप भी है।

भारत में कोलकाता, मुंबई, चेन्नई और दिल्ली जैसे महानगर हैं। इन नगरों का अपना ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व है। इनमें से कई नगरों की जनसंख्या 21वीं सदी में प्रविष्ट होते समय एक करोड़ को पार कर गई है। इनसे कम जनसंख्या वाले तो कई पूरे देश हैं। ये महानगर एक नवीन भारत की रचना में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। दुनिया भर की आधुनिकतम सुविधाएँ इन महानगरों में उपलब्ध हैं। इनका नित्य नया रूप निखर रहा है। इन महानगरों की गगनचुंबी इमारतें सामान्यजन के लिए कौतूहल का विषय हैं। इन नगरों को देखकर ही विदेशी पर्यटक भारत की प्रगति का आकलन करते हैं।

यह सत्य है कि महानगरीय जीवन संपन्न व्यक्तियों के लिए वरदान है। उन्हें इन नगरों में स्वर्ग जैसे सुख की अनुभूति होती है। उनका व्यवसाय इन्हीं नगरों में प्रश्रय पाता है। वे ही इन नगरों को सजाने-सँवारने का काम करते हैं। सरकार भी इन्हें नए-नए रूपों में विकसित कर रही है। निश्चय ही धनिक वर्ग के लिए महानगरीय जीवन वरदान है।

इसके साथ-साथ निम्न-मध्यवर्ग महानगरीय जीवन के दुष्चक्र में पिसकर रह गया है। **बढ़ती जनसंख्या और सिकुड़ते साधनों** ने उनका जीवन दूभर बना दिया है। महानगरों में अनेक समस्याओं से उन्हें जूझना पड़ता है। आवास की समस्या बड़ी विकराल होती जा रही है। झोंपड़पट्टीनुमा बस्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। एक ओर विशाल अट्टालिकाएँ खड़ी हैं तो दूसरी ओर गंदी बस्तियाँ जन्मती जा रही हैं। एक व्यक्ति बीस-बीस कमरों में रहता है और बीस-बीस व्यक्ति एक कमरे में रहते हैं। कितना भारी अंतर है महानगरीय आवास व्यवस्था में।

महानगरों में **खाने-पीने की कठिनाई** का भी सामना करना पड़ता है। न तो वहाँ स्वच्छ जल मिल पाता है, न शुद्ध दूध। हर वस्तु प्रदूषित मिलती है। कुछ लोगों को छोड़कर अधिकांश लोगों को पौष्टिक भोजन भी उपलब्ध नहीं होता। न उन्हें खुली वायु साँस लेने के लिए उपलब्ध हो पाती है और न धूप। यही कारण है कि महानगरों में लोग प्रायः बीमार रहते हैं।

महानगरों में **शिक्षा की सुविधाएँ** अवश्य उपलब्ध हैं पर इस क्षेत्र में भी पर्याप्त भेदभाव है, धनिक वर्ग को पब्लिक स्कूलों की सुविधाएँ मिल जाती हैं, जबकि निम्न-मध्य वर्ग सामान्य सरकारी स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने के लिए विवश है। वह पब्लिक स्कूलों की महँगी शिक्षा झेल नहीं पाता। उच्च शिक्षा की व्यवस्था महानगरों में एक वरदान के रूप में है। इसका लाभ निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग भी उठाते हैं।

महानगरों में सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी होती रहती हैं। इसमें रुचि रखने वालों को यहाँ का जीवन वरदान से कम प्रतीत नहीं होता। उन्हें आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है, पर महानगर के व्यस्त जीवन में अपने लिए स्थान बना पाना इतना सहज नहीं है। उसके लिए अथक परिश्रम और लगन की आवश्यकता होती है।

20. महँगाई : एक समस्या *(C.B.S.E. 2000 Outside)*

वर्तमान समय में निम्न-मध्य वर्ग महँगाई की समस्या से त्रस्त है। यह महँगाई रुकने का नाम ही नहीं लेती, यह तो सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती ही चली जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार का महँगाई पर कोई नियंत्रण रह ही नहीं गया है।

रोटी, कपड़ा और मकान प्रत्येक व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताएँ हैं। वह इन्हें पाने के लिए दिन-रात प्रयास करता रहता है। एक सामान्य व्यक्ति केवल इतना चाहता है कि उसे जीवनोपयोगी वस्तुएँ आसानी से और उचित दर पर उपलब्ध होती रहें। सभी राजनीतिक दल महँगाई को चुनावी मुद्दा बनाते हैं, पर सत्ता में आने के पश्चात् या तो उसे भूल जाते हैं या कुछ कर पाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं।

महँगाई अथवा मूल्य-वृद्धि का सीधा संबंध अर्थव्यवस्था से जुड़ा है। विकासशील देशों के पास धन का अभाव होता है और जनता अपनी आय में वृद्धि चाहती है। इसके परिणामस्वरूप मुद्रा का प्रसार बढ़ता है। दामसूचक सिक्के की कीमत घट जाती है और महँगाई उसी अनुपात में बढ़ जाती है। जब यह महँगाई या मूल्य-वृद्धि नियंत्रण से बाहर हो जाती है, तब यह समस्या का रूप ले लेती है।

महँगाई बढ़ने के कई कारण हैं। उत्पादन में कमी तथा माँग में वृद्धि होना महँगाई का प्रमुख कारण है। माँग और पूर्ति के असंतुलित होते ही महँगाई को अपने पाँव फैलाने का अवसर मिल जाता है। कभी-कभी सूखा, बाढ़, अतिवृष्टि जैसे प्राकृतिक प्रकोप भी उत्पादन को प्रभावित करते हैं। जमाखोरी भी महँगाई बढ़ाने का प्रमुख कारण है। जमाखोरी से शुरू होती है कालाबाजारी। दोषपूर्ण वितरण प्रणाली, अंधाधुंध मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति तथा सरकारी अंकूश का अप्रभावी होना भी महँगाई के कारण हैं। ये कालाबाजारी पहले वस्तुओं का नकली अभाव उत्पन्न करते हैं और फिर जब उन वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है, महँगे दामों पर बेचते हैं।

सरकार अखबारों में तो महँगाई कम करने की बात करती है, पर वह भी दाम बढ़ाने में किसी से कम नहीं है। सरकारी उपक्रम भी अपने उत्पादों के दाम बढ़ाते रहते हैं। वे अपने उद्देश्य को भुला बैठते हैं कि उन्हें इसलिए शुरू किया गया था कि भावों पर नियंत्रण रख सकें। उत्पादन के नाम पर सरकार लंबी-चौड़ी योजनाएँ बनाती है, पर उनका क्रियान्वयन पूरी तरह से नहीं हो पाता। इस जानलेवा महँगाई ने आम नागरिकों की कमर तोड़कर रख दी है। अब उसे दो समय का भोजन जुटाना तक कठिन हो गया है। पौष्टिक आहार का मिलना तो और भी कठिन हो गया है। आवास समस्या पर भी महँगाई की मार पड़ी है। शहरों में दो कमरे का फ्लैट पाँच हजार रुपए महीने से कम किराए पर भी नहीं मिल पाता। कपड़ों का तो कुछ पूछिए ही नहीं। यह सही है कि हमारी आवश्यकताएँ तेजी से बढ़ती चली जा रही हैं और इसने भी महँगाई को बढ़ाने में योगदान किया है, पर विकासशील राष्ट्र में ऐसा होता ही है। महँगाई को सामान्य व्यक्ति की आय के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। महँगाई के लिए अंधाधुंध बढ़ती जनसंख्या भी उत्तरदायी है।

21. मेरी प्रिय पुस्तक *(CBSE 2009 Outside)*

मेरी प्रिय पुस्तक है–तुलसीदास द्वारा रचित **'रामचरितमानस'**।

इस ग्रंथ की रचना ऐसे समय में हुई थी जबकि हिंदू जनता अपना समस्त शौर्य एवं पराक्रम खो चुकी थी। विदेशियों के चरण भारत में जम चुके थे। वह समय दो विरोधी संस्कृतियों, साधनाओं और सभ्यताओं का संधिकाल था। ऐसे ही काल में युग-प्रवर्तक, उच्च कोटि के भक्त कवि तुलसी का प्रादुर्भाव हुआ। लोकचेतना के शक्तिशाली तत्त्वों की उन्हें अद्भुत पहचान थी। राम के लोकोत्तर चरित्र के अजर-अमर गायक रस-सिद्ध कवि तुलसी ने अपनी अमृतवाणी से जहाँ एक ओर हिंदी काव्य साहित्य को समृद्ध किया, वहीं समाज, जाति और राष्ट्र के प्राणों में नव-जागरण की चेतना के स्वर फूँके।

'रामचरितमानस' मुझे क्यों सर्वप्रिय है? इसके कई कारण हैं। 'रामचरितमानस' का कथा-शिल्प अत्यंत सूझ-बूझ से युक्त है। इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के पावन एवं लोकरक्षक चरित्र का विशद् वर्णन हुआ है। सच तो यह है कि मानव जीवन के विविध पहलुओं एवं भावनाओं का जितना सुंदर वर्णन हमें इस ग्रंथ में मिलता है, उतना किसी अन्य महाकाव्य में नहीं मिलता।

'रामचरितमानस' एक सफल महाकाव्य है। भगवान् राम 'मानस' के धीरोदात्त नायक हैं। वे परब्रह्म होते हुए भी इस ग्रंथ में एक गृहस्थ के रूप में आते हैं। वे सर्वत्र आदर्श की रक्षा करते हैं। इस महाकाव्य के चरित्रों के माध्यम से तुलसीदास ने समाज को

ऐसे मानवीय मूल्य दिए हैं जो देश और काल की सीमा से परे हैं। मानव हृदय की जिस सुदृढ़ भूमि पर 'रामचरितमानस' का भव्य प्रासाद खड़ा है, वह वास्तव में सनातन एवं सार्वभौमिक है। धर्म-अधर्म की परिभाषा करते हुए गोस्वामी जी लिखते हैं–

''परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।'

रामचरितमानस की **संवाद-शैली** मुझे अत्यंत प्रिय है। इसका आरंभ संवादों से होता है, मध्य भी और अंत भी। कथा के आधारभूत संवाद हैं–'शिव-पार्वती संवाद', 'गरुड़-काकभुशुण्डि संवाद' और 'याज्ञवल्क्य-भारद्वाज संवाद'। इनके अतिरिक्त 'लक्ष्मण-परशुराम संवाद', 'रावण-अंगद संवाद' आदि भी प्रभावशाली बन पड़े हैं। तुलसीदास जी ने मार्मिक स्थलों का चुनाव बड़ी कुशलतापूर्वक किया है। 'राम-वनवास', 'भरत मिलाप', 'सीताहरण', 'लक्ष्मण-मूर्च्छा' आदि प्रसंगों को मार्मिक बना दिया है।

इस ग्रंथ में तुलसीदास जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को अवतारी रूप में आराध्य मानकर उनका चरितगान किया है। उन्होंने अपने समय की प्रचलित सभी काव्य-शैलियों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। **'मानस' का शिल्प** बेजोड़ है। मानस में सात कांड हैं–बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधा काण्ड, सुंदर काण्ड, लंका काण्ड और उत्तर काण्ड। तुलसीदास ने इस महाकाव्य में अवधी भाषा का प्रयोग कर सर्वसाधारण के लिए रास्ता सुगम कर दिया। दोहा-चौपाई शैली का प्रयोग किया गया है।

रामचरितमानस के माध्यम से तुलसीदास जी ने अपनी समन्वयवादी दृष्टि का परिचय दिया है। तुलसीदास जी ने यद्यपि अपने काव्य को 'स्वान्तः सुखाय' कहा है, पर तुलसी जैसे लोकचिंतक महात्मा का अपना निजी सुख हो ही क्या सकता था? उनका सुख-दुःख भी पराया ही था। हिंदू धर्म, हिंदू जाति और हिंदू संस्कृति का जितना उपकार 'रामचरितमानस' ने किया है, संभवतः किसी दूसरी साहित्यिक-कृति ने नहीं किया। वास्तव में इस ग्रंथ की जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी ही थोड़ी होगी।

22. सांस्कृतिक समारोह का विवरण (*CBSE 2009 Delhi*)

मैंने पिछले सप्ताह 'भारत बाल विकास परिषद्' द्वारा आयोजित 'सांस्कृतिक संध्या' नामक कार्यक्रम देखा। यह कार्यक्रम रामलीला मैदान में सायं छह बजे से रात्रि नौ बजे तक चला। यह कार्यक्रम अत्यंत मनोरंजक था। इसकी प्रस्तुति वंदना लूथरा ने की। उसने इसे जीवंत बना दिया।

सर्वप्रथम 'सरस्वती वंदना' का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। छह बालिकाओं ने आकर्षक ढंग से कवि निराला द्वारा रचित सरस्वती वंदना 'वीणा वादिनि वर दे' का गायन किया। एक लड़की को सरस्वती का रूप प्रदान किया गया था। सारा वातावरण भक्तिमय बन गया। इसके बाद रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। सबसे पहले देशभक्ति का समूहगान पेश किया गया। यह गीत उत्साहपूर्ण था तथा लोगों के हृदयों में देशभक्ति की भावना का संचार कर रहा था। इसके पश्चात् हास्य-व्यंग्य का कार्यक्रम शुरू हुआ। एक हास्य नाटिका 'अंधेर नगरी चौपट राजा' प्रस्तुत की गई। इस नाटिका ने लोगों को इतना हँसाया कि उनके पेट में वल पड़ गए। कुछ लोगों ने चुटकुले भी सुनाए। एक हास्य कविता भी सुनाई गई। यह कविता भी हँसाने में सफल रही।

अब शास्त्रीय संगीत का दौर प्रारंभ हुआ। तानपूरे, तबला, सितार तथा बाँसुरी पर कई मोहक प्रस्तुतियों ने लोगों को मुग्ध कर दिया। यद्यपि इनके कलाकार बहुत प्रसिद्ध नहीं थे, पर उनका वादन उनके उज्ज्वल भविष्य को संकेतित कर रहा था। इसके बाद कथक और भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुत किए गए। दो युवतियों ने अपने नृत्य से समाँ बाँध दिया। लोग बार-बार तालियाँ वजा रहे थे।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में कव्वाली पेश की गई। एक ओर लड़के थे तो दूसरी ओर लड़कियाँ थीं। दोनों ओर से काव्यरूप में काफी बहस चलती रही। इनके बोलने तथा हाव-भाव का ढंग प्रसिद्ध कव्वालों की तरह ही था। इस कार्यक्रम ने भी खूब समां बाँधा।

इस कार्यक्रम का अनुभव बहुत सुखद रहा। इसे देखकर-सुनकर बड़ा आनंद आया। अधिकांश कार्यक्रम रोचक एवं प्रभावी थे। यह कार्यक्रम काफी समय तक मन को गुदगुदाता रहेगा।

23. भारत में किसानों की दशा (*CBSE 2009 Delhi*)

भारत में आज से 50 वर्ष पहले के किसान और आज के किसान में कुछ अंतर आया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् किसान के बहते आँसू कुछ रुके हैं। जमींदारों के शोषण से तो उसे सर्वथा मुक्ति मिल चुकी है, परंतु फिर भी वह संसार का अन्नदाता आज भी पूर्ण रूप से सुखी नहीं है। आज भी 50 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिनके पास दोनों समय खाने के लिए भरपेट भोजन नहीं, शरीर ढकने के लिए स्वच्छ और मजबूत कपड़े नहीं। उनकी गृह-लक्ष्मियाँ फटी हुई धोतियों में अपनी लज्जा को छिपाए जीवन-यापन करती हैं। टूटे-फूटे मकान और टूटी हुई झोंपड़ियाँ आज भी उनके प्रासाद बने हुए हैं।

भारतीय किसान की जीवन सहचरी दरिद्रता मानो आज भी उसका साथ छोड़ने को तैयार नहीं है। अन्य देशों के कृषक सुखी हैं, संपन्न हैं, धन-धान्य युक्त हैं, जीवन को सुखमय बनाने के सभी साधन उन्हें उपलब्ध हैं। उन देशों के नागरिकों और कृषकों के ज्ञान, धन-संपत्ति सभी में समानता है। वे सुरक्षित होते हैं और सुसंस्कृत भी, परंतु भारतीय किसान अधिकांश रूप से अभी भी सुसंपन्न नहीं हैं। संभव है, निकट भविष्य में उनकी स्थिति में कुछ और अधिक सुधार हो क्योंकि सरकार उनकी उन्नति के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। मैथिलीशरण जी ने एक बार लिखा था–

'शिक्षा की यदि कमी न होती, तो ये गाँव स्वर्ग बन जाते'।

ग्रामीणों की निरक्षरता उनके जीवन के लिए अभिशाप है। बिना शिक्षा के मनुष्य का मानसिक विकास नहीं होता। शिक्षित मनुष्य समाज के उत्थान में सहयोग देते हैं, परंतु जो अशिक्षित होते हैं, उन्हें न समाज से काम है, न राष्ट्र से। देश की स्वतंत्रता का वास्तविक मूल्यांकन देश के सभ्य व सुशिक्षित नागरिक ही कर सकते हैं, परंतु यह देशं का दुर्भाग्य है कि भारतवर्ष में निरक्षरता और ज्ञान-शून्य का प्रभाव है। भारतवर्ष की ग्रामवासिनी 80 प्रतिशत जनता आज भी अज्ञान के गहरे गर्त में डूबी हुई है। उसकी दृष्टि में न देश का मूल्य है, न समाज़ का। उसे केवल हल चलाना और खेती करना इसके अतिरिक्त और कोई काम नहीं। पराधीन काल की अपेक्षा आधुनिक काल में यद्यपि सरकार इस दिशा में घोर प्रयत्न कर रही है, गाँव-गाँव और तहसील-तहसील में विद्यालय खोले गए हैं, ग्रामीण बंधुओं को सुशिक्षित करने का प्रयास अबाध गति से चल रहा है, फिर भी अभी पर्याप्त समय लगेगा।

किसानों की सर्वांगीण उन्नति के लिए सरकार प्रयत्नशील है। बच्चों की शिक्षा के लिए विद्यालय, प्रौढ़ों की शिक्षा के लिए सांध्यकालीन विद्यालय, स्वास्थ्य के लिए चिकित्सालय, डाक की सुविधा के लिए डाकघर तथा कृषि की उन्नति के लिए अनेक प्रकार की खाद, नवीन यंत्र प्रदान किए जा रहे हैं। ग्राम और ग्रामीणों की सामूहिक उन्नति के लिए शासन की ओर से अनेक नए विभाग खोले गए हैं जिनमें काम करने वाले अधिकारी और कर्मचारी नित्य ग्रामीणों की सुख-सुविधा का ध्यान रखते हुए उन्हें उन्नति की ओर ले जा रहे हैं।

संतोष की बात है कि किसानों में जागृति आई है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह के जन्म-दिवस को 'कृषक दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा है। पहले युग में किसान जितना भोला-भाला था, आज के युग में वह उतना ही समझदार है।

24. वनसम्पदा : रक्षा और उपयोग *[C.B.S.E. 1999 (Outside)]*

अथवा

पेड़-पौधे और हमारा जीवन *(C.B.S.E. 2000 Comptt. Delhi)*

अथवा

बढ़ती सभ्यता : सिकुड़ते वन

वन प्रकृति की देन हैं। वन देश की सुंदरता में वृद्धि करते हैं। वनों की अधिकता या कमी किसी देश की अर्थव्यवस्था को एक बड़ी सीमा तक प्रभावित करती है। किसी देश की सुरक्षा, समृद्धि और सुंदरता के लिए वनों का बहुत अधिक महत्त्व है।

हम प्राय: वनों की ओर से उदासीन रहते हैं। इसका मुख्य कारण है कि हम वनों से दूर रहते हैं। वास्तविक वनों से हमारा परिचय नहीं हो पाता। जनसंख्या के साथ वनों का संसार तीव्र गति से सिकुड़ रहा है। जंगल काटे जा रहे हैं और बस्तियाँ बसाई जा रही हैं। वन जो प्राकृतिक संतुलन बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं, अत्यधिक कटाई के कारण पर्यावरण विनाश का कारण बन जाते हैं।

वन पर्यावरण को संतुलित करने, उद्योगों के लिए मूल्यवान सामग्री प्रदान करने, लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करने का कार्य करते हैं। वन व्यापारिक, घरेलू और औद्योगिक वस्तुएँ तैयार करने के लिए आवश्यक लकड़ी प्रदान करते हैं। वन प्राकृतिक सुषमा के आगार तो हैं ही, पशु-पक्षियों के शरणस्थल भी हैं। भारत के विशाल भू-भाग में वन फैले हुए हैं।

वर्तमान युग में शहर तो कंकरीट के जंगल बनकर रह गए हैं। वहाँ हरियाली का नामोनिशान तक नहीं रह गया है। ग्रामीण वातावरण अभी तक सुरक्षित था, पर अब उसमें भी बदलाव आता जा रहा है। उद्योग-धंधों के विस्तार का प्रभाव इन गाँवों पर भी पड़ा है। वहाँ भी वृक्षों की संख्या में निरंतर गिरावट आ रही है।

वन ईंधन और इमारती लकड़ी तो प्रदान करते ही हैं, इसके अतिरिक्त लाख, गोंद, रबर आदि विभिन्न वस्तुएँ तथा पशुओं के लिए चारा, औषधि तथा उद्योगों के लिए दियासलाई, प्लाईवुड, रेशम, वार्निश, कागज और अनेक उद्योगों को कच्ची सामग्री प्रदान करते हैं। इन वस्तुओं के संग्रह, व्यापार, परिवहन, उत्पादन, विक्रय द्वारा लाखों व्यक्तियों को आजीविका प्राप्त होती है। वन जलवायु को सम बनाते हैं, भूमि कटाव को रोक लेते हैं। नदियों में बहने वाले जल की गति को नियंत्रित करते हैं। वनों द्वारा भूमि की उपजाऊ परत सुरक्षित बनी रहती है। वन भूमिगत जल के स्रोत हैं, वन वर्षा को आकर्षित करते हैं और भूमि की उर्वरता को बढ़ाते हैं।

स्वतंत्रता से पूर्व वनों की जो अंधाधुंध कटाई जारी थी, वह स्वतंत्रता के पश्चात् भी निरंतर जारी रहने से, वन जो देश की अत्यंत मूल्यवान धरोहर हैं, तेजी से विनाश की ओर अग्रसर हैं। वन देश की सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं, परंतु वनों की कटाई का ही परिणाम है कि वन निरंतर सिकुड़ते चले जा रहे हैं। जनसंख्या निरंतर बढ़ती चली जा रही है। उनके लिए अधिक भूमि की आवश्यकता पड़ रही है। हमें अन्य उपाय बरतकर इस कमी को पूरा करना चाहिए, वनों को काटना बहुत ही बुरा है। इसके दुष्परिणाम कुछ समय के पश्चात् सामंने आते हैं।

25. बस-दुर्घटना

(CBSE 2009 Outside)

मैं राम नगर की एक कॉलोनी में रहता हूँ। यह कॉलोनी घने रूप में बसी हुई है। इसे अनियमित रूप से बसाया गया है। यहाँ यातायात नियमों का प्रायः उल्लंघन होतां रहता है। यहाँ प्रायः दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। पिछले दिनों यहाँ एक भयंकर बस-दुर्घटना हो गई।

यात्रियों से भरी एक बस एक भारी-भरकम पेड़ से टकरा गई। यह टक्कर इतनी जबर्दस्त थी कि पेड़ टूटकर गिर पड़ा और बस का अगला भाग बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। ड्राइवर की सीट तो इंजन के अंदर ही घुस गई। बस में लगभग पचास यात्री थे। सभी यात्री हताहत हुए पर तीस यात्री तो बुरी तरह घायल हो गए।

इन घायल यात्रियों में कई के सिर फट गए तो कई के हाथ-पैर टूट गए। चारों ओर चीख-पुकार मची थी। लोग सहायता के लिए पुकार रहे थे। उनकी करुण चीख-पुकार सुनकर नगरवासी दौड़े हुए आए। इनमें से अनेक लोगों ने बस में घुसकर घायल लोगों को खींचकर बस से बाहर निकाला। कई यात्री तो सीटों के बीच में बुरी तरह फँस गए थे। उनको निकालने में लोगों को बहुत मुश्किल आई। जैसे-तैसे करके आधे घंटे में सभी घायलों को बस से बाहर निकाल लिया गया। अब समस्या आई उनके इलाज की। अभी तक पुलिस भी मौके पर नहीं पहुँची थी। कई नगरवासी अपने वाहन लेकर आ गए। किसी के पास कार थी तो किसी के पास वैन। उनमें घायल यात्रियों को लादा गया। जब उनमें सभी घायलों को नहीं लिटाया जा सका तब दो टैंपो की व्यवस्था की गई। इस प्रकार घायल यात्रियों को सरकारी अस्पताल तक पहुँचाया गया। वहाँ भी उनकी चिकित्सा की पूरी व्यवस्था नहीं थी। अतः चार-पाँच घायलों को एक प्राइवेट अस्पताल ले जाया गया। कई नवयुवकों ने घायलों को अपना रक्त दिया ताकि उन्हें रक्त चढ़ाया जा सके। नगर की एक स्वयंसेवी संस्था ने घायलों के लिए आवश्यक दवाइयों की व्यवस्था की। लोगों ने पूरे तन-मन-धन से घायलों की परिचर्या की।

दो घंटे बाद पुलिस मौके पर पहुँच पाई। तब तक घायलों का इलाज शुरू हो चुका था। पुलिस अधीक्षक ने नगरवासियों को इस तात्कालिक सहायता के लिए धन्यवाद दिया। तीन-चार घंटे में यह समाचार चारों ओर फैल गया और धीरे-धीरे घायलों के परिजन अस्पतालों तक पहुँचते गए।

इस दुर्घटना में ड्राइवर की मृत्यु हो गई। अथक प्रयासों के बावजूद उसे बचाया नहीं जा सका। दुर्घटना का दृश्य इतना कारुणिक था कि अभी तक उसकी दुखद स्मृति मन-मस्तिष्क पर छाई हुई है।

26. प्रदूषण

(CBSE 2009 Delhi)

प्रदूषण का अर्थ है हमारे आस-पास के वातावरण में मनुष्य के क्रियाकलापों द्वारा अवांछित बदलाव। आज सर्वत्र प्रदूषण की उपस्थिति हो चुकी है। वर्तमान समय में शहरी सभ्यता प्रदूषण की समस्या से घिरी हुई है। जैसे-जैसे वैज्ञानिक उपकरण बढ़ते जा रहे हैं, वैसे-वैसे प्रदूषण का खतरा बढ़ता जा रहा है। पर्यावरण के इस प्रदूषण से लोगों का जीवन दूभर होता चला जा रहा है। सरकार भी इस समस्या के प्रति जागरूक प्रतीत होती है।

प्रदूषण के कारणों की खोज करने पर प्रतीत होता है कि वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि, उद्योगों का नियमित फैलाव, चिमनियों से आबादी के मध्य धुआँ उगलना एवं यातायात के साधनों की अभूतपूर्व वृद्धि आदि ही इसके लिए जिम्मेदार हैं। कारखाने का रासायनिक जल नदियों में डाल दिया जाता है। शहरों का गंदा पानी बिना साफ किए हुए नदियों में मिला दिया जाता है। जहाजों द्वारा समुद्रों में तेल गिरा दिया जाता है। वाहन धुआँ छोड़ते हैं और वायुमंडल को प्रदूषित करते हैं। प्रदूषण से अनेक बीमारियाँ पनपती हैं।

प्रदूषण कई प्रकार का होता है —(1) जल प्रदूषण, (2) वायु प्रदूषण, (3) भूमि प्रदूषण, (4) ध्वनि प्रदूषण।

जल मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता है। स्वच्छ एवं निरापद पीने का पानी न मिलने के कारण अधिकांश लोग गंभीर रोगों के शिकार हो रहे हैं। जल प्रदूषण के लिए अधिकतर कारखाने जिम्मेदार हैं। जल में अनेक विषाक्त तत्त्व मिलकर उसे अनुपयोगी बनाते हैं।

वायु में भी प्रदूषण होता है। बसों द्वारा छोड़ा गया धुआँ तथा कारखानों की चिमनियों से निकला धुआँ ऑक्सीजन छोड़ते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं, अतः यह चक्र ठीक बना रहता है। वनों के संरक्षण एवं संवर्धन द्वारा वायु प्रदूषण को रोका जा सकता है।

ध्वनि प्रदूषण भी शहरों में बढ़ता जा रहा है। बसों के हॉर्न तथा मशीनों के चलने से यह प्रदूषण फैलता है। इससे बहरेपन का खतरा बढ़ता है। इससे उच्च रक्तचाप, तेज सिरदर्द, अनिद्रा आदि रोग भी हो सकते हैं। इस पर भी काबू पाया जाना जरूरी है।

भूमि को स्वच्छ रखना चाहिए। हरियाली बनाए रखने का हरसंभव प्रयास किया जाना चाहिए। धूल-मिट्टी उड़ने से भी प्रदूषण बढ़ता है। इस पर भी काबू पाना चाहिए।

आबादी नियंत्रण करने से प्रदूषण का खतरा कम होता है। प्रदूषण के प्रति जन-चेतना जाग्रत करनी आवश्यक है। प्रदूषण को रोकने के लिए हमें अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाने चाहिए। एक नागरिक के नाते हमारी भूमिका भी बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकती है। प्रदूषण रहित ईंधन का प्रयोग अपने वाहनों में करना चाहिए। ध्वनि प्रदूषण को भी हम कम कर सकते हैं।

27. टी-20 रोमांचक मैच का वर्णन (*CBSE 2009 Delhi*)

वर्तमान क्रिकेट में 20-20 मैचों का चलन बहुत लोकप्रिय हो गया है। इन मैचों में प्रत्येक टीम को 20-20 ओवर खेलने को मिलते हैं। सन् 2007 में भारत में प्रथम 20-20 ओवरों के मैच का विश्व कप आयोजित हुआ था। इसमें टैस्ट क्रिकेट खेलने वाले सभी देशों ने भाग लिया था। भारत की टीम ने इस प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए फाइनल में पाकिस्तान को हराया था। तभी से 20-20 क्रिकेट भारत में बहुत लोकप्रिय हो गया। इसके पश्चात् भारत की क्रिकेट संस्था बी. सी. सी. आई ने आई. पी. एल. का गठन किया, जिसका पूरा नाम इंडियन प्रीमियर लीग है। इस लीग का गठन प्रत्येक वर्ष 20-20 क्रिकेट कप आयोजित करने के लिए किया गया। इसके चेयरमैन ललित मोदी हैं।

प्रथम इंडियन प्रीमियर लीग 2008 में आयोजित की गई। इसके लिए भारतवर्ष में 8 टीमों का गठन किया गया। इन टीमों में भारतीय टीम के अलावा विश्वभर के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को शामिल किया गया। इसमें दुनिया भर के खिलाड़ियों की बोली लगाई गई। सबसे महंगी बोली महेंद्र सिंह धोनी की लगी। उन्हें चेन्नई सुपर किंग ने 6 करोड़ में खरीदा। इस टूर्नामेंट में सौरव गांगुली, सचित तेंदुलकर, महेन्द्र सिंह धोनी, राहुल द्रविड़, वीरेंद्र सहवाग, रिकी पोंटिंग, एंड्रयू साइमंडस, सनत जयसूर्या, गिलक्रिस्ट तथा मैथ्यू हैडन जैसे विख्यात खिलाड़ियों ने भाग लिया।

इस प्रतियोगिता में सभी टीमें आपस में कई बार भिड़ने के बाद दो टीमें फाइनल में पहुँचीं। शाहरूख खान द्वारा प्रायोजित नाइटराइडर्स (कोलकाता) ने प्रारंभ में शानदार प्रदर्शन किया, परंतु यह टीम फाइनल में नहीं पहुँच पाई। फाइनल में पहुँची सबसे कमजोर समझी जाने वाली शेन वार्न की 'राजस्थान रायल्स' और महेंद्र सिंह धोनी की 'चेन्नई सुपर किंग'। फाइनल मुकाबला मुंबई में खेला गया।

फाइनल मैच से पहले दोनों कप्तानों ने टॉस किया। टॉस धोनी की चेन्नई सुपर किंग्स ने जीता और पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। दर्शकों का भारी हजूम था। प्रारंभिक जोड़ी ने अच्छी शुरुआत दी। अंत में चेन्नई सुपर किंग्स ने 20 ओवरों में 180 रन बनाए। लगभग 10 मिनट बाद खेल पुनः प्रारंभ हुआ। दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट के साथ मैच आगे बढ़ रहा था। राजस्थान रायल्स का स्कोर तेजी से आगे बढ़ने लगा। अंत में मैच रोमांचक स्थिति में पहुँच गया। अब राजस्थान रायल्स को अंतिम गेंद पर एक रन बनाना था। न्यूजीलैंड के विपिन पटेल बैटिंग कर रहे थे और बालाजी (चेन्नई सुपर किंग्स) बालिंग कर रहे थे। बॉलर ने बाल डाली और पटेल ने चौका जड़ दिया। इस प्रकार प्रतियोगिता के प्रारंभ में कमजोर दिखने वाली शेन वार्न की राजस्थान रायल्स ने प्रथम आई. पी. एल. जीत लिया। वर्ष 2009 का आई. पी. एल. दक्षिण अफ्रीका में सम्पन्न हुआ जिसे डेक्कन चार्जर्स ने जीता। आशा है कि यह मुकाबला भी रोमांचक रहेगा।

28. परिवहन की समस्या (*CBSE 2009 Delhi*)

परिवहन की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। जनसंख्या में अंधाधुंध बढ़ोत्तरी होने से यह समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। कार्यालय अथवा स्कूल जाने के लिए लोगों को भारी कष्टों का सामना करना पड़ रहा है। सरकार के परिवहन संबंधी प्रबंध आधे-अधूरे हैं। यही कारण है कि सीमित आय वाला व्यक्ति भी अपना वाहन खरीदने को मजबूर है। पर पेट्रोल की बढ़ती कीमतों ने अपने वाहन को चलाना अत्यंत कठिन बना दिया है।

मैं स्वयं एक सीमित आय वाला व्यक्ति हूँ। मुझे दिन-प्रतिदिन ऑफिस जाने में भारी असुविधा हो रही थी। मैंने जोड़-तोड़ करके एक स्कूटर खरीद लिया। यह स्कूटर किश्तों पर लिया गया था। यह वाहन तो खरीद लिया अब समस्या आई इसके

संचालन की। स्कूटर तो पेट्रोल से चलता है। अब पेट्रोल की कीमतें दिन-प्रतिदिन आसमान को छू रही हैं। अब तो पेट्रोल खरीदना जी का जंजाल होता जा रहा है। प्रतिदिन पेट्रोल पर पचास रुपए खर्च हो जाते हैं। एक सीमित आय के व्यक्ति के लिए पेट्रोल पर प्रतिदिन पचाए रुपए खर्च करना बहुत कठिन है।

यद्यपि विश्व के तेल बाजार में पेट्रोल की कीमतें आधी से भी कम रह गई हैं, पर हमारी सरकार है कि तेल कंपनियों का पक्ष ले रही है। अभी उन्हीं का घाटा पूरा नहीं हो पा रहा है। केवल पाँच रुपए कम करके वाह-वाही लूटने का ड्रामा किया जा रहा है। अभी भी पेट्रोल पर काफी पैसा खर्च हो जाता है। पेट्रोल के खर्च ने तो स्कूटर लेने का आनंद ही फीका कर दिया है। अब तो मैं सोचता हूँ कि काश ! मैं यह स्कूटर खरीदता ही नहीं। परिवहन की समस्या ने नाक में दम कर दिया है।

परिवहन की समस्या का अब कुछ-कुछ हल होता नजर आ रहा है। दिल्ली मेट्रो के परिचालन ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। अब शायद मुझ जैसे व्यक्ति को स्कूटर चलाने की आवश्यकता ही न रह जाए, पर अभी तक मेट्रो हर जगह नहीं पहुँच पाई है। अभी इसके नए रूट बनाने आवश्यक हैं। तभी सभी लोगों को राहत मिल सकेगी।

29. विज्ञान के बढ़ते चरण [C.B.S.E. 2000 Comptt. Delhi]

अथवा

विज्ञान : वरदान या अभिशाप

'विज्ञान' शब्द का अर्थ है—विशेष ज्ञान। मानव आदि काल से ही नए-नए आविष्कार करता आया है। आज हम जिस युग में रह रहे हैं वह विज्ञान का युग है। विज्ञान के आविष्कारों से जहाँ एक ओर मनुष्य का जीवन सुखमय बना है, वहीं दूसरी ओर उसके विनाश के नए-नए उपाय भी निकल आए हैं।

वरदान : यह तो सर्वमान्य है कि विज्ञान ने मानव को बहुत अधिक सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं। मानव जीवन से संबद्ध समस्त घटनाओं में यही तथ्य परिलक्षित होता है। विज्ञान ने विद्युत का आविष्कार करके मानव जीवन में क्रांति ही ला दी है। विद्युत ने मानव को प्रकाश और शक्ति प्रदान की, जिससे वह अनेक यंत्रों को चलाने में सफल रहा है। वह घर बैठे ही शिमला की ठंडी हवा खा सकता है तथा सर्दियों में कमरे को गर्म रख सकता है।

मनोरंजन के क्षेत्र में विज्ञान ने अनेक साधन प्रस्तुत किए हैं। रेडियो, टेपरिकार्डर, टेलीविजन, वी.सी.आर. सभी विज्ञान की देन हैं। संगीत के नित्य नए उपकरण बाजार में आ रहे हैं। दूरदर्शन समाचार जानने और मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय माध्यम है।

विज्ञान ने **चिकित्सा जगत्** में भी काफी प्रगति की है। आज मानव द्वारा हृदय एवं मस्तिष्क का आपरेशन करना संभव हो गया है। नित्य नई-नई औषधियाँ बन रही हैं। यह सब वैज्ञानिक परीक्षणों का ही परिणाम है। चिकित्सा विज्ञान ने अंधों को आँखें दी हैं और बहरों को कान। उसने जीवन को सुंदर और दीर्घ बना दिया है। **यातायात के क्षेत्र** में विज्ञान की उपलब्धियाँ आश्चर्यजनक हैं। पहिए के आविष्कार ने आज उन्नति की बहुत ऊँची मंजिल तय कर ली है। अब हम 'जैट-युग' में जी रहे हैं। ध्वनि से भी तीव्र गति से चलने वाले वायुयान मानव के पास उपलब्ध हैं।

विज्ञान ने कंप्यूटर का आविष्कार करके मानव के सभी कार्यों को सरल एवं गतिमान बना दिया है। अब तो लगभग प्रत्येक कार्यालय में कंप्यूटर अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। इसकी मदद से रिकार्ड को व्यवस्थित करने का कार्य अत्यंत सुगमता से संपन्न हो जाता है। हिसाब-किताब रखने, आँकड़ों के संग्रह एवं विश्लेषण करने, परीक्षा परिणाम तैयार करने, पुस्तक प्रकाशन करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। विज्ञान ने इंटरनेट के द्वारा विभिन्न कंप्यूटरों को जोड़ने का अद्भुत कार्य कर दिखाया है। फैक्स के माध्यम से पत्र या फाइल को तुरंत भेजा जा सकता है। इस प्रकार विज्ञान नित्य नए चमत्कार उत्पन्न कर रहा है।

अभिशाप : परंतु आज मानव के सामने एक बड़ा प्रश्न उपस्थित हो गया है कि विज्ञान के नित्य नए आविष्कारों के कारण यह बदली हुई स्थिति उसके लिए वरदान होगी या अभिशाप ? यह प्रश्न इसलिए खड़ा हुआ है, क्योंकि एक ओर जहाँ मानव विज्ञान का उपयोग अपने हित में कर रहा है वहीं दूसरी ओर भयंकर अस्त्र-शस्त्रों के भँवर जाल में फँसता चला जा रहा है। आज एक देश दूसरे देश को वैज्ञानिक शक्ति के आधार पर दबा रहा है। आज जिस देश के पास जितनी अधिक वैज्ञानिक शक्ति है, वह देश अपने को गौरवान्वित मान रहा है।

कुछ लोग विज्ञान को इसलिए अभिशाप मानते हैं क्योंकि इसने बड़े-बड़े संहारक अस्त्रों को जन्म दिया है। इस प्रकार के घातक हथियारों का निर्माण किया है कि सारे संसार को कुछ ही मिनटों में नष्ट किया जा सकता है।

हमें विज्ञान को अभिशाप से बचाना होगा। इसकी शक्ति को जन-कल्याणकारी कार्यों में लगाना होगा। हमें हथियारों की अंधी दौड़ को समाप्त करना होगा, तभी विज्ञान वरदान बन सकता है। विज्ञान की शक्ति पर नैतिकता का अंकुश होना आवश्यक है।

30. पड़ोसी (*CBSE 2009 Delhi*)

जीवन में पड़ोसी का बहुत महत्त्व होता है। पड़ोसी हमारे सुख-दुख का साथी होता है। जब कभी हम पर कोई मुसीबत आती है तब पड़ोसी ही हमारी मदद करता है। रिश्तेदार तो बहुत बाद में पहुँच पाते हैं, पड़ोसी सबसे पहले पहुँचता है। तात्कालिक सहायता हमे पड़ोसी से ही मिलती है। समय पड़ने पर वह उचित सलाह देकर हमारा मार्ग प्रशस्त करता है।

हमें अपने पड़ोसी के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखने चाहिए। इन संबंधों के बीच स्वार्थ को नहीं आने देना चाहिए। कई बार छोटी-छोटी बातों पर हम पड़ोसी के साथ व्यर्थ उलझ पड़ते हैं। इससे मन में गलतफहमियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। पड़ोसी के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाकर रहना दोनों पक्षों के हित में होता है।

इस संसार में मुसीबत का सामना भला किसे नहीं करना पड़ता। कभी न कभी सभी मुसीबत में पड़ते हैं। इस घड़ी में पड़ोसी ही काम आता है। पड़ोसी की सामयिक मदद हमारे अंदर साहस का संचार करती है। पड़ोसी के महत्त्व को हम नकार नहीं सकते।

पड़ोस के धर्म का निर्वाह करते समय अत्यंत सावधानी की आवश्यकता होती है। कई बार बच्चों को लेकर पड़ोसी आपस में उलझ पड़ते हैं। हमें ऐसी अप्रिय स्थिति से बचना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि व्यक्ति की पहचान उसके पड़ोस से ही होती है। जब कोई आपके बारे में कुछ भी जानकारी हासिल करना चाहता है तब वह पड़ोस का ही सहारा लेता है। यदि पड़ोसी के साथ आपके संबंध अच्छे हैं तो आपकी रिपोर्ट भी अच्छी ही जाएगी अन्यथा पड़ोसी आपका बना बनाया खेल बिगाड़ सकता है। अत: पड़ोसी के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखना आवश्यक तो है ही, उपयोगी भी है।

पड़ोसी के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखना हमारे ही हित में है। उससे संबंध बिगाड़कर हमारा अपना जीवन तनावपूर्ण हो जाता है। यदि पड़ोसी से संबंध अच्छे होंगे तो वह हमारी मदद कर पाएगा अन्यथा वह हमारे लिए मुसीबतें बढ़ाता रहेगा। जीवन में पड़ोसी का बहुत महत्त्व है।

31. अन्य प्रदेश के अनजाने नगर में (*CBSE 2009 Delhi*)

वैसे तो सारा देश अपना ही है, पर कई बार हमें किसी अन्य प्रदेश के अनजाने नगर में जाकर रहने का अवसर मिलता है। ऐसा कई बार विवशतावश भी होता है। तब हमें अनजाने प्रदेश के अनजाने नगर में बड़े विचित्र अनुभव होते हैं।

मेरे पिताजी का स्थानांतरण चेन्नई में हो गया। हम पहले कभी दक्षिण भारत के किसी नगर में जाकर नहीं रहे थे। अब हमें कम से कम दो वर्ष वहाँ गुजारने थे। वैसे चेन्नई तमिलनाडु की राजधानी है और एक सुंदर शहर है। यह दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध शहर है। हमें वहाँ पर रहने के लिए सरकारी आवास उपलब्ध करा दिया गया था।

यह नगर समुद्र-तट पर बसा है। यहाँ की जलवायु सालभर लगभग एक समान रहती है। हाँ, गर्मियों में तापमान अवश्य अधिक रहता है। सर्दियों में बहुत हल्की ठंड पड़ती है। यहाँ ज्यादा गर्म कपड़े पहनने की आवश्यकता नहीं होती। मुझे ऐसा मौसम अच्छा लगता है क्योंकि मैं ज्यादा सर्दी बर्दाश्त नहीं कर पाता। यहाँ के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। यहाँ हिंदू संस्कृति के मंदिरों की भरमार है। यहाँ के लोग कमीज या कुरता कम ही पहनते हैं। प्राय: लोग लुंगी पहनते हैं। मंदिरों के पुजारी भी इसी वेश में दिखाई देते हैं। यह वेशभूषा हमारी उत्तर भारतीय वेशभूषा से सर्वथा भिन्न है।

अब प्रश्न उठता है—भाषा का। हमारे यहाँ तो हिंदी का प्रयोग होता है जबकि यहाँ की प्रमुख भाषा तमिल है। यहाँ आकर मुझे पता चला कि तमिल साहित्य बहुत समृद्ध है। यहाँ कम्ब की रामायण बहुत लोकप्रिय है। यहाँ के लोग अंग्रेजी का भी खूब प्रयोग करते हैं। त्रिभाषा फार्मूले के अंतर्गत यहाँ हिंदी भी पढ़ाई जा रही है।

अब हमें यहाँ के खान-पान में भिन्नता का सामना करना पड़ा। यहाँ के लोग चावल-मछली खूब खाते हैं। इसके अतिरिक्त साँभर-डोसा, इडली, वड़ा खूब खाते हैं। मुझे यहाँ का दक्षिण भारतीय भोजन खूब भाता है। हाँ, मुझसे मछली की दुर्गंध सहन नहीं होती। पर, यहाँ के समुद्र में मछलियों का अपार भंडार है, अत: वह यहाँ का मुख्य भोजन है। रीति-रिवाजों में थोड़ी सी भिन्नता अवश्य है, पर बहुत अधिक अंतर नहीं है।

32. खेलों का महत्त्व (*C.B.S.E. 1999 Outside, 1997 Delhi*)

उछलते-कूदते हुए हँसमुख बालकों को जिसने देखा है, उसे पता है कि खेल क्या है। कबड्डी, मल्लयुद्ध, गेंद-बल्ला, हॉकी, फुटबॉल, तैराकी, टैनिस आदि अनेक प्रकार के खेल हैं। खेलों में मनोरंजन तथा व्यायाम साथ-साथ होते हैं। जिसका मन कहीं पर भी एकाग्र न होता हो, उसका मन खेलों में पूरी तरह लग जाता है। खिलाड़ी अपने आपको भूल जाता है। मानो खेल योग-साधना का विशेष अंग हो।

खेलने वाला व्यक्ति कुछ देर के लिए संसार के सारे झंझटों से मुक्त हो जाता है, वह निश्चिंत हो जाता है, इसलिए उसके स्वास्थ्य में बड़ी उन्नति होती है। उसका मन सदा प्रसन्न रहने लगता है। उसका स्वभाव मधुर बन जाता है। उसमें फुर्ती आ

जाती है। इसीलिए सरकारी नौकरियों में खिलाड़ियों को प्राथमिकता दी जाती है। कई अच्छे खिलाड़ी तो केवल खिलाड़ीपन के नाते ही नौकरियाँ पा जाते हैं।

खेलना बच्चों को सबसे प्रिय लगता है। कितनी ही भूख लगी हो, कितना ही आवश्यक कार्य हो, बालक खेल को कभी नहीं छोड़ेगा। खेल में लीन बालक को माता-पिता पुकारते थक जाते हैं, पर बालक घर आने का नाम नहीं लेता।

कई विद्यार्थी खेल को पढ़ाई में बाधक समझते हैं, परंतु यह उनकी भूल है। खेल से बिल्कुल विमुख रहने वाले एवं किताबी-कीड़ा विद्यार्थी अपने स्वास्थ्य से हाथ धो बैठते हैं, किंतु हर समय खेलों में व्यस्त रहना भी अच्छा नहीं। परंतु शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न करने के लिए तथा मस्तिष्क को ताजा रखने के लिए नियमपूर्वक खेलना बहुत आवश्यक है।

जो लोग खेल की महत्ता को समझते हैं और नियमपूर्वक खेलते हैं वे पुरुषार्थी होते हैं। वे दिन-भर काम करते हुए थकते नहीं। उनकी आयु भी अधिक होती है, क्योंकि वे प्रतिदिन खेल-कूदकर ताजा हो जाते हैं। यूरोप के लोग खेलना आवश्यक समझकर प्रतिदिन खेलते हैं। यही कारण है कि शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से वे अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ और उन्नत हैं। कभी भारतवासी भी बड़े माने खिलाड़ी हुआ करते थे, पर एक समय ऐसा आया, जब वे खेलना केवल बच्चों की जरूरत समझकर स्वयं दिन-रात व्यापार-धंधों आदि में फँस गए, इसलिए खेल के क्षेत्र में उनकी अवनति होती गई। पर अब वे इस दिशा में फिर से सचेत हुए हैं और खेलों में पूरा योग देने लगे हैं। हॉकी, क्रिकेट, कबड्डी, कुश्ती और एथलेटिक्स–इनमें भारत के खिलाड़ी संसार के अच्छे खिलाड़ी माने जाते हैं और अन्य खेलों में भी प्रगति कर रहे हैं।

खेलों का बड़ा अधिक लाभ यह है कि उनसे लोगों में बाँकापन, उदारता और सहनशीलता आदि गुण बढ़ते हैं। ये गुण सामाजिक और राजनैतिक उन्नति के लिए बहुत आवश्यक हैं। चुस्त, उदार और सहनशील नेताओं से ही देश चलता है। खेलों में मनुष्य का ओछापन और संकुचित वृत्ति नष्ट हो जाती है।

अच्छा स्वास्थ्य जीवन के लिए महान् वरदान है। महाकवि कालिदास ने कहा है–

“शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।”

यदि स्वास्थ्य अच्छा होगा, तभी हम सांसारिक कार्यों को संपन्न करने में समर्थ हो सकेंगे। अंग्रेजी की एक कहावत है– “A sound mind in a sound body” अर्थात् स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।

(C.B.S.E. 1996 Outside)

33. समय का सदुपयोग

प्रसिद्ध कवि एवं नाटककार का कथन है –**“समय को मैंने नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।”**

मनुष्य का जीवन अमूल्य है, जो संसार में विशिष्ट स्थान रखता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। प्रकृति के समस्त कार्य नियत समय पर होते हैं। समय की गति बड़ी तीव्र होती है। जो उससे पिछड़ जाता है वह सदैव पछताता रहता है। तुलसीदास ने ठीक ही कहा है–

“समय चूकि पुनि का पछताने। का वर्षा जब कृषि सुखाने ।”

अतः आवश्यकता है समय के सदुपयोग की। समय वह धन है जिसका सदुपयोग न करने से वह व्यर्थ चला जाता है। हमें समय का महत्त्व तब ज्ञात होता है जब दो मिनट विलंब के कारण गाड़ी छूट जाती है। जीवन में वही व्यक्ति सफल हो पाते हैं जो समय का पालन करते हैं।

हमारे देश में समय का दुरुपयोग बहुत होता है। बेकार की बातों में व्यर्थ समय गँवाया जाता है। मनोरंजन के नाम पर भी बहुत समय गँवाया जाता है। बहुत से व्यक्ति समय गँवाने में ही आनंद का अनुभव करते हैं। यह प्रवृत्ति हानिकारक है। समय को खोकर कोई व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता। जूलियस सीजर सभा में पाँच मिनट देर से पहुँचा और अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। अपनी सेना के कुछ मिनट देर से पहुँचने के कारण नेपोलियन को नेल्सन से पराजित होना पड़ा। समय किसी की बाट नहीं देखता। काम में देरी समय के प्रति लापरवाही प्रदर्शित करती है।

हम समय का सदुपयोग कैसे करें ? प्रथम तो हमें अपने कार्य निश्चित समय में ही पूरे करने चाहिए। निश्चित कार्य को समय पर करने के उपरांत भी समय बच जाता है। इसके अतिरिक्त समय में हम समाज-कल्याण का कार्य कर सकते हैं। निर्धनों और बेसहारों की मदद कर सकते हैं। ज्ञान-वृद्धि एवं मनोरंजन हेतु अतिरिक्त समय में पुस्तकें पढ़ सकते हैं। यदि हमारी रुचि सृजनात्मक कार्यों में है तो हम वह कार्य करके भी समय का सदुपयोग कर सकते हैं। घर के आँगन में बागवानी करके भी समय का सदुपयोग किया जा सकता है। आज का काम कभी कल पर मत छोड़ो। कबीर जी ने ठीक ही कहा है–

“काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करैगो कब ॥”

समय थोड़ा है, किंतु कार्य अधिक है। अतः समय का पाबंद होना अति आवश्यक है। **'गया वक्त आता नहीं'** की उक्ति को ध्यान में रखना चाहिए। स्वयं को समय की गति के अनुसार ढालना चाहिए। समय के सदुपयोग से रंक राजा और मूर्ख भी विद्वान बन जाता है। छात्र वर्ग के लिए समय और भी मूल्यवान है। वही छात्र अच्छे अंक प्राप्त करता है जो समय का सही उपयोग करता है। कभी समय बर्बाद मत करो, इसी में बुद्धिमानी है।

जो व्यक्ति समय की परवाह करते हैं, वे जीवन में कभी असफल नहीं होते। सफलता तो उनके चरण चूमती है। हमें सदैव यह प्रयास करना चाहिए कि समय व्यर्थ न चला जाए। समय का भरपूर उपयोग करना ही सफलता प्राप्ति का मूलमंत्र है।

34. श्रम का महत्त्व

श्रम संसार में सफलता प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। श्रम करके हम अपने जीवन में ऊँची-से-ऊँची आकांक्षा को पूरी कर सकते हैं। संसार कर्म क्षेत्र है। अतः यहाँ कर्म करना ही हम सबका धर्म है। किसी कार्य में सफलता तभी मिलती है जब हम परिश्रम करते हैं।

श्रम ही जीवन को गति प्रदान करता है। यदि हम श्रम की उपेक्षा करते हैं तो हमारे जीवन की गति में रुकावट आ जाती है। चींटी को श्रमजीवी कहा जाता है। वह श्रम करके एक-एक दाना चुनकर संग्रह करती है, ताकि वर्षा के समय उसका उपयोग कर सके। यदि श्रम नहीं करते तो हम अकर्मण्य हो जाते हैं। परिश्रमी व्यक्ति सभी प्रकार की कठिनाइयों से जूझने में समर्थ रहता है।

परिश्रमी व्यक्ति ही जीवन में लक्ष्मी का कृपापात्र बनता है। ऐसा व्यक्ति भाग्य का सहारा न लेकर पुरुषार्थ करता है। कवि हरिऔध जी ने परिश्रमी व्यक्ति को 'कर्मवीर' बताते हुए कहा है–

"देखकर बाधा विविध बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं ॥"

भाग्य का सहारा केवल आलसी व्यक्ति लेते हैं। संस्कृत में कहा गया है– "आलस्यं ही मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।"

यत्न करने पर भी यदि परिश्रमी व्यक्ति को सफलता नहीं मिलती, फिर भी वह निराश नहीं होता। वह सफलता के कारणों को जानने का प्रयत्न करता है। वह यह बात भी भली प्रकार जानता है कि बिना परिश्रम के केवल इच्छामात्र से सफलता नहीं मिलती। कहा भी गया है–

"उद्यमेन ही सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।"

संसार में प्रत्येक पथ पर संघर्ष करके ही अपना मार्ग बनाया जा सकता है। यदि हम श्रम करते हैं तो हमें जीवन-संघर्ष में सफलता मिलती है। कवि जगदीश गुप्त ने कहा भी है–

"सच हम नहीं, सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष ही ।"

श्रम के बलबूते पर सामान्य व्यक्तियों ने भी बड़े-बड़े साम्राज्य खड़े करके दिखा दिए। बाबर, शेरशाह, नेपोलियन आदि व्यक्ति आरंभ में सामान्य व्यक्ति ही थे, पर अपने श्रम के बलबूते पर उन्होंने इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया। अनेक कठिनाइयों का सामना करके कोलंबस ने अमरीका को खोज निकाला।

श्रम साधना करने वालों को यश प्राप्त होता है और वैभव भी। श्रम करके एक निर्धन परिवार का बालक भी उच्च पद पर आसीन हो जाता है और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति बदल देता है। श्रम करके हमें अलौकिक आनंद की प्राप्ति होती है तथा परम संतोष का अनुभव होता है। श्रम करने से शरीर भी स्वस्थ रहता है। शारीरिक श्रम करने वाले प्रायः दीर्घजीवी होते हैं। श्रम करने वाला विकट परिस्थितियों में भी घबराता नहीं है।

35. भारत की वैज्ञानिक प्रगति

भारत विज्ञान के क्षेत्र में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है। यहाँ पंद्रह लाख से अधिक प्रशिक्षित वैज्ञानिक विज्ञान-सेवा में रत हैं। न केवल चिकित्सा, कृषि, प्रतिरक्षा, उद्योग, ईलेक्ट्रोनिक्स, ईंधन, ऊर्जा, धातु, तेज आवागमन के क्षेत्र में अनुसंधान हो रहे हैं, अपितु अंतरिक्ष विज्ञान में भी भारत प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

सन् 1958 में संसद में वैज्ञानिक नीति संबंधी प्रस्ताव पारित हुआ था, जिसमें कहा गया था कि राष्ट्र के विकास के लिए

वैज्ञानिक-ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। इसी आधार पर करोड़ों रुपए का बजट वैज्ञानिक कार्यों के लिए रखा जाता है। भारत में पाँच प्रमुख वैज्ञानिक संगठन हैं :

1. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, 2. परमाणु शक्ति विभाग, 3.भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, 4. प्रतिरक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, 5. भारतीय भेषज अनुसंधान परिषद।

चिकित्सा के क्षेत्र में भारत की वैज्ञानिक प्रगति विशेष उल्लेखनीय है। हृदयारोपण, गुर्दा-प्रत्यारोपण, टेस्ट-ट्यूब बेबी तथा अन्य आपरेशन अत्यन्त सफलतापूर्वक संपन्न किए जा रहे हैं। विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है। रोग निदान की भी नित्य नई विधियाँ विकसित हो रही हैं। औषधि बनाने के क्षेत्र में भी बहुत प्रगति हुई है।

कृषि तथा पशुपालन के क्षेत्र में भी विज्ञान की प्रगति संतोषजनक है। कृषि को उन्नत बनाने के लिए तरह-तरह की रासायनिक खादें विकसित हो रही हैं। बीजों की किस्म में भी सुधार हुआ है। खेती के लिए नित्य नए उपकरण बन रहे हैं। यह सब विज्ञान की प्रगति के ही सूचक हैं। विज्ञान की सहायता से सघन खेती की जा रही है। फलों की भरमार हो रही है।

भारत ने विज्ञान की सहायता से आवागमन के साधनों में भी अभूतपूर्व प्रगति की है। नित्य नए ढंग के वाहन विकसित हो रहे हैं। तीव्रगामी रेलगाड़ियाँ चलाना, विज्ञान ने ही संभव किया है। विद्युत-इंजनों ने रेलगाड़ियों को नई दिशा प्रदान की है।

विज्ञान ने भारतीय सेना को अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित किया है। नए ढंग के वायुयान, रडार, तोपें, टैंक आदि विज्ञान की प्रगति को दर्शाते हैं।

भारतीय वैज्ञानिकों ने औद्योगिक क्षेत्र में भी क्रांति का बिगुल बजा दिया है। ये उत्पाद अब विश्व के बाजार में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल हो गए हैं। उनकी गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार आया है। इलैक्ट्रोनिक्स में भी हमारी प्रगति उल्लेखनीय है। हमारे यहाँ निर्मित टेलीविजन, फ्रिज आदि किसी भी दृष्टि से कम नहीं हैं।

भारतीय वैज्ञानिकों ने ईंधन और ऊर्जा के क्षेत्रों में भी बहुत उन्नति की है। तेल-पेट्रोल, डीजल, कुकिंग गैस आदि का भंडारण निरन्तर बढ़ता चला जा रहा है। कुकिंग गैस अब गाँवों तक जा पहुँची है।

भारत ने दूरसंचार के नवीनतम साधन विकसित कर लिए हैं। अब इनका फैलाव बढ़ता चला जा रहा है। अधिक से अधिक नगर-गाँवों तक इस सुविधा को पहुँचाया जा रहा है।

अब भारत अंतरिक्ष युग में प्रवेश कर चुका है। उसने अनेक उपग्रह (रोहिणी, इन्सैट आदि) अंतरिक्ष में स्थापित कर दिखाए हैं। इस दिशा में निरंतर प्रगति हो रही है। कृत्रिम उपग्रहों की सहायता से अनेक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

इस प्रकार भारत की वैज्ञानिक प्रगति संतोषजनक ढंग से हो रही है।

36. सर्वशिक्षा अभियान

(CBSE 2009 (Comptt.) Outside)

अथवा

साक्षरता अभियार

शिक्षा के बिना कोई भी बनता नहीं सत्पात्र है'।
इसे पाने के लिए कुछ भी प्रयास करना मात्र है ॥
सबसे पहला कर्तव्य है, शिक्षा बढ़ाना देश में।
शिक्षा के बिना ही हैं हम सभी क्लेश में।

मनुष्य सुख-शांति के लिए जन्म से ही प्रयास करता रहता है। शिक्षा के द्वारा उसे मानसिक शक्ति प्राप्त होती रही है। समाज का शिष्ट एवं सभ्य नागरिक बनाने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्ति की सच्ची स्वतंत्रता निरक्षरता में नहीं, साक्षरता में है इसलिए हमारे देश के नेताओं ने देश की स्वतंत्रता से भी काफी पहले राष्ट्रीय विकास के माध्यम के रूप में शिक्षा के महत्त्व को अनुभव कर लिया था। वे यह जान चुके थे कि नैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए शिक्षा आवश्यक है। तभी गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा की बात उठाई थी।

साक्षरता प्रतीक है—स्वतंत्रता एवं विकास की। शिक्षा ही गुलामी की जंजीरों तथा शोषण से हमारी रक्षा करती है। जब कोई व्यक्ति सूदखोर जमींदार को पढ़ने व समझने लगता है, जब एक खाली व कोरे कागज पर अँगूठा लगाने से इंकार कर देता है—तब होता है एक विस्फोट; जिसकी गूँज व लौ दूर-दूर तक महसूस की जा सकती है। फिर जन्म होता है— एक नए मानव का, एक साक्षर मानव का, एक स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर मानव का। इसके साथ ही समाज लेता है—एक नई अँगड़ाई, एक नई

प्रजातंत्र की सफलता पूर्णतया देश के नागरिकों पर निर्भर है और ऐसा तभी संभव है जब व्यक्ति उचित व अनुचित में भेद करना सीख जाए। ऐसा मात्र शिक्षा द्वारा ही संभव है। शिक्षा ही प्रजातंत्र को जीवंत बनाती है। अतः शिक्षा ही प्रजातंत्र में प्राण फूँकती है, इसको सार्थक बनाती है तथा सही अर्थों में शिक्षा ही प्रजातंत्र की आत्मा है।

शिक्षा के द्वारा ही शारीरिक, मानसिक व सांस्कृतिक विकास संभव है। इसी के द्वारा मन-मस्तिष्क की शक्तियों को एकजुट किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही समय और स्थान के अनुसार घटनाओं, विचारों एवं अपने दृष्टिकोण को व्यक्ति अधिक सहजता से प्रकट करने में समर्थ हो जाता है। शिक्षा जानकारी को संप्रेषित करने के साथ-साथ संकलित करने का भी माध्यम है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह मनुष्य, मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है जो निरक्षर है। वह पशु-तुल्य प्रवृत्तियों को अपनाता है। मनुष्य को पृथ्वी का स्वामी माना गया है परंतु यदि वह निरक्षर होगा तो वह स्वामी की उपाधि के लिए उपयुक्त भूमिका नहीं निभा पाएगा। शिक्षित व्यक्ति ही अपने साथ-साथ दूसरों को भी प्रगति प्रदान करता है।

भारत सरकार ने स्वतंत्रता पाने के पश्चात् बहुत-से विद्यालय खोले। प्रौढ़-शिक्षा, सह-शिक्षा एवं अनौपचारिक शिक्षा केंद्र भी खोले गए। आज शिक्षा का स्तर पहले से अधिक बढ़ गया है। लेकिन अभी भी स्थिति उतनी दृढ़ नहीं है, जितनी कि होनी चाहिए। यह स्थिति बालिकाओं के मामले में तो और भी बदतर है। आज का समाज नारी-शिक्षा में रुकावट है इसलिए बालिकाओं का विद्यालय छोड़ने का प्रतिशत अब भी अपेक्षतया अधिक है। अतः भारत में जब भी कोई नीति बने, उसमें इस प्रतिशत पर विशेष ध्यान देना होगा। सर्वशिक्षा अभियान इसमें निर्णायक भूमिका निभाएगा।

37. भारत के विकास के मार्ग में बाधाएँ अथवा भारत की समस्याएँ

भारत एक विकासशील देश है। वह नवनिर्माण की प्रक्रिया में तेजी से आगे बढ़ रहा है, परंतु उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। नवस्वतंत्र देशों के सम्मुख आने वाली समस्याओं से भी वह अभी उबरा नहीं है। भारत के सामने प्रमुख समस्याएँ हैं : आतंकवाद, बेकारी, अशिक्षा, निर्धनता, जनसंख्या वृद्धि, कुपोषण तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की समस्या आदि।

वर्तमान समय में भारत को आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ रहा है। आज सारा भारत इससे ग्रस्त है। विशेषकर जम्मू कश्मीर प्रान्त आतंकवाद का शिकार हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप अनेक निर्दोष व्यक्ति हत्या के शिकार हो जाते हैं। सरकार की पूरी शक्ति इसको निपटाने में लगी हुई है। इससे प्रगति की गति में बाधा पहुँच रही है। आज कोई भी व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित नहीं कह सकता। भारत के दो-दो प्रधानमंत्रियों तक को आतंकवाद का शिकार होना पड़ा।

हमारे देश में **बेकारी की समस्या** दिन-प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। बेरोजगारी ने शिक्षित युवकों में आत्महीनता का भाव उत्पन्न किया है। रोजगार के कार्यालयों में लंबी कतारें लगती जा रही हैं। अभी तक सरकार प्रत्येक परिवार के एक व्यक्ति को रोजगार उपलब्ध कराने में असफल हो रही है। बेरोजगारी के कारण समाज में अराजकता उत्पन्न होती है। इस ओर शीघ्र ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

वर्तमान समय तक सभी योग्य बच्चों को शिक्षा की अनिवार्य व्यवस्था प्रदान करने में सरकार असमर्थ रही है। यद्यपि सरकार ने अनेक बार यह दावा किया है कि वह 14 वर्ष तक आयु वाले बच्चों को अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था कर रही है, पर अभी तक यह स्वप्न पूरा नहीं हो पाया है। भारत सरकार ने नई शिक्षा पद्धति के प्रचार का बीड़ा बहुत जोर-शोर से उठाया है, पर यह भी कितनी सफल होगी, इसका पता तो समय आने पर ही चलेगा। अभी तक सभी राज्यों में 10+2+3 शिक्षा प्रणाली लागू नहीं की जा सकी है, जबकि इस योजना को प्रारंभ हुए 25-30 वर्ष हो चुके हैं। अशिक्षा सब बुराइयों की जड़ है। भारत को अभी वयस्क अशिक्षितों को भी कामचलाऊ शिक्षा देने की व्यवस्था करनी है।

निर्धनता की समस्या पुरानी है। भारत स्वतंत्रता के पश्चात् से ही इस समस्या से जूझ रहा है। लगभग सभी सरकारों ने गरीबी हटाओ कार्यक्रम के द्वारा सत्ता प्राप्त की है, पर अभी तक इस समस्या पर काबू नहीं पाया जा सका है। देश की अर्थव्यवस्था में जब तक आमूल-चूल परिवर्तन नहीं किया जाएगा तब तक गरीबी नहीं हट सकेगी। बीस-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम इसी दिशा में एक सार्थक कदम है। अभी तक भारत के सम्मुख यह सबसे बड़ी समस्या है।

भारत की **जनसंख्या** में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या 108 करोड़ को पार कर चुकी है। इस बढ़ती जनसंख्या ने भारत की प्रगति की सभी योजनाओं पर पानी फेर दिया है। यह निश्चित है कि जब तक आबादी पर नियंत्रण नहीं पाया जाएगा, तब तक समस्यायें हल नहीं होंगी।

भारत में जल-संकट भी विद्यमान है। अभी तक सभी लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं है। सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है। आशा है कि इस समस्या पर शीघ्र ही काबू पाया जा सकेगा। सिंचाई के साधनों का विकास हो रहा है ताकि खेतों की प्यास भी बुझाई जा सके।

38. विद्यार्थी और अनुशासन

आज का विद्यार्थी कल का नेता है। वह राष्ट्र का भावी निर्माता है। वह देश की आशा का केंद्र है। विद्यार्थी जीवन में वह जो कुछ सीखता है, वही बातें उसके भावी जीवन को नियंत्रित करती हैं। इस दृष्टि से उसे विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का पालन करना अनिवार्य हो जाता है।

'विद्यार्थी' शब्द विद्या+अर्थी के योग से बना है। इसका तात्पर्य है विद्या प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला। यों तो व्यक्ति सारे जीवन में कुछ-न-कुछ सीखता ही रहता है, किन्तु बाल्यकाल एवं युवावस्था का प्रारंभिक काल अर्थात् जीवन के प्रथम 25 वर्ष का समय विद्यार्थी काल है। इस काल में विद्यार्थी जीवन की समस्त चिन्ताओं से मुक्त होकर विद्याध्ययन के प्रति समर्पित होता है। इस काल में गुरु का महत्त्व अत्यधिक है। सदगुरु की कृपा से ही विद्यार्थी जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टि अपना सकता है अन्यथा मात्र पुस्तकीय ज्ञान उसे वास्तविक जीवन में कदम-कदम पर मुसीबतों का सामना कराता है। यही समय विद्या ग्रहण करने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। कवि ने कहा है :

यही तुम्हारा समय, ज्ञान संचय का।
संयम, शील, सुशील, सदाचारी बनने का।
यह होगा संभव, अनुशासित बनने से।
माता-पिता गुरु की, आज्ञा पालन करने से॥

'अनुशासन' से तात्पर्य है-नियमों में बँधकर कार्य करना। अनुशासन का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। बिना अनुशासन के कोई भी संस्था भली प्रकार नहीं चल सकती। सभी मनमानी करने लगते हैं। कोई भी कार्य समय पर नहीं हो पाता। अनुशासन से जीवन में शालीनता एवं नियमितता आ जाती है। हमारे देश में अनुशासन का अभाव दृष्टिगोचर होता है और यही कारण है कि हम अपेक्षित गति से प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। अनुशासनबद्ध राष्ट्र ही प्रगति की राह पर तीव्र गति से बढ़ते हैं। चाहे परिवार हो या देश, अनुशासन की हर स्थान पर आवश्यकता होती है। यह हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाता है।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का विशेष महत्त्व है। दोनों का आपस में गहरा संबंध है। बिना अनुशासन के विद्यार्थी विद्या ग्रहण ही नहीं कर सकता। अनुशासनहीनता दुराचार की पहली सीढ़ी है। यदि छात्र कक्षा में अनुशासनहीनता का प्रदर्शन करने लगेंगे तो अध्यापक के लिए पढ़ाना कठिन हो जाएगा। विद्यालय में शांत वातावरण बनाए रखना, गुरुजनों की बात को ध्यान से सुनना, विद्यालय के नियमों का पालन करना विद्यार्थी के लिए आवश्यक है।

वर्तमान समय में सर्वत्र अनुशासनहीनता दृष्टिगोचर होती है। शिक्षण संस्थाएँ अपनी पवित्रता खोती जा रही हैं। देश की अन्य समस्याओं के साथ-साथ छात्र वर्ग की अनुशासनहीनता भी एक विकट समस्या बनती जा रही है। दिन-प्रतिदिन की हड़तालें, स्कूल-कॉलेज के फर्नीचर को नष्ट करना, बसों को जलाना, शिक्षकों के प्रति असम्मान प्रदर्शित करना, अनुशासनहीनता नहीं तो और क्या है ? विद्यार्थियों को यह समझना चाहिए कि इन कार्यों से उन्हीं का अहित हो रहा है। उनके लिए तो अनुशासन में रहना अति आवश्यक है। किसी कवि की ये पंक्तियाँ कितनी सार्थक हैं :

मानव का कल्याण, जगत में ऊँचा आसन।
हो सकता है बंधु तभी यदि हो अनुशासन॥

अनुशासन ही सफलता का मूलमंत्र है। बिना अनुशासन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं होती। विद्यार्थी के लिए अनुशासन का और भी विशेष महत्त्व है।

39. बढ़ती आबादी : विकट समस्या *(C.B.S.E. 2009 (Comptt.) Outside)*

आज संसार के सामने अनेक छोटी-बड़ी समस्याएँ हैं। प्रत्येक देश उनका समाधान अपने-अपने ढंग से करने का प्रयास कर रहा है। भारत के सामने उसकी निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है। तेजी से बढ़ती हुई इस जनसंख्या के कारण इसके विकास और प्रगति की सारी योजनाएँ विफल होती जा रही हैं। अब भारत की जनसंख्या 105 करोड़ के आँकड़े को पार कर गई है।

जनसंख्या वृद्धि की समस्या अनेक अन्य मुसीबतों को जन्म देती है। प्रत्येक व्यक्ति की कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ होती हैं : भोजन, वस्त्र और आवास। आज देश में लाखों व्यक्तियों को भरपेट भोजन नहीं मिलता, तन ढकने को कपड़े नहीं मिलते और घरों के अभाव में उन्हें खुले आसमान के नीचे सोने को विवश होना पड़ता है।

स्वतंत्रता मिलने पर भारत ने तीव्र गति से कृषि, उद्योगों तथा व्यवसाय के क्षेत्र में प्रगति की। सिंचाई के लिए अनेक बाँधों का निर्माण हुआ, नहरों का जाल बिछाया गया, नलकूप उपलब्ध कराए गए और वैज्ञानिक ढंग से खेती करने को बढ़ावा दिया गया। उत्पादन में वृद्धि भी पर्याप्त हुई। इसके बावजूद हमारे देश की गणना संसार के अविकसित देशों में की जाती है। कारण, हमारी बढ़ती जनसंख्या। इसी के कारण हमारा खाद्यान्न कभी भी पूरा नहीं हो पाता। कभी गेहूँ कम हो जाता है तो कभी चावल, और कभी चीनी का आयात करना पड़ता है। खाद्य-तेलों की कमी भी बनी रहती है। बढ़ती जनसंख्या के कारण माल की माँग भी निरंतर बढ़ती रहती है।

बढ़ती जनसंख्या का दूसरा दुष्परिणाम बेकारी की समस्या के रूप में उभरा है। रोजगार कार्यालयों में वर्षों तक नाम दर्ज रहने के उपरांत भी योग्य नवयुवक, नवयुवतियों को नौकरी नहीं मिल पाती है। 'एक अनार सौ बीमार' वाली कहावत चरितार्थ होती है। चारों ओर भीड़ ही भीड़ दिखाई देती है। ये बेरोजगार युवक निराशा का शिकार होकर विध्वंसक गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं।

चिकित्सा सुविधाओं एवं यातायात सुविधाओं को भी धराशायी करने वाली यही जनसंख्या वृद्धि है। नित्य नए अस्पताल बनने पर भी मरीज डॉक्टरों को घेरे रहते हैं। बसों-रेलगाड़ियों में यात्रियों को ठूँस-ठूँस कर भरने के उपरांत भी सभी को यात्रा का अवसर नहीं मिल पाता।

जनसंख्या की दृष्टि से हमारा भारत विश्व का दूसरा बड़ा देश है। संपूर्ण विश्व की जनसंख्या का छठा भाग भारत में रहता है जबकि इसका क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का केवल 2.54 प्रतिशत है। पिछले 60 वर्षों में हमने अपनी जनसंख्या को तीन गुना कर लिया है। भारत की जनसंख्या वृद्धि की दर 2.11 प्रतिशत है। यदि यह दर गिरी नहीं तो हम सबको निकट भविष्य में भीषण संकट का सामना करना पड़ेगा। अतः आज देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह इस समस्या पर गंभीरतापूर्वक विचार करे और उस पर काबू पाने में अपना सहयोग दे, तभी आने वाली पीढ़ी चैन से रह पाएगी।

40. पुस्तक-मेला

भारत में अन्य मेलों की भाँति प्रतिवर्ष **पुस्तक मेला** आयोजित करने की एक परंपरा चल पड़ी है। केंद्रीय स्तर पर प्रति वर्ष 'प्रगति मैदान' में पुस्तक मेले का भव्य स्तर पर आयोजन किया जाता है। इसमें देश-विदेश के प्रमुख प्रकाशक एवं विक्रेता भाग लेते हैं। इस मेले के अतिरिक्त अनेक राज्यों में भी पुस्तक मेले लगाए जाते हैं। अब प्रश्न उठता है कि इन पुस्तक मेलों की सार्थकता कितनी है?

भारत में निरंतर पुस्तकों का प्रचार-प्रसार बढ़ता चला जा रहा है। इस प्रचार-प्रसार में पुस्तक मेलों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ये पुस्तक मेले पिछले एक दशक से काफी लोकप्रिय होते जा रहे हैं।

कुछ लोगों का मत है कि ये पुस्तक मेले अन्य मेलों की तरह केवल देखने-दिखाने के साधनमात्र हैं। बुद्धिजीवी वर्ग इन मेलों में बहुत कम जाता है। इन मेलों से पुस्तकों का कोई भला नहीं होता। इन्हें प्रदर्शनी की कोटि में ही रखा जा सकता है।

दूसरा वर्ग उन लोगों का है जो यह मानते हैं कि पुस्तक मेले बहुत उपयोगी हैं। इनसे लेखक, प्रकाशक, पाठक, विक्रेता आदि सभी लाभान्वित होते हैं। अब तो इन मेलों में लेखकों और पाठकों का आमना-सामना भी कराया जाता है। पाठक उनसे अपनी जिज्ञासा शांत करते हैं।

अब हम इस पर निष्पक्ष रूप में विचार करें तो हमें पता चलता है कि पुस्तक मेलों की सार्थकता तो संदेह से परे है। हाँ, मात्रा में अंतर हो सकता है। अभी हमारे देश में पुस्तकों को खरीदकर पढ़ने वालों का वर्ग अच्छी-खासी मात्रा में तैयार नहीं हो पाया है। इसके लिए भी पुस्तक मेले बहुत उपयोगी हैं। पुस्तकों को लोगों से परिचित कराने में ये मेले काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

पुस्तक मेले एक ही स्थान पर केंद्रित नहीं होने चाहिए। अभी तक ये मेले प्रगति मैदान में आयोजित होते हैं। यदि इन्हें देश और शहरों के कोने-कोने में लगाया जाये तो इनके देखने और पुस्तकें खरीदने वालों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि संभव है।

पुस्तक मेलों में पुस्तकें रियायती मूल्य पर मिलनी चाहिएँ। विशेषकर नवप्रकाशित पुस्तकों को लोकप्रिय बनाने के लिए उन्हें कम कीमत पर बेचा जाना चाहिए। इससे पुस्तकों को लोकप्रिय बनाया जा सकेगा। इस समय पाठकों की संख्या में बढ़ोत्तरी करने की अधिक आवश्यकता है।

पुस्तक मेलों को आकर्षण का केंद्र बनाया जाना चाहिए। अभी तक सामान्य जन इनकी ओर आकर्षित नहीं हो पाए हैं। विद्यार्थी वर्ग भी इन मेलों में कम ही पहुँच पाता है। इन मेलों में विद्यालयों को सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। विद्यार्थियों

के लिए ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक पुस्तकें यहाँ प्रदर्शित की जानी चाहिए। पुस्तक मेलों में रखी जाने वाली पुस्तकों की कीमत सामान्य पाठक की क्रय-शक्ति के बाहर होती है, अतः कीमत कम करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। हमारा पहला लक्ष्य तो यह होना चाहिए कि लोगों में पुस्तकें खरीदकर पढ़ने की प्रवृत्ति का विकास हो। एक बार जब यह प्रवृत्ति विकसित हो जाएगी, तब पुस्तकों की बिक्री स्वयं ही बढ़ जाएगी।

पुस्तक मेले में विद्यार्थियों को लाने-ले जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। इससे उनका मेले में आना सुनिश्चित हो जाएगा। मेले के प्रति उत्साह उत्पन्न करना आवश्यक है। पुस्तक मेले में लेखकों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाना चाहिए और इसका प्रचार भी होना चाहिए। पाठक अपने प्रिय लेखक से मिलने को उत्सुक रहते हैं। इससे मेले के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा। लोगों का इन मेलों में आना और अधिक से अधिक पुस्तकें खरीदना मेले को सार्थक बनाता है।

41. मेरा प्रिय कवि

हिन्दी साहित्य के अथाह समुद्र में अनेक रत्न भरे पड़े हैं, पसन्द अपने-अपने मन की बात है। मैं जब कभी भक्तिकालीन संत कवि कबीरदास को पढ़ता हूँ तो मेरा मस्तक उनके सम्मुख श्रद्धा से नत हो जाता है तब मुझे वही संत सबसे अधिक प्रकाशवान् प्रतीत होता है। मेरे प्रिय कवि उस समय ज्ञान का दीपक लेकर अवतरित हुए, जब समस्त संसार अज्ञान के अंधकार में डूबा हुआ था। उन्होंने अपने ज्ञान-रूपी दीपक का प्रकाश जन-जन के कल्याण के लिए फैलाया।

मेरे प्रिय कवि कबीर का जन्म 1339 ई. में काशी में हुआ। कहा जाता है कि इनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ और वह लोक-लाज के डर से इन्हें लहरतारा नामक तालाब के निकट छोड़ गई। नीमा और नीरू नामक जुलाहा दंपत्ति ने इनका पालन-पोषण किया। इनकी शिक्षा-दीक्षा ठीक ढंग से नहीं हो पाई। इन्होंने स्वयं लिखा है–

"मसि कागद छुऔ नहिं, कलम गही नहिं हाथ।"

मुझे कबीर का निडर स्वभाव बहुत भाता है। उन्होंने सामाजिक क्रांति का कार्य साहसिक ढंग से किया। उन्होंने तत्कालीन समाज में फैले हुए ढोंग, आडंबरों, जाति-पाँति के भेदभाव एवं अन्य कुरीतियों पर डटकर प्रहार किया। उन्होंने कहा–**"जाति-पाति पूछे न कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।"**

कबीरदास युग संधि पर पैदा हुए थे। उस समय समाज पर हठयोगियों, नाथपंथी साधुओं का बड़ा प्रभाव था। कबीर ने पक्षपात रहित होकर हिंदुओं और मुसलमानों को उनके ढोंग-आडंबरों के लिए फटकारा। तीर्थ, व्रत, माला फेरना, रोजा, नमाज आदि पर चोट की। उन्होंने माला फेरने का विरोध करते हुए कहा–

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥

इसी प्रकार मुसलमानों के मस्जिद में अजान देने की रीति को व्यर्थ बताते हुए कहा–

"कांकर-पत्थर जोरि के, मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।"

कबीर के व्यक्तित्व में विरोधी तत्त्वों का समन्वय था। एक साथ ही वे हिंदू भी थे और मुसलमान भी। संत भी वे थे और गृहस्थ भी। वे कवि और समाज सुधारक थे और समाज के विभिन्न वर्गों में एकता उत्पन्न करने वाले उपदेशक भी थे। उन्होंने स्वयं कोई धर्म-संप्रदाय नहीं चलाया, पर आज भी हजारों व्यक्ति स्वयं को कबीरपंथी कहने में गर्व का अनुभव करते हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण कबीरदास मेरे प्रिय कवि बने हैं।

संतों और महात्माओं का सत्संग कबीर को बहुत अच्छा लगता था। संतों-महात्माओं से उन्होंने बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अपने अनुभव से उन्हें जो ज्ञान मिलता था, उसे वे पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान से अधिक महत्त्व देते थे। उन्होंने स्वयं कहा है–

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।"

मेरे प्रिय कवि कबीर लोई नामक स्त्री से विवाह करके पूर्ण गृहस्थ बन गए थे। उनका गृहस्थ-ज़ीवन सुखी था। दोनों मिलकर अपना व्यवसाय चलाते थे। उनके एक पुत्र भी हुआ। उसका नाम कमाल था। जब वह बड़ा हुआ तो उसने परिवार के व्यवसाय को संभाल लिया और कबीरदास धर्म के कामों में पूरी तरह लग गए।

कबीरदास अपने गुरु का बड़ा सम्मान करते थे। मुझमें गुरु के प्रति श्रद्धा उन्हीं के इस दोहे के प्रेरणास्वरूप आई है–

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय ।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियौ मिलाय ।"

उनका कथन था कि गुरु की कृपा से ही ईश्वर का ज्ञान प्राप्त होता है।

इन सभी विशेषताओं के कारण कबीर मेरे सर्वाधिक प्रिय कवि हैं।

42. मीडिया की भूमिका

आधुनिकता की इस दौड़ में मीडिया का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज मीडिया ने संसार के कर्तव्य को सबके सामने प्रस्तुत कर एक बेमिसाल उदाहरण प्रस्तुत किया है। आज टी. वी. या कंप्यूटर का बटन ऑन करते ही नई-नई टैक्नोलोजी न्यूज, इवैंटस और इंफोरमेशन लाइव टैलीकास्ट किया जाता है जिसे देखकर आत्मा और मन दोनों का ही ज्ञानवर्धन होता है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए आज के समय में मीडिया इंफोरमेशन का मुख्य साधन है। इसके बगैर रात को नींद नहीं आती, दिन का चैन खो जाता है। यह सामाजिक बुराइयों को उजागर करके लोगों को सचेत करता है कि बुराई का नतीजा सदैव बुरा होता है। यह संकीर्णता से ऊपर उठाता है। चाहे वह इलैक्ट्रानिक मीडिया हो या प्रिंट मीडिया सब की देख-रेख प्राय: निजी लोगों के हाथों में होती है। पर हम कह सकते हैं कि मीडिया मानवाधिकार का अभिभावक होता है। वस्तुत: अगर मीडिया एक अच्छा अभिभावक के रूप में कार्य करे तो उसकी पहचान सब क्षेत्रों में बढ़ती जाती है। मीडिया की कुछ बातें अतिशयोक्तिपूर्ण होती हैं। उस पर उसे लगाम कसनी चाहिए। मीडिया के आने से समाज के ऊपर आर्थिक बोझ तो बढ़ा है पर समय पर लोगों के लिए लाभदायक भी सिद्ध हुआ है। मीडिया आज लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित करता है। पर कुछ रिपोर्टर अपने चैनल की TRP बढ़ाने के लिए बेवजह किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं। उस चैनल के रिपोर्टर की झोली तो भर जाती है पर जिस किसी की वह बात होती है वह मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाता है और मीडिया के आरोप की वजह से जो हानि आम जनता को होती है उसे टेलीकास्ट नहीं करती क्योंकि उसमें उसका नुकसान होता है। माना कि मीडिया को आजादी होनी चाहिए परंतु उस पर अंकुश भी लगाना चाहिए। पूर्णत: आजादी घातक सिद्ध हो सकती है। जब मीडिया के ऊपर थोड़ी-सी भी पहरेदारी की बात होती है तो वह घबरा जाता है।

हम एक ऐसे देश की मीडिया का हिस्सा हैं जो जरा सी सीमा रेखा की बात सुनते ही घबरा जाता है। वह आजाद रहना चाहता है लेकिन यह भी सच है कि लोकतंत्र में सबके घर शीशे के होते हैं। मीडिया का घर भी शीशे का है। खबरों को प्रसारित करते समय इसकी विश्वसनीयता का होना आवश्यक है।

43. आपदा प्रबंधन

आपदा एक मानवकृत अथवा प्राकृतिक घटना है जो बहुत जनहानि करती है और साथ ही संपत्ति का विनाश करती है। आपदा दो तरह की होती है—प्राकृतिक आपदा जैसे—बाढ़, भूकंप, सुनामी, चक्रवात, भूस्खलन, ज्वालमुखी विस्फोट आदि। दूसरी मानवकृत आपदा जैसे- प्रदूषण, आग, बाँध टूटना, गैस रिसना, बम विस्फोट और आतंकवाद आदि। आपदा के अनेक प्रभाव होते हैं—जान-माल की हानि होती है, लोग बेघर हो जाते हैं, पर्यावरण की क्षति होती है।

आपदा प्रबंधन वे सभी क्रिया-कलाप हैं जिनसे संकट या जोखिम कम हो सके तथा आपदा के पश्चात् और पहले यह जानकारी हो कि क्या करना चाहिए। आपदा के जोखिम को अनेक प्रकार से कम किया जा सकता है :

(*i*) संरचनात्मक शमन, (*ii*) रोकथाम

संरचनात्मक शमन दो प्रकार का होता है :

(*i*) कुशल संरचना : इसमें वास्तुकार, इंजीनियर और राजमिस्त्री आते हैं जो प्रशिक्षित होते हैं।

(*ii*) अकुशल संरचना : इनमें स्थानीय मिस्त्रियों को नियुक्त करके भवन निर्माण करते हैं।

रोकथाम : भूकंप, भूस्खलन, बाढ़, चक्रवात आदि को रोका नहीं जा सकता। आपदा प्रबंधन की जरूरत इसलिए है ताकि आपदा आने से पहले उसकी रोकथाम हो सके। आपदा आने के बाद उसकी रोकथाम हो सके। आपदा आने के बाद अनेक तरह की मुसीबतें होती हैं। आपदा प्रबंधन के अनेक घटक होते हैं :

1. पहले से तैयारी : यह सुनिश्चित करने का उपाय है कि समुदाय और सेवाएँ आपदा के प्रभाव से निपटने के लिए पहले से तैयार रहें।

2. जवाबी कार्यवाही : आपदा के पहले, आपदा के दौरान और आपदा के तुरंत बाद किए गए ऐसे उपाय जिनसे कि यह सुनिश्चित हो सके कि आपदा का प्रभाव कम से कम हो।

3. सामान्य जीवन की ओर लौटना : ऐसे उपाय जो कि भौतिक आधारभूत सुविधाओं के पुनर्निर्माण तथा आर्थिक एवं भावनात्मक कल्याण की पुन: प्राप्ति में संकट से प्रभावित समुदायों के लिए सहायक हों।

4. रोकथाम : संकटों/ आपदाओं की गंभीरता से मुक्ति पाने अथवा उनके प्रभावों को कम करने के उपाय।

5. दुष्प्रभाव को कम करना : वे क्रियाएँ ज़ो दुष्प्रभावों को कम करने के लिए की जाती हैं।

6. ऐसे प्रयत्न तथा प्रस्ताव जो समुदाय या व्यक्ति द्वारा विचार किए जाते हैं।

आपदा आने के बाद स्वयंसेवकों की आवश्यकता होती है ताकि लोगों की जान बचाई जा सके। इसमें खोज और बचाव दल की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। खोज और बचाव दल का प्रमुख उद्देश्य जीवित लोगों को बचाना, घायल व्यक्तियों को प्राथमिक उपचार देना तथा अस्पताल भेजना, मृतकों की सुपुर्दगी, निष्पादन का काम करना आदि है।

आपदा के दौरान संचार-संपर्क पूरी तरह प्रभावित हो जाता है। इसलिए प्रभावित लोगों को पर्याप्त सहायता पहुँचाने के लिए शासन के विभिन्न स्तरों पर पूरे समय संचार संपर्क होना आवश्यक है। इस कारण आपदाओं के दौरान वैकल्पिक संचार प्रणलियों का होना आवश्यक है ताकि सही समय पर लोगों को जरूरी संसाधन पहुँचाया जा सके। आपदा के पहले बचाव के लिए सुरक्षित निर्माण की कार्यविधियाँ करनी चाहिए ताकि आपदा के दौरान इमारत को नुकसान न पहुँचे और जान-माल की क्षति को भी रोका जा सके। इसके लिए हमें भूकंपरोधी मकान बनाने चाहिए। नींव की जाँच करनी चाहिए।

आपदा के समय सरकारी और गैर-सरकारी संगठन दोनों प्रकार की एजेंसियाँ समाज को तैयार रखने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। संकट के समय होम-गार्ड, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक, नेहरू युवा केंद्र संगठन भी भूमिका निभाते हैं। अंत में, यह कहना ठीक रहेगा कि हमें आपदा से पहले योजना तैयार कर लेनी चाहिए।

44. स्टिंग ऑपरेशन

पहले इस प्रकार के समाचारों को सिर्फ 'भंडाफोड़' या 'पोल खोल' कहा जाता था। न्यूज टी. वी. के आने के बाद इन्हें स्टिंग ऑपरेशन कहा जाने लगा और देखिए कि इनकी मार भी बिच्छू के जहरीले डंक से कम साबित नहीं हुई। देश के साठ साल के इतिहास में इतने भंडाफोड़ नहीं हुई होंगे, जितने अब एक महीने में हो जाते हैं। स्टिंग ऑपरेशन अब टी.वी. जर्नलिज्म की जान बन गए हैं और उनके निशाने पर माफिया, नेता और अफसरशाह ही नहीं हैं, आम लोग भी हैं लेकिन बहुत से लोगों को अब लगने लगा है कि बात जरूरत से आगे बढ़ रही है।

स्टिंग ऑपरेशन आधुनिक पत्रकारिता द्वारा विकसित एक महत्त्वपूर्ण टूल है। इससे पत्रकारिता ज्यादा साहसिक, जिम्मेदार और प्रभावी हुई है। इसके सहारे बहुत-सी पेचीदा और प्राय: कभी सामने न आ सकने वाली सच्चाइयों से लोगों का पहली बार सामना हुआ है। इसलिए इसके औचित्य पर सवालिया निशान लगाना दुष्टतापूर्ण है। एक लंबी फेहरिस्त है ऐसे स्टिंग ऑपरेशंस की जिसके कैमरों में देश के सफेदपोश लोगों की काली करतूतें कैद हैं। विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार को इतनी सफलतापूर्वक उजागर करना एक बड़ी घटना है। पत्रकारिता को इससे नई धार मिली है। जो लोग इस पर तोहमत लगाते नहीं थकते उन्हें ऐसी पत्रकारिता से अपने किए के उजागर होने का भय ही अधिक सताता है। उनके लिए नैतिकता का मामला महज एक 'सेफ्टीवॉल्व' है।

जब तहलका ने मैच फिक्सिंग और डिफेंस डील पर स्टिंग ऑपरेशन किए थे, उसके दो तरह के उद्देश्य थे। एक गलत काम का भंडाफोड़ करना और साथ ही ऐसा करते हुए अपने ब्रैंड की ओर ध्यान खींचना। वह एक अज्ञात वेबसाइट से दुनिया की सबसे ज्यादा देखे जाने वाली वेबसाइट में बदल गई। स्टिंग से पहले वह अच्छे लेखन वाली साइट थी, लेकिन उसे प्रसिद्धि स्टिंग ऑपरेशनों से मिली। दुर्भाग्य से स्टिंग ऑपरेशन उनके लिए कई मुसीबतें भी लेकर आए। आज की मीडिया कंपनियाँ स्टिंग ऑपरेशनों के दोनों फायदों को पहचानती हैं। जब वे बिना गलती किए और ईमानदारी से ऑपरेशन करती हैं, तो गलत काम सफलतापूर्वक बेनकाब होते हैं, लेकिन कुछ भी हो, वे सबका ध्यान अपनी ओर खींचती हैं। लेकिन जब चीजें गलत हो जाती हैं, तो वे संबंधित मीडिया कंपनी के लिए बहुत बड़ी समस्याएँ लेकर आती हैं। प्रकाश सिंह और उमा खुराना के मामले में यही हुआ है।

स्टिंग ऑपरेशन में खोजी पत्रकारिता के बारे में बढ़-चढ़कर दावे किए जाते हैं, मगर भारत में खोजी पत्रकारिता कोई नई चीज नहीं है। पहले भी प्रिंट मीडिया से जुड़े पत्रकारों ने ऐसी पत्रकारिता कर सत्ता-प्रतिष्ठानों की पोल खोली है। बोफोर्स का मामला सामने लाने में इसी खोजी पत्रकारिता की बड़ी भूमिका थी। इन दिनों भारत में मुख्य रूप से इलेक्ट्रॉनिक चैनल ही स्टिंग ऑपरेशन कर रहे हैं, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि यह काम प्रोफेशनल और प्रशिक्षण की दृष्टि से कमजोर लोगों के हाथों होने लगा है। वे न तो इसके सामाजिक प्रभाव के बारे में जानकारी रखते हैं और न इसके कानूनी पहलुओं के बारे में। इनमें पत्रकारिता का अनुभव और परिपक्वता की कमी होती है और उन्हें कैमरे व रिकॉर्डर थमा दिए गए। इस तरह के ऑपरेशन में मैनिपुलेशन भी बहुत होते हैं, जैसे हाल ही में सेक्स रैकेट का पर्दाफाश करने के नाम पर किए गए ऑपरेशन में न सिर्फ बेकसूर लोगों को फँसाया गया बल्कि बेवजह की सामाजिक अशांति भी फैली। इस वजह से कई बार गलत लोगों के हाथ में पड़कर स्टिंग ऑपरेशन खतरनाक भी हो जाते हैं। जो काम बेहद जिम्मेदारी के साथ और पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर किया जाना चाहिए, वह काम बेवजह की सनसनी पैदा करने और चैनल की टीआरपी बढ़ाने के लिए किया जाने लगता है।

हमारा मत है कि इसका उपयोग किसी को गलत काम करते हुए पकड़ने में होना चाहिए। इसका इस्तेमाल पहले गलत काम किए जाने की स्थिति पैदा कर फिर वारदात को सामने लाने में नहीं होना चाहिए। यह किसी को फँसाना हुआ और यह गलत तरीका है। स्टिंग ऑपरेशन भ्रष्टाचार से भरे हमारे समाज के लिए उपयोगी हो सकते हैं, मगर ऐसे काम अनुभवहीन पत्रकार को नहीं सौंपे जाने चाहिए।

45. आतंकवाद : एक चुनौती

'आतंकवाद' आज विश्व के समक्ष उपस्थित गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह लोकतंत्र के विरुद्ध युद्ध और मानवता के विरुद्ध अपराध है। यह राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पसरता चला जा रहा है। यह क्रूरतापूर्ण नरसंहार का एक नया रूप है। आतंकवाद, एक प्रकार से, 21वीं सदी में मानवता के लिए एक नई चुनौती है। आतंकवाद मानव जाति के विरुद्ध कुछ सिरफिरे मनुष्यों की हिंसा है। आतंकवादियों को अपने सहित मानव जीवन की कोई परवाह नहीं होती। वे क्रूर, हृदयहीन और विवेकशून्य अपराधी हैं। वे बिना अपराध बोध के खून-खराबा और अपराध करते हैं।

हिंसा आतंकवाद का एक अनिवार्य अंग है। विशिष्ट राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिंसा का सुनियोजित प्रयोग आतंकवाद है। इस रूप में राजनीति और अपराध का अंतर्मिश्रण आतंकवाद को जन्म देता है। आतंकवाद के लिए लोकतंत्र कोई अर्थ नहीं है। आतंकवाद बैलेट (मतपत्र) के विरुद्ध बुलेट (गोली) के सिद्धांत में विश्वास रखता है।

आतंकवाद डरा-धमका कर लूटने, बल प्रयोग करने और अल्पमत निर्णय को बहुमत इच्छा पर लादने का एक राजनीतिक हथियार बन गया है। आतंकवादी सरकार को हतोत्साहित कर अंततः जवाबी हिंसा के लिए विवश कर देते हैं। किसी भी ओर की हिंसा से केवल नागरिकों को ही शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और अन्य प्रकार से पीड़ित होना पड़ता है। आतंकवादी एक व्यक्ति को मारकर दस लोगों को डराना चाहते हैं। यह मनोवैज्ञानिक युद्ध की एक तकनीक है।

विद्रोह और आतंकवाद के बीच बहुत कम अंतर है। विद्रोह राष्ट्रीय सीमा तक सीमित होता है जबकि आतंकवाद राष्ट्रीय सीमा को पार कर जाता है। आज समस्त राष्ट्रों के सम्मुख आतंकवाद एक समान चुनौती है। पिछले कुछ दशकों से भारत आतंकवादी गतिविधियों से बुरी तरह प्रभावित रहा है। भारत का संसद भवन तक इसका शिकार बन चुका है। भारत में आतंकवाद संप्रभुता, अखंडता और लोकतंत्र के लिए खतरा है।

उत्तर-पूर्व सीमा विवाद, नागालैंड का विद्रोह, वृहत्तर मिजोरम की माँग, असम में विद्रोही गुटों की गतिविधियाँ, नक्सली आंदोलन, जम्मू-कश्मीर का आतंकवाद इस प्रकार की गतिविधियों में वृद्धि कर रहा है। आतंकवादी गुटों द्वारा विदेशी भाड़े के सैनिकों और स्थानीय बेरोजगार युवकों को सीमा-पार कैंपों में प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी आतंकवाद से पीड़ित परिवारों को कश्मीर से पलायन करके विस्थापितों का जीवन जीने को विवश होना पड़ रहा है।

आतंकवाद हमेशा लोगों के सामान्य जीवन को अस्त-व्यस्त करता है। यह प्रभावित क्षेत्रों की सामाजिक-आर्थिक विकास की प्रक्रिया को धीमा करता है। भारत ने हमेशा सभी प्रकार के आतंकवाद का सशक्त विरोध किया है। आतंकवाद क्षेत्रीय अखंडता, वैधता और देश के शासन को चुनौती देता है।

46. इंटरनेट

इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया लेकिन तेजी से लोकप्रिय हो रहा माध्यम है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा, यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण विद्यमान हैं। इसकी पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक है और इसकी रफ्तार का कोई जवाब नहीं है। इसमें सारे माध्यमों का समागम है। इंटरनेट विश्वव्यापी जाल है। इसके भीतर करोड़ों पन्नों की सामग्री जमा है, जिसमें से आप पलभर में अपने मतलब की सामग्री खोज सकते हैं।

यह एक अंतर-क्रियात्मक माध्यम है यानी आप इसमें मूकदर्शक नहीं हैं। आप सवाल-जवाब, बहस में भाग लेते हैं। आप चैट कर सकते हैं और मन हो तो अपना ब्लाग बनाकर पत्रकारिता की किसी बहस के सूत्रधार बन सकते हैं। इंटरनेट पर अपनी रेल या हवाई यात्रा का टिकट ले सकते हैं। इंटरनेट ने हमें मीडिया समागम यानि कनवर्जेंस के युग में पहुँचा दिया है और संचार की नई संभावनाएँ जगा दी हैं। इंटरनेट को सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

इंटरनेट पत्रकारिता का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसे ऑन लाइन पत्रकारिता, खबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है। इंटरनेट पर आप एक ही झटके में झुमरी तलैया से लेकर होनोलूलू तक की खबरें पढ़ सकते हैं।

इंटरनेट पर खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। आज प्रायः सभी प्रमुख अखबार पूरे के पूरे इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। आज पत्रकारिता की दृष्टि से 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'हिंदू', 'ट्रिब्यून', 'एन.डी.टी.वी', 'जी न्यूज', 'आज तक', 'आउटलुक' आदि साइटें ही बेहतर हैं।

यह ठीक है कि इंटरनेट ने जहाँ पढ़ने-लिखने वालों तथा शोधकर्ताओं के लिए संभावनाओं के नए कपाट खोले हैं, वहीं यह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी जरिया है। इसमें लाखों अश्लील पन्ने भर दिए गए हैं, जिसका बच्चों के कोमल मन पर बुरा असर पड़ता है। विगत वर्षों में इसके दुरुपयोग के अनेक उदाहरण सामने आए हैं। इस पर नियंत्रण जरूरी है।

47. खेलों की उपयोगिता *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Outside)*

भारत ने 2008 के बीजिंग ओलंपिक खेलों में एक स्वर्ण पदक और दो कांस्य पदक जीतकर खेल जगत में अपना शानदार नाम दर्ज कराया है। भारत ने लगभग 28 वर्ष बाद स्वर्ण पदक जीता। अभिनव बिंद्रा ने भारत की झोली में यह पदक डाला। दिल्ली के सुशील कुमार ने कुश्ती में तथा हरियाणा के बिजेन्द्र कुमार ने मुक्केबाजी में कांस्य पदक भारत को दिलवाया। इससे भारतीय खेलों में भारत की धमाकेदारी वापसी हुई है।

खेलों की उपयोगिता से कोई इंकार नहीं कर सकता। हमारे जीवन में खेलों का विशेष महत्त्व है। यदि हम जीवन को सुखी बनाना चाहते हैं, और दुखों से यथासंभव दूर रहना चाहते हैं, तो हमें खेलों से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए । जीवन में शारीरिक और मानसिक सुख-दुःख आते रहते हैं। मन को सुखी रखने के लिए तन का चुस्त-दुरुस्त रखना आवश्यक है। शरीर ही सारे कार्य-व्यापार को सम्पन्न करने का साधन है।

कर्म-साधना के लिए शरीर का स्वस्थ रहना आवश्यक है। शरीर को ठीक-ठाक, सुगठित एवं स्वस्थ रखने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए। खेल-कूद भी व्यायाम का ही एक सहज प्रकार है। स्वस्थ रहने के लिए शरीर को जैसे भोजन की आवश्यकता होती है, वैसे ही व्यायाम व खेलकूद की भी आवश्यकता होती है। अस्वस्थ शरीर जीवन को सभी प्रकार के सुखों से वंचित कर देता है। अंग्रेजी में कहावत है 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है।'

नियमित खेलों से तन और मन दोनों प्रसन्न रहते हैं। इससे रूप में कांति झलकने लगती है। खुली हवा में कसरत करने से फेफड़ों में ताजी हवा भर जाती है तथा रक्त शुद्ध होता है। इससे शरीर में बल की वृद्धि होती है।

खेल हमारी पाचन शक्ति को बढ़ाते हैं। व्यायाम करने के बाद खुलकर भूख लगती है। भूख में खाया हुआ अन्न गुणकारी होता है। ऐसे व्यक्ति के पास रोग नहीं फटकता। व्यायाम करने से शरीर से पसीना निकल जाताा है और शरीर हल्का हो जाता है। व्यायाम जीवन का वरदान है जो सभी के लिए सुलभ है।

खेलों से दूर भागने वाला व्यक्ति रोगी हो जाता है। उसका शरीर बेडौल होने लगता है। उसके शरीर में आलस्य छा जाता है तथा चलने-भागने में उसकी साँस फूलने लगती है। उसकी पाचन क्रिया शक्ति गड़बड़ा जाती है। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है तथा उसे अपना जीवन भार स्वरूप प्रतीत होने लगता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं तो दुःख पाता ही है, दूसरों के लिए भी बोझ बन जाता है।

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने व्यायाम और योगासन पर बहुत बल दिया है। उन्होंने प्राणायाम और योग के अनेक आसन बताए हैं। इन योगासनों का ज्ञान उन्होंने मौखिक और लिखित रूप में मनुष्य को दिया है। नियमित रूप से व्यायाम करने वाले व्यक्ति को जल्दी बुढ़ापा नहीं आता। बच्चों को बचपन से ही व्यायाम का अभ्यास कराना चाहिए। विभिन्न प्रकार के खेल भी व्यायाम के ही अंग हैं। युवकों को सभी प्रकार के खेलों में भाग लेना चाहिए। इधर प्राणायाम और योग के प्रति भी लोगों में ललक जगी है। हमें जीवन में खेलों की उपयोगिता को समझकर इसे जीवन का अनिवार्य अंग बना लेना चाहिए।

48. भ्रष्टाचार रूपी दानव *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

'भ्रष्टाचार' शब्द भ्रष्ट + आचार शब्दों के योग से बना है । 'भ्रष्ट' का अर्थ–निकृष्ट श्रेणी की विचारधारा और 'आचार' का अर्थ आचरण के लिए उपयोग किया गया है। इसके वशीभूत होकर मानव राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भूलकर अनुचित रूप से अपनी जेबें गर्म करता है। भ्रष्टाचार रूपी वृक्ष का रूप ही अनोखा है। इसकी जड़ें ऊपर की ओर तथा शाखाएँ नीचे की ओर बढ़ती हैं। इसकी विषाक्त शाखाओं पर बैठकर ही मानव, मानव का रक्त चूस रहा है। इसी घिनौनी प्रकृति के कारण हमारे प्रयोग की हर वस्तु दूषित बना दी गई है। एक ओर तो आर्थिक अभाव का वातावरण भ्रष्टाचार को जन्म देता है, दूसरी ओर नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण आर्थिक विकास के कार्यक्रमों को अमली रूप देने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। विश्व के विकासमान राष्ट्र आज इसी दुष्चक्र में फँसे हुए हैं। यह सही है कि विश्व के समृद्ध विकसित राष्ट्र भी आज मूल्य वृद्धि से परेशान हैं तथा वहाँ भी सरकारी अधिकारी, व्यापारी व उद्योगपति दूध के धुले नहीं हैं।

आज का मानव धन के लालच में पड़ गया है। उसके व्यवहार में आर्थिक दृष्टिकोण प्रमुख हो गया है। यही आर्थिक दृष्टिकोण भावना के स्थान पर हिसाब को महत्त्वपूर्ण बना देता है। मनुष्य में समाज विभाजन की भावना उत्पन्न होती है और आवश्यकता होती है किसी तीसरे व्यक्ति की जो न्याय कर सके। यही तीसरा व्यक्ति शासन है। जब स्वयं अधिक धन हथिया लेने की बात प्रमुख हो जाती है तब जीवन की प्रक्रिया भी नैतिक से आर्थिक हो जाती है। मनुष्य अपने आन्तरिक गुणों की अपेक्षा बाहरी गुणों के विषय में अधिक चिन्तित हो जाता है। आर्थिक विकास के प्रयास में मनुष्य यथार्थवादी हो जाता है और यथार्थ का रूप उसे पैसे में दिखाई देता है। मनुष्य पैसे के द्वारा ही वर्तमान को समृद्ध बनाए रखना अपना धर्म समझता है।

स्वाधीनता के बाद भारत में बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाई गईं। शासन-पद्धति को गाँधी जी के आदर्शों पर चलाने का प्रयत्न किया गया। यद्यपि आर्थिक रूप से तो हम समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं, किंतु नैतिक दृष्टि से हम पतन की ओर बढ़ रहे हैं। भ्रष्टाचार का विष समाज की नाड़ियों में फैलता जा रहा है।

इस स्थिति के लिए कोई एक व्यक्ति दोषी नहीं है अपितु वह व्यवस्था दोषी है, जो धन को मानवता से अधिक महत्त्व देती है। फलतः हर प्रकार की बेईमानी द्वारा धन की प्रवृत्ति को बल मिला है।

भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने के लिए जनता व सरकार को मिलकर ही प्रयत्न करना होगा। शासन की सर्वोच्च शक्तियाँ भ्रष्टाचार के मूल कारणों का पता लगाकर उनके समाधान ढूँढें। साथ ही जनता अपने सम्पूर्ण नैतिक बल और साहस से भ्रष्टाचार को मिटाने का प्रयत्न करे। प्रजातांत्रिक शासन-प्रणाली में जनता की आवाज शासन तक सरलता से पहुँच जाती है। भले ही कुछ लोग स्वयं घूसखोरी और लगाव-बुझाव में न फँसे हों, लेकिन उसमें फँसे हुए लोगों को जानते हुए भी उनके प्रति उदासीनता बरतते हैं, वे भी उतने ही अपराधी हैं।

भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए कड़े कदम उठाने होंगे। भ्रष्टाचारियों को, चाहे वे कितने ही ऊँचे पदों पर क्यों न हों दंडित किया जाना अत्यंत आवश्यक है। उच्च पदों पर नियुक्ति और प्रोन्नति के समय उन व्यक्तियों को वरीयता मिलनी चाहिए जो भ्रष्टाचार से सर्वथा मुक्त रहे हैं। जब भ्रष्टाचारी व्यक्ति पदोन्नत हो जाता है तो ईमानदार व्यष्क्ति को बहुत धक्का लगता है। सरकार को ऐसे उपाय बरतने होंगे, जिनसे जनता के विभिन्न कार्य नियत समय पर अवश्य पूरे हो जाएँ, ताकि भ्रष्टाचार की गुँजाइश ही न रहे। वर्तमान में सरकारों पर भ्रष्टाचार के अनेक आरोप लगे हैं। इनमें रक्षा सौदों में भ्रष्टाचार का मामला तेजी से उछला जिसके कारण रक्षामंत्री को त्यागपत्र देना पड़ा। फिर ताबूत कांड, पैट्रोल पंप आबंटन, भूमि घोटाला तथा तहलका कांड इसके उदाहरण हैं। इनसे सरकार की विश्वसनीयता पर आँच आई है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार पर काबू पाना भारत के लिए अत्यंत आवश्यक है अन्यथा प्रगति की सभी योजनाएँ धरी की धरी रह जाएँगी। यह एक सामाजिक कोढ़ है, इसे मिटाना ही होगा।

49. गणतंत्र दिवस की परेड *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

गणतंत्र दिवस भारत का एक प्रमुख राष्ट्रीय पर्व है। यह दिन भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित है। इस दिन का स्मरण करते हुए प्रत्येक भारतवासी का हृदय एक अलौकिक उत्साह और उल्लास से भर जाता है।

वैसे तो हमें 15 अगस्त, 1947 को स्वाधीनता मिल गई थी, पर देश का संविधान 26 जनवरी, 1950 को ही लागू किया गया। संविधान लागू करने के लिए 26 जनवरी का दिन ही क्यों चुना गया इसके पीछे स्वतंत्रता प्राप्ति के दृढ़ संकल्प की एक महान घटना छिपी है। इस दिन सन् 1929 को रावी नदी के तट पर कांग्रेस ने अपने लाहौर अधिवेशन में पंडित नेहरू के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार के सम्मुख पूर्ण स्वराज्य की माँग रखी थी। इस प्रकार 26 जनवरी, 1930 को सारे देश में राष्ट्रीय झंडा फहराकर पूर्ण स्वराज्य प्रप्ति की प्रतिज्ञा ली गई थी, इसलिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश का संविधान 26 जनवरी को लागू किया गया।

इस दिन देश के प्रत्येक नगर में यह पर्व बड़े उल्लास, स्फूर्ति तथा उत्साह से मनाया जाता है। शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है तथा स्थान-स्थान पर राष्ट्रीय ध्वज फहराये जाते हैं और सभाएँ होती हैं, जिनमें भाषण दिए जाते हैं। इस बार की गणतंत्र दिवस परेड देखने हम राजपथ पर गए। वहाँ काफी भीड़ थी। हमारे पास गणतंत्र दिवस समारोह देखने की टिकटें थीं, फिर भी समारोह स्थल तक पहुँचने के लिए हमें काफी मशक्कत करनी पड़ी। अनेक चैनलों को पार करके हम अपनी सीट पर पहुँच पाए थे। हम एक घंटा पूर्व ही वहाँ पहुँच गए थे। हमें सीट मिलने में भी काफी दिक्कत का सामना करना पड़ा। अभी भी हम सलामी मंच से काफी दूर थे।

भारत की राजधानी दिल्ली में यह उत्सव विशेष धूमधाम से मनाया जाता है। पूरे भारत में लाखों लोग नई दिल्ली में राजपथ पर इस उत्सव को देखने के लिए एकत्र होते हैं। इस वर्ष हम भी सपरिवार इस उत्सव को देखने गए। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी यह समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। वृद्ध, बच्चे तथा युवक-युवतियाँ प्रातः काल से ही राजपथ के दोनों ओर जमा होने लगे थे।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति निश्चित समय पर अपनी बंद गाड़ी में अभिवादन स्थल पर पधारे। सेना के तीनों अंगों के अध्यक्षों ने उन्हें सलामी दी। उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडल के सदस्यों तथा अन्य उच्च अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। तत्पश्चात् इकतीस तोपें दाग कर राष्ट्र ध्वज को सलामी दी गई। इसके बाद अत्याधुनिक किस्म के अस्त्र-शस्त्र, टैंक, सैनिक साजो-सामान से लदी गाड़ियाँ तथा जवान राष्ट्रपति का अभिवादन करते हुए राजपथ से गुजरे। इसके पश्चात् विभिन्न बैंड अपनी धुन बजाते हुए आए। विद्यालयों के छात्र-छात्राएँ विविध प्रकार के करतब दिखाते हुए वहाँ से गुजरे। लोगों ने हर्षध्वनि कर उनका स्वागत किया।

परेड के अंत में आकर्षक झांकियाँ एवं लोकनर्तकों के समूह आए। समस्त राजपथ सांस्कृतिक वातावरण से सराबोर हो गया। फूलों से बनी झाँकी ने तो लोगों का मन मोह लिया। सबसे अंत में वायुयानों ने अपने करतब दिखाए। उन्होंने राष्ट्र ध्वज पर पुष्प वर्षा भी की। रात्रि को सरकारी भवनों पर आकर्षक रोशनी की गई। इस प्रकार अत्यंत समारोहपूर्वक यह राष्ट्रीय पर्व संपन्न हुआ।

परेड की समाप्ति पर हम अपने घर लौटने को तैयार हुए। राजपथ पर किसी वाहन का मिलना तो कठिन था अत: हम पैदल ही चल कर आए।

50. सर्दियों की छुट्टियों में पर्वतीय क्षेत्र में *(C.B.S.E. 2009 Comptt. Delhi)*

शिमला में हमारे मामाजी रहते हैं। जनवरी के महीने में उनकी लड़की की शादी थी। इसमें हमारे परिवार को तो जाना ही था। सरदी के मौसम में किसी पर्वतीय क्षेत्र में जाना काफी रोमांचक के साथ-साथ कष्टदायक भी होता है। खैर हमें तो वहाँ बड़ा ही अच्छा अनुभव हुआ। विवाह के अगले दिन वहाँ हिमपात हो गया। हिमपात के कारण चारों ओर बर्फ ही बर्फ दिखाई देती थी। पेड़ों के पत्ते भी बर्फ से ढक गए थे। घरों की छतों पर भी बर्फ ही बर्फ थी। हमने बर्फ में फिसलने का खूब आनन्द लिया। हिमपात का अपना अलग ही सौंदर्य होता है। चारों ओर चाँदी बिखरी प्रतीत होती है।

प्राकृतिक सौंदर्य उस महान शिल्पी, महाकलाकार ईश्वर की रचना है। उस महान कलाकार की रचना को देखकर हृदय आनंद से परिपूर्ण हो उठता है। उस कलाकार द्वारा निर्मित प्रकृति नित्य, शाश्वत और चिर सुंदर है। यही प्रकृति जीवन और संसार का मूल आधार है। सत्य तो यह है कि संसार की रचना जिन तत्त्वों के द्वारा हुई है, वे सभी प्रकृति के अंग हैं। प्राकृतिक सौंदर्य पठनीय नहीं है, वह दर्शनीय और अनुभव करने का विषय है।

हिम से आच्छादित पर्वत की चोटियों पर जब सूर्योदयकालीन धूप और सूर्यास्तकालीन लालिमा पड़ती है तो चित्त प्रसन्नता से झूम उठता है। नीले-सूने आकाश पर सहसा बादलों का घिर-घिर कर आना, उनका रिमझिम-रिमझिम बरसना और सारे वातावरण को जलमय कर देना कितना मनोहर लगता है।

हिमपात देखना अपने आप में एक अनोखा अनुभव है। अनेक लोग मैदानों से पहाड़ों पर हिमपात देखने ही आते हैं। हमें तो अपने आप यह अवसर प्राप्त हो गया था। यह हिमपात छ: घंटे तक होता रहा। लोग हिमपात में भी बाहर घूमते रहे। उनकी फर की टोपियों पर, लंबे-लंबे ओवरकोटों पर बर्फ की तह जम गई, पर वे इसमें आनंद ले रहे थे। सड़क पर बर्फ में पाँव धँसते जा रहे थे। बच्चे बर्फ के गोले बनाकर एक-दूसरे पर फेंक रहे थे। चारों ओर आनंद ही आनंद था।

☞ अभ्यासार्थ
(Practice)

1. छात्र और अनुशासन

वर्तमान समय में छात्रों में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती जा रही है। छात्र छोटी-छोटी बातों को लेकर तोड़-फोड़ करने पर उतारू हो जाते हैं। उन्हें अपने भविष्य की भी चिंता नहीं होती। इस समस्या के कारणों एवं निदान पर चर्चा करते हुए एक निबंध लिखिए।

2. आत्मनिर्भरता

'आत्मनिर्भरता' शब्द का क्या अर्थ है ? आप इसे किस रूप में लेते हैं। आत्मनिर्भरता और सफलता का आपस में क्या संबंध है? कुछ आत्मनिर्भर व्यक्तियों के जीवन से उदाहरण देते हुए इस विषय का प्रतिपादन कीजिए।

3. बढ़ती जनसंख्या : सिकुड़ते साधन

भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती चली जा रही है। इसकी तुलना में संसाधन सिकुड़ते प्रतीत होते हैं। जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्धि सारी योजनाओं को धराशायी करती प्रतीत होती है। इस समस्या के सभी पहलुओं पर विचार करते हुए निबंध लिखिए।

4. गाँधी जयंती

आपके नगर में गाँधी जयंती विशेष उल्लासपूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर क्या-क्या कार्यक्रम आयोजित किए गए? आपने उनमें किन-किन रूपों में भाग लिया ? आम जनता का उत्साह कैसा था? इन सभी का वर्णन कीजिए।

5. बलात्कार की घटनाएँ

पिछले कुछ वर्षों में बलात्कार की घटनाओं में तेजी से वृद्धि हुई है। प्रतिदिन कहीं न कहीं बलात्कार की घटना घट जाती है। महिलाएँ असुरक्षित होती जा रही हैं। इसके पीछे कौन-सी मानसिकता काम करती है? इसे कैसे रोका जा सकता है? सभी पहलुओं पर चर्चा करते हुए निबंध लिखिए।

6. भ्रष्टाचार

आज भ्रष्टाचार सर्वत्र अपनी जड़ जमा चुका है। सरकारी तथा गैर-सरकारी सभी कार्यों में भ्रष्टाचार घुस गया है। यह समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल होती जा रही है। इसे कैसे दूर किया जा सकता है ? इस सारी समस्या पर विचार करते हुए निबंध लिखिए।

7. आतंकवाद

आज आतंकवाद विश्व की प्रमुख समस्या बन गई है। भारत भी इस समस्या से 20-25 वर्षों से जूझ रहा है। इससे अपार जन-धन-संपत्ति की हानि हो रही है। इसे किस प्रकार रोका जा सकता है ? इस सारी समस्या पर अपने विचार प्रकट करते हुए एक लेख लिखिए।

8. अनेकता में एकता : भारत की विशेषता

भारत में विविध क्षेत्रों में अनेकता दृष्टिगोचर होती है। इस विविधता के पीछे एकता की भावना निहित रहती है। भारत की विविधता और एकता पर दृष्टिपात करते हुए एक लेख लिखिए।

9. मेरा जीवन लक्ष्य

प्रत्येक व्यक्ति के मन में अनेक इच्छाएँ होती हैं। वह भावी जीवन के लिए कोई न कोई लक्ष्य अवश्य निर्धारित करता है। आपका जीवन लक्ष्य क्या है और आप उसे कैसे पूरा करेंगे ?

10. ईद का त्योहार

भारत में विविध धर्मावलंबी रहते हैं। प्रत्येक के अपने-अपने त्योहार हैं। ईद मुसलमान भाइयों का प्रमुख त्योहार है पर इसे सभी मिल-जुलकर मनाते हैं। इस त्योहार को मनाने के कारण एवं स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए निबंध लिखिए।

11. हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र के कुछ प्रतीक होते हैं। ये प्रतीक उस राष्ट्र की पहचान होते हैं। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, राष्ट्रचिह्न, राष्ट्रीय पक्षी और राष्ट्रीय पशु का उल्लेख करते हुए एक लेख लिखिए।

12. ऐतिहासिक स्मारक ताजमहल

ऐतिहासिक स्मारकों में ताजमहल का विशेष महत्त्व है। यह प्रेम का प्रतीक है। इसे बादशाह शाहजहाँ ने मुमताज महल की याद में बनवाया था। अब इसे विश्व की प्रमुख धरोहरों में प्रथम स्थान पर घोषित किया गया है। यह विश्व के आश्चर्यों में प्रथम है। इस पर एक लेख लिखिए।

13. किसी मैच का आँखों देखा वर्णन

क्रिकेट, फुटबॉल या हॉकी आपका प्रिय खेल होगा। आपने इसका कोई मैच अवश्य देखा होगा। वह मैच किस-किसके बीच हुआ ? उसके रोमांचक क्षणों का उल्लेख कीजिए। इस मैच में कौन विजेता रहा ? मैच का पूरा वर्णन करो।

14. किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम का वर्णन

आपने अपने स्कूल अथवा कहीं बाहर कोई न कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम अवश्य देखा होगा। यह कार्यक्रम कब और कहाँ हुआ ? इसमें कौन-कौन से कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए ? प्रस्तुतीकरण कैसा था ? आपको इसमें क्या-क्या अच्छा लगा ? कारण भी बताइए।